y Arya Samaj Foundation Chennai and

KERALA JYOTI

VOL.24 1989-90 G. K. V. Hardwar

c Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
077852
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

077852

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरल ज्योति

077852

हिन्दी सेवियों का राष्ट्रस्तरीय सम्मान

केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा की रजतजयंती के अवसर पर देश के चौबीस हिन्दी सेवियों का राष्ट्रस्तरीय सम्मान नई दिल्ली में किया गया। प्रधान मंत्री श्री. राजीव गांधी के करकमलों से डा० [illegible] पुरस्कार स्वीकार कर रहे हैं। केरल हिन्दी प्रचार सभा के मंत्री श्री. एन. के. [illegible] नायर और [illegible] पुरस्कार स्वीकार कर रहे हैं केरल ज्योति के सम्पादक श्री. के. जी. बालकृष्ण पिल्लै।

जय हिन्द

केरल हिन्दी प्रचार सभा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरस्कार वितरण

केन्द्र मानव संसाधन विकास मत्रांलय की सहायता से केरल ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूरभाष : 61378 तार : "जय हिन्दी"

केरल ज्योति

पुष्प 24
दल 1
एक प्रति—1 रु० 50 पै०

संपादकीय

हिन्दीतर भाषियों का हिन्दी गूंगापन दूर करें

स्वतंत्रता संग्राम के समय से जो हिन्दी प्रचार अभियान चला उस के फलस्वरूप तमिलनाड को छोडकर अन्य सभी राज्यों में स्कूली स्तर पर हिन्दी सिखायी जाती है। कम से कम तीन साल स्कूली बच्चे हिन्दी भी सीखते हैं। मेट्रिक तक आते आते वे हिन्दी पढना और लिखना सीख जाते हैं। हिन्दी में साक्षर बन जाते हैं।

स्वतंत्र भारत में हिन्दी की उपयोगिता दिनों दिन बढती जा रही है। विविध भाषाभाषी जनता के संपर्क का मुख्य माध्यम आज हिन्दी है। क्षेत्रीय और राष्ट्रीय सम्मेलनों, शिविरों और कार्यशालाओं में तथा संसद में हिन्दी अधिक बोली जाती है। हिन्दीतर प्रान्तों में भी हिन्दी के सिनेमा, टी. वी. सीरियल आदि बनने लगे हैं। हिन्दी भाषी लोग हिन्दीतर प्रान्तों में जब जाते हैं, अंग्रेज़ी में वार्तालाप करने की अपेक्षा हिन्दी में वार्तालाप करना चाहते हैं। हिन्दीतर भाषाभाषी क्षेत्र के युवा राजनीनिक और सामाजिक कार्यकर्ता अपने राज्यों की सीमा लांघ कर राष्ट्रीय स्तर पर काम करना चाहते हैं।

उक्त अकांक्षाओं और आवश्यकताओं की पूर्ति केलिए नई पीढी को तैयार करने में हिन्दीतर प्रान्तों का, विशेष कर केरल जैसे प्रान्तों का वर्तमान हिन्दी शिक्षण अपने को असमर्थ पाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस अंक में

हिन्दीतर भाषाभाषी हिन्दी में वाचिक दक्षता प्राप्त करें। 3
रामदुलारी सिन्हा

हिन्दी ही भारत की राष्ट्रभाषा बन सकती है। 5
वर्कला राधाकृष्णन

हिन्दी प्रचार स्वतंत्रता संग्राम का अंग था। 8
डा० जी. बालमोहन तंपी

हिन्दी का विकास इतर भारतीय भाषाओं के विकास केलिए सहायक होगा। 11
डा० यु. आर. अनन्तमूर्ति

राष्ट्रीय चेतना के जागरण केलिए हिन्दी का प्रचार बढे। 15
डा० वी. के. सुकुमारन नायर

राष्ट्रीय एकता में हिन्दी की भूमिका महत्वपूर्ण। 18
रामकृष्ण हेगडे

सांस्कृतिक मूल्यों की पुनस्थापना हिन्दी प्रचार द्वारा। 19
डा० वी. गोविन्द शेनाय

अंतराल 24
जगदीश हरिजन

भाषा और भावना 25
एस. आर. सिंह

आशा 29
डा० रती सक्सेना

राधे राधे 31
डा० एन. ई. विश्वनाथ अय्यर

पाँचवीं से मेट्रिक तक हिन्दी पढा हुआ साधारण केरलीय युवक हिन्दी भाषियों से हिन्दी में वार्तालाप करने में हिचकिचाता है, घबराता है, डरता है।

पांचवीं से दसवीं कक्षा तक की छः वर्षों की अवधि में बच्चों को हिन्दी बोलना सिखा नहीं पायेंगे? केरल स्थित केन्द्रीय विद्यालयों का उदाहरण हमारे सामने है। वहाँ के बच्चे दो तीन वर्षों के अध्ययन से ही अंग्रेजी और हिन्दी बोल लेते हैं। कैसे? वहाँ भाषा शिक्षण का पाठ्य-क्रम और शिक्षण विधि छात्रों में उक्त व्यावहारिक परिवर्तन लाने में सहायक है।

क्या हम केरल जैसे राज्यों के इतर स्कूलों में भी केन्द्रीय विद्यालयों की हिन्दी शिक्षण पद्धति नहीं अपना सकते? यदि सरकार और जनता चाहे तो जरूर कर सकते हैं। इस ओर जितनी जलदी हम कदम उठायेंगे उतना ही अच्छा होगा। इस में जो विलंब होगा वह हिन्दीतर भाषाभाषी युवक युवतियों को राष्ट्रीय जीवन में पंगु और गूँगे बना देगा। ❀

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दीतर भाषा-भाषी हिन्दी में वाचिक दक्षता भी प्राप्त करें

रामदुलारी सिन्हा
राज्यपाल, केरल

अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ और केरल हिन्दी प्रचार सभा के संयुक्त तत्वावधान में तिरुवनन्तपुरम में आयोजित अखिल भारतीय हिन्दी कार्यकर्ता शिविर के प्रतिभागियों का स्वागत राजभवन में करते हुए माननीय राज्यपाल श्रीमती रामदुलारी सिन्हा बोल रही हैं। बैठे हैं—(बायें से) श्री शंकरराव लौंढे, प्रो० रामलाल परीख, श्री. एम. के. वेलायुधन नायर और डा० मो० दि० पराडकर।

केन्द्र मानव संसाधन विकास मंत्रालय की सहायता से अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ और केरल हिन्दी प्रचार सभा के संयुक्त तत्वावधान में तिरुवनन्तपुरम में आयोजित अखिल भारतीय हिन्दी कार्यकर्ता शिविर के प्रतिभागियों का स्वागत राजभवन में करते हुए केरल की माननीय राज्यपाल श्रीमती रामदुलारी सिन्हा ने इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बात पर खेद प्रकट किया कि विविध स्वैच्छिक हिन्दी प्रचार संस्थाओं के भावी प्रयत्नों के बावजूद हिन्दी की वाचिक दक्षता हिन्दीतर प्रान्तों की जनता में अब तक वांछित मात्रा में विकसित नहीं हो पायी है और आह्वान किया कि इस दिशा में संस्थायें अधिक प्रयत्नशील हों। आप ने कहा कि यदि हिन्दी भारत भर खूब पहुंच गयी होती तो आज भारत को इतनी अधिक समस्याओं का सामना नहीं करना पडता।

अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ के अध्यक्ष एवं गुजरात हिन्दी विद्यापीठ के कुलपति डॉ० रामलाल परीख ने संस्था संघ की सदस्य संस्थाओं की गति विधियों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि इन संस्थाओं की परीक्षाओं में प्रतिवर्ष चालीस लाख विद्यार्थी शामिल होते हैं।

अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ के सचिव एवं बंबई हिन्दी विद्यापीठ के कुलपति डा० एम. डी. पराडकर और अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ के कोषाध्यक्ष एवं केरल हिन्दी प्रचार सभा के मंत्री श्री. एम के वेलायुधन नायर ने हिन्दी प्रचार की वर्तमान स्थिति का परिचय देते हुए भाषण दिया।

❀

> मेरा विश्वास है कि जब तक हमारे देश में उच्चस्तरीय शिक्षा, चाहे वह किसी भी क्षेत्र में हो, भारतीय भाषाओं में नहीं होगी, तब तक देश की उन्नति में बाधा पड़ती रहेगी।
>
> — पी. वी. नरसिंह राव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी ही भारत की राष्ट्रभाषा बन सकती है

वर्कला राधाकृष्णन
अध्यक्ष, केरल विधान सभा

अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ और केरल हिन्दी प्रचार सभा के संयुक्त तत्वावधान में तिरुवनन्तपुरम में आयोजि अखिल भारतीय हिन्दी कार्यकर्ता शिविर के समापन सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए केरल विधान सभा के अध्यक्ष श्री. वर्कला राधाकृष्णन ने बताया कि भारत को एक सूत्र में बांधे रखने के लिए एक राष्ट्रभाषा विकसित करने का संकल्प स्वतंत्रता संग्राम के समय ही सुदृढ हो गया था। हिन्दी में ही भारत की राष्ट्रभाषा बनने की क्षमता है। भारत को अखण्ड बनाये रखने की शक्ति हिन्दी में है। इसलिए हमें हिन्दी का व्यापक प्रचार करना है।

आप ने तमिलनाटु के हिन्दी विरोध को देश की अखण्डता केलिए बाधक बताया।

सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ के अध्यक्ष प्रो० रामलाल परीख ने आग्रह किया कि समाज की प्रगति में बाधा डालनेवाली शक्तियों से जूझते हुए, सरकार और राजनीति की सहायता पर निर्भर हुए बिना हिन्दी, खादी और साक्षरता का प्रचार समर्पण की भावना के साथ करें। खादी आज़ादी का लिबास है और हिन्दी स्वतंत्रता की वाणी है। राष्ट्र की बुनियाद को सुशक्त करने केलिए खादी हिन्दी और प्रौढशिक्षा का प्रचार अत्यंत आवश्यक है। प्रजातंत्र में जनता का शासन जनता की भाषा में ही होना है। शासकीय प्रयोजनों केलिए प्रान्तीय स्तर पर प्रान्तीय भाषाओं का तथा अन्तप्रान्तीय संपर्क के लिए हिन्दी का प्रयोग अंग्रेजी के स्थान पर क्रमप्रवृद्ध रूप से करते जायें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ और केरल हिन्दी प्रचार सभा के तत्वावधान में तिरुवनन्तपुरम में आयोजित अखिल भारतीय हिन्दी कार्यकर्ता शिविर के समापन सम्मेलन का उद्घाटन कर रहे हैं केरल के विधान सभा अध्यक्ष श्री० वर्कला राधाकृष्णन ।

बैठे हैं—प्रथम पंक्ति (बायें से) श्री. एम. के. वेलायुधन नायर, श्री. राधावल्लभ शर्मा, प्रो० रामलाल परीख, डा० जी. रामचन्द्रन, श्री० शंकर राव लोंढे और डा० मो. दि. पराडकर । द्वितीय पंक्ति (बायें से) प्रो० एम. जनार्दनन पिल्लै, श्री० के. केशवन नायर ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र प्रदान करते हुए विख्यात गांधीवादी विचारक एवं कार्यकर्ता देशिकोत्तम डा० जी. रामचन्द्रन ने कहा कि हिन्दी प्रचार और खादी प्रचार के द्वारा ही महात्मा गांधी आज जीवित हैं। उन्होंने इस बात पर सन्तोष प्रकट किया कि केरल हिन्दी प्रचार सभा के अनेक छात्र खादी पहनने लगे हैं।

अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ के सचिव डा० मो. दि. पराडकर ने शिविर के मन्तव्य प्रस्तुत किये।

केरल हिन्दी प्रचार सभा के मंत्री एवं अखिल भारतीय हिंदी संस्था-संघ के कोषाध्यक्ष श्री. एम. के. वेलायुधन नायर ने स्वागत भाषण दिया और अखिल भारतीय संस्था संघ के कार्यालय सचिव श्री. जगदीश प्रसाद शर्मा ने कृतज्ञता प्रकट की।

विद्यार्थियों ने हिन्दी और मलयालम में एकता गीत गाये।

भारत की राष्ट्रभाषा हिन्द्री पर युवा पीढ़ी के हृदय में गर्व उत्पन्न करना राजभाषा के रूप में उसका उपयोग व्यापक बनाने के लिए अत्यन्त अपेक्षित है।

—पी. रामचन्द्रन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी प्रचार स्वतंत्रता संग्राम का अंग था

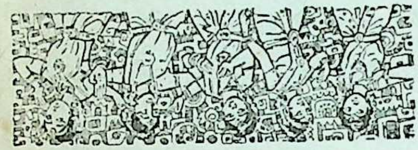

डा० जी. बालमोहन तंपी
कुलपति, केरल विश्वविद्यालय

केरल विश्वविद्यालय के कुलपति डा० जी. बालमोहन तंपी ने बताया कि हिन्दी प्रचार स्वतंत्रता संग्राम का अभिन्न अंग था। आपने कहा कि केरल में किसी को हिन्दी अध्ययन अनावश्यक नहीं लग रहा है।

केन्द्र मानव संसाधन विकास मंत्रालय की सहायता से केरल हिन्दी प्रचार सभा द्वारा आयोजित राज्य स्तरीय हिन्दी साहित्य-कला प्रतियोगिताओं के पुरस्कार वितरण सम्मेलन का उद्‌घाटन कर रहे थे डा० तंपी।

डा० तंपी ने आग्रह किया कि उत्तर भारत के नदीतटों और वनों में विकसित भारतीय संस्कृति की विविधता की जडों को ढूँढने और उत्तर की जनता को समझने केलिये हिन्दी सीखें। हिन्दी जैसी भाषाओं के अध्ययन में उन के सांस्कृतिक आयाम की उपेक्षा नहीं की जा सकती। गोसाई भाषा कह कर हिन्दी की अवहेलना करना उचित नहीं। तुलसी रामायण विश्व की कालजयी कृतियों में मुख्य है। जो भाषा हमें नहीं आती उसकी या किसी जन-समूह की अवहेलना करना हमारे सांस्कृतिक पतन का द्योतक है।

देश के सभी प्रान्तों में राजभाषा के रूप में हिन्दी जब प्रयुक्त होने लगेगी तभी भावात्मक समन्वय सुसाध्य हो सकेगा।

आपने केरल में हिन्दी का व्यापक प्रचार कर रही केरल हिन्दी प्रचार सभा का अभिनन्दन किया।

सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए मलयालम के विख्यात हास्य लेखक प्रो० वी आनन्दकुट्टन ने बताया कि देश के सभी प्रान्तों में राजभाषा के रूप में हिन्दी जब प्रयुक्त होने लगेगी तभी भावात्मक समन्वय सुसाध्य हो सकेगा। विविध प्रतियोगिताओं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केन्द्र मानव संसाधन विकास मंत्रालय की सहायता से केरल हिन्दी प्रचार सभा द्वारा तिरुवनन्तपुरम में आयोजित हिन्दी साहित्य कला-प्रतियोगिताओं के पुरस्कार वितरण समारोह का उद्घाटन केरल विश्व विद्यालय के कुलपति डा० बालमोहन तंपी ने किया।

बैठे हैं—प्रथम पंक्ति (बायें से) श्री० एम. के. वेलायुधन नायर, श्री० एन. एस. कृष्णमूर्ति, प्रो० वी. आनन्दकुट्टन, और श्री. पेरुम्पटवम श्रीधरन ।

द्वितीय पंक्ति (बायें से) प्रो० एम. जनार्दनन पिल्लै, श्री० के. केशवन नायर और डा० मावेलिक्करा अच्युतन ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के विजेताओं को पुरस्कार वितरित करते हुए आकाशवाणी, तिरुवनन्तपुरम केन्द्र के निदेशक श्री एन. एस. कृष्णमूर्ति ने कहा कि विविध भाषा-भाषी भारत की जोड-भाषा के रूप में हिन्दी का स्थान प्रमुख है।

मलयालम के विख्यात लेखक श्री. पेरुम्पटवम श्रीधरन ने विद्यार्थियों और लेखकों से आह्वान किया कि केरल हिन्दी प्रचार सभा द्वारा प्रदत्त, प्रोत्साहनों से प्रेरित होकर वे हिन्दी का अधिकाधिक अध्ययन करें और हिन्दी में सृजनात्मक कार्य करें।

केरल हिन्दी प्रचार सभा के मंत्री एवं केन्द्रीय हिन्दी समिति के सदस्य श्री. एम. के. वेलायुधन नायर ने स्वागत भाषण में हिन्दी प्रचारकों से आह्वान किया कि हिन्दीतर प्रान्तों में हिन्दी को लोकप्रिय बनाने में दृश्य-श्रव्य कला का यथासंभव सहारा लें। केरल हिन्दी प्रचार सभा के कोषाध्यक्ष प्रो० एम जनार्द्दनन पिल्लै ने कृतज्ञता ज्ञापित की। ✯

मैं अनुभव करता हूँ कि हिन्दी के प्रति मेरी आस्था अनेक हिन्दी-वालों से अधिक है और साथ ही यह भी कि बडी गहराई और निष्ठा से भारतीय हूँ।

अज्ञेय

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी का विकास इतर भारतीय भाषाओं के विकास केलिए सहायक होगा

डा० यु. आर. अनन्तमूर्ति
कुलपति, महात्मा गांधी विश्वविद्यालय, कोट्टयम, केरल

केन्द्र मानव संसाधन विकास मंत्रालय की सहायता से केरल हिन्दी प्रचार सभा द्वारा कोट्टयम में आयोजित हिन्दी प्रचारक नवीकरण पाठ्यक्रम के समापन सम्मेलन का उद्घाटन कन्नड के प्रमुख साहित्यकार एवं महात्मा गांधी विश्वविद्यालय के कुलपति डा० यू. आर. अनन्तमूर्ति ने किया।

बैठे हैं — (बायें से) श्री० के. जी. बालकृष्ण पिल्लै, श्री० एम. के. वेलायुधन नायर श्री० एम. एन. गोविन्दन नायर, प्रो० अंपलपुषा रामवर्मा आदि।

केन्द्र मानवसंसाधन विकास मंत्रालय की सहायता से केरल हिन्दी प्रचार सभा द्वारा कोट्टयम में आयोजित हिन्दी प्रचारक नवीकरण पाठ्यक्रम के समापन सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए महात्मा गांधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वविद्यालय के कुलपति एवं कन्नड के विख्यात साहित्यकार डा० यु. आर. अनन्तमूर्ति ने अंग्रेजी में कहा कि हिन्दी का विकास इतर भारतीय भाषाओं के विकास केलिए सहायक सिद्ध होगा। गांधीजी जैसे नेताओं का उदाहरण देते हुए आप ने कहा कि हिन्दी का समर्थन करने वाले प्रान्तीय भाषाओं के विरुद्ध नहीं हैं। स्वतंत्रता संग्राम के साथ हिन्दी का संबंध अभेद्य था। भारत की अधिकांश जनता की भाषा होने के कारण राष्ट्र भाषा हिन्दी का व्यापक प्रचार किया जाता है। यदि स्वतंत्रता प्राप्ति के तुरन्त बाद हमने यह निर्णय लिया होता कि अंग्रेजी के स्थान पर हिन्दी को अपनाया जायेगा तो आज की सी स्थिति नहीं हुई होती। अंग्रेजी को हम छोड नहीं देते। जो अंग्रेजी सीखना चाहते, उसे सीखते। पर हिन्दी और इतर भारतीय भाषायें अधिक संपुष्ट हुई होती। आज मैं अंग्रेजी में न बोलकर, हिन्दी में बोलता। अंग्रेजी को अमित प्रधानता देने के कारण समाज को कई प्रकार की क्षतियाँ हुई हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व हमारी संस्कृति का केन्द्र भारत रहा। पर आज हमारी संस्कृति का केन्द्र है योरप। अंग्रेजी माध्यम में अध्ययन करने वाले बच्चे मातृभाषा का उपयोग केवल रसोईघर की भाषा के रूप में करते हैं। देश की भावात्मक एकता सुदृढ करने के लिए हिन्दी का प्रचार अत्यत आवश्यक है।

सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए अधिवक्ता श्री एम एन. गोविन्दन नायर ने कहा कि सभ्यता के नाम पर भारतीय जनता पश्चिम का अन्ध अनुकरण कर रही है जो हास्यास्पद है। हमें मातृभाषा और राष्ट्रभाषा पर गर्व करना चाहिए। स्वतंत्रता संग्राम के समय देश प्रेमियों ने अंग्रेज सरकार की दमन-नीति का सामना करते हुए, भूखों रहकर हिन्दी का प्रचार किया था।

साहित्य प्रवर्तक सहकरण संघम के अध्यक्ष एवं हिन्दी मलयालम कोशकार श्री अभयदेव ने आशीर्वाद भाषण में इस बात पर खेद प्रकट किया कि स्वतंत्रता संग्राम के इतर सेनानियों को जो पेंशन मिलता है वह उन हिन्दी प्रचारकों को नहीं मिलता जिन्होंने जेल गये बिना, स्वतंत्रता संग्राम के अंग के रूप में हिन्दी प्रचार किया था। जेल नहीं गये, महज इस कारण उन्हें पेंशन से वंचित रखना उचित नहीं होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोट्टयम में आयोजित हिन्दी प्रचारक नवीकरण पाठ्यक्रम का उद्‌घाटन कोट्टयम नगर निगम के महापौर श्री माणी एब्राहम ने किया। बैठे हैं (बायें से) श्री. के. जी. बालकृष्ण पिल्लै श्री. ई. वासुदेम मेनोन, प्रो॰ सी. जे. मण्मुँमूट और श्री. सी. ए. जेकब।

गांधीजी ने ही उन्हें जेल न जाने का आदेश दिया था। स्वतंत्रता संग्राम में जिस आवेश के साथ हमने हिन्दी प्रचार किया था उसी आवेश के साथ स्वतंत्रता की सुरक्षा केलिए हमें हिन्दी प्रचार अभियान को सुशक्त करना है।

मलयालम के विख्यात विद्वान प्रो॰ अंपलपु.षा रामवर्मा ने कहा कि स्कूली पाठ्यक्रम में मातृभाषा को प्रथम स्थान, राष्ट्रभाषा हिन्दी को द्वितीय स्थान और विदेशी भाषा अंग्रेज़ी को तृतीय स्थान दिया जाना है।

मलयालम के विख्यात लेखक प्रो॰ पी. यु. उतुप्पु ने आग्रह किया कि राज्यों का शासन प्रान्तीय भाषाओं में और राज्यों के बीच पत्राचार हिन्दी में हो।

डा॰ अनंतमूर्ति ने प्रशिक्षुओं को प्रमाण-पत्र वितरित किये।

प्रशिक्षुओं ने एकता गीत और देश भक्तिगीत गाये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरल हिन्दी प्रचार सभा के मंत्री एवं केन्द्रीय हिन्दी समिति के सदस्य श्री. एम. के. वेलायुधन नायर ने स्वागत भाषण दिया। पाठ्यक्रम निदेशक श्री. के. जी बालकृष्ण पिल्लै ने प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। रबड बोर्ड के हिन्दी अधिकारी श्री. सी. ए जेकब ने कृतज्ञता प्रकट की।

सम्मेलन के पहले इन्द्रप्रस्थम ओडिटोरियम से दर्शनम ओडिटोरियम तक जो भारतीय भाषा जुलूस का आयोजन हुआ उस में कोट्टयम जिले के अनेक हिन्दी प्रेमियों ने भाग लिया। नवीकरण पाठ्यक्रम का उद्घाटन कोट्टयम नगर निगम के महापौर श्री. माणी एब्रहाम ने किया।

मलयालम के विख्यात गद्यकार
स्व० पी. के. परमेश्वरन नायर (*1903—1988*)
केरल ज्योति के मार्च *1989* अंक में आप के व्यक्तित्व और कृतित्व का संक्षिप्त परिचय दिया गया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रीय चेतना के जागरण केलिए हिन्दी का प्रचार बढ़े

डा० वी. के. सुकुमारन नायर
पूर्व कुलपति, केरल विश्वविद्यालय

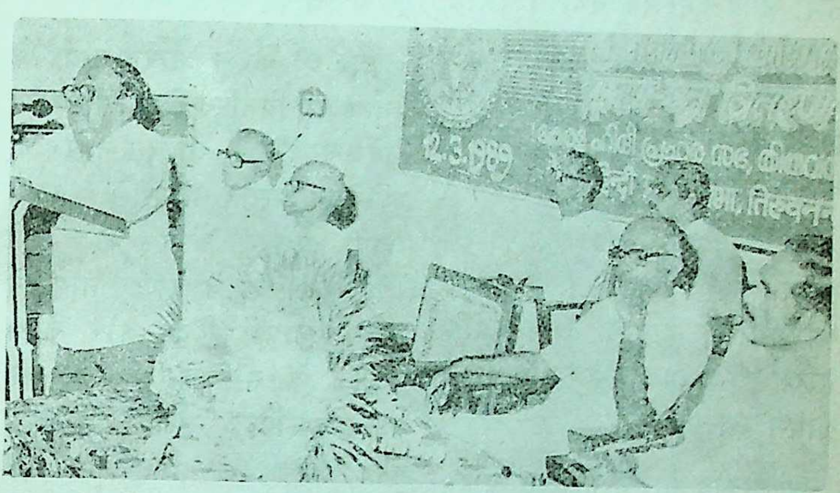

केन्द्र मानव संसाधन विकास मंत्रालय की सहायता से केरल हिन्दी प्रचार सभा द्वारा तिरुवनन्तपुरम में आयोजित हिन्दी प्रचारक नवीकरण पाठ्यक्रम के प्रमाण पत्र वितरण समारोह का उद्घाटन केरल विश्वविद्यालय के पूर्वकुलपति डा० वी. के सुकुमारन नायर ने किया। बैठे हैं—प्रथम पंक्ति (बायें से) श्री. एम. के. वेलायुधन नायर, महाकवि एम. पी. अप्पन, डा० के. रामचन्द्रन नायर और डा० मावेलिकरा अच्युतन। द्वितीय पंक्ति (बायें से) श्री. के. जी. बालकृष्ण पिल्लै और प्रो० एम. जनार्दनन पिल्लै।

केन्द्र मानव संसाधन विकास मंत्रालय के सहयोग से केरल हिन्दी प्रचार सभा द्वारा तिरुवनन्तपुरम में आयोजित हिन्दी प्रचारक नवीकरण पाठ्यक्रम के समापन सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए केरल विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डा० वी. के. सुकुमारन नायर ने कहा कि हिन्दी प्रचार अभियान स्वतंत्रता संग्राम का अंग रहा है और आह्वान किया कि नयी पीढी में राष्ट्रीय चेतना जाग्रत करने केलिए हिन्दी प्रचार को अधिक व्यापक बनायें। यह धारणा निर्मूल है कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी केवल उत्तर भारत की और उत्तर भारतीय संस्कृति की भाषा है। हिन्दी भारत की राजभाषा ही नहीं, भारत की राजनीति की भी भाषा है। हिन्दी का पर्याप्त ज्ञान पाये बिना राष्ट्र स्तरीय सम्मेलनों तथा लोक सभा में होनेवाली चर्चायें समझ नहीं पायेंगे। केरल साक्षरता, स्वास्थ्य आदि क्षेत्रों में आगे है। हिन्दी के माध्यम से ही केरल राष्ट्र का राजनीतिक नेतृत्व कर पायेगा।

सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए मलयालम के महाकवि श्री. एम. पी. अप्पन ने कहा कि भारत की अखण्डता केवल हिन्दी ही कायम रख सकेगी।

आशीर्वाद भाषण में केरल विश्व-विद्यालय के मलयालम विभाग के अध्यक्ष डा० के. रामचन्द्रन नायर ने हिन्दी प्रचारकों से अनुरोध किया कि वे इस धारणा को जनता के हृदय से दूर करने का प्रयत्न करें कि हिन्दी का प्रचार इतर भारतीय भाषाओं केलिए हानिकारक है और हिन्दी थोपी जा रही है। भारतीय जनता की राजनीतिक और सांस्कृतिक एकता को सुशक्त बनाने केलिए अनिवार्य माध्यम के रूप में हिन्दी की प्रधानता बढती जा रही है।

केरल हिन्दी प्रचार सभा के हिन्दी अध्यापक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्य एवं बहुभाषाविद डा० मावेलिकरा अयुतन ने आह्वान किया कि हिन्दी प्रचारक भारत का उदात्त जीवन दर्शन आत्मसात करके देश का गौरव बढायें।

डा० वी. के. सुकुमारन नायर ने प्रमाण-पत्र वितरित किये। पाठ्यक्रम निदेशक श्री. के. केशवन नायर ने प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। केरल हिन्दी प्रचार सभा के मंत्री श्री. एम. के. वेलायुधन नायर ने स्वागत भाषण दिया और केरल ज्योति के संपादक श्री. के. जी. बालकृष्ण पिल्लै ने कृतज्ञता प्रकाशित की। ★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्व० कैनिक्करा

मलयालम के विख्यात नाटककार अभिनेता एवं आदर्श अध्यापक श्री कैनिक्करा एम. कुमार पिल्लै का निधन 9-12-1989 को हुआ। दीर्घकाल तक वे अध्यापक रहे। महात्मा गांधी कॉलेज तिरुवनन्तपुरम के प्राचार्य, गांधीग्राम संस्थान, मदुरै के प्राचार्य, आकाशवाणी तिरुवनन्तपुरम केन्द्र के प्रयोक्ता जैसे पदों पर भी आपने सेवा की। केरल साहित्य अकादमी और केरल संगीत अकादमी ने फेलोशिप दे कर उनका सम्मान किया। 'नाटकीय' शीर्षक मलयालम ग्रंथ पर उन्हें ओटकु.षल पुरस्कार और पुत्ते.षन अवार्ड मिले। डा० जी. रामचन्द्रन ने कहा कि वे सत्यनिष्ठा में हरिश्चन्द्र थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रीय एकता में हिन्दी की भूमिका महत्वपूर्ण

श्री. रामकृष्ण हेगडे

25 मार्च 1989 को गांधी भवन, हैदराबाद में सम्पन्न हिन्दी प्रचार सभा, हैदराबाद के 25 वें दीक्षान्त समारोह के अवसर पर जनता दल के उपाध्यक्ष और कर्नाटक के भूतपूर्व मुख्य मंत्री श्री. रामकृष्ण हेगडे ने अपने दीक्षान्त भाषण में कहा कि नदी की धारा की तरह हिन्दी को प्रवाहित होते रहना चाहिए। उसका स्वरूप कैसा हो—इस प्रश्न को जनता पर ही छोड दिया जाना चाहिए। जनबल से भाषा की समृद्धि होगी और भाषा की लोकप्रियता बढ़ेगी। आज अंग्रेज़ी अन्तर्राष्ट्रीय भाषा इसलिए बनी है कि। उसने अन्य भाषाओं के शब्दों, पदों एवं शैलियों को आत्मसात कर लिया है

राष्ट्रीय एकता में राष्ट्रभाषा के महत्व को स्पष्ट करते हुए श्री. हेगडे ने आगे कहा कि धर्म की नींव पर पूर्वी बंगाल को मिलाकर पाकिस्तान बनाया गया था, परंतु राष्ट्रीय भाषा के अभाव में धार्मिक एकता के बावजूद उस राष्ट्र की एकता एवं अखण्डता नहीं रह सकी और उस राष्ट्र के दो टुकडे हो गए। इसलिए राष्ट्रीय एकता में राष्ट्रभाषा की अपनी महत्वपूर्ण भूमिका रहती है।

इस अवसर पर वरिष्ठ हिन्दी सेवियों को 'साहित्याचार्य' और 'प्रतिष्ठित प्रचारक' की मानद उपाधियों प्रदान की गयीं।

विधान सभा के अध्यक्ष श्री. जी. नारायणराव ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि हमारा देश महान है और राष्ट्रभाषा होने के नाते हिन्दी भी एक महान् भाषा है। देश में राष्ट्रीय एकता के लिए एक भाषा हिन्दी का होना जरूरी है।

हिन्दी प्रचार सभा के कार्यों की चर्चा करते हुए श्री. नारायणराव ने आगे कहा कि हिन्दी प्रदेशों की जनता को दक्षिण की भाषाओं को अपनाना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सांस्कृतिक मूल्यों की पुनस्थापना—हिन्दी प्रचार द्वारा

डा० वी. गोविन्द शेनाय

[अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ और केरल हिन्दी प्रचार सभा के संयुक्त तत्वावधान में फरवरी-मार्च *1989* में तिरुवनन्तपुरम में आयोजित अखिल भारतीय हिन्दी कार्यकर्ता शिविर में प्रस्तुत आलेख ।]

सत्य, न्याय, कर्तव्य, परिवार और समाज का संबंध, व्यक्ति और समाज का संबंध इत्यादि के प्रति प्राचीन भारत में निश्चित धारणा थी। सुकरात के युनान में तथा कनफूशस के चीन में भी उस प्राचीन काल में अर्थात् ई० पूर्व निश्चित धारणा थी। यह धारणा अद्‌भुत रूप से समान थी। अच्छाई-बुराई, सुन्दर-असुन्दर, कर्तव्य अकर्तव्य इन के बीच की विभाजक रेखा बहुत ही स्पष्ट थी। अतः निर्णय करने में किसी प्रकार की भी कठिनाई नहीं होती थी। सुकरात ने अपने न्यायाधीशों से अदालत में स्पष्ट ही कहा था यदि मैंने अपराध किया है तो मुझे दंड दो, उतना दंड दो जो न्यायसंगत और निश्चित है। उससे कम करने का अथवा अपराधी को बरी करने का अधिकार न्यायाधीशों को प्राप्त नहीं है। महात्मा गांधी जी ने अदालत में मजिस्ट्रेट से अपने अपराध के संबंध में जो वक्तव्य दिया था वह भी इसी कोटि का है। गांधीजी सुकरात की और ईसा की परम्परा की अंतिम कडी है।

माता-पिता की देखभाल तथा वृद्धावस्था में ममता के साथ उनकी रक्षा करना यूनान, भारत और चीन में व्यक्ति का कर्तव्य था जिससे च्युत हो जाने पर वह अपराधी घोषित किया जाता था। ऐसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थिति में वह दंडित होता था, साथ ही उसका यह अपराध पाप के अंतर्गत भी माना जाता था जिसके लिए उसे परलोक में भी दंड भोगना पडता था। सदियों तक यह धारणा इन राज्यों में बनी रही। पश्चिम में अब वह द्रुतगति से लुप्त हो रही है, चीन में वह बिलकुल लुप्त हो गई है। भारत भी उसकी लपेट में आने लगा है, परन्तु गनीमत यह है कि

गनीमत यह है कि अब भी भारत में माता-पिता की रक्षा करना कर्तव्य माननेवालों तथा उससे च्युत हो जाना पाप माननेवालों की संख्या बहुत बडी है।

अब भी भारत में माता-पिता की रक्षा करना कर्तव्य माननेवालों तथा उससे च्युत हो जाना पाप माननेवालों की संख्या बहुत बडी है और निकट भविष्य में वह पश्चिम या चीन की नकल इस बात में करेगा, यह संभव प्रतीत नहीं होता।

भारत का आदर्श ई० पूर्व अर्थात् प्राचीन काल में आत्मोन्नति का था। भौतिक प्रसाधनो का उपयोग किये जाने पर भी उन को जीवन में गौण स्थान ही दिया जाता था। आनन्द का मूल आधार मन को माना जाता था, दृष्टिकोण को माना जाता था। कार्य की अपेक्षा कार्य के प्रति दृष्टिकोण को महत्व दिया जाता था। भौतिक प्रसाधनों को जितनी ही कम मात्रा में उपयोग में लाया जाये, उतना ही अच्छा है। जीवन को सार्थक, सुखी और सफल बनाने केलिए भौतिक पदार्थों की आवश्यकता अत्यंत अल्प है। यही धारणा प्राचीन भारत के मनीषियों की थी। यही दृष्टिकोण यूनान और चीन का भी था। दार्शनिक डायोजिनस के सामने सम्राट अलक्साण्डर अपने सेना नायक और अन्य अफसरों के साथ आया और उन से पूछा—"मैं आप केलिए क्या कर सकता हूँ? क्या मुझे सेवा का अवसर देंगे? उस वक्त डायोजिनस धूप सेंक रहे थे। अलक्साण्डर की छाया उनपर पडी जिससे उनके धूप खाने में व्याघात हुआ। डायजनिस ने केवल यही कहा—आप ज़रा हट जाइये ताकि मुझ पर आप की छाया न पडे। उसी दार्शनिक के संबंध में यह कथा प्रचलित है कि उनसे सम्राट का एक प्रशस्त दरबारी कवि मिला। उस वक्त वे दाल पानी में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

017852

थोडा चावल, जल और हाथों का तकिया मेरे लिये पर्याप्त सुख के साधन हैं। सदाचार शून्य संपत्ति और मकान मेरे लिये व्यर्थ हैं।

धो साफ कर रहे थे। उनकी दरिद्रता पर दुःखी हो कवि ने उनसे कहा— यदि आप थोडी प्रशंसा सम्राट की करते तो आप केलिए दाल धोने की नौबत नहीं आती। डायोजनिस ने कहा– आप मुझ जैसे दाल धोते तो आप को सम्राट की प्रशंसा नहीं करनी पडती।

सुकरात जब जेल में अंतिम घडियां गिन रहे थे तब उनकी स्त्री उन केलिए स्वादिष्ट स्वीट बनाकर ले गई, सुकरात ने उस की ओर ध्यान ही नहीं दिया। इस पर स्त्री ने कहा सचमुच स्वादिष्ट है, चख कर देख लो। सुकरात ने कहा—मैं जीने केलिए खाता हूँ —I eat to live. चीन के कनफूश्यस ने एक प्रसंग में कहा—

With a meal of coarse rice and with water to drink and my bent arm for my pillow even in this I can find happiness. Riches and homes without rightousness are to me as fleeting clouds.

थोडा चावल, जल और हाथों का तकिया मेरे लिये पर्याप्त सुख के साधन हैं। सदाचार शून्य संपत्ति और मकान मेरे लिये व्यर्थ हैं।

साधन संपत्ति के प्रति उदासीनता, आत्मा की उन्नति केलिए अनवरत श्रम, हर बात में अति से बचने की प्रवृत्ति, मध्यम मार्ग को हर मामले में स्वीकार करना, इत्यादि भारतीय संस्कृति के मूल तत्वों में हैं। इसका अर्थ यह कदापि नहीं है कि प्राचीन भारत में विलासिता के प्रसाधनों का अभाव था अथवा भौतिक सुख भोग में लोग लगे नहीं रहते थे। इन के उपभोग में वे पीछे कदापि नहीं थे, परन्तु आसक्ति, मोह, उद्दाम लालसा उनमें नहीं थी। असल में वे किसी भी अवसर बगैर किसी प्रकार के मानसिक कष्ट के उनको त्याग सकते थे। वे अनासक्त थे। कर्म के प्रति अनासक्ति थी। गीता अनासक्ति योग का महा काव्य है। राजा जनक सुख वैभव और विलासिता के सब प्रकार के साधनों से युक्त होने पर भी अनासक्त कर्म योगी थे।

व्यक्ति और समाज तथा राज्य के प्रति प्राचीन भारतीय चिंतन भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशेष उल्लेख की अपेक्षा रखता है। राजहित या समाजहित केलिए स्वार्थ को तिलांजलि देना पडता था, यह व्यक्ति का कर्तव्य था और उसके लिए व्यक्ति का स्वयं अपने को त्याग देना अति नहीं समझा जाता था। दधीचि ऋषि ने अपनी हड्डियाँ दे दी थीं, ताकि उनसे विश्व-मंगल के लिए शस्त्र बनाया जाय। समाज में चारित्रक उदात्तता की स्थापना केलिए राम ने सीता को त्यागा था अथवा सीता ने स्वयं वनवास किया था। बौद्ध कालीन भारत के एक राजा के संबंध में यह कथा प्रचलित है कि उसने एक अत्यंत रूपवती कन्या की ओर आकृष्ट हो उससे विवाह करना चाहा। परन्तु कहीं कोई ऐब उसमें न हो, इस की परीक्षा लेनी चाहिए। उसने पाँच ब्राह्मणों को उसकी परीक्षा लेने केलिए भेजा। कारण यह था, अगर उस में कोई दोष है तो वह दोष उसके पुत्र में भी उत्पन्न होगा। यदि ऐसा हो गया तो पुत्र के राजा होने पर राज्य की अवनति होगी।

अब प्रश्न यह है कि भारतीय संस्कृति के इन मूल्यों के प्रति वर्तमान भारतीय समाज में क्या दृष्टिकोण है। क्या पूर्ववत वे स्थित हैं? क्या उनमें विघटन तो नहीं हुआ है? न्याय और अन्याय, कर्तव्य और अकर्तव्य के बीच की विभाजक रेखा स्पष्ट है? अपराध करनेवालों को क्या दंड समान रूप से मिलता है? औरों का हक हडपना, क्या सचमुच ही बुरा माना जाता है? पृष्ट-बृहदाकार मजबूत कुत्ते के इर्दगिर्द निश्चिन्त घूमने वाला दुर्बल हड्डियों का ढाँचा सदृश कुत्ता आप को दिखाई देगा। दुर्बल कुत्ता निश्चिन्त

समाज में चारित्रिक उदात्तता की स्थापना केलिए राम ने सीता को त्यागा था अथवा सीता ने स्वयं वनवास किया था।

है कारण वह जानता है बडा कुत्ता उसको हानि नहीं करेगा। बडे राष्ट्र के पास स्थित दुर्बल छोटा राज्य निश्चित है? आप खुद ही सोच लीजिए। बडे राष्ट्रों के समीपवर्ती राज्यों की दशा अब क्या है? भारतीय संस्कृति के आधारभूत मूल्यों के प्रतीक सत्य प्रेमी हरिश्चन्द्र, स्वार्थ त्यागी दधीचि, दानवीर कर्ण, कर्मयोगी कृष्ण, प्रजावत्सल राम, बुद्ध, अशोक आदि को अब कौन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय संस्कृति के आधारभूत मूल्यों के प्रतीक सत्य-प्रेमी हरिश्चन्द्र, स्वार्थ त्यागी दधीचि, दानवीर कर्ण, कर्मयोगी कृष्ण, प्रजावत्सल राम, बुद्ध, अशोक आदि को अब कौन पूछता है ?

पूछता है ? सांस्कृतिक मूल्यों के विघटन से उत्पन्न यह स्थिति क्या सचमुच ही डरावनी नहीं है ? इस स्थिति से उबरने का क्या उपाय है ? एकमात्र उपाय यह दीखता है कि उनके द्वारा प्रसारित इन मूल्यों का पुन:प्रसार हो । अनेक भाषाओं के इस भारत में यह कैसे हो ? एक मात्र माध्यम इस केलिए हिन्दी प्रचार है । इन मूल्यों की कथाएँ, इतिहास, चरित्र इत्यादि का प्रचार हो ! हिन्दी को छोड अन्य भाषाओं में इनका प्रचार होने पर पर्याप्त प्रभाव नहीं पडेगा । क्योंकि उनका क्षेत्र सीमित है । अंग्रेज़ी के द्वारा यह बिलकुल संभव नहीं है । कारण, उसमें हमारी संस्कृति के मूल्यों को वहन करने की शक्ति नहीं है । वर्तमान समय भारतीय संस्कृति के मूल्यों का प्रचार-प्रसार थोडी बहुत मात्रा में हिन्दी के माध्यम से दूरदर्शन कर रहा है । यह शुभ कार्य है । हमारी संस्कृति के मूल्यों को पुन:प्रतिष्ठा होगी और अवश्य होगी ! भारतीय जनता जड़ नहीं है वह सांस्कृतिक मूल्यों का महत्व जानती है । तभी उसने दूरदर्शन के रामायण और महाभारत को अपनाया है । इसी कारण दूरदर्शन लोकप्रिय हुआ है । ★

वाणिज्य मंत्रालय में हिन्दी को प्रोत्साहन

वाणिज्य मंत्रालय की हिन्दी सलाहकार समिति की 13 वीं बैठक में राजभाषा अधिनियम के 25 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर व्यापार तथा वाणिज्य से संबंधित व्यापारिक विनिमयों तथा सरकारी कामकाज में हिन्दी के प्रयोग को प्रोत्साहन देने के लिए विभिन्न कार्यक्रमों द्वारा समारोह आयोजित करने पर सहमति व्यक्त की गई । इस बारे में विस्तृत कार्यक्रम निर्धारित करने के लिए वाणिज्य मंत्री की अध्यक्षता में एक उप-समिति का भी गठन किया गया ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंतराल

जगदीश हरिजन

नये साल
पुराने साल
के बीच है
कितना अंतराल !
बीते साल में
जो गरीब था
नये साल में
गरीबी की रेखा से
और नीचे आ गया !
बीते साल में
जो अमीर था
नये साल में
अमीरी की रेखा से
और ऊपर चढ़ गया !
देश की आरंभिक
प्रगति बेमिसाल
जाग्रत में भूखे
भिखारी फटेहाल
को दिवा स्वप्न दिखाते
बनाने उनको मालामाल ।

कल का काल
तो था विकाराल ।
कल से भी प्यारा
भयावह हो रहा
आज का हाल !
आतंक, हिंसा, भ्रष्टाचार,
भेदभाव, घृणा का जाल
खुद फैला कर
खुद उलझता जा रहा
संकल की तरह
आज का व्यक्ति
संस्था, समाज
मत पूछो किसी का हाल ।
चारों ओर हो रहा कमाल
नये साल पुराने साल
के बीच है कितना अंतराल !

एस. 290, स्कूल ब्लाक
शंकरपुर, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाषा और भावना

एस. आर. सिंह
सहशिक्षा सलाहकार
केन्द्र मानव संसाधन विकास मंत्रालय
नई दिल्ली

भारत एक ऐसा देश है जहाँ दुनियाँ के सभी धर्मों के अनुयायी और आस्थाओं के लोग रहते हैं। यहाँ अनेक प्रकार की संस्कृतियाँ पली हैं और आगे बढ़ी हैं। सभी प्रकार के लोग समाज में मिलजुल कर अपने विश्वासों की आधारशिला पर विकास की ओर अग्रसर होते रहे हैं। यहाँ विश्वासों और विचारों की विभिन्नता होते हुए भी भाई-चारे और सहयोग के सहारे समाज में एकता को बल मिला है। कारण यह है कि यहाँ के लोगों की भावनाओं में किसी भी प्रकार मत-भेद नहीं रहा है। परन्तु जब कभी यह अपवाद का विषय बना, तभी सहनशीलता के आधार पर शांति को पसन्द किया गयाहै। सभी प्रकार की भावनाओं का एक जगह मिलकर रहना और बढ़ना इस बात का प्रतीक है कि ये सभी भावनाएँ समानान्तर रूप से अपने रास्ते बहती हैं। जहाँ कहीं भी उनमें असमंजसता आई, वहाँ अस्थिरता सामने आती है जिसके कारण उनमें कुछ आपसी विरोध पैदा होने की प्रक्रिया शुरू हो जाती है। इसलिए समाज में भावनाओं का एक बहुत बडा महत्व है। समाज में शांति रहे उसके लिए आवश्यक है कि सभी भावनाओं का आदर-सत्कार किया जाए और यदि कहीं कोई अवरोध पैदा होता है तो उसे सहनशीलता और उदारता के साथ आदान-प्रदान के आधार पर समस्या को

समाज में शांति रहे उसके लिए आवश्यक है कि सभी भावनाओं का आदर-सत्कार किया जाए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुलझाया जाना हितकर होता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि भावनाओं से भी समाज का उत्थान और पतन होता है। इतिहास इसका साक्षी है।

यदि व्यक्ति की अपनी भावना अपने तक ही सीमित रहे तो यह उसकी व्यक्तिगत धरोहर होती है। परन्तु जब वही भावना अपने से अलग होकर उठी कई तरंगों में अलग-अलग रूप से चहुँ दिशाओं में फैलती है और अपना प्रभाव छोड़ती है, तो यह समाज का विचारणीय विषय बन जाता है। इन भावनाओं का बहना ही भाषा की उत्पत्ति का कारण बनता है। किसी भावना को व्यक्त करने के लिए कोई भाषा चाहिए या किसी संकेत की आवश्यकता होती है। इस प्रकार भाषा को भावनाओं का वाहन माना जाता है। भाषा का कर्तव्य होता है कि वह मनुष्य की भावनाओं को इस ढंग से व्यक्त करे और रूप दे जिससे व्यक्त करने वाले व्यक्ति की बात को उसी प्रकार समझा जाये जिस रूप में उसे कहा गया है और जिस आशय से उसे व्यक्त किया गया है। देखा जाता है कि भाषा ही विचारों को जन्म देती है। उन

वास्तव में भाषा मस्तिष्क से नहीं, हृदय से उत्पन्न होती है और हृदय से उत्पन्न हुई भाषा सच्चाई के रूप में प्रखर होती है।

को आभूषित तथा अलंकृत करती है। मनुष्य एक विवेकशील व्यक्ति है जो वेदना और संवेदनाओं से प्रभावित होता है। इनसे उसकी विचारधारा को नया रूप मिलता है। कभी-कभी उसकी अपनी मान्यताओं को भी ठेस पहुँचती है और कभी उसके विचारों को प्रवाह मिलता है। यदि भावनाओं की अभिव्यक्ति में कटुता होती है और भाषा उसे हवा देती है तो यह एक कलह का विषय बन जाता है और व्यक्ति इस कलह का कारण भाषा के सर पटकता है। वास्तव में भाषा मस्तिष्क से नहीं, हृदय से उत्पन्न होती है और हृदय से उत्पन्न हुई भाषा सच्चाई के रूप में प्रखर होती है। इसलिए यदि व्यक्ति की अपनी प्रकृति में कुछ दोष है और साथ में भावनाओं में स्वच्छता नहीं है तो दोष का भागीदार भाषा को नहीं ठहराया जा सकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व भाषा किसी विघटन का कारण नहीं बनी और न ही वह किसी कलह का कारण बनी।

भाषा के इस पहलू को कि वह समाज की भावनाओं की अभिव्यक्ति करती है, समझने की अलग-अलग रूप एवं परिस्थियाँ होती हैं। स्वतंत्रता प्रप्ति के पूर्व भाषा किसी विघटन का कारण नहीं बनी और न ही वह किसी कलह का कारण बनी। अंग्रेज़ी आधिपत्य में सभी भारतवासियों की भावनाओं को व्यक्त करने की स्वतंत्रता नहीं थी। इसलिये भाषा कभी भी विवाद का विषय नहीं बनती थी। अंग्रेज़ों ने अपनी भाषा के माध्यम से अपनी संस्कृति एवं अपने वर्चस्व को स्थापित किया। भारतीय भाषाओं की कोई बात न तो कही जाती थी और न ही सुनी जाती थी। सारे देश में जहाँ जो भाषा बोली जाती थी वह वहीं एक क्षेत्रीय आधार पर स्थित थी। जब समाज में कुछ व्यक्तियों को अपने क्षेत्र से बाहर जाना होता तो वे भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए अंग्रेज़ी भाषा का सहारा लेते या फ़िर संकेतिक भाषा से काम चलाते। अंग्रेज़ी भाषा के प्रचार-प्रसार में अंग्रेज़ों की शक्ति एवं नौकरी का प्रलोभन बहुत बड़ा कारण बना जिसको आम जनता ने अपने व्यक्तिगत लाभ अथवा पद के लिए स्वीकार किया। इसी स्वीकारता ने अंग्रेज़ी भाषा को हृदयग्राही बनाया और उसे विकास की उस चरम सीमा पर पहुँचाया जिसे 40 वर्षों के बाद भी देश में आज उतना ही महत्व दिया जाता है जितना कि अंग्रेज़ी राज्य में दिया जाता था।

भाषाओं के आधार पर देश का विभाजन एवं वर्गीकरण एक राजनैतिक निर्णय था जिसका संभवतः उद्देश्य था कि भाषाओं के आधार पर क्षेत्रीय विकास हो। क्षेत्रीय भाषाओं का विकास हो इस धारणा से राष्ट्रीय स्तर पर एकरूपता एवं एकता को और मज़बूत बनाने का प्रयास किया गया। परन्तु वास्तव

इन क्षेत्रीय भाषाओं ने अपने-अपने क्षेत्र में तो विकास किया परन्तु राष्ट्रीय स्तर पर राष्ट्रीय भाषा को सहयोग नहीं दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में इस उद्देश्य से वांछनीय परिणाम प्राप्त नहीं हुए। क्षेत्रीय भाषाओं का विकास जिस दिशा में सोचा गया था उस ओर विकास हुआ, परन्तु एक दूसरा ही दृष्टिकोण सामने आया। इन क्षेत्रीय भाषाओं ने अपने-अपने क्षेत्र में तो विकास किया परन्तु राष्ट्रीय स्तर पर राष्ट्रीय भाषा को सहयोग नहीं दिया। हर क्षेत्रीय भाषा के लिए

भाषा के विवाद से आम जनता में एक जहर पैदा होगा और देश की एकता एवं अखण्डता पर आँच आने का एक बडा खतरा सदैव बना रहेगा।

राष्ट्रीय भाषा के समान महत्व पर आग्रह किया गया। परिणाम स्वरूप राष्ट्रीय भाषा के अस्तित्व को कायम करने में जिन क्षेत्रीय भाषाओं को आधारशिला का सहारा होना चाहिए था वह प्रत्यक्ष नहीं हुआ जिससे न केवल राष्ट्रीय भाषा का अनादर हुआ बल्कि देश की एकता एवं अखण्डता के प्रति भावनाओं में एक रोग पैदा हो गया है। यदि इस स्थिति में सुधार नहीं आया और न ही इसकी ओर कोई प्रयास किया गया तो संभवतः क्षेत्रीयता की चोट से राष्ट्रभाषा को आघात पहुँचेगा। भाषा के विवाद से आम जनता में एक जहर पैदा होगा और देश की एकता एवं अखण्डता पर आँच आने का एक बड़ा खतरा सदैव बना रहेगा।

इसलिए यह और भी आवश्यक है कि देश को एकता की भावनाओं के सूत्र में यदि अब न बाँधा गया, तो भविष्य में और आशंका पैदा होगी और स्थिति खराब होगी। हम सब भावनाओं को अपनी-अपनी भाषाओं के माध्यम से आगे तो बढायें परन्तु सबसे अधिक महत्व जिसे देना चाहिए था वह है हमारी राष्ट्रभाषा। क्योंकि किसी भी देश की एक राष्ट्रभाषा होना उतना ही आवश्यक है जैसे जीवात्मा के लिये प्राण। ❀

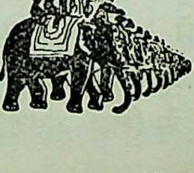

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आशा

डा० रती सक्सेना

विधाता ने जब मानव को बनाया,
तो स्वनिर्मित रचना को देख मुस्काया,
उसके अद्वितीय दिमाग की तुलना में,
सभी रचनाओं को निकृष्ट पाया।
किन्तु मानव के सीने में छोटा सा दिल,
धड़क रहा था, जो अभी तक खाली ही था,
विधाता ने—थोड़ा सा द्वेष, ज़्यादा सा स्नेह,
थोड़ा सा डाह, ज़्यादा सा प्यार,
थोड़ी सी वेबफाई, ज़्यादा भलाई,
इन सबके मिश्रण को दिल में मिलाया।
किन्तु दिल अभी खाली ही था।
विधाता चकराया, उसे कुछ भी समझ में नहीं आया,
तो उसने 'आशा' और 'निराशा' के पात्रों को उठाया।
किन्तु यहाँ एक ग़लती कर बैठा,
थोड़ी सी आशा के साथ ज़्यादा निराशा मिला बैठा,
फलस्वरूप—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम दूसरों से आशा करते हैं,
किन्तु दूसरों की आशा पूरी करने में डरते हैं।
'मा फलेषु कदाचन' का उपदेश देते हैं,
किन्तु फल की इच्छा से,
दूसरों के सुखों को बर्बाद करते हैं।
निराशा के हिण्डोलों में झूलते हुए,
आशा के सपने देखते रहते हैं।

हिन्दी अध्यापक प्रशिक्षण महा विद्यालय
केरल हिन्दी प्रचार सभा, तिरुवनन्तपुरम

रक्षा संगठन में हिन्दी

रक्षामंत्री श्री. कृष्णचन्द्र पन्त ने 1 - 12 - 1988 को दिल्ली में कहा कि तीनों सेना मुख्यालयों और उनके अधीन फील्ड इकाइयों से कहा गया है कि वे सरकारी काम काज में हिन्दी के प्रयोग की गति को बढायें। मंत्री महोदय अपने मंत्रालय के रक्षा विभाग की पुनर्गठित हिन्दी सलाहकार समिति की 17 वीं बैठक को सम्बोधित कर रहे थे।

बैठक में हिन्दी के प्रयोग में की गई प्रगति का विश्लेषण किया गया तथा रक्षा मंत्री की देखरेख में रक्षा विभाग एवं तीनों सेना मुख्यालयों में हिन्दी के प्रयोग की प्रगति की सराहना की गई।

रक्षा मंत्री ने "स्वतंत्रता के 40 वर्ष: रक्षा संगठन में हिन्दी" नामक स्मारिका का विमोचन किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राधे राधे

डा० एन. ई. विश्वनाथ अय्यर

बहुवर्णी और रमणीय सांझी कला देखकर आंध्र की रंगोली, तमिलनाड का कोलम और केरल का कळम याद आ रहे थे ।

(गतांक से आगे)

भारत का हर प्रदेश कृष्ण से अभिभूत है । हर प्रदेश की भाषा में श्रीकृष्ण-संबंधी वाङ्मय मिलता है। हर प्रदेश की ललित कलाओं के माध्यम से कृष्ण कथा प्रस्तुत की जाती हे । किन्तु सारी भारतीय भाषाओं और कलाओं में चर्चित कृष्णभावना पर एक ही मंच पर एक साथ विचारों का आदान-प्रदान सुनने का सौभाग्य वृन्दावन में ही प्राप्त हुआ । बन्दनवारों से सजे शामियाने में बाँके बिहारी की मूर्ति की उपस्थिति में गोष्ठी का शुभारंभ किया गया । संस्थान के भवन में उत्तर प्रदेश की 'साँझी' कला का नमूना सजाया गया था । बहुवर्णी और रमणीय सांझी कला देखकर आंध्र की रंगोली, तमिलनाड का कोलम और केरल का कळम याद आ रहे थे। ये सब देशी कलाकार हमारे पेड पौधों और प्रकृति के अन्य उपादानों से ग्रहण किये हुए रंगों का प्रयोग करके अद्भुत कला का चमत्कार दिखाते आये हैं। रंग चेतना व चित्र-रचना की इस प्राचीन परंपरा पर हमें गर्व होता है ।

विद्वानों के विचारों का मूल्यांकन करना अत्यंत कठिन है । मिल्कासिंह के दौडने की आलोचना लंगडा मैकूलाल कैसे करे ? असल में सारे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बडी श्रद्धापूर्वक आये थे, बांकेबिहारी के चरणों पर चढ़ाने फूल ले आये थे। हर फूल शहद से भरा था। निन्यानवे प्रतिशत भाषण चक्रटंकित और वितरित हो गये। इतना व्यवस्थित प्रबंध मिलना बडा कठिन है। मैं उन वार्ताओं की छोटी सी झलक देने को कोशिश तो कर रहा हूँ, पर वह झलक भी बडी ही अस्पष्ट रहेगी।

श्रीकृष्ण और उनकी लीलाएँ भारत की हर भाषा के वाङ्मय में वर्णित हैं। प्रत्येक प्रांत के लोग प्रभु को अपने प्रदेश का मानते हैं, अपनी विशेष वेशभूषा से सजाते हैं।

वृन्दावन के कुंजबिहारी का मोरमुकुट और बाँकी छवि से केरल के उण्णिकृष्णन की वेशभूषा कहीं भिन्न है।

वृन्दावन के कुंजबिहारी का मोरमुकुट और बाँकी छवि से केरल के उण्णिकृष्णन की वेशभूषा कहीं भिन्न है। इसी प्रकार कृष्ण संबंधी उत्सव प्रत्येक प्रान्त की अपनी अपनी परंपरा के अनुकूल मनाये जाते हैं। यों तो प्रान्तों के साहित्य में अलग अलग कृष्णलीलाएँ कम या अधिक महत्व प्राप्त करती हैं। जैसे—हिन्दी में रासलीला का जितना व्यापक वर्णन है उतना मलयालम में नहीं है। मलयालम में माखन लीला का प्रसंग अधिक चर्चित है। कृष्ण-सुदामा का प्रसंग दक्षिण में विशेष प्रसिद्ध रहा है। 'सुदामा' नाम की जगह 'कुचेल' नाम दक्षिण में अधिक चला है। श्रीकृष्ण का एक स्वरूप गोप-बालक का है। दूसरा है भगवान के अवतार का। इस दूसरे तत्व का प्रस्तुतीकरण विभिन्न भाषाओं में विभिन्न प्रकार से किया गया। उडिया में जगन्नाथ के रूप में कृष्ण का ही चित्रण है तो मराठी में विट्ठल के रूप में। मलयालम में तो गुरुवायूरप्पन के रूप में भी कृष्ण का ही भजन किया जाता है। आंध्र में बालाजी या वेंकटेश्वर का मूल स्वरूप कृष्ण भक्ति का ही है। गुजरात में द्वारिकाधीश और रणछोडजी मुख्य हैं। उत्तर प्रदेश में राधाकृष्ण के युगल की वन्दना अधिक पाई जाती है।

जैसे विभिन्न प्रदेशों के मंदिरों में कृष्ण के विविध रूप हैं वैसे ही भारत की विभिन्न भाषाओं के वाङ्मयों में भी कृष्ण के विविध रूप हैं, जिनपर प्रादेशिक संस्कृति व परंपरा का प्रभाव पाया जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरल का कृष्णनाट्टं, तमिलनाडु का भरतनाट्यम्, आंध्र की कुच्चिपुडी, उत्तरप्रदेश का कथक-रास, मणिपुरी व उडीसी नृत्यशैलियाँ—सब नृत्तनृत्यों में कृष्णतत्व की प्रस्तुति होती है।

जैसे, मणिपुरी भाषा के कृष्णकाव्य में शाक्त और तांत्रिक प्रभाव है। मगर सभी भाषाओं में कृष्णकाव्य समान रूप से लोकप्रिय रहा है।

साहित्य के क्षेत्र की तरह हर भारतीय प्रदेश की कलाओं में भी कृष्णभक्ति का योग पाया जाता है। केरल का कृष्णनाट्टं, तमिलनाडु का भरतनाट्यम्, आंध्र की कुच्चिपुडी, उत्तरप्रदेश का कथक-रास, मणिपुरी व उडीसी नृत्यशैलियाँ—सब के नृत्तनृत्यों में कृष्णतत्व की प्रस्तुति होता है। संगीत के क्षेत्र में जयदेव का गीत गोविन्द इसका उदाहरण है। यह देखकर सुखद आश्चय होता है कि उडासा का यह गायक सारी भारतीय भाषाओं और प्रदेशों में छाया हुआ है। केरलीय सोपान संगीत का प्रथम उदाहरण सोपान शैली पर गाया हुआ जयदेवगीत रहा है। सूरदास जैसे अष्टछाप-कवियों के कृष्णगीत राग-रागिनियों में निवद्ध हैं। प्राचीन तमिष के मधुर कृष्णभक्तिगीत नालायिरम दिव्यप्रबंधम के गीतों में खासकर आंडाल के गीतों में मिलते हैं।

हमारे मंदिरों के स्तंभों, छतों, दीवारों पर कृष्ण की मूर्तियाँ व चित्र विविध भंगिमाओं में प्रस्तुत किये गये हैं। राजस्थान में कृष्णलीलाओं के कितने ही प्रकारों के रंगीन एवं रमणीक चित्र मिलते हैं। कांगडा शैली, पहाडी शैली आदि विभिन्न शैलियों में ये अंकित हैं। राग रागिनियों के स्वरूप को चित्र के माध्यम से प्रस्तुत करनेवाले भी कृष्णकथा से उसे जोडते हैं। प्रत्येक प्रदेश की कितनी ही लोककलाएँ कृष्ण की कथा या झांकी किसी न किसी रूप में प्रस्तुत करती हैं। हिन्दी प्रदेश में नौटंकी, रास, लावनी आदि के माध्यम से भी यही प्रस्तुत होता है।

श्रीकृष्णसाहित्य पर जब विविध धार्मिक एवं दार्शनिक धाराओं का

केरलीय सोपान संगीत का प्रथम उदाहरण सोपान शैली पर गाया हुआ जयदेवगीत रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रभाव पडा तब विभिन्न संप्रदायों का प्रारंभ हुआ। दार्शनिक चिंतन-प्रक्रिया का अंतर ही इनका अंतर है। निंबार्क संप्रदाय, पुष्टि संप्रदाय, कालीकृष्ण संप्रदाय आदि संप्रदायों में कृष्णवर्णन का परिचय कुतूहलवर्धक रहा। जैनियों की कृष्णकथा बिलकुल निराली लगी। उनकी रामकथा भी तो ऐसी ही रही है।

वृन्दावन की श्रीकृष्ण विषयक गोष्ठी के संभागी विद्वानों का भी

दयाप्रकाश सिन्हा के मुँह से केरल के कृष्णनाट्टम पर प्रामाणिक विवरण सुनकर और उनके द्वारा प्रदर्शित कृष्णनाट्टम के रंगीन स्लाइड देखकर मुझ केरलीय को हर्ष व गौरव का अनुभव हो रहा था।

स्मरण आता है। मनीषी विद्यानिवास मिश्र ने इसका श्रीगणेश किया तो कन्हैयालाल माहेश्वरी ने श्री अरविंद द्वारा उद्घाटित कृष्ण वैभव की ओर श्रोताओं का ध्यान आकृष्ट किया। पुरातत्व विद्या के आचार्य कृष्णदत्त वाजपेयी और मध्यकालीन साहित्य के प्रतिष्ठित विद्वान डॉ० विजयेंद्र स्नातक आये थे। मध्यम पीढी के विद्वानों एवं विदुषियों में मणिपुर विश्वविद्यालय के डॉ० जगमलसिंह से लेकर गुजरात विद्यापीठ के डॉ० अंबाशंकर नागर तक। कश्मीरी व डोगरी भाषाओं से लेकर तमिळ व मलयालम तक सारी भाषाओं के प्रतिनिधि थे। उत्तर प्रदेश के संस्कृति विभाग के निदेशक उत्साही युवा दयाप्रकाश सिन्हा के मुँह से केरल के कृष्णनाट्टम पर प्रामाणिक विवरण सुनकर और उनके द्वारा प्रदर्शित कृष्णनाट्टम के रंगीन स्लाइड देखकर मुझ केरलीय को हर्ष व गौरव का अनुभव हो रहा था। यही भारत को भावात्मक एकता का सही रास्ता है। केवल कुर्सीपूजा के दिनों में दयाप्रकाश सिन्हा का यह अखिल भारतीय संस्कृति प्रेम अभिनंदनीय और अनुकरणीय है।

वृन्दावन शोध-संस्थान की कृष्ण-गोष्ठी का आयोजन मोहक व पवित्र शरदपूर्णिमा के पर्व पर किया गया था। शरद की पूर्णिमा की रात को सुधाकर सारी धरती को सुधावर्षा से श्वेतमय बना देता है। महादेवीजी के शब्दों में राकेश निशा को धो देता है। मगर केवल धोने से जनजन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कैसे मंत्रमुग्ध हो। अवश्य ही वह सुधा का सम्मोहन है। आगरे का ताजमहल शरदपूर्णिमा की रजनी में प्रेम का भाष्य मूक वाणी में सुनाता है। इसे आंखों से अनुभव करने हज़ारों की भीड लगती है। जब एक मामूली आदमी और उसकी प्रेयसी के प्रेम का स्मृतिमंडप शरद रजनी में इतने लोगों को खींच लेता है तब बाँके और उनकी प्रेयसियों की रासलीला से धन्य बनी शरदपूर्णिमा का आनन्द पाने केलिए वृन्दावन के नर नारियों का उत्साह क्यों अपार न हो! इसलिए उत्तर प्रदेश सरकार के संस्कृति विभाग ने शरदपूर्णिमा को वृन्दावन में चार दिनों का उत्सव आयोजित करके अत्यंत उचित कार्य किया है।

जयपुरिया महल के विशाल प्रांगण में खुले मंच पर भारतीय संगीत व नृत्त-नृत्यों की प्रस्तुति हुई। क्या शिक्षा संस्थाएँ, क्या कार्यालय, क्या कारखाने, क्या विधान सभाएँ—सर्वत्र दिनभर राग-द्वेष, तनाव, तू तू मैं मैं का नज़ारा मिलता है। यात्रा में धक्कामुक्की होती है। किंतु ऐसे ही नरनारी ठंडी रात में खुले मैदान में स्वयं अनुशासित होकर घंटों बैठे रहे। यह संगीत व भक्ति के समन्वित

क्या शिक्षा-संस्थाएँ, क्या कार्यालय, क्या कारखाने, क्या विधान सभाएँ—सर्वत्र दिनभर राग-द्वेष, तनाव, तू तू मैं मैं का नज़ारा मिलता है।

प्रभाव का जादू था। इसमें आश्चर्य भी नहीं करना चाहिए क्योंकि ये वृन्दावनवासी उन गोप गोपियों के उत्तराधिकारी तो हैं जो कृष्ण का मुरलीगान सुनकर सांसारिक कर्तव्य एवं बंधन तक को तुच्छ मान जमुना किनारे कदंब के नीचे कृष्ण के चारों ओर इकट्ठे हुए थे।

यह देखकर मुझे आनन्द आया कि वृन्दावन के इन कलाप्रेमियों ने कलाओं के सामने प्रान्तीयता या भाषा के अंतर को कोई महत्व नहीं दिया। उन्होंने प्रथम दिन जिस श्रद्धा से यामिनी कृष्णमूर्ति का भरत-नाट्यम देखा उसी श्रद्धा से दूसरे दिन उषा दातार का कन्नड नृत्य और कुचिपुडी नृत्य देखा। तीसरे दिन काजल शर्मा का कथक नृत्य तो उत्तर प्रदेश का ही था। वृन्दावन-वासियों की श्रद्धा देखकर यामिनीजी गद्गद हो उठी थीं। काश! यह ममता व श्रद्धा भारतीयों के मन में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छिपकर बैठे सांप्रदायिक व राजनैतिक रागद्वेष को समाप्त कर देता! अगर ऐसा हो तो रामजन्म भूमि और बाबरी मसजिद के पीछे उत्तेजित भाई गले मिलेंगे और हमारा देश संसार में ऊँचा होगा।

वृन्दावन के शरद उत्सव में महारास की अद्भुत झाँकी मिली वह सचमुच अनोखी थी—गिरा अनयन नयन बिनु बानी। दक्षिण में

अगर ऐसा हो तो रामजन्मभूमि और बाबरी मसजिद के पीछे उत्तेजित भाई गले मिलेंगे और हमारा देश संसार में ऊँचा होगा।

कोलाट्टम, कृष्णनाट्टम, कथकलि आदि में राधाकृष्ण का नृत्य होता है। किंतु महारास को खास कर वृन्दावन के महारास की तुलना महारास से ही हो सकती है। वह नृत्य है, नाटक है, संगीत है। इन सब में भक्ति और अलौकिकता का निराला रंग घुला हुआ है जिससे जनता उसके साथ अपने को तन्मय, एकाकार पाती है।

रास में प्रमुख पार्श्वगायक ही सूत्रधार व उद्घोषक की भूमिका

दक्षिण में कोलाट्टम, कृष्णनाट्टम, कथकलि आदि में राधाकृष्ण का नृत्य होता है।

निभाता है। सूत्रधार की उद्घोषणा पर जब कृष्ण व राधा का प्रवेश होता है तब उनके स्वर में स्वर मिलाकर सारे दर्शक एक स्वर में 'राधे राधे" शब्द दुहराते उनकी अभ्यर्थना करते हैं। यह श्रद्धापूर्ण दृश्य वृन्दावन का अनोखा अनुभव था, रोमांचकारी था। बाँके बिहारी, राधा, गोपियाँ—सब की भूमिकाएँ किशोर ब्राह्मण बालक ही करते हैं।

राधा महारास देखने की इच्छा प्रकट करती है और गोपाल उसकी इच्छा पूरी करने का वचन देते हैं। वे मुरली बजाते है तो गोपियाँ उसके जादू से मोहित हो पति, परिवार तक को छोड कृष्ण के पास आती हैं। गोपाल नकली गंभीरता धारण कर उन्हें पतिव्रताधर्म और मातृधर्म का उपदेश देने लगते हैं। गोपियाँ भी उनसे बहस करती हैं। उनकी मधुर उक्तियाँ, करुणा जनक स्थिति और अकृत्रिम ममता अंत में मुरलीधर को हरा देती हैं। वे महारास केलिए तैयार होते हैं। य यह परा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेल्पत्तुर नारायण भट्टतिरि ने नारयणीयम में इस प्रसंग का जो शब्दचित्र खींचा है उसे प्रस्तुत करने से बढकर कुछ भी बताने की हिम्मत नहीं पडती ।

संवाद लोकभाषा व्रज में है । ग्राम की स्वच्छ मधुरता के साथ किशोरों की किशोरता पूरे प्रसंग को मोहक बनाती है ।

संवाद के अंत में गोपियों के साथ कृष्ण का रास शुरू हुआ । संगीत, ताल व संगत में गोपियों और कृष्णों का नृत्य प्रारंभ हो गया। मेलपत्तूर नारायण भट्टतिरि ने नारायणीयम में इस प्रसंग का जो शब्दचित्र खींचा है उसे प्रस्तुत करने से बढकर कुछ भी बताने की हिम्मत नहीं पडती । क्योंकि वह अनुभव करने की बात थी ।

वेणुनादकृत तानदानकल गानरागगति-
योजना-
लोभनीय मृदुपादपातकृत तालमेनन-
मनोहरम् ।
पाणिसंक्वणितकंकणं च मुहुरंसलंबित-
करंबुजं
श्रोणिबिम्बचलदंबरं भजत रास-
केलिरसडंबरम् ।

महारास की प्रस्तुति शरद-पूर्णिमा की रात को वृन्दावन में विविध स्थलों पर होती है । इसे जगह जगह उत्तर प्रदेश की सांस्कृतिक प्रदर्शनी का अंग तक बनाकर सरकार बहुत वांछनीय कार्य करती है, ऐसा नहीं लगता । केरल में तो तेय्यम आदि धार्मिक तत्वों को जुलूस के अंग के रूप में प्रस्तुत किया जाता है । इस ज़्यादती को गरीब कलाकार धन के लोभ व सत्ता के डर से चुपचाप सहन कर लेता हैं ।

लावनी-दंगल भी एक बढिया कार्यक्रम रहा । दंगल में भाग लेने-वाले दो दो दल डफ की संगत में लोकगीतों की बाजी में लगते हैं । लच्छेदार आवाज़ और मींठी व्रज-भाषा की कविता बडी प्यारी थी । इधर अकादमिक जगत में, खासकर दक्षिण में हिन्दी साहित्य के अध्ययन को भारतेन्दुकाल तक और खडी-बोली साहित्य तक सीमित करने की पुकार उठ रही है । वे व्रजभाषा की

इस ज्यादती को गरीब कलाकार धन के लोभ व सत्ता के डर से चुपचाप सहन कर लेता है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो केरल प्राकृतिक सुषमा के लिए, घर घर पर पलती दूधारू गायों के लिए प्रसिद्ध रहा, वहाँ अधिकांश स्थानों पर मिल्मा कंपनी के पोलीथीन पैकट का पतीला फीका दूध ही नज़र आता है।

इस मिठास का अनुभव कर पाते तो व्रजभाषा को छोडनें की बात कभी न कहते।

वृन्दावन के ग्रामीण वातावरण का अनुभव भी कम रोचक नहीं था। गोकुल की हृष्टपुष्ट गायों के झुंडों को सडक से चलते देख सूरदास के गीतों में वर्णित धौरी धूमरि गायें याद आती हैं। यशोदा माता का अनुरोध स्मरण आता है– कजरी का दूध पियहु, कान्ह, बंढैगी चोटी। जो केरल प्राकृतिक सुषमा केलिए, घर घर पर पलती दूधारू गायों के लिए प्रसिद्ध रहा वहाँ अधिकांश स्थानों पर मिल्मा कंपनी के पोलीथीन पैकट का पतीला फीका दूध ही नजर आता है। व्यवसायी गोपालक स्वीजरलैंट की गायों बैलों की कृत्रिम संतानों को और देशी गायों के साथ उनकी मिश्रित संतानों को पालकर पैसे कमाते हैं। वे दूध बडी मात्रा में देती हैं। किन्तु वे इतनी मोटी व बदसूरत लगती हैं कि उन्हें कामधेनु की वंशज पुकारने में कष्ट होता है।

वृन्दावन के एक मुख्य दृश्य की बात रह गई। वह है अंग्रेज़ी मंदिर का। हरे कृष्ण संप्रदायवालों का स्थापित किया हुआ यह मंदिर है बांकेबिहारी का। मगर वृन्दावन-वासी इसे अंग्रेज़ी मंदिर पुकारते हैं। महाप्रभु चैतन्य के भक्तिपथ का अनुगमन करनेवाले प्रभुपादस्वामी ने इस संप्रदाय का शुभारंभ किया था। भागवत में कलियुग में नाम-कीर्तन महिमा का वर्णन है। हरे कृष्णसंप्रदाय का मुख्य मंत्रयही नाम महिमा है। वे परस्पर अभिवादन तक "हरे कृष्ण" करते हैं।

यह विशाल कृष्णमंदिर संगमरमर का है, मूर्तियाँ भी संगमरमर की हैं। अमरीकी, अंग्रेज, जर्मन आदि विदेशी कृष्णभक्त चोटी रखे, नंगे वदन पर गेरुए/पीले कपडे पहने जब अखंड कीर्तन करते हैं तब तथाकथित भारतीय हिन्दू तमाशा के कुतूहल से टुकुर टुकुर देखते रहते हैं। यह बिडबना है। विदेशी भक्त कृष्णमंदिर के विकास में दत्तचित्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं। इस सप्रदाय की शाखाएँ भारत के अन्य नगरों में स्थापित होती जा रही हैं। उनका तगडा प्रकाशन-व्यवसाय भी है। अंग्रेज कंपनी के इतिहास से परिचित होने के नाते हम साधारण लोगों को श्रद्धा के साथ साथ कुछ आशंका भी होती है तो इसे सहज मानना चाहिए।

हरे कृष्ण संप्रदायवाले भी अब अन्य भक्तभंडलियों की तरह व्रज की परिक्रमा के कार्यक्रम में रुचि लेते हैं। कृष्णभक्तों के दल, जिनमें सैकडों नर-नारी होते हैं, गुजरात, राजस्थान, बंगाल आदि से व्रज की परिक्रमा नियमित दिनक्रम से करते हैं। कभी सात दिन, कभी पंद्रह दिन, कभी पूरा महीना लगता है। हरेकृष्ण संप्रदाय के भक्त तगडे बैलों के एक रथ पर प्रभुपादस्वामी और बांकेबिहारी के चित्र सजाये गायन-वादन के साथ परिक्रमा पर चले हैं। रास्ते में काफी भक्तों के सम्मिलित होने की आशा लेकर चले हैं।

वृन्दावन का यह दृश्य मन में एक टेढा सवाल उठा रहा था। इधर भारतीय अपनी धार्मिक परंपरा को छोड छाडकर विदेशी संस्कृति में डूबने अधीर हो रहे हैं। उधर भौतिक-वादी विदेशों के ये लोग भारत के सनातनियों से भी सनातनी और भक्त संप्रदाय के प्रवर्तक होने केलिए अधीर हो रहे हैं! कैसी विडबना है।

मेरे मन में यह प्रश्न बराबर उठ रहा था। मधुरा पहुँचने और दिल्ली की गाडी में बैठने पर भी प्रश्न उठ रहा था। चलती गाडी मानों उत्तर दे रही थी—आगे बढ, आगे बढ।

<u>मुखचित्र :</u>

हिन्दी सेवियों का राष्ट्रस्तरीय सम्मान केन्द्रीय हिन्दी संस्थान आगरा के रजत-जयंती समारोह के अवसर पर देश के चौबीस प्रमुख हिन्दी सेवियों को पुरस्कृत किया गया। प्रधान मंत्री श्री. राजीव गांधी के कर कमलों से पुरस्कार गृहण कर रहे हैं। केरल हिन्दी प्रचार सभा के मंत्री श्री. एम. के वेलायुधन नायर (ऊपर) और केरल ज्योति के संपादक श्री. के. जी. बालकृष्ण पिल्लै (नीचे) समीप हैं (दायें से) केन्द्र मानव संसाधन विकास मंत्रालय के राज्य मंत्री लेलितेश्वर प्रसाद शाही केन्द्रीय हिन्दी संस्थान के कार्यकारी निदेशक डा० अमर बहादुर सिंह, और भारत सरकार के शिष सजिव श्री अनिल बोर्डिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूरदर्शन के शैक्षिक कार्यक्रम

संसदीय कार्य एवं सूचना और प्रसारण मंत्री श्री हर किशनलाल भगत ने लोकसभा में श्री वक्कम पुरुषोत्तमन तथा दो अन्य सदस्यों के एक प्रश्न के लिखित उत्तर में बताया कि सी. आई. ई. टी. द्वारा मूल रूप से तैयार किये गये शैक्षिक टी वी. कार्यक्रम, तेलुगु, उड़िया, मराठी गुजराती तथा हिन्दी भाषाओं में प्रत्येक भाषा में 45 मिनट के लिए स्कूल लगने के दिनों के दौरान आँध्र प्रदेश, उड़ीसा, महाराष्ट्र, गुजरात, उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्यप्रदेश, राजस्थान, हरियाणा तथा हिमाचल प्रदेश राज्यों के सभी ट्राँसमीटरों से प्रसारित होते हैं ।

मंत्री महोदय ने बताया कि स्कूल टी वी. कार्यक्रम पाठ्यक्रम-उन्मुख होते हैं जिन्हें दूरदर्शन केन्द्र दिल्ली, बम्बई. मद्रास तथा श्रीनगर द्वारा, संबन्धित राज्य/संघ शासित क्षेत्र के प्राधिकरण के परामर्श से तैयार किये जाते हैं तथा इन केन्द्रों द्वारा अलग-अलग अवधियों में दूरदर्शन पर दिखाये जाते हैं ।

श्री भगत ने बताया कि उच्च शिक्षा के टी. वी. कार्यक्रम विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के लिए दोपहर 12.45 बजे से 1.45 बजे तक दुबारा सायं 16.00 बजे से सायं 17 00 बजे तक पूरे देश में टी. वी. पर प्रसारित किये जाते हैं । ये कार्यक्रम विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा संकलित किये जाते हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूरभाष : 61378

तार : "जय हिन्दी"

केरल ज्योति

सांस्कृतिक जागरण की मासिक पत्रिका

मई 1989

पुष्प 24

दल 2

एक प्रति—1 रु० 50 पै०

वार्षिक—15 रु०

संपादकीय

केसरी शताब्दी

केरल के निर्भीक पत्रकार स्व० केसरी बालकृष्ण पिल्लै की जन्म शताब्दी इस वर्ष केरल भर में मनायी जा रही है। इस का उद्‌घाटन अप्रैल 1989 में तिरुवनन्तपुरम में हुआ जिस का सचित्र विवरण इस अंक में दिया गया है।

केसरी यद्यपि मलयालम भाषा के पत्रकार थे तो भी उन का व्यक्तित्व और कृतित्व इतना प्रभावी और प्रेरणाप्रद था कि उन के शताब्दी समारोह को छोटे केरल तक सीमित न रख कर समूचे राष्ट्र का समारोह बनाया जाना चाहिए। राष्ट्र के प्रत्येक प्रान्त के भूतकालीन गौरव की स्मृतियां जब जुड जायेंगी तभी समूचे राष्ट्र की सामष्टिक भुतकालीन स्मृति का निर्माण होगा जो गौरवपूर्ण भविष्य के निर्माण की महत्वाकांक्षा को बढावा देगी। प्रत्येक प्रान्त के महान पूर्वजों के कष्टसहन, बलिदान और उपलब्धि की वीरगाथायें जिस विशालतर राष्ट्रीय कल्पना को जन्म देगी वह राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोये रखने में अत्यन्त सहायक होगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस अंक में

हिन्दी का ही नहीं, हिन्दी मनोवृत्ति का भी प्रचार हो 3

निर्भीक पत्रकार स्व० केसरी बालकृष्ण पिल्लै 5

प्रचार माध्यम और राजभाषा हिन्दी 8
श्री. कुन्नुकुषि कृष्णन कुट्टि

गायत्र (कविता) 14
मूल : डा० के. अय्यप्प पणिक्कर
अनु : श्री. वी. के. एस. नंपूतिरी

दक्षिण भारत की भाषायें और समन्वय की विविध दिशायें 18
डा० एन. ई. विश्वनाथ अय्यर

मलयालम कविता में समकालीन काव्यगत प्रवृत्तियाँ—एक झलक 26
श्रीमती जी. कमलम्मा

'गंगाशरण सिंह' हिन्दी वाग्स्पर्धा 33

अखिल केरल हिन्दी टंकण और आशुलिपि प्रतियोगिता के विजेता 35

पागलपन (लघुकथा) 36
मूल : श्रीमती कमलादास
अनु : श्री. के. राधाकृष्णन

लघुकथा की चुनौतियाँ 38
श्री. मनोहर सुगम

केन्द्र साहित्य अकादमी ने इस अवसर पर केसरी बालकृष्ण पिल्लै की एक विस्तृत जीवनी प्रकाशित कर के अत्यंत श्लाघनीय कार्य किया है। मलयालम और अंग्रेज़ी के विख्यात लेखक डा० के. एम. जोर्ज द्वारा रचित उक्त अंग्रेज़ी ग्रंथ में केसरी के जीवन के विविध पहलुओं पर पर्याप्त प्रकाश डाला गया है। आशा है उक्त ग्रंथ के आधार पर सभी भारतीय भाषाओं में केसरी पर काफी साहित्य रचा जायेगा और उन के व्यक्तित्व और कृतित्व पर राष्ट्र स्तरीय संगोष्ठी आदि का आयोजन होगा। केसरी शताब्दी पर विशेष डाक टिकट निकाला जाये तो अत्यंत उचित होगा।

एक बात और। केसरी की जीवनी केन्द्र साहित्य अकादमी ने अब अंग्रेज़ी में प्रकाशित की है। फलतः अंग्रेज़ी भाषा केसरी जीवनी से संपुष्ट हुई। पर हिन्दी भाषा केसरी की जीवनी से वंचित रह गयी। अंग्रेज़ी में पुस्तक प्रकाशन करनेवाली अनेकों संस्थायें ब्रिटन, अमेरिका जैसे अंग्रेज़ी भाषी विदेशों में भी हैं। विचारणीय है कि ऐसी पुस्तकें जब भारत की केन्द्र साहित्य अकादमी प्रकाशित करती है तो प्रथम संस्करण हिन्दी में लाना है या अंग्रेज़ी में।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी का ही नहीं, हिन्दी मनोवृत्ति का भी प्रचार हो

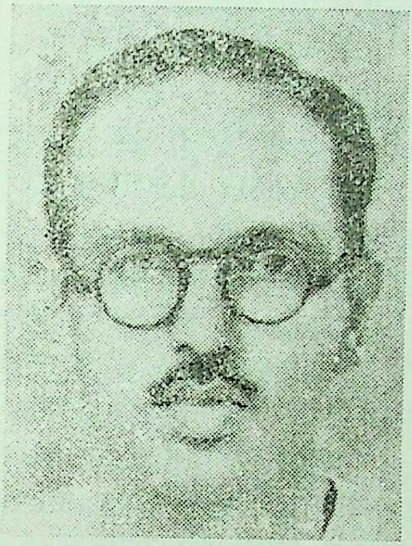

स्व० के. वासुदेवन पिल्लै

केरल हिन्दी प्रचार सभा के संस्थापक एवं प्रथम मंत्री स्व० के वासुदेवन पिल्लै के 82 वें जन्म-दिवस के अवसर पर सभा के तिरुवनन्तपुरम परिसर में आयोजित अनुस्मरण सम्मेलन ने यह अह्वान किया कि हिन्दी भाषा के प्रचार के साथ-साथ हिन्दी मनोवृत्ति का भी प्रचार करें। भारतीयता का बोध इसी मनोवृत्ति से विकसित हो सकता है।

स्वागत भाषण में केरल हिन्दी प्रचार सभा के मंत्री एवं अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ के कोषाध्यक्ष श्री.एम. के. वेलायुधन नायर ने स्व० वासुदेवन पिल्लैजी की हिन्दी सेवाओं का अनुस्मरण करते हुए कहा—"महात्मा गाँधी का आह्वान शिरोधार्य मानकर पिल्लैजी ने 18 वर्ष की आयु में सन् 1927 में हिन्दी प्रचार को अपना जीवन व्रत बना लिया था और 1934 तक वे दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा से जुड़ कर केरल के विविध भागों में हिन्दी का प्रचार करते रहे। चूँकि दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा का कार्यक्षेत्र दक्षिण के चारों प्रान्तों में व्याप्त था इसलिए केरल की हिन्दी प्रचार योजना पर संपूर्ण ध्यान केन्द्रित करनेवाली एक स्वतंत्र संस्था की आवश्यकता उन्हें महसूस हुई और फलस्वरूप उन्होंने सन् 1934 में केरल हिन्दी प्रचार सभा की स्थापना की। 1960 में ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभा की परीक्षायें मान्यता प्राप्त कर सकीं। तब तक उन्हें सभा के विकास केलिए तन-मन-धन से निस्तन्द्र प्रयत्न करना पडा था। अतिकठिन प्रयत्न ने उनका स्वास्थ्य बिगाड दिया और 1962 में 54 वर्ष की आयु में उनका देहान्त हो गया। केरल हिन्दी प्रचार सभा आज उनका उज्ववल स्मारक बनकर विकास के पथ पर अग्रसर हो रही है

सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए तिरुवनन्तपुरम नगर निगम के महापौर श्री पी. माक्सवेल ने पिल्लैजी की त्यागोज्वल हिन्दी सेवाओं पर प्रकाश डाला।

अध्यक्षीय भाषण में दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा की केरल शाखा के पूर्व उपाध्यक्ष एवं प्रमुख सामाजिक कार्यकर्ता श्री के. सी. पिल्लै ने कहा कि हिन्दी प्रचार का आरंभ खादी प्रचार, हरिजनोद्धार, सर्वधर्म मैत्री जैसे इतर रचनात्मक कार्यक्रमों के समान राष्ट्रीय नवोत्थान के अभिन्न अंग के रूप में हुआ था और आज भी हिन्दी प्रचार राष्ट्रसेवा का एक प्रमुख अंग बना हुआ है।

अंग्रेज़ी के प्राचार्य एवं मलयालम के प्रमुख कवि प्रो० विष्णुनारायण नंपूतिरी ने कहा कि हिन्दी प्रचार केवल एक भाषा का प्रचार ही नहीं अपितु भारतीयत्व का प्रचार भी है। भारतीय जीवन-दर्शन का प्रचार भी है। भारतीय एकता-बोध जिसका आज ह्रास हो रहा है, हिन्दी-बोध से जुड़ा हुआ है। अतः जिस मात्रा में हिन्दी प्रचार के माध्यम से हिन्दी बोध का प्रचार होगा उस मात्रा में भारतीय एकता-बोध भी बढेगा।

स्वतंत्रता सेनानी एवं प्रमुख हरिजन सेवक श्री. जूबा रामकृष्ण पिल्लै ने उन दिनों का अनुस्मरण किया जब स्वतन्त्रता अभियान के प्रचारार्थ कमला नेहरू और इन्दिरा प्रियदर्शिनी के साथ तिरुवनन्तपुरम आये पंडित जवाहरलाल नेहरू का स्वागत सरकारी विरोध के बावजूद स्व० के. वासुदेवन पिल्लै के नेतृत्व में हिन्दी प्रचारकों और हिन्दी प्रेमियों ने किया था। आपने आग्रह किया कि स्व० पिल्लै जी का सा हिन्दी बोध नई पीढ़ी भी अपनाये और राष्ट्रहित को ध्यान में रखकर जोश से आगे बढे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्भीक पत्रकार स्व० केसरी बालकृष्ण पिल्लै

मलयालम के निर्भीक पत्रकार एवं आधुनिक मलयालम के युग-प्रवर्तक आलोचक स्व० केसरी बालकृष्ण पिल्लै के जन्म शताब्दी समारोह का उद्घाटन तिरुवनन्त-पुरम में आयोजित सम्मेलन में केरल के मुख्य मंत्री श्री. ई. के नायनार ने भद्रदीप प्रज्वलित कर किया। पिल्लै जी का जन्म 1889 में और देहान्त 1960 में हुआ था। उन के द्वारा संपादित समाचार पत्रों में प्रमुख था "केसरी" जिस नाम से वे विख्यात हुए।

उद्घाटन भाषण में श्री. नायनार ने कहा- स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व और पश्चात के पच्चीस वर्ष केसरी का मुख्य कार्यकाल रहा। समर्पण की भावना से उन्होंने निर्भीकता के साथ पत्रो का संपादन किया। चिनगारी उगलते संपादकीयों से उन्होंने अधिकारियों की कड़ी आलोचना को। जनतंत्र और स्वतंत्रता पर उन्होने जोर दिया। आदर्शों के आधार पर उन्होंने ऐसे अधिकारियों की भी आलोचना की जिन्होंने व्यक्तिगत रूप से उनकी सहायता की थी। देश का उत्कर्ष ही उनका एकमात्र लक्ष्य रहा। मलयालम के आधुनिक साहित्य का सूत्रपात भी केसरी ने ही किया। गरीबी का साथ उन्होंने कभी नहीं छोडा। अधिकारियों की सहायता को उन्होंने ठुकरा दिया। केवल साहित्य अकादमी का पुरस्कार उन्होंने स्वीकार किया। उनका व्यक्तित्व असाधारण था।

अध्यक्षीय भाषण में केरल विधान सभा के अध्यक्ष श्री. वर्कला राधाकृष्णन ने बताया—केसरी ने पत्रकारिता का जो आदर्श प्रस्तुत किया है वह भारत केलिए ही नहीं सारे विश्व केलिए अनुकरणीय है। दस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

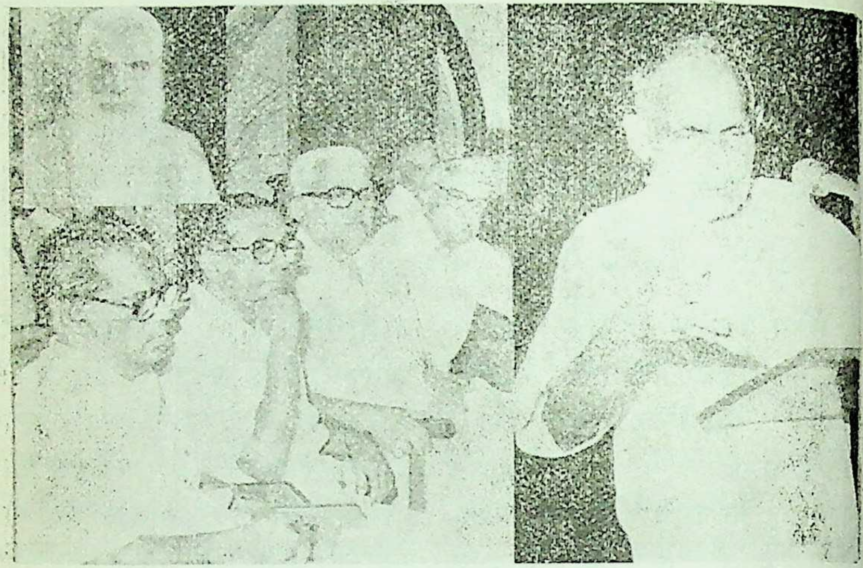

केसरी शताब्दी

केरल के निर्भीक पत्रकार स्व० केसरी बालकृष्ण पिल्लै के जन्मशताब्दी समारोह का उद्घाटन मई 1989 में तिरुवनन्तपुरम में आयोजित सम्मेलन में केरल के मुख्य मंत्री श्री. ई. के. नायनार ने किया । केसरी दरबार की पुनःस्थापना का उद्घाटन करते हुए भाषण दे रहे हैं मलयालम के विख्यात उपन्यासकार श्री तकषी शिवशंकर पिल्लै । बैठे हैं (बायें से) श्री. पी. एस. श्रीनिवासन (राजस्व मंत्री, केरल सरकार) श्री सी. वी. पद्मराजन (पूर्व अध्यक्ष, केरल प्रदेश कांग्रेस समिति) श्री. ई. के. नायनार (मुख्य मंत्री, केरल) श्री वर्कला वी. राधाकृष्णन (अध्यक्ष विधान सभा, केरल) आदि । इन्सेट में स्व० केसरी बालकृष्ण पिल्लै ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्षों के भीतर उन्होंने तीन पत्रिकाओं का संपादन किया— 'समदर्शी", "प्रबोधन" और "केसरी"। सन् 1928 में तिरुवितांकूर रियासत के दिवान एम. ई. वाट्स ने रीजन्ट की अनुमति से मुद्रणालय विनियम बनाया जिसके अनुसार समाचार पत्रों पर 500 रुपया लाइसेन्स शुल्क लगाया गया। केसरी ने समदर्शी के द्वारा इसका घोर विरोध किया और आह्वान किया कि विधान मंडल के सदस्य इस विनियम के विरोध में त्यागपत्र दें। विधान सभा की चर्चाओं का विवरण वे अपनी पत्रिका में इस ढंग से प्रस्तुत करते थे कि जनता उन चर्चाओं का सारांश समझ सके। अधिकारियों के विरुद्ध लिखे गये लेखों के कारण "प्रबोधन" का लाइसेन्स रद्द किया गया। केसरी पर राज्यद्रोह का अभियोग लगाया गया। फिर जो केसरी पत्रिका निकाली गयी उसी में पत्रकारिता का सर्वोत्कृष्ट स्वरूप द्रष्टव्य है। महाराजा की भी उन्होंने कडी आलोचना की। केसरी की दीर्घदर्शिता का पता इसी से चलता है कि उन्होंने आज से पचास वष पूर्व परिवार नियोजन का आह्वान किया था। समाज को सामयिक समस्याओं पर और इतिहास विज्ञान जैसे विषयों पर लिखे गये. अपने विवेचनात्मक लेखों द्वारा उन्होंने मलयालम भाषा केलिए एक नया कवाट खोल दिया।

मलयालम के विख्यात कथाकार एवं ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता श्री. तक.षी ने केसरी बालकृष्ण पिल्लै के साथ अपने निकट संपर्क के दिनों का अनुस्मरण करते हुए बताया—केसरी पत्रिका के प्रकाशन के तीन-चार वर्षों तक केसरी से मैं प्राय: हर दिन मिलता था। ज्योतिष, चिकित्सा, नृवंश विज्ञान, भूगोल, कल्प गणित, साहित्यालोचन मनोविज्ञान जैसे अनेक विषयों में उनकी गहरी पहुंच थी। यदि उनका संपर्क न मिलता तो मैं केवल एक वकील रह जाता। केसरी ने ही मुझे जीवन का सही दृष्टिकोण दिया। उन्होंने मेरा व्यक्तित्व विकसित किया। उन्हीं की प्रेरणा से मैं ने डारविन, फ्राइड आदि की रचनाओं का अध्ययन किया। उन्होंने अंग्रेजी में 129 लेख लिखे हैं। कुछ अप्रकाशित पांडुलिपियाँ भी हैं। उनका संकलन प्रकाशित करना है। उनके नोटों का माइक्रोफिल्म करना है। उनकी मित्र मंडली रोज उन से मिल कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विविध विषयों पर तर्क-वितर्क करती थी। इसे केसरी दरबार कहते थे। इस दरबार ने मलयालम के कई लेखकों और पत्रकारों को जन्म दिया।

केरल सरकार के राजस्व मंत्री श्री. पी. एस श्रीनिवासन ने कहा कि मलयालम पत्रकारिता और साहित्य के नवोत्थान के कार्य-कर्ताओं में अग्रिम रहकर केसरी युवा पीढी को आगे ले चले।

केरल प्रदेश कांग्रेस समिति के पूर्व अध्यक्ष श्री. सी. पद्मराजन ने कहा कि केसरी सभी प्रगतिशील अभियानों के पक्ष में थे। उन्होंने शुचीन्द्रम सत्याग्रह के स्वयं सेवकों के विरुद्ध सरकार द्वारा अपनायी गयी दमननीति का विरोध "प्रबोधन" पत्रिका में स्पष्ट भाषा में किया था।

केरल सरकार के फिलम विकास निगम के अध्यक्ष एवं यशस्वी पत्रकार श्री. पी. गोविन्द पिल्लै ने उन लेखों पर प्रकाश डाला जिनमें केसरी ने चित्रकला संबन्धी अपनी अलो-चनात्मक दृष्टि का परिचय दिया है।

पद्मश्री डा० के. एम. जोर्ज ने केसरी को तत्कालीन मलयालम साहित्य का "एन्टीना" बताया। केसरी ने अंग्रेजी फ्रेंच आदि साहित्यों के अध्ययन से यारोप, रूस आदि देशों की तत्कालीन विचार-धाराओं का परिचय पा कर मलयालम साहित्य में प्रस्तुत किया।

श्री मलप्पुरम पी मूसा, श्री. टी. आर. रामचन्द्रन आदि ने भी केसरी के बहुमुखी व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला।

पद्मश्री डा० के. एम जोर्ज द्वारा रचित और साहित्य अकादमी, नई-दिल्ली द्वारा प्रकाशित अंग्रेज़ी जीवनी ग्रन्थ "केसरी बालकृष्ण पिल्लै" का प्रमोचन केरल के मुख्य मंत्री श्री. ई. के. नायनार ने किया।

श्री. तक.षी ने "केसरी दरबार" की पुनस्थापना का उद्घाटन किया।

आशा है, साहित्य अकादमी द्वारा उक्त जीवनी का हिन्दी अनुवाद भी शीघ्र ही प्रकाशित होगा।

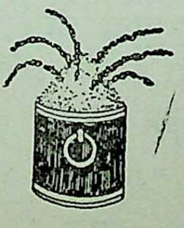

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रचार माध्यम और राजभाषा हिन्दी

श्री. कुन्नुकुषि कृष्णन कुट्टि

[25-2-1989 से 1-3-89 तक केरल हिन्दी प्रचार सभा और अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ के संयुक्त तत्वावधान में तिरुवनन्तपुरम में आयोजित भारतीय हिन्दी कार्यकर्ता शिबिर में प्रस्तुत आलेख ।]

कवि ने ठीक गाया है:

हिन्द देश के निवासी सब जन एक हैं
रंग रूप देश भाषा चाहे अनेक हैं ।

इस प्रकार अनेकताओं का एक अपूर्व संगम स्थान है भारत । यहाँ 16 राष्ट्रीय भाषायें हैं सैकड़ों बोलियाँ हैं, वैविध्यपूर्ण आचार-विचार, विविध धर्म-जाति-गोत्र। जन-संख्या भी अधिक है । इस प्रकार के एक देश में स्थायी रूप से एकता कायम रखना श्रमसाध्य आवश्य है, लेकिन असाध्य नहीं । पंजाब, असम आदि प्रान्तों में होनेवाले विघटनकारी हरकतों के बावजूद भी हम संगठन के लिए हमेशा यत्न करते रहते हैं ।

बम्बई के पास ट्राम्बे में अप्सरा नामक आणविक रियाक्टर का उद्घाटन करते हुए राष्ट्र शिल्पी पंडित जवाहरलाल नेहरू ने कहा (1957 जनवरी 20) :

एलिफेन्टा के मूर्तिशिल्पों तथा बीसवीं सदी के मध्यकाल के इस स्विमिंगपूल रियाक्टर के बीच तेरह सदियों का अन्तर है । दोनों का अपना अपना अलग अस्तित्व है । इन दोनों में से किसी एक को अमान्य समझनेवाला अपने जीवन काल के एक मुख्य अंश से वंचित रह जाता है। मैं नहीं मानता कि मानव समाज आणविक रियाक्टरों के बल पर जीवित रह सकता है और ठीक उसी प्रकार वह एलिफेन्टा के बलपर भी जीवित नहीं रह सकता ।

पंडित नेहरू की इन वाणियों की गूँज फिर हम सुन पाये स्वर्गीय प्रधान मंत्री इन्दिरा गान्धी के शक्ति-पूर्ण स्वरों में । भारत के निजी अन्तरिक्षयान को आकाश की ओर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उडाते हुए देश के नाम इन्दिराजी ने जो भाषण दिया था उसमें उन्होंने कहा : "हमें गर्व होना चाहिए कि हमारा अपना एक अन्तरिक्षयान शून्याकाश में भ्रमण करने जा रहा है। वैज्ञानिक प्रगति के पथ पर हम भी पहुंचे हैं। लेकिन हमें कभी यह भूलना नहीं चाहिए कि इस समय हमारे गाँवों की मट-मैली पगडंडियों पर धूल उडाते हुए बैलगाडियाँ भी चल रही हैं।"

इस प्रकार ध्रुवान्तर की जीवन रीतियाँ और धारणाओं को समरस करते हुए भी भारत में एकता को कायम कर सकते हैं।

इसी पृष्ठभूमि पर हमें माध्यमों के बारे में विचार करना पडता है। माध्यम दृश्य और श्रव्य दो प्रकार के हैं और एक पाठ्य भी है। रेडियो, टेलिविज़न, सिनेमा, पत्र-पत्रिकाएँ आदि इसमें अन्तर्निहित हैं। अब भारत में लगभग 1600 दैनिक पत्र, 6500 साप्ताहिक, 3000 पाक्षिक पत्र, 7500 मासिक पत्र और 3000 से अधिक अन्य पत्र-पत्रिकाएँ है। 90 रेडियो स्टेशन हैं जो 97.5 प्रतिशत जनता तक अपनी वाणी पहुँचाते हैं। करीब 200 दूरदर्शन केन्द्र हैं जिनकी सीमा में करीब 95 प्रतिशत जनता आ जाती है। अस्तु।

माध्यमों का दायित्व

"कुत्ते ने आदमी को काट लिया" में वार्ता नहीं है, लेकिन "आदमी ने कुत्ते को काट लिया" में वार्ता है—यह विदेशी कहावत है जिसे देश के सभी लोग रटते रहते हैं। भारत के वरिष्ठ पत्रकार श्री. चलपति राव ने इसका खण्डन करते हुए कहा कि आदमी ने कुत्ते को काट लिया—अस्वाभाविक है, उद्वेगजनक (Sensational) है। श्री. चलपति राव की दृष्टि में परिवर्तन ही वार्ता है। विकसित राष्ट्रों में उद्वेगजनक घटनाएँ वार्ता बन सकती हैं, लेकिन भारत जैसे विकासशील राष्ट्रों में विविध क्षेत्रों में हो रहे परिवर्तनों को ही हम वार्ता कह सकते हैं। लेकिन खेद इसमें मैं है कि शासन-सत्ता के अधीन के या सार्वजनिक क्षेत्र के जो माध्यम हैं जैसे रेडियो, टेलिविज़न एवं अधिकृत पत्र सूचनाएँ आदि

विकसित राष्ट्रों में उद्वेगजनक घटनाएँ वार्ता बन सकती हैं, लेकिन भारत जैसे विकासशील राष्ट्रों में विविध क्षेत्रों में हो रहे परिवर्तनों को ही हम वार्ता कह सकते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भ्रष्टाचार, शीलहरण, दंगे-हत्या इत्यादि के वर्णनों में सीमित न रहकर उनकी प्रेरक शक्तियों और उनके कारणों का सामाजिक और आर्थिक धरातल पर विश्लेषण करना ही जनोपयोगी या राष्ट्रोपयोगी कार्य है।

उनको छोड निजी क्षेत्र के माध्यम जा पत्रों में सीमित हैं, राष्ट्र में होनेवाले परिवर्तनों को वार्ता न मानकर उद्वेग-जनक घटनाओं को असाधारण महत्व देते हैं। वे परिवर्तनों को भी वार्ता का स्थान देते हैं, लेकिन वह केवल राजनैतिक क्षेत्र के परिवर्तन में सीमित रह जाता है। सामाजिक, आर्थिक आदि मूलभूत परिवर्तनों की ओर कोई भी ध्यान नहीं देता। श्री. चलपति राव की दृष्टि में सबसे प्रमुख उद्वेगजनक वार्ता तो राज्य में होनेवाले सामाजिक और आर्थिक परिवर्तनों का ही अभिन्न अंश है। उसी प्रकार परिवर्तनों का न होना भी वार्ता है।

आजकल अनुसंधानपरक वार्ता कृतियाँ अधिक मात्रा में पायी जाती हैं जो एक परिवर्तनशील और विकासशील राष्ट्र के लिए सही अर्थ में उपयोगी हैं। लेकित यह इनवेस्टिगेशन या अनुसंधान केवल घटनाओं (जैसे भ्रष्टाचार, शीलहरण, दंगे-हत्या इत्यादि) के वर्णनों में सीमित न रहकर उनकी प्रेरक शक्तियों, उनके कारणों का सामाजिक और आर्थिक धरातल पर विश्लेषण करे तो वही जनोपयोगी या राष्ट्रोपयोगी कार्य है।

भारत में जब पहली पंचवर्षीय योजना लायी गयी तब उसके द्वारा होनेवाली उपलब्धियों के बारे में जनता को अवगत कराने केलिए लोक कला रूपों को काम में लाया गया। क्योंकि उस समय हमारे माध्यम पनप नहीं उठे थे। 1975 संचार माध्यमों के क्षेत्र में स्मरणीय वर्ष है जब हमने शून्याकाश में उपग्रह को भेज दिया था। उस उपग्रह को केन्द्र बिन्दु बनाकर हमने भारत के विभिन्न केन्द्रों को, सैकड़ों, हज़ारों ग्रामों को आपस में मिला दिया।

स्वतंत्रता संग्राम के काल में यहाँ तक कि 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के काल में, विदेशी शक्ति से देश को मुक्त करने के यत्न में जनसाधारण को भागीदार बनाने केलिए संग्राम क्षेत्र में नेतृत्व

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करनेवाले नेता लोगों ने बहुत यत्न किया। जनता तथा नेता के बीच में जो संपर्क सूत्र या संपर्क माध्यम रहा था वही इसकेलिए सहायक सिद्ध हुआ। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी यही संपर्क सूत्र अक्षुण्ण रहा और आज भी। इसका सबसे बडा प्रमाण है भारत में आज भी विश्व का सबसे महान और विशाल विराट गण-तंत्रात्मक शासन प्रणाली कायम है। राष्ट्रपिता महात्मागांधी, राष्ट्र-शिल्पी नेहरुजी तथा राष्ट्रमाता इन्दिराजी के समर्पित जीवन ही इस महान उपलब्धि के मुख्य कारण हैं।

हिन्दी का प्रचार तब और अब भी राष्ट्र की एकता को लक्ष्य कर किया गया था और किया जा रहा है। माध्यमों का लक्ष्य भी यही है। दिनों-दिन माध्यमों के क्षेत्र में वैज्ञानिक प्रगति असाधारण परि-वर्तन कर रही है। वयर फोटो सर्विस, फेसिमिली ट्रान्समिशन आदि के द्वारा स्थानों के बीच की दूरी आज कम होती जा रही है। आकाशवाणी, दूरदर्शन आदि माध्यमों में भी अभूतपूर्व परिवर्तन परिलक्षित हैं। लेकिन उन माध्यमों पर भी निजी क्षेत्र के धनपति आतुरता से आँखें गडाये रहते हैं

लेकिन उन माध्यमों पर भी निजी क्षेत्र के धनपति आतुरता से आँखें गडाये रहते हैं और अंगुली पकडते पकडते कलाई पकड़ लेने की सोच रहे हैं।

और अंगुली पकडते पकडते कलाई पकड़ लेने की सोच रहे हैं। इस अवसर पर हिन्दी प्रचार के क्षेत्र में कार्य करनेवाले सज्जनों को देश की एकता को लक्ष्य कर बहुत बडा उत्तरदायित्व निभाना है।

माध्यमों का दुरुपयोग होना स्वाभाविक है। लेकिन जब सामान्य जनता को इसका पता लग जाए कि माध्यम अवास्तविक प्रचार कार्य पर तुले हुए हैं तो माध्यमों पर जनता की विश्वास्यता नष्ट हो जाती है। यही विश्वास्यता माध्यमकी प्राणवायु है। अखबार पर जनता की विश्वास्यता नष्ट हो जाती है तो संपादक समिति जनरुचि के अनुसार संपादन रीति में परिवर्तन कर सकती है। लेकिन रेडिये/टी वी. पर विश्वास्यता नष्ट हो जाए तो उसका बुरा प्रभाव सत्ताधारियों पर भी पडता है। वह राजनैतिक उथल-पुथल का कारण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बन सकता है। इसलिए दृश्य-श्रव्य माध्यमों को हमेशा चौकन्ना रहकर अपनी विश्वास्यता को बनाये रखना नितान्त आवश्यक है। इस प्रकार माध्यम और आम जनता के बीच का संबन्ध अत्यन्त नाजुक है तथा संकीर्ण भी।

भारत विविध आचार-विचार-वाली जनता का समवाय है। इसलिए उनमें से किसी एक को महान बनाकर दिखाना, उनके बीच की समरसता को नष्ट करने का कार्य होगा। प्रादेशिक फिल्मों तथा नाटकों में स्वतंत्रता प्राप्ति के पहले भारत की जनता में विद्यमान भाषा वेश संबन्धी जातीय दीनता को दिखाकर समूह को हास्यबिन्दु बनाने की चेष्टा की जाती थी। रेडियो टी. वी. में यह बडा बुरा प्रभाव डालेगा अवश्य जो चिनगारी रूप में विकसित होकर सारे देश में आग फैलाकर ही रहेगा। माध्यमों का विशेषकर दृश्य-श्रव्य माध्यमों का सही प्रयोग ही देशहित को लक्ष्य कर वांछित है। पत्थर पर पत्थर रख-कर, अपने खूंन पसीनेमें ईट-ईट भिगोकर और आत्मत्याग का मंत्र फूंककर 1857 से आज तक हमारे कितने ही नेता लोगों ने इस महान राष्ट्र को स्वरूप दिया है जिसे एक असावधान कर्म से चकनाचूर कर दें तो नुकसान होगा हमारा ही। हम स्वयं अपने पैरों पर कुल्हाडी मारें तो हम किसको दोषी कहेंगे ?

संविधान द्वारा स्वीकृत आदर्शों, रूपों और भाषाओं तथा राजभाषा को सार्वत्रिक प्रचार और मान्यता देना भी माध्यमों का उत्तरदायित्व है। चूंकि हिन्दी राजभाषा है अत: हिन्दी को अहिन्दी प्रदेशों में इस ढंग से बढावा देने के प्रयत्न माध्यमों

अहिन्दी भाषियों की भाषाएँ हीन न समझी जाएँ और वे अपने आप हिन्दी के साथ राष्ट्रीय भावना से प्रेरित होकर आगे की और बढ जाएँ।

द्वारा आवश्यक हैं ही जिससे अहिन्दी भाषियों की भाषाएँ हीन न समझी जाएँ और वे अपने आप हिन्दी के साथ राष्ट्रीय भावना से प्रेरित होकर आगे की ओर बढ जाएँ। आज तक के इतिहास से यही सिद्ध हुआ है कि अहिन्दी भाषी हिन्दी के प्रति श्रद्धा-पूर्ण भाव ही प्रकट करते आये हैं। क्योंकि राष्ट्रपिता की भव्य स्मृति हिन्दी के साथ जुडी हुई है। लेकिन यह भावना हिन्दी भाषा-भाषियों में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी भाषी प्रान्तों में रहनेवालों को हिन्दी पर जितना स्वत्वाधिकार है उतना स्वत्वाधिकार अहिन्दी प्रान्तों में रहनेवालों को भी है ।

पर्याप्त मात्रा में पायी नहीं जाती है । एकता का मार्ग एक तरफा नहीं होना चाहिए । समरसता तो लेन-देन से ही संभव है । समरसता को लक्ष्य कर इस प्रसंग में इतना ही कहना चाहूँगा कि हिन्दी भाषा-भाषियों को और भी उदारतापूर्ण मनोभाव अपनाना अवश्यक है । क्यों कि संविधान द्वारा स्वीकृत तथा राज्य में प्रचलित राजभाषा हिन्दी भारत के किसा भी नागरिक की मातृभाषा नहीं है । हिन्दी भाषी प्रान्तों में रहनेवालों को हिन्दी पर जितना स्वत्वाधिकार है उतना स्वत्वाधिकार अहिन्दो प्रान्तों में रहनेवालों को भी है ।

मात्र माध्यमों के सशक्त और सक्रिय होने से उद्दिष्ट कार्य सिद्ध नहीं होगा । उसके सहायक तथा अनुपूरक अनेक अंश हैं । रेडियो यंत्रों, टी. वी. यंत्रों को सुलभ करना आवश्यक है । इसके लिए उद्योग का विकास करना चाहिए । जनता को सभ्य तथा शिक्षित करने के शैक्षिक तथा सांस्कृतिक उपायों को बढावा देना चाहिए । दृश्य-श्रव्य माध्यम द्वारा एक केन्द्र में बैठकर समूचे राष्ट्र का निरीक्षण आज संभव है। लेकिन उससे प्रेरणा पाकर कभी किसी को दूसरी जगहों का प्रत्यक्ष दर्शन करने की इच्छा हो तो उसके सहायक परिवहन सुविधाएँ होनी चाहिए । एक प्रान्त की जनता को कभी यह अवगत न हो जाए कि अन्य प्रान्त की जनता उसमें अधिक सुखी एवं वरिष्ठ हैं और अधिक सुविधाओं का भोग कर रही है। इसके लिए समूचे राष्ट्र केलिए एक सामान्य शिक्षा नीति, विधि नीति, प्रशासनिक नीति होनी चाहिए। तभी हम कह सकते हैं कि हम एक सुदृढ राष्ट्र के समान नागरिक हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गायत्र

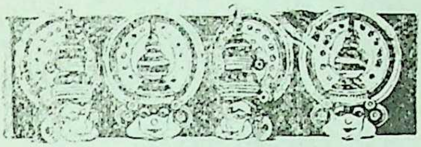

मूल: डा० अय्यप्प पणिक्कर
अनु: वी. के. एस. नम्पूतिरो

एक बूँद तेरी चिरव्यथा की
मुझमें छा जाने दो ।
एक बूँद चिर अश्रुओं की
बाँट दो, मानस में समाने दो ।
कहा सूर्य ने—
सागर-तट के शुक्तिकणों में
ताने परछाई—
हे भूमि, मेरी है तू अर्द्धांगिनी
मेरी परिक्रमा करती करती
अपनी भी परिक्रमा करती जाती ।
इस प्रदक्षिणा-प्रतिभास में
बढ़ती है तू प्रति पल, प्रति क्षण ।
ग्रहचक्रों में तू मेरी प्रियंकरी
फूल में तुझसे मिलकर—
फल बनकर मीठा लगता ।
हे मृण्माता, मैं दिनकर जानता हूँ कि
तू श्रीमाता है ।

सहला रहा हूँ तुझे
हजारों हाथों से ।
आरती उतार रहा हूँ तेरी-
हजारों स्मृतियों से ।
मजा लेता हूँ बवंडर में
तेरे बाल बिखराके ।
धनुष चढ़ाता हूँ
घन-घटा-कलाप में ।
हे भूमि, तेरी दृष्टि की पहुँच से भी
कितना व्यापक है यह विश्व !
मैं केवल एक सूर्य,
मुझसे भी तेजस्वी हैं
तेरी सेवा में रत नक्षत्र ।
तेरेलिए तू है, शायद मेरेलिए भी !
तेरे-मेरे अनजाने तलों पर
जलता है कोई कुतूहल अनामी ।
पंचेन्द्रियों में जो तड़पता रहता
एक कुतूहल ।
क्या है उसके परे—
बिना जाने यह;
निष्कर्ष यह निकालता,
कि जो जान गया,
'वही माप और सीमा है ज्ञान की;
शब्दों, पदों में फँसे
सत्य को मुक्त करते,
मात्र कुछ दिशाएँ पाने पर
सबके पाने का गर्व न किये;
हे भूमि, अपने भ्रमण-पथों पर
बाट जोहती अप्सराओं के साथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नृत्य करती हुई तू,
अपनी व्यथा-कथा
मेरी किरणों में भरती जा,
बोझा हल्का हो जा तेरी यात्रा का
मंगलमय हो जा तेरी यात्रा !

II

सागर-तट की सिक्त सिकता पर
बैठी एक सुन्दरी अरुणलोचनी
कहती है अपने आप से—
कहाँ गया वह, मेरा प्रियतम
लहरों की गहराई में ?
जीवन-मार्ग मृत्यु है—
सत्य यह जिसने जाना औ' न जाना
माना था जिसने
कि यह सागर सूख जाएगा
किसी दिन ।
पानी की सतह बढ़ बढ़कर
जब निगलेगी भारी भूमि को,
बालुका-कणों में भी भय की
कँप-कँपी भरके बहती जब पहाड़ी
हवा,
तब हे सागर,
क्यों तूने मेरा जिगर काटकर
उस गुफ़ा में छिपा लिया
जहाँ नहीं बढ़तीं लहरें !
लहरों के आघात की जलन से
पनपी मेरी वेदना
मैं जान रही हूँ ।
असीम गहराई में फँसी तेरी वेदना
मैं जान रही हूँ ।

तेरी पाली हुई मैं
मछुआरिन की जन्मी ।
नहीं मेरी संपत्ति अन्य—
प्रिय के सिवा ।
उसे लेकर हे वारिधि,
तू रत्नगर्भा हुई !
अपने रत्नों को क्या तूने
मर्त्य रक्त से निखार लिया ?
तेरा परिचय पाने पर,
प्राणों का सिहरन थमने पर,
बाँट जोह बैठी मैं
प्रिय-स्मृति में कह जाऊँगी यों —
एक बूँद तेरी चिरव्यथा की
मुझमें छा जाने दो,
इक बूँद तेरे चिर अश्रुओं की
बाँट दो, मानस में समाने दो ॥
ये सातों समुद्र सर्वविनाशक,
मछुआरों के
आँसू ही तो हैं !!
क्षुब्ध लहरें उठतीं, गिरतीं
उनकी जीवन-धारा में ही
एक दिन वह, प्राणनाथ,
जाल लिए निकला जब
जूझने को सागर-तीरे,
इस किनारे मैं एकाकी
ध्यान-लीन बैठी थी जब
देखा एक नज़ारा भयावना
एक भयंकर जंतु मुँह फुलाए आया
निगला उसने तट सारा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जगी कालशक्ति
सागर की गहराई में
अग्निनेत्र से घूरकर उसने
कर दिया राख उस जन्तु को !
देखे ऐसे नज़ारे कितने !
न बताया किसी को मैंने
फिर हो गये ये नज़ारे रोज़ के
आज की नयी वेदना !
समा लिया सागर ने अपने में
प्रियतम को ही
क्या मिलन अब असंभव उससे ?
उठ रहा मेरे मन में
ऐसा एक विवर्ण विभात—
उष्णरक्त का एक दृढ गात्र
प्रेमी तरुण,
ढूँढता आया मुझे
स्मरण है उस विभात का
उस स्मरण में अतिजीवित है
सारी मृत्यु ।

III

सागर-तट के सिकता कणों पर
खिल कर उठे सूर्य को देख
कहती भूमि—
—हे सूर्य, तुझे प्रणाम !
दोनों ध्रुओं को, मिलाकर, एक साथ
हाथ जोड़ती हूँ ।
जानती हूँ
मेरी सर्दी-गर्मी,
तेरा ही दान है ।
जानती मैं
लोहा, सोना और इलमिनैट भी
तेरा ही उपहार है ।
आदि उषा में बिदा ली थी
मैंने जब तुझसे,
तब तूने मुझे दिया था
अंजलि-भर प्रकाश ।
मुझे, अपनी रातों को
सुन्दर बनाने
एक चाँद भी दिया था तूने ।
आज भी तू रजत-लहरों में
मेरी सिसकियाँ सुनता है
चाँद में तुझे देख
मेरी जलराशि में
ज्वार उमड़ आता ।
हे सूर्य, जानती हूँ मैं—
तेरी जगमगाहट के पीछे की
शोक-मूर्च्छा को ।
तेरे जलते मस्तिष्क में
मेरी कल्पनाएँ सुन्न रह जाती हैं ।
तू मेरा एक मित्र,
नित्य परिक्रमा की एक मूर्ति ।
सागर की गहराई में
ढोती हूँ तेरी प्रतिच्छाया ।
लहरें मेरी विलोडित हो कर तुझे ही
प्रतिबिंबित कर रही हैं बार बार ।
तेरी शक्ति और सौन्दर्य भरी
लहरों पर
मैं आह्लादित हूँ ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तेरे, अश्रु भँवरों में
जहाँ लहरियाँ
थमती ही नहीं,
हे सूर्य, हे सविता, तू खंडित हो,
सौ सौ सविता बन बढ़ता है
फिर बढ बढकर कट जाता है
एक स्रोत उस घाव से फूटकर
शीतल करता इस प्रपंच को
मेरे जलद, काले चिकने नन्हें बच्चे
तुझे ढूँढते ढूँढते भटकते बिखरते हैं।
जुडे हुए तेरे उस घाव में
खून जमकर विलाप कर रहा है।
स्वरों के यों गूँजते गूँजते हो
मेरी प्रार्थना है :
एक बूँद तेरी चिर-व्यथा की
मुझमें छा जाने दो।
इक बूँद चिर अश्रुओं की
बाँट दो, मानस में समाने दो।

डा० अय्यप्प पणिक्कर

आज के मलयालम कवियों में अपना एक अलग व्यक्तित्व लिये, अपना अलग स्वर मुखरित करनेवाले हैं श्री. अय्यप्प पणिक्कर। उनकी कविताओं का विषय अलग रहता है, अचुम्बित रहता है। उनकी अभिव्यक्ति की रीति और रचना-शिल्प भी अलग है। यह विशिष्टता श्री. पणिक्कर को और उनकी कविताओं को इतर कवियों तथा कविताओं से व्यतिरिक्त रखती है। केरल ज्योति के इस अंक में प्रकाशित "गायत्र" नामक कविता इसका नमूना है। हाल ही में उनकी "गोत्रायन" नामक लंबी कविता मलयालम पत्रिका में प्रकाशित हुई जो थोडे काल के अन्दर ही बहुचर्चित हो गयी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दक्षिण भारत की भाषाएँ और हिन्दी — समन्वय की विविध दिशाएँ

डॉ० एन. ई. विश्वनाथ अय्यर

[फरवरी-मार्च 1989 में केरल हिन्दी प्रचार सभा और अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ के संयुक्त तत्वावधान में तिरुवनन्तपुरम में आयोजित अखिल भारतीय हिन्दी कार्यकर्ता शिविर में प्रस्तुत आलेख]

आप केरल के किसी भी नगर के शाकाहारी होटलों में जाइए —आलू-पूडी, चपाती-सब्जी का सेट खाने को मिलेगा। मिठाई की आलमारी में जिलेबी व लड्डू दर्शन देंगे। पूडी, चपाती व पराठा (इसे केरल में परोठा कहते हैं।) अब यहाँ सुलभ हैं। इसी प्रकार दिल्ली के मद्रास होटल में हम केरलीय जब जाते हैं तब पंजाब के सरदारजी और गुजरात के भाईजी सांबार की बडी कटोरी में तैरते बडों को चम्मच से काटने के लिए प्रयत्न करते मिलते हैं। मतलब यह कि भोजन के विषय में अखिल भारतीय स्तर व स्वाद बनते जा रहे हैं। इसी प्रकार आप केरल की सडकों से चलते समय भ्रम में पड सकते हैं कि दिल्ली की इतनी सारी कन्याएँ यहाँ कैसे आ गईं? केरलीय कन्याएँ अब सलवार-कमीज़ को अधिक पसंद करती दिखाई देती हैं। खानपान व वेशभूषा में अखिल भारतीय रूप का प्रचार नई पीढी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप केरल की सडकों से चलते समय भ्रम में पड सकते हैं कि दिल्ली की इतनी सारी कन्याएँ यहाँ कैसे आ गईं ?

करती जा रही है। इसका श्रेय रेलगाडी, होटल, फिल्म, समाचार-पत्र, दूरदर्शन आदि को है। किसी के प्रचार या दबाव से ये बातें नहीं आयी हैं।

खान-पान व वेश-भूषा में यह समन्वय-भावना बताती है कि सभी असल में एकतामय होना चाहते हैं। इसी दृष्टि से हम दक्षिण भारत की भाषाओं और हिन्दी के समन्वय की उपलब्धि, संभावना और दिशाओं पर आज विचार करेंगे।

दक्षिण भारत में चार भाषाएँ मुख्यतः प्रचलित हैं—तमिल, तेलुगू, कन्नड और मलयालम। इनके अलावा, कुडगु, तुळु और कोंकणी भाषाएँ यहाँ व्यवहृत हैं। इनमें हर एक भाषा बोलनेवालों की संख्या करोडों तक होती है। कुडगु, तुळु और कोंकणी बोलनेवालों की संख्या कुछ कम है। इन तीनों में प्रथम दोनों अब भी बोली की स्थिति में हैं। कोंकणी में साहित्य का शीघ्र विकास होता जा रहा है। इन भाषाओं के साथ हिन्दी के समन्वय की चर्चा प्रस्तावित है। आम हिंदी भाषा-भाषी से इसका हल पूछेंगे तो वह आसानी से हल बताएगा— "गाँधीजी ने कहा है कि हिन्दीतर प्रान्तों के लोगों को हिन्दी सीखनी चाहिए। जब वे भी हिन्दी सीख लेंगे तब पूरे भारत में हिन्दी एकमात्र भाषा हो सकती है। फिर दूसरी भाषाओं की झंझट ही नहीं रहेगी।" यही झंझट है। भारत की अन्य भाषाओं की जगह हिन्दी ले, यह समन्वय नहीं। यह भाषागत तानाशाही होगी। अगर नादिरशाह जैसे तानाशाह यह प्रस्ताव अमल में लावें तब भी आज वह लागू नहीं हो पाएगा। हम तो स्वाधीन भारत में एक प्रजातन्त्र-प्रधान संघराज्य का संविधान स्वीकार कर चुके हैं। इसीलिए विभिन्न राज्यों की अलग अलग भाषाओं के साथ एक राज-भाषा हिन्दी को हमने देश के लिए स्वीकार किया है। प्रादेशिक भाषाएँ अपनी जगह पर और अंग्रेज़ी अपनी जगह पर। ऐसी स्थिति में दक्षिण भारतीय भाषाओं और हिन्दी का समन्वय कैसे हो, इस समस्या का समाधान ढूँढना है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं इसके कुछ चुने हुए मुददों पर ही विचार करना चाहता हूँ । दक्षिण में हिन्दी सरकारी आदेश से जितनी चली उससे कई गुना तो प्रचारक संस्थाओं के कार्यकर्ताओं के प्रयत्न से हुआ । ऐसी ही स्वयंसेवी संस्थाओं की गोष्ठी यहाँ संपन्न हो रही है । इन सभाओं ने जो परीक्षाएँ व पाठ्यक्रम चलाये वे केवल हिन्दी की योग्यता बढाने निमित्त नहीं थे । इन परीक्षाओं में वैठनेवाले भाइयों से वढकर बैठनेवाली बहनों की संख्या अधिक रही है । जो अपनी मातृभाषा में सामान्य लिखना-पढना ही जानती थीं वे भी हिन्दी में उँची परीक्षाएँ पास करती थीं । इन सभाओं की परीक्षाओं के पाठ्यक्रम में क्षेत्रीय भाषा का प्रश्न-पत्र अधिकतर होता है । यों ये सभाएँ हिन्दी और क्षेत्रीय भाषाओं को समान प्रेम से बढ़ाती हैं । इस तरह उन दोनों कोटियों की भाषाओं में कभी वैमनस्य नहीं आने दिया ।

आगे हम हिन्दी और दक्षिण की भाषाओं के समन्वय की बात पर और गहराई से विचार करें । मुझे लगता है कि हिन्दी जाननेवाले तेलुगु भाषी नागरी लिपि में लिखी मलयालम पुस्तक पढना शुरू कर तो

> **हिन्दी जाननेवाले तेलुगु भाषी नागरी लिपि में लिखी मलयालम पुस्तक पढना शुरू करें तो उसे मलयालम सीखना आसान हो जाय ।**

उसे मलयालम सीखना आसान हो जाय । इसी तरह हिन्दी जाननेवाले मलयालम भाषी यदि कन्नड सीखना चाहता है तो उसे नागरी लिपि में लिखी कन्नड प्राप्त हो जाय । आप पूछ सकते हैं कि क्या यह व्याव-हारिक है ? दावे के साथ कह सकता हूँ कि व्यवहारिक है ।

जब हिन्दी चलचित्र-जगत के कुछ प्रसिद्ध अभिनेता और अभि-नेत्रियाँ तमिल, मलयालम और तेलुगु में अभिनय करते हैं, उन्हें जो संवाद सुनाना होता है वह अंग्रेज़ी लिपि में लिखा जाता होगा । मगर यदि हिन्दी लिपि में ये तैयार करें और वहीं ये तारिकाएँ और अभि-नेता पढकर प्रस्तुत करें तो काम और आसान और सफ़लदायी होगा । यों हिन्दी लिपि के माध्यम से भाषागत समन्वय संभव होगा ।

इस पाठ्यक्रम में जो कमी है, वह भी दूर करनी होगी । अब हिन्दी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रचार सभा की परीक्षाओं में जो प्रादेशिक भाषा सीखते हैं वे उस प्रदेश के लोग ही हैं, जिनकी वह मातृभाषा है। इसमें एक कदम आगे बढकर ये सभाएँ अन्य भाषा-भाषियों को नागरी लिपि के माध्यम से प्रादेशिक भाषाएँ सिखाने लगेंगी तो बडी तेज प्रगति हो सकेगी। कारण यह कि उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश आदि की सरकारों के प्रयत्नों से दक्षिणी भाषाओं का जो प्रचार

उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश आदि की सरकारों के प्रयत्नों से दक्षिणी भाषाओं का जो प्रचार होता है वह सिर्फ नाम मात्र का होता है।

होता है वह सिर्फ़ नाम मात्र का होता है। सभाओं के पास मंजे हुए कार्य-कर्ताओं की बडी टीम रहती है जो बहुत कुछ कर सकती है। प्रारंभ में एक भाषा प्रान्त में एक संस्था सुनि-योजित ढंग से भाषा पाठ्यक्रम तैयार कर उस का प्रयोग कर सकती है। उसमें सफलता मिले तो दूसरी संस्थायें अनुकरण कर सकती हैं।

समन्वय की तीसरी दिशा नागरी लिपि में दक्षिणी भाषाओं की कुछ उच्चारण विधियों को ठीक-ठीक समझाने योग्य सामान्य चिह्न, बनाने की है। हिन्दी में अनुपस्थित और द्राविड भाषा में उपस्थित ध्वनियों का अंकन किस नागरी लिपि से खासकर उसके किस रूप से करें – यह विचारणीय है। केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय ने मानक लिपि तैयार करके इस समस्या का हल निकाला है। अब चाहिए कि इस लिपि में छोटी छोटी कहानी पुस्तकें व पाठमालाएँ तैयार की जाएँ।

सवाल उठता है कि ये कहाँ तक लोकप्रिय हो सकती हैं ? प्रायः देखा गया है कि जो पुरुष अवस्था में प्रौढ़ हैं वे अन्य भाषाएँ सीखने से विमुख होते हैं। उन्हें अपने काम करने के लिए अनिवार्य भाषा सीखना भी भारी लगता है। वे उस नयी भाषा के बोलचाल के रूप से संतुष्ट होते हैं। लेकिन स्त्रियाँ नयी भाषाएं जल्दी सीखती हैं। उनकेलिए रोचक नई सामग्री नई भाषा में मिले तो वे ज़रूर उसे पढेंगी। बच्चे और युवक तो नई भाषा सीखेंगे। हाँ ज़रूर कुछ प्रचार, कुछ प्रयत्न करना पडेगा। इस दिशा में अभी काम कम हुआ है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दक्षिण भारतीय भाषाओं और हिन्दी के समन्वय का सबसे महत्व-पूर्ण प्रसंग आदान-प्रदान का है। मैं साहित्य की चर्चा न कर भाषा की चर्चा ही करना चाहता हूँ। आप लोगों को गंगा-कावेरी नाम परिचित होगा। भारतीय रेल की एक अच्छी रेल सेवा का नाम है गंगा कावेरी। दक्षिण के तीर्थयात्रियों को प्रयाग-राज और बाबा विश्वनाथ के दर्शन कराना तथा काशी वासियों को रामेश्वरम की यात्रा कराना यह पवित्र सेवा यह लोहे-लकडी का परम सेवक करता आ रहा है। अगर इसके ढाँचे की लकड़ी में बोलने की ताकत होती तो कितनी ही भाषाएँ बोलती। गंगा कावेरी रेलगाडी काशी से जैसे रामेश्वरम आती है वैसे रामेश्वरम से काशी भी जाती है। मेरा मतलब है कि दक्षिण भारत की भाषाएँ हिन्दी से शब्द लेकर अपनी शब्दराशि संपुष्ट करें। इसके भी कई पहलू हैं। वैसे हिन्दी में प्रयुक्त अनेक प्रशासनिक फारसी अरबी शब्द दक्षिण भारतीय भाषाओं में चालू हो चुके हैं। दूसरे, स्वतंत्र भारत में प्रादेशिक भाषाओं को प्रदेशों की राजभाषा स्वीकार करने पर उनमें नये प्रशासनिक शब्द गढना, व अंग्रेजी प्रशासनिक शब्दों का अनुवाद करना पड़ता है। इस प्रक्रिया में हिन्दी में प्रस्तुत और सारी भारतीय भाषाओं के लिए उपयुक्त अनेक शब्द आ गये हैं। इनको इन प्रादेशिक भाषाओं में चालू कर सकें तो बहुत अच्छा हो। एक तो नये शब्द गढने की झंझट नहीं रहेगी। दूसरे, अखिल भारतीय भाषा का ढांचा और भी मज़बूत बनेगा। भाषाओं को समझना भी आसान हो जाएगा। खैर।

असली समस्या तो कावेरी व ताम्रपर्णी को लखनउ व दिल्ली पहुँचाने की है। जब हिन्दी को भारतीय संविधान में सामासिक संस्कृति का प्रतीक घोषित किया गया तब उस लक्ष्य की ओर हमें बढना चाहिए। हिन्दी की पवित्रता इस सामासिक समन्वय से दूर नहीं होती। अब देखा जाता है कि कोई दक्षिण भारतीय अपने हिन्दी-लेखन में अपनी भाषा के अर्थ में प्रयुक्त तत्सम शब्द को उसी अर्थ में हिन्दी में अनजाने लिखे तो हिन्दी पाठक उसे रेखांकित करके बताता है कि इस भाषा में मिलावट है। इस टिप्पणी को दूर करने के उपायों पर अमल करना होगा। मेरा विनम्र प्रश्न यह है कि अगर तीन अन्तर्राष्ट्रीय भाषाओं में प्रयुक्त शब्द को मानक मानकर उसी रूप में राजभाषा हिन्दी में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब हिन्दी अखिल भारतीय भाषा बन गई है इसमें सारे प्रदेशों के लोगों को लिखा-पढी करनी है, सभी प्रदेशों के विचारों को वाणी देना है, सभी प्रदेशों की सृजन प्रतिभा को अभिव्यक्ति देनी है तब केवल मंचीय आश्वासनों से बढकर व्यावहारिक रूप से हिन्दी भाषा में सामासिक समन्वय लाना होगा।

मान्यता दी जा सकती है तो चारों दक्षिण भारतीय भाषाओं में समान अर्थ में प्रयुक्त अनेक तत्सम शब्दों को उसी अर्थ में हिन्दी में भी क्यों चालू न करें ? तत्सम शब्दों का मूल अर्थ संस्कृत में अनेक प्रकार का होता है, कभी दो तीन अर्थ होते हैं, कभी अनेक। इनके कुछ अर्थ एक भाषा के तत्सम रूप से निकाले जाते हैं। कुछ अर्थ दूसरी भाषा के तत्सम रूप से निकलते हैं, यह अंतर परंपरागत व्यवहार का प्रसाद है। यदि शुद्धता की बात की जाय तो संस्कृत पंडित सभी देश भाषाओं के प्रयोग की असाधुता घोषित करेंगे। भाषाओं के प्रचार व व्यवहार के बढ़ते बढ़ते तत्सम शब्दों के अर्थ में विस्तार-संकोच आदि होना सहज बात है। उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश आदि हिन्दी प्रदेशों की सीमा तक हिन्दी जब सीमित रही तब इन तत्सम शब्दों के प्रयोगों की साधुता की सीमित रेखा बना लेना उचित रहा होगा। किंतु जब हिन्दी अखिल भारतीय भाषा बन गई है, इसमें सारे प्रदेशों के लोगों को लिखा-पढी करनी है, सभी प्रदेशों की सृजन-प्रतिभा को अभिव्यक्ति देनी है तब केवल मंचीय आश्वासनों से बढकर व्यावहारिक रूप से हिन्दी भाषा में सामासिक समन्वय लाना होगा। उसके लिए मेरे बताये हुए तत्सम शब्दों को भी हिन्दी में साधुता देनी होगी यह काम कुछ प्रयत्न माँगता है। इसमें केवल हिन्दी प्रचार सभाएं अकेले कुछ नहीं कर सकती। जो हिन्दी प्रचार संस्थाएँ अपने कोश-प्रकाशन का विभाग रखती है उन्हें, एक परियोजना के रूप में विद्वानों की एक छोटी समिति द्वारा ऐसे शब्दों को प्रयोग व प्रमाण सहित छाँटना चाहिए। दैनिक समाचार-पत्र दक्षिण भारतीयों का हिन्दी लेखन, दक्षिण भारतीय भाषाओं के कोश, ग्रंथ आदि के आधार पर य...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तैयार होगा। यह अनुसंधान और साधना का विषय है। इसे कोई संस्था केवल सरकारी अनुदान पाने की एक मद समझेगी तो वह भ्रांति होगी। सेवा की जगह अहित होगा।

हिन्दी लेखक एक शिकायत ज़रूर कर सकते हैं कि यह अर्थ हिन्दी में अभी नहीं चला है। हाँ, नहीं चला होगा। मगर आप शब्दों की अर्थयात्रा का इतिहास देखें। शब्दों के व्युत्पत्ति-कोश देखें तो दिखाई देगा कि एक ही शब्द के अर्थ का विकास कितनी बार और कितने प्रकार का होता है। शुरू में ये प्रयोग प्रादेशिक हो सकते हैं। उन्हें उसी रूप में स्वीकार करें, पर साधुता जरूर दें। हिन्दी ने बंगला के "संभ्रान्त" को स्वीकार किया है तो वही हिन्दी दक्षिण भारतीय "कल्याण" को क्यों स्वीकार न करे। पर हाँ, दक्षिण भारतीय कन्यापक्षवाले संभ्रान्त के साथ अपनी कन्या का कल्याण कराना नहीं चाहेंगे। "संभ्रान्त" का मलयालम में अर्थ है बेहद घबराया हुआ। बंगला के अर्थ में संभ्रान्त के साथ कल्याण जरूर कराना चाहेंगे। तमिल व मलयालम में कल्याण का अर्थ है ब्याह। उस अर्थ में तो हम कल्याण नहीं चाहेंगे जिस अर्थ में हिन्दी में उसका कल्याण हो गया मुहावरा चलता है। भाषा का मनोरंजन अनंत प्रकार का है। किंतु गंभीरता से विचार करने पर हिन्दी के माध्यम से अखिल भारतीय भाषाई समन्वय संभव है। उसका प्रयत्न हमें अनेक प्रकार से करना होगा।

हमारी हिन्दी सेवी संस्थाएँ प्रचार एवं परीक्षा संचालन के क्षेत्र में बड़ी सेवा कर चुकी हैं। यदि वे हिन्दी के अखिल भारतीय रूप को गढने में प्रादेशिक भाषा व हिन्दी को मिलाने में भी कुछ ठोस योगदान कर सकें, उसका प्रयास करें, तो उसमें भी वे सफल हो जायेंगी। ★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मलयालम कविता में समकालीन काव्यगत प्रवृत्तियाँ : एक झलक

जी. कमलम्मा, एम.ए.,बी.एड.

समकालीन कविता आज अपना विशिष्ट व्यक्तित्व और इतिहास रखती है। यह इतिहास जिस युग को जागृत करता है वह राजनीति के भीषण प्रहारों एवं संघर्षों में भी जीवित है। साठ के बाद कविता के प्रवाह में जो नया मोड दिखाई पडता है वह कोई नयी वस्तु नहीं बल्कि वह तीसों में उपजी-चालीसों में पली और पचासों में बढी नयी कविता की धारा का वेगमयी रूप है। साठोत्तरी कविता में जो स्वर उगे हैं वे नयी कविता में, बीज रूप में वर्तमान रहे थे। नयी कविता में असन्तोष और अस्वीकृति का जो स्वर प्रतिध्वनित होता है वह साठोत्तरी कविता में भी गूँज उठता है। साठोत्तरी कविता के स्वर व्यंग्य है। विद्रोह एवं मोह भंग के स्वर भी हैं।

वर्तमान युग की परिस्थितियाँ भिन्न हैं, समस्यायें भिन्न हैं और परिवेश भिन्न है। अतः आधुनिक युग-बोध उन पात्रों, परिस्थितियों और विषयों को भी महत्व दे रहा है जिन्हें कभी तुच्छ, निकृष्ट, त्याज्य और अश्लील माना जाता था। यह तो सत्य है कि आज काव्य विषयों की सीमा बढ गयी है। युवा पीढी की रचना की समस्यायें इस युग के मानव की समस्यायें हैं। आज का मानव आश्रयहीन है। भीति-ग्रस्त है। जीवन की आँधी में टूटा हुआ एवं त्रसित है। उसका यह रूपान्तरण आधुनिक जीवन की विकासशील यांत्रिक स्थितिओं के कारण हुआ है।

वर्तमान कवि के सामने आधुनिक युग बोध की विकरालता प्रकट होती है। अतः उनकी कवितायें समस्याओं से आवृत हैं। उन पर राजनीति का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दलगत राजनीति ने समकालीन कवियों को भी वर्गों में विभक्त किया है ।

प्रत्यक्ष प्रभाव है । दलगत राजनीति ने समकालीन कवियों को भी वर्गों में विभक्त किया है ।

साठों में 'आधुनिक' नाम से जो काव्यधारा प्रवाहित होने लगी वह अत्यंत निगूढ एवं नव स्वच्छन्दतावादी कही जा सकती है । काल की चेतना अपनाये बिना, तूफानों की गति स्पन्दित किये बिना, केवल रूप में परिवर्तन करने के कारण वह जनता का ध्यान आकृष्ट करनेवाली काव्यधारा हो गयी । श्री. अय्यप्प पणिक्कर, दिलीप चित्रे, काना सुब्रमण्यम्, पी. एस. रेगे, एस. एच. वात्स्यायन गोपाल कृष्ण अडिगा, एन. वी. कृष्ण वारियर, एम. गोविन्दन जैसे कवियों को उपर्युक्त धारा के उन्नायक कहा जा सकता है तो भी यह तो सत्य है कि इन कवियों में सामाजिक दायित्व अधिकाधिक प्रकट होता है ।

इटश्शेरी गोविन्दन नायर, वैलोप्पिल्ली श्रीधर मेनन जैसे कवियों को जिस प्रकार परोक्ष रूप से सामाजिक धक्का स्वीकार करना पड़ा वैसे ही कठिन दबाव एवं कर्कश संग्रामों से भरा समकालीन वैयक्तिक एवं सामाजिक धक्का व्यापक रूप से लगने का अवसर भी हो गया है । इसकेलिए प्रतिषेध रूप में 'संग्राम निर्भर' समकालीन वैयक्तिक एवं सामाजिक धक्का प्रतिस्पन्दित करने वाली एक कविताशैली बढती को प्राप्त कर रही है । गतकालीन अर्थ में लेने पर यह तो क्रांतिकारी कविता ही नहीं कही जा सकती । आत्म-

आत्मसघर्ष तथा आत्मीय क्रांति से ही मध्यम श्रेणी में उपजी-माध्यम श्रेणी को पुकारनेवाली यह कविता समकालीन क्रांति प्रकट करती है ।

संघर्ष तथा आत्मीय क्रांति से ही मध्यम श्रेणी में उपजी-माध्यम श्रेणी को पुकारनेवाली यह कविता समकालीन क्रांति प्रकट करती है । नवीन जनक्रांति की धारा इसकी पृष्ठभूमि का काम करती है । लीलाधर जगूडी, सौमित्र मोहन, चन्द्रकान्त देवताले, असीस सन्याल, के. जी. शंकरपिल्लै, कटम्मनिट्टा रामकृष्णन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आट्टूर रविवर्मा जैसे कवि इसी श्रेणी के होते हैं।

समान्तर कवितायें क्रांति से ही उपज कर बढनेवाली हैं। कर्नाटक की 'बेडय' कविता तेलुगु की 'क्रांतिकारी कविता' और मराठी की 'दलित कविता' इसके उदाहरण हैं। समकालीन भारतीय कविता की धारा में ऐसी ऐसी बातें दर्शित होतीं हैं जिनकी झलक मलयालम की कविताओं में भी दिखाई पडती हैं।

साठवें दशक में जो आधुनिक कविता उपजी वह केवल कवि के लिए लिखी गयी कविता थी।

साठवें दशक में जो आधुनिक कविता उपजी, वह केवल कवि के लिए लिखी गयी कविता थी। रोमान्टिज़िज़्म झलकानेवाली कविता के शीर्ण भागों को छोडकर स्वच्छन्दतावादी काव्य भावना को नयी शान और चेतना प्रदान करने के लिए इने गिने कविता प्रेमियों ने जो अथक प्रयत्न किया है उसीका वह परिणाम था। जनसाधारण की कविता और उसकी भाषा संबन्धी तीक्षण विचार के कारण ऐसे कवियों का स्वागत कविता के मर्मज्ञ हो कर सकते थे। उनकी भाषा नवीन रूप से सुसस्कृत, एक अलग व्यक्तित्व रखनेवाली हो गयी। अधिक व्यक्तिनिष्ठ होने के कारण यह आधुनिक कविता हताशापूर्ण भी बन गयी है।

अय्यप्प पणिक्कर, एन. एन. कक्काट, माधवन अय्यप्पत्तु आट्टूर रविवर्मा, एम गोविन्दन, के. जी. शंकरपिल्लै, सच्चिदानन्दन जैसे आधुनिकोत्तर कवियों ने जिस काव्यधारा का समारंभ किया है, वह मलयालम कविता की एक नयी जागृति का निदान है।

आधिभौतिकता का भौतिक दर्शन से, अमूर्तता का मूर्तता से, आत्मनिष्ठता का वस्तुनिष्ठता से, भावगीत स्वभाव का नाटकीय स्वभाव से और साधारण संघर्ष का वर्ग संघर्ष से मुकाबला करने का प्रयत्न ऐसी कविता के माध्यम से हो जाता है के. जी. शंकर पिल्लै की बंगाल' नाम की कविता मलयालम कविता के नवीन युग का प्रोद्घाटन करनेवाली है। मलयालम में 'बंगाल' एवं समान भाव की कविता के आगमन के पीछे अनेक कारण हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समकालीन युवा कवियों ने अधिकतर कविता केलिए एक तरह का सान्द्र गद्य ही स्वीकार किया है ।

समकालीन युवा कवियों ने अधिकतर कविता केलिए एक तरह का सान्द्र गद्य ही स्वीकार किया है। गद्य की ऋजुता और दृढता बढ जाये। ये कवि समझते हैं कि समकालीन याथार्थ्य के प्रकटन के लिए गद्य ही शायद अधिक जंचेगा और इस नये संवेदन के लिए गद्य अनिवार्य महसूस होता है। छन्दस्कृत रूप का असर पाठकों के हृदय में सुदृढ रूप से पडने के कारण, उस सुदृढ बन्धन की श्रृंखला काट डाली जायेगी।

गद्य तो दैनिक जीवन की भाषा और साधारण बोली की भाषा से निकट संबन्ध रखता है। व्यंग्य की तीक्ष्णता, शब्द चयन की सुदृढता, भावाविष्कार की नाटकीयता, धुन या स्वर की विविधता स्वाभाविकता आदि के लिए गद्यात्मक रूप सहायक होगा। लेकिन लोकगीत, मूँहगोली छन्द, द्रविड छन्द, स्वतंत्र ताल या मुक्त छन्द के प्रयोग करने में उसका अपना न्यायीकरण है। भाव, शिल्प, लक्ष्य, आस्वादक मंडल इनके सम्मेलन से एक रीति की सफलता का निर्णय किया जा सकता है।

परिवर्तन की अदम्य तृष्णा साधारण जनता में बनी रहती है। पौराणिकता में अडिग रहनेवाले कवियों का पीछा करना उनका काम नहीं। परिवर्तन केलिए प्रेरक नया रूप स्वीकार करने के लिए वे तैयार रहते हैं।

साठोत्तरी मलयालम कविता के प्रारंभ काल में कवितायें अकसर छन्दबद्ध थीं। शैली स्पष्ट थी। काव्यबिंब सुगम थे। काव्य के विषय भिन्न भिन्न जीवन क्षेत्रों से लिये गये थे। चान्दयात्रा, जमीन्दारी का पतन, गान्धीवाद का आश्रय जैसे विषय लिये गये। उसके उपरान्त कविता की शैली बदली। स्वतंत्र ताल शिल्प सबल होकर भी अकसर अन्वय शैली अपनाई गयी। अपने अस्तित्व

अपने अस्तित्व की जड की खोज में, अत्यंत गहरे और अत्यंत सूक्ष्म भाव प्रकटन की उतावली भी दृश्यमान है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की जड की खोज में, अत्यंत गहरे और अत्यंत सूक्ष्म भाव प्रकटन की उतावली भी दृश्यमान है।

प्रतिक्षण बदलनेवाली इस दुनिया में जनजीवन, राष्ट्र, धर्म आदि समस्याओं में न उलझकर वर्तमान कवि का मन केवल आत्मसत्ता की खोज में रम जाता है। इस 'आत्माभिरक्ति' के कारण कविता पाठकों के सामने दुरूह भी हो जाती है।

आधुनिक मानव असंतृप्त है। वैज्ञानिक परिवेश में, सारे ससार में भस्मासुर के तांडव का हुंकार सुनाई पडता है। सांस्कृतिक एवं नैतिक पतन से जो विघटन भाव, घोर निराशा और प्रतिकार की ज्वाला उठ रही है, उसमें तपता झुलसता कवि अपने भाव प्रकटन की एक अलग चाल रखने की अदम्य इच्छा प्रकट करे तो भी उसमें कोई आश्चर्य नहीं। उनकी कविता में घोर निराशा—भूखे नंगे और दलितों की घोर निराशा—का गरम निश्वास है तो समाज की ऊँची सीढी पर विराजनेवालों के प्रति तीक्ष्ण व्यंग्य-बाणों का प्रयोग भी किया गया है। तप्त होकर कवि कहने लगता है—

आके यहाँ जन्म लिया, एक भूल
जीता रहा, अगली भूल।

व्यंग्य आधुनिक कविता का प्राण बन गया तो उसका कारण हमारे जीवन की दुरन्त कर्कशता ही है।

'अनदेखा' के बहाने सीधा चल देना
भूल।
सब के सब भूल।[1]

कवि के हृदय में केवल एक इच्छा बाकी रहती है।

ज़रा सीधा लेट मर जाने की
इच्छा केवल बाकी रहती
सोच विचारा, राह न उसकी, अब
धरती का रूप गोल तो है।[2]

कभी कभी ये कवि व्यंग्य बाणों का प्रयोग भी करते हैं। व्यंग्य आधुनिक कविता का प्राण बन गया तो उसका कारण हमारे जीवन की दुरन्त कर्कशता ही है।

---

1. वन्नुंपिरन्नतबद्धम् जीविक्कुन्नतुमट्टोरबद्धम्
कण्टिल्लेन्नु नटिच्चु निवर्न्नु नटन्नीटुन्नतबद्धम्
सर्वाबद्धम्।
—तीर्थयात्रा—एम. एन. पालूर

2. ओन्नु निवर्न्नु किटन्नु मरिक्कणमेन्नोरु मोह-
मात्रम् शेषिक्कुन्नु
निनच्चालिन्नतिनिल्लोरु मार्गम्
भूमियुरूण्टताणल्लो
—तीर्थयात्रा—एम. एन. पालूर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुंचन नंपियार और नंपूतिरी कवियों के बाद मलयालम काव्य मंडल से जो व्यंग्य भावना नष्ट हो गयी उसका पुनर्जागरण आधुनिक मलयालम कवियों की भावना में दृश्यमान है।

श्री अय्यप्प पणिक्कर का मत है कि सम्राटों के परिहास करने का अवसर मिल जाय तो विदूषक का वेष भी उत्तम है। पणिक्कर ने कविता की ध्वनि में व्यंग्य प्रकट किया है। मनुष्य के निरुपयोग

समकालीन समाज को सार्थकता, क्रूरता, अनुकरण करने का भ्रम और आत्माविष्कार की तीव्रता, एक सच्चे दार्शनिक की निर्लिप्तता के साथ कुञ्ञुण्णी अपनी कविताओं में अभिव्यक्त करते हैं।

बकवास की अर्थशून्यता 'विप्लवप्लवम' की ध्वनि में प्रकट होती है।

आट्टूर रविवर्मा की 'केनसर' एम. गोविन्दन की 'तन्टेटम', अय्यप्प पणिक्कर की 'पासेज टु अमेरिका' कटम्मनिट्टा रामकृष्णन की

आधुनिक कवि समझता है कि निद्रालीन संसार को जगाने के लिए गाने की आवश्यकता नहीं बल्कि डांटने की ही आवश्यकता है।

'चाक्काला' (मृत्यु)आदि कविताओं में सामाजिक कुरीतियों की ओर उंगली उठायी गयी है।

समकालीन समाज की स्वार्थता, क्रूरता, अनुकरण करने का भ्रम और आत्माविष्कार की तीव्रता, एक सच्चे दार्शनिक की निर्लिप्तता के साथ कुञ्ञुण्णी अपनी कविताओं में अभिव्यक्त करते हैं।

आधुनिक कवि समझता है कि निद्रालीन संसार को जगाने के लिए गाने की आवश्यकता नहीं, बल्कि डांटने की ही आवश्यकता है।

स्वच्छन्दता के झूठे आकाश को छोडकर खरखरे तल से होकर बढने-वाली कविता कठोर सत्य के प्रस्ताव के लिए मृदुलता का परिवेश हटा देती है। लेकिन कुछ कवियों के मत में क्रुद्ध एवं कर्कश आलोचना के स्थान पर हँसी के साथ आलोचना करना—व्यंग्य बाण फेंक देना ही उत्तम है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साधारण जनता के तीक्ष्ण भावों और विचारों को उनकी समझ की भाषा में प्रकट करने लग जाये तो यंत्रयुग के इस अवसर पर भी कविता अपना खास स्थान न खो बैठेगी। समाज सुधार ही ऐसी कविताओं का लक्ष्य रहेगा।

इस प्रकार युग परिवर्तन का शंखनाद ही साठों के काव्य क्षेत्र में गूंज उठता है। सारे भारत की साहित्यिक भाषाओं में यह परिवर्तन द्रष्टव्य है।

वैभवत्यागी जवाहरलाल

1920-21 में मुजफ्फरनगर की एक कॉंफ्रेंस में पहली बार उन्हें देखा था, जब सभापति श्री. सुन्दरलाल जी ने जनता से एक अबोध शिशु की तरह उनका परिचय कराया था—"यह आपके सामने खड़ा हैं जवाहरलाल, जो कल तक बादशाहों की तरह जीता था और अफवाह हैं कि उसके कपड़े पेरिस से धुलकर आते थे, पर आज वह मुल्क का फकीर बना आपके सामने खड़ा हैं।"

मुझे याद हैं, मैंने अपनी जगह उचक कर मन्च पर खड़े जवाहरलाल को देखा था—कामदेव की पुराण-वर्णित रूप राशि-सा सुन्दर जवाहरलाल। पैरों में ऊँची धोती, देह में लम्बा कुरता और कन्धे पर लटकता झोला!

मन में जवाहरलाल के वैभव-त्यागी रूप की एक झांकी समा गई थी, जो आज भी ज्यों की त्यों ताजी हैं और सदा रहेगी!

श्री. कन्हैयालालमिश्र प्रभाकर

(विकास से साभार)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'गंगाशरण सिंह' हिन्दी वाग्स्पर्धा

मार्च 1989 में अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ द्वारा नई दिल्ली में आयोजित 'गंगाशरण सिंह' हिन्दी वाग्स्पर्धा में केरल हिन्दी प्रचार सभा की छात्राओं ने पुरस्कार पाया। इस उपलक्ष्य में केरल हिन्दी प्रचार सभा को प्रदत्त वैजयन्ती केन्द्र विधि मंत्री श्री. भारद्वाजजी के करकमलों से स्वीकार कर रहे हैं सभा के प्रतिनिधि श्री. के. एच. वर्गीस।

अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ द्वारा मार्च 1989 में नई दिल्ली में अखिल भारतीय 'गंगाशरण सिंह' वाग्स्पर्धा का आयोजन किया गया। संघ के पूर्व अध्यक्ष एवं तपोनिष्ठ हिन्दी सेवी स्व० गंगाबाबू की पावन स्मृति में आयोजित उक्त प्रतियोगिता में संघ से संबद्ध विविध स्वैच्छिक हिन्दी संस्थाओं के छात्रों ने भाग लिया। ऐसी अखिल भारतीय हिन्दी वाग्स्पर्धा का आयोजन इस के पहले शायद नहीं हुआ है। इस प्रतियोगिता के प्रतिभागी छात्रों ने यह साबित किया कि परिश्रम करने पर हिन्दी-तर भाषाभाषी हिन्दी वाग्मिता में आगे आ सकते हैं। इस प्रतियोगिता में गुजरात, महाराष्ट्र जैसे उत्तरी राज्यों से आये विद्यार्थियों की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'गंगाशरण सिंह' अखिल भारतीय हिन्दी वाग्स्पर्धा में पुरस्कृत, केरल हिन्दी प्रचार सभा की छात्रायें—(बायें) कु. पी. वी. मिनी(तृतीय पुरस्कार) और (दायें) कु. एस. सुनीता (प्रोत्साहन पुरस्कार) बीच में श्री. के. एच. वर्गीस और श्री जगदीश प्रसाद (कार्यालय सचिव, अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ, नई दिल्ली)

वाग्पटुता केरल, तमिलनाड जैसे दक्षिणी राज्यों से आये छात्रों की वाग्पटुता से काफी उच्चस्तर की थी। इस से यही प्रमाणित होता है कि हिन्दी भाषी क्षेत्रों के समीपस्थ राज्यों के छात्रों को हिन्दी की वाचिक क्षमता विकसित करने की जितनी सुविधायें उपलब्ध हैं उतनी सुविधायें इतर हिन्दीतर राज्यों के छात्रों को उपलब्ध नहीं हैं। राष्ट्र-भाषा में वाचिक क्षमता विकसित करने के समान अवसर सभी हिन्दीतर राज्यों के छात्रों को मिलना चाहिए। इस के उपाय ढूँढ निकालने होंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अखिल केरल हिन्दी टंकण और आशुलिपि प्रतियोगिता के विजेता

श्रीमती के. अंबिका देवी

कु. आर. वी. रमाकृष्ण

केन्द्र मानव संसाधन विकास मंत्रालय की सहायता से केरल हिन्दी प्रचार सभा द्वारा मार्च 1989 में आयोजित राज्य स्तरीय हिन्दो टंकण प्रतियोगिता में केरल हिन्दी प्रचार सभा के हिन्दी टंकण एवं आशुलिपि प्रशिक्षण संस्थान की शिक्षिका श्रीमती के. अंबिकादेवी **प्रथम**, भारतीय रिसर्व बैंक, तिरुवनन्तपुरम कार्यालय के श्री. राजन वर्गीस द्वितीय और स्टेट बैंक ऑफ ट्रावनकोर के पूजप्पुरा मुख्य कार्यालय के श्री. एस. शंकर राम तृतीय निकले। राज्यस्तरीय हिन्दी आशुलिपि प्रतियोगिता में केरल हिन्दी प्रचार सभा के हिन्दी टंकण और आशुलिपि प्रशिक्षण संस्थान की कु. आर. वी. रमाकृष्णा, कु. आर. प्रभाकुमारी और कु. आर. अनिताकुमारो क्रमशः **प्रथम**, द्वितीय और तृतीय निकलीं। विजेताओं को पुरस्कार दिये जायेंगे। प्रथम पुरस्कार 500/-, द्वितीय पुरस्कार 300/-, और तृतीय पुरस्कार 200/- हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मलयालम लघुकथा

पागलपन

कमलादास

अनुवाद: **के. राधाकृष्णन**
अयिरूर

ज़ब कइयों के मुँह से सुना कि अरुणा को पागलपन की शुरुआत हो गई है तभी इस खबर पर मुझे विश्वास होने लगा था। पहुंचने के दूसरे दिन ही मैं उसके घर गयी।

उसकी खूबसूरत नेपाली नौकरानी ने दरवाजा खोला। पान से काले हो गये दांत दिखाकर वह हँस पड़ी।

"तुम्हारी मालकिन कहाँ है ?" मैं ने पूछा।

"मालकिन बीमार हैं, लेटी हैं" उसने कहा। इधर पाँच छ: महीनों से बीमार हैं।"

उसने जिस कमरे की ओर इशारा किया उस तरफ जब मैं चली तो एक मैली लाल साड़ी पहने दीवार पर नज़र गड़ाये पलंग पर बैठी अरुणा को मैंने देखा।

क्या हो गया अरुणा ?" मैं ने पूछा। "तुम कैसे इतनी दुबली हो गयी ?"

वह उठकर मेरे गले लगी। उसके बालों में पसीने की गंध थी। मेरे कंधे पर हाथ रखती हुई अरुणा मेरे चेहरे की ओर गौर से देखने लगी।

"इतने दिन तुम क्यों मुझसे मिलने नहीं आयी ?" उसने पूछा। "क्या तुम्हें भी मुझसे मिलना पसंद नहीं?"

"कौन तुमको देखना पसंद नहीं करता ?"

"वे"

"नहीं अरुणा, मैं इस बात पर विश्वास नहीं कर सकती। तुम्हें गलतफहमी हो गयी होगी। उन्हें तुमको घृणा करने की कोई वजह नहीं है न ?"

अरुणा बिस्तर पर लेट गयी। "अगर मैं उन सबके बारे में कहूँगी तो तुम विश्वास नहीं करोगो, विमला" उसने कहा "मैं जो भी कहती हूँ, उस पर अब कोई भी विश्वास नहीं करता। कहते हैं कि मैं पागल हो गयी हूँ। वे सोचते हैं कि मैं बच्ची को तंग करूँगी। वे कहते हैं कि चाकू हाथ लगने पर मैं उसी को दिखाकर लोगों को डराती हूँ। तुमने भी यह सब सुना होगा ?

"ये सब मन गढंत बातें फैलाने वाले कौन हैं ?" मैं ने पूछा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वे और......सब लोग। अब तो बच्ची भी मेरे पास नहीं आती। उसको उनकी माताजी ले गयी है। पिछले महीने एक दिन जब मैंने रो-रोकर बहुत हंगामा किया तो वे उसको ले आये। लेकिन दरवाजे के पास खडी होकर वह बोल रही थी —"मम्मी पागल है।"

"यह सब कबसे शुरू हुआ?" मैं ने पूछा।

"मुझे याद नहीं" अरुणा ने कहा। "समय के बारे में मुझे किसी प्रकार की धारणा नही रह गयी है। कहते हैं कि एक दिन मैं ने उनको मारने की कोशिश की थी। चाकू लेकर पीछे दौडी थी। विमला, तुम बोलो, क्या मैं यह सब करूँगी?

मैं ने सिर्फ मनाही में सिर हिलाया।

"पडोसी भी मुझसे डरते हैं। सुना है उन लोगों ने नौकरानी से पूछा कि वे मुझे क्यों पागलखाने नहीं भेजते"।

'यह किसने कहा?" मैं ने पूछा।

"वह खुद बोली थी। फूलमति। तुम्हारा तो उससे परिचय है न? अब वह इस घर की रानी है। उनके बिस्तर पर भी उसने सोना शुरू कर दिया है।"

"नहीं अरुणा, यह सब सच नहीं है। सब तुम्हारी गलतफहमियाँ होंगी" में ने कहा।

अरुणा तुरन्त पेट के बल लेट गयी। "कोई मझपर विश्वास नहीं करता" वह बड़बड़ायी।

"तुम यहाँ से क्यों नहीं चली जाती?" तुमने जो कुछ कहा, वह सब अगर सच है तो इस तरह की बेइज्जती सहकर तुम क्यों यहाँ पडी हो? क्यों तुम अपने पिताजी के यहाँ नहीं चली जाती?"

"वैसा तो कर नहीं सकती, विमला" अरुणा ने कहा। "रात को जब मैं बत्ती जलाकर देखती हूँ तो उनको एक ओर मुडकर सोते देखती हूँ। दोनों पैर मोडकर एक हथेली पर गाल रखकर एक छोटे लडके की तरह। वह कितने सुन्दर है, विमला। जब उन्हें लेटे देखती हूँ तो मैं सभी दुख भूल जाती हूँ। नहीं, मैं कभी भी उन्हें छोडकर जाऊँगी नहीं। विमला, क्यों तुम इस बात को समझ नहीं पाती?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संगोष्ठी समाचार

लघुकथा की चुनौतियाँ

मनोहर सुगम

करनाल में 16 अप्रैल 1989 को लघुकथा सम्मेलन का आयोजन किया गया । इसमें लेखन की चुनौतियों के संदर्भ में लघुकथा लेखन की स्थिति पर विचार-विमर्श हुआ तथा लतुकथा-पाठ और उन पर विचार चर्चा की गयी ।

विषय-प्रवर्त्तन करते हुए चर्चित लघुकथा लेखक अशोक भाटिया ने आज के जटिल यथार्थ को लघुकथा के सामने सबसे बड़ी चुनौती सिद्ध किया । वर्तमान रचनात्मक संकट के पीछे सक्रिय उपभोक्तावादी संस्कृति पर उन्होंने विस्तृत चर्चा की । अधिकांश लघुकथाओं में आये सतही व सरलीकृत यथार्थ पर चिंता जाहिर करते हुए इसके पीछे लेखक की वर्गीय सीमाओं की और संकेत किया ।

सुरेश यादव (दिल्ली) ने लघुकथा लेखन में फैली विकृतियों की चर्चा करते हुए अधिकांश लघुकथाओं को धैर्यहीन प्रतिक्रियाएँ सिद्ध किया। रचना में निर्णय देनें की अपेक्षा सामाजिक प्रक्रिया को पकड़ने पर बल देते हुए उन्होंने छोटी रचना के लिये भी बड़ी यात्रा की ज़रूरत को रेखांकित किया । लघुकथा के आंदोलन के स्वीकार के लिये उन्होंने इसकी गुणवत्ता में बढ़ोतरी को जरूरी शर्त बताया ।

अमृतलाल मदान (कैथल) ने लघुकथा के स्वरूप की अपेक्षा मूल्यों के प्रति उसकी प्रतिबद्धता की बात को उभारने पर बल दिया । उन्होंने विधा की अपेक्षा कथ्य को लेकर आंदोलन चलाने को अधिक सार्थक बताया। डॉ० रामजी लाल (करनाल) नें लेखन की प्रतिबद्धता पर बल देते हुए आर्थिक शोषण तथा साम्राज्य-वाद व नवसाम्राज्यवाद पर लेखकों के कलम चलाने पर बल दिया ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रेम विज (चंडीगढ़) और सुभाष नीरव (दिल्ली) ने लघुकथा लेखन की कथ्यगत सीमाओं को रेखांकित करते हुए उसमें विविधता और विस्तार लाने तथा व्यापक संदर्भों से जोड़ने की आवश्यकता पर बल दिया। बी. डी. कालिया 'हमदम' (करनाल) ने लघुकथा की तुलना मिनियेचर पेइन्टिंग्स से करते हुए इसे युग की की मांग बताया तथा पाठक तक रचना सीधे पहुँचने की अनिवार्यता पर बल दिया।

रामकुमार आत्रेय 'प्रभाकर' (कुरुक्षेत्र) ने निकृष्ट लेखन को हतोत्साह करने पर विशेष बल दिया। नीर गुलाटी (पानीपत) ने पाठक को भावावेग द्वारा हिपनोटइज़ करने के बजाय सचेत करने के लक्ष्य से लिखने की ज़रूरत पर बल दिया। डॉ० युद्धवीर धवन (करनाल) ने लघुकथा लेखन में कविता की तरह सघन अनुभूति पर बल दिया तथा बाह्य घटनाओं पर आधारित लघु-कथाओं पर प्रश्नचिह्न लगाया। डॉ० नरेश मिश्र (रोहतक) ने लघु-कथाओं के लिये एक बिंदु, एक स्थान व एक समय की मर्यादा को रेखांकित किया। डॉ० हरिशरण शर्मा (पानीपत) ने लघुकथा को जनमानस में पैठने तथा कहानी से स्वतत्र होने के लिये अतिव्यंजना से बचने पर बल दिया। प्रियव्रत (पानीपत) ने लेखक द्वारा जनांदोलन से जुड़ने की बात उठाकर उसे घटनाएँ 'रिसीव' करने के साथ उनमें पार्टिसिपेट करने पर भी ज़ोर दिया। कुमार सिंह (करनाल) ने लघुकथा को सशक्त माध्यम मानते हुए लेखन को विश्व सरोकारों से जोडने व ऊँचा नज़रिया बनाने पर बल दिया। उन्होंने विधाओं की लड़ाई की अपेक्षा समाज को प्रमुखता देने तथा जनांदोलनों की बड़ाई में सामर्थ्य लगाने की बात उठायी।

दूसरे सत्र में रामकुमार आत्रेय प्रभाकर, विनोद शान्त, अशोक भाटिया, कुमार सिंह, अमृतलाल मदान, कुलदीप जैन, रूप देवगुण, पृथ्वीराज अरोड़ा, प्रेम विज व जगदीश कश्यप ने अपनी ताज़ा लिखी लघुकथाएँ पढ़ीं। इन पर विस्तृत चर्चा में उक्त विचारकों के अतिरिक्त आशा शैली (शिमला) डॉ० मदन गुलाटी, हरवंस पथिक मनोहर सुगम व महावीर शास्त्री ने भी भाग लिया। अंत में रूप देवगुण (सिरसा) ने लघुकथा की अनिवार्यता को तर्कपूर्ण ढंग से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेखांकित किया। पृथ्वीराज अरोड़ा ने समाज से जुड़ साहित्य को बेहतर बताते हुए अच्छी रचना के लिये ज़रूरी बातों को रेखांकित किया। मंच के महासचिव जगदीश कश्यप ने सभी रचनाओं का सूक्ष्म विश्लेषण करते हुए सूक्ष्म संवेदना, सांकेतिकता तथा विश्वसनीयता आदि को लघुकथा के आधारभूत उपकरण बताया।

सम्मेलन का आयोजन अ. भा. लघुकथा मंच के तत्वावधान में अशोक भाटिया ने किया तथा सहयोग शची साहित्य सदन का रहा। लघुकथा पोस्टर प्रदर्शनी भी लगायी गयी।

55/13, एक्स्टेंशन
अर्बन एस्टेट
करनाल, 132001

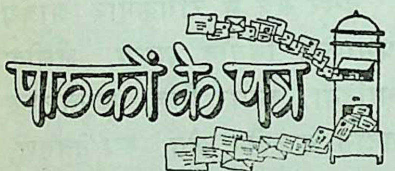

केरल ज्योति के 1989 अंक के संपादकीय में आप ने खादी के बारे में जो कुछ उच्च विचार प्रकट किया है वह बहुत अधिक पसन्द आया। वास्तव में वे विचारधारायें आधुनिक युग में बहुत अधिक प्रभावशाली हैं। मुझे विश्वास है कि आज के विद्यार्थी लोग इसे खूब पढकर जीवन में ज़रूर अपनायेंगे।

बहुवर्ण चित्रों ने पत्रिका को बहुत अधिक आकर्षक बनाया है। आशा करता हूँ कि इसी प्रकार ही केरल ज्योति प्रगतिशील होकर सभी के दिल में एक दिव्य ज्योति बन जायेगी।

पी. एन. रवीन्द्रन नायर
महात्मा हिन्दी विद्याभवन
पइका-686 577
पाला, केरल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूरभाष : 61378 तार : "जय हिन्दी"

केरलज्योति

पुष्प 24
दल 3
एक प्रति—1 रु० 50 पै०
वार्षिक—15 रु०

सांस्कृतिक जागरण की मासिक पत्रिका
जून 1989

संपादकीय

हिन्दी का सार्वदेशिक स्वरूप

हिन्दी ने स्वतंत्रता-प्राप्ति के पूर्व राष्ट्रभाषा बन कर विविध भाषा भाषी भारतीय जनता को एक सूत्र में जोडा। स्वतंत्र भारत की राजभाषा बन कर हिन्दी सरकार से जनता को जोडने का काम कर रही है। हिन्दी को एक तीसरा जिम्मा भी निभाना है। भारत की सामासिक संस्कृति को प्रतिबिंबित करने का। यह जिम्मा उठाने में हिन्दी को अब सक्षम बनाना है।

दक्षिण के मूर्धन्य हिन्दी सेवी डा० मोटूरी सत्यनारायण ने उक्त विचार केरल हिन्दी प्रचार सभा में दिये दीक्षान्त भाषण में व्यक्त किया। भाषण का पूर्ण रूप इस अंक में प्रकाशित है। संविधान सभा के इनेगिने जीवित पूर्व सदस्यों का प्रतिनिधित्व करते हुए उन्होंने स्मरण दिलाया है कि संविधान के निर्माताओंने जिस हिन्दी को भारत की राजभाषा केलिए चुना उसमें वे चाहते थे कि सभी भारतीय भाषाओं की आत्मा और अभिव्यक्ति तथा व्यक्तित्व और कृतित्व प्रतिबिंबित हो। उनका आह्वान है कि हिन्दी को यह भूमिका निभाने की क्षमता देने का बीडा हिन्दी प्रचारक अपने ऊपर ले लें ताकि वह सामासिक संस्कृति का वाहन बन सके। इस से मिलते जुलते विचार केरल के प्रमुख विचारक लेखक एवं पत्रकार डा० एन. वी. कृष्णवारियर ने इस अंक में प्रकाशित अपने लेख 'महामनीषी जयशंकर प्रसाद' में अभिव्यक्त किये हैं। यह हिन्दी प्रचारकों केलिए एक नई चुनौती है। अब तक हिन्दी प्रचारक बहुधा हिन्दी भाषी साहित्यकारों से विरचित साहित्य के माध्यम से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस अंक में

हिन्दी के द्वारा सामासिक संस्कृति का विकास करना है 3
डा0 मोटूरी

आन्ध्र प्रदेश में सातवीं कक्षा से हिन्दी 9
डा0 शीलम् वेंकटेश्वर राव

हिन्दी की दूसरी भूमिका 11
डा0 मोटूरी सत्यनारायण

मंजिल अभी दूर है 27
श्री. एम. के. वेलायुधन नायर

अन्धी दौड 34
श्री. एस. आर. सिंह

महामनीषी जयशंकर प्रसाद 35
डा0 एन. वी. कृष्ण वारियर

दिवंगत विभूतियों को श्रद्धांजलि 39

हिन्दीतर भाषा भाषी क्षेत्रों में हिन्दी भाषा का प्रचार करते रहे हैं। अपने प्रान्तों की प्रादेशिक संस्कृति, सभ्यता और समाज की विशेषताओं को हिन्दी में प्रतिबिंबित करने का कार्य वे शायद हिन्दी भाषी साहित्यकारों पर ही छोडते रहे। पर विष्णु प्रभाकर जैसे दो एक मनीषियों के अलावा किसी प्रमुख हिन्दी भाषी साहित्यकार ने इस ओर कलम चलाना आवश्यक या उचित नहीं समझा। कुछ उत्साही हिन्दी प्रचारकों ने अपनी कुछ मौलिक और अनूदित हिन्दी रचनाओं के द्वारा यह कार्य संपन्न करने का परिश्रम किया। पर प्रायः उन्हें इस कारण हतोत्साह होना पडा कि उन की पुस्तकें प्रकाशित करने के लिए हिन्दी के प्रतिष्ठित प्रकाशक साधारणतया तत्पर या तैयार नहीं हुआ करते।

हमारा सुझाव है कि जिस प्रकार राजभाषा के रूप में हिन्दी का विकास करने केलिए केन्द्र सरकार ने केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो आदि संगठन बनाये हैं उसी प्रकार देश की सामासिक संस्कृति के प्रतिबिंब के रूप में भी हिन्दी का त्वरित विकास करते रहने केलिए कोई ऐसा संगठन बनाये जो हिन्दीतर भाषा भाषी और हिन्दी भाषी लेखकों के संयुक्त प्रयास से प्रादेशिक संस्कृतियों पर आधारित मौलिक और अनूदित हिन्दी रचनायें नियमित रूप से प्रकाशित करता रहे ताकि हिन्दी का सार्वदेशिक रूप भी उभर आये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खादी धारी हिन्दी स्नातक

केरल हिन्दी प्रचार सभा द्वारा मई 1989 में आयोजित दीक्षान्त समारोह । स्नातकों की खादी पोशाक ने समारोह का सौन्दर्य बढाया ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

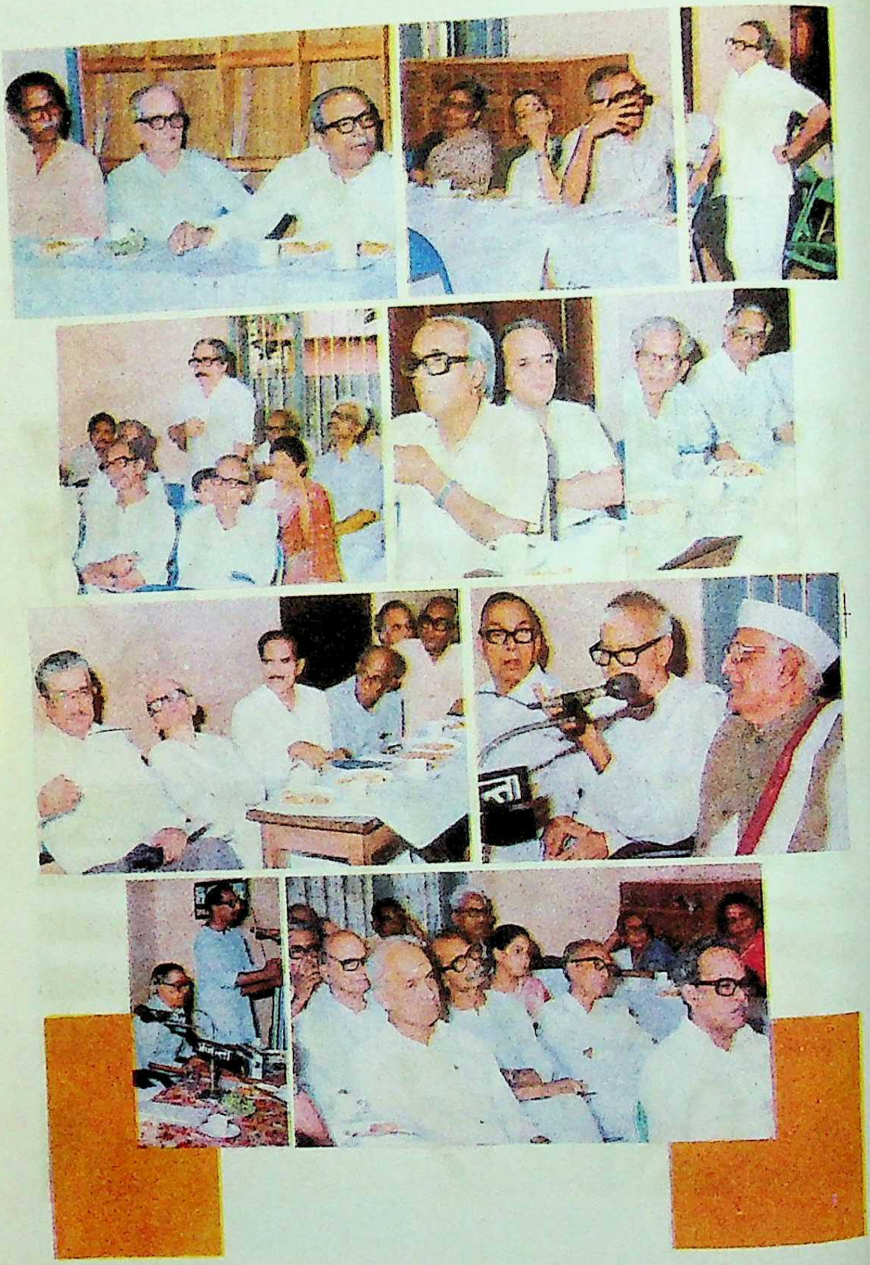

विद्वत् सभा

केरल हिन्दी प्रचार सभा भवन में 7-5-1989 को डा० मोटूरी सत्यनारायण की अध्यक्षता में आयोजित प्रीतिमिलन में तिरुवनन्तपुरम नगर के अनेक विद्वानों ने भाग लिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रीतिमिलन

डा० मोटूरी सत्यनारायण की उपस्थिति विद्वानों केलिए अत्यंत आनन्द दायक रही । भारतीय भाषाओं का सौहार्द ऐसे ही बढता है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

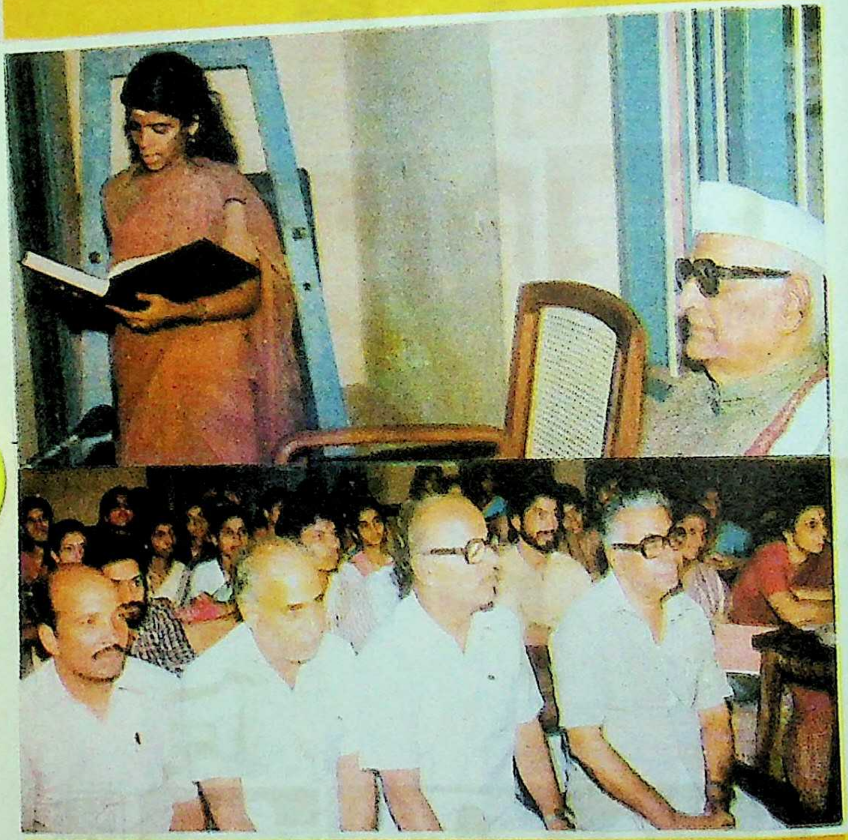

संविधान में हिन्दी

भारतीय संविधान में हिन्दी के संबंध में क्या परिकल्पना की गया है ? इस संबंध में केरल हिन्दी प्रचार सभा के हिन्दी स्नातकोत्तर केन्द्र में चर्चा कर रहे हैं डा० मोटूरी सत्यनारायण ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी के द्वारा सामासिक संस्कृति का विकास करना है।

डा० मोटूरी

के. चन्द्रशेखरन

स्वतंत्रता सेनानी, संविधान सभा और राजभाषा आयोग के पूर्व सदस्य और दक्षिण के प्रमुख हिन्दी कार्यकर्ता पद्मभूषण डा० मोटूरी सत्यनारायण ने आह्वान किया कि हिन्दी के द्वारा सामासिक संस्कृति का विकास करें। उनकी मान्यता है कि चूंकि विविध प्रान्तीय भाषाओं में निहित उप-संस्कृतियों के समंजस सामंजस्य से ही यह काम हो सकता है इसलिए यह दायित्व हिन्दीतर भाषा-भाषी ही निभा पायेंगे।

केरल हिन्दी प्रचार सभा द्वारा तिरुवनन्तपुरम के टैगोर शताब्दी भवन में आयोजित दीक्षान्त समारोह में दीक्षान्त भाषण दे रहे थे डा० मोटूरी। (भाषण अन्यत्र)

समारोह में अध्यक्षता करते हुए केरल विधान सभा के अध्यक्ष श्री. वर्कला वी. राधाकृष्णन ने प्रान्तीयतावाद की संकुचित मनोवृत्ति के कारण और हिन्दी थोपने के लिए कभी कभी किये जानेवाले प्रयत्न के कारण कहीं कहीं हो रहे हिन्दी विरोध को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

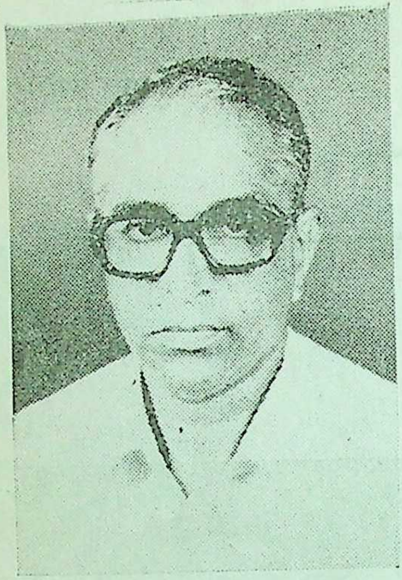

टी. के. रामकृष्णन

देश केलिए हानिकारक बताया और कहा कि देश की अखण्डता और सुस्थिति केलिए हिन्दी का व्यापक प्रचार अत्यन्त आवश्यक है। हिन्दी ही भारत की राष्ट्रभाषा होने की क्षमता रखती है।

हिन्दी भूषण और साहित्याचार्य परीक्षा में प्रथम स्थान पाये स्नातकों को यथाक्रम स्व० के. वासुदेवन पिल्लै स्मारक स्वर्ण पदक और डा० के. भास्करन नायर स्मारक स्वर्ण पदक वितरित करते हुए केरल के शिक्षा मंत्री श्री. के. चन्द्रशेखरन ने बताया कि भारत की राष्ट्रभाषा और राजभाषा के रूप में हिन्दी का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि उचित परिश्रम करने पर केरल के छात्र हिन्दी में हिन्दी भाषी छात्रों की अपेक्षा अधिक दक्षता पा सकते हैं।

मलयालम और हिन्दी के बीच सौहृद बढाने की दिशा में किये गये बहुमूल्य योगदान के उपलक्ष्य में मलयालम के. महाकवि श्री. एम. पी. अप्पन को केरल हिंदी प्रचार सभा की मानद उपाधि "साहित्य कलानिधि" प्रदान करते हुए केरल के संस्कृति मंत्री श्री. टी. के. रामकृष्णन ने कहा कि स्वतंत्रता संग्राम के समय हिन्दी की देशप्रेम प्रचोदक शक्ति से प्रेरित होकर उन्होंने हिन्दी का अध्ययन किया था।

वर्कला राधाकृष्णन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दीतर भाषा-भाषी प्रान्तों के साहित्य और संस्कृति पर आधारित रचनायें ही हिन्दी को सामासिक संस्कृति का प्रतिबिंब बना सकेंगी।

डा० जी. रामचन्द्रन

स्वागत भाषण में केरल हिन्दी प्रचार सभा के मंत्री एवं अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ के कोषाध्यक्ष श्री.एम के. वेलायुधन नायर ने बताया कि हिन्दीतर भाषा-भाषी प्रान्तों के साहित्य और संस्कृति पर आधारित रचनायें ही हिन्दी को सामासिक संस्कृति का प्रतिबिंब बना सकेंगी।

केरल हिन्दी प्रचार सभा के स्नातकोत्तर केन्द्र के छात्रों को संबोधित करते हुए डा० मोटूरी ने इस भय को निर्मूल बताया कि हिन्दी जब पूर्ण रूप से राजभाषा बनेगी तब हिन्दीभाषी जनता का प्रभुत्व छा जायेगा। उन्होंने छात्रों को समझाया कि हिन्दी में अच्छा अधिकार पाना ही इस भय के निवारण का उत्तम उपाय है।

7–5–1989 को केरल हिन्दी प्रचार सभा में आयोजित प्रीति-मिलन में तिरुवनन्तपुरम नगर के प्रमुख साहित्यकारों, शिक्षाविदों और सामाजिक तथा सांस्कृतिक कार्यकर्ताओं से चर्चा करते हुए डा० मोटूरी ने बताया कि विधान निर्माताओं ने शासन, शिक्षा, व्यापार संचार आदि क्षेत्रों में भारतीय भाषाओं से अंग्रेज़ी को प्रतिस्थापित करने का जो संकल्प किया था उसे प्रत्यक्ष करने केलिए हमें काफी प्रयत्न करना है। अनुसंधान का कार्य जब तक भारतीय भाषाओं में नहीं होने लगेगा तब तक हमें उस केलिए अँग्रेज़ी का आश्रय लेते रहना पडेगा।

जब पूछा गया कि क्या हिन्दी प्रान्तों के सामाजिक पिछडेपन का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी भाषा से कोई संबंध है, तब डा० मोटूरी ने कहा कि हिन्दी भाषी प्रान्तों में हिन्दी का उतना ही प्रचार करना है जितना हिन्दीतर प्रान्तों में करना है। क्योंकि हिन्दी प्रांतों की अधिकांश जनता जो विभिन्न बोलियाँ या उप-भाषायें बोलती है, स्तरीय हिन्दी से अनभिज्ञ है। उन्हें हिन्दी में साक्षर बनाना होगा। वहाँ की सघन निरक्षरता ही सामाजिक पिछड़ेपन का कारण है। और एक प्रश्न के उत्तर में आपने बताया कि

हिन्दी प्रान्तों की अधिकांश जनता जो विभिन्न बोलियाँ या उप-भाषायें बोलती है, स्तरीय हिन्दी से अनभिज्ञ है। उन्हें हिन्दी में साक्षर बनाना होगा।

हिन्दी को सामासिक संस्कृति का प्रतिबिंब बनाने में दृश्य-श्रव्य कला-रूपों का भी उपयोग किया जा सकता है।

प्रसिद्ध गांधीवादी विचारक एवं गांधीग्राम विश्वविद्यालय, मदुरै के पूर्व कुलपति देशिकोत्तम डा०जी. रामचन्द्रन द्वारा अपने खादी आश्रम "माधवी मंदिरम" में किये

खादी और हिन्दी के कार्यकर्ताओं को रचनात्मक कार्यक्रमों की दार्शनिक पृष्ठभूमि से भी अवगत करते रहना है।

गये स्वागत सत्कार के अवसर पर डा० मोटूरी ने इस बात पर ज़ोर दिया कि खादी और हिन्दी के कार्यकर्ताओं को रचनात्मक कार्यक्रमों की दार्शनिक पृष्ठभूमि से भी अवगत करते रहना है।

8-5-1989 को तिरुवनन्तपुरम प्रेस क्लब में केरल हिन्दी प्रचार सभा द्वारा आयोजित पत्रकार सम्मेलन में डा० मोटूरी ने बताया कि हिन्दी को सब तरह की प्रान्तीय भावनाओं से ऊपर उठकर "पैन इन्डियन लैंग्वेज" के रूप में अपनाया जाये ताकि देश की भावात्मक एकता और अखण्डता सुदृढ़ हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाकवि एम. पी. अप्पन पुरस्कृत

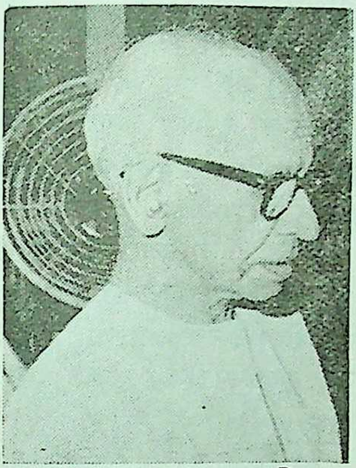

महाकवि एम. पी. अप्पन

मलयालम के विख्यात महाकवि श्री. एम. पी. अप्पन केरल हिन्दी प्रचार सभा द्वारा 6 मई 1989 को संपन्न दीक्षान्त समारोह में "साहित्य कलानिधि" मानद उपाधि प्रदान करके सम्मानित किये गये। हिन्दी और मलयालम के पारस्परिक सौहार्द को सुदृढ़ करने की दिशा में महाकवि द्वारा दिये गये बहुमूल्य योगदान के उपलक्ष्य में यह उपाधि दी गयी है। इसके पूर्व जिन विद्वानों को यह उपाधि प्रदान की गयी है वे हैं—स्व० महाकवि वेण्णिक्कुलम गोपालकुरुप जिन्होंने रामचरित मानस का पद्यानुवाद मलयालम में किया; संस्कृत के प्रकांड पंडित एवं मलयालम के विख्यात लेखक एवं गवेषक डा० पी. के. नारायण पिल्लै जो दीर्घकाल तक केरल हिन्दी-प्रचार सभा के अध्यक्ष रहे; बहु-भाषाविद, मलयालम के यशस्वी कवि एवं मातृभूमि दैनिक के मुख्य संपादक डा० एन. वी. कृष्ण वारियर जिन्होंने हिन्दी पाक्षिक "युगप्रभात" का वर्षों तक संपादन किया और प्रसिद्ध गाँधीवादी कार्यकर्ता एव गांधीग्राम ग्रामीण विश्व विद्यालय, मदुरै के पूर्व कुलपति देशिकोत्तम डा० जी. रामचन्द्रन।

महाकवि श्री. एम. पी. अप्पन के भावगीत मलयालम साहित्य में अपना विशेष स्थान रखते हैं। उनका "वेळि्ळ नक्षत्रम्" शीर्षक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संकलन ही मलयालम में प्रकाशित भावगीतों का प्रथम संकलन है। उन के प्रकाशित ग्रंथों की संख्या चालीस से अधिक है। वे मलयालम के प्रसन्न कवि कहलाते हैं।

मलयालम के कवित्रय कहलाने-वाले आशान, उल्लूर और वल्लत्तोल की रचनायें उन्होंने बाल्यावस्था में ही हृदिस्थ कर लीं। गीता, उप-निषद और रवीन्द्रनाथ ठाकुर की कविताओं ने और अंग्रेज़ी के शैली, कीट्स और वर्ड्सवर्थ की रचनाओं ने महाकवि को अत्यधिक प्रभावित किया। केरल के प्रमुख संत कवि एवं समाज सुधारक श्रीनारायण गुरु और राष्ट्रपिता महात्मा गान्धी से उन्होंने काफी प्रेरणा ली। इन सब के परिणाम स्वरूप वे सुकुमारता, सौंदर्य, उत्साह, उल्लास, आशावाद, देशप्रेम, विश्व प्रेम और आनन्द के अतुल गायक बन गये।

महाकवि श्री. एम. वी. अप्पन की कुछ कविताओं के अनुवाद संस्कृत, हिन्दी और अंग्रेज़ी में निकले हैं। डा० एन. चन्द्रशेखरन नायर ने "गौरीशंकर" शीर्षक संकलन में श्री. अप्पन की कुछ सुन्दर, प्रसिद्ध और लोकप्रिय कविताओं के हिन्दी अनुवादों की "मंजिमापूर्ण मंजूषा" प्रस्तुत की है जिस पर केन्द्र मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने पुरस्कार प्रदान किया है।

केरल साहित्य अकादमी ने श्री अप्पन को पुरस्कार और फेलोशिप देकर सम्मानित किया है। उन्हें मूलूर पुरस्कार और आशान विश्व पुरस्कार मिले हैं।

कांची के जगद्गुरु शंकराचार्य ने विद्वत्सभा में पाटंबर दे कर श्री. अप्पन को सम्मानित किया है। ★

चट्टम्पि स्वामी

सांप अथवा कुत्ते ही क्या, सारे प्राणियों पर उन्हें असीम प्रेम था। चींटियों और चूहों से भी वे बोलते थे। उनकी भाषा वे जानते थे। जहाँ-जहाँ स्वामीजी महराज रहते वहाँ-वहाँ चींटियों को कुछ-न-कुछ देते हुए दीखते थे। बड़े-बड़े जंगली चींटे उनके पास आते और वे उनसे कुछ खाना पाकर लौट जाते। ऐसा दृश्य अनेकों गृहस्थों को देखने का अवसर मिलता था।

डा० एन. चन्द्रशेखरन नायर

(महर्षि श्री विद्याधिराज तीर्थपाद से साभार)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आन्ध्र प्रदेश में सातवीं कक्षा से हिन्दी शिक्षण पुनः आरंभ करने का आश्वासन

प्रस्तुतिः **डा० शीलम् वेंकटेश्वर राव**
प्र. संपादक
विवरण-पत्रिका
हिन्दी प्रचार सभा, हैदाराबाद

एन. टी. रामराव

आन्ध्र प्रदेश हिन्दी अकादमी हैदराबाद के "आन्ध्र का इतिहास" बृहद हिन्दी ग्रन्थ के समर्पण-समारोह के शुभावसर पर प्रदेश के मुख्य मंत्री डा० नन्दमूरितार रामाराव ने आश्वासन दिया कि प्रदेश के स्कूलों में सातवीं कक्षा से हिन्दी शिक्षण को पुनः अमल करने के प्रश्न पर विचार किया जायेगा। "आन्ध्र का इतिहास" समर्पण समारोह युगादि पर्व नूतन वर्ष के सन्दर्भ में अप्रैल 1989 में जुबली-हाल (जन-वाटिका) में सोत्साह संपन्न हुआ। प्रदेश की शिक्षा मंत्री श्रीमती एर्वीन सीतादेवी ने समारोह की अध्यक्षता की। प्रारंभ में हिन्दी अकादमी के अध्यक्ष श्री. वेमूरि राधाकृष्णमूर्तिजी ने अपने स्वागत भाषण में हिन्दी शिक्षण को सातवीं कक्षा से अमल करने का अनुरोध किया। मुख्य वक्ता जस्टिस चल्ला कोण्डय्याजी ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी शुभ-कामनाएँ व्यक्त करते हुए हिन्दी अकादमी के अध्यक्षजी के अनुरोध का जोरदार शब्दों में समर्पण किया।

त्रिभाषा सूत्र की चर्चा करते हुए मुख्य मंत्री ने कहा कि देश की एकता के लिए त्रिभाषा सूत्र अत्यंत आवश्यक है। त्रिभाषा सूत्र के प्रति आन्ध्र-प्रदेश प्रतिबद्ध है।

"आन्ध्र का इतिहास" ग्रन्थ के संबन्ध में श्री. एन. टी. रामराव जी ने आशा भाव व्यक्त करते हुए कहा कि तेलूगु जनता के आचार विचार, सिद्धान्तों और संस्कृति के उत्तर भारत की जनता को परिचित कराने के संबन्ध में हिन्दी अकादमी जो प्रयत्न कर रही है, हिन्दी अकादमी उसमें अवश्य सफल होगी। तेलुगु में जो ज्ञान-विज्ञान है, उसे उत्तर भारत की जनता तक पहुँचाना यह महत्वपूर्ण कार्य है।

मुख्य मंत्री ने आगे कहा—भारतीय भाषाएँ फूलों की सुन्दर मालाएँ हैं। इन फूलमालाओं में तेलुगु भाषा को एक विशिष्ट फ़ूल के रूप में विकसित कराने और पुष्पित कराने का प्रयास बहुत ही आनन्ददायक विषय है।

प्रो० पिशारोटी को अन्तर्राष्ट्रीय मौसम विज्ञान संगठन पुरस्कार

विख्यात मौसम विज्ञानी प्रो० पी. आर. पिशारोटी को विश्व मौसम संगठन (डब्लयू. एम. ओ.) द्वारा 34 वां अन्तर्राष्ट्रीय मौसम विज्ञान संगठन पुरस्कार दिया गया है। विश्व मौसम विज्ञान संगठन की कार्यकारी परिषद ने जनेवा में अपने 41 वें सत्र में इस पुरस्कार की घोषणा की।

विश्व मौसम संगठन द्वारा 1955 में गैर-सरकारी संगठनों के सम्मान केलिए अन्तर्राष्ट्रीय मौसम विज्ञान संगठन पुरस्कार स्थापित किया गया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी की दूसरी भूमिका

डॉ० मोटूरी सत्यनारायण

[6-5-1989 को केरल हिन्दी प्रचार सभा के दीक्षान्त समारोह में दिया गया दीक्षान्त भाषण]

ज्जनो, देवियो, प्रचारक बन्धुओ, स्नातको तथा स्नातिकाओ,

केरल हिन्दी प्रचार सभा, तिरुवनन्तपुरम के कर्णधारों का मैं अतीव तज्ञ हूँ कि उन्होंने मुझे अपने इस स्नातकोत्सव में स्नातकों व स्नातिकाओं ो सम्बोधित करने के लिए आमंत्रित किया । मेरी वर्तमान अवस्था और स निमंत्रण के लिए आवश्यक योग्यता को देखते और समझते हुए भी ुझे जो सम्मान दिया यह उनकी उदारता का और उनके क्षेत्र के क पुराने कार्यकर्ता के प्रति उद्रारता का द्योतक है । इस सभा मंत्री श्री. वेलायुधन नायर ने जब मुझे निमंत्रित किया और कहा कि केरल हिन्दी प्रचार सभा के स्नातकोत्सव में भाग लेना है तो सहसा मेरे सामने उस ्यक्ति का साक्षात्कार हुआ जिनसे मैं 60 वर्ष के पहले मिला करता था । थे श्री. के. वासुदेवन पिल्लै । श्री. वासुदेवन पिल्लै उस ज़माने में कोचिन ाज्य में काम करते थे । अपनी छोटी उम्र में अदम्य उत्साह के साथ हिन्दी चार में लग गये । मैं उस समय दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास ा प्रचार मंत्री था । हम लोग हिन्दी साहित्य सम्मेलन से अलग होकर क्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा के, जो एक स्वतंत्र संस्था के नाम से जीकृत हुई थी, संगठन में लगे हुए थे, दक्षिण भारत के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में ार्यकर्ताओं को भेजकर नये केन्द्रों का गठन करना हमारा कार्य था । ी. वासुदेवन पिल्लै को एक पत्र-व्यवहार के सिलसिले में यह सुझाव दिया ा कि चूँकि तिरुवनंतपुरम शहर अछूता है, इसलिये वे कोचिन से तिरुवनंत-रम जायें और वहाँ पर अपना काम शुरू करें । हमारी तथा पिल्लै को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कल्पना में कार्य विस्तार केलिए तिरुवनंतपुरम एक उत्तम क्षेत्र बन सकता है। उस जमाने में प्रायः सभी कार्यकर्ताओं को नाममात्र का मानदेय सभा की तरफ से मिलने का प्रबंध था। धनाभाव से श्री. पिल्लै को वह भी नहीं मिल पाया। पिल्लै ने अपने अदम्य उत्साह, अथक परिश्रम, अत्यंत विनयशीलता, दूरदर्शिता और आत्म विश्वास के साथ साथ जन आकर्षण की ऐसी अनुपम पद्धति अपनाई और अपने संगठन और संग्रह शक्ति का ऐसा परिचय दिया कि बहुत कम समय में अपने क्षेत्र में एक बेजोड़ संस्था खड़ी कर दी। पता नहीं उनमें क्या जादू था, उनके पढ़ाने तथा प्रचार करने में क्या विशेषताएँ थीं, उनके व्यक्तित्व में क्या प्रतिभा थी कि उनका कृतित्व ऐसा निखर उठा। उनके उर्वर मष्तिक से निकला हुआ अंकुर केरल हिन्दी प्रचार सभा के रूप में एक वट वृक्ष जैसा आज अपने सामने खड़ा मैं देखता हूँ। लब्धप्रतिष्ठ, प्रगतिशील, समन्वयात्मक, समर्थ, शक्तिवान, सामासिक संस्कृति की जन्मभूमि केरल प्रदेश का, भारतीय संस्कृति के प्रवर्धन तथा परिवर्तन में जो योगदान दिया है, उसके लिए नतमस्तक होकर अभिनन्दन करता हूँ और दक्षिणापथ के निवासियों का सिर ऊँचा उठाया है उसके लिये इस प्रदेश के निवासियों को और इस प्रादेशिक संस्कृति के सहज सौन्दर्यपूर्ण, सजीव शक्ति को सभी दाक्षिणात्यों की तरफ से धन्यवाद देता हूँ। यहाँ की संस्कृति सजीव ही नहीं बल्कि संजीवनी भी है। क्योंकि हज़ारों वर्षों से सैकड़ों विदेशी सांस्कृतिक प्रभावों को इस प्रदेश ने अपने अंतर्गत कर आत्मसात कर लिया है। यहाँ की संस्कृति जितनी पुरानी है उतनी ही आधुनिक भी बनी हुई है। अन्यथा प्राचीन संस्कृति के पांडित्य के साथ जुड़ी हुई होते हुये भी 20 वीं सदी की भाषा तथा वैज्ञानिक साहित्य के सिरमौर बने रहने का यश कैसे प्राप्त कर सकता है। केरल विज्ञान, शिक्षा तथा साहित्य में जैसे अग्रणी है वैसे सामाजिक सत्य में ही नहीं अपितु अन्य क्षेत्रों में भी अपना विशिष्ट स्थान बनाए हुए है।

केरल, भाषा पर आधारित प्रदेश जो स्वराज प्राप्ति के बाद बने हैं उनमें रकबे में सबसे छोटा है। फिर भी न तो औसतन साक्षरता में पीछे है और न औसतन वार्षिक आमदनी में। साक्षरता में तो उसका पहला स्थान है। आमदनी में तो उद्योगी प्रदेशों को छोड़ा जाय तो उसका स्थान तीसरा चौथा ही होगा। स्वराज प्राप्ति के बाद यहाँ विविध क्षेत्रों में जो उन्नति हुई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखते हुए यह कहा जा सकता है कि इस प्रदेश की भूमि में कोई ऐसी ताकत है जो समय समय पर चमत्कार ही पैदा करता है। अन्यथा इतने सशक्त तेजस्विता, गतिशीलता, लक्ष्यगम्यता कैसे प्राप्त हो सकती है ? देश के कितने ही प्रदेशों में कई तरह के साम्प्रदायिक, उपप्रादेशिक, धार्मिक, उपधार्मिक विभेदों के कारण प्रजातंत्र के यंत्र गतिहीन ही नहीं हुये बल्कि संकट ग्रस्त भी बने पड़े हैं ! लेकिन सभी तरह के असाधारण संकटों को पार कर, केरल, भारत के प्रदेशों में अपना एक विशेष स्थान बनाए हुए है और हिन्दी प्रचार के कार्य में भी वह अग्रणी ही रहा और आज भी अग्रसर है।

जिस महत्वपूर्ण कार्य में आपकी यह सभा लगी हुई है उसके आरंभिक लक्ष्य तथा बदलनेवाली परिस्थितियों के कारण उन लक्ष्यों की स्थिति के लिये विकसित नई दृष्टि हमारे सामने आती रही है। पुराने और नये मार्गदर्शक सूत्रों के समन्वय की दृष्टि से हिंदी प्रचार के कार्य क्षेत्र का यहाँ संक्षेप में सर्वेक्षण करना अनुचित नहीं होगा।

हिन्दी प्रचार का कार्य अपनी गतिशीलता को लेकर तीन दशाओं में हमारे सामने प्रस्तुत है। उसकी पहली दशा स्वराज संग्राम काल की थी जिसमें देशभक्ति की भावना जगानी थी। उस भावना को सक्रिय बनाने के लिए भारतीय एकता तथा अखण्डता को वास्तविक रूप देने की दृष्टि से एक संचार माध्यम भाषा के रूप में देश ने एक मत से हिन्दी को स्वीकार किया और सारा देश इस माध्यम को आगे बढ़ाता रहा और हिन्दी प्रचार और देश सेवा एक दूसरे के पर्याय हो गये। जब तक स्वराज के लिए लड़ाई चलती रही तो प्रत्येक हिन्दी प्रचारक को अपने देशभक्त होने का सबूत देना पड़ता था। चरखा कातना, खादी पहनना, रचनात्मक कार्यक्रम में रुचि लेना, जेल जाने के लिए सत्याग्रही का व्रत लेना, अपने को कांग्रेसी कहलाने में गर्व का अनुभव करना, देशभक्ति के गीत गाना और प्रचार करना आदि आदि। देश सेवा और देश भक्ति हिन्दी प्रचारकों का स्वधर्म था। अधिकांश प्रचारक उस जमाने में जेल गये भी और वहाँ उन्होंने हिन्दी पढ़ाने का कार्य किया। इस तरह हिन्दी प्रचारकों ने उत्तर और दक्षिण को एक भाषा सूत्र में बांधा, सक्रियतापूर्ण कार्य के परिणामस्वरूप एक नयी भाषा शक्ति को जन्म दिया और देशभर में एक नयी भाषायी अस्तित्वता पैदा हो गई। देश में स्वाभाविक प्रादेशिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाषाई अस्मिता जगी हिन्दी प्रचारकों की वजह से । यह कहना अस्वाभाविक नहीं होगा कि उभरी हुई चेतना से जनता के मनोपटल पर बनी हुई भाषायी अस्मिता के कारण आज सारा भारत भाषावार प्रान्तों में बँटा हुआ है। हमारे संविधान के अमल में आने के तीन वर्ष के अन्दर ही यह नई भाषायी अस्मिता प्रबल होकर अपने अस्तित्व की मांग करने लगी । 1953 से लेकर 1956 तक 3 वर्षों में देश के 95 प्रतिशत लोग भाषावार प्रांतों में बँट गये। आज सारा देश अपने अपने विधान मण्डलों के द्वारा यह निर्णय कर चुका है कि अपने प्रान्त में अपनी प्रादेशिक भाषा को राजभाषा के रूप में विकसित करें । 1967 में हरियाना पंजाब से कट कर अलग बना । इस तरह पश्चिमी तीर की चार भाषाएँ अर्थात् गुजराती, मराठी, कन्नड़ और मलयालम ; पूर्वी समुद्र तीर की चार भाषाएँ यानी तमिल, तेलुगु, उड़िया, बंगला; हिमालय घाटियों की तीन भाषाएँ जैसे कश्मीरी, पंजाबी और असमिया ; मध्यप्रदेश की हिन्दी, ये 12 भाषाएँ अपने अपने प्रदेशों में राजभाषा के रूप में विकसित की जा रही हैं । सुविधा और अपनी पुरानी कड़ी को ध्यान में रखते हुए कश्मीर ने उर्दू को भी अपना रखा है। बाकी 5 प्रतिशत लोग ही इन्हीं 12 प्रदेशों के अन्तर्गत या बाहर हैं । लेकिन उनके बोलने वालों की संख्या नगण्य है । कुछ लोग अंग्रेज़ी पर आश्रित हैं । यहाँ से हमारे देश की दूसरी अवस्था शुरू हो जाती है जो स्वराज प्राप्ति के बाद बनी । यह पहली अवस्था से भिन्न है । पहली अवस्था का आधार अधिकतर भावना थी । हाँ, यद्यपि सक्रियता की नींव भावना से जुड़ी थी । दूसरी अवस्था का आधार पूर्णतः सक्रियता है। इसमें भावना का आधार भाषा से बिछुड़कर पूर्ण रूप से देश के कार्य से जुड़ी है । हमारी इस दूसरी अवस्था का कार्य जो इस समय चल रहा है इसके संबंध में मुझे कुछ विस्तार से इसलिए कहने की आवश्यकता महसूस हो रही है कि मुझे आपके प्रतिनिधि के रूप में संविधान सभा का सदस्य निर्वाचित होने का सौभाग्य मिला । मैंने अपने अनुभव से और देश के भाग्यविधाता तथा राष्ट्र-पिता महात्मा गांधी के आश्रय, अनुशासन तथा अनुपालन में रहकर जो कुछ भी सीखा और उनके अनुयायी डॉ० राजेन्द्र प्रसाद, पं० जवाहरलाल नेहरू और मौलाना अबुलकलाम आज़ाद के साथ रहकर जो कुछ पाया, उसके आधार पर जो कार्य किया, उसका भी मैं यहाँ उल्लेख करना चाहता हूँ । इसका उल्लेख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करना इसलिए जरूरी है कि हिन्दी प्रचार का कार्य न तो एक भाषा प्रचार का कार्य था, न शिक्षा का। उस समय राष्ट्रीय भावना के साथ जुड़कर जो कुछ भी किया जा सकता था किया गया। वह कार्य राष्ट्रीय भावना का केवल प्रतीक था और समस्त राष्ट्र के एक सशक्त भाषा माध्यम के रूप की एक प्रतिभा के प्रतिबिम्ब के तौर पर हमारे सामने था। स्वराज के बाद उस परिकल्पना को एक सशक्त साधन के रूप में विकसित करने और देश के शासन तंत्र को उपलब्ध कराने का कार्य आवश्यक हो गया। इस आवश्यकता के संबंध में वादविवाद, विचार-विमर्श, आलोचना तथा प्रत्यालोचना आदि होनी चाहिए। जब सारे देश को एक तंत्र में जोड़ने के लिये संविधान बन रहा था, संविधान सभा में देश की भाषाओं के मामले को लेकर जो चर्चा हुई वह दो ढाई वर्ष तक बराबर चलती रही। यह त्रिकोणीय चर्चा थी। अंग्रेजी, हिन्दुस्तानी और हिन्दी के अलग-अलग दावों पर वादविवाद होता था। मानना पड़ेगा सदस्यों में अधिकांश लोग अंग्रेजी को एक तात्कालिक व्यवस्था के रूप में ही चाहते थे। लेकिन स्थायी व्यवस्था की दृष्टि से संघ शासन के लिए उपयुक्त भाषा माध्यम, उनका निश्चय था, कोई भारतीय भाषा ही हो सकता है। इस भाषा माध्यम का नामकरण, रूपकल्पना और उसका सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य, उसके विकास तथा विकसन योग्य सांस्कृतिक तथा भाषायी उपकरणों के चयन, संचय या इतनी सारी चीजों की कल्पना के संबंध में भिन्न-भिन्न विचार होते थे और ये विचार कभी कभी भीषण रूप में व्यक्त किये जाते थे।

भारत पुराने जमाने से बहुभाषा भाषी देश रहा है। भारतीय भाषाओं की तह में कितनी ही मूल संस्कृतियों की जडें पड़ी हुई हैं जो वस्तुतः कहीं सामाजिक व्यवस्था में, कहीं संगठन में या उसकी संस्कृति में, अधिकतर उसकी संस्कृति में झलकती रहती है। प्रत्येक देश में भाषाई अस्मिता और भाषायी भिन्नता अलग अलग दायरों में कार्य करती रही हैं। धार्मिकता के दायरे में यह अस्मिता जनसमाज के दायरे में भिन्नता इसलिए मालूम देती है कि संस्कृति संचार माध्यम तथा कार्य संचार माध्यम के बीच में बहुत ही बडा अन्तर आ गया। इस अन्तर ने संचार माध्यम को एक भाषा के रूप में वर्तनेवालों को भी टुकड़े-व टुकडे में बांट दिया है। फिर भी जिस सस्कृति अस्मिता की मूल भाषा संस्कृत हो उसे विकसित होनेवाली संघ भाषा को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आधार भूमि बनाने की मांग काफी जबरदस्त थी। दूसरी मांग उन लोगों की तरफ से थी जो सांस्कृतिक माध्यम को संस्कृति के साथ जोड़ते रहे। कार्य-माध्यम ही संघ भाषा की आधार भूमि होनी चाहिए जो अधिकांश जन-साधारण में व्याप्त है जो सदियों से चला आ रहा है और जिस में मध्यकालीन युग में बाहर से आनेवाले विदेशी शासकों ने भी अपनी-अपनी छाप छोड रखी है। मोटे तौर पर इन दोनों परिप्रेक्ष्यों का नामकरण हो गया था। पहले से वह चला आ रहा था, जब से महात्मा गांधी ने इस कार्य में अधिकाधिक दिलचस्पी लेनी शुरू की थी। इस वादविवाद से समझने की वस्तु यह है कि संघ भाषा को हिन्दी का नाम दिया जाय तो उसका भविष्य बनानेवालों का रास्ता उन से अलग होगा जो हिन्दुस्तानी नामकरण मानते हैं। हिन्दुस्तानीवालों का कहना था कि संघ राजभाषा का जिसका संस्कृत से कोई संबन्ध नहीं है वह केवल शासन में ही काम आएगी। इसलिए उसे संस्कृत के दायरे से अलग रखा जाय और उसे कार्य-भाषा के रूप में ही विकसित किया जाय। अभाग्यवश दोनों के बीच में समझौता नहीं हो सका। काफी गम्भीर विचार-विमर्श के बाद कांग्रेस पार्टी में वोट लिया गया तो हिन्दी के अनुकूल एक मत ज्यादा पड गया। हिन्दुस्तानी वालों ने उसे स्वीकार कर लिया, लेकिन अपनी बात की वास्तविकता को रूप देने के उद्देश्य से अनुकूल अनुच्छेद संविधान भाग-17 में जोडा जिसका एक विश्लेषणात्मक विवेचन मैं यहाँ करना चाहता हूँ।

महात्मा गांधी ने 1935 में इन्दोर में इसका विश्लेषण करवाया था कि राष्ट्रभाषा का स्वरूप व स्वभाव क्या हो? इस विश्लेषण से यह स्पष्ट हुआ कि उत्तर भारत में सर्वसाधारण जनसमुदाय के बीच में काम आनेवाली भाषाओं के स्वरूप को राष्ट्रभाषा का आधार माना जाय और उस स्वरूप में सांस्कृतिक, धार्मिक तथा सांप्रदायिक दृष्टियों से कोई रद्दोबदल न किया जाय। तदुपरांत ऐसी कई घटनाएँ घटीं जिनमें महात्मा गांधी को स्वयं सन्देह हुआ कि जिस तरह हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अधीन रहकर हिन्दी का कार्य आगे बढता था उसमें आवश्यक दिशादर्शन न दिया जाय तो धर्म के नाम से भाषा के क्षेत्र में साम्प्रदायिकता बढ सकती है। इसलिए उन्होंने सोचा कि देश की अखण्डता, अक्षुण्णता बनाये रखने की दृष्टि से, सांप्रदायिकता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से देश को बचाने के प्रयोजन को साधने के लिए, राजभाषा के लिए हिन्दुस्तानी का नाम अपनाया क्योंकि उन्होंने स्वयं कभी भी हिन्दुस्तानी या हिन्दी इन दोनों नामों से ज्ञात होने वाले भाषायी दायरों में कभी साम्प्रदायिकता पहले देखी नहीं थी। इसलिए दूसरे पर्याय हिन्दुस्तानी उन्हें ज्यादा उपयुक्त लगा और इस नाम से राजभाषा के कार्य आगे बढाने के लिए 1941 में हिन्दुस्तानी प्रचार सभा नामकी एक संस्था को स्थापना की और मुक्त रूप से कार्य करने की स्वतंत्रता सम्मेलन को दे दी और सम्मेलन से अलग हो गये। 1918 में महात्मा गांधी ने ही यह काम सम्मेलन को सौंपा था कुछ कारणों से दक्षिण भारत के कार्य को स्वतंत्र बनाने के उद्देश्य से दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा की स्थापना 1927 में करवाई। दक्षिण भारत के अलावा अन्य गैर हिन्दी प्रदेशों में अर्थात् महाराष्ट्र, गुजरात, सिंध, पंजाब, असम, बंगाल, उडीसा में भी,अपने दिशादर्शन में काम करने केलिये एक संस्था की स्थापना करवाई और उसके संचालन का कार्य सम्मेलन को सौंपा जो आज भी राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के नाम से काम कर रही है। उसके ठीक पाँच साल के बाद महात्मा गांधी ने यह नया कदम क्यों उठाया और उनको किन विषम परिस्थितियों का अन्देशा हुआ, उसका यहाँ खाका खींचना आवश्यक नहीं। क्योंकि महात्मा गांधी जैसे दूरदर्शी और पारदर्शी नेता में लोगों का विश्वास था। इसलिए राष्ट्रभाषा के प्रचार कार्य में भी कोई अधिक विरोध नहीं हुआ। 1942 में भारत छोड़ो आन्दोलन के बाद जेलखाने से छूटकर जब 1944 में बाहर आये तो उन्होंने हिन्दुस्तानी के नाम को फिर बुलन्द करना शुरू किया। फरवरी 1945 में हिन्दुस्तानी को बढ़ावा देने के लिए इस क्षेत्र के सभी नेताओं को एक सम्मेलन में वर्धा बुलाया जिसमें मौलवी अब्दुल हक भी सम्मिलित थे जो उर्दू के प्रकाण्ड पंडित थे और उसके प्रचार के मूर्धन्य नेता थे। 1946 के प्रथम चरण में दक्षिण भारत प्रचार सभा की रजत जयंती के उत्सव में शामिल होने के लिए महात्मा गांधी मद्रास आए तो हिन्दी के स्थान पर हिन्दुस्तानी शब्द को क्यों चुना,इसका उल्लेख करते हुए दक्षिण भारतीय जनता को संबोधित किया। उस समय उनके भाषण को सुनने के लिए लाखों लोग इकट्ठे हो जाते थे। 15 अगस्त, 1947 में भारत की स्वतंत्रता का ऐलान हुआ और इस स्वतंत्रता के रूप तथा शासन तंत्र के सूत्रों को ग्रंथित करने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केलिए संविधान सभा की रचना हुई। इस संविधान सभा में देश के शासन संबंधी विभिन्न पहलुओं पर तीन वर्ष तक बहस होती रही लेकिन सबसे अधिक बहस इस भाषायी मसले को लेकर हुई। इसमें समूचे देश के सभी तबकों के 299 प्रतिनिधि सदस्य थे।

डॉ० राजेन्द्र प्रसाद ने, जो इस संविधान सभा के अध्यक्ष थे, प्रारंभ में ही सभा के सामने यह सुझाव रखा कि देश की गरिमा तथा प्रतिष्ठा को ध्यान में रखते हुए देश का सविधान किसी भारतीय भाषा में ही बने। लेकिन वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए, भाषायी अनुकूलता को ध्यान में रखते हुए, अंग्रेज़ी में भले ही बने, लेकिन उसका भारतीय भाषा पाठ भी इसके साथ ही हाथों-हाथ तैयार होना चाहिए। इस पाठ को तैयार करने के लिए उन्होंने तीन विद्वानों की एक कमेटी बिठाई। इस कमेटी ने एक ढांचा बनाकर पाठ को विचारार्थ प्रस्तुत भी किया। लेकिन यह ढाँचा संविधान सभा के सदस्यों ने नामंजूर कर दिया। सदस्यों की राय यह थी कि पाठ जो बने उसमें जो भाषा बरती जाय वह भाषा सरल हो और साथ ही सार्वदेशिक भी बन सकने की क्षमता रखे और उसमें अधिकाधिक भारतीय भाषाओं का सारूप्य देखने को मिले। सदस्यों की इस राय के अनुसार डॉ० राजेन्द्र प्रसाद ने एक दूसरी समिति की नियुक्ति की जिसमें यथासंभव प्रयत्न किया गया कि सभी भारतीय भाषाओं के प्रतिनिधि या भाषाविद हों। इस समिति का सदस्य रहने का सौभाग्य मुझे भी मिला। करीब डेढ़ वर्ष तक जैसे-जैसे अंग्रेज़ी में संविधान सभा में अनुच्छेद पास हो जाते तो उनका भाषा पाठ भी यह समिति बना देती थी और समिति का बनाया पाठ अध्यक्ष स्वयं देखते थे। और फल यह हुआ कि हिन्दी और अंग्रेज़ी दोनों भाषाओं में हमारा संविधान एक साथ बन गया और छप भी गया और दोनों पर सभी सदस्यों ने साथ-साथ हस्ताक्षर किये। दूसरे शब्दों में भारत का यह संविधान संविधान सभा के द्वारा अंग्रेज़ी और हिन्दी भाषाओं में प्राधिकृत होकर एक साथ अमल में आया। डॉ० राजेन्द्र प्रसाद ने 26 जनवरी, 1950 को राष्ट्रपति का आसन ग्रहण किया, लेकिन दुर्भाग्य की बात है कि देश की जनता को तथा सांसदों को नवम्बर, 1987 तक यह मालूम नहीं है कि भारतीय संविधान का हिन्दी पाठ प्राधिकृत होते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुए भी अनुपयोगी ग्रंथ के तौर पर संसद की तिजोरी में 38 वर्ष से पड़ा धूल खाता रहा है।

संविधान सभा में भाषायी मामलों पर जो बहस हुई उसके दरमियान दो मुद्दे साफ उभर कर आये। पहला मुद्दा था कि देश के शासन तंत्र को स्वस्थ, सुरक्षित, सुयोग्य बनाने के लिए देशीय सक्षम भाषायी साधन मिल जाना चाहिए। और उनके लिए वर्तमान भाषाओं में ऐसी भाषा का चयन किया जाय जिसमें सरलता, व्यापकता और सुलभता की दृष्टि से स्वीकार्य होने के गुण हों और जिसे संघ राज्य अपने प्रयत्नों और कार्यक्रमों के द्वारा विकसित करे ताकि वह प्रादेशिक भाषा की पृष्ठभूमि से उठकर सार्वदेशिक पृष्ठभूमि बना सके और समूचे देश में संघ भाषा के रूप में चलाई जा सके।

संघ राज्य शासन के भाषायी साधन का एक दूसरा रूप भी उभर सकता है। हाँ, उसकी सार्वदेशिकता का उभरना इसलिए आवश्यक है कि भारतीय राजतंत्र के स्वरूप, स्वभाव तथा संविधान के दिशासूत्रों की दृष्टि से भारत राज्यों का संघ है। संविधान के अंतर्गत प्रत्येक राज्य अपनी-अपनी भाषा की उन्नति को भी तरजीह देना आवश्यक समझता है। ऐसी अनिवार्यता में भाषा द्वारा भारत की भावी संस्कृति भी समृद्ध होगी। यह प्रादेशिक भाषाओं की सम्पत्ति तथा समृद्धि द्वारा ही सुसंपन्न होगी और सुनिश्चित होगी। ऐसी हालत में सार्वदेशिक, सांस्कृतिक, सामाजिक होना सुनिश्चित है। इस सामासिक संस्कृति का विकास, प्रगति, समृद्धि तभी हो सकती है जब संघ राज्य की कार्य भाषा अर्थात् संचार माध्यम साहित्य भाषा अर्थात् सांस्कृतिक माध्यम दोनों एक ही नाम के द्योतक हों। इन्हीं उद्देश्यों को लेकर और साथ ही साथ भाषायी क्षेत्रों में आनेवाली सभी समस्याओं के परिष्कार के रूप में तथा दिशा निर्णायक सूत्रों के रूप में भी संविधान में 9 अनुच्छेद बनाये गये जो भाग-17 के रूप में संविधान के अंतर्गत हैं। इन अनुच्छेदों के संबंध में विचार करने से पहले एक महत्वपूर्ण घटना का मैं यहाँ पर उल्लेख करना चाहूँगा।

काफी कसमकस के बाद हिन्दी, हिन्दुस्तानी का झगड़ा निपटा। भाग-17 के अनुच्छेदों के पूर्व रूप पर विचार करने के लिए एक मसौदा कमेटी बनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिसका एक सदस्य बनने का गौरव मुझे भी मिला था। महात्मा गांधी के अनन्य अनुयायी और पं० जवाहरलाल नेहरू की विचारधारा का समर्थक होने के नाते मैं एक हिन्दुस्तानी समर्थक के रूप में माना गया। लेकिन वास्तव में हिन्दुस्तानी के संबंध में मेरे विचार न तो साम्प्रदायिकता के पहलू को लेकर बना है और न सांस्कृतिक या भाषायी विभिन्नताओं को लेकर। मैं हमेशा अखण्ड भारत का अनन्य भक्त रहा हूँ। मैं ने सभी भारतीय भाषाओं को आत्मसात करने की कोशिश की है। यह शिक्षा मैंने महात्मा गांधी से पाई। अन्य भारतीय भाषाओं से, मेरी विचारधारा के अनुसार, जब हिन्दी या हिन्दुस्तानी अलग अलग होगी तो उसके पनपने का स्थान केवल प्रादेशिक होगा, सार्वदेशिक नहीं। सार्वदेशिकता तभी उसमें झलकते जब भारतीय भाषाओं को वह साथ लेकर चले। यही दृष्टि मैं ने संविधान के हिन्दी पाठ बनाने के सिलसिले में भी रखी थी और मेरे इन विचारों से दूसरे सदस्य भी सहमत थे। इसलिए हिन्दी पाठ बहुत ही सरल सुग्राह्य और सुलभ बन गया। कितने ही सरल शब्द पाठ में स्थान पा गये। हिन्दी-हिन्दुस्तानी विवाद के बाद जब मसविदा समिति बैठी तो मुझे लगा कि भाषायी क्षेत्र में हमारा काम अधूरा ही रहा है। इसलिए मैंने यह सवाल उठाया कि संविधान में अन्य भारतीय भाषाओं का भी उल्लेख होना चाहिए। पंडित जवाहरलाल नेहरू से भी जिनके पास मैं बैठा था, मैंने इसका जिक्र किया। पहले वे मेरी बात सुनकर चिढ़ गये और कहा कि अभी तक जो झगड़ा हुआ वह काफी नहीं है और अधिक झगड़ा क्यों करना चाहते हैं। मैंने सविनय निवेदन किया कि पंडितजी, सारा हिन्दुस्तान हिन्दी-हिन्दुस्तानी के दायरे में नहीं हैं और कई सम्पन्न भाषाएँ और हैं जिनका जिक्र इस संविधान में होना चाहिए! उन्होंने तुरत मुझे इशारा दिया कि तुम्ही इसकी फेहरिस्त बनाओ। मैंने फेहरिस्त बनाई-चार भाषाएं पश्चिमी समुद्र तट की-अर्थात् गुजराती, मराठी, कन्नड़, मलयालम; पूर्वी समुद्र तट की—तमिल, तेलुगू, उड़िया, बंगला; तीन हिमालयी तराई की भाषायें अर्थात् कश्मीरी, पंजाबी, असमियाँ और एक मध्य भारत की भाषा अर्थात् हिन्दी। कुल इन 12 भाषाओं की फेहरिस्त मैंने नेहरू जी के हाथ में दी। उन्होंने 13 वीं भाषा उर्दू जोड़ दी और गोपाल स्वामी अयंगार के हाथ में सौंप दी। जब फेहरिस्त पढ़ी गई तो पं० बालकृष्ण शर्मा बौखला उठे और पूछा कि उर्दू किसकी भाषा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है ? पंडितजी ने जबाव दिया यह मेरी ही नहीं, मेरे दादा की और मेरी पुश्तैनी भाषा रही है । शर्मा बहुत क्रोधित हुए और बहुत बुरा भला कहकर बाहर निकल गये । श्री. मुँशी ने संस्कृत को भी जोड़ा । 1967 में संसद ने सिंधी जोड़ दी । इस तरह 15 भारतीय भाषाएँ अष्टम सूची के नाम से आज विद्यमान हैं जिनमें 12 भाषाओं को अपना-अपना राज्य प्राप्त हो गया है जो आज प्रादेशिक राजभाषाएँ भी हैं । कुल ये 15 भाषाएँ और साथ ही साथ हिन्दुस्तानी भी जिसकी हिन्दी के साथ प्रतियोगिता थी, हिन्दी को सार्वदेशिक भाषा शासन और संस्कृति के क्षेत्रों में माध्यम के रूप में विकसित करने के लिए मदद करेंगी और पारस्परिक सम्पर्क के द्वारा भारत की राजनीतिक तथा सांस्कृतिक शृंखला को कायम रखेंगी । हिन्दी की सार्वदेशिक रूपरेखा को प्रस्तुत करने का कार्य संविधान के निर्माताओं ने किया है । यह एक दिगदर्शन सूत्र के रूप में अनुच्छेद 351 में दिया गया है । यह हिन्दी का बुनियादी बिन्दु और भावी विस्तार की रूपरेखा भी है ।

भाग-17 का जो मैंने ऊपर जिक्र किया है उसमें कार्य-भाषा के लिए जो अनुच्छेद है वह इस प्रकार है:

अनुच्छेद 343 (1) :

संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी होगी । संघ के शासकीय प्रयोजन के लिए प्रयोग होने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतर्राष्ट्रीय रूप होगा ।

अनुच्छेद 346 :

संघ में शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग किए जाने के लिए तत्समय प्राधिकृत भाषा, एक राज्य और दूसरे राज्य के बीच तथा किसी राज्य व संघ के बीच पत्र आदि की राजभाषा होगी । परन्तु यदि दो या अधिक राज्य यह करार करते हैं कि उन राज्यों के बीच पत्रादि की राजभाषा हिन्दी भाषा होगी तो ऐसे पत्रादि के लिए उस भाषा का प्रयोग किया जा सकेगा ।

अनुच्छेद 345 :

अनुच्छेद 346 व 347 के उपबंधों के अधीन रहते हुए किसी राज्य का विधान मंडल उस राज्य में प्रयोग होने वाली भाषाओं में से किसी एक या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिक भाषाओं को या हिन्दी को उस राज्य के सभी या किन्हीं शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग की जानेवाली भाषा या भाषाओं के रूप में अंगीकार कर सकेगा।

परन्तु जब तक राज्य का विधान मंडल विधि द्वारा अन्य उपबंध न करे तब तक राज्य के भीतर उन शासकीय प्रयोजनों के लिए अंग्रेज़ी भाषा का प्रयोग किया जाता रहेगा जिनके लिए उसका इस संविधान के प्रारंभ से ठीक पहले किया जा रहा था।

ऊपर के अनुच्छेदों से स्पष्ट है कि प्रत्येक राज्य को अधिकार प्राप्त है कि वह अपने प्रदेश की भाषा को शासकीय प्रयोजनों के लिए राजभाषा चुने और उसका विकास करे। इसी अनुच्छेद के अनुसार (अष्टम सूची में अनुसूचित) 12 भाषाओं का चयन हुआ। और विभिन्न राज्यों में राजभाषाओं के रूप में वे अपने अपने प्रदेशों में पूर्णतः स्वतंत्र रूप से प्रगति कर रही है। और साथ ही अनुच्छेद 343 में यह स्पष्ट कर दिया गया है कि हिन्दी संघ राज्य की भाषा होगी। इससे कहीं कहीं आशंका है कि जब हिन्दी अष्टम सूची में भी है तो उसका रूप प्रादेशिक है तो 343 में है तो उसका सार्वदेशिक रूप कैसे हो सकता है। लेकिन इस शंका का समाधान यही है कि संघ राज्य के शासन के सभी प्रयोजन किन्हीं इने गिने प्रदेश या प्रदेशों में विकसित भाषा द्वारा निभाये नहीं जा सकते। ऐसी स्थिति में संघ राजभाषा का विकसित रूप, मुक्त रूप, विकसित होकर सार्वदेशिक बन सकता है। दूसरे शब्दों में हिन्दी को राजभाषा चुना तो प्रादेशिक प्रयोजनों के लिए प्रादेशिक संस्कृति, सभ्यता और समाज की विशेषताओं के प्रतिबिम्ब के रूप में वह निखरेगी और साथ ही साथ सार्वजनिक हिन्दी का जो विकास होता रहेगा, उस विकास से भी अन्य भाषाओं के साथ वह भी सहभागी होगी। यह स्थिति तभी सुनिश्चित और स्पष्ट होगी जब दूसरे भाषाभाषी संघ की राजभाषा के विकास में अधिकाधिक दिलचस्पी लेंगे और अपना योगदान देंगे और उसे आत्मसात कर लेंगे। यह उनका भारतीय नागरिकता के प्रति कर्तव्य है और स्वधर्म भी बन जाता है। इसके अलावा उनका कोई दूसरा धर्म नहीं हो सकता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुच्छेद 351 :

संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिन्दी भाषा का प्रचार बढ़ाए और उसका विकास करे ताकि वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिन्दुस्तानी के और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत को अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए जहाँ आवश्यक या वाँछनीय हो वहाँ उसके शब्द भण्डार के लिए मुख्यतः संस्कृत से और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे।

यही संविधान का एक दिशादर्शन देनेवाला अनुच्छेद है। इस अनुच्छेद से यह स्पष्ट हो जाता है कि जिस हिन्दी को विकसित करने, प्रचार करने और काम में लाने का कार्य संघ राज्य को सौंपा गया है उसका स्वरूप अखिल भारतीय है, कोई प्रादेशिक नहीं। हिन्दी या हिन्दुस्तानी शब्दों के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य के संबंध में जो विवाद हुआ उसका भी इसमें समाधान मिल जाता है, क्योंकि तथाकथित हिन्दुस्तानी कहलाने वाले रूप का अपना जो इतिहास, अस्तित्व और प्रयोजन रहा है उसे भी हिन्दी को आत्मसात करना चाहिए। यानि आगे हिन्दुस्तानी जैसी कोई अलग भाषा काम में न लाई जाय और उसके रूप, शैली, मुहावरे आदि को हिन्दी भाषा हजम कर ले। सबसे अच्छी बात इस अनुच्छेद में यह है कि संघ राज्य की हिन्दी का जो विकास होगा वह उन सभी भाषाओं के सम्पर्क तथा सहगामी कार्यकलापों से जुड़ा रहेगा जो राजभाषा के रूप में प्रदेशों में चल रही हों और विकसित हो रही हों।

चूँकि सारा भारत शासन तंत्र की दृष्टि से एक ही इकाई है, यद्यपि उसके भिन्न-भिन्न प्रदेशों में अलग-अलग भाषाएँ उन प्रदेशों के शासन तंत्र में चल रही हैं, फिर भी जहाँ तक हो सके चाहे प्रादेशिक राज्य हों या सार्वदेशिक अर्थात् संघ राज्य, सभी प्रयोजनों के लिए पारिभाषिक शब्द एक ही तरह का होना वांछनीय ही नहीं बल्कि अनिवार्य भी है। अन्यथा देश का न्याय पालन, कार्य पालन, व्यापार, शासन क्षेत्र आदि में भिन्न पारिभाषिक शब्दों के होने के कारण देश की भाषायी एकता को बनाए रखने वाला यंत्र बेकार हो जाएगा। इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुच्छेद से यह भी स्पष्ट हो जाता है कि आठवीं अनुसूची में जितनी भाषा दर्शित हैं उनके तथा देश में प्रचलित अन्यान्य भाषाओं के सम्पर्क से ही नहीं बल्कि सहायता से भी हिन्दी का विकास अधिकाधिक बढ़ाने का प्रयत्न संघ राज्य को करना पड़ेगा। यह संघ राज्य का कर्तव्य है। इसमें संस्कृत को प्रधानता दी गई है और साथ ही यह भी कहा गया है कि इस पारस्परिक सम्पर्क, आदान-प्रदान और अधिकाधिक प्रादेशिक योगदान से सार्वदेशिक भाषायी रूप में सम्पूर्ण भारतीयता आ जाएगी और वह देश की सामासिक संस्कृति की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सकेगी।

उपर्युक्त कथन से यह स्पष्ट है कि संघ की राजभाषा हिन्दी को प्रधानतया दो भूमिकायें निभानी पड़ेंगी। एक तो कार्य-भाषा की जो कामकाज में काम आये, दूसरी सामासिक संस्कृति के माध्यम की। यह सामासिक संस्कृति क्या है ? कई लोगों का यह विचार है कि सामासिक संस्कृति का अर्थ धर्म सम्प्रदाय से संबंध रखता है। यानि हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई आदि आदि। वास्तव में संविधान सभा के सदस्यों का जहाँ तक मैं जान पाया हूँ, यह मत था कि सारे भारत में संस्कृति के नाम से जो अलगाव चलता रहा और उसे धर्म के साथ जोड़कर लोगों ने अपनी-अपनी सामाजिक चौखट बना ली है, वह देश के लिए नितांत भयानक और खतरनाक साबित होगा। इससे देश एक बार टूटा भी। यह टूटा अधिकांश भाषायी झगड़े से। वाकई में भाषा जोड़ने की चीज़ होती है, तोड़ने की नहीं। संस्कृति मनुष्य की बुद्धि को प्रखर बनाने की और हृदय के जज़्बातों को निखारने की प्रक्रिया में सहायक होती है। लेकिन इस देश में भाषा के नाम से उल्टा काम हो रहा है। इसलिए संविधान के निर्माताओं ने जिस हिन्दी को चुना उसमें वे चाहते थे कि सभी भाषाओं की आत्मा और अभिव्यक्ति तथा व्यक्तित्व और कृतित्व भी प्रतिबिम्बित हो। यह कोई साधारण काम नहीं है, लेकिन यह एक बहुत ऊँचा आदर्श है। भला, बिना आदर्श के किसी उद्देश्य की सिद्धि के लिए कार्यक्रम कैसे बनाया जा सकता है ? हिन्दी प्रचारकों ने पिछले 60 वर्षों से देश की भाषायी चेतना के द्वारा अस्मिता जगाई और देश के शासन तंत्र को चलाने के लिए कार्य-भाषा दे दी। तो अब सरकार का काम है कि कार्य-भाषा को आगे बढ़ाए। अब हिन्दी प्रचारकों का काम यह होना चाहिए कि हिन्दी की जो दूसरी भूमिका है उसे निभाने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लिए, सक्षम बनाने के लिए, हिन्दी को प्रगतिशील प्रचुर मात्रा में सक्षम बनाने का प्रयत्न करें ताकि यह सामासिक संस्कृति का वाहन बन सके।

भारत सारे संसार में अपनी संस्कृति के लिए बहुत ही मशहूर है। पश्चिम के विद्वानों ने मुक्त कंठ से भारतीय संस्कृति की प्रशंसा की है। जिस संस्कृति की उन्होंने प्रशंसा की है, सच पूछा जाय तो वह सामासिक संस्कृति ही है। क्योंकि भारत में कितने ही देशों से लोग बाहर से आ बसे! अपनी-अपनी संस्कृति लाये और भारतीयों ने उसे अपनाया, आजमाया और आत्मसात कर लिया। भारत में भी वैदिक समय से लेकर आज तक बुद्ध, जैन संस्कृतियों के अलावा और कितने ही प्रकार की मोटी-मोटी संस्कृतियाँ आयीं, लेकिन वे सब इस महान देश ही की बनी रही हैं।

संस्कृति का मूल तत्व जितना धर्म से संबंधित है उससे अधिक दर्शन से संबंधित है और भारतीय दर्शन संसार के सभी दर्शनों के बीच अपना ऊँचा स्थान बनाये हुए है। यह दर्शन अपने चारों रूपों में—अर्थात जीवन दर्शन, सामाजिक विकास द्वारा आत्मदर्शन, मनुष्य की आंतरिक विचारधारा तथा विश्वासों को प्रस्फुटित तथा प्रतिबिंबित करनेवाला दैव-दर्शन, ईश्वरीय संसर्ग में पनपनेवाला सौंदर्य दर्शन—इन दर्शन क्षेत्रों में अपनी ही प्रखर बुद्धि, मानसिक तेजस्विता, गहरे अनुभव और मानसिक उत्थान के सहारे साहित्य, कला, शिल्प आदि क्षेत्रों में प्रतिकृतियों की सृष्टि करने वाले कार्यकलाप अनादि-काल से इस देश में चलाता आ रहा है। इन चारों क्षेत्रों में भगवान बुद्ध से लेकर महात्मा गाँधी तक के महापुरुष ऐसे महत्त्वपूर्ण योगदान छोड़ गये हैं जो हमारे लिए गर्व का कारण हो सकता है। हम लोगों का अहोभाग्य है कि हम लोगों ने महात्मा गांधी के नेतृत्व में हिन्दी प्रचार का कार्य आरंभ किया और उनको राष्ट्र ने राष्ट्रपिता का पद दे दिया। अगर हम लोग कोशिश करें तो इस सामासिक संस्कृति का स्वरूप व स्वभाव भी उन्हीं के जीवन, कार्यकलाप, विचारधारा और मान्यताओं से प्राप्त कर सकते हैं। उनके कार्यकलापों की विस्तृत चर्चा कर मैं अपने भाषण को लम्बा नहीं बनाना चाहता। मैं बस इतना ही कहना चाहता हूँ कि आपकी यह सभा हिन्दी की दूसरी भूमिका पर क्या किया जाये, इस पर विचार करने के लिए पहल करे, जो अभी तक किसी ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं किया। संगोष्ठी चलायें जो पहली हो, कार्यक्रम शुरू करें जो उनका अपना होगा। अगर इस दिशा में सफलता मिली तो मैं मानूंगा कि उन्होंने इस देश के लिए एक नया दूरगामी परिणाम देनेवाला अनुष्ठान शुरू किया है।

जिन स्नातक व स्नातिकाओं ने उत्तीर्ण होकर अपने प्रमाण-पत्र प्राप्त किये हैं उनको मैं बधाई देता हूँ और सभा के कर्णधारों का उनके सफल कार्य के लिए अभिनन्दन करता हूँ और मुझे यहाँ निमंत्रित कर अपने विचार प्रकट करने लिए जो मौका दिया, उसके लिए हृदय से आभार प्रकट करता हूँ।

जय हिन्द

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंजिल अभी दूर है

एम. के. वेलायुधन नायर
मंत्री, केरल हिन्दी प्रचार सभा

[केरल हिन्दी प्रचार सभा द्वारा 6-5-1989 को आयोजित दीक्षान्त समारोह में दिया गया स्वागत भाषण ।]

केरल विधान सभा के अध्यक्ष परम आदरणीय वर्कला वी. राधाकृष्णनजी, केरल के शिक्षा मंत्री श्री. के चन्द्रशेखरन जी, केरल के संस्कृति मंत्री श्री. टी. के. रामकृष्णनजी, स्वतंत्रता सेनानी एवं तपोनिष्ठ हिन्दी सेवी परमश्रद्धेय डा० मोटूरी सत्यनारायणजी, परमपूज्य महाकवि श्री. एम. पी. अप्पनजी, प्रिय स्नातक बन्धुओ, भाइओ और बहनो,

केरल हिन्दी प्रचार सभा के इस दीक्षान्त समारोह में विराजमान सभी विशिष्ट अतिथियों, स्नातकों, हिन्दी प्रचारकों एवं अन्य देश प्रेमी विद्वानों का सुस्वागत करना मेरा गौरवपूर्ण कर्तव्य है। इस अवसर पर केरल हिन्दी प्रचार सभा की गतिविधियों का संक्षिप्त परिचय देना आवश्यक मानता हूँ।

स्वतंत्रता संग्राम के दौरान महात्मा गांधी और अन्य शीर्षस्थ नेताओं के आह्वान पर जब देश के विविध हिन्दीतर प्रान्तों में राष्ट्रभाषा प्रचार का अभियान आरंभ हुआ तब केरल के कुछ देशप्रेमी युवक भी इस अभियान से जुड गये। उन में प्रमुख थे स्व० के. वासुदेवन पिल्लैजी जिन्होंने दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा के कार्यकर्ता के रूप में बहुमूल्य अनुभव प्राप्त करने के पश्चात सन् 1934 में केरल में हिन्दी का गहन प्रचार करने के उद्देश्य से केरल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी प्रचार सभा की स्थापना की। यद्यपि सन् 1948 में सभा ने अपनी परीक्षायें आरंभ कीं तो भी सन् 1960 में ही इन परीक्षाओं को राज्य सरकार तथा केन्द्रीय सरकार की मान्यता प्राप्त हो सकी। तब तक का समय सभा के संस्थापक एवं उनके साथियों के लिए अत्यंत कष्टदायक रहा। कठिन परिश्रम से सन् 1962 में वासुदेवन पिल्लै जी का देहान्त हो गया। उनके कुछ सहकर्मियों और सहधर्मियों ने सभा का काम देशप्रेम और कष्ट सहिष्णुता की भावना से इस तरह आगे बढाया कि आज यह देश की उन बीस स्वैच्छिक हिन्दी संस्थाओं में अपना विशेष स्थान रखती है जो भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा संस्थापित अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ से संबद्ध हैं। परीक्षा संचालन, प्रकाशन, प्रशिक्षण, प्रोत्साहन और प्रचार की इतर दिशाओं में सभा विकास के पथ पर अग्रसर हो रही है। इस में केरल की जनता और सरकार का और केन्द्र सरकार का पूरा समर्थन और सहयोग मिल रहा है। परीक्षा संचालन ही सभा का एक मुख्य कार्य रहा है। हिन्दी प्रथम से साहित्याचार्य तक की हिन्दी भाषा और साहित्य की परीक्षाओं के अलावा, हिन्दी टंकण और आशुलिपि की निम्न स्तरीय और उच्च स्तरीय परीक्षायें, हिन्दी अध्यापक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम की आचार्य परीक्षा और स्नातकोत्तर हिन्दी अनुवाद, पत्राचार एवं पत्रकारिता की डिप्लोमा परीक्षा सभा चलाती है। इस के अलावा स्कूली छात्रों का हिन्दी स्तर सुधारने के लिए पाँचवीं कक्षा से दसवीं कक्षा तक के लिए हिन्दी सुगम परीक्षायें भी सभा द्वारा चलायी जाती हैं। इन परीक्षाओं में बैठनेवाले परीक्षार्थियों की संख्या प्रतिवर्ष बढती जाती है जो इस बात का प्रमाण है कि हिन्दी की लोकप्रियता केरल में बढती जा रही है।

प्रकाशन के क्षेत्र में सभा के साधन और उपलब्धियाँ अत्यंत परिमित हैं। सभा की परीक्षाओं की कुछ पाठ्य पुस्तकों के अतिरिक्त दो तीन महत्वपूर्ण ग्रंथ सभा की ओर से प्रकाशित हुए हैं। मलयालम की उत्तम साहित्य कृतियों का हिन्दी अनुवाद प्रकाशित करने की योजना बनी है। पर सुविधाओं के अभाव में यह योजना ठीक तरह से कार्यान्वित नहीं हो सकी है। सभा गत 24 वर्षों से केरल ज्योति नाम की जो हिन्दी मासिक पत्रिका निकाल रही है उसका हिन्दी प्रचार जगत ने खूब स्वागत किया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रशिक्षण की दिशा में सभा ने कुछ महत्वपूर्ण कदम उठाये हैं। साधारण हिन्दो विद्यालयों में जो अंशकालीन कक्षायें चलायो जाती हैं उन में छात्रों को हिन्दो की वाचिक कुशलता विकसित करने का पर्याप्त अवसर नहीं मिलता। हिन्दी को हम ने संपर्क भाषा के रूप में अपनाया है। इस भूमिका को हिन्दी तभी निभा पायेगी जब सारे हिन्दीतर प्रान्तों की जनता हिन्दी समझने की ही नहीं, बोलने की क्षमता भी हासिल करे। इसलिए हमें बच्चों में हिन्दी बोलने की क्षमता भी विकसित करनी है। इस उद्देश्य से सभा केरल के कुछ मुख्य केन्द्रों में केन्द्रीय हिन्दी महा विद्यालय चला रही है जिन में सभा की उच्च परीक्षाओं के लिए पूर्णकालीन कक्षायें चलाने की योजना है।

शासकीय प्रयोजनों के लिए हिन्दी का प्रयोग ज्यों ज्यों बढता जा रहा है त्यों त्यों हिन्दी में काम करने योग्य टंककों, आशुलिपिकों, अनुवादकों और हिन्दी अधिकारियों की मांग बढती जा रही है। केरल में जहाँ बेकारी की समस्या अधिक है और जहाँ हिन्दी के प्रति बडा प्रेम है, ऐसे हिन्दी पदों के लिए योग्य आवेदक तैयार करने का काम जोर से किया जा सकता है। इस दृष्टि से सभा केरल के कुछ प्रमुख केन्द्रों में हिन्दी टंकण और आशुलिपि विद्यालय और तिरुवनन्तपुरम में हिन्दी अनुवाद, पत्राचार एवं पत्रकारिता पाठ्यक्रम चलाती है।

प्राय: यह आरोप लगाया जाता है कि स्वतंत्रता संग्राम के समय हिन्दी प्रचारकों में जो देशप्रेम था और जो त्यागनिष्ठा थी वह बाद के हिन्दी प्रचारकों में नहीं मिलता। हमें ऐसे हिन्दो प्रचारकों का एक दल तैयार करना है जो हिन्दी प्रचार को देशसेवा मान कर अपना जीवन व्रत बना लें। इस उद्देश्य से सभा तिरुवनन्तपुरम में एक हिन्दी अध्यापक प्रशिक्षण महा-विद्यालय चला रही है। यहाँ के छात्राध्यापकों ने खादी पहनना आरंभ किया है जो उनकी मनोवृत्ति में आ रहे परिवर्तन की ओर इंगित करता है।

त्रिभाषा सूत्र का सफल कार्यान्वयन जैसे केरल में हुआ है वैसे ही हिन्दो प्रान्तों में भी जब होने लगेगा तब ऐसे अध्यापकों की माँग बढेगी जो हिन्दी प्रान्तों में हिन्दी माध्यम से हिन्दीतर भाषायें सिखा सकते हों। हिन्दी माध्यम में मलयालम सिखाने की दक्षता भी उक्त हिन्दी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के छात्राध्यापकों को दी जाती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी अध्यापन और प्रचार की नयी प्रविधियों से केरल के हिन्दी प्रचारकों और अध्यापकों को परिचित कराने केलिए सभा जगह जगह पर हिन्दी प्रचारक नवीकरण पाठ्यक्रम चलाती है। इन पाठ्यक्रमों में भी प्रचारकों में सामाजिकता का बोध विकसित करने केलिए उपयुक्त कार्य आयोजित होते हैं। भारतीय भाषा जुलूस निकाली जाती है। भारतीय भाषा गीत गाये जाते हैं। देशप्रेम के गीत गाये जाते हैं। निरक्षरता निवारण, शराबबंदी, खादी, हरिजनोद्धार जैसे अन्य रचनात्मक कार्यक्रमों में भी सक्रिय भाग लेने की प्रेरणा इन पाठ्यक्रमों में दी जाती है।

हिन्दी अध्ययन, अध्यापन और प्रचार को प्रोत्साहित करने की कुछ योजनायें केन्द्र मानव संसाधन विकास मंत्रालय की सहायता से सभा कार्यान्वित करती है। सभा की परीक्षाओं में उन्नत स्थान पानेवाले विद्यार्थियों को आकर्षक पुरस्कार, स्वर्ण पदक आदि दिये जाते हैं। श्रेष्ठ प्रचारकों को नकद पुरस्कार और स्वर्णपदक दिये जाते हैं। परीक्षा में उन्नत स्थान पाने वाले विद्यार्थियों को प्रस्तुत करनेवाले स्कूलों को वैयन्ती दी जाती है। आर्थिक संकट से ग्रस्त दस दस प्रचारकों को प्रतिमास 500 रुपये की सहायता दी जाती है।

प्रचार के कुछ इतर उपाय भी सभा ने अपनाये हैं। समय समय पर हिन्दी के विविध पहलुओं पर आयोजित राज्यस्तरीय, क्षेत्रीय और अखिल भारतीय संगोष्ठियों और परिचर्चाओं में वरिष्ठ जन नेता और प्रकांड पंडित हिन्दी के पक्ष का समर्थन करते हुए जो विचार और उद्गार अभिव्यक्त किया करते हैं उनका व्यापक प्रचार समाचार पत्र, आकशवाणी, दूरदर्शन जैसे जन संचार माध्यमों से किया जाता है। हिन्दी साहित्य-कला प्रतियोगिताओं का आयोजन भी इस क्षेत्र का एक महत्वपूर्ण प्रयोग है। हिन्दी रंगमंच से अधिक लाभ उठाने की योजना है। हम यह भी चाहते हैं कि केरल की संस्कृति पर आधारित नाटक, नृत्य आदि केरल के जाने माने अभिनेताओं के सहयोग से हिन्दी में तैयार करके दूरदर्शन से प्रसारित करा सकें।

राजभाषा के रूप में हिन्दी का प्रयोग बढाने में सहायता पहुँचाने केलिए केरल हिन्दी प्रचार सभा केरल स्थित केन्द्र सरकारी कार्यालयों, निगमों,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपक्रमों और राष्ट्रीयकृत बैंकों से मिल कर प्रतिवर्ष चौदह सितंबर से हिन्दी सप्ताह का प्रभावी आयोजन करती है । उक्त कार्यालयों में आयोजित हिन्दी कार्यशालाओं में सभा के कार्यकर्ता सहयोग दिया करते हैं ।

इन सब उपलब्धियों के बावजूद हम यह अनुभव करते हैं कि मंजिल तक पहुँचने में अभी काफी दूरी तय करनी है । हमें पूरा विश्वास है कि केरल की जनता के सहयोग से केरल के उत्साही हिन्दी प्रचारक हिन्दी प्रचार के क्षेत्र में केरल को अग्रणी बना सकेंगे । केरल सरकार और केन्द्रीय सरकार का जो समर्थन हमें मिल रहा है उसके लिए हम अतीव कृतज्ञ हैं । गत पचपन वर्षों में कई राष्ट्रीय नेताओं ने सभा में पधारकर हमें अनुगृहीत किया है जिनमें प्रमुख हैं डा० राजेन्द्र प्रसाद, राष्ट्रशिल्पी पं० जवाहरलाल नेहरू, श्रीमती कमला नेहरू, श्रीमती इन्दिरा गान्धी, बाबू पुरुषोत्तमदास टंडन, आचार्य कृपलानी, बालगंगाधर खेर, डा० संपूर्णानन्द, पं० कमलापति त्रिपाठी आदि ।

आज इस दीक्षान्त समारोह में सभा द्वारा संचालित हिन्दी भूषण और साहित्याचार्य परीक्षाओं के विजेताओं को उपाधियाँ प्रदान की जा रही हैं । भूषण परीक्षा में प्रथम स्थान पानेवालों को स्व० के. वासुदेवन पिल्लै स्मारक स्वर्ण पदक प्रदान किया जा रहा है । स्व० पिल्लैजी ने हिन्दी प्रचार में जो योगदान दिया है उसका जिक्र मैं कर चुका हूँ । उनकी त्यागनिष्ठा नयी पीढी यदि अपनायेगी तो निश्चय ही हिन्दी प्रचार की गति में अधिक तीव्रता आयेगी ।

साहित्याचार्य परीक्षा में प्रथम स्थान पानेवाले स्नातकोंको डा०के.भास्करन नायर स्मारक स्वर्ण पदक दिया जा रहा है । डा० के. भास्करन नायर ने भी हिन्दी प्रचार को अपना जीवन व्रत बना लिया था । वर्षों तक वे केरल हिन्दी प्रचार सभा से जुडे रहे और सभा के अध्यक्ष भी रहे । उन्होंने मलयालम साहित्य का परिचय हिन्दी जगत को देने के लिए उत्तम ग्रंथ भी रचे । हिन्दी को देश की सामासिक संस्कृति का माध्यम बनाने का हमारा संकल्प ऐसे ही साहित्यिक प्रयत्नों द्वारा यथार्थ हो सकेगा ।

इस दीक्षान्त समारोह की अध्यक्षता कर रहे हैं केरल विधान सभा के अध्यक्ष श्री वर्कला वी. राधाकृष्णन । देश की बढती हुई निरक्षरता पर वे बहुत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिन्तित हैं। वे हिन्दी कार्यकर्त्ताओं से आह्वान किया करते हैं कि जनतंत्र को सफल बनाने केलिए हिन्दी प्रचार के साथ साथ हिन्दी भाषी क्षेत्र की सघन निरक्षरता को दूर करने का भी प्रयत्न करें। वे हिन्दी के बडे समर्थक हैं और समय समय पर केरल की जनता को हिन्दी का अधिकाधिक अध्ययन करने केलिए प्रेरित करते रहते हैं। केरल हिन्दी प्रचार सभा के आप निकटतम बन्धु हैं। आदरणीय श्री वर्कला राधाकृष्णन जी, हम आप का सादर स्वागत करते हैं।

इस समारोह में केरल के शिक्षा मंत्री श्री. के. चन्द्रशेखरनजी स्वर्ण पदकों का वितरण कर रहे हैं। आप भी भारतीय भाषाओं के बडे समर्थक हैं और हिन्दी को केरल के स्कूली पाठ्यक्रम में उचित स्थान दिलाना चाहते हैं। आप यह मानते हैं कि हिन्दी के अध्यापन केलिए अब जितना समय मिलता है वह बिलकुल अपर्याप्त है। सभा की हर कठिनाई को दूर करने केलिए वे सदा हर संभव सहायता करते रहते हैं। आदरणीय श्री. चन्द्रशेखरनजी, हम आप का आदर पूर्वक स्वागत करते हैं।

मलयालम और हिन्दी के बीच सौहृद बढाने केलिए किये गये बहुमूल्य योगदान के उपलक्ष्य में मलयालम के विख्यात महाकवि श्री. एम. पी. अप्पनजी को 'साहित्य कलानिधि' की मानद उपाधि प्रदान करने केलिए केरल के संस्कृति मंत्री श्री. टी. के. रामकृष्णनजी पधारे हैं। श्री. रामकृष्णनजी का आग्रह है कि देश के विविध प्रान्तों की संस्कृति की विशेषतायें हिन्दी के माध्यम से इतर राज्यों की जनता को भी समझायें। इस केलिए वे कला का माध्यम अत्युत्तम मानते हैं। केरल हिन्दी प्रचार सभा के प्रति उन का बडा स्नेह रहा है। आदरणीय श्री. टी. के. रामकृष्णनजी, हम आप का सादर स्वागत करते हैं।

पद्मभूषण डा० मोटूरी सत्यनारायणजी आज दीक्षान्त भाषण देने केलिए हमारे बीच में पधारे हैं। केरल हिन्दी प्रचार सभा के संस्थापक एवं प्रथम मंत्री स्व० के. वासुदेवन पिल्लैजी से उनकी घनिष्ठ मित्रता रही। आप उन इनेगिने हिन्दी सेवियों में प्रमुख हैं जो उन दिनों संविधान सभा के सदस्य थे जब संविधान में हिन्दी को भारत की राजभाषा स्वीकार किया गया। संविधान की हिन्दी प्रति तैयार करने केलिए गठित मसौदा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समिति में भी आप सदस्य रहे। जिन विचारों और भावनाओं से प्रेरित होकर संविधान निर्माताओं ने हिन्दी को राजभाषा का पद दिया उनकी व्याख्या करने के लिए आप से बढकर कोई अधिकारी विद्वान शायद नहीं मिलेंगे। आपने महात्मा गांधी डा० राजेन्द्र प्रसाद आदि के निर्देशानुसार हिन्दी प्रचार के क्षेत्र में जो ठोस कार्य किया है वह हिन्दी प्रचार के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित है। आपने दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास और राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा का नेतृत्व वर्षों तक किया है। विविध विषयों में आपकी गहरी पहुँच है। आप की मातृभाषा तेलुगु है। तेलुगु, हिन्दी और अंग्रेज़ी में आप ने अनेक उत्तम ग्रंथ रचे हैं। आप की दृष्टि सार्वदेशीय है। आप के उद्बोधन से स्नातकों को अपना जीवन आलोकित करने की अनेक मणियाँ प्राप्त होंगी। परम पूज्य डा० मोटूरी सत्यनारायणजी, हम आप का सविनय स्वागत करते हैं।

महाकवि एम. पी. अप्पन मलयालम के भावगीत साहित्य में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। वे प्रसन्नता, सौकुमार्य, सौन्दर्य, उत्साह, उल्लास, आशावाद, देशप्रेम, विश्वप्रेम और आनन्द के अतुल गायक हैं। उन की कुछ उत्तम रचनायें संस्कृत, हिन्दी और अंग्रेज़ी में अनूदित हो चुकी हैं। साहित्य कलानिधि की मानद उपाधि स्वीकार करके आप केरल हिन्दी प्रचार सभा का गौरव बढा रहे हैं। पूजनीय महाकवि एम. पी. अप्पनजी, हम आप का विनम्रता पूर्वक स्वागत करते हैं और अभिनन्दन करते हैं।

उपाधियाँ पानेवाले स्नातकों का भी हम स्वागत और अभिनन्दन करते हैं। स्वर्णपदक पानेवाले स्नातक विशेष अभिनन्दन के पात्र हैं। स्नातकों से हमारी आशा है कि वे 'सादा जीवन उच्च विचार' के आदर्श को आत्मसात करते हुए हिन्दी प्रचार के द्वारा देश की भावात्मक एकता को बढाने का दृढ संकल्प करेंगे।

इस समारोह की शोभा बढानेवाले सभी विद्वानों का मैं हार्दिक स्वागत करता हूँ।

जय हिन्द, जय हिन्दी !!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कविता

अन्धी दौड

एस. आर. सिंह

चेतन मानव कुदरत का तू विशेष अंग
पला तू इसी में, होगा इसी में भंग
आदि से जीने का बदला तेरा ढंग
अपने ही उद्देश्य के बदले कितने रंग !

तेरे दुष्कर्मों को पृथ्वी भी क्या कम ?
पहुँच कर अंतरिक्ष में, छोडेगा तू बम
आकाश को दूषित कर के ही लेगा दम
चांद तारों की जगह फैलायेगा घोर तम ।

होड़ लगी तेरी सब से आगे निकलने की
मंगल के बाद सभी ग्रह अपनाने की
तेरी अन्धी दौड, कहीं का न छोडेगी
आसमान तो क्या, जमीन का न छोडेगी ।

जिस कल को तूने विवेक से बनाया
और जिस के बूते पर ऊँचा उड़ पाया
विनाश के कगार पर तुझे ले आया
आटमी स्टार-वार करेगा अब तेरा सफाया ।

तेरी कल्पना उड़ान विज्ञान खोज सब पहिचाने
प्रयास भला हो बुलन्दी पर इन्सान को पहुंचाने
आकाश के तारों को उतारा हम माने
जमीन के उतारों को तारो तो हम जाने । ★

सहायक शिक्षा सलाहकार
केन्द्र मानव संसाधन विकास मंत्रालय
भारत सरकार, शास्त्री भवन
नई दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महामनीषी जयशंकर प्रसाद

डा० एन. वी. कृष्णवारियर
मुख्य संपादक, मातृभूमि
कालिकट, केरल

(कालिकट विश्वविद्यालय में आयोजित संगोष्ठी में केरल के प्रतिष्ठित कवि, संपादक और बहुभाषाविद डा० एन. वी. कृष्णवारियर द्वारा दिया गया अध्यक्षीय भाषण ।)

हिन्दी के महान कवि जयशंकर प्रसाद की जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में यह त्रिदिवसीय राष्ट्रीय विचार गोष्ठी यहाँ आयोजित हो रही है । इसके उद्घाटन समारोह में भाग लेने का अवसर मुझे मिला, यह मेरा भाग्य है ।

जयशङ्कर प्रसाद का जन्म सन् 1889 ईस्वी में बनारस में हुआ । उनकी प्रतिभा अद्भुत एवं बहुमुखी थी । गीत, महाकाव्य, नाटक, कहानी, उपन्यास, निबन्ध, समालोचना— साहित्य की बहुत सारी विधाओं में उन्होंने रचनाएँ प्रस्तुत कीं । मुख्य रचना 'कामायनी' हिन्दी की ही नहीं, बल्कि समूचे भारतीय साहित्य की महान उपलब्धि मानी जाती है। हिन्दी के नाटक साहित्य में प्रसाद के ऐतिहासिक नाटकों का स्थान बहुत ऊँचा है । अपने गीतों के कारण सुमित्रानन्दन पंत, सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला और महादेवी वर्मा के साथ जयशङ्कर प्रसाद हिन्दी में छायावाद के प्रवर्तकों में अग्रणी माने जाते हैं । सन् 1937 ईस्वी में जब उनका देहान्त हुआ उस समय उनकी उम्र मात्र 48 थी । इतनी कम उम्र में साहित्य की इतनी विभिन्न विधाओं में इतनी बडी उपलब्धियाँ उन्हें प्राप्त हुई, यह वास्तव में अचरज की बात है । भारत में ही नहीं, समूचे विश्व में ऐसी सर्व-तंत्र-स्वतंत्र प्रतिभाएँ बहुत कम ही दिखाई देती हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत में ही नहीं, समूचे विश्व में ऐसी सर्व-तंत्र-स्वतंत्र प्रतिभाएँ बहुत कम ही दिखाई देती हैं।

इसलिए हिन्दी साहित्य को प्रसाद की देन पर जो विशाल एवं बहु-आयामी परिचर्चा यहाँ आयोजित हो रही है, उस का बडा मूल्य है। आधुनिक हिन्दी साहित्य के महान स्रष्टाओं में प्रमुख प्रसाद की रचनाओं के साथ मेरा परिचय बहुत कम है। जब ई० उन्नीस सौ तीसों में हम हिन्दी का अध्ययन कर रहे थे, तब दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा का, जो यहाँ हिन्दी प्रचार का दायित्व निभा रही थी, ध्येय हिन्दी या हिन्दुस्थानी भाषा का प्रचार था, हिन्दी साहित्य का प्रचार नहीं था। राष्ट्रभाषा के तौर पर, उत्तर और दक्षिण के लोगों के बीच संपर्क के माध्यम के तौर पर, हिन्दी पढाई और पढी जाती थी।

भला, साहित्य के प्रचार के बिना भाषा का प्रचार कैसे संभव हो सकता है? हिन्दी प्रचार सभा का अध्यक्ष स्वयं महात्मा गांधी थे। उन के मन में, और उन के उन अनुयायियों के मन में जो सभा का संचालन करते थे, राष्ट्र-साहित्य के प्रति एक विशद कल्पना जरूर थी। भारत की सब प्रादेशिक भाषाओं में जो अच्छे से अच्छा और मौलिक साहित्य रचा जाता है उस की समष्टि ही राष्ट्र-साहित्य है। सारे भारत का साहित्य एक और अखण्ड है लेकिन इस साहित्य की अभिव्यक्ति भारत की बहुत सी भाषाओं के माध्यम से हो रही है। निष्कर्ष यह कि यद्यपि हिन्दी राष्ट्रभाषा है, तो भी हिन्दी का साहित्य, मलयालम या तमिल या असम या उडिया साहित्य की भांति एक प्रादेशिक साहित्य है। इन सारे भारतीय साहित्यों में जो अच्छे से अच्छा और उच्च कोटि का मौलिक साहित्य रचा जाता है वही राष्ट्र-साहित्य है। यह कल्पना आज भी मूल्यवान एवं प्रामाणिक है।

इस कल्पना को साकार बनाने केलिए दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार

भारत की सब प्रादेशिक भाषाओं में जो अच्छे से अच्छा और मौलिक साहित्य रचा जाता है उस की समष्टि ही राष्ट्र-साहित्य है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभा के उन दिनों के संचालक हिन्दी भाषा के द्वारा दूसरी भाषाओं से अनूदित उत्तमोत्तम साहित्य का प्रचार करने में ज्यादा प्रयत्न करते थे। और मैं मानता हूँ कि उन की यह रुख ठीक भी थी।

सूर, तुलसी और कबीर की रचनाएं भारतीय साहित्य की महान उपलब्धियाँ हैं, इस में कोई संदेह नहीं। हिन्दी प्रचार सभा के पाठ्य-क्रम में इन की रचनाओं का पर्याप्त समावेश था। आधुनिक हिन्दी कवियों की रचनाओं में पंत, निराला, प्रसाद एवं महादेवी वर्मा की रचनाओं से अधिक हमारा परिचय मैथिलीशरण गुप्त, दिनकर आदि की रचनाओं से था। भाषा की सरलता एवं राष्ट्रीय भावों की अभिव्यक्ति की दृष्टि से वह उचित भी था, ऐसा मैं मानता हूँ।

नाटकों में बांगला के द्विजेन्द्रलाल राय की रचनाओं का दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा ने खूब प्रचार किया। यद्यपि प्रसाद के अजातशत्रु आदि नाटक कभी कभी पाठ्यक्रम में समाविष्ट किये जाते थे, तथापि द्विजेन्द्रलाल राय की ऐतिहासिक रचनाओं की प्रखर उज्वलता के सामने ये बहुत ही दुर्बल एवं अनाकर्षक लगते थे। जहाँ तक कहानियों और उपन्यासों का तअल्लुक है, प्रेमचन्द, रवीन्द्रनाथ ठाकुर और शरश्चन्द्र हमारे मन में आसन जमाये हुए थे। वैचारिक पाठ्यक्रम के बाहर जब मैं निजी तौर पर हिन्दी साहित्य का स्वतंत्र अध्ययन करने लगा, तो पंतजी को अपनी रुचि के इतने निकट पाया कि उनकी रचनाओं में तल्लीन हो गया। कामायनी का प्रतीकवाद, रहस्यवाद और दार्शनिकता मुझे कौमार के दिनों में कृत्रिम और नीरस लगा। सामान्यत: कला में और विशेष रूप से साहित्य में बौद्धिक अमूर्तता (Intellectual abstraction) को किस हद तक स्थान या औचित्य है, वह विवादास्पद है, काव्य वस्तु के साथ रागात्मक सम्बन्ध, जिसे तन्मयता, लय आदि शब्दों से हम अभिव्यक्त करते हैं, जुड़ाने केलिये कथापात्रों की मूर्तता एवं व्यतिरिक्तता बहुत सहायक होती है। कामायनी की अमूर्तता में मैं ने संस्कृत के प्रबोध चन्द्रोदय नाटक के कथनशिल्प को पहचाना, यद्यपि कथ्य के विषय में दोनों कृतियों में बहुत अन्तर है। इसलिए अभिव्यक्ति के इस तरीके में मुझे कोई मौलिकता नहीं दीख पडी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वप्न, स्वप्न, जागरण भस्म हो
इच्छा क्रिया ज्ञान मिल लय थे
दिव्य अनाहत पर निनाद में
श्रद्धायुत मनु बस तन्मय थे ।

आदि पंक्ति में दार्शनिक शब्दावली के सजाने के सिवा किसी काव्यानुभूति की झलक मैं ने नहीं देखी । शायद यह मेरी अज्ञता हो, इसे आप क्षमा करें । प्रसाद की काव्य-भाषा में मुझे वह ओज नहीं मिला जो दिनकर की भाषा में था ।

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन की रचनायें जब सामने आयीं तो मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि जो काम मलयालम में मैं करना चाहता था वही काम हिन्दी में ये महाशय कर रहे हैं ।

बच्चन की प्रारम्भिक रचनायें तो मुझे इतने निकटवर्ती प्रतीत हुए, जितनी उनके समसामयिक चङ्ङम्पु.षा की मलयालम रचनायें । फिर सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन की रचनायें जब सामने आयीं तो मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि जो काम मलयालम में मैं करना चाहता था वही काम हिन्दी में ये महाशय कर रहे हैं ।

कहने का यह अर्थ है कि जयशंकर प्रसाद की साहित्य साधना का गहरा अध्ययन मैं नहीं कर पाया । प्रसाद साहित्य का गहरा अध्ययन राष्ट्रीय एवं विश्वविद्यालयीय स्तर पर अब यहाँ हो रहा है ।

जयशंकर प्रसाद ऐसे महामनीषियों में अन्यतम हैं, जो अपनी प्रतिभा के प्रभाव से भारतीय कविता एवं भारतीय चेतना में सदियों की निष्क्रियता के बाद सर्वांगीण नव जागरण लाने में सफल हुए । प्रसाद की रचनाओं का अध्ययन भारतीय नव जागरण का ही अध्ययन है, इसलिए वह हमारेलिए बहुत ही उपयोगी एवं प्रेरणाप्रद होगा । यह निस्सन्देह है । राष्ट्रीय स्तर पर इस विचार गोष्ठी का आयोजन कर के कालिकट विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग ने हमें आभारी बना दिया है । इस विचारगोष्ठी की सफलता केलिए मेरी शुभ कामनायें । संगच्छध्वं संवदध्वम् !

[साहित्य मंडल पत्रिका से साभार]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिवंगत विभूतियों को श्रद्धांजलि

अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ की साधारण समिति की जो बैठक दिनांक 27 मार्च 1989 को नई दिल्ली में आयोजित हुई उसमें तीन विभूतियों को श्रद्धांजलि अर्पित की गयी जिनका पिछले दिनों देहान्त हो गया। साधारण सभा द्वारा पारित शोक प्रस्ताव यों हैं।

श्री. जैनेन्द्र कुमार जैन :

प्रसिद्ध साहित्यकार एवं गांधीवादी चिन्तक श्री जैनेन्द्र कुमार जी का दिनांक 24 दिसम्बर 1988 को नई दिल्ली में निधन हो गया। श्री जैनेन्द्र कुमार जी के निधन से हिन्दी जगत को अपार क्षति हुई है। गांधी साहित्य शृंखला की अन्तिम कड़ी के रूप में श्री जैनेन्द्र कुमार के निधन से ऐसा लगता है मानों हिन्दी साहित्य का एक युग समाप्त हो गया। श्री जैनेन्द्र कुमार जी राष्ट्रीय एकता और संस्कृति की एक मूल्यवान धरोहर थे। उन्होंने भारतीय संस्कृति के विकास और उसको उत्तरोत्तर आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। जैनेन्द्र कुमार जी ने अपनी साधना के द्वारा हिन्दी साहित्य के झण्डे को समृद्ध किया और उसके द्वारा मानवीय मूल्यों को प्रतिष्ठित किया। जैनेन्द्र कुमार जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे और उन्होंने 65 कृतियों की रचनाएं कीं जिनमें 13 उपन्यास, 12 कहानी संग्रह तथा 31 निबन्ध संग्रह और 5 यात्रा वृत्तान्त तथा अन्य संस्मरण हैं। इसके अतिरिक्त उनकी 4 अनूदित कृतियां भी हैं। जैनेन्द्र कुमारजी को साहित्य अकादमी पुरस्कार, इंडिया अकादमी पुरस्कार तथा समय समय पर हिन्दी साहित्य सम्मेलन का मंगला प्रसाद पुरस्कार, डालमिया पुरस्कार तथा उत्तर प्रदेश सरकार का एक लाख रुपये का सर्वोच्च साहित्य पुरस्कार भारत भारती प्रदान किया गया। 1972 में आगरा विश्वविद्यालय, 1973 में दिल्ली विश्वविद्यालय की डी. लिट. की मानक उपाधि प्राप्त की और 1974 में साहित्य अकादमी की फैलोशिप प्रदान की गई। जैनेन्द्र जी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर अब तक 60 से अधिक शोधार्थी डाक्टरेट की उपाधि प्राप्त कर चुके हैं। जैनेन्द्रजी के निधन से हिन्दी जगत की अपार क्षति हुई है। संघ की कार्यकारिणी समिति उनके निधन पर हार्दिक संवेदना प्रकट करती है और परमात्मा से प्रार्थना करती है कि दिवंगत आत्मा को चिरशांति प्रदान करे और उनके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिवार तथा उनके स्वजनों को यह दारुण दु:ख सहने की शक्ति प्रदान करे।

पं० नरेन्द्र शर्मा

छायावाद और उत्तर छायावाद की कडी के रूप में काव्य साधक, भारतीय चेतना के सजग प्रहरी तथा प्रगतिशील धारा के उच्च कोटि के कवि पं० नरेन्द्र शर्मा के निधन से साहित्य और संगीत की अपार क्षति हुई है। पं० नरेन्द्र शर्मा ने अपनी काव्य साधना से जो प्रशस्ति पाई उसे आगे आने वाली पीढियाँ सदैव निष्ठा से प्रेरित होती रहेंगी। पं० नरेन्द्र शर्मा जी उच्च कोटि के गीताकार होने के साथ-साथ फिल्मी जगत की भी बहुत बडी हस्ती थे। उनकी सरलता और सज्जनता देखते ही बनती थी। संघ की कार्यकारिणी समिती पं० नरेन्द्रशर्मा जी के निधन पर हार्दिक संवेदना प्रकट करती है और प्रार्थना करती है कि दिवंगत आत्मा को चिरशांति तथा उनके परिवार को यह दारुण दु:ख सहने की शक्ति प्रदान करे।

श्री. उमाशंकर जोशी

गुजरात के लब्ध प्रतिष्ठित साहित्यकार, जाने-माने कवि, पूर्व सांसद श्री. उमाशंकर जोशी के निधन से भारतीय साहित्य की विशेष रूप से गुजराती साहित्य की अपार क्षति हुई है। जोशी जी एक प्रसिद्ध शिक्षाविद कवि और विद्वान थे। उन्होंने गुजराती साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। जोशीजी आधुनिक गुजराती साहित्य के महान कवि होने के साथ साथ विख्यात स्वतंत्रता सेनानी भी थे। जोशी जी 1978 से 1983 तक साहित्य अकादमी के अध्यक्ष रहे। 1973 में उन्हें कविनी श्रद्धा पुस्तक के लिए अकादमी से संमानित किया गया और 1985 में उन्हें अकादमी की महत्तर सदस्यता प्रदान की गई। जोशी जी का गुजराती कवियों के साथ साथ हिन्दी के नये कवियों से भी सीधा संबन्ध था। जोशी जी वास्तव में आधुनिक युग के भारतीय लेखक थे जिनमें गहरी क्षमता थी। उनके विचार सुलझे हुए और मार्मिक थे। जोशी जी ने साहित्य की विभिन्न विधाओं— कविता, कहानी, निबन्ध, समीक्षा की सभी विधाओं में अपनी कलात्मक लेखनी से गुजराती साहित्य को समृद्ध किया। जोशी जी के निधन पर हिन्दी संस्था संघ की कार्यकारिणी समिति गहरा दु:ख प्रकट करती है तथा परमात्मा से प्रार्थना करती है कि दिवंगत आत्मा को चिर शांति तथा उनके परिवार एवं स्वजनों को यह अपार दु:ख सहने करने की शक्ति प्रदान करे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरल ज्योति

* प्रधा[illegible]क
प्रो . जे. जोसफ़

* संप[illegible]
श्री. के. जी. बालकृष्ण पिल्लै

* [illegible] संपादक
श्री. आर. सुकुमारन नायर

* संपादक मण्डल
प्रो० एम. जनार्द्दनन पिल्लै
प्रो० सी. जी. राजगोपाल
श्री. के. वी. कृष्णनकुट्टी
डा० एस. सी. चन्द्रन
डा० एन. जी. देवकी
श्री. एम. के. वेलायुधन नायर

[illegible]पन दर

		मासिक	वार्षिक
आवरण पृष्ठ 4	रु.	500 00	5000 00
आवरण पृष्ठ 2 एवं 3	रु.	400 00	4000 00
साधारण पृष्ठ पूरा	रु.	300 00	3000 00
साधारण पृष्ठ $\frac{1}{2}$	रु.	175 00	1750 00
साधारण पृष्ठ $\frac{1}{4}$	रु.	100 00	1000 00

संपर्क करें—मंत्री, केरल हिन्दी प्रचार सभा, तिरुवनन्तपुरम-695 014

लेखकों से निवेदन

हिन्दी प्रचार, हिन्दी शिक्षण, भारतीय भाषायें, भारतीय साहित्य, भारतीय संस्कृति जैसे विषयों पर लिखे गये उच्च स्तरीय सचित्र लेखों व संगोष्ठी समाचारों का स्वागत किया जायेगा।

हिन्दीतर प्रान्तों की सांस्कृतिक, साहित्यिक, कलात्मक विशेषताओं पर लिखी गयी मौलिक और अनूदित रचनाओं को और हिन्दीतर भारतीय भाषाओं की उत्तम रचनाओं के अनुवादों को प्राथमिकता दी जायेगी।

पांडुलिपियाँ साफ अक्षरों में लिख कर या टाइप करके भेजें। कार्बन प्रतियाँ स्वीकृत नहीं होंगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवरण चित्र :

प्रथम पृष्ठ—केन्द्र मानव संसाधन विकास मंत्रालय की सहायता से केरल हिन्दी प्रचार सभा द्वारा तिरुवनन्तपुरम में आयोति सम्मान समर्पण समारोह ।

(ऊपर) उद्घाटन कर रहे हैं केन्द्र संसदीय कार्य राज्य मंत्री श्री. एम. एम. जेकब । समीप हैं श्री. एम. के. वेलायुधन नायर (मंत्री, केरल हिन्दी प्रचार सभा एवं कोषाध्यक्ष, अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ)

(नीचे) तपोनिष्ठ हिन्दी सेवी श्री, देव'केरलीय' को पाटंबर पहना रहे हैं केरल विधान सभा के विपक्षी दल के नेता एवं अखिल भारतीय कांग्रस की कार्य समिति के सदस्य श्री. के. करुणाकरन ।

द्वितीय पृष्ठ - श्री. के. करुणाकरन से सम्मानित हिन्दी सेवी छः छः हज़ार रुपये की सम्मान राशि स्वीकार कर रहे हैं ।

तृतीय पृष्ठ – हिन्दी सेवी सम्मान समर्पण के वक्ता और श्रोता

(ऊपर) बायें से: प्रो० एम. पी. मन्मथन और श्री. के. करुणाकरन (बीच में) श्री. एन. एम. जोसफ (वन मंत्री, केरल सरकार) श्री. के. वी. सुरेन्द्रनाथ (सदस्य केरल विधान सभा) और श्री. एम. एम. जेकब (संसदीय कार्य राज्य मंत्री, केन्द्र सरकार)

चतुर्थ पृष्ठ – देश भक्तिगीत : छात्र छात्राओं द्वारा "सारे जहाँ से अच्छा हिन्दो सितां हमारा........."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूरभाष : 61378 तार : "जय हिन्दी"

केरल ज्योति

पुष्प 24
दल 4
एक प्रति—1 रु० 50 पै०
वार्षिक—15 रु०

सांस्कृतिक जागरण की मासिक पत्रिका
जुलाई 1989

संपादकीय

उत्तर में दक्षिणी भाषाध्यापन को प्रोत्साहित करें

संसद के माननीय अध्यक्ष डा० बलराम जाखड ने जून 1989 में केरल हिन्दी प्रचार सभा द्वारा आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में इस बात पर ज़ोर दिया है कि उत्तर में दक्षिणी भाषाओं का अध्ययन देश के विभिन्न भाषाई समूहों में भावात्मक एकता स्थापित करने केलिए अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने यह भी सुझाया है कि जिस प्रकार हिन्दीतर प्रान्तों में हिन्दी के छात्रों और कार्यकर्ताओं के प्रोत्साहनार्थ विविध पुरस्कार योजनायें कार्यान्वित की जाती हैं वैसे ही उत्तर में दक्षिणी भाषाओं के प्रचारार्थ भी विविध पुरस्कार योजनायें आरंभ की जायें। आशा है इस महत्वपूर्ण सुझाव पर हिन्दी प्रान्तों की सरकारें तथा केन्द्र सरकार उचित ध्यान देंगी और आवश्यक कारवाई करेंगी।

कोठारी आयोग की सिफारिश पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति में त्रिभाषा सूत्र को भारत सरकार ने अपनाया है जिस के अनुसार हिन्दी भाषी राज्यों में हिन्दी, अंग्रेज़ी और एक आधुनिक भारतीय भाषा—दक्षिण की कोई भाषा—सिखानी चाहिए और हिन्दी भाषी राज्यों में क्षेत्रीय भाषा, हिन्दी और अंग्रेज़ी सिखानी चाहिए। किन्तु जिस प्रकार तमिलनाडु जैसे कुछ अहिन्दी प्रान्तों ने हिन्दी अध्ययन के संबन्ध में उदासीनता दिखायी है वैसी ही उदासीनता हिन्दी भाषी राज्यों ने दक्षिणी भाषाओं के संबन्ध मे भी दिखायी है। संभवतः किसी भी हिन्दी भाषी राज्य ने किसी दक्षिण भारतीय भाषा को स्कूली पाठ्यक्रम में अनिवार्य विषय नहीं बनाया है। इतना ही नहीं, हिन्दी भाषी कुछ शिक्षाविद त्रिभाषा सूत्र को अवैज्ञानिक और अव्यावहारिक साबित करने का प्रयत्न भी कर रहे हैं। उदाहरण केलिए श्री. पी. डी. पाठक की पुस्तक "भारतीय शिक्षा और उस की समस्यायें" (विनोद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस अंक में

देश की एकता केलिए साहित्यिक अनुवाद हो 3
डा० शंकरदयाल शर्मा

अग्नि परीक्षा से गुजर रही हिन्दी 5
श्रीमती रामदुलारी सिन्हा

गुरुजी के चरण कमलों पर 10
श्री. एस. रामय्यर 'साईराम'

केरल के दस श्रेष्ठ हिन्दी-प्रचारक सम्मानित 13

उत्तर में दक्षिणी भाषाध्ययन को प्रोत्साहित करें 16
डा० बलराम जाखड

स्वागत भाषण 19
श्री. एम. के. वेलायुधन नायर

हिन्दी अध्यापक प्रशिक्षण क्या-क्यों-कैसे 27
डा० अमर बहादुर सिंह

महान नागरिक जवाहरलाल 38
श्री. अखिलेश प्रभाकर

पुस्तक मंदिर, आगरा द्वारा प्रकाशित नवमसंस्करण 1988-89) के 389 वें पृष्ठ का यह अंश देखिये :—

"सरकार की भाषासंबन्धी नीति ने माध्यमिक शिक्षा में एक अवांछनीय समस्या उपस्थित कर दी है।...भारत सरकार ने इन दोनों आयोगों के विचारों के आधार पर त्रिभाषा सूत्र प्रतिपादित किया है।...3 भाषाओं सहित कुल विषयों की संख्या लगभग 10 हो जाती है। माध्यमिक शिक्षा प्राप्त करनेवाले छात्र साधारणतः 11—17 वर्ष-वर्ग के होते हैं। इस वय वर्ग के बच्चों केलिये 10 विषयों का पाठ्यक्रम निस्संदेह रूप से अत्यधिक बोझिल है। अतः उस में अन्य विषयों से साथ साथ भाषाओं की संख्या में भी कमी की जानी आवश्यक है।...माध्यमिक शिक्षा ग्रहण करनेवाले छात्रों की आयु एवं आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए, उचित तो यही जान पडता है कि उन केलिए दो भाषाओं का अध्ययन बहुत काफी है। तीन भाषाओं के अध्ययन से दो दुष्परिणाम हो सकते हैं। या तो वे इन का अधूरा अध्ययन करें, या इन का पूर्ण अध्ययन करने केलिए अन्य विषयों का अधूरा अध्ययन करें। ये दोनों ही बातें उन के हित के प्रतिकूल है।"

यद्यपि विद्वान लेखक अंग्रेजी को छोड़ देने का ही सुझाव देते हैं तो भी राष्ट्रहित में इनके तर्क स्वीकार्य नहीं लगते।

देश के संपूर्ण हित को ध्यान में रखकर हम त्रिभाषा सूत्र का सफल कार्यान्वयन सर्वत्र करें और जैसे डा० बलराम जाखडजी ने सुझाया उत्तर में दक्षिणी भाषाओं के अध्ययन को प्रोत्साहित करें, यही हमारी राय है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश की एकता केलिए साहित्यिक अनुवाद हो

डा0 शंकर दयाल शर्मा
महामहिम उपराष्ट्रपति

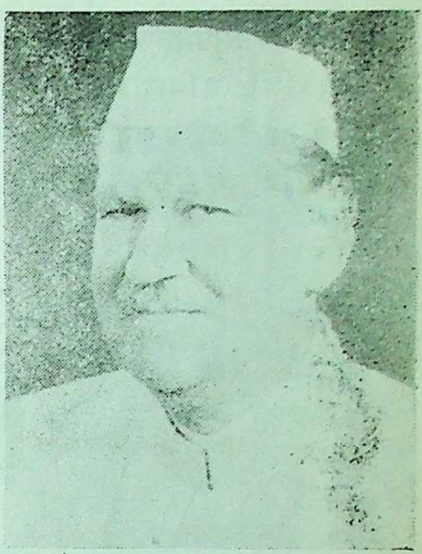

तमिल के सुप्रसिद्ध महाकवि सुब्रह्मण्य भारती की रचनाओं के हिन्दी में अनूदित संकलन "सुब्रह्मण्य भारती—संकलित कवितायें एवं गद्य" का विमोचन 1-6-1989 को नई दिल्ली में महामहिम उपराष्ट्रपति डा० शंकर दयाल शर्मा ने किया। इसका प्रकाशन भारत सरकार के संस्कृति विभाग ने किया।

उपराष्ट्रपति डा०शंकर दयाल शर्मा ने कहा कि देश की एकता को मजबूत बनाने की दृष्टि से यह आवश्यक है कि विभिन्न भारतीय भाषाओं की साहित्यिक कृतियों के अनुवाद सभी भारतीय भाषाओं में लोगों को उपलब्ध कराये जायें। ऐसा करने से विभिन्न प्रान्तों के लोगों में एक दूसरे के प्रति अधिक सामंजस्य स्थापित होगा और वे विघटनकारी तत्वों की चालों से अधिक तत्परता से निपट सकेंगे।

इस अवसर पर मानव संसाधन विकास मंत्री श्री. पी. शिवशंकर ने कहा कि हिन्दी में सुब्रह्मण्य भारती की रचनाओं के संकलन के प्रकाशन की योजना 1982 में सुब्रह्मण्य भारती के जन्म शताब्दी समारोह के दौरान बनायी गई थी। उन्होंने कहा कि सुब्रह्मण्य भारती ने तमिल में वही कार्य किया जो हिन्दी में मैथिलीशरण गुप्त ने किया था। इन दोनों राष्ट्र-वादी कवियों ने अपनी-अपनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाषाओं के लोगों में स्वतंत्रता की भावना को जगाया।

पुस्तक में सुब्रह्मण्य भारती की 63 कविताओं, तमिल के 20 तथा अंग्रेज़ी के 12 लेखों, 4 कहानियों और 12 टिप्पणियों का संकलन किया है। श्री. कृ० स्वामीनाथन इसके प्रधान संपादक हैं। सुब्रह्मण्य भारती के संदेश को अधिक से अधिक पाठकों तक पहुंचाने के उद्देश्य से 378 पृष्ठों की इस पुस्तक का मूल्य केवल 30 रु. रखा गया है।

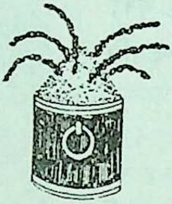

संस्कृत से हटना—संस्कृति से कटना

डा० शंकर दयाल शर्मा

महामहिम उपराष्ट्रपति डा० शंकर दयाल शर्मा ने नई दिल्ली में पुरातत्व विज्ञान पर एक संस्कृत पुस्तक "भारतीय पुरातत्वम नवीनतम उपलब्धयः" का विमोचन करते हुए कहा कि सदियों से संस्कृत ने सम्पूर्ण भारत को एकसूत्र में जोड़े रखा है। आज भी हमारी विभिन्न भाषाओं में संस्कृत के अनेक तत्सम एवं तद्भव शब्द प्रयोग में आते हैं। संस्कृत सीखने से विभिन्न भारतीय भाषाओं को समझने में आसानी होगी। भाषा के स्तर पर एक दूसरे को नजदीक लाने तथा अपनी साझी विरासत को समझने में हमें मदद मिलेगी। "संस्कृत से हटने का मतलब है अपनी संस्कृति से कटना।"

पुस्तक भारतीय पुरातत्व विभाग की एक महिला अधिकारी श्रीमती मधुबाला ने लिखी है। इसमें भारतीय पुरातत्व की नवीनतम खोजों के साथ-साथ पुरातत्व विज्ञान के विभिन्न पहलुओं पर भी प्रकाश डाला गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अग्निपरीक्षा से गुजर रही हिन्दी

श्रीमती राम्दुलारी सिन्हा
(माननीय राज्यपाल, केरल)

[3-6-1989 को दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा के 52 वें पदवीदान में दिया गया दीक्षान्त भाषण]

आदरणीय अध्यक्ष जी ।

स्नातको ! सज्जनो और देवियो !

सबसे पहले मैं इस महान संस्था के प्रति इसीलिए अपनी कृतज्ञता व्यक्त करना चाहती हूँ कि राष्ट्रीय महत्व संपन्न सभा के बावनवें दीक्षान्त समारोह पर मुझे आपने आमंत्रित किया है। इस गरिमा संपन्न संस्था का इतिहास काफ़ी पुराना है और इसके हर सोपान से स्वतंत्रता का आन्दोलन जुड़ा हुआ है। सन् 1918 में हिन्दी साहित्य सम्मेलन के इन्दौर अधिवेशन के सभापति-पद से महात्मा गाँधी ने दक्षिण भारत के तमिल, मलमालस, तेलुगु और कन्नड़ भाषा-प्रदेशों में हिन्दी प्रचार की आवश्यकता पर विशेष बल दिया था। बापूजी के अत्यंत प्रिय रचनात्मक कार्यप्रणालियों में राष्ट्रभाषा प्रचार भी एक रहा। उनकी प्रेरणा से स्थापित इस सभा के कार्यकलापों से सारा देश चिरपरिचित है। इस पावन प्रांगण में प्रवेश करते ही मेरी एक चिर अभिलाषा आज फलीभूत हुई है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यहाँ हिन्दी भाषा का जो प्रचार हुआ है, वह असल में भाषा का प्रचार नहीं था, अपितु वह एक राष्ट्रीय जागृति का प्रयास था ।

यहाँ उपस्थित उत्साही स्नातकों और हिन्दी प्रचारकों को देखकर मैं अत्यन्त प्रसन्न हूँ ।

मेरे विचार में जो सेवा इस संस्था ने गत सत्तर सालों से की है, वह मेरी दृष्टि में इतनी ऊँचीं सेवा है कि जिसकी कल्पना भी हम नहीं कर सकते । ऐसे समय में जबकि हिन्दी के प्रचार का कार्य बहुत कठिन था, यहाँ के कर्मठ कार्यकर्ता दक्षिण भारत के नगरों-उपनगरों और गाँव-कस्बों में निस्वार्थ भाव से बडी लगन और कडी मेहनत से राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार में तल्लीन रहते आये हैं । यहाँ हिन्दी भाषा का जो प्रचार हुआ है, वह असल में भाषा का प्रचार नहीं था अपितु वह एक राष्ट्रीय जागृति का प्रयास था । भाषा-प्रचार के माध्यम से सचमुच यहाँ सामाजिक क्रांति भी हुई है । इसके अनेकानेक उदाहरण हमें मिलते हैं । यह अत्यंत गौरव की बात है कि इस संस्था के कार्य-कलापों के पीछे देश के बडे-बडे नेताओं का योगदान रहता आया है ।

मुझे यह जानकर बडी प्रसन्नता हो रही है कि यह संस्था निकट भविष्य में अपनी राष्ट्रीय महत्व उपलब्धि की रजत-जयन्ती मनाने जा रही है । हिन्दी का प्रचार आज के संदर्भ में एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम है । हिन्दी का जो भी स्थान हो, चाहे राजभाषा का पद या संपर्क भाषा का पद, यह स्पष्ट है कि हिन्दी के प्रति आग्रह का तात्पर्य प्रान्तीय भाषाओं के प्रति विरोध नहीं है । हिन्दी को जब राज-भाषा चुना गया तो यह स्पष्ट था कि उसके साथ-साथ ही प्रादेशिक भाषाओं का भी समुचित विकास हो और प्रत्येक भाषावार राज्य अपनी राजभाषा को चुनने की स्वतंत्रता रखे । जिस समय हिन्दी के प्रति कोई सरकारी आग्रह नहीं था, उस समय हिन्दी का राष्ट्रभाषा के रूप में प्रचार और प्रसार का कार्य सहज भाव से हो रहा था और उसके प्रति कोई भी विरोधी आवाज

हिन्दी के प्रति आग्रह का तात्पर्य प्रान्तीय भाषाओं के प्रति विरोध नहीं है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं उठाई गयी थी । इस सन्दर्भ में एक ही अपवाद का जिक्र करना पड रहा है कि मद्रास प्रान्त में सन् 1937 में अन्यान्य राजनैतिक और साम्राज्यवादी कूटनीति की वजह से हिन्दी के विरोध में कुछ लोगों ने आवाज़ उठायी । उन कुछ लोगों के मन में भारतीय भावात्मक एकता के प्रति या राष्ट्रीय संस्कृति के प्रति विशेष अनुराग नहीं था । यह उल्लेखनीय बात है कि हिन्दी को स्वीकारने के पीछे कारण हैं । उनमें से मुख्य कारण यह था कि राष्ट्रवादी भारतवासियों ने यह मान लिया कि एक दूसरे को अधिक जानने के लिए, पहचानने के लिए और राष्ट्रीय एकता को बढाने के लिए यह आवश्यक है कि एक भारतीय भाषा सभी राज्यों में समझी जाए ।

इसीलिए संपर्क भाषा के रूप में अन्य भाषाओं की तुलना में हिन्दी को बहुत ज्यादा मान्यता मिली और उसका प्रचार हुआ । राष्ट्रभाषा का प्रश्न समूचे देश का प्रश्न है । स्वतंत्रता के बाद इस क्षेत्र में कार्य करनेवाले लोगों की एक बड़ी जिम्मेदारी यह हो गयी है कि इस कार्य को और तेज़ी से आगे बढ़ायें । प्रशासकीय संदर्भ में, व्यावसायिक संदर्भ में और साहित्य एवं सांस्कृतिक आदान-प्रदान के संदर्भ में, हिन्दी के स्वरूप को सुनिश्चित करने की आवश्यकता आज सामने आयी है । वैसे हिन्दी प्रचार एक साधन मात्र है । अन्तप्रान्तीय सहजता के माध्यम से समग्र भारतीय मनोभाव की श्रीवृद्धि करना एवं विश्व मानवता की तरफ़ अग्रसर होना, यही हमारा परम लक्ष्य है । यह सही है कि इस कार्य में कठिनाइयाँ होती हैं और ज्यादा परिश्रम एवं

राष्ट्रभाषा का प्रश्न समूचे देश का प्रश्न है ।

त्याग करने की जरूरत भी होती है । मुझे पूरा विश्वास है कि दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा ने जो बुनियाद रखी है, उस पर धीरे-धीरे एक भव्य भवन खडा होगा और देश की एकता को मज़बूत बनाने में वह काम आएगी । इस संदर्भ में यह कहना अनुचित नहीं होगा कि आज के इस वैज्ञानिक युग में भाषा सिखाने और प्रचार-प्रसार के क्षेत्र में नवीनता लाने के लिए अनेक साधन सुविधा उपलब्ध हुए हैं, परन्तु इसका तात्पर्य यह नहीं है कि मूलभावना में भी कोई परिवर्तन होना चाहिए । हिन्दी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के कार्यकर्ताओं को, खासकर इस संस्था के कार्यकर्ताओं को हिन्दी का काम उसी बलिदान, सेवा और त्याग की भावना से करना चाहिए, जिसके लिए इस सभा की स्थापना हुई थी।

मैं यह अनुभव करती हूँ कि हिन्दी के लिए लोगों में अभिरुचि जागृत होती आ रही है। इसके लिए इस बात की आवश्यकता है कि जो भी काम हम करें, लोगों से लड़ाई-झगड़ा करके नहीं, बल्कि जनमानस में प्रेम की भावना जागृत करके करें। इस बात पर ज़ोर दिया जाय कि हिन्दी और प्रान्तीय भाषाओं में किसी खास बात की प्रतियोगिता नहीं है, बल्कि वह एक दूसरे की पूरक है। हिन्दी का विकास होता है तो प्रान्तीय भाषा को भी सहायता मिलती है और प्रान्तीय भाषाओं के विकास से हिन्दी को। अत्यंत खेद की बात है कि कुछ विघटनवादी ताकतें अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए हिन्दी प्रचार के उद्देश्य को नजरंदाज करके इसे जटिल समस्या का रूप देती आ रही हैं। हिन्दी को किसी पर लादे जाने का आरोपण बेबुनियाद है। आज के संदर्भ में इस पवित्र कार्य में संलग्न भाई-बहनों और

किसी भाषा से नफरत करना असल में स्वस्थ चिंतन से और शालीन संस्कृति से द्वेष करने के बराबर है।

सामने उपस्थित नये स्नातकों से मेरा यह अनुरोध है कि लोगों के मन से इस भ्रम को दूर करने की दिशा में प्रयत्नशील रहें। बच्चों में हिन्दी के प्रति स्नेह और सद्भावना पैदा करें और ऐसा स्वच्छ वातावरण बनावें कि अधिक संख्या में लोग स्वेच्छा से हिन्दी सीखने के लिए आगे बढ़ें। हिन्दी में देश की सभी भाषाओं की लोकप्रिय शब्दावलियों और विशिष्ट शैलियों का यथाक्रम समन्वय होना परम आवश्यक है। उससे हिन्दी हमारी समग्र संस्कृति का सशक्त और सफल माध्यम बनेगी और भावात्मक और सांस्कृतिक दृष्टि से धीरे-धीरे जनसाधारण द्वारा अपनायी जाएगी।

दक्षिण के सभी राज्यों में केवल तमिलनाडु को छोडकर स्कूल के पाठ्यक्रम में हिन्दी को एक अनिवार्य विषय बनाया गया है। तमिलनाडु में दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा के द्वारा हिन्दी शिक्षण का कार्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वैच्छिक ढंग से चल रहा है। यह देखकर संतोष होता है कि तमिलनाडु में ही सब से अधिक संख्या में सभा की परीक्षाओं में छात्र भाग ले रहे हैं। यह शुभ सूचक है।

भाषा सभ्यता का मूल है। भाषा संस्कृति की असली ताकत है। वह चिंतन का पोषक है। किसी भाषा से नफ़रत करना असल में स्वस्थ चिंतन से और शालीन संस्कृति से द्वेष करने के बराबर है। भाषा के प्रति व्यक्त धृणा असल में धीरे,धीरे पनपकर व्यक्ति से हो जाती है। अत: हमें सावधान होना चाहिए। हिन्दी तोडनेवाली भाषा नहीं, जोडनेवाली भाषा है। राजभाषा के रूप में हिन्दी धीरे-धीरे अपना स्थान ग्रहण करती आ रही है। यह भी सही है कि आज हिन्दी अग्नि-परीक्षा के भीतर से गुजर रही है। मुझे पूरा विश्वास है कि इस कठिन परीक्षा से वह सही सलामत बाहर आएगी और राष्ट्र ने जिस आशा से उसे अपनी राष्ट्रभाषा का पद दिया है, उस आशा को वह पूर्ण करेगी।

मुझे पूरा विश्वास है कि इस अहाते में निर्माणाधीन राष्ट्रीय हिन्दी अनुसंधान ग्रंथालय भवन भविष्य में एक ऐसा जबरदस्त हिन्दी अध्ययन केन्द्र बनेगा, जहाँ भारत के ही नहीं- विदेशों से भी शोधकर्ता आकर हिन्दी की सेवा करेंगे। मैं दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा के नव स्नातकों को इस संदर्भ में हार्दिक बधाई देती हूँ। मेरा विश्वास है कि इस राष्ट्र-भाषा हिन्दी के माध्यम से देश के अन्यान्य प्रान्तों की संस्कृति, सभ्यता, रहन-सहन, जीवन-शैली एवं चिंतन-धारा से लोग अपने ज्ञान और अनुभव को और समृद्ध करेंगे। मैं कामना करती हूँ कि आप सब का भविष्य उज्ज्वल बने। पुन: संस्था के प्रति मैं अपना आभार व्यक्त करती हूँ।

जय हिन्द ! जय हिन्दी !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुजी के चरण कमलों पर

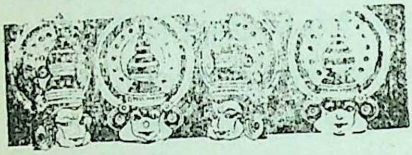

एस. राम अय्यर "साईराम"
पार्षद, नगर निगम, तिरुवनन्तपुरम

शत शत कोटि प्रणाम, गुरुजी !
शत शत कोटि प्रणाम ।।

आज भी हम अनुभव करते
आप हमारे बीच खडे हैं
आगे बढ़ने का मार्ग दिखाते
आगे हमें ले चल पड़ने हैं ।।

वैसे ही आन-बान में
अब भी आप विराजते हैं
आप के दो नेह-भरे नयन
हम में नव जीवन भर देते हैं ।।

आप की रस सरसाती बानी
अब भी कानों गुंजित है
जो नित नित नव चेतन देती
हम सजग रख देती है ।।

केरल जननी धन्य हुई ।
जो आप जैसे सपूत जनमी
जिसका जीवन व्रत बन बैठा
प्रचार करना हिन्दी का ।।

गांधीजी से आदेश पाकर
प्रचार क्षेत्र में कूद पड़े
भूखों रहकर कष्ट उठाकर
अपने व्रत में अटल रहे ।।

थोडे ही अरसे में आपने
सबका मन तो मोह लिया
आप से हिन्दी पढ़ने आये
लोग हज़ारों तादाद में ।।

जन समूह में विख्यात हुआ
विद्वान वासुदेवन पिल्लै का नाम
आन-मान-सम्मान आपका
बढ़ता रहा दिन प्रति दिन ।।

आपका प्रचार कार्य यहाँ तक
सफल हुआ तो सभावालों को
"प्रचार समाचार" में छापना पड़ा
"शाबाश त्रिवेन्द्रम" ।।

हिन्दी तो आपके लिये
प्राणों बढ़कर प्यारी थी
नस-नस में औ सांस-उसांस में
हिन्दी ही हिन्दी पलती थी ।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी प्रचार सभा ज्यों हिन्दुस्तानी
सभा बनी

हिन्दी पुस्तकें ज्यों हिन्दुस्तानी
किताबें बदलीं

श्रीराम को बादशाह राम और
सीता को बेगम सीता पढ़ाना पडा तो
आप से रहा न गया ।।

एक दिन शाम को बातों बात
ठहाका भरते कह उठे-
"बन गयी नया सभा
अपनी निजी सभा"
वह सचमुच भविष्यवाणी ही निकली
वह मुहूर्त सुमुहूर्त ठहरा ।।

दूसरे दिन जब सूरज निकला तो
एक नया बोर्ड दिखाई दिया
"तिरुवितांकूर हिन्दी प्रचार
समिति" के बदले
"तिरुवितांकूर हिन्दी प्रचार सभा"
पडी ।।

आप की जैसी दृढ़ता व दीर्घ-दर्शिता
कर्मकुशलता एवं निर्भीकता
इस जग में और कहाँ मिलने की ?
आप अनुपम हैं ; आप आप ही हैं ।

सभा की नींव डाला तो
पक्की नींव डाली ।
बाद के दिन अत्यंत कठिन थे
अध्यवसायपूर्ण विश्रामहीन थे ।।

बाधा, विघ्न, कठिनता सबको
निडर हो तृणवत् करके
आप कर्तव्य परायण रहे
अटल रहे, अटूट रहे ।।

विजयलक्ष्मी प्रसन्न हुई
आप विजयश्री लालित हुए ।।

सभा की मान्यता हुई
परीक्षार्थियों की संख्या बढ़ी
आपके पीछे प्रचारकों की
लंबी कतारें बनती गयीं ।।

अपनी अल्पायु में आपने
क्या क्या करतूतें कर डालीं ?
लाखों को शिक्षा दीक्षा दी
सभा की संस्थापना की
"राष्ट्रवाणी" का संपादन किया
नाटक अनेकों खेलाये
यहाँ तक कि
संसद की चुनाव लड़ी ।।

आपकी प्रतिभा तो बहुमुखी थी
आप नट थे, कुशल नागरिक थे
प्रचारक और पत्रकार थे
संस्थापक और ग्रन्थकार थे
सर्वोपरि सहृदय मानव थे ।।

आपने अपना सारा जीवन
हिन्दी के लिये कुरबान किया ।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुजी !
आपने जिस सभा का बीजावाप
किया
वह तो खूब अंकुरित, पल्लवित और
पुष्पित है ।।
केरल की स्थापना होते होते
वह भी केरल हिन्दी प्रचार सभा बनी
आज वह देश-भर की एक जानी-
मानी संस्था है ।।
उसकी अनेकों शाखायें हैं ।
अपनी निजी इमारतें हैं
छापाखाना है
मुख पत्रिका है
वर्ग ऊँचे अनेकों चलते हैं
परीक्षायें खूब चलती हैं
सभा समाज और समारोह सब
महीने भर लगते हैं
जिनमें मंत्रीगण तक भाग लेते हैं ।।

हमारा मान बढ़ गया है !
हमारा नाम बढ़ गया है !

स्थानीय और केन्द्रीय सरकारें
हमारी मदद करने में
होड़ा होड़ी करती हैं ।।
गुरुजी !
आपकी आशिश से
सभा रोज-बरोज पनपती रहती है
आपके दर्शाये रास्ते से
आप के आदर्श को अटल रखते
आपके शिष्यगण हम
आगे बढ़ते रहते हैं ! !
गुरुजी !
आपके स्वप्न का साक्षात्कार
हुआ है ।।
आप जो कहा करते थे—
"घर-घर में गली-गली में
हिन्दी का नारा गूँज उठे !"
वह आज अक्षरश: सफल हुआ है।
गुरुजी आपके चरण कमलों पर
शत शत कोटि प्रणाम
शत शत कोटि प्रणाम !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरल के दस श्रेष्ठ हिन्दी प्रचारक सम्मानित

केन्द्र मानव संसाधन विकास त्रालय की सयाहता से केरल हिन्दी चार सभा ने केरल के दस ऐसे ष्ठ हिन्दी प्रचारकों को सम्मानित पुरस्कृत किया जिन्होंने स्वतंत्रता ग्राम के अभिन्न अंग के रूप में न्दी प्रचार का जीवन व्रत अपना या था और आये दिन आर्थिक कट से ग्रस्त हैं। इन में प्रायः सभी त्तर वर्ष की आयु पार कर चुके हैं। में पंडित श्री. नारायण देव हैं न्होंने साइमन कमीशन के विरुद्ध होर में आयोजित जुलूस में भाग या था और जिन्होंने 'देव केरलीय' म से अनेक हिन्दी कवितायें लिखी इनमें श्री. पी. नारायण हैं न्होंने काशी विद्यापीठ में अध्ययन ते समय "भारत छोडो" आन्दो- में भाग लेने के अपराध में तीन ल लखनऊ के सेन्ट्रल जेल में काटा और जो आज भी मद्य निषेध न्दोलन में सक्रिय भाग लेने के राध में बार-बार जेल जाया करते हैं। इनमें श्रीमती एम. तंकम्मा मालिक हैं जिन्होंने वर्धा में रह कर गांधीजी की निगरानी में हिन्दी में प्रशिक्षण पाया था और जमनालाल बजाज के नेतृत्व में गाँव गाँव में घूम कर स्वतंत्रता आन्दोलन का सन्देश फैलाया था। इनमें अधिकांश ऐसे हैं जिन्होंने हिन्दी प्रचार के अलावा खादी प्रचार, हरिजनोद्धार, प्रौढ शिक्षा, शराब बंदी आदि अन्य रचनात्मक कार्यक्रमों में भी सक्रिय भाग लिया है। इनमें प्रत्येक को सन् 1988-89 के लिए प्रतिमास 500/- रुपये के हिसाब से 6000/- रुपये का पुरस्कार समर्पित किया गया।

जून 1989 में तिरुवनन्तपुरम में आयोजित पुरस्कार वितरण समाराह का आरंभ खादी धारी छात्र-छात्राओं के देश भक्तिगान से हुआ। स्वागत में केरल हिन्दी-प्रचार सभा के मंत्री एवं अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ, नई दिल्ली के कोषाध्यक्ष श्री. एम. के. वेलायुधन नायर ने इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिन देश-प्रेमियों ने जेल गये बिना हिन्दी प्रचार किया उन्हें वह पेंशन नहीं मिलता जो जेल गये स्वतंत्रता सेनानियों को दिया जाता है। इस नीति पर पुर्नविचार आवश्यक है।

बात पर खेद प्रकट किया कि यद्यपि खेल-खूद के प्रतियोगियों को भी राष्ट्र स्तरीय सम्मान दिया जाता है तो भी देश की अखण्डता केलिए बहुमूल्य योगदान देनेवाले हिन्दी प्रचारकों का उचित सम्मान नहीं होता। गत फरवरी में प्रथम बार प्रधानमंत्रीजी ने कतिपय हिन्दी प्रचारकों को दस दस हज़ार रुपये का पुरस्कार देकर सम्मानित किया। स्वतंत्रता संग्राम के समय गांधी जी का आग्रह था कि हिन्दी प्रचारक जेल गये बिना हिन्दी के प्रचार में लगे रहें। यह आग्रह मानकर जिन देश-प्रेमियों ने जेल गये बिना हिन्दी प्रचार किया उन्हें वह पेंशन नहीं मिलता जो जेल गये स्वतंत्रता सेनानियों को दिया जाता है। इस नीति पर पुर्नविचार आवश्यक है।

समारोह का उद्घाटन करते हुए केन्द्र संसदीय कार्य राज्य मंत्री श्री. एम. एम. जेकब ने कहा कि दे[श] को एक बनाये रखने में राष्ट्रभा[षा] का और राष्ट्रभाषा प्रचारकों [का] बडा महत्व है। उन्होंने इस [आक्षेप] को निर्मूल बताया कि हिन्दी प्रा[दे]शिक भाषाओं और अंग्रेज़ी के विर[ुद्ध] है। वास्तव में हिन्दी के विकास [से] प्रादेशिक भाषाओं के विकास [में] गति आयेगी। अंग्रेजी और हि[न्दी] एक दूसरे के खिलाफ नहीं। दो[नों] परस्पर पूरक हैं। भारत की प्रग[ति] केलिए अंग्रेजी और हिन्दी ज़[रूरी] हैं। हमें किसी भाषा का विरोध [नहीं] करना है। भाषा के नाम पर [हम] भारत की अखण्डता को आंच न लगने दें।

प्रचारकों को खादी के पा[...] पहनाकर पुरस्कार समर्पित [करते] हुए केरल के पूर्व मुख्य मंत्री [व] केरल विधान सभा के विपक्षी दल [के] नेता श्री. के. करुणाकरन ने इस [बात] पर खेद प्रकट किया कि स्वतं[त्रता]

अंग्रेज़ी और हिन्दी एक दूसरे [के] खिलाफ नहीं। दोनों पर[स्पर] पूरक हैं। भारत की प्रगति [के] लिए अंग्रेज़ी और हिन्दी ज़[रूरी] हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरल में हिन्दी के पठन-पाठन की पर्याप्त सुविधा रहे ताकि हिन्दी हिन्दी में वांछित योग्यता प्राप्त करके केरल की युवा पीढी हर क्षेत्र में राष्ट्र स्तर पर आगे आ सकें।

आन्दोलन के प्रतिभागी हिन्दी और खादी के कार्यकर्ताओं को स्वतंत्रता सेनानियों का पेन्शन नहीं दिया जाता। उन्होंने आश्वासन दिया कि इन दोनों वर्गों के कार्यकर्ताओं को भी स्थायी आर्थिक आश्वासन दिलाने की दिशा में वे भर-सक प्रयत्न करेंगे। उन्होंने आग्रह किया कि केरल में हिन्दी पठन-पाठन की पर्याप्त सुविधा रहे ताकि हिन्दी में वांछित योग्यता प्राप्त करके केरल की युवा पीढी हर क्षेत्र में राष्ट्र स्तर पर आगे आ सकें।

अध्यक्षीय भाषण में केरल सरकार के वन विभाग मंत्री प्रो० एन एम. जोसफ ने हर प्रकार की भाषाई कट्टरता की निन्दा की। न प्रान्तीय भाषा के अतिमोह से प्रेरित होकर हिन्दी का विरोध किया जाये और न ही हिन्दी वाले हिन्दीतर भाषा-भाषियों के प्रति अनुदारता बरते। हिन्दी का प्रचार अधिकार के खड्ग से नहीं, प्रेम से किया जाये। हिन्दी भाषी राज्यों में भी त्रिभाषा सूत्र का प्रभावी कार्यान्वयन किया जाये।

अभिनन्दन भाषण में केरल विधान सभा के वरिष्ठ सदस्य श्री के. वी. सुरेन्द्रनाथ ने रूस का उदाहरण देते हुए कहा कि अनेक विदेश ऐसे हैं जहाँ त्रिभाषा सूत्र प्रभावी ढंग से कार्यान्वित होता रहा है। रूस में बच्चों को अपनी मातृभाषा के अलावा आम भाषा रूसी और अंग्रेजी फ्रेंच, जर्मन जैसी विदेशी भाषाओं में कोई एक भाषा सीखनी है।

पुरस्कृत प्रचारकों का अभिनन्दन करते हुए केरल के प्रमुख गांधीवादी कार्यकर्ता एवं शराब बंदी आन्दोलन के प्रमुख नेता प्रो० एम. पी मन्मथन ने स्वतंत्रता के पूर्व के हिन्दी प्रचार अभियान की तुलना स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी प्रचार आन्दोलन के साथ करते हुए बताया कि स्वतंत्रता के पूर्व के हिन्दी प्रचारकों की जो त्याग निष्ठा थी, आदर्श प्रेम था, वह

हिन्दी को देश की एकता की सबसे सशक्ति कडी के रूप में अभिमानपूर्वक और वावेशपूर्वक अपनायें।

परवर्ती हिन्दी कार्यकर्ताओं में नहीं रहा। उन्होंने युवकों से आग्रह किया कि वे हिन्दी को देश की एकता की सबसे सशक्त कडी के रूप में अभिमानपूर्वक और आवेशपूर्वक अपनायें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तर में दक्षिणी भाषाध्ययन को प्रोत्साहित करें

डा० बलराम जाखड़

लोकसभा के अध्यक्ष डा० बलराम जाखड़ ने केरल हिन्दी प्रचार सभा द्वारा 29-6-1989 को तिरुवनन्तपुरम में आयोजित पुरस्कार वितरणोत्सव का उद्‌घाटन करते हुए सुझाया कि उत्तर भारत में मलयालम, तमिल जैसीं दक्षिण की भाषाओं के अध्ययन को प्रोत्साहित

उत्तर भारत में मलयालम, तमिल जैसी दक्षिण की भाषाओं के अध्ययन को प्रोत्साहित किया जाये और इसकेलिए पुरस्कार आदि का भी प्रबंध किया जाये।

किया जाये और इसकेलिए पुरस्का[र] आदि का भी प्रबंध किया जाये। आपने कहा कि भारत की स[भी] भाषायें देश की संपत्ति हैं। जि[स] प्रकार विविध वर्ण के पुष्पों [से] गुलदस्ता की खबसूरती बढ़ती [है] उसी प्रकार इन विविध भाषाओं [से] हमारे देश का महत्व बढ़ता है। कोई भी भाषा छोटी या बडी नहीं। जितनी भाषायें हम सीखते हैं उतन[ा] ही हमारा मानसिक विकास होता है। हर एक जन समूह का निकट परिचय उसकी भाषा के अध्ययन से पाया जा सकता है। भारत की विविध भाषाओं को एक माला में पिरोने का काम हिन्दी करती है। देश को जोडने का कार्य हिन्दी करती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरल में एक हिन्दी विश्वविद्यालय आरंभ करने के लिए कदम उठाना है।

है। अतः हिन्दी प्रचार देश-प्रेम का कार्य है। देश भक्ति का कार्य है।

सम्मेलन की अध्यक्षता करते हु केरल के विधान सभाध्यक्ष श्री. वर्कला राधाकृष्णन ने कहा कि केरल हमेशा हिन्दी को अपनाता रहा है। जब दक्षिण के कुछ प्रान्तों में हिन्दी विरोध भडक उठा था तब भी केरल में हिन्दी अपनायी जा रही थी। केरल में हिन्दी के प्रति श्रद्धा बढ़ती जा रही है। केरल में एक हिन्दी विश्वविद्यालय आरंभ करने के लिए कदम उठाना है। आशीर्वाद भाषण में अखिल भारतीय कांग्रस (ई) के पूर्व सचिव एवं केरल प्रदेश कांग्रस समिति के अध्यक्ष श्री. ए. के. आन्टणी ने इस बात पर चिन्ता प्रकट की कि यद्यपि हर राष्ट्र में राष्ट्रभाषा का महत्वपूर्ण स्थान है तो भी भारत की अधिकांश जनता आज भी अपनी राष्ट्रभाषा हिन्दी पढ़-लिख नही सकती। यदि हिन्दी को थोपने की कट्टर मनोवृत्ति छोड़ दें तो अधिक लोग हिन्दी सीखेंगे। हिन्दी संबन्धी मनोवृत्ति में काफी परिवर्तन आया है। पहले अंग्रेजी पढ़नेवालों से हिन्दी पढ़नेवाले बदतर माने जाते थे। आज यह मनोवृत्ति नहीं रही। राष्ट्रभाषा का अध्ययन देश भक्ति और देश प्रेम का अंग है।

मलयालम के विख्यात कवि और पत्रकार डा० एन. वी. कृष्ण वारियर ने केरल के हिन्दी प्रचार का इतिहास बताते हुए कहा कि स्वतंत्रता संग्राम के पहले ही हिन्दी केरल में प्रवेश कर चुकी थी। मैसूर के टिपू ने जब केरल पर आक्रमण किया था और कोचिन के राजा से सुलह की थी तो सुलह की एक शर्त यह भी थी कि कोचिन में उर्दू भाषा का प्रचार किया जाये। तिरुवितांकूर रियासत के महाराजा स्वातितिरुनाल ने हिन्दी में भी उत्तम गीत रचे। स्तंत्रता संग्राम के समय राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी का व्यापक प्रचार करने का जो आह्वान गांधीजी ने किया उसको केरल ने प्रेमपूर्वक स्वीकार किया। केरल के हिन्दी उपाधिधारियों को पत्रकारिता, सिनेमा, रेडियो और

केरल के हिन्दी उपाधिधारियों को पत्रकारिता, सिनेमा, रेडियो और टेलिविज़न में अपने हिन्दी ज्ञान का उपयोग करना है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टेलिविजन में अपने हिन्दी ज्ञान का उपयोग करना है।

केरल सरकार के सामान्य शिक्षा विभाग के निदेशक श्री.के.वी.मदनन ने कहा कि केरल के स्कूली पाठ्यक्रम में मलयालम को प्रथम, अंग्रेजी को द्वितीय और हिन्दी को तृतीय स्थान दिया गया है। हिन्दी के प्रचार में केरल हिन्दी प्रचार सभा जो काय कर रही है वह श्लाघनीय है।

केरल हिन्दी प्रचार सभा द्वारा वर्ष 1988-89 में संचालित "हिन्दी

हिन्दी भाषी प्रान्तों में मलयालम सिखाने केलिए और निरक्षरता निवारण केलिए केरल के हिन्दी उपाधिधारियों का उपयोग किय जाये।

प्रथम से साहित्याचार्य" तक की परीक्षाओं में प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त छात्रों को पुरस्कार दिये गये। सभा के हिन्दी स्नातकोत्तर केन्द्र में पढ कर केरल विश्वविद्यालय की एम. ए. (हिन्दी) उत्तीर्ण करनवालों में सर्वाधिक अंक प्राप्त विद्यार्थिनी को भी पुरस्कृत किया गया। दस हिन्दी विद्यालयों के हिन्दी ग्रन्थालयों में प्रत्येक को 2,500/- रुपये की पुस्तकें भेंट की गयीं।

केन्द्र मानव संसाधन विकास मंत्रालय की सहायता से आयोजित इस समारोह में नौ हिन्दी प्रचारक पुरस्कृत हुए। सर्वोत्तम प्रचारक श्री. के. केशवन नायर को सभा के पूर्व अध्यक्ष एवं तपोनिष्ठ हिन्दी सेवी स्व० एस. वी. कुञ्ञिकल्लाया के नाम पर स्वर्ण पदक दिया गया। तीन सर्वश्रेष्ठ प्रचारकों को नकद पुरस्कार मिले। पुरस्कार वितरण लोकसभाध्यक्ष डा० जाखड़ के कर-कमलों से हुआ।

केरल हिन्दी प्रचार सभा के मंत्री एवं अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ के कोषाध्यक्ष श्री. एम. के. वेलायुधन नायर ने स्वागत भाषण में आशा व्यक्त की कि हिन्दी भाषी प्रान्तों में मलयालम सिखने केलिए और निरक्षरता निवारण केलिए केरल के हिन्दी उपाधिधारियों का उपयोग किया जाये।

खादीधारी छात्र-छात्राओं ने देश-भक्ति गीत गाया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वागत भाषण

एस. के. वेलायुधन नायर
मंत्री, केरल हिन्दी प्रचार सभा

लोकसभा के माननीय अध्यक्ष परम श्रद्धेय डा० बलराम जाखडजी, केरल विधान सभा के माननीय अध्यक्ष आदरणीय श्री. वर्कला राधाकृष्णनजी, केरल के पूर्व मुख्यमंत्री एवं प्रमुख राजीनोतिक कार्यकर्ता आदरणीय श्री. ए. के. आन्टणीजी, विख्यात बहुभाषाविद, कवि, लेखक एवं पत्रकार आदरणीय डा० एन. वी. कृष्ण वारियरजी, केरल सरकार के सामान्य शिक्षा विभाग के निदेशक आदरणीय श्री. के. वी. मदननजी, पुरस्कृत हो रहे प्रचारक बंधुओ और छात्रो, भाइयो, बहनो,

केरल हिन्दी प्रचार सभा के इतिहास में आज एक सुदिन है। देश की अनेक विशिष्ट विभूतियाँ आज हमारे प्रांगण में विराजमान हैं। उन के आगमन से हमारी संस्था का गौरव अधिक बढ गया है। हम धन्य हो गये हैं। उन का विनम्र स्वागत करने का जो सुअवसर मुझे मिल रहा है उसे मैं अपना सौभाग्य मानता हूँ। केरल हिन्दी प्रचार सभा के इस पुरस्कार वितरण समारोह में आप सब का स्वागत करते हुए मुझे अपार हर्ष और गौरव का अनुभव हो रहा है।

केरल हिन्दी प्रचार सभा की स्थापना एक विशेष उद्देश्य को लेकर हुई है। स्वतंत्रता संग्राम के समय जब राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने विविध धर्मावलंबी और भाषाभाषी भारतीय जनता को एक सूत्र में पिरोने केलिए राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी के व्यापक प्रचार का अभियान आरंभ करने का आह्वान किया तब देश के विविध भागों में, विशेष कर हिन्दीतर प्रान्तों में कतिपय स्वैच्छिक हिन्दी प्रचार संस्थायें स्थापित हुईं। इन में एक है केरल हिन्दी प्रचार सभा जो गत आधी शताब्दी से केरल भर में हिन्दी का प्रचार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करती आ रही है। तपोनिष्ठ देशसेवक स्व० के. वासुदेवन पिल्लैजी ने सन् 1934 में इस संस्था की स्थापना की थी।

राष्ट्रभाषा को राष्ट्र की एकता का प्रबल माध्यम मान कर हम लोग कार्य कर रहे हैं। हम मानते हैं कि देश में आज धर्म, भाषा, प्रान्तीयता, आदि संकुचित भेदभावों को लेकर अनैक्य के और हिंसाकाण्ड के जो षडयंत्र रचे जा रहे हैं उन से जूझने का एकमात्र उपाय हिन्दी के माध्यम में राष्ट्रीय चेतना को जाग्रत करना है सत्य और अहिंसा पर आधारित नैतिकता की श्रेष्ठ भावनाओं को विकसित करना है और राष्ट्रीय चरित्र को तदनुकूल पुनर्गठित करना है। हिन्दी के द्वारा नयी पीढी में भावात्मक एकता को सुदृढ़ करना और देश के नवनिर्माण केलिए आवश्यक मान्यताओं और दृष्टिकोणों को विकसित करना हमारा लक्ष्य है।

इस लक्ष्य की सिद्धि केलिए सभा प्रसार, प्रशिक्षण, प्रकाशन, परीक्षा संचालन एवं पुरस्कार वितरण की विविध योजनायें कार्यान्वित करती है। सामाजिक उपयोगिताओं को ध्यान में रखकर नये नये पाठ्यक्रमों का आयोजन भी किया जाता है।

आज यह संस्था एक खुला विश्वविद्यालय सा बन गया है। इस की परीक्षाओं में प्रतिवर्ष करीब दो लाख विद्यार्थी बैठते हैं। हिन्दी प्रथम, हिन्दी दूसरी और राष्ट्रभाषा (हिन्दी) परीक्षायें प्रारंभिक हैं जिन का मुख्य उद्देश्य हिन्दी भाषा का अधिगम कराना है। हिन्दी प्रवेश, हिन्दी भूषण और साहित्याचार्य उच्च परीक्षायें हैं जिन का उद्देश्य हिन्दी साहित्य का भी परिचय कराना है। इन उच्च परीक्षाओं के पाठ्यक्रम केन्द्र मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा गठित अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ द्वारा निर्मित आदर्श पाठ्यक्रमों पर आधारित हैं। इन उच्च परीक्षाओं को केन्द्र सरकार ने क्रमशः मेट्रिक, इन्टर और बी. ए. के समकक्ष स्थायी मान्यता प्रदान की है। केरल सरकार ने सभा की हिन्दी भूषण परीक्षा को अप्पर प्राइमरी स्कूलों में और साहित्याचार्य परीक्षा को हाई स्कूलों में हिन्दी अध्यापक की नियुक्ति के लिए पर्याप्त योग्यता मान ली है। इन परीक्षाओं में बैठने वाले विद्यार्थियों की संख्या प्रतिवर्ष बढती जा रही है। पर खेद की बात है कि इन उच्च परीक्षाओं में उत्तीर्ण युवक युवतियों का पूर्ण उपयोग समाज कर नहीं पाता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दीभाषी क्षेत्रों में त्रिभाषा सूत्र का यदि सही अर्थ में कार्यान्वयन होता तो वहाँ के स्कूलों में हिन्दी और अंग्रेजी के अतिरिक्त दक्षिण की कोई भाषा भी सिखायी जाती। अनेक स्कूलों में मलयालम भी सिखायी जाती। ऐसी अवस्था में केरल के उपाधिधारी युवक युवतियों को वहाँ मलयालम शिक्षक के पद मिलते। दुर्भाग्यवश अब तक यह स्थिति नहीं आ पायी है। हमारी आशा है कि निकट भविष्य में ही स्थिति बदलेगी और हिन्दी भाषी राज्य भी भाषा संबंधी अपनी कट्टरता छोडकर त्रिभाषा सूत्र के अंतर्गत दक्षिण की भाषायें भी सिखाने लगेंगे। इस शुभ प्रतीक्षा में हम ऐसे शिक्षकों को अभी से तैयार कर रहे हैं जो हिन्दी माध्यम में मलयालम सिखा सकेंगे।

निरक्षरता उन्मूलन करने की बात की जा रही है। केरल इस क्षेत्र में सदा आगे रहा है। हाल ही में केरल का कोट्टयम नगर देश का प्रथम साक्षर नगर घोषित हुआ। वहाँ आज शत प्रतिशत जनता साक्षर है। एरणाकुलम जिला इसी वर्ष संपूर्ण साक्षरता का लक्ष्य प्राप्त करनेवाला है। केरल के माननीय शिक्षा मंत्री श्री. के चन्द्रशेखरन ने घोषणा की है कि दो वर्षों में संपूर्ण केरल संपूर्ण रूप से साक्षर बनाया जायेगा। जैसे केरल विधान सभा के माननीय अध्यक्ष आदरणीय श्री. वर्कला वी. राधाकृष्णनजी कहा करते हैं, हिन्दी भाषी राज्यों की निरक्षरता को दूर करने केलिए भी हिन्दी प्रचारकों को प्रयत्न करना है। केरल के हिन्दी उपाधिधारी इस काम को सफलतापूर्वक करने में समर्थ हैं। केन्द्र सरकार और हिन्दी भाषी राज्य सरकारों से हमारा अनुरोध है कि वे केरल के हिन्दी उपाधिधारियों का भी उपयोग हिन्दी भाषी क्षेत्रों के निरक्षरता उन्मूलन अभियान में करें। इस से देश की निरक्षरता दूर होगी और केरल के हिन्दी उपाधिधारियों के ज्ञान का सदुपयोग भी होगा।

आज यहाँ उन विद्यार्थियों को पुरस्कार दिये जा रहे हैं जिन्होंने सभा द्वारा वर्ष 1988-'89 में संचालित हिन्दी प्रथम से साहित्याचार्य तक की परीक्षाओं में प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त किया है। उन हिन्दी प्रचारकों को पुरस्कृत किया जा रहा है जिन्होंने उक्त परीक्षाओं में सर्वाधिक विद्यार्थियों को सम्मिलित कर के अपने उत्साह का परिचय दिया। इन में प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त सर्वश्रेष्ठ प्रचारकों को नकद पुरस्कार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी दिये जा रहे हैं। सर्वोत्तम प्रचारक को जिन्होंने हिन्दी शिक्षण के विविध आदर्शों को निभाया है, सभा के पूर्व अध्यक्ष एवं तपोनिष्ठ कार्यकर्ता स्व० एस. वी. कुक्किल्लाया की पवित्र स्मृति में स्वर्ण पदक प्रदान किया जायेगा। सभा के हिन्दी स्नातकोत्तर केन्द्र में पढ़कर जिन विद्यार्थियों ने सन् 1988 में केरल विश्वविद्यालय की हिन्दी एम. ए. परीक्षा उत्तीर्ण की उनमें सर्वप्रथम निकली छात्रा को भी पुरस्कार दिया जायेगा। साथ ही चुने हुए दस हिन्दी विद्यालयों में प्रत्येक को अपने ग्रंथालयों के उपयोगार्थ 2500 रुपये के हिन्दी ग्रंथ प्रदान किये जायेंगे।

यह हमारा परम सौभाग्य है कि यह महान कार्य संपन्न करने केलिए लोक सभा के माननीय अध्यक्ष परमश्रद्धेय डा० बलराम जाखडजी हमारे बीच पधारे हैं। आप हमारे देश की विशिष्ट विभूति हैं और दिल और दिमाग के धनी हैं। आप संस्कृत, हिन्दी, उर्दू, पंजाबी और अंग्रेज़ी के प्रकांड विद्वान हैं। आप की विद्वता से प्रभावित होकर गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार ने विद्यामार्तण्ड की और हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिस्सार ने डाक्टर ऑफ साइन्स की मानद उपाधियाँ दे कर आपको सम्मानित किया है। देश के अनेक उन्नत पद आपने स्तुत्यर्ह रूप में संभाले हैं। 1972 से पाँच वर्ष तक आप पंजाब सरकार के उपमंत्री रहे फिर दो वर्ष तक आप पंजाब विधान मंडल में विपक्ष के नेता रहे। जनवरी 1980 से आप लोकसभा के अध्यक्ष हैं। हंगरी, दमिश्क, ब्रिटेन, सीरिया, जर्मन संधीय गण राज्य, रूमानिया, मिस्र, अरब गणतंत्र, कोरिया गण राज्य, चेकोस्लोवाकिया, नीदरलैंड, सोवियत रूस, जाम्बिया, कोलम्बिया जैसे अनेक विदेशों में आप ने शिष्ट मंडलों का नेतृत्व किया है। आरंभ से ही आप सामाजिक कार्यों में, विशेष कर ग्रामीण विकास में, सक्रिय भाग लेते रहे हैं। दलित पीडित जनता के उत्थान में, निरक्षता उन्मूलन में और अस्पृश्यता निवारण में आप ने बहुमूल्य योग दिया है। कृषकों के उन्नयन केलिए आप सदा क्रियाशील रहे हैं और 1979 से भारत कृषक समाज के चेयरमैन हैं। राष्ट्रभाषा हिन्दी के आप बडे हितचिन्तक हैं। तृतीय विश्व हिन्दी सम्मेलन में आप ने हिन्दी के विकास केलिए कथनी और करनी के अंतर को त्वरित गति से पाटने की अपील की थी और कहा था कि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर हिन्दी की प्रगति से ही वैज्ञानिक एवं तकनीकी क्षेत्रों में देश का विकास संभव होगा। आप अपने अतिव्यस्त कार्यक्रम से समय निकाल कर हमें अनुगृहीत करने यहाँ पधारे हैं। दो तीन वर्षों से आप हमारे बीच पधारने का आश्वासन देते रहे हैं। आज ही वह सुअवसर हमें प्राप्त हुआ। आप ने इस सम्मेलन का उद्घाटन और विद्यार्थियों तथा श्रेष्ठ हिन्दी प्रचारकों का पुरस्कार वितरण करने की कृपापूर्वक स्वीकृति दी है। देश की वर्तमान स्थिति में जब अखण्डता मजबूत रखने में देश को कई चुनौतियों का सामना करना पड रहा है, आप का उद्बोधन देश भर के हिन्दी कार्यकर्ताओं केलिए मार्गदर्शक होगा। परम श्रद्धेय डा० जाखडजी, हम आप का सादर स्वागत करते हैं।

इस सम्मेलन की अध्यक्षता कर रहे हैं केरल विधान सभा के माननीय अध्यक्ष श्री वर्कला वी. राधाकृष्णन। आप अनुभवी राजनीतिज्ञ हैं और देश की हर समस्या के प्रति अत्यन्त जागरूक हैं। आप बार-बार कहा करते हैं कि भारत की हर प्रमुख समस्या का समाधान तभी हो सकता है जब देश की बढती हुई निरक्षरता का उन्मूलन हो सके। इस बात पर आप बहुत चिंतित हैं कि हिन्दी भाषी क्षेत्रों की निरक्षरता का प्रतिशत इतर प्रान्तों की निरक्षरता के प्रतिशत से कहीं अधिक है। आपकी मान्यता है कि हिन्दी भाषा और साहित्य के समुचित विकास के लिये भी हिन्दी भाषी क्षेत्रों की साक्षरता में वृद्धि करना अत्यन्त आवश्यक है। आप हिन्दी और इतर भारतीय भाषाओं के पक्षधर हैं और केरल हिन्दी प्रचार सभा के निकट बन्धु हैं। हिन्दी का समर्थन करते हुये आप जो भाषण दिया करते हैं उनका गहरा प्रभाव केरलीय जनहृदय पर पडता है। आप का उद्बोधन हमारेलिए अत्यंत प्रेरणाप्रद होगा। आदरणीय श्री वर्कला राधाकृष्णनजी, हम आप का सादर स्वागत करते हैं।

आशीर्वाद भाषण देने केलिए देश के प्रमुख राजनीतिक कार्यकर्ता एवं केरल के पूर्व मुख्य मंत्री श्री. ए. के. आन्टणीजी यहाँ पधारे हैं। विद्यार्थी जीवन से ही आप सामाजिक और राजनीतिक कार्य में काफी रुचि लेते रहे हैं। संप्रति आप केरल प्रदेश कांग्रेस समिति के अध्यक्ष हैं। केरल के मुख्य मंत्री रहते समय आप ने केरल हिन्दी प्रचार सभा के दीक्षान्त समारोह में हिन्दी का समर्थन करते हुए जो अध्यक्षीय भाषण दिया था वह हिन्दी की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोकप्रियता बढाने में बहुत सहायक हुआ। आप ने कहा था कि भारतीय जनता को एक बनाये रखने वाला एक प्रबल सूत्र हिन्दी है और इस कारण हिन्दी को सभी क्षेत्रों में विकास पाने का अवसर मिलता है। अखिल भारतीय कांग्रेस समिति के महासचिव रहकर आप ने हिन्दी की बढती हुई उपयोगिता का प्रत्यक्ष परिचय प्राप्त किया है। आप भी केरल हिन्दी प्रचार सभा के परमहितैषी हैं और समय समय पर हमें आवश्यक मार्गदर्शन देते रहे हैं। आदरणीय श्री. ए. के आन्टणीजी, हम आप का हार्दिक स्वागत करते हैं।

मलयालम के विख्यात कवि एवं पत्रकार डा० एन. वी. कृष्णवारियरजी आशीर्वाद भाषण देने केलिए हमारे बीच विराजमान हैं। आप संस्कृत, मलयालम, हिन्दी, तमिल, अंग्रेज़ी, जर्मन आदि अनेक भाषाओं के प्रकांड पंडित हैं। आधुनिक मलयालम कवियों के आप आचार्य माने जाते हैं। मलयालम कविता को आप ने नया रूप और भाव दिया है। आप ने उत्तम यात्रा संस्मरण, निबन्ध और नाटक भी लिखे हैं। उन्नीस सौ बयालीस में प्रधानाध्यापक की नौकरी छोड कर आपने स्वतन्त्रता संग्राम में भाग लिया और गुप्त पत्रिका 'स्वतन्त्र भारत' का संपादन किया। तब से आप पत्रकारिता के क्षेत्र में बहुमूल्य योगदान देते रहे हैं। मलयालम साप्ताहिक मातृभूमि और हिन्दी पाक्षिक युगप्रभात का आपने वर्षों तक कुशल संपादन किया। संप्रति मातृभूमि दैनिक के आप मुख्य संपादक हैं। आप को सोवियत नेहरु पुरस्कार, साहित्य अकादमी पुरस्कार जैसे अनेक पुरस्कार मिले हैं। आप को कालिकट विश्वविद्यालय ने डी. लिट. की मानद उपाधि और केरल हिन्दी प्रचार सभा ने अपनी मानद उपाधि 'साहित्य कलानिधि' प्रदानकी है। आपने योरोप, अमेरिका, रूस और पूर्वी देशों में यात्रा की है। हिन्दी और मलयालम के पारस्परिक सौहृद को सुदृढ करने में आप का योगदान महत्वपूर्ण है। आदरणीय डा० वारियरजी, हम आप का सविनय स्वागत करते हैं।

केरल सरकार के सामान्य शिक्षा विभाग के निदेशक श्री. के. वी. मदननजी आशीर्वाद भाषण देने केलिए यहां उपस्थित हैं। श्री. मदननजी प्रभावी वक्ता हैं एवं अच्छे प्रशासक हैं। शिक्षा विभाग के सफ़ल संचालन में आप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सक्रिय हैं। राज्य प्रौढ शिक्षा अधिकारी रह कर आप ने निरक्षरता निवारण एवं प्रौढ शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय सेवा की है। स्कूली शिक्षा में हिन्दी शिक्षण को प्रभावी बनाने केलिये आप के नेतृत्व में कई योजनायें कार्यान्वित हो रही हैं। केरल हिन्दी प्रचार सभा को आप का पूरा सहयोग प्राप्त हो रहा है। आदरणीय श्री मदनन जी, हम आप का सस्नेह स्वागत करते हैं।

आज जो प्रचारक बंधु और विद्यार्थी यहाँ पुरस्कृत हो रहे हैं उन सब का मैं हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ। सम्मेलन में उपस्थित सभी सज्जनों का मैं सहर्ष स्वागत करता हूँ।

जय हिन्द ॥ जय हिन्दी ॥

राज्यपाल का पद और 'पद्मभूषण'

केलप्पन विनोबाजी के भूदान-यज्ञ के संबन्ध में मांगलूर गये थे। वहाँ एक केन्द्रमंत्री ने केलप्पन को प्रधानमंत्री नेहरु का एक संदेश पहुँचाया। किसी राज्य में 'राज्यपाल' नियुक्त करने की बात थी। केलप्पन ने विनय के साथ कहा : मैं अब तो राज्यपाल के पद से भी ऊँचे पद पर हूँ। पंडितजी कभी नहीं चाहेंगे कि मैं नीचे उतरूँ। और एक बार केरल सरकार ने 'पद्मभूषण' से सम्मानित करने की केन्द्र सरकार की इच्छा सुनायी। केलप्पन का जवाब था "बहुत दिन हुए, मैंने अपने नाम के पीछे की पूंछ काट दी। (पहले केलप्पन नायर थे) अब आगे एक नयी पूंछ लगवा कर चलने की बेशर्मी मुझ में नहीं।

(केरल गांधी केलप्पन—कुछ जीवन प्रसंग—वी. एस. गोविन्दन नंपीशन
केरल हिन्दी साहित्य अकादमी सोवनीर से साभार)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माप्पिला लहला और केलाम वयल

सन् 1921 के 'एरनाट् कलापम् (माप्पिला लहला) के दिनों की घटना है। आक्रमण-कारी मुसलमान दो तीन प्रदेशों के प्रार्थनालयों तथा सरकारी दफ्तरों को जलाते, खजाना लूटते तथा निरपराध लोगों को मारते पोन्नानी की तरफ बढे। सूचना मिली तो पुलीस और सरकारी अफ़सर डर गये। उन्होंने केलप्पन की शरण ली। कहा, आप के सिवा और कोई पोन्नानी की रक्षा नहीं कर सकता। केलप्पन साथी के. पी. बालकृष्ण मेनोन तथा राम मेनोन के साथ चल पडे। आक्रमणकारी चम्रवट्टम पु.षा' तक पहुँच चुके थे। दोनों साथी रास्ता रोके खडे हुए। केलप्पन बालकृष्ण मेनोन के कंधों पर बैठे दोनों हाथ उठाते ज़ोर से चिल्लाने लगे: -- भाइयो, सुनो। पोन्नानी आप का है। पोन्नानीवाले आप के भाई हैं। वहां के मसजिद आप के हैं। उनका नाश आप का नाश है। आप अपना नाश न करें। पहले कोई असर नहीं पडा। तब केलप्पन नीचे उत्तरे। तीनों रास्ता रोके जमीन पर लेट गये। कहा, अब आप हमारी लाशों को रौंदते आगे चलें। अन्यथा नहीं। यह आवाज आक्रमणकारियों के कानों में गूँजने लगी। फिर दिलों में भी। रुक गये। इतने में एक 'हाजी' आ पहुँचे। उन्होंने उन्हें भोजन का निमंत्रण दिया। दिनों के भूखे तथा थके सुनते ही उस ओर चले। खाना खाया। थकावट दूर की। फिर अपनी अपनी राह चले। पोन्नानी बच गया।

सन् 1930 में दंडी यात्रा का समय। उस समय देश के कुछ अन्य भागों पर भी नमक-कानून-भंग करने की अनुमति दी गयी। लेकिन केरल में नहीं। कहा कि कई कारणों से स्थिति नाजुक है। अतः केरलीय चाहें तो वेदारण्यम में जाकर कानून भंग करें। केलप्पन ने कहा, नहीं, मैं केरल में ही कानून भंग करूँगा पय्यनूर में नमक सत्याग्रह होगा। जो चाहें आवें, करें। प्रचार होने लगा। स्थिति बदलने लगी। अप्रैल की 13 वीं तारीख को कोष़िक्कोड से जत्था निकला। 19 वीं तारीख को पय्यनूर पहुँचा। 20 को पय्यनूर के 'केलाम वयल' में सत्याग्रह चला। दूसरे दिन कुंजिमंगलम में। फिर 'रामंतलि समुद्र तट पर भी बडे पैमाने पर सत्याग्रह चला। लाठियाँ चलीं। जेल भरे। फिर भी सत्याग्रह जारी रहा और अंत में सफ़ल भी हुआ। इतना कि पय्यनूर 'केरल बर्दोली' कहलाया।

(केरल गांधी केलप्पन --कुछ जीवन प्रसंग --वी. एस. गोविन्दन नंपीशन
केरलीय साहित्य अकादमी से साभार)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी अध्यापक प्रशिक्षण क्या, क्यों, कैसे?

डा० अमर बहादुर सिंह

[डा० सिंह ने आरंभ में विदेशों में हिन्दी अध्यापन किया था। अमेरिका में कलिफोर्निया विश्वविद्यालय में और टेक्सास विश्वविद्यालय में हिन्दी और भाषाविज्ञान के प्रोफेसर रह कर भारत लौटे तो कई दिनों तक डेकान कॉलेज, पुणे में, भाषाविज्ञान विभाग में कार्य किया। भाषा वैज्ञानिकों की संस्था लिंग्विस्टिक सोसाइटी ऑफ इन्डिया के सचिव रहे। उस संस्था की इन्डियन लिंग्विस्टिक्स नाम की पत्रिका का संपादन भी किया। आज कल वे केन्द्रीय हिंदी संस्थान के निदेशक के पद पर सुशोभित हैं। प्रस्तुत है 9-6-1989 को केरल हिन्दी प्रचार सभा के हिन्दी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, तिरुवनन्तपुरम में डा० सिंह द्वारा दिये गये अभिभाषण का सारांश]

केन्द्रीय हिन्दी संस्थान एक पौधा है जिसे अहिन्दी भाषियों ने हिन्दी क्षेत्र में ले जा कर लगाया था। दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा के डा० मोटूरी सत्यनारायण जी ने इस शताब्दी के पाँचवें दशक में संस्थान का आरंभ किया था। इसका आरंभ यह सोच कर किया गया था कि अगर दक्षिण के लोगों को हिन्दी प्रदेश में रख कर, हिन्दी के शिक्षण और प्रशिक्षण का कार्य कराया जाये तो उन की हिन्दी अच्छी होगी, उन्हें शिक्षण और प्रशिक्षण ज्यादा अच्छा मिलेगा और वे हिन्दी के प्रचार और प्रसार में ज्यादा योगदान दे सकेंगे, बनिस्बत उन लोगों के, जिन्हें हम हिन्दी परिवेश से बाहर हिन्दी का शिक्षण और प्रशिक्षण करवाते हैं। क्यों कि भाषा केवल कक्षा की चीज नहीं होती। भाषा केवल पुस्तकों से नहीं सीखी जाती। भाषा उस परिवेश से सीखी जाती है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसी समाज से सीखी जाती है, जहाँ यह बोली जाती है, जहाँ इस का व्यवहार होता है, जहाँ यह दैनंदिन जीवन के क्रिया-कलापों में स्वतः प्रयुक्त होती रहती है। भाषा-शिक्षण के बारे में जब आप को बताया जाता है तो उस में सांस्कृतिक परिवेश या कक्ष के बाहर के परिवेश के बारे में भी काफी बल दिया जाता है और वे परिवेश होते हैं सांस्कृतिक कार्यक्रम धार्मिक अनुष्ठान इन सब में भाषा के प्रयोग। ये सारी चीजें किसी भी भाषा केलिए वहीं संभव है जहाँ यह मातृभाषा या प्रथम भाषा के रूप में बोली जाती है। इन चीज़ों को ध्यान में रखते हुए आज के केन्द्रीय हिन्दी संस्थान की स्थापना आगरा में की गयी थी। वर्ष 1961 में जा कर भारत सरकार ने इस को अपनाया और एक स्वायत्तशासी संस्था के रूप में यह कार्य कर रही है।

राजभाषा आयोगने जब अपनी संस्तुतियाँ प्रस्तुत कीं तब उस में राजभाषा हिन्दी, सह राजभाषा अंग्रेजी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के विकास केलिए उन्होंने कुछ संस्तुतियाँ की थीं। अंग्रेजी केलिए हैदराबाद में अंग्रेजी तथा विदेशी भाषा संस्थान की स्थापना की गयी वर्ष 1956-57 में। हिन्दी केलिए केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय की स्थापना की गयी वर्ष 1959-60 में। अन्य भारतीय भाषाओं केलिए केन्द्रीय भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर की स्थापना की गयी 1966-67 में। केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय की स्थापना से भारत सरकारने पहले तो सोचा था कि कार्य सुचारु रूप से चलेगा। लेकिन केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के कार्यक्षेत्र में बहुत दूसरे कार्य आ गये। इसलिए हिन्दी के वास्तविक प्रचार-प्रसार, हिन्दी शिक्षकों के निर्माण, हिन्दी के लिए वैज्ञानिक पद्धति से या आधुनिक पद्धति से पाठ्य पुस्तकों के निर्माण आदि के कार्य के लिए उन्हें एक संस्था स्थापित करने की आवश्यकता थी। आगरे में यह संस्था एक अखिल भारतीय हिन्दी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के रूप में कार्य कर रही थी। इसके नियन्ताओं से भारत सरकार ने बातचीत की और यह संस्था उनको हस्तान्तरित कर दी गयी। तब से लेकर आज तक, अठाईस वर्ष की यात्रा में केन्द्रीय हिन्दी संस्थान ने, जो कुछ इससे अपेक्षा की गयी थी, उससे ज्यादा ही कार्य किया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभी हम ने इस की रजतजयंती मनायी थी; फरवरी के महीने में उसका प्रारंभ किया। वर्ष पर्यंत यह कार्यक्रम चलेगा। इसमें हमने यह दिखाने की कोशिश की थी कि 1961 से लेकर 1989 तक केन्द्रीय हिन्दी संस्थान ने किस तरह से किन किन दिशाओं में, हिन्दी के प्रचार और प्रसार में योगदान दिया है। केन्द्रीय हिन्दी संस्थान के बढते हुए चरण हिन्दी के प्रयोग और हिन्दी के विकास के चरणों के समानान्तर हैं। अगर मैं निदेशक के रूप में न बोलता होता तो मैं यह कहता कि ये दोनों पर्याय हैं। लेकिन. चूंकि मैं संस्थान का निदेशक हूँ इसलिये अपनी संस्था की बहुत तारीफ करना अच्छा नहीं लगता।

प्रमुख कार्य हमारे दो रहे। एक तो हिन्दी के अध्यापकों को तैयार करना, याने, अहिन्दी क्षेत्रों से आनेवाले हिन्दी के अध्यापकों को एक ऐसा प्रशिक्षण देना जिसमें उन्हें न केवल शिक्षा शास्त्र के सिद्धान्तों से परिचित कराया जाये, वरन् उन्हें ऐसे उपकरणों व उपादानों से परिचित कराया जाये जिनके द्वारा वे हिन्दी भाषा और साहित्य दोनों के मर्म को समझ सकें। दूसरे शब्दों में

साहित्य का अध्यापन, पद्य से गद्य में अनुवाद या गद्य का गद्य में अनुवाद करना नहीं होता।

प्रशिक्षण महाविद्यालयों की तुलना में एक नया पाठ्यक्रम हम लोगों ने प्रस्तुत किया जिसमें हिन्दी साहित्य, हिन्दी भाषा, हिन्दी संरचना, हिन्दी का मातृभाषा के साथ तुलनात्मक अध्ययन और शिक्षा तथा शिक्षण से संबंधित अन्य विषय शामिल हैं। इसमें एक तरह हम आप के हिन्दी के ज्ञान को विकसित करने की कोशिश करते हैं और दूसरी तरफ शिक्षण की प्रक्रिया से आप को परिचित कराना चाहते हैं। साहित्य के माध्यम से हम हिन्दी साहित्य के प्रवेश द्वार पर ले जाकर आप को एक ऐसे गाइड के रूप में तैयार करने की कोशिश करते हैं कि आप साहित्य की बारीकियों को आसानी से समझ सकें और अपने छात्रों को समझा सकें। क्योंकि साहित्य समझने केलिए भाषा के साथ साथ भाषाई संस्कृति की भी पकड होनी चाहिए। और यही एक चीज़ होती है जो किसी भी साहित्य को समझने में हमारी मदद करती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्यार्थी परीक्षा में भले पास हो जायें, लेकिन अध्यापक नहीं पास होगा।

है। साहित्य का अध्यापन, पद्य से गद्य में अनुवाद या गद्य का गद्य में अनुवाद करना नहीं होता। बल्कि, साहित्कार का कथ्य क्या है, उसका अभिप्रेत क्या है, संप्रेषण करने की कौन सी बात है जो वह अपने पाठकों तक पहुँचाना चाहता है और जिसे पढने के बाद पाठक यह कहता है कि इन परिस्थितियों में कुछ ऐसा ही तो मैं भी कहता। जब आप जयशंकर को पढते हैं कि "इस करुणा-कलित हृदय में अब विकल रागिणी बजती," तो कोई ऐसा क्षण आप के जीवन में आता है जहाँ आप सोचते हैं कि जरूर कवि ने ऐसी ही स्थिति में इस छन्द की रचना की होगी। और "इस करुणा कलित हृदय में अब विकल रागिणी बजती'" वैसे केवल शब्दों का जाल है। 'करुणा' 'कलित' 'हृदय' 'विकल' 'रागिणी' इन पाँच शब्दों का अर्थ लेकर अगर आप इसका 'प्रोज़ आर्डर' लेकर समझाना चाहें तो विद्यार्थी परीक्षा में भले पास हो जायें, लेकिन अध्यापक नहीं पास होगा। क्यों कि अध्यापक को साहित्य का अनुभावन करने की आवश्यकता होती है, अप्रीसियेशन करने की आवश्यकता होती है। और वह अप्रीसियेशन तब होता है जब भाषा के साथ साथ कथ्य की बारीकी पर हमारी पकड हो। और यह बारीकी संस्कृति जन्य होती है।

आप प्रसाद का स्कन्दगुप्त पढते हैं। 'अधिकार तो कितना मादक और सारहीन है! अपने को कर्ता और नियन्ता समझने की बलवती स्पृहा पुरुषों से बेगार करवाती है।" इसमें कोई ऐसा शब्द नहीं है जिसको समझाने की आवश्यकता हो। लेकिन इसका अनुभावन हम तब करेंगे जब हम निस्पृह कर्मयोगी के समान कोई कार्य करते हैं और वह कार्य कोई सत्ताधारी या अधिकारी के रूप में करते हैं और करने के बाद देखते हैं कि इस कार्य के सम्पादन के प्रत्येक चरण पर हमारी महत्वाकांक्षा अपनी दासी बनाकर हमसे कार्य करवाती रही है और कार्य की समाप्ति के बाद आप भाग्यशाली हैं तो पचास प्रतिशत, अन्यथा पचहत्तर प्रतिशत लोग आप की आलोचना करते हैं। और उस समय जो श्मशान-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैराग्य जागृत होता है वह श्मशान-वैराग्य का भाव —"अधिकार कितना मादक और सारहीन है" के वक्तव्य में स्कन्दगुप्त कहता है।

इस चीज को समझने के लिए केवल शब्दों का अर्थ या ऐतिहासिक पृष्ठभूमि ही आवश्यक नहीं होती बल्कि इन शब्दों का कथ्य, इनका भाव कितनी गहराई से मानस पटल को स्पर्श करता है, वह समझने की आवश्यकता होती है। केन्द्रीय हिन्दी संस्थान में जब हम साहित्य आपको पढाते हैं तो यही समझाने की

कार्य की समाप्ति के बाद आप भाग्यशाली हैं तो पचास प्रतिशत, अन्यथा पचहत्तर प्रतिशत लोग आप की आलोचना करते हैं।

कोशिश करते हैं कि साहित्य को समझने के लिए कौन कौन से ऐसे उपादान हैं जो हमें उसे अप्रीशियेट करने की क्षमता प्रदान करते है।

आप तो प्रारंभ से कबीर का एक दोहा पढते होंगे

'गुरु गोविन्द दोऊ खडे, काके लागूँ पाँव
बलिहारी गुरु आपने, गोविन्द दियो
बताय।'

ये सारी की सारी चीज़ें समझने के बाद आप इस दोहे का अर्थ समझ पायेंगे।

यह सरल दोहा है, बडा क्लिष्ट दोहा है। सरल इस मामले में है कि इसका अर्थ बतलाना बडा आसान है। क्लिष्ट इस मामले में है कि इस दोहे में भारतीय मनीषा का समस्त ज्ञान, जैसे सिन्दूर की डिबिया में सुहाग बन्द रहता है उस तरह से बन्द कर दिया गया है। गुरु को गोविन्द से ज़्यादा बडा मानने की परंपरा कहाँ से आयी, गुरु क्या होता है, गुरु कैसे हम को ज्ञान देता है, ये सारी की सारी चीज़ें समझने के बाद आप इस दोहे का अर्थ समझ पायेंगे। आप

गुरु ब्रह्मा, गुरुर्विष्णु
गुरुर्देवो महेश्वरः
गुरु साक्षात् परब्रह्म
तस्मै श्रीगुरुवे नमः

कह देते हैं। फिर भी आप कहते हैं —

अखण्ड मण्डलाकारम्
व्याप्तम् येन चराचरम्
तत् पदम दर्शितम् येन
तस्मै श्री गुरुवे नमः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिर आप कहते हैं—

अज्ञानतिमिरान्धस्य
ज्ञानांजनशलाकया
चक्षुरुन्मीलितम् येन
तस्मै श्रीगुरुवे नमः

तो गुरु के तीन रूप यहाँ आप को दिखाये गये। एक अज्ञान के तिमिर को दूर करने के लिए ज्ञान की शलाका अखिल ब्रह्माण्ड में व्याप्त परम ब्रह्म को समझानेवाला, उसे साक्षात्कार कराने वाला गुरु और फिर वह त्रिदेवों में बढ कर है। गुरु आपका दो प्रकार का होता है...दीक्षा की परिभाषा है—"दीयते अग्निम् क्षीयते पापम्" तो यह सारी का सारी बात कबीर ने अपने अटपटे इस दोहे में कह दी है।

"तत् पदम् दर्शितम येन"

गोविन्द के पद का दर्शन कराया जिसने

तस्मै श्री गुरुवे नमः

उस गुरु को नमस्कार है। इसलिये गोविन्द के पाँव लगते हैं।

कहने का मतलब यह है कि हम जो साहित्य का पाठ्यक्रम देते हैं उस के माध्यम से साहित्य को एक नये दृष्टिकोण से समझने, परखने और उस का अनुभावन करने की क्षमता प्रदान करते हैं। हम यह दावा नहीं करते कि हम आप को साहित्य में बहुत निष्णात और पारंगत बना देते हैं। हम आप को उस रहस्य आगार की देहली पर खडा कर देते हैं और कहते हैं कि जितनी बार आँखें मींच कर आप खालेंगे उतनी बार इस साहित्य के रहस्य के आगार में कुछ नया मिलेगा। यह हमारे साहित्य के पढाने और कालेजों में साहित्य के पढाने में अन्तर है।

यह हमारे साहित्य के पढाने और कालेजों में साहित्य के पढाने में अन्तर है।

उसी प्रकार हम हिन्दी भाषा की संरचना के बारे में आप को कुछ बताते हैं। हिन्दी भाषा की संरचना से मतलब है शुद्ध रूप में हिन्दी व्याकरण। लेकिन व्याकरण दो तरह का होता है। एक जिसको हम नोरमेटीव व्याकरण कहते हैं जिस में यह बताया जाता है कि यह शुद्ध है, यह अशुद्ध है, यह प्रयोग कीजिये, यह प्रयोग न कीजिए। दूसरा व्याकरण एक होता है जो हम बराबर प्रयोग करते हैं और इस व्याकरण से अलग होता है। पहले प्रकार के व्याकरण केलिए हम हिन्दी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संरचना पढाते हैं और दूसरे प्रकार के व्याकरण केलिए हम भाषा-विज्ञान का थोडा सा ज्ञान देते हैं जिसके माध्यम से आप भाषा को समझने में क्षमता प्राप्त कर सकें ।

जब हम नई भाषा सीखते हैं तो हमारी अपनी भाषा नई भाषा सीखने में कठिनाइयाँ उत्पन्न करती है। भाषा एक प्रकार की आदत है; सामाजिक आदत है । जब हम दूसरी भाषा सीखते हैं तो इस आदत को पूर्णत: दूसरी भाषा में स्थानान्तरित करने की कोशिश करते हैं। इस कोशिश में, हमारी मूलभूत आदतें कहीं रास्ता रोकती हैं । हम लोग अंग्रेज़ी बोलते हैं । मलयालम बंगला हिन्दी और उडिया के गुण हमारी अंग्रेज़ी में परिलक्षित होते हैं। हम दूसरी भारतीय भाषा बोलते हैं, उसमें हमारी अपनी मातृभाषा के गुण परिलक्षति होते हैं । इस को समझाने केलिए कि आपके विद्यार्थी को हिन्दी सीखते समय किसी ध्वनि-विशेष के उच्चारण में कठिनाई हो, किसी संरचना को समझने में कठिनाई हो, तो किस तरह उसका निराकरण किया जाय, यह हम वहाँ के पाठ्यक्रम में बतलाते हैं । भाषा तुलना और सामग्री निर्माण प्रश्न-पत्र के माध्यम से,बाकी सारी चीजें । शिक्षा-शास्त्र में जो कुछ होता है वह भी हम देखते हैं ।

अभी मैं एक वाक्य ऐसा बोल गया हूँ जिस में मेरी मातृभाषा परिलक्षित हुई है ।

तो यह जो नया पाठ्यक्रम जो हम हिन्दी शिक्षकों केलिए प्रस्तावित किये हैं और जिस का हम प्रयोग कर रहे हैं वह अन्य प्रशिक्षण महाविद्यालयों के पाठ्यक्रम से अलग है । अभी मैं एक वाक्य ऐसा बोल गया हूँ जिस में मेरी मातृभाषा परिलक्षित हुई हैं । पता नहीं किसी ने इस पर ध्यान दिया या नहीं । मैं ने कहा कि यह सब किये हैं । ने का प्रयोग मैं ने नहीं किया । जानबूझ के इसलिये नहीं किया था कि आप को इस बात का एक प्रत्यक्ष उदाहरण मैं दूँ कि मातृभाषा कैसे अपना प्रभाव डालती है दूसरी भाषा पर । वैसे हमारी मातृभाषा भोजपुरी है जो हिन्दी की एक बोली है । लेकिन उस में ने का प्रयोग बिलकुल नहीं किया जाता । मैंने एक उदाहरण आपको दिया कि कैसे हम बोलते समय, लिखते समय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी अपनी मातृभाषा से प्रभावित हो जाते हैं। इस तरह का एक नया पाठ्यक्रम केन्द्रीय हिन्दी संस्थान ने हिन्दी प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों में अपनाया है। इसका परिणाम यह है कि हमारे हिन्दी के अध्यापक जो केन्द्रीय हिन्दी संस्थान से पाठ्यक्रम करके आते है, अन्य प्रशिक्षण महाविद्यालयों से आनेवालो की तुलना में – जैसे बी. एड. वगैरह जो ट्रैनिग हैं—हिन्दी केलिए ज़्यादा सक्षम होत हैं। क्योंकि वहाँ भाषा के रूप में हिन्दी, एक विषय के रूप में हिन्दी, माध्यम भाषा के रूप में हिन्दी और प्रशिक्षण तीनों चीजें साथ-साथ हम देते हैं। आप जानना चाहेंगे कि भाषा के रूप में हिन्दी और माध्यम भाषा के रूप में हिन्दी में क्या अन्तर है। किसी भी भाषा के तीन स्वरूप होते हैं अध्ययन करने के। एक तो मात्र भाषा के रूप में उस भाषा का अध्ययन किया जाये जिस में हमें संप्रेषणपरक ज्ञान प्राप्त हो, समाज में दो व्यक्तियो के बाच सफल संवाद स्थापित करने की क्षमता प्राप्त हो और अपने कथ्य का दूसरों तक पहुँचा सकें। वहाँ तो हम भाषा के रूप मे किसी भी भाषा को सीखते हैं। इसका मौखिक और लिखित

साहित्य को समझने का अर्थ यह नहीं होता कि हम भाषा में संप्रेषण की पूरी क्षमता रखते हैं।

दोनों स्वरूप होता है। चाहे प्रशासन में प्रयुक्त होनेवाली भाषा हो, चाहे प्रौद्योगिक में प्रयुक्त होनेवाली भाषा हो, जहाँ संप्रेषण मात्र उसका उद्देश्य है वहाँ यह भाषा के रूप में पढायी जाती है। और यही इसका लक्ष्य होता है, यही इसका माध्यम होता है। साध्य भी यही है साधन भी यही है।

दूसरे भाषा के माध्यम से हम साहित्य का अध्ययन करते हैं। साहित्य को समझने का अर्थ यह नहीं होता कि हम भाषा में संप्रेषण की पूरी क्षमता रखते हैं। क्यों कि साहित्य का अध्ययन अनुवाद के माध्यम से भी होता है, तुलना के आधार पर भी होता है, वाचन के आधार पर भी होता है। कई प्रकार से होता है। वहाँ साध्य होता है साहित्य, भाषा होती है साधन। माध्यम भाषा के रूप में जब उस भाषा का प्रयोग हम विभिन्न विषयों को पढाने केलिए करते हैं, इतिहास पढाने केलिए,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाषा के रूप में हिन्दी, साहित्य समझने के रूप में हिन्दी, और शिक्षा के माध्यम के रूप में हिन्दी, इन तीनों रूपों में हम अपने प्रशिक्षणार्थियों को हिन्दी देने की कोशिश करते हैं ।

भूगोल पढाने केलिए, फिसिक्स पढाने केलिए, केमिस्ट्री पढाने केलिए जब उसका प्रयोग करते हैं—तब माध्यम भाषा के रूप में भाषा का प्रयोग होता है । आप अगर थोडा सतर्क हो के देखें तो स्पष्ट होगा कि एक ही भाषा भिन्न भिन्न विषयों की माध्यम भाषा के रूप में भिन्न होती है। भिन्नता इसके शब्द भण्डार पर होती है उक्तियों पर होती है, और कहने के ढंग पर होती है। फिसिक्स में जिस तरह भषा का प्रयोग हम करेंगे उस तरह से हम अर्थशास्त्र केलिए नहीं करेंगे । इसलिए लांग्वेज फार माथमाटिक्स, लांग्वेज फार फिसिक्स, लांग्वेज फार ह्यूमानिटीस— इस तरह से हम पाठ्यक्रम बनाते हैं ।

तो केन्द्रीय संस्थान के पाठ्यक्रमों में भाषा के रूप में हिन्दी, साहित्य समझने के रूप में हिन्दी, और शिक्षा के माध्यम के रूप में हिन्दी, इन तीनों रूपों में हम अपने प्रशिक्षणार्थियों को हिन्दी देने की कोशिश करते हैं। और हिन्दी का ऐसा परिवेश देने की कोशिश करते हैं जहाँ से निकलने के बाद वे भाषा की उन बारीकियों को समझ सकें जिन्हें किसी भाषा को जो नियम कहा जाता है । उस भाषा के जो कोलोकियल यूस है बिल्कुल सामान्य बोलचाल का प्रयोग है, उसे भी वे सीखें । क्योंकि किताब में और क्लास में हम सारी औपचारिक भाषा देते हैं । औपचारिक भाषा बाहर की अनौपचारिक भाषा से कितना मेल खाती है यह देखने के लिए उस परिवेश में रहना आवश्यक होता है । इस से भाषा का ज्ञान परिमार्जित हो जाता है और हम जो कुछ भी सीखते हैं वह संगलित होता चलता है ।

केन्द्रीय हिन्दी संस्थान अब आनुषंगिक कार्य के रूप में शोधकार्य भी कर रहा है । जो हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं की तुलनात्मक है या विद्यार्थियों की उपलब्धिपरक है या विभिन्न क्षेत्रों केलिए, विभिन्नभाषायी समुदाय केलिए पाठ्यपुस्तकों के निर्माण से संबन्धित है, यह सब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम कर रहे हैं। इतना ही नहीं जैसे जैसे भाषा का प्रचार और प्रसार बढता है भाषा में बिभिन्नता न केवल भौगोलिक क्षेत्रों के बाहर ही होती है बल्कि सामाजिक स्तर पर भी होती है। इस को भी आकलित करने का प्रयास केन्द्रीय हिन्दी संस्थान कर रहा है। उस अध्ययन के आधार पर सेवा माध्यमों केलिए और विशिष्ट क्रिया कलापों केलिए पाठ्यक्रम हम तैयार करते हैं। राजभाषा विभाग के तीनों पाठ्य-क्रमों की पुस्तकें इसी के आधार पर केन्द्रीय हिन्दी संस्थान ने बनवायी हैं जो चल रही हैं। जहाँ सामाजिक स्तरीकरण, प्रयोजन विशेष केलिए प्रयुक्त होना, इन सब को आधार बनाकर प्रयोजनमूलक और सामाजिक पृष्ठभूमि के आधार पर, हिन्दी में क्या अन्तर आता है, क्या परिवर्तन आता है, उस को ध्यान में रखकर, वे पुस्तक बनायी गयी हैं।

इसी तरह दूसरे क्षेत्रों केलिए हम कार्य कर रहे हैं। विदेशों से भी हमारे यहाँ विद्यार्थी आते हैं। करीब पन्द्रह बीस देशों से पचास विद्यार्थी प्रतिवर्ष हिन्दी सीखने आते हैं। हिन्दी के साथ-साथ अन्तिम वर्ष में उन्हें हिन्दी पढाने का प्रशिक्षण भी दिया जाता है। उनके लिए पाठ्य सामग्री एक विशेष प्रकार होती है। स्वदेशी भाषा और विदेशी भाषा दोनों की प्रकृति के अन्तर को ध्यान में रखते हुए पाठ्य पुस्तकों का निर्माण करना पडता है। स्वदेशी भाषाएँ चाहे हिन्दी हो, चाहे हिन्दोतर कोई भाषा हो, उनका एक सामाजिक सांस्कृतिक परिवेश ऐसा है जिसमें 80 प्रतिशत समानता है। जब कि विदेशी परिवेश और

स्वदेशी भाषाएँ चाहे हिन्दी हो, चाहे हिन्दीतर कोई भाषा हो, उनका एक सामाजिक सांस्कृतिक परिवेश ऐसा है जिसमें 80 प्रतिशत समानता है।

भारतीय परिवेश में कोई समानता नहीं होती। उनके सामाजिक भाव, सामाजिक क्रिया कलाप, और उनको अभिव्यक्त करने वाले शब्द और उक्तियाँ अलग अलग होती हैं। इसलिए जब विदेशों के लिए पाठ्यक्रम हम बनाते हैं तो उसमें सांस्कृतिक तत्व को अच्छी तरह समझाने केलिए भी प्रयास करते हैं।

इन सब चीज़ों को ध्यान में रखते हुए हम विभिन्न प्रकार के पाठ्यक्रम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नई भाषा नीति के संदर्भ में जो आठवीं पंच वर्षीय योजना के प्रारंभ से पूर्णतः लागू की जाने वाली है उसमें त्रिभाषा सूत्र को प्राथमिकता दी जा रही है।

जो प्रशिक्षण के हैं नवीकरण के हैं, पुनर्नवीकरण के हैं, हिन्दी शिक्षण के हैं, चला रहे हैं, लेकिन वहाँ से निकले हुए हमारे छात्र पूरे देश में बिखेर रहे हैं। मुझे बडी प्रसन्नता हुई यह जानकर कि आप हमारा कार्य कुछ हल्का कर रहे हैं। क्योंकि नई भाषा नीति के संदर्भ में जो आठवीं पंच वर्षीय योजना के प्रारंभ से पूर्णतः लागू की जाने वाली है उसमें त्रिभाषा सूत्र को प्राथमिकता दी जा रही है। अभी हमने तीन महीने पहले एक सामान्य सर्वेक्षण किया था, जिस में पता यह चला कि सेवारत हिन्दी अध्य पकों में पूरे देश में करीब 15 हज़ार अध्यापक ऐसे हैं जिन्हें किसी भी प्रकार का प्रशिक्षण अभी तक नहीं मिला है और उनके प्रशिक्षण कार्यक्रम केलिए एक योजना शिक्षा मंत्रालय ने मांगी थी कि कैसे इनको थोडा सा प्रशिक्षण दे दिया जाय ताकि वे आठवी पंच वर्षीय योजना के प्रारंभ में त्रिभाषा सूत्र के अंतर्गत हिन्दी के अध्यापन में योगदान दे सकें। तो उस दिशा में आप का यह महाविद्यालय हमें कम-से कम सत्रह हज़ार में से दे सौ अध्यापक प्रशिक्षित कर के दे रहा है, इतना भार हमारा कम कर रहा है, इस केलिए यह महा विद्यालय बधाई का पात्र है।

मैं आप के मंत्री जी श्री. वेलायुधन नायर को धन्यवाद देना चाहता हूँ। लेकिन उनको धन्यवाद देने का

सेवारत हिन्दी अध्यापकों में पूरे देश में करीब 15 हज़ार अध्यापक ऐसे हैं जिन्हें किसी भी प्रकार का प्रशिक्षण अभी तक नहीं मिला है।

मतलब होगा कि मैं अपनी ही पीठ अपने हाथ से थपथपा रहा हूँ। वे हमारे एक अभिन्न अंग है, और हमारे से मेरा मतलब न केवल संस्थान से बल्कि पूरे हिन्दी परिवार के एक अभिन्न अंग हैं और यह अंग और अंगी संबन्ध है। इस में "एकम एकम प्रशंसन्ति अहो रूपम अहो ध्वनि" वाली बात हो जायेगी। इसलिए मैं इतनी कृपणता दिखाऊँगा। ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महान नागरिक जवाहरलाल

......पर निरन्तर प्रवाहमान रावी के तट पर उसी लाहौर कांग्रेस में 31 दिसम्बर 1929 की रात में बारह बजे आकाश के देवताओं ने एक दृश्य देखा था, जो कहते है उन्होंने भी न पहले देखा था, न बाद में देखने की उन्हें आशा है।

बारह बजे तक नेहरू कमेटी की रिपोर्ट को अंग्रेज़ों द्वारा स्वीकार किये जाने की प्रतीक्षा करके, कांग्रेस ने अपना लक्ष्य मुकम्मल आज़ादी घोषित कर दिया। इस उपलक्ष्य में रात के 12 बजे ही खान अब्दुल गफ्फार खाँ के बहादुर लालकुर्ती पठानों ने एक भव्य, पर अत्यन्त नशीला उत्सव मनाया। पठान का प्राण है आज़ादी, वे आज़ादी के ऐलान पर नाच उठे, उनके ढोल बज उठे, अङ्ग थिरक उठे और अंगविन्यासों से ही ताल देनेवाला सरहदी नृत्य जम गया। जवाहरलाल थोड़ी देर उस नृत्य के दर्शक रहे, फिर उनकी पारीपोरी मटक चली और निशीथ की उन मदमाती घड़ियों में यह लो, बेकाबू हो गये जवाहरलाल। वे खरगोश-से सिकुड़कर उछले कि नर्तकों के घेरे में घुस आए और ताल की कड़ी पकड़कर नाच चले। जवाहरलाल, जवानों का मुकुट और जवानी का बादशाह जवाहरलाल, अब लालकुरती पठानों के साथ नाच रहा था और उन्हें अपने बीच पा, दीवाने पठान आपे को भूले-से झूम उठे थे। वे झूमे कि जवाहरलाल भी आपा खो बैठे और नृत्य के पद-क्रम को बिना बिगाड़े, उचक कर उन्होंने उस सुन्दर पठान तरुण वली खाँ के गले से ढोल का पट्टा निकाल कर अपने गले में डाल लिया और आसमान के तारे भी लोटे-पोट हो गये,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब नृत्य के ताल पर मटकते-मटकते ही जवाहरलाल ने अपने दायें पैर का सहारा दे, गले में लटकते ढोल का साध लिया ! आह, क्या समा था, क्या दृश्य था, सच तो यह है कि भारत तो उसी दिन स्वतंत्र हो गया था ।

जवाहरलाल का यह रूप एक महान देश भारत के महान नागरिक का रूप था और इसे ही मैं नये नागरिक का नया मॉडल कहता हूँ । यह मॉडल जिसमें ज्ञान है, बलिदान है, सेवा है, पर इन सबके साथ आनन्द भी है, वह आनन्द जो अपने भीतर से फूटता है, वह रस जो अपने भीतर से छलकता है । यही वह आनन्द और रस है, जो पद-मान-मर्यादा की दृष्टि से कैलास का शिखर होते भी जवाहरलाल को एक जनसाधारण के साथ उस जैसा बनाकर ही मिला देता है ।

अखिलेश प्रभाकर
(विकास से साभार)

मौलाना आज़ाद के शताब्दी समारोह

मौलाना अबुल कलाम आज़ाद शताब्दी समारोह के सिलसिले में जून 1989 में नई दिल्ली में आयोजित एक समारोह में मौलाना आज़ाद की सेवाओं को याद किया गया और उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि दी गई । महामहिम उपराष्ट्रपति डा० शंकर दयाल शर्मा समारोह में मुख्य अतिथि रहे ।

उत्तर प्रदेश की उर्दू अकादमी द्वारा आयोजित इस समारोह में बोलते हुए डा० शर्मा ने लोगों से संकीर्णता को समाप्त करने का आह्वान किया । क्योंकि ये न केवल हममें आपस में फूट डलवाती है बल्कि इससे राष्ट्र निर्माण की गतिविधियों को भी धक्का पहुँचता है । उन्होंने बुद्धिजीवियों से ऐसे तत्वों से दूर रहने का आह्वान किया जो संकीर्णता उत्पन्न करनेवाली गतिविधियों को फैलाने में जुटे हुए हैं ।

मौलाना आज़ाद को भावभीनी श्रद्धांजलि देते हुए महामहिम उप राष्ट्रपति ने कहा कि वे एक सच्चे मुसलमान और सच्चे राष्ट्रवादी थे । वे उच्चकोटि के बुद्धिजीवी थे जिनका दृष्टिकोण सच्चे तौर पर मानवीय होता था । मौलाना आज़ाद का यह दृढ़ विश्वास था कि धर्मनिरपेक्षता और राष्ट्रीय एकता एक दूसरे के पूरक हैं ।

इस अवसर पर डा० शर्मा ने विख्यात उर्दू विद्वान श्री० मालिक राम को पहला मौलाना आज़ाद पुरस्कार दिया । वार्षिक पुरस्कार उत्तर प्रदेश उर्दू अकादमी द्वारा मौलाना आज़ाद की शताब्दी की स्मृति में शुरू किया गया है । उन्होंने अकादमी द्वारा निकाली गई पुस्तकों को भी जारी किया जिसमें "अल हिलाल" के पुराने अंकों का संग्रह शामिल है । **मौलाना आज़ाद इस पत्रिका के संपादक थे ।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डी. ए. वी. शताब्दी पर विशेष डाक टिकट

डाक विभाग द्वारा डी. ए. वी. शताब्दी पर 27 जून, 1989 को एक मूल्य का बहुरंगा डाक टिकट जारी किया गया।

समूचे देश में डी. ए. वी. के संस्थानों ने छात्रों में निष्ठा देशभक्ति अनुशासन की भावना भरने के लिए उनकी योग्यता का पूर्णरूप से निखार है। शिक्षा और सामाजिक सुधारों में डी ए. वी आन्दोलन का योगदान सराहनीय है।

आर्य समाज के सुधारवादी आन्दोलन के संस्थापक महर्षि दयानन्द रखते थे कि केवल शिक्षा ही समाज को जागरूक रख सकती है। उनकी डी. ए वी. आन्दोलन 1885 में शुरू किया गया था। पहला डी. ए. वी. पहली जून, 1886 में लाहौर में स्थापित किया गया था। बाद में इसे कर 1889 में कालेज बना दिया गया था। इसके बाद यह आदोलन और मजबूत होता गया। डी. ए. वी. आन्दोलन ने भारतीय मानस में दृष्टिकोण लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

अंतर्राष्ट्रीय पुस्तक मेले में भारतवर्ष

इटली के बोलगाना अंतर्राष्ट्रीय पुस्तक मेले में 1992 को भारतवर्ष में मनाया जाएगा। यह निर्णय मेले के प्राधिकरण द्वारा लिया गया है जो की पुस्तकों केलिए एकमात्र अंतर्राष्ट्रीय पुस्तक मेला है। यह मेला प्रतिवर्ष से मई तक बोलगाना में आयोजित किया जाता है।

यह निर्णय राष्ट्रीय पुस्तक न्यास और लेखक संघ के प्रयासों को प्रदान करने हेतु लिया गया है।

1989 बोलगाना पुस्तक मेले में पूरे विश्व से प्रकाशक, लेखक, सम्पादक शिक्षाविद एकत्र हुए हैं जो अपनी पुस्तकों का प्रदर्शन करेंगे तथा अंतर्राष्ट्रीय का पता लगायेंगे।

इस महत्वपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय पुस्तक मेले में भारत का प्रतिनिधित्व पुस्तक न्यास और लेखक संघ द्वारा किया गया। राष्ट्रीय पुस्तक न्यास एक सुन्दर सूचि का प्रदर्शन किया है जिसमें भारत के विभिन्न भागों से 250 को सूचीबद्ध किया गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरल ज्योति

* प्रधान संपादक
प्रो० पी. जे. जोसफ़

* संपादक
श्री. के. जी. बालकृष्ण पिल्लै

* सह संपादक
श्री. आर. सुकुमारन नायर

* संपादक मण्डल
प्रो० एम. जनार्द्दनन पिल्लै
प्रो० सी. जी. राजगोपाल
श्री. के. वी. कृष्णनकुट्टी
डा० एस. सी. चन्द्रन
डा० एन. जी. देवकी
श्री. एम. के. वेलायुधन नायर

* विज्ञापन दर

		मासिक	वार्षिक
आवरण पृष्ठ 4	रु.	500 00	5000 00
आवरण पृष्ठ 2 एवं 3	रु.	400 00	4000 00
साधारण पृष्ठ पूरा	रु.	300 00	3000 00
साधारण पृष्ठ $\frac{1}{2}$	रु.	175 00	1750 00
साधारण पृष्ठ $\frac{1}{4}$	रु.	100 00	1000 00

संपर्क करें—मंत्री, केरल हिन्दी प्रचार सभा, तिरुवनन्तपुरम-695 014

लेखकों से निवेदन

हिन्दी प्रचार, हिन्दी शिक्षण, भारतीय भाषायें, भारतीय साहित्य, भारतीय संस्कृति जैसे विषयों पर लिखे गये उच्च स्तरीय सचित्र लेखों व संगोष्ठी समाचारों का स्वागत किया जायेगा।

हिन्दीतर प्रान्तों की सांस्कृतिक, साहित्यिक, कलात्मक विशेषताओं पर लिखी गयी मौलिक और अनूदित रचनाओं को और हिन्दीतर भारतीय भाषाओं की उत्तम रचनाओं के अनुवादों को प्राथमिकता दी जायेगी।

पांडुलिपियाँ साफ अक्षरों में लिख कर या टाइप करके भेजें। कार्बन प्रतियाँ स्वीकृत नहीं होंगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवरण चित्र :

केन्द्र मानव संसाधन विकास मंत्रालय के सहयोग से केरल हिन्दी प्रचार सभा द्वारा जून *1989* में तिरुवनन्तपुरम में आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह विविध दृश्य ।

प्रथम पृष्ठ : (ऊपर) भद्रदीप जलाकर उद्घाटन कर रहे हैं संसद के अध्यक्ष श्री. बलराम जाखड । समीप हैं (दायें) श्री. वर्कला वी. राधाकृष्णन (अध्यक्ष, केरल विधान सभा) और (बायें) श्री. एम. के. वेलायुधन नायर (मंत्री, केरल हिन्दी प्रचार सभा एवं कोषाध्यक्ष, अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ)

(नीचे) एक पुरस्कृत छात्रा का सन्तोष !

द्वितीय पृष्ठ : श्री. बलराम जाखड से पुरस्कार पा रहे हैं उत्साही हिन्दी प्रचारक ।

तृतीय पृष्ठ : श्री. बलराम जाखड से पुरस्कार प्राप्त छात्र-छात्रायें ।

चतुर्थ पृष्ठ : (ऊपर) श्री. बलराम जाखड और अन्य विशिष्ट अतिथियों का भव्य स्वागत केरल हिन्दी प्रचार सभा भवन में ।

(बीच में) भाषण दे रहे हैं केरल के शिक्षा निदेशक श्री. के. वी. मदनन ! (बैठें हैं) (प्रथम पंक्ति —दायें से) श्री.ए. के. आन्टणी(पूर्व मुख्य मंत्री, केरल एवं अध्यक्ष, केरल प्रदेश कांग्रेस समिति) श्री. बलराम जाखड (अध्यक्ष, संसद) डा० एन. वी. कृष्ण वारियर (मुख्य संपादक, (मातृभूमि दैनिक) और श्री. तलेक्कुन्निल बषीर, सांसद ।

(नीचे) देशभक्ति गीत—छात्र-छात्राओं द्वारा "यह है नया हिन्दुस्थान ....."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूरभाष : 61378 तार : "जय हिन्दी"

केरल ज्योति

पुष्प 24
दल 5
एक प्रति—1 रु० 50 पै०
वार्षिक—15 रु०

सांस्कृतिक जागरण की मासिक पत्रिका

अगस्त 1989

संपादकीय

मानसिक गुलामी से कब मुक्त हो पायेंगे ?

स्वतंत्रता दिवस हर पन्द्रह अगस्त को आ कर हमें याद दिला देता है कि हम ने महान त्याग के बदले में जो स्वतंत्रता पायी उसे सार्थक बनाने केलिए हमें अधिक जागरूक रहना है क्रियाशील रहना है। भारतीय नागरिकों में भारतीयता का बोध उत्पन्न करना है, देश प्रेम उत्पन्न करना है और उन्हें देश की शासन प्रणाली में भागीदार बनाना है।

यह सब काम कैसे हो सकता है? भारतीय भाषाओं को उचित प्रतिष्ठा दिलाना ही इसका एकमात्र उपाय है। शासन हर स्तर पर भारतीय भाषाओं में हो। शिक्षा हर स्तर पर भारतीय भाषाओं में हो। प्रान्तीय स्तर पर प्रान्तीय भाषा का उपयोग हो। राष्ट्रीय स्तर पर राष्ट्रभाषा का उपयोग हो।

पर हम केवल कथनी के वीर बने हुए हैं। करनी में हम पीछे हैं। सभी नेता और विशेषज्ञ कहते फिरते हैं कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस अंक में

जनतंत्र को सफल बनाने के लिए शासन जनभाषा में हो 3
श्री. लोनप्पन नंपाटन

भारतीय कलाओं का उपयोग सांस्कृतिक नवोत्थान के लिए करें 5

माँ का शाप 8
श्रीमती तंकम्मा मालिक

दो कवितायें 18
श्रीमती शकुन्तला सिरोठिया

एक क्लर्क की डायरी 19
मूल : श्री. ई. वी. श्रीधरन
अनु : श्री. के. राधाकृष्णन

श्रीयेशुविजयम : मलयालम का सर्वप्रथम ईसा चरित काव्य 31
डा० कटविल चन्द्रन

मलयालम उपन्यास 'कयर' पर हिन्दी धारावाहिक 38

अंग्रेज़ी विदेशी भाषा है । यह हमारी अपनी भाषाओं के कंधे पर बैठी हुई है। इसे जब तक उतार कर फेंकेंगे नहीं तब तक भारतीय भाषाओं का सिर ऊंचा नहीं हो सकता । पर मंच पर ऐसा भाषण देनेवाले भी कार्यालयों और विद्यालयों में लौट कर अंग्रेज़ी की शरण लेने लगते हैं ।

जैसे केरल हिन्दी प्रचार सभा के संस्थापक एवं प्रथम मंत्री स्व० के. वासुदेवन पिल्लै की सत्ताईसवीं पुण्य तिथि के अवसर पर आयोजित सम्मेलन में केरल के आवास मंत्री श्री. लोनप्पन नंपाटन ने आह्वान किया है, इस दुस्थिति से मुक्ति पाने केलिए एक सशक्त अभियान चलाना होगा । हिन्दी प्रचार संस्थाओं ने हिन्दी के प्रचार में बहुमूल्य योगदान दिया है। अब समय आ गया है कि वे एक जुट हो कर भारतीय भाषा अभियान का नेतृत्व अपने ऊपर ले लें ।

अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ जो देश की प्रमुख स्वैच्छिक हिन्दी संस्थाओं का संघ है, अपनी रजत जयंती के इस वर्ष यदि भारतीय भाषा अभियान का कोई देशव्यापी कार्यक्रम बना सके तो निश्चय ही उसका असर जनता पर और सरकार पर पडे बिना नहीं रहेगा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनतंत्र को सफल बनाने केलिए शासन जनभाषा में हो

श्री. लोनप्पन नंपाटन
आवास मंत्री, केरल सरकार

केरल सरकार के आवास मंत्री एवं भारतीय भाषाओं के प्रबल समर्थक श्री. लोनप्पन नंपाटन ने कहा कि जनतत्र को सफल बनाने केलिए यह अत्यंत आवश्यक है कि शासन जनता की भाषा में हो। उन्होंने आह्वान किया कि प्रशासन में अंग्रेजी के प्रभुत्व को समाप्त करने और भारतीय भाषाओं को पूर्णतः प्रतिष्ठित करने केलिए सशक्त अभियान का आयोजन हो।

केरल हिन्दी प्रचार सभा के संस्थापक एवं प्रथम मंत्री स्व० के. वासुदेवन पिल्लै जी के सत्ताईसवें पुण्यदिवस पर सभा के तिरुवनन्तपुरम परिसर में आयोजित सार्वजनिक सम्मेलन का उद्‌घाटन कर रहे थे श्री. नंपाटन। आपने देश की वर्तमान स्थिति का अवलोकन करते हुए कहा कि गरीब जनता में निरक्षरों की संख्या बढ़ रही है जिस कारण मतदान भी स्वेच्छा से नहीं हो पाता। निरक्षरों को मत-पत्र पर अंकित चित्रों को देखकर मुद्रांकन करना पड़ता है। कभी कभी बूढ़े मतदाता जिन की आँखों की शक्ति क्षीण हो गयी है घोडे का चित्र देख कर ऊंट का चित्र समझ जाते हैं। साइकिल का चित्र देखकर ऐनक का चित्र समझ जाते हैं। इस भ्रम से वे ऐसे उम्मीदवारों को मतदान देते हैं जिन्हें वास्तव में वे चुनना नहीं चाहते। इस लज्जाजनक निरक्षरता के अंधकार से दरिद्र जनता को मुक्ति दिलाने में भी हम सफल नहीं हुए हैं जब कि उच्च वर्ग के माँ-बाप अपने बच्चों को अंग्रेज़ी माध्यम स्कूलों में शिक्षित कराना अभिमान का चिह्न मान बैठे हैं। अंग्रेज़ी का मोह इतना बढ़ गया है कि हम पश्चिमी सभ्यता का— उनकी उच्छृंखल जीवन शैली का— अन्ध अनुकरण करके आर्ष भारत के महान सांस्कृतिक मूल्यों से नई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पीढी को वंचित कर देते हैं। उन्होंने कहा कि हमें भारत-भर में त्रिभाषा-सूत्र का सफल कार्यान्वयन करना है जिस में मुख्य स्थान मातृभाषा और राष्ट्रभाषा को दिया जाना है। मातृभाषा और राष्ट्रभाषा पर हमें अभिमान होना चाहिए। इन भाषाओं का अध्ययन प्रेम और अभिमान के साथ करना है।

सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए मलयालम के विख्यात महाकवि श्री. एप. पी अप्पन ने कहा कि स्व० वासुदेवन पिल्लैजी ने हिन्दी की ही नहीं, मलयालम की भी बहुमूल्य सेवा की थी। श्री. अप्पन ने उन दिनों का स्मरण दिलाया जब स्वतंत्रता संग्राम का सन्देश फैलाते हुए सन् 1931 में पंडित जवाहर लाल नेहरू, श्रीमती कमला नेहरू और इन्दिरा प्रियदर्शिनी के साथ तिरुवनन्तपुरम आये थे तो सरकारी विरोध की परवाह किये बिना स्व० वासुदेवन पिल्लैजी के नेतृत्व में हिन्दी प्रचारकों ने उनका स्वागत किया था।

वासुदेवन पिल्लैजी के शिष्य एवं सरकारी प्रशिक्षण महाविद्यालयों के पूर्व प्राचार्य, डा० एस. राजप्पन नायर और डा० मावेलिक्करा अच्युतन ने पिल्लैजी के शिष्य-वात्सल्य और अगाध पांडित्य पर प्रकाश डाला।

स्वागत भाषण में केरल हिन्दी प्रचार सभा के मंत्री एवं अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ के कोषाध्यक्ष श्री. एम. के वेलायुधन नायर ने स्व० पिल्लैजी के बहुमुखी व्यक्तित्व का परिचय देते हुए कहा कि वे कुशल संगठक, सफल अध्यापक, निर्भीक पत्रकार, अच्छे अनुवादक और समर्थ अभिनेता थे। उन्होंने हिन्दी केलिए अपने जीवन की बलि दे दी थी।

मलयालम और हिन्दी के लेखक एवं कवि श्री. कुन्नकुषि कृष्णन कुट्टी ने कृतज्ञता ज्ञापित की।

स्व० वासुदेवन पिल्लै दिवस के सिलसिले में केरल हिन्दी प्रचार सभा द्वारा विद्यार्थियों केलिए आयोजित राज्य स्तरीय भाषण प्रतियोगिता और प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के विजेताओं को श्री. लोनप्पन नंपाटन ने पुरस्कार वितरित किये।

सम्मेलन के पूर्व विद्यार्थियों ने सूर, तुलसी, मीरा, रसखान, कबीर आदि के भजन गाये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय कलाओं का उपयोग सांस्कृतिक नवोत्थान केलिए करें

केरल के प्रमुख कला संस्थान केरल कलामंडलम द्वारा तिरवनन्तपुरम के विक्टोरिया-जूबिली टाउण हॉल में जुलाई 1989 में आयोजित कलोत्सव में यह आह्वान किया गया कि कथकलि जैसे परम्परागत भारतीय कलाओं का उपयोग देश के सांस्कृतिक उत्थान के लिए किया जाये। इसके लिए इन कलारूपों में नये इतिवृत्त भी स्वीकृत किये जायें।

कलोत्सव का उद्घाटन करते हुए केरल सरकार के सांस्कृतिक मंत्री श्री. टी. के. रामकृष्णन ने इस बात पर ज़ोर दिया कि भारत के उत्तम प्राचीन कला रूपों पर हमें गर्व होना चाहिए। अध्यक्षीय भाषण में केरल सरकार के वित्त मंत्री श्री. वी. विश्वनाथ मेनोन ने कहा कि मलयालम के महाकवि वल्लत्तोल ने कथकलि जैसे संपुष्ट कलारूपों को मंदिर की चहारदीवारी से बाहर निकाल कर विश्व के उन्मुक्त मंच पर प्रतिष्ठित किया। केवल विदेशियों की प्रशंसा के आधार पर अपने देश के कलारूपों की प्रशंसा करनेवाली भारतीय मनोवृत्ति की आपने कटु आलोचना की। केरल के शिक्षा मंत्री श्री के चन्द्रशेखरन ने कला की सांस्कृतिक उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए बताया कि यदि दूरदर्शन द्वारा रामायण और महाभारत का संप्रेषण न हुआ होता तो हमारी नयी पीढ़ी भारतीय संस्कृति से एकदम कट जाती। सबसे अधिक विदेशी छात्रों को आकृष्ट करनेवाला भारतीय कला केन्द्र केरल कला-मंडलम अपने कला कार्यक्रमों द्वारा भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों का प्रचार करता रहा है। मलयालम के प्रमुख पत्रकार एवं केरल फिल्म विकास निगम के अध्यक्ष श्री. पी. गोविन्द पिल्लै ने कथकलि में नये इतिवृत्तों को समा लेने के लिए किये जा रहे प्रयोगों की चर्चा की। केरल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कलामंडलम के सचिव श्री. ईय्यंकोट श्रीधरन ने सूचित किया कि फ्रांस की कला संस्था "केलि" के निमंत्रण पर कलामंडलम का एक दल योरोप के त्रिमासीय पर्यटन पर निकल रहा है। यह दल योरोप में शेकस्पियर के अंग्रेज़ी नाटक पर आधारित और पेरिस के कलामर्मज्ञ डा० डेविड मक्रूवी के सहयोग से रचित कथकलि "किंगलियर" प्रस्तुत करेगा जिसमें कोर्नीलिया की भूमिका में कलामंडलम की एक फ्रांसीसी छात्रा श्रीमती आनेट लेडे अभिनय कर रही हैं। रात को कलामंडलम के पन्द्रह वादक कलाकारों ने श्री. मट्टन्नूर शंकरन कुट्टि मारार के नेतृत्व में "वाद्यमंजरी" नामक मेलक्रम प्रस्तुत किया। उस कार्यक्रम में पंचवाद्यम, केलि, मेलप्पदम, जैसे मनोहर तालवादन क्रमों का सुन्दर सामंजस्य मिला। मद्दलम, चेण्टा, तिमिला, इटक्का, कोम्पु और इलत्तालम नामक केरलीय "तालवाद्य" बडी कुशलता से चेम्पटा और अटंता नामक तालों के चतुरश्र, मिश्र, तिश्र और खण्ड कालों में बजाये गये। डेढ़ घंटे के इस समन्वित कार्यक्रम के बाद 'किंगलियर" कथकलि का मंचन हुआ।

27-7-1989 को पूर्वाह्न में आयोजित संगोष्ठी में "परंपरागत कलाओं" पर विशद चर्चा चली। डा० वी. एस शर्मा और श्री. चेंगारप्पल्ली नारायणन पोट्टी ने इस बात पर ज़ोर दिया कि चूँकि कथकलि जैसे कलारूपों के आस्वादन के लिए उनकी हस्तमुद्राओं आदि का परिचय अपेक्षित है इसलिए कला समितियों को चाहिए कि वे इच्छुक आस्वादकों को आस्वादन की क्षमता प्रदान करें। क्या धार्मिक अनुष्ठानों से संबंधित कलारूपों को उनकी धार्मिक पृष्ठभूमि से उखाड़ कर के उनमें नये इतिवृत्त भर दिये जायें या नहीं ? क्या सामन्ती सभ्यता से जुडे हुए कलारूपों को बदली हुई सामाजिक व्यवस्था के अनुरूप ढाला जाये या नहीं ? इन मुद्दों पर विद्वान एकमत नहीं हो सके। प्रो० एम. के. सुकुमारन नायर जैसे कुछ विद्वानों ने कहा कि इन कलारूपों को बदलते सामाजिक ढाँचे के अनुरूप ढालना उचित नहीं होगा। कुछ विद्वानों ने चाहा कि धार्मिक अनुष्ठानों से जुडे कलारूपों को धार्मिक अनुष्ठानों के ही परिवेश में आम मंचों पर भी प्रस्तुत किया जायें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपराह्न में आस्वादकों के लिए कथकलि के आंगिक और सात्विक अभिनय का डेमोन्स्ट्रेशन किया गया और नवरसों के अभिनय की रीति का परिचय दिया गया।

सायंकाल में आयोजित समापन सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए केरल की माननीय राज्यपाल श्रीमती रामदुलारी सिन्हा ने कहा कि कला और संस्कृति से अलग होने पर जीवन की मनोहारिता और चारुता नष्ट हो जाती हैं। केरल कलामंडलम महाकवि वल्लत्ताल द्वारा विश्व संस्कृति को दी हुई भेंट है। ऐसे कलोत्सवों को उन्होंने अत्यंत उपयोगी बताया। केरल कलामंडलम द्वारा प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिका का प्रमोचन भी माननीय राज्यपाल ने किया। केरल विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० जी. बालमोहन तंपी अध्यक्ष रहे। प्रो० तंपी ने इस विसंगति पर खिन्नता प्रकट की कि हमारा समाज श्रेष्ठ कलाकारों का उचित समय पर उचित आदर नहीं करता। कला प्रतिभाओं का प्रोत्साहन पनपती अवस्था में तो उनके विकास में सहायता करेगा। जीवन की सन्ध्यावेला में जब मानसिक और शारीरिक दृष्टि में कलाकार शिथिल हुए होते हैं तब समाज के आदर सम्मान से क्या लाभ? फिल्मों में मार-पीट या प्रेम का अभिनय करनेवालों को जब लाखों रुपये का पारिश्रमिक मिलता है तब दीर्घ साधना करनेवाले कथकलि के कलाकारों को बहुत कम मान्यता मिलती है। रातको "लवणासुरवधम" और "नलचरितम" नामक कथकलियों का मंचन हुआ।

केरल कलामंडलम नामक संस्था 1927 से कला की सेवा कर रही है। कथकलि, कूटियाट्टम, भरतनाट्यम, मोहिनियाट्टम, कुच्चिप्पुटि, ओट्टन तुल्लल जैसे दृश्य कला रूपों में यहाँ करीब साठ समर्थ आचार्यों के नेतृत्व में संयत प्रशिक्षण दिया जाता है। यह संस्था केरल में तृशूर से चालीस किलोमीटर उत्तर में स्थित वल्लत्तोल नगर में है। छात्रों को यहाँ बारह साल की उम्र में प्रवेश दिया जाता है।

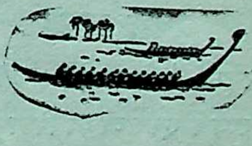

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माँ का शाप

श्रीमती तंकम्मा मालिक

[पर्दे के पीछे से आवाज़ आती है]

महाराज, न जाने क्यों, आज मेरा मन वहुत उदास है। युद्ध में भाग लेने की बिलकुल इच्छा नहीं है।

दूसरी आवाज : शान्त हो जाओ आचार्य। धैर्य धारण करो। मुझे देखो, कितने दिनों से इस शर-शय्या पर पड़ा हुआ हूँ। इस युद्ध का अन्त देखे बिना मैं मृत्यु को भी वरण न कर पाऊँगा। आप युद्ध में न भाग लें तो कौरव उसका दूसरा उद्देश्य समझेंगे।

पहली आवाज : न जाने क्यों आज वह शाप—उस माँ का शाप फिर मेरे कानों में गूँजने लगा है।

दूसरी आवाज़ : किस माँ का शाप?

पहली आवाज़ : बताता हूँ...बताता हूँ...

प्रथम दृश्य

[घोर वन में स्थित एक झोंपडे का भीतरी दृश्य। एकलव्य का पिता बाहर से झोंपडे के भीतर प्रवेश करके पुकारता है]

माला अरी ओ माला

[माला का प्रवेश]

माँ माला : क्यों चिल्लाते हो?

पिता : वो-वो कहाँ है? तेरा लाड़ला

माँ : कौन? एकलव्य?

पिता : और कौन? आज पूरा वन छान डाला। एक खरगोश तक नहीं मिला।

माँ : वह आज भी सवेरे राजमहल के मैदान गया है। राजकुमारों की अस्त्रविद्या देखने। उस हम भीलों की चाल में रुचि नहीं। मुझे लगता है जो किसी के शाप से वह मेरे पेट में पैदा हो गया होगा।

पिता : बक बक बन्द करो। तूने सर चढ़ा कर उसको बिगाड डाला है। उसे क्यों नहीं समझाती, लुक छिपकर राजकुमारों का संस्कार पाठ पढ़ कर मित्रों को सुनाना ठीक नहीं। हम शूद्रों को विद्या सीखना मना है। वन है हमारा राज्य।

माँ : शूद्र मनुष्य नहीं है क्या? कौन कहता है विद्या सीखना हमारे लिए मना है? एक बात पूछूँ? आज घर घर में जो रामायण पढ़ी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाती है, वह किसने लिखी है? अरे, तुम्हें इसका क्या पता?

पिता : मैं हार गया री। यह बताओ, उस वाल्मीकि के सिवा और किसी का नाम बता सकती हो? संयोग से वह नामी बन गया। ओह, तेरे पिता वन का राजा हैं न? उन्होंने जो जो कथायें तुम्हें सिखाई हैं, वह सब दूध में घोल-कर तुमने बेटे को पिलाया है।

माँ : हाँ, मेरे पिताजो को तुम जैसे बुद्धू ही दामाद मिला है। बेटे की उन्नति नहीं, अवनति ही तुम चाहते हो। उसे प्रोत्साहन देने की जगह हमेशा डराते धमकाते रहते हो। देखना, एक दिन वह नामी बन जायेगा। हमारा कुल-दीपक है वह। जिस रास्ते से वह चलना चाहे उसे छोड़ दो।

पिता : लड़ाई झगड़ा बन्द करो। वह जाल दे दो। जाकर देखता हूँ कुछ हाथ आता है कि नहीं।

दूसरा दृश्य

[एकलव्य का झोंपडा। माला बैठकर कुछ काम कर रही है। एकलव्य प्रवेश करता है। हाथ में एक थैला है। दूर से ही पुकारता है]

एकलव्य : माँ, माँ बहुत भूख लगती है। भोजन दे दो।

माँ : आज चूल्हा तक नहीं जलाया है बेटा। तेरे बापू के जाल में एक चूहा भी नहीं फँसा है।

एक : लगता है तुम भी भूखी हो। चिंता मत करो माँ। मेरे इस थैले में कुछ फल हैं। आज यह खाकर भूख मिटायेंगे। कल एक क्या, दस खरगोश ला दूँगा।

माँ : अच्छा यह तो बता, सबेरे से अभी तक कहाँ था? क्यों इस तरह राजमहल का द्वारपालक बनकर जीवन का सत्यनाश करता है? तेरे बापू तुझसे कुछ और ही आशा रखते हैं।

एक : उस दिन मृगया को आये गुरु और राजकुमारों को मैं ने जंगली झरना दिखाया था न? वह बात गुरुजी भूले नहीं। आज वह मुझे पहचान गये और बातें भी की।

माँ : तुझे शिष्य बनायेंगे?

एक : अवश्य बना लेते। पर राजकुमार और गुरुपुत्र हठ करने लगे कि शूद्र को शिष्य बनायेंगे तो वे लोग पढ़ने न आयेंगे।

माँ : हाँ फिर?

एक : मैं ने गिडगिड़ा कर कहा कि दूर एक कोने में बैठकर पढ़ूँगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परन्तु कुमार दुर्योधन अर्जुन से कहने लगे कि इसे पढ़ायेंगे तो यह तेरा भी गुरु बन जायेगा। यह परिहास सुनकर सब ताली-बजाकर हँसने लगे तो अर्जुन कुमार को गुस्सा आया। वह मैदान छोड़कर चला गया। तब गुरुपुत्र अश्वत्थामा ने आकर लात मारकर मुझे मैदान से बाहर कर दिया माँ।

माला : क्या कहा? लात मारकर बाहर कर दिया? तुझे-इस जंगल के राजा के नाती को-लात मारा उस भिखारी ब्राह्मण के लडके ने? अब की बार मृगया करने को आने दो, मैं उसके पाँव काट डालूँगी।

एक : शान्ति, शान्ति, माँ शान्ति। यह सब देख कर गुरु यही मंत्र जप कर मेरे पास चले आये थे। उन्होंने मुझे आश्वासन दिया हाथ उठाकर आशीर्वाद दिया। अपने बेटे को डाँट कर थोडा जल मेरे ऊपर छिड़का। तब भी वे कुछ मंत्र फूँक रहे थे।

माँ : इसे कहते हैं, घाव पर नमक छिड़कना। मंत्र फूँका, मंत्र।

एक : नहीं माँ, ऐसा मत कहो। गुरुनिंदा पाप है। उनको मैंने अपना गुरु मान लिया है। वह मंत्र अब भी मेरे कान में अमृत-वर्षा कर रहा है, 'ओम, शाँन्ति, शाँन्ति'। मैंने उनके चरणों की धूलि सर पर डाल दी, तब उन्होंने फिर आशीर्वाद दिया कि मेरी मनोकामना सफल हो।

माँ : कुछ भी हो, वह भीरु है। शूद्र को विद्या दान नहीं कर सकता। उसके जैसे स्वार्थी ब्राह्मणों ने ही यह नियम बनाया है न? अच्छा, छोड दो, यह बताओ, अब क्या विचार है? इस तरह राजकुमारों की लात मार सहना छोड़ कर अपना परंपरागत धंधा सीख लो। पिताजी की सहायता करके यहीं रहना।

एक : मैंने तीर चलाना सीख लिया है। पिताजी जाल बिछाकर एक खरगोश की प्रतीक्षा में घंटों बैठे हैं। इस बीच देखना मेरे तीर खाकर दस खरगोश मरेंगे। चिन्ता न करो माँ। मैं तुम दोनों को कभी भूखों मरने न दूंगा। पुत्र धर्म न भूलूँगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीसरा दृश्य

पिता : माला, तेरा बेटा वहाँ क्या कर रहा है ? मिट्टी गूँद रहा है ! कुछ मित्र भी हैं चारों तरफ़ ।

माँ : वह आचार्य की मिट्टी की मूर्ति बना रहा है ।

पिता : माटी की मूर्ति बना रहा है ? लात मारकर अभी मैं उसे चूर चूर कर दूँगा । मुझे बड़ा गुस्सा आ रहा है ।

माँ : गुस्से को दबा दो जी । मुझे मालूम है अब तुम्हें क्या चाहिए । बड़ी भूख लग रही है न ? आओ । घर में खरगोश का माँस और पीने के लिए बेर का रस रखा है यहीं तुम चाहते हो न ? (हँसती है)

पिता : हाय, खरगोश का मांस ? सच कहती हो ! तेरी माँ ने भेजा है क्या ?

माँ : माँ बाप किसी ने नहीं भेजा है । हमारा बेटा लाया है जी । पत्थर मारकर पकड़ा है । कितना समर्थ निकला हमारा बेटा । कह गया है अब तीर चलाना आता है । उससे शाम को दस को मारेगा ।

पिता : उसको यह सब किसने सिखाया ?

माँ : उसकी साधना ने । जब जब राजकुमार मृगया करने आते थे, वह पेड पर चढ बैठता था । कुमारों का पत्थर मारना तीर चलाना सब देख देख कर स्वयं सीख लिया है । पर उसका कहना है बिना गुरु की विद्या अपूर्ण रहती है ।

बाद : इसीलिए वह गुरु की माटी की मूरत बना रहा है ? गधा कहीं का ।

माला : चुप रहो जी । वह तुम्हारी तरह गधा नहीं है । मेरे बापू की तरह बुद्धिमान है । कल वही इस जंगल का राजा बनेगा ।

बाप : बने बने, हमें कोई आपत्ति नहीं । (हँसता है)

माँ : तुम उसे अंट संट बक कर तंग मत करो । कल सबेरे गुरुमूर्ति की पूजा होगी । बापू ने कहा है पूजा का सामान पहुँचा देंगे । वे भी आयेंगे और हमारे पुजारीजी भी पधारेंगे ।

चौथा दृश्य

[एकलव्य का घर । पुजारी हाथ में एक लोटा, कुछ फूल वगैरह लेकर आते हैं ।]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुजारी : मालारानी, ओ रानी कहाँ हो ? [माँ आती है]

माँ : नमस्कार पुजारी जी। आइये। आप अब भी मुझे रानी क्यों पुकारते हैं ?

पुजारी : तुम इस वन की रानी हो, इसलिए।

माँ : परिहास बन्द कर लीजिए। यह तो ठीक है इस वन के सबसे बलशाली की पत्नी हूँ। और बुद्धिमान और समर्थ बेटे की माँ भी।

पुजारी : मेरी पुत्री के साथ मैं ने तुम्हें पढ़ाया है। तब मैं तुम्हें रानी पुकारता था। पर आज तुम सचमुच रानी बन गयी हो।

माँ : मेरे पिताजी जीवित हैं। उनके दत्तक पुत्र भी।

पुजारी : तुम्हारे बन्धुओं ने महाराजा से मिलकर कहा है दत्तक पुत्र को नहीं, तुम्हें ही वे उनके बाद रानी मानेंगे। तुम्हारे बाद तुम्हारा पुत्र। इस तरह तुम्हारे परिवार में ही यह परंपरा बनी रहेगी।

माँ : जाने दीजिये, मुझे रानी वानी बनने की इच्छा नहीं है। हाँ, मेरे बेटे का भविष्य उज्वल हो, यह अभिलाषा है। आप के साथ बापू क्यों नहीं आये ? वे आयेंगे नहीं क्या ?

पुजारी : आयेंगे क्यों नहीं आयेंगे। ढ़ेर सारे सामान जमा कर रहे हैं। कल सबेरे पहुँच जायेंगे। अब वह मूर्ति मुझे दिखा दो। पुत्र कहाँ है ?

माँ : चलिए, दिखाती हूँ। बाप बेटे दोनों वहीं पर मिलेंगे।

पुजारी : चलो, चलें।

पाँचवाँ दृश्य

[वन में एक वृक्ष के नीचे भीम बैठा है। गुरु द्रोणाचार्य प्रवेश करते हैं।]

द्रोण : वत्स भीम, तुम यहाँ बैठे हो? मैं ने कहाँ कहाँ ढूँढ़ा। शेष सब कहाँ गये ?

भीम : प्रणाम गुरुदेव। झरने में पानी पीने गये हैं। पर अर्जुन नहीं गया। वह उस तरफ़ गया है। मैं उसकी प्रतीक्षा कर रहा हूँ।

द्रोण : आज मृगया के लिए नहीं जाते, यही निश्चय किया था न कल। एकाएक यह क्या हुआ ?

भीम : दुर्योधन ने पितामह से हठ किया तो उन्होंने शकुनि मामा के साथ हमें भी भेज दिया। वैसे तो हम आप की प्रतीक्षा में थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्रोण : मुझे महाराजा से मिलना था। जाते समय तो युधिष्ठिर और दुर्योधन को शकुनि जुए का खेल सिखा रहे थे। वापसी में मालूम हुआ तुम लोग मृगया के लिए गये। जुए का खेल भी मैं पसन्द नहीं करता और शकुनि को लेकर वन में आना भी।

भीम : आप चिन्ता न करें। हमें वे लोग कुछ भी न कर पायेंगे। उन सौ केलिए मैं अकेला ही काफ़ी हूँ।

द्रोण : बस, बस। डींगें मारना बन्द करो। अच्छा यह बताओ, कल तुमने दुर्योधन को नदी में डुबोकर मारना चाहा क्या? राजमहल में यही चर्चा है।

भीम : तैरते समय उसने मेरा पाँव पकड़कर खींचा। बीच नदी में ले जाकर मुझे मारना चाहा। आत्मरक्षा के लिए मैं ने उसका गला पकड़ लिया था। तब मुझे छोड़ा। यही सच है। मैंने पितामह से सब बातें बताई थीं।

द्रोण : तुम लोगों का यह खेल अच्छा नहीं है। देखता हूँ भाई-भाई में प्रेम नहीं, शत्रुता बढ़ती है। यह ठीक नहीं। लोग मुझे ही दोषी ठहरायेंगे। पितामह भीष्म भी इन बातों से दुखी हैं।

भीम : गुरुदेव, आप हमें ही डाँटते हैं। कौरवों को कुछ भी न कहते। हम संख्या में कम हैं न? पाँच कहाँ और सौ कहाँ? उनसे आप डरिये। सौ के लिए हम पाँच ही बहुत हैं।

गुरु : मैं किसी से भी नहीं डरता। अच्छा, छोड दो, ईश्वर भला करे। मैं अर्जुन को लेकर आता हूँ। तुम यहीं ठहरो।

[द्रोणाचार्य जाते हैं और थोड़ी ही देर में अर्जुन को साथ लेकर आते हैं। अर्जुन बहुत चिंतित है।]

गुरु : भद्र अर्जुन, तुम इतना उदास क्यों हो? आज भी दुर्योधन से झगड़ा किया? ऐसी बात है तो आगे मैं किसी को भी वन न भेजूँगा।

अर्जुन : मैंने किसी से भी झगडा नहीं किया है। मगर अपने आचार्यजी के दो मुख आज हमने देखे हैं।

गुरु द्रोण : वत्स, तुम यह क्या कह रहे हो? कौरवों को मैं अधिक पसन्द करता हूँ, यही तुम्हारा अभिप्राय है? सुनो पुत्र, पाँचाल राजा का तिरस्कार और अपमान मुझे सहना पड़ा। दूसरी ओर दरिद्रता। आत्महत्या को भी मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तैयार हो गया था। तब तुम्हारे पितामह ने मुझे आश्रय दिया था। यही नहीं राजकुमारों को गुरु बनाकर सम्मानित भी किया। अन्धे होने पर भी भक्त-शिरोमणि धृतराष्ट्र मेरी पूजा करते हैं। पतिव्रता रत्न गाँधारी माता जब कभी मिलती हैं रो राकर कौरव को बुराइयों से बचाने की याचना करती हैं। इसलिये मैं कौरवों के साथ रहता हूँ। परन्तु सब जानते हैं मैं तुम पाँचों को अपने पुत्र से अधिक चाहता हूँ। विशेषत: तुम्हें।

अर्जुन : आपकी धारणा निराधार है। किसने कहा आपके वात्सल्य पर हमें अविश्वास है? मैं जानता हूँ कि आप कौरवों से अधिक मुझे और अश्वत्थामा को चाहते हैं।

द्रोण : हाँ यह भी सच है। मगर मैं ने जो जो विद्यायें तुम्हें सिखायी हैं, उन में कुछ अश्वत्थामा को भी अभी तक नहीं सिखाई हैं। इसलिए तुम्हें कभी कभी अकेले बुला लेता हूँ।

अर्जुन : मैं भी इसे सत्य समझकर गर्व करता था। लेकिन आज मालूम हुआ कि...

द्रोण : (जल्दी में) क्या मालूम हुआ? बताओ।

अर्जुन : हमने जिस भील कुमार को लात मारकर बाहर कर दिया था, वह हम सब से बढ़कर शस्त्र-विद्या में पारंगत बन गया है। हम से छुपाकर आपने सभी विद्यायें उसे सिखायी हैं।

द्रोण : तुम यह क्या कह रहे हो— भील कुमार? ओह स्मरण आया। एकलव्य? मैंने उसे क्या सिखाया? उस दिन के बाद आज तक वह मेरे सम्मुख नहीं आया। विश्वास करो पुत्र। गुरु असत्य नहीं बोलेंगे। सविस्तार बताओ।

अर्जुन : आज मामा शकुनि के साथ हम मृगया केलिए आ गये।

द्रोण : हाँ, मुझे कुछ आवश्यक काम था। इसलिए साथ न आ सका।

अर्जुन : हम बड़े उत्साह से मृगया कर रहे थे। एक सफेद खरगोश के पीछे मैं दौड़ा। तब देखता हूँ कहीं से किसी ने एक पत्थर फेंका है और खरगोश गिर गया। एक कौए को लक्ष्य करके मैंने तीर भेजा। उसके लगने से पहले ही एक साधारण तीर लग कर वह नीचे गिर गया। हमने पशुओं को आकर्षित करने केलिए एक श्वान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को जंगल के अन्दर भेजा। कुछ समय के उपरान्त उसकी भूँक बन्द हो गयी।

द्रोण : वह भी मारा गया ?

अर्जुन : जा कर देखा तो वह श्वान नीचे पड़ा तड़प रहा था। उसका मुँह शरों से भरा हुआ था, पर एक बूँद रक्त भी नहीं गिर रहा था। चारों ओर देखा तो एक वृक्ष के ऊपर वह भील कुमार बैठा था, और हँसकर बोला—'देखा कुमार इस अच्छूत की कुशलता।' यह कहकर वह पेड से नीचे कूद कर हमारे सामने आया। उसे देख गुरुपुत्र को बड़ा गुस्सा आया। तब...

द्रोण : तब ? तुम क्यों चुप हो गये? पुत्र ने फ़िर उसे लात मारी ?

अर्जुन : नहीं, परन्तु वह लड़का गर्व से कहने लगा-'मारिये लात। स्मरण रखना यह नगर नहीं, आरण्य है। हम यहाँ के राजा का नाती हैं। हम इच्छा करें तो यहाँ कुछ भी कर सकते हैं। पर हम अतिथि की पूजा लात से नहीं फ़लमूल से करते हैं। चलिए हमारे झोंपडे में।' यह कहकर श्वान के मुँह से सभी तीर उसने निकाल दिये, बिना चोट करके ही।

द्रोण : यह तो आश्चर्यजनक घटना है। उसके उपरान्त क्या हुआ ?

अर्जुन : तब कौरव मुझे चिढ़ाने लगे और एकलव्य की जय पुकारने लगे। अश्वत्थामा ने उससे पूछा—अरे भील कुमार तेरे गुरु कौन है? वह बोला—जो आपके गुरु हैं वही मेरे भी गुरु हैं। विश्वास न आता तो चलिये मेरे साथ। हम सब उसके साथ चले। उसने जो कहा, सच कहा।

गुरु : अर्थात्......

अर्जुन : सच गुरुदेव। एक चबूतरे पर आप की मिट्टी की मूर्ति खडी है, फूल-मालायें पहनी हुई। चारों ओर एक प्रकार का सुगन्ध फैला हुआ था।

गुरु : यह तो आश्चर्य की बात है। एकलव्य तुम धन्य हो। अर्जुन, मुझे वहाँ ले चलो। मैं उस कुशल बालक से मिलना चाहता हूँ।

अर्जुन : चलिये अपने नेत्रों से देखिये उसकी साधना। वह मुझसे भी बडा धनुधर्र बनेगा।

(निराशा से बोलता है)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरु : शांत हो जाओ वत्स। ऐसा कभी न होगा।
(अर्जुन का आलिंगन करते हैं)

दृश्य छे

[एकलव्य का घर। वह प्रवेश करता है। उसके दायें हाथ के अंगूठे से रक्त गिरता है।]

एकलव्य : माँ, माँ, तुम कहाँ हो ?

माँ : (आती है) क्या है बेटा ?

एक : मेरे अंगूठे पर हरी पत्ती का रस निचोडो जो तुमने पिताजी के पाँव पर लगाया था। हाय, बड़ी जलन होती है।

माँ : (घबराकर) हाय, हाय, यह क्या हुआ ? रक्त बह रहा है। वन के किसी जंतु ने काटा क्या ? हे भगवान ! तेरा अंगूठा कहाँ है। अरे सुनते हो, तुम कहाँ हो? जल्दी आओ। (रोने लगती है)

एक : माँ। तुम वीर माता होकर रोती हो ? अंगूठा काट कर मैंने गुरुदक्षिणा चुकायी।

माँ : क्या कहा ? गुरुदक्षिणा ? उस मिट्टी की मूरत को अंगूठा दक्षिणा में दे दिया ?

एक : हाँ माँ, आज उस मूर्ति में प्राण और चेतना आ गयी। वह सजीव होकर मेरे सामने आयी। साक्षात गुरु द्रोणाचार्य अपने प्रिय शिष्य अर्जुन के साथ मेरे सम्मुख प्रत्यक्ष हुए। मेरी विद्यायें देख कर प्रसन्न हो गये और आशीर्वाद दे दिया। आज मेरा जन्म सफल हुआ।

माँ : भाषण छोड दो। यह बताओ, अंगूठा किसने काटा ? अर्जुन ने?

एक : नहीं माँ, वह चुप रहा। आचार्य जी बोले, दक्षिणा दिये बिना शिक्षा पूर्ण नहीं होती। दक्षिणा में उन्होंने मेरे दायें हाथ का अंगूठा माँगा।

माँ : तुम बुद्धिहीन ने तुरन्त काट डाला ! वह प्राप्त कर वह पत्थर दिलवाला प्रसन्न हो गया क्या ?

एक : नहीं माँ, वे मुझे छाती से लगाकर रो पडे। और पूछने लगे- बेटा यह तुमने क्या कर डाला। मैं तो सिर्फ़ तुम्हारी परीक्षा ले रहा था। उन्होंने मेरे सिर पर हाथ रख कर आशीर्वाद किया। माँ एक अंगूठा गया तो क्य हुआ? बायें हाथ का अंगूठा काफ़ी है। हाय, तुम भी रो रही हो माँ? (आँसू पोंछता है)

[माँ का मुख क्रोध से लाल हो जाता है]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मां : मुझे तुम पर गर्व है बेटे, तुम कर्मवीर हो। भील कुमार उस भिखारी ब्राह्मण की तरह भीरु नहीं हो सकता। जब तक यह संसार रहेगा तुम्हारा नाम अमर रहेगा। पर, द्रोण, ब्राह्मण वेष धारण किया हुआ चंडाल। तेरा अन्त्य यातनापूर्ण रहेगा। अपने पुत्र के नाम पर तड़प तड़प कर तुम्हारे प्राणे निकलेंगे। तुम्हारे मुख में पुत्र के हाथ से एक बूंद जल भी न पडेगा। जिन को प्रसन्न रखने के लिए मेरे निष्कलंक पुत्र को यह कठिन यातना तुमने प्रदान की वे ही तुम्हारे अंतक रहेंगे। यह एक पतिव्रता भीलनी का शाप है। आज से तुम चैन से न सो पाओगे, न सो पाओगे।

(भीतर से आवाज़ आती है-यही था, यही था पितामह वह शाप।) ❀

तरक्कूट्टम अयलक्कूट्टम ग्रामकूट्टम

केरल के आलपी जिले के अपलपु.षा नामक स्थान में वर्षों से सामाजिक पुनर्गठन का एक प्रयोग चल रहा है। इस का नेतृत्व एक सेवानिवृत्त अध्यापक श्री. पंकजाक्ष कुरुप कर रहे हैं। इस के प्रचार के लिए वे 'दर्शनम' नाम की एक पत्रिका भी मलयालम में निकालते हैं।

पडोसियों को मैत्री के सूत्र में पिरोना ही इस कार्यक्रम की शैली है। दस दस घरों का संघ एक तरक्कूट्टम कहलाता है। दस दस तरक्कूट्टमों का संघ एक अयलक्कूट्टम कहलाता हैं। दस दस अयलक्कूट्टमों का संघ एक ग्रामक्कूट्टम कहलाता है। सप्ताह में एक बार तरक्कूट्टम के सदस्य—पडोस के दस घरों के आबालवृद्ध स्त्री पुरुष—किसी घर में या और किसी जगह मिलते हैं। कुशल मंगल पूछते हैं। हर एक घर के सुख दु.ख में पडोसी भी भाग लेते हैं। इस से वैर मिट जाते हैं। मैत्री बढ जाती है। करुणा से प्रेरित सहायता से मुदिता बढती है। छोटी छोटी समस्यायें अपने आप सुलझ जाती हैं।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :—

डी. पंकजाक्षकुरुप, संपादक, दर्शनम,
कंजिपाटम, आलपी-68005

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो कवितायें

शकुन्तला सिरोठिया

सुरभि पुरुष

यह क्या !
तुमने अपनी निर्मल दृष्टि
कुंठित कर ली प्रकाश-पुरुष
कृत्रिम दीपों पर निर्भर
कब तक टलोगे सत्य को ?
पकड़ो पकड़ो !
अपनी नयन—ज्योति
नहीं तो
सूरदास बन जाओगे
तेज पुञ्ज !
कगार कर खड़े गाफिल
संभलो, नहीं तो
डूब जाओगे अविवेकी !
अंतर में सन्निहित
सुगंध पहिचानो कस्तूरी-मृग
अन्यथा -
उलझ कर मर जाओगे
सुरभि पुरुष !

शत्रुघ्न

मैं एक सैनिक हूँ ।
संकटों को हँस हँस कर
झेला हूँ
अंगारों पर कूद कूद
खेला हूं
जीवन को चख चख कर
जिया है
संघर्षों का खुलकर
सामना किया है ।
हाँ उन कायर
कपटियों से त्रस्त हूँ जो
शत्रुओं को छिप कर
मेरा द्वार दिखा जाते हैं ।
फिर भी मैंने
पीठ घुमाई नहीं है
आंखें चुराई नहीं हैं
अन्तर का विश्वास
सुरक्षित है
मेरा सैनिक शत्रुघ्न
चैतन्य है ।
मैं एक सैनिक हूँ ।

109-बाई का बाग
इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मलयालम कहानी

एक क्लर्क की डायरी

मूल : ई. वी. श्रीधरन
अनु : के. राधाकृष्णन, अयिरूर

मार्च 28

मेरी जिन्दगी एक मशीन है। एक ऐसी जिन्दगी जिस में कुछ भी नया होने की संभावना नहीं है। किसी ने आज तक मुझसे प्रश्न नहीं किया कि तुम क्यों जा रहे हो? अब अगर कोई पूछेगा तो भी मैं इस प्रश्न का क्या जवाब दूँ, यह मुझे मालूम नहीं। मैं जानता हूँ कि मैं एक क्लर्क हूँ। हर महीने की तरह आज शाम को भी चार बजे मुझे 645 रुपये मिले। तनख्वाह लेकर मैं ऑफीस के गेट के बाहर आया। श्मशान पार करके महात्मा गाँधी रोड में घुमा। हर महीने तनख्वाह मिलने के दिन मैं शहर जाया करता हूँ। महात्मा गाँधी रोड की दूकान से एक पैन्ट मैकडोवल व्हिस्की खरीदा करता हूँ। आज टूथ पेस्ट, व्हिस्की, एक पैकट विल्स सिगरट आदि खरीदने में 45 रुपये खर्च हुये। अभी तक दो पेग व्हिस्की पी ली। पाँच सिगरेट भी खतम हो गये। बगल के कमरे में बैठे अन्य क्लर्क भी पी रहे हैं। रात में किसी समय वे अपने कमरे में सो जायेंगे, और मैं अपने कमरे में जाकर सो जाऊँगा। सोने से पहले मैं यह पैंट पूरा करूँगा।

मार्च 29

सबेरे उठते ही कमरे का किराया 125 रुपये दे दिये। ढाबे के हिसाब में 275 रुपये थे। क्या मुझे इतने रुपये का खाना खाना चाहिये? जिसको 645 रुपये तनख्वाह मिलते हो उस केलिए 275 रुपये का खाना खा लेना किसी भी प्रकार से ठीक नहीं है। 25 रु खर्च करके साबुन पौउडर और नारियल का तेल खरीद लिये। अब मेरे पास 175 रु बचे हैं। अप्रैल का लंबा महीना मेरे सामने पडा है। 250 मील की दूरी में मेरी माँ है। कल माँ को 150 रु भेजना है। उसके बाद 25 रु बचेंगे। सिर्फ 25 रु और मैं और अप्रैल का महीना।

मार्च 30

175 रु आज फिर कम होकर 170 रु हो गये। दोपहर को मैं ने एक पैकट विल्स सिगरट खरीदकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पी। मैं तो दिनेश बीडी का आदी हूँ, आज मुझे क्या हो गया? मेरे होंठ बीडी से ऊब गये हैं। कल 150 रु माँ को भेजना है। 20 रु बचेंगे। अप्रैल का पूरा महीना मेरे सामने है।

मार्च 31

यह रुपया छोडने की मुझे एकदम इच्छा नहीं हो रही है। आज सबेरे माँ को रुपये भेज देने थे। दिन भर मैं 170 रु को लेकर बहुत कुछ सोचता रहा। माँ को 100 रु भेजने से चल जाएगा न? धनादेश पत्र के नीचे लिख दूँगा—माँ, इस महीने कुछ तंगी है। 70 रु को लेकर मैं बहुत कुछ मन में सोचता रहा। मेरी स्थिति से किसी भी प्रकार मेल न खानेवाली बातें।

अप्रैल 1

राम भैया के यहाँ से मिली एक बोतल अरक से मैं ने आज का दिन बिता लिया। संतरे के छिलके से बनाया हुआ अरक। यह स्पेशल अरक किसी ने राम भैया को भेंट की थी। अरक में डूबकर राम भैया ने सात आठ अश्लील गाने गये।

अप्रैल 2

170 रु छोडने को मन नहीं करता। शाम तक मैं सोचता रहा। अंत में फैसला कर लिया कि माँ को 50 रु. भेजने से काम चल जाएगा। पाँच बजे मैं शहर गया। दो पेग जीन पीकर मन के बोझ को कुछ हलका किया। शाम तक रेलवे स्टेशन के आसपास और बस स्टैंड में चक्कर काटा। अंधकार छाने लगा तो जिस चौक पर बाजारू औरतें आकर खड़ी होती हैं उसकी ओर चल पडा। मन में डर था कहीं कोई देख न लें। लेकिन डर दिखाये बिना मैं एक औरत को देखकर हंस पडा। वह सुन्दर नहीं थी, फिर भी स्वस्थ थी। उस ने पूछा—कहाँ जाना है? नगर का कूडा डाली जानेवाली गली में मैं उसके साथ गया। हम लोग एक लॉज में गये। बाजारू औरतों को प्रवेश देने वाला लॉज था वह। लेकिन वह स्त्री उतनी खराब नहीं थी। बहुत रात होने तक वह अपनी जिन्दगी की दुखद घटनायें एक एक करके मुझे सुनाती रही। उसकी जिन्दगी बर्बाद हुई, इसी दुख से उसकी आँखों में आँसू था। तुरंत ही भरी हुई आँखें पोंछकर वह खिलखिला उठती थी। उसे मैं पूरी तरह विश्वास नहीं कर पाया। सभी वेश्यायें ऐसी होती हैं। बोलेगी कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक जमाने में वह राजकुमारी जैसी थी। वह आज की हालत केलिये एक आदमी को दोषी ठहरायेगी। उस पर सभी गलतियाँ थोपेगी। वेश्याओं को मर्द एक क्रूर वर्ग नजर आता है। असहाय स्थिति में पडने के कारण वे कहानियाँ सुनाती हैं। हर वक्त वेश्या अपने को एक ट्रेजडी की नायिका बनाकर दिखाती है।

अप्रैल 3

कल रात मैं आप लोगों की दुनिया में नहीं था। 40 रु. देकर मैं ने एक कमरा लिया। हम दोनों ने मिलकर 40 रु का खाना खाया। सुबह होने पर उसने पत्नी के समान मुझे जगाया। अर्ध-नंगेपन के आलस्य में वह मेरी ओर देखकर मुस्कुराई। उसके तेल और साबुन से मैं ने स्नान किया। उसके पेस्ट और ब्रश से मैं ने दांत साफ किये। अपने ब्रश को न लेने का वह प्यार से बहुत आग्रह करती रही। मैं ने उसका हाथ हटाया और कहा कि प्यार के आगे यह सब बडी बातें नही है। नहा धोकर सॉडी पहनने के बाद वह मेरे सामने आकर खडो हो गया। "फिर कब मिलोगे?" उसने पूछा। मैं हँस पडा, लेकिन कुछ बोला नही। मेरे दिल में कुछ छटपटा रहा था। दिल

क्लर्कों की दुनिया में जो रहता है उसे चार तारीख को उधार नहीं मिलता। सूद पर मिलना है तो भी 20 तारीख के बाद ही।

का वह आदमी राधिका से बिछुडना नहीं चाहता था। लेकिन वह एक ऐसा अभागा है कि एक वेश्या से भी वह प्यार कायम नहीं कर सकता। मैं ने पचास रुपये का नोट उसकी ओर बढाया और कहा—"अब तुम चली जाओ।" उसके चेहरे पर तुरंत विषाद की गहरी लकीरें खिच गईं। उसने कहा—कम से कम सौ रुपये दीजिये। इस बात को सुनकर मेरे अन्दर कुछ टूटन जैसी होने लगी। मेरे पास जो पैसा था, वह मैंने उसको दे दिया—गिने तक नहीं। उसने भी नहीं गिना। प्यार से मुझे एक बार और चूमने के बाद वह विदा हो गयी। वेश्या के रूप में वह भी सफल नहीं है।

अप्रैल 4

इस महीने मैं माँ को पैसा नहीं भेजूँगा। बीड़ी खरीदने तक मेरे पास पैसे नहीं हैं। चार तारीख को ही उधार देने केलिये कहूँगा तो किसी को अच्छा नहीं लगेगा। 24 से 30 तारीख के बीच किसी से भी उधार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माँगा जा सकता है। क्लर्कों की दुनिया में जो रहता है उसे चार तारीख को उधार नहीं मिलता। सूद पर मिलना है तो भी 20 तारीख के बाद ही। कैसे कटेगा यह महीना!

अप्रैल 5

आज मेरी माँ की चिट्ठी आयी है। माँ कभी भी पैसे केलिये लिखती नहीं है। आज मिली इस चिट्ठी का अर्थ है, बेटा, कम से कम 15 तारीख तक अपना हिस्सा भेजने की प्रार्थना। माँ को क्या लिखूँ। मेरी एक चिट्ठी से माँ को क्या मिलने वाला। ऐसी कितनी चिट्ठियाँ लिखी थीं। केवल पत्र द्वारा माँ बेटा आपस में हालत जानने की कोशिश करते हैं। माँ लिखती है—बेटा, मैं यहाँ ठीक से हूँ। बेटा लिखता है—माँ, मैं इधर ठीक हूँ।

अप्रैल 6

साथ में काम करनेवाले सेतुमाधवन से मैं ने 10 रुपये उधार माँगे। सेतुमाधवन ने कहा उसके पास रुपये नहीं हैं। उल्टे पूछा आज तो सिर्फ छः तारीख हुई है, इतनी जल्दी क्या हो गया? बाद में सोचने लगा मुझे सेतुमाधवन से उधार नहीं माँगना चाहिए था। उसका रुपये से कोई वास्ता नहीं। तनख्वाह मिलने के दिन पूरे रुपये पत्नी को सौंप देना सेतुमाधवन की आदत है। सबेरे जब वह आफिस केलिये घर से निकलेगा तब पत्नी सौदामिनी उसको एक रुपया देगी। उस एक रुपये को भी सेतुमाधवन खर्च नहीं करेगा। सेतुमाधवन कहा करता है—क्लर्कों की दुनिया में ऐसा करने से ही काम चल सकता है। अगर पत्नी सौदामिनी के हाथ में रुपया होगा तो कल दस रुपये लाकर देगा, ऐसा वादा किया सेतुमाधवन ने। 10 रु. उधार लेने के चक्कर में मैं और दो दोस्तों के पास भी गया। एक ने मुझे एक पनामा सिगरट दी। रुपया नहीं मिला तो मैं सोचने लगा—अब दस रुपये मिलने से भी क्या फायदा? एक ओर से माँ तथा दूसरी ओर से राधिका मेरे मन में प्रवेश कर रही हैं। माँ और राधिका के आपस में मिलने के दृश्य की कल्पना करने लगा मैं। जब माँ को पता चलेगा कि उन्हें जो पैसे मिलने थे वह एक रात की बीबी बनकर राधिका छीन ले गई तो......

अप्रैल 7

आज सेतुमाधवन ने 10 रु. उधार दिये। मैं सोचने लगा इस रुपये से क्या करूँ? दस रुपये खर्च करने के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिये मन में कोई ऐसी बात नहीं आ रही थी। तभी एक ऑटो रिक्शा मेरे सामने आकर रुका। मेरे आफिस के बाबू लोग ऑटो रिक्शे में सवारी नहीं करत। मैं रिक्शे में जा चढ़ा। समुद्र तट पर चलने को कहा। लोगों के सामने इस प्रकार की सवारी करना गर्व की बात है। ऑटो रिक्शे में सवारी करते हुए हम बोल सकते हैं कि अरे, थोडा हट जाओ। पैदल चलते समय जो नीतियाँ अपनाते हैं, वह सब ऑटो रिक्शे में सवारी करते समय पालन करने की ज़रूरत नहीं। पैदल चलनेवाला आदमी विपरीत दिशा से आती औरत की ओर नहीं घूर सकता। लेकिन ऑटो रिक्शे में सवारी करते समय 'अरे, तुम कौन हो' ऐसे भाव से किसी भी स्त्री की ओर घूर सकते हैं। सामने दिखाई देनेवाली सभी वस्तुयें पीछे की ओर दौडती हैं। बड़े बड़े वाहन जब रिक्शे को आगे बढने देते हैं और लोगों के दो पैरों के बीच से भी आगे निकलने की चेष्टा जब चालक करता है तब वह दृश्य मुझे बहुत अच्छा लगता है। लेकिन एक क्लर्क क्या हर रोज़ ऑटो रिक्शे में समुद्रतट पर जा सकता है? बाबू लोगों को दुनिया का कोई भी सुख प्राप्त नहीं है।

अप्रैल 8

आज जागते ही मैं ने एक निर्मम दुनिया में प्रवेश किया। मेरे दिन निर्मम भाव से व्यतीत होते रहते हैं। रोज साढे छ: बजे मैं जागता हूँ। आधा घंटा बिस्तर पर ऐसे ही लेटा रहता हूँ। पाखाने की बदबू का भी कोई फर्क नहीं पडता। रोज एक ही रास्ते से चलता हूँ। एक ही होटल में खाना खाता हूँ। आज आठ बजे ही मैं अफिस जाने केलिये निकल पडा। मेरे पास एक भूरा छाता है। कभी मैं ने इसे निकाला नहीं। लेकिन आज मैं ने उसको निकाला, बगल में दबाया। धोती मोडकर, बगल में छाता दबाये मुझे आते देखा तो आफिस में झाड़ू लगनेवाली जानकी थोड़ा सा मुस्कुरायी। एक बूढ़े की तरह मैं कुरसी पर जा बैठा। एक चाय लाने को कहा जानकी से। पाँच रुपये का नोट देखा तो जानकी फिर हँसी। चाय और बाकी साढ़े चार रुपये लेकर धीरे-धीरे आती प्रौढ़ा जानकी को देखा तो मैं ने सिर नीचा कर लिया। चाय पीने से पहले ही पचास पैसे जानकी को दे दिये। सलज्ज मुस्कुराहट के साथ जानकी ने पैसा लेकर आँचल में बाँध लिया। औरत जात तो ऐसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही है। लाज, आँसू और मुस्कुराहट उन लोगों का सबसे बड़ा हथियार है। खाली गिलास लेकर जानकी जाने लगी तो मैं ने उससे कहा—"जानकी, मैं तुम्हें एक गुप्त बात बताना चाहता हूँ। उसे किसी और से मत कहना। कहोगी नहीं न?" मैं ने फिर एक बार पूछा। वह डरे हुये स्वर में बोली—और किसी से नहीं कहेगी। तब धैर्यपूर्वक मैं ने कहा—"जानकी, तुम अभी भी सुन्दर हो!" मैं और जानकी दोनों जोरसे हँस पड़े। हँसने केलिये ही मैं ने ऐसा कहा था। आज दिन भर मैं जानकी के बारे में सोचता रहा। चार बच्चों का पालन करके तकलीफ से जी रही है जानकी। उसका पति पहले ही मर चुका है।

अप्रैल 9

आज साढे पाँच बजे मैं आफिस से निकला। मेरे पास चार विल्स सिगरटें थीं, उसमें से एक पी ली। मन में विचार आया अगर 10 रु. उधार मिले तो ठीक है। लॉज के रास्ते में अरक की एक दूकान है। अरक पीने की इच्छा नहीं है। लेकिन अच्छी तरह सोने की इच्छा से वहाँ गया।

अप्रैल 10

एक अर्ध सरकारी संस्था में काम करनेवाला, एक हजार से ज्यादा वेतन पानेवाला पहली श्रेणी का एक बाबू है गोपालकृष्णन। इस लॉज में आये उसे छः सात महीने ही हुये हैं। लॉज में सब लोग उसे एक अच्छा आदमी समझते हैं। सब लोग उसका आदर करते हैं। उसको मिलनेवाले आदर का कारण उसका वेतन है। बाबुओं के इस शहर में लोग वेतन के आधार पर आदरणीय बन जाते हैं। आज किसीने उसके कमरे में 200 रु. चुरा लिये। शाम के समय कमरे का ताला लगाये बिना वह सिगेरट लेने पास की दूकान तक

बाबूओं के इस शहर में लोग वेतन के आधार पर आदरणीय बन जाते हैं।

गये थे। इसी समय चोर कमरे में घुसकर उसकी कमीज कों जेब से दो सौ रुपये लेकर भाग निकला। लॉज में यह पहली घटना है। रात में सब लोग गोपालकृष्णन के कमरे में गये। मैं भी उनके साथ था। ऐसा लगा दो सौ रुपये उसकेलिये बहुत बड़ी रकम नहीं है। उसको कोई दुख नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पढने केलिये मुझे अच्छी किताब मिल सकती है। लेकिन मैं क्यों अच्छी किताब पढ़ूँ ?

है। वह तो प्रथम श्रेणी का क्लर्क है न ?

अप्रैल 11

आज 250 मि. लि. शराब के नशे में मैं लॉज में वापस आया था। उस समय गोपालकृष्णन का कमरा ठीक से बंद किया हुआ था। कुछ देर तक मैं अपने कमरे में अकेले बैठा रहा। फिर वहुत बार पढने के बाद फेंका गया एक अश्लील उपन्यास कमरे के एक कोने से निकालकर पढ़ना शुरू कर दिया। अब यह उपन्यास मेरी सिराओं को गर्म नहीं करता। बेकार हो गये पीतल के वर्तन की तरह इस अश्लील उपन्यास का आश्रय लेने के अलावा अब और कुछ नहीं कर सकता। मन लगाकर मैं ने उसे पढा। पढने के लिये मुझे अच्छी किताब मिल सकती है। लेकिन मैं क्यों अच्छी किताब पढ़ूँ ? उससे मुझे कोई फायदा नहीं। उपन्यास के चालीसवें पृष्ठ पर गरीब नायिका के कपडे उतरने का स्थान आया तो राम भैया मेरे कमरे में आया। राम भैया ने मुझसे कहा—"गोपालकृष्णन के पैसे किसने चुराये ? मैं इस बात का पता लगाऊँगा ! एक आदमी पर मुझे शक है। "मैं राम भैया के चेहरे का ओर देखता रह गया। राम भैया फ़िर बोला—" यहाँ झाडू लगानेवाली है न, उसका लडका, काला सा वह लडका। वह कभी कभी इधर आता है। माँ को खोजने आता है वह। आज शहर में घूमते हुये मै ने उसको देखा था। उसका चेहरा देखने से पता चलता है कि उसी ने पैसे चुराये है। "मैं ने कहा" —वह तो बेचारा है, राम भैया। "लेकिन राम भैया ने दृढता से कहा"—वही है। उसको मैं ज़रूर पकडूँगा। उस के बाद राम भैया मुझे अपने कमरे में ले गया। कहीं से उसे एक पैन्ट श्री एक्स रम मिल गई थी। राम भैया कभी भी अकेले नहीं पीते। आज उसका साथी मैं था।

अप्रैल 12

कल रात शहर के छः सात होटल में छापा मारा गया। सत्रह स्त्रियाँ पकडी गयीं। आज सुबह अखबार में सभी का नाम छपा था। उसमें राधिका का नाम नहीं था। लेकिन शाम को निकालनेवाले एक अखबार ने सबका एक समूह चित्र छाप दिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था। उसमें राधिका भी थी। उसके चित्र के नीचे सुहरा लिखा हुआ था। बहुत देर तक मैं सुहरा को देखता रह गया। वेश्या का एक स्थिर नाम नहीं है। उसका एक स्थिर धर्म या ईश्वर नहीं है। उस केलिए सभी मर्द एक जैसे हैं। मुझे नींद नहीं आती। मन में वही रात की बात याद है। उसकी वेणी की सुगंध। मेरी पसली की हड्डियों पर उसके ऊँगलियों का स्पर्श महसूस हो रहा है। उसका प्यार और आदर भरा व्यवहार याद आता है। उसके मन पर पर्दा नहीं है। एक वेश्या के रूप में परिचित हो सकनेवाली औरत। ओ सुहरा, तुझे मैं जानता हूँ। तुम सुहरा भी नहीं हो, राधिका भी नहीं हो। तुम तो सिर्फ एक बेचारी औरत हो।

अप्रैल 13

आज माँ की चिट्ठी मिली। पैसे के बारे में कुछ भी लिखा नहीं। लिखा है—प्रिय बेटा, मैं इधर ठीक हूँ।

अप्रैल 14

आज मैंने खूब पिया। शहर के एक मध्यम श्रेणी के बार में जाकर पिया। आधा चिल्ली चिकन खाया और पांच पैग कोणस्टान्टिनो ब्राण्डी पी। यह ब्राण्डी पीने में एक शीत पानीय पीने का सुख भी है। मैं मे पर अकेला था। पास के मेज़ प बैठा एक आदमी मुझे गौर से दे रहा था। अकेले बैठकर पीनेवा से सावधान रहना-- इस बात क ध्यान उसको होगा। वह मेरे ब्राण् की ओर गौर कर रहा था। लगत है कोणस्टान्टिनो ब्राण्डी से उसक घृणा है। मुझे भी इस शराब से थो घृणा है। जिसका सौन्दर्य पूरी तर गायब हो गया हो वैसी एक प्रौढ़ की निष्कपट मुस्कुराहट के समा है कोणस्टान्टिनो।

अप्रैल 15

आज राम भैया ने झाड़ू लगाने वाली औरत के बेटे से पूछ ता की। वह खूब रोया। खबर मिल तो उसकी माँ भी भागी आयी उसकी माँ ने अश्रुपूर्ण नेत्रों से रा भैया को गाली दी। उसने कहा- ईश्वर राम भैया को उसका फ देगा। ऐसा कहकर वहाँ से चल गयी। राम भैया ने बदले में कह कि अब ईश्वर चोरों के पक्ष में है।

अप्रैल 16

आज मेरे हाथ में एक पैसा भी नहीं है। झाड़ू लगानेवाली जानकी ने पाँच रुपये माँगे। सेतुमाधवन ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूछा उसका उधार दिया दस रुपया है कि नहीं ? हो सकता है दस रुपये वापस लेने केलिए सौदामिनी ने कहा हो।

अप्रैल 17

आज मैं ने छुट्टी ली। दिन भर सोया। शाम को राम भैया आया तो पूछा कि क्या 100 मि. लि. अरक खरीदने का पैसा उसके पास है? पता चला की उसकी जेब भी खाली है। मैं फिर अपने कमरे में जाकर लेट गया।

अप्रैल 18

आज मैं थोडी देर से आफिस पहुँचा। सेतुमाधवन ने पूछा, कल क्या हुआ था। मैं ने जवाब दिया—कल आने की इच्छा नहीं हुई, इसलिये नहीं आया। ऐसा लगा कि सेतुमाधवन को मेरे जवाब पर विश्वास नहीं हुआ। कुछ देर चुप रहेनें के बाद उसने अपनी बीबी सौदामिनी के फिर गर्भवती होने की खबर दी। अपनी जिन्दगी की सभी खास बातें वह पहले पहल मुझे बता देता है। पत्नी ने चौथे बच्चे को भी जन्म दिया। केवल एक क्लर्क है सेतुमाधवन। उसके बल पर बच्चों का पैदा कर रही है सौदामिनी।

बीस तारीख के बाद शायद ही किसी बाबू के घर में सब्जी खरीदी जाती होगी।

बहुत से बच्चों को पैदा करने की इच्छुक एक माँ है सौदामिनी। उसके गर्भाशय की प्रेरणा से वह ऐसा करती होगी। हो सकता है पृथ्वी पर आने को इच्छुक पेट के बच्चे से सौदामिनी को सुख मिलता होगा। आज सेतुमाधवन ने मुझसे पाँच रुपये उधार माँगे। मैं ने कहा—एक पैकट बीडी खरीदने को पैसा भी मेरे पास नहीं है। तो सेतुमाधवन और कुछ बोले बिना सिर नोचा करके बैठ गया। किसी के हाथ में पैसा नहीं है। बीस तारीख के बाद शायद ही किसी बाबू के घर में सब्जी खरीदी जाती होगी। शाम को मैं शहर में ऐसे ही एक चक्कर लगा आया।

अप्रैल 19

जिन्दगी नाम की यह ऊब मेरे पीछे पडी है। अपराध बोध, निराशा और अभाव मेरे अन्दर स्तब्धता और मौन पैदा कर रही है। शाम को मैं कमरे की छत की ओर देख लेटा हुआ था, तब गोपालकृष्णन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्दर आया। उसका आना साधारण नहीं था, इसलिये मैं थोडा डर गया। हम लोग इधर उधर की बातें करते रहे। जाते वक्त गोपालकृष्णन ने कहा—"देखो, झाड़ू लगानेवाली के बेटे पर मुझे शक नहीं है। बेचारा भोला लडका है वह। राम भैया उस पर व्यर्थ ही आरोप लगा रहे हैं। दो सौ रुपये चोरी करने की हिम्मत नहीं है उसमें। चोर की खोज में घूमनेवाले राम भैया पर ही मेरा शक है। मेरे कमरे में बेहिचक आनेवाला एक ही व्यक्ति है राम भैया। चोर को पकडने में इतनी तकलीफ करने की क्या ज़रूरत है राम भैया को? मेरे दो सौ रुपये पर मुझसे ज्यादा रुचि लेने की क्या वजह है उसको।" मैं चुपचाप सुनता रहा। लगता है जिन्दगी में पहली बार राम भैया एक चोर बन रहे हैं। जिन्दगी को इस लॉज में सीमित करने का फैसला किये हुये आदमी हैं राम भैया। सोलह साल से वह इस लॉज में रह रहे हैं। जब उसको इस बात का पता चलेगा तो वह हृदयगति रुकने से मर जायेगा। मेरे हाथ काँप उठे।

अप्रैल 20

झाड़ू लगानेवाली अब लॉज में किसी से बात नहीं करती। उसके लडके ने इधर झाँकना भी छोड दिया। राम भैया को देखते ही वह ज़मीन पर थूकता है। गोपालकृष्णन राम भैया की हर एक चाल पर गौर करता रहा। राम भैया विविध विषयों पर बात करते रहे। झाड़ू लगानेवाली की घृणा का पात्र बनने पर उसको बहुत दुख है। आज भी उस रुपये के बारे में राम भैया ने बात की। "उस लडके के सिवा और कौन इधर आयेगा?"—उसने पूछा। उसको एक और शक है। हो सकता है गोपालकृष्णन झूठ बोल रहा हो। प्रथम श्रेणी के क्लर्क के अभिमानबोध के कारण ही उसने ऐसा कहा होगा। जब मैं ने भी कुछ नहीं कहा तो राम भैया ने पूछा—मैं क्यों चुप हूँ? मैं ने कहा—"गोपालकृष्णन झूठ नहीं बोल रहा है। वह लडका उसके कमरे में घुसकर चोरी करेगा भी नहीं।" रुपये चोरी होने की बात आसपास के सब लोग जान गये हैं। अब बाथरूम जाते वक्त भी सब लोग ताला लगाते हैं। लॉज में किसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कपडा और कसकर बांध कर सोने के अलावा और कोई रास्ता नहीं है। जन्मपत्री के अनुसार महान जिन्दगी मैं जी रहा हूँ।

परिचित के आने पर सब लोग उस र गौर करते हैं कि कौन आया ?

प्रैल 21

जन्मपत्री के अनुसार मैं एक महान वही महान जिन्दगी अब मैं जी हा हूँ। जिस होटल में मुझे उधार ना मिलता है वह आज नहीं ला। होटल के मालिक की माँ कल त मर गयी। आज मैं ने खाना हीं खाया। किसी से उधार मांगने भी जी नहीं करता। मुझे खूब ब लग रही है। कपडा और कस-र बांधकर सोने के अलावा और ई रास्ता नहीं है। जन्मपत्री के सार महान जिन्दगी मैं जी रहा

ल 22

आज रात आठ बजे राम भैया ने रतालू और एक बोतल ताडी दकर दी। लगता है कल होटल गा।

अप्रैल 23

माँ के प्यारे बेटे ने आज माँ को चिट्ठी लिखी। माँ ने मेरेलिये कितना आँसू गिराये होंगे, इस बात पर मैं आज दिन भर विचार करता रहा। मुर्गियों और चार बकरियों का पालन करके माँ ने मुझे बडा किया था। अब माँ के पास मुर्गी या बकरी नहीं है। माँ, पच्चीस मुर्गियाँ और चार बकरियों को लेकर वहाँ आने के बारे में मैं सोच रहा हूं। अब मेरे मन में पच्चीस मुर्गियाँ तथा चार बकरियाँ हैं। 645 रु. की ऊब, दुख और निराशा से मुझे बचना है।

अप्रैल 24

सेतुमाधवन आज दोपहर का खाना नहीं लाया था। मेरे हिसाब में उसने आज खाना खाया। खाना खाकर लौटते वक्त सेतुमाधवन ने कहा—"मैं जिन्दगी से ऊब चुका हूँ। आत्महत्या करने को जा चाहता है।" पहले कभी भो सेतुमाधवन ने इस प्रकार की बातें नहीं कीं। वह तो एक बेचारा था। सौदामिनी उसके बच्चों को जन्म देती है उसकी गलती से—ऐसा सोचना ठीक नहीं है। एक क्लर्क के रूखेपन की जिन्दगी वह जी रहा है। रुपये के बारे में या सुख सुविधाओं के बारे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में वह नहीं सोचता। पैदा हुआ क्लर्क बना, सौदामिनी से शादी हुई, बच्चा हुआ। वह कुछ भी नहीं जान रहा है। उसको भी इस जिन्दगी से ऊब लगती है।

अप्रैल 25

हम लोगों के आफिस के चपरासी कुमारपिल्लै ने कल रात आत्महत्या कर ली। उसकी क्या वजह थी यह कोई नहीं जानता। कुछ मूर्ख लोग आत्महत्या का कारण लिख रखते हैं। उससे पुलिस को सहायता

पैदा हुआ, क्लर्क बना,
सौदामिनी से शादी हुई,
बच्चा हुआ।

मिलती है। कुमारपिल्लै ने नहीं किया। उस का शव कल ही चीरघर से मिलेगा।

अप्रैल 26

आज माँ की चिट्ठी आयी। बीमार हैं। उनको वातरोग दर्द के कारण पैर उठाकर च दिक्कत हो रही है। पीढ़ियों से वातरोग से पीडित हैं। मु ज़रूर वातरोग होगा।

अप्रैल 27

आज शाम चार बजे मु मिला। 645 रुपये। होटल का देना है, कमरे का किराया दे माँ को भेजना है। गोपाल का रुपया लौटाना है। और अगला एक महीना काटना भी

दो लाख लोगों ने पत्राचार माध्यम से हिन्दी सीखी

मानव संसाधन विकास मंत्रालय के केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय द्वारा चलाये गये पत्राचार पाठ्यक्रम के माध्यम से अब तक लगभग दो लाख लोग हिन्दी सीख चुके हैं। यह पाठ्यक्रम 1968 में शुरू किया गया था। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों को हिन्दी का प्राथमिक ज्ञान कराना है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ीयेशु-विजयम् : मलयालम का र्वप्रथम ईसा-चरित काव्य

डॉ० कटविल चन्द्रन

वि-परिचय :

कट्टक्कयत्तिल चेरियान माप्पिळा ा जीवनकाल सन् 1858 तथा ् 1936 के बीच था। मीनच्चल लूके के प्रसिद्ध ईसाई-परिवार

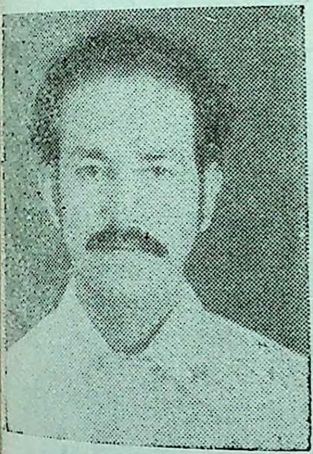

डा० कटविल चन्द्रन

ट्टक्कयम्' में उनका जन्म हुआ । उनके पिता का नाम उलहन्नान ा और माता का सिसिलियम्मा। चपन से ही लेकर उन पर कैथलिक-भक्ति की धाक जम चुकी थी। चौदह साल की अवस्था में वे संस्कृत-ग्रन्थों का अध्ययन करने लगे थे। उनके प्रथम गुरु मीनच्चल तालूके के आवल्क्काड् नामक गाँव के प्रसिद्ध विद्वान दामोदरन् कर्ता थे। कवि आगे चलकर स्वप्रयत्न से संस्कृत में दक्षता प्राप्त कर पंडित और कवि बन चुके।

सन् 1880 से ही वे कविता करने लगे थे। उनकी रचनायें रह-रह कर 'नस्राणी-दीपिका' नामक मासिक-पत्रिका में प्रकाशित होती थीं। वर्गीस माप्पिला की प्रेरणा से वे 'मलयाळ मनोरमा' नामक पत्रिका में लगातार लिखते थे। वे कविता-प्रतियोगिताओं में भी भाग लिया करते थे। साहित्यिक व्यापार के साथ साथ खेती-बारी में भी वे दिलचस्प थे। उनकी साहित्य-सेवा का सम्मान करते हुए तत्कालीन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनके पूर्व मलयालम साहित्य में ईसाई धार्मिक ग्रंथ 'इंजील' की कथाओं और घटनाओं का प्रवेश मना सा था ।

'पोप्' ने उन्हें कीर्त्तिमुद्रा भेंट की थी । वे बुढ़ापे में बहुत-से रोगों के शिकार हो गये और सन् 1936 में वात-रोग की पीड़ा से उनका निधन हुआ ।

रचनायें :

कट्टक्कयम् ने 'यूदजीवेश्वरी'' 'विल्लाळ्वेट्टम्', 'सारा विवाहम्', 'कलावती' आदि रूपकों, 'ओळिवेर विजयम्' शीर्षक आट्टक्कथा 'मार्त्तोमा चरितम्', 'वनितामणि', 'तिरञ्ञेटुक्कप्पेट्ट पात्रम्' आदि खंड-काव्यों एवं 'श्रीयेशु-विजयम्'* शीर्षक महाकाव्य की रचना की है । 'श्रीयेशु-विजयम्' ही वह रचना है जिसने उन्हें मलयालम साहित्य में अमर स्थान का अधिकारी बना दिया ।

युगीन परिस्थिति :

चेरियान माप्पिळा के आगमन ने विवेच्य युग के साहित्यिक मंडल में बड़ी उथल-पुथल ही मचा दी थी। उनके पूर्व मलयालम साहित्य में ईसाई धार्मिक ग्रंथ 'इंजील' की कथाओं और घटनाओं का प्रवेश मना सा था । इस बन्द द्वार को खोल कर भीतर घुसने का प्रथम श्रेय उन्हीं को देना चाहिए । हिन्दू धर्मावलंबी साहित्यकारों ने कट्टक्कयम् की बेहद हँसी उड़ायी थी मगर दृढ़-चित्तवाले कवि के सामने उनकी दाल नहीं गली थी । उन्होंने

इस दृष्टि से 'श्रीयेशु-विजयम्' एक युगांतरकारी कृति है ।

भारतीय साहित्यिक वातावरण को आत्मसात करके ईसा-चरित को मलयालम साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान प्रदान करने का प्रयास किया। आपने साहित्य-प्रेमियों के समक्ष यह बात साबित कर दिखाई कि ईसाई धर्म-ग्रन्थ से भी काव्य के कथानक चुन लिये जा सकते हैं तथा सफल साहित्य-सृजन भी संभव है। त... जाकर अन्य धर्म के कवि भी इस ओर आकृष्ट होने लगे थे। फलतः रोमांटिक युग के प्रमुख कवि वळ्ळत्तोळ नारायण मेनोन प्रभृतियों ने इंजील

* रचना-काल : सन् 1926 ई० में यह काव्य प्रकाशित हुआ था ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की घटनाओं पर सुन्दर कृतियाँ रच डाली हैं। इस दृष्टि से 'श्रीयेशु-विजयम्' एक युगांतरकारी कृति है।

इतिवृत्त :

श्रीयेशु-विजयम् चौबीस सर्गों-वाला विशालकाय महाकाव्य है। इसमें लोक-प्रचलित बाइबिल की 'लोकोत्पत्ति' से लेकर कॉनस्टन्टैन नामक रोमन बादशाह के ईसाई-धर्म में दीक्षित होने तक की घटनायें सन्निविष्ट हैं। इसमें 'पुराना-नियम' के इतिवृत्त का संक्षिप्त तथा 'नया-नियम' के इतिवृत्त का विस्तारपूर्वक प्रतिपादन किया गया है। इसके सभी सर्ग अत्यत दीर्घ हैं।

काव्य-सौष्ठव :

वर्णन-कौशल से अवगत होने के लिए कतिपय मार्मिक प्रसंगों पर विचार करना उचित होगा। कवन-कुशलता के अनगिनत अनुपम उदाहरण समूचे काव्य में जहाँ-तहाँ बिखरे पड़े हैं। प्रथम सर्ग में प्रकृति का अति मनोहर चित्रण मिलता है। आदि-माता-पिता आदम और हव्वा को प्रदत्त 'परुदीसा' (पॉराडाइज) का इस में चित्रण किया गया है। विभिन्न प्रकार के पेड़-पौधों, फ़ल-मूलों जन्तु-जानवरों और चिड़ी-चिडियों से नयनाभिराम 'एदन' बगीचा (ईडेन्) सब के मन में गुदगुदी पैदा करने में सक्षम निकला है।[1]

अंत्योक्या के राजा ने यहूदियों के प्रति जो-जो घोर अत्याचार किये थे उनका बोभत्स और करुण चित्रण बारहवें सर्ग में उपलब्ध है। इस वर्णन के सिर्फ वाचन मात्र से भावुक

1. "पच्चप्पुल्लणि पूंटेट्टम्—मेच्चमायीट्टुमस्यलम्
पच्चप्पट्टु वरिच्चोरु—मच्चकमपोले मंजुलम्
X X X
गुणवुं मणवुं स्वादुं -- गणनीयाभयुं समम्
इणङ्ङुं काय्कलाल् वृक्ष—गणं मिन्नुन्नु निस्तुलम्
X X X
मरङ्ङलिलिरुन्नोरो—तरं पक्षिकलेप्पो.पुम्
मरन्दमंचिट्टुं चारु—स्वरत्ताल् पाट्टुमिम्पमाय्
नयनङ्ङल्क्कु साफल्यं—नियतम् चेर्त्तिट्टुंविधम्
प्रयतश्रीपेट्टु वल्ली—चयमुंटेदनेङ्ङुमे।"

—श्रीयेशु-विजयम्, प्रथम सर्ग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वे घोर यंत्रणाओं और मर्मातंक वेदना के बावजूद भी अपने पिता महाप्रभु से यही निवेदन करते दृष्टिगोचर होते हैं कि अपराधी अनजान हैं; अतः उन्हें माफ़ी देने की कृपा करें।

दंग रह जाते हैं और साथ ही साथ आठ-आठ आँसू बहाये बिना नहीं रह पाते। हाथ जोड़े विनय करनेवाले यहूदियों को बेपीर और पाजी सिपाहियों ने मदोन्मत्त होकर अपनी लंबी-पैनी तलवारों की धार से मृत्यु की घाट उतार दिया।[2] लूट-मार करनेवाले भटों की ललकार, तलवारों की गूँज, बेचारे लोगों की दीन पुकार आदि से वह ठौर गुंजित हो रहा था।

तेईसवें सर्ग में प्रभु ईसा को सूली पर चढ़ाने का दृश्य चित्रित है। सूली पर लटके ईसा के विदीर्ण शरीर से खून की नदी बह रही है और उनके प्राण-पखेरु शनैः शनैः उड़ते जा रहे हैं। वे घोर यंत्रणाओं और मर्मातंक वेदना के बावजूद भी अपने पिता महाप्रभु से यही निवेदन करते दृष्टिगोचर होते हैं कि अपराधी अनजान हैं; अतः उन्हें माफ़ी देने की कृपा करें।[3] यह प्रसंग सब के चित्त में विचारों का ज्वार-भाट पैदा करता है।

महाभारत के समान विस्तृत पुनीत बाइबिल की कथा को इस महाकाव्य में पूर्णतः समेट लिया गया है। इसमें अतिरंजित वर्णनाओं तथा अलंकारों का प्रयोग अन्यान्य महाकाव्यों की अपेक्षा बहुत ही कम हैं। कवि ने सरस व प्रसंगोचित

2. "चलित हृदयमोटु ताणिरक्कुन्न यूदा-
वलियै निशितमाकुं नीलमेरुन्न वालाल्
अलिवु करलिलेन्यै नीचराकुं भटन्मार्
कलितमदममंदं पाटुपाटे वधिच्चु।"
—श्रीयेशु-विजयम्, सर्ग - 12

3. "इन्नताणरिकल् चेय्युवतिव्वो-
लेन्नरिञ्ञीटुवतिल्ल पितावे !
इन्नतेट्टमनकंपयोटोर्त्त-
ङ्ङुन्ननुग्रहमिवर्क्करुलेणम्।"
—श्रीयेशु-विजयम्, सर्ग - 12

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कथा-कथन पर ही विशेष ध्यान लगाया है।[4] इस प्रयास में वह पूर्णत: सफ़ल भी निकला है।

कट्टक्कयम की प्रथम वर्षगाँठ के अवसर पर संपन्न संस्मरण-सम्मेलन में महाकवि वळ्ळत्तोळ् ने उनकी तुलना आंगल-कवि टेनिसन से की। टेनिसन की कीर्ति उनके भाषा-संबन्धी उत्तम रचना-सौष्ठव के ही कारण फैली हुई है। यही विशेषता कट्टक्कयम की रचना में भी प्राप्त है। दुनिया में जो सर्वप्रथम भयानक जल-प्लावन नौह के ज़माने में हुआ था उसका वर्णन इस प्रस्ताव का पुष्ट प्रमाण है। इसके और प्रकार कई प्रसंग भी प्रकृत महाकाव्य में इधर-उधर पाये जाते हैं।

कट्टक्कयम् तथा कोच्चुण्णि-तंपुरान् की रचनाओं में तो असामान्य समानता मिलती है। भाषाशैली, प्रास-प्रयोग आदि के विषय में दोनों का अधिकतम नैकट्य होता है। जोसेफ़ की शासन-नीति संबंधी वर्णना इसका दृष्टान्त है। वैसे, सर्ग-दीर्घता और प्रास-बद्धता की दृष्टि से इस महाकाव्य को महाकवि उल्ळूर के 'उमाकेरळम्' का कनिष्ठ भ्राता ठहरा सकते हैं। वस्तुस्थिति-कथन का सीधापन इस कृति का अनन्य साधारण गुण है।[6]

---

4. "......इस महाव्य में, वैसी आकाश-चुंबी वर्णनायें तथा अलंकार-प्रयोग कम हैं जैसी दूसरे महाकाव्यों में प्राप्त हैं। कवि की पैनी दृष्टि सरस व प्रसगानुकूल कथा-कथन पर ही टिकी दिखाई पड़ती है। इस यत्न में उसे पूर्णत: सफ़लता भी मिली है। पर समयोचित वर्णनाओं के प्रति वह पराङ्मुख भी नहीं रहा है।

— चुम्मार, 'पद्य-साहित्य-चरित्रम' पृ 178, 179

5. "......आंगल-कवि टेनिसन ने अपनी रचनाओं के भाषा-संबन्धी अतिश्रेष्ठ रचनासौष्ठव के ही कारण बडा नाम कमाया था।
उसी प्रकार की सामर्थ्य चिरपरिचय से कट्टक्कयम को भी उपलब्ध हो सकी है।"

— पल्लिप्पाट्टु कुञ्जुकृष्णन
'नम्मुटे साहित्य नायकन्मार', भा. 13, पृ. 147

6. "...केरलवर्मा-प्रास के सार्वत्रिक प्रयोग तथा सर्गों के असामान्य दैर्घ्य से यह काव्य 'उमाकेरलम्' के कनिष्ठ सहोदर की पदवी का अधिकारी है। इस महाकाव्य में सीधा वस्तु-स्थिति-कथनवाला जो काव्यगुण प्राप्त है वह इसका एक विशेष अलंकार-सा बन गया भी है।"

—उल्लूर, 'श्रीयेशु-विजयम्' की भूमिका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कथानक के विस्तार की दृष्टि से 'श्रीयेशु विजयम्' कालिदास के 'रघुवंश' की समता करता है।

कथानक के विस्तार की दृष्टि से 'श्रीयेशु-विजयम्' कालिदास के 'रघुवंश' की समता करता है। हिन्दू-पुराण से कथानक चुनना और उसमें हेर-फेर करना अपेक्षाकृत आसान है। लेकिन यह सुविधा इंजील से कथानक चुन लेने में उपलब्ध नहीं होती। ईसाई-पुरोहितों तथा धर्मानुयायियों की मर्जी के खिलाफ़ उसमें रंच मात्र भी परिवर्तन असंभव-सा है। किंतु फिर भी कट्टक्कयम् ने अपने प्रयत्न में फ़तह हासिल की है।[7]

सरलता इस काव्य का सर्वोत्तम गुण है। निरर्थक शब्दों का इसमें एकदम अभाव है। प्रास व छन्द का प्रयोग प्रयत्न-साध्य नहीं है, अपितु सहज-सिद्ध है। काव्य में वैदर्भी-रीति को अपनाया गया है। काव्य-सरिता के ताल-लयात्मक मंद-प्रवाह में डुबकियाँ ले कर भावुक पाठक अपने को कृतकृत्य मान बैठेंगे।[8] जब 'प्रासवाद' जोरों पर था तभी यह काव्य रचा गया था। तीन हज़ार से ज़्यादा पद्योंवाले इस काव्य में 'केरलवर्मा-प्रास' अथवा द्वितीयाक्षर-प्रास का आद्योपान्त सफ़ल प्रयोग हुआ है। पर कहीं भी कोई भी कठिनाई या क्लिष्टता नहीं दीखती। इसमें महाकवि की समस्त सिद्धियाँ पूर्णरूपेण झलकती हैं। प्रसन्न-मधुर है, काव्य की शैली।

समूचे ईसा-चरित-काव्यों में यह अनोखा है।

नैतिकता-बोध पर विशेष ध्यान लगाया गया है। इसे भाषा-साहित्य की शाश्वत संपत्ति मानी जा सकती है।[9]

यह तो संभव है कि इस काव्य में आचार्यों द्वारा निर्दिष्ट सभी लक्ष...

---

7. पल्लिप्पाट्टु कुञ्ञुकृष्णन्, "नम्मुटे साहित्य नायकन्मार', भा० 113 पृ० 151
8. सी. अन्तप्पायी, 'प्रस्तावना', श्रीयेशु-विजयम् तथा सरसकवि मूलूर, 'नस्राणी-दीपि...' 1926 जुलाई 17 का अंक।
9. उल्लूर, 'केरल साहित्य चरित्रम्' पृ० 784

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का पूरा-पूरा पालन नहीं हुआ हो। पर इस की निस्संदेह घोषणा कर सकते हैं कि समूचे ईसा-चरित-काव्यों में यह अनोखा है। बनी-बनाई कविताओं में प्रथम कोटि की कविता हार्दिक तथा मोहक होती है। 'श्रीयेशु-विजयम्' प्रथम कोटि का काव्य है जो माधुर्य तथा सरसता के लिए अन्य किसी भी श्रेष्ठतम महाकाव्य के पीछे नहीं है।

केरल गांधी-केलप्पन

हरिजनोद्धार केलिए केलप्पन द्वारा स्थापित संस्थाओं में एक श्रद्धानंद विद्यालय भी है। एम. मुकुन्दन वहाँ का विद्यार्थी था जो आगे चल कर हिन्दी अध्यापक बना। श्री. मुकुन्दन के शब्द: "गुरुजी (केलप्पन) मुझे विद्यालय ले गये। होस्टल में ठहराया। उस समय मेरी बडी बुरी दशा थी। देह भर फोडे और खुज-लियाँ। पीब बह रहा था। दुर्गंध फैल रही थी मखियां भिन-भिना रही थीं। कोई पास आता तक नहीं था। देखने पर दूर से ही नाक बंद करके मुँह फेर लेते थे। मैं एक कोने में पडा रहता था। वहाँ गुरु जी स्नेहमयी माता थे, वात्सल्यपूर्ण पिता की तरह! नहीं साक्षात् करुणामूर्ति भगवान की तरह प्रत्यक्ष होते थे। उनकी मुस्कान में मैं सारा दुःख भूल जाता था। वे अपने हाथों दवा लगाते थे। सारा शरीर रगड रगड कर साफ करते थे, नहलाते-धुलाते थे, स्वयं साफ किये साफ़ कपडे पहनाते थे और खिलाते-पिलाते भी थे।

(केरल साहित्य अकादमी सोवनीर से साभार)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मलयालम उपन्यास 'कयर' पर हिन्दी धारावाहिक

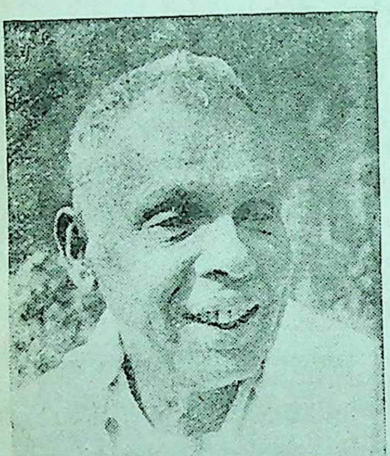

तकषि शिवशंकर पिल्लै

ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता श्री. तकषि शिवशंकर पिल्लै के बहुचर्चित मलयालम उपन्यास 'कयर' पर हिन्दी में टी. वी. सीरियल बन रहा है। इसका निर्माण विख्यात सिने निर्देशक श्री. सत्यु कर रहे हैं। **इस के कुल छब्बीस खंड होंगे।**

कयर एक आंचलिक उपन्यास है जिस में उपन्यासकार ने अपने गांव 'तकषि' की पृष्ठभूमि में अनेक पीढियों का केरलीय जन जीवन चित्रत किया है। स्वाभाविकता को बनाये रखने केलिए सीरियल का निर्माण भी तकषि गाँव के इर्दगिर्द ही किया जा रहा है। यह गाँव केरल के आलपुषा जिले में स्थित है। आलपुषा में इतने अधिक नाले हैं कि इसे पूरब का वेनीस भी कहते हैं।

इस में भाग लेनेवाले कलाकार देश के विभिन्न स्थानों से चुने गये हैं। इन में कर्नाटक के श्री टी एन लोहिताश्व हैं जो बेंगलोर के देवनहल्ली सरकारी कालेज में अंग्रेजी के रीडर हैं। इन्होंने पचहत्तर फिल्मों में अभिनय किया है। इन के पिताजी एक पटेल थे जिनका अनुकरण करने पर तीसरी कक्षा में पढते समय इन्हें पुरस्कार मिला था। ये अच्छे अनु...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वादक और लेखक भी हैं। भीष्म साहनी के तीन नाटकों का इन्होंने कन्नड में अनुवाद किया है। ये नाटक है—(1) जाति न पूछो साधु की, (2) कबीर खडा बाजार में, (3) हानुष। पहला अनुवाद 'सन्त एल्ली निन्त कबारी' नाम से और दूसरा अनुवाद 'माडु सिक्कदल्ला' नाम से प्रकाशित हुए हैं। तीनों का मंचन भी हुआ है। श्री. चाणक्य सेन के बंगाली उपन्यास "सिंहासन" के आधार पर श्री. रणजित कपूर ने 'मुख्य मंत्री' नामक नाटक हिन्दी में लिखा जिसका कन्नड अनुवाद श्री. लोहिताश्वने किया। कन्नड में इस का मंचन चार सौ बार हो चुका है। मुलियर के फ्रच नाटक के अंग्रेज़ी अनुवाद 'फिसिशियन इन स्पाइट ऑफ हिमसेल्फ' का स्वतंत्र कन्नड अनुवाद इन्होंने "डा० तिप्पशि" शीर्षक से किया है। इनकी मौलिक रचनायें हैं (कन्नड में) (1) चाप्लिन की जीवनी, (2) सल्लाप, (3) हुडुकाट्टा, (4) केला पद्यगडु और (5) गद्दुगे पुराणा। इन का कथन है कि भारतीय रंगमंच पश्चिमी रंगमंच का अन्ध अनुकरण कर रहा है। भारतीय रंगमंच के उन्नयन केलिए इस बात की आवश्यकता है कि प्रत्येक भारतीय भाषा के कलारूप प्रत्येक भारतीय भाषा में और हिन्दी में दूरदर्शन द्वारा संप्रेषित हों।

कयर में भाग लेनेवाले मलयालम भाषी कलाकारों में श्री. अनन्त पद्मनाभन भी हैं जो बंबई में कई हिन्दी नाटकों में अभिनय कर चुके हैं। यद्यपि इन का जन्म केरल के बडगरा नामक स्थान में हुआ तो भी पांच वर्ष की आयु से ही बंबई में हैं।

कयर में भाग लेनेवाले और एक कलाकार हैं श्री. प्रेमकुमार। इनका जन्म 1959 में केरल के पय्यन्नूर नामक स्थान में हुआ। श्री नंपीशन के शिष्यत्व में हिन्दी पढकर राष्ट्र-भाषा विशारद की परीक्षा उत्तीर्ण हुए। उन्हीं के शिष्यत्व में संस्कृत का भी अध्ययन किया। 1978 से बंबई में सर्वीस कर रहे हैं। संप्रति एक कंपनी में प्रशासनिक अधिकारी हैं। इन्होंने बचपन में पाला भास्करन भागवतर के शिष्यत्व में संगीत का अध्ययन किया। पय्यन्नूर में 'नादम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऑर्कस्ट्रा' की स्थापना की । बंबई में 1978 से 'सप्तस्वरा ऑरकेस्ट्रा' चला रहे हैं। 'श्रुतिलय' नामक संगीत विद्यालय भी ये बंबई में चला रहे हैं जहाँ कर्नाटक संगीत सिखाया जाता है । मलयालम और हिन्दी के करीब दो सौ नाटकों में संगीत निर्देशक और गायक के रूप में इन्होंने काम किया है । दूरदर्शन के बंबई केन्द्र के मलयालम कार्यक्रमों में भी ये भाग लिया करते हैं । कयर में ये मंगलश्शेरी मातुपिल्लै की भूमिका कर रहे हैं ।

केरल की प्रमुख हिन्दी कार्यकर्ता श्रीमती एम. तंकम्मा मालिक और उनकी पुत्री एवं फिल्म अभिनेत्री श्रीमती जमीला मालिक भी कयर में अभिनय कर रही हैं । ऐसे हिन्दी सीरियलों का निर्माण केरल में बड़े पैमाने पर होने लगे तो केरल की युवा पीढी में हिन्दी में वाचिक दक्षता प्राप्त करने की अभिप्रेरणा बलवती हो सकती है ।

कथकलि पर हिन्दी धारावाहिक

दूरदर्शन केलिए केरल के विख्यात नृत्य कथकलि पर हिन्दी में एक धारावाहिक तैयार हो चुका है । इस का आलेख केरल हिन्दी प्रचार सभा की निर्वाह समिति के सदस्य एवं हिन्दी तथा मलयालम के प्रमुख लेखक श्री. कुन्नुकुषि कृष्णनकुट्टी ने लिखा है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरल ज्योति

* प्रधान संपादक
प्रो० पी. जे. जोसफ़

* संपादक
श्री. के. जी. बालकृष्ण पिल्लै

* सह संपादक
श्री. आर. सुकुमारन नायर

* संपादक मण्डल
प्रो० एम. जनार्द्दनन पिल्लै
प्रो० सी. जी. राजगोपाल
श्री. के. वी. कृष्णनकुट्टी
डा० एस. सी. चन्द्रन
डा० एन. जी. देवकी
श्री. एम. के. वेलायुधन नायर

* विज्ञापन दर

		मासिक	वार्षिक
आवरण पृष्ठ 4	रु.	500 00	5000 00
आवरण पृष्ठ 2 एवं 3	रु.	400 00	4000 00
साधारण पृष्ठ पूरा	रु.	300 00	3000 00
साधारण पृष्ठ $\frac{1}{2}$	रु.	175 00	1750 00
साधारण पृष्ठ $\frac{1}{4}$	रु.	100 00	1000 00

संपर्क करें—मंत्री, केरल हिन्दी प्रचार सभा, तिरुवनन्तपुरम-695 014

लेखकों से निवेदन

हिन्दी प्रचार, हिन्दी शिक्षण, भारतीय भाषायें, भारतीय साहित्य, भारतीय संस्कृति जैसे विषयों पर लिखे गये उच्च स्तरीय सचित्र लेखों व संगोष्ठी समाचारों का स्वागत किया जायेगा।

हिन्दीतर प्रान्तों की सांस्कृतिक, साहित्यिक, कलात्मक विशेषताओं पर लिखी [illegible] मौलिक और अनूदित रचनाओं को और हिन्दीतर भारतीय भाषाओं की उत्तम रचनाओं के अनुवादों को प्राथमिकता दी जायेगी।

पांडुलिपियाँ साफ अक्षरों में लिख कर या टाइप करके भेजें। कार्बन [illegible]यां स्वीकृत नहीं होंगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवरण चित्र :

प्रथम पृष्ठ : ओणम के कुछ दृश्य—जलोत्सव और पुष्पसज्जा

द्वितीय पृष्ठ : केरल हिन्दी प्रचार सभा के संस्थापक एवं प्रथम मंत्री श्री. के. वासुदेवन पिल्लै की सत्ताईसवीं पुण्य तिथि पर आयोजित सम्मेलन के कुछ दृश्य।

(ऊपर) उद्घाटन करते हुए केरल सरकार के आवास मंत्री श्री. लोनप्पन नंपाटन। बैठे हैं (बायें से) श्री. एम. के. वेलायुधन नायर (मंत्री, केरल हिन्दी प्रचार सभा), महाकवि एम. पी. अप्पन, डा० मावेलिक्करा अच्युतन और डा० एस. राजप्पन नायर।

(बीच में) गीता पाठ कर रही छात्राध्यापिकायें।

(नीचे) हिन्दी भजन गा रही छात्रायें। दायीं ओर बैठी हैं डा० रती सक्सेना।

तृतीय पृष्ठ : स्व० के. वासुदेवन पिल्लै की सत्ताईसवीं पुण्य तिथि पर आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेता केरल के आवास मंत्री श्री. लोनप्पन नंपाटन से पुरस्कार ग्रहण कर रहे हैं।

चतुर्थ पृष्ठ : केरल की दो दृश्य कलायें (ऊपर) मोहिनि आट्टम। शृंगार की मोहक मुद्रा।

(नीचे) तेय्यम की रौद्र मुद्रा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूरभाष : 61378 तार : "जय हिन्दी"

केरल ज्योति

पुष्प 24
दल 6
एक प्रति—1 रु० 50 पै०
वार्षिक—15 रु०

सांस्कृतिक जागरण की मासिक पत्रिका
सितंबर 1989

संपादकीय

हिन्दी सप्ताह प्रभावी ढंग से मनायें

हमारे संविधान निर्माताओं ने बडी विशद चर्चा के बाद एकमत हो कर यह निर्णय लिया था कि देवनागरी में लिखित हिन्दी संघ की राजभाषा होगी । यह महत्वपूर्ण निर्णय सन् 1949 चौदह सितंबर को लिया गया था । इसलिए प्रति वर्ष चौदह सितंबर का दिन हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाता रहा है । चौदह सितंबर से बीस सितंबर तक हिन्दी सप्ताह भी मनाया जाता रहा है । इस आयोजन में स्वैछिक हिन्दी संस्थायें ही मुख्य भूमिका आदा करती रही हैं ।

राजभाषा के रूप में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को बढावा देने के लिए केन्द्र सरकार के गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग जो वार्षिक कार्यक्रम बनाता है उस में सुझाया गया है कि 'क' 'ख' और 'ग' क्षेत्र के सभी केन्द्रसरकारी कार्यालय, उपक्रम, निगम और राष्ट्रीयकृत बैंक चौदह सितंबर को हिन्दी दिवस के रूप में मनायें और चौदह सितंबर से बीस सितंबर तक हिन्दी सप्ताह मनायें । यह भी सुझाया गया है कि इस अयोजन में हिन्दी संस्थाओं को भी सहयोजित किया जाये ।

यद्यपि उक्त निर्देश के अनुसार हर केन्द्र सरकारी कार्यालय हिन्दी दिवस और हिन्दी सप्ताह मनाता है तो भी कुछ कार्यालय इस पर उतना ध्यान नहीं दे पाता जितना देना चाहिए । कुछ कार्यालय निर्धारित तिथियों को छोड और किसी समय पर अपनी अपनी सुविधा के अनुसार वर्ष में कभी हिन्दी दिवस और हिन्दी सप्ताह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस अंक में

देश के विकास केलिए निरक्षरता दूर करें — 3
श्री. वर्कला वी. राधाकृष्णन

हिन्दी नाटक की प्रस्तुति केरल के रंगतत्वों के साथ — 6

विज्ञान की उच्च शिक्षा देशी भाषा में हो — 9
डा० एम. मालिक मुहम्मद

प्लास्टिक सेठ — 11
डा० वी. गोविन्द शेणाय

केरल में राज्यस्तरीय हिन्दी सप्ताह……… — 13

जोग या जो लोग ? — 17

भारतीय भाषाओं में एकता सूत्र तथा भविष्य की दिशाएँ — 19
डा० एम. तंकमणी अम्मा

खोज रहा हूँ — 26
रामेश्वर दयाल दुबे

भूचाल — 27
कावेरी पिल्लाई

केरल में अब वसन्तोत्सव — 28
श्री. एम. एस. राधाकृष्णन

स्टेट बैंक ऑफ़ त्रावणकोर में राजभाषा हिन्दी की स्थिति — 36
श्री. माधवन नायर

प्रेम पिपासा — 39
कु० के. आर रंजिनी

पाठकों के पत्र

मनाते हैं। न ही वे किसी स्वैच्छिक हिन्दी संस्था को इसमें सहयोजित करते हैं। इस से समारोह का प्रभाव कम हो जाता है।

केरल इस क्षेत्र में अपना अनुकरणीय आदर्श प्रस्तुत करता रहा है। प्रतिवर्ष केरल की केन्द्र सरकारी संस्थाओं और केरल हिन्दी प्रचार सभा के संयुक्त तत्वाववान में 14 सितंबर से 20 सितंबर तक हिन्दी सप्ताह का सफल आयोजन किया जाता है। इस राज्यस्तरीय आयोजन के साथ साथ संस्थागत आयोजन भी चलता है। इस प्रकार के सम्मिलित प्रयास से ही हम कर्मचारियों को राजभाषा के रूप में हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग करने के लिए प्रेरित कर सकेंगे।

अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ की हर सदस्य संस्था से हमारा अनुरोध है कि अपने अपने प्रान्त में इस प्रकार के राज्य-स्तरीय आयोजन का नेतृत्व अपने ऊपर ले लें। इससे संपर्क भाषा और राजभाषा के रूप में भी हिन्दी का प्रचार बढ सकेगा। नहीं तो अंग्रेजी भारत की संपर्क भाषा बनी रहेगी। लन्डन स्कूल ऑफ इकनोमिक्स के वरिष्ठ प्राध्यापक श्री. जीन एड्चिसन ने अपने ग्रंथ 'लिंग्विस्टिक्स' के 1987 में प्रकाशित तृतीय संस्करण में (पृष्ठ संख्या—116) लिखा भी है:—

"In India today, English tends to be a lingua franca : Hindi speakers from the north are likely to communicate in English with people from the south who mostly speak one of the Dravidian languages."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश के विकास केलिए निरक्षरता दूर करें

श्री. वर्कला वी. राधाकृष्णन
अध्यक्ष, केरल विधान सभा

केरल के विधान सभा अध्यक्ष श्री. वर्कला वी. राधाकृष्णन ने युवकों से आह्वान किया कि देश के विकास को सार्थक बनाने केलिए बढती हुई निरक्षरता को दूर करने में अपनी भूमिका अदा करें। देश की प्रगति जन के बोध पर निर्भर है और बोध के विकास केलिए अक्षरज्ञान आवश्यक है।

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर हिन्दी स्नातकों केलिए केरल हिन्दी प्रचार सभा द्वारा राज्य संसाधन केन्द्र के सहयोग से आयोजित साक्षरता कार्यकर्ता प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन कर रहे थे श्री. राधाकृष्णन। अपने कहा—यदि हम उत्साह से काम करें तो गुजरात और केरल को दो वर्षों में ही संपूर्ण रूप से साक्षर बना सकेंगे। यद्यपि हम ने विज्ञान व तकनोक के क्षेत्रों में काफी प्रगति पायी है तो भी दरिद्रता और बेकारी की समस्यायें बनी हुई हैं। छिद्रवासनायें देश की एकता और अखण्डता को चुनौती दे रहो हैं। इन सब का समाधान जनता को प्रबुद्ध और प्रशिक्षित करने के द्वारा ही संभव है। इसलिये निरक्षरता निवारण अत्यंत महत्वपूर्ण है।

सम्मेलन को अध्यक्षता करते हुए केरल के तपोनिष्ठ समाज सेवक एवं प्रमुख जनशिक्षक श्री. पी. एन. पणिक्कर ने युवकों से अनुरोध किया कि वे समाज को ईश्वर माने, और अज्ञान के अंधकार से दरिद्र जनता को ज्ञान के प्रकाश की ओर लाने में अपनी भूमिका निभाकर जोवन को धन्य बनायें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरल विश्वविद्यालय के पूर्व उप-कुलपति डा० एन. ए. करीम ने विकास की परिभाषा देते हुए कहा कि यथार्थ विकास का मापदंड प्रतिशीर्ष आय की वृद्धि या औद्योगिक प्रगति नहीं, बल्कि जनता के ज्ञान का स्तर है। इस दृष्टि से देखने पर भारत को अभी काफी दूरी तय करनी है। यहाँ की जनता में करीब दो तिहाई निरक्षर हैं। निरक्षरता, विकास में सबसे बडी विघ्नबाधा है। करोडों निरक्षरों को शीघ्रातिशीघ्र साक्षर बनाना है। इस केलिए सैकडों स्वैच्छिक कार्यकर्ताओं की आवश्यकता है। हिन्दी प्रचारकों ने स्वतंत्रता संग्राम के समय जनता में स्वतत्रता का अवेश जगाया था। अब उन्हें निरक्षरता निवारण में लग कर अपना देश प्रेम दिखाना है।

केरल के प्रमुख पत्रकार एवं राजनीतिक कार्यकर्ता श्री तेंगमम बालकृष्णन ने कहा कि भारत का अधिक भाग हिन्दी भाषी क्षेत्र है और वहीं निरक्षरता धनीभूत हो गयी है। निरक्षरता हमारे औद्योगिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विकास में रोडा अटकाती है। हिन्दी भाषी क्षेत्र की इस लज्जाजनक निरक्षरता को दूर करने केलिए केरल के हिन्दी स्नातकों को उचित प्रशिक्षण दे कर उत्तर भारत में भेजने का प्रबंध यदि केन्द्र सरकार कर सके तो समस्या जलदी हल हो सकती है। इन स्वयं-सेवकों को उचित वेतन देना बहुत खर्चीला होगा। पर उनके आवास, भोजन, यात्रा आदि का खर्च सरकार को वहन करना होगा। जिस प्रकार रूस के उस्बकिस्तान में हुए भूकंप से पीडित जनता की सेवा केलिए रूस के प्रान्त प्रान्त से सेवकों के दल पहुंचे थे उसी प्रकार हिन्दी भाषी क्षेत्र की जनता को घोर निरक्षरता से उबारने केलिए इतर प्रान्तों के सेवकों के दल देश प्रेम से प्रेरित हो कर पहुंच जायें तो कार्य सरल हो जायेगा।

आकाशवाणी के तिरुवनन्तपुरम केन्द्र के पूर्व निदेशक श्री. वी. एन. उण्णी ने स्वतंत्रता की परिभाषा देते हुए कहा कि सच्चे अर्थ में स्वतंत्र राष्ट्र वही है जहाँ हर नागरिक अपनी कमियाँ समझने, उन्हें दूर करने तथा उन्नति के पथ पर अग्रसर होने केलिए प्रयत्नशील रहेगा। यह तभी संभव है जब हर नागरिक साक्षर बने। हमारी जनता को निरक्षरता के अन्धकार से विमुक्त करने का दायित्व शिक्षित युवकों को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निभाना है। यह भी एक प्रकार का स्वतंत्रता संग्राम है। इसमें उसी देश-प्रेम से प्रेरित होकर हम भाग लें जिस से प्रेरित होकर हमारे धीर-वीर पूर्वजों ने देश केलिए जीवन की बलि दे दी थी।

केरल विश्वविद्यालय के प्रौढ शिक्षा एवं अनुस्यूत शिक्षा केन्द्र के निदेशक तथा भारतीय प्रौढ शिक्षा संघ के उपाध्यक्ष डा० के. शिवदासन पिल्लै ने आग्रह किया कि देश साक्षरता में अगले पांच वर्षों में बीस प्रतिशत वृद्धि लाने में सभी विद्यार्थी, विशेष कर हिन्दी विद्यार्थी सक्रिय सहयोग दें। हिन्दीतर प्रान्तों के हिन्दी स्नातक हिन्दी प्रान्तों में जाकर साक्षरता प्रचार करने केलिए आगे आयें।

प्रशिक्षण कक्षा का उद्घाटन करते हुए प्रमुख विश्वकोशकार एवं सामाजिक कार्यकर्ता श्री. पी. टी. भास्कर पणिक्कर ने कहा कि हमें भारत की गौरवपूर्ण परंपरा का अध्ययन करना है और अहिंसा पर अधिष्ठित नये जगत का निर्माण करना है। इस के लिए आवश्यक प्रशिक्षण साक्षरता कार्यकर्ताओं को देना है। देश की प्रगति इसलिए धीमी पड रही है कि शिक्षित वर्ग देश के प्रति अपना कर्तव्य नहीं निभा पाता।

स्वागत भाषण में केरल हिन्दी प्रचार सभा के मंत्री एवं अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ के कोषाध्यक्ष श्री. एम. के. वेलायुधन नायर ने बताया कि जनतंत्र को सफल बनाना हो तो निरक्षरता के लज्जाजनक अभिशाप से देश को यथासंभव शीघ्र विमुक्त कराना होगा। हिन्दी प्रचारकों एवं विद्यार्थियों से आशा है कि वे इस महत्वपूर्ण कार्य में निस्वार्थ भाव से जुड जायेंगे।

केरल हिन्दी प्रचार सभा के स्नातकोत्तर केन्द्र के छात्रों की हस्तलिखित हिन्दी पत्रिका 'जागरण' का प्रमोचन पत्रिका डा० रतो सक्सेना को देते हुए विधान सभाध्यक्ष श्री. वर्कला राधाकृष्णन ने किया। छात्रों ने देशभक्ति गीत और साक्षरता गीत गाये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी नाटक की प्रस्तुति केरल के रंगतत्वों के साथ

कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ टागोर के काव्यात्मक नाटक "राजा" के हिन्दी अनुवाद का मंचन केरलीय लोक-रंगतत्वों से सज कर केरल की राजधानी तिरुवनन्तपुरम में अगस्त 1989 में बडी प्रभविष्णुता पूर्वक किया गया । कार्तिका तिरुनाल का विशाल प्रेक्षाग्रह मलयालम भाषा-भाषी कला मर्मज्ञ दर्शकों से भरा था । दर्शकों में केरल की माननीय राज्यपाल श्रीमती रामदुलारी सिन्हा भी थीं । इस की सफलता के पीछे बडी साधना और अभ्यास छिपा हुआ है जिसकी थोडी चर्चा करें ।

नाटक की प्रस्तुति नई दिल्ली के राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के तृतीय वर्ष के बारह छात्रों और दो छात्राओं द्वारा हुई । ये छात्र अपने पाठ्यक्रम के प्रथम वर्ष में ही रंग कलायें, अभिनय, पश्चिमी रंगमंच, विश्व रंगमंच, भारतीय रंगमंच, मेकअप, थियेट्रिकल आर्किटेक्चर, सीनिक डिजाइन, मूवमेन्ट और माइम आदि अभिनय संबंधी अठारह विषय सीख चुके हैं । द्वितीय और तृतीय वर्षों में इन में कुछ ने अभिनय और कुछ ने निर्देशन का विशेष अध्ययन किया है । तीनों वर्ष इन्होंने संगीत और योगासनों का अभ्यास बराबर किया है । प्रति दिन ये पन्द्रह बीस योगासन कर लेते हैं । भारत के विविध प्रान्तों की युद्ध कलायें भी इन्हें सिखायी गयी हैं—जैसे केरल का कलरिप्पयट्टु और मणिपुर का यांगटा आदि ।

इस के पहले छः प्रमुख प्रस्तुतियां ये छात्र कर चुके हैं । पहले मई 1987 में इन्होंने "वाल्मीकि प्रतिभा" नामक नाटक का मंचन दिल्ली में किया राष्ट्रीय नाट्य-विद्यालय की प्राध्यापिका रीताजी कोठरी के निर्देशन में । फिर राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के पूर्व छात्र श्री. रंजीत कपूर, जिन्होंने "अमीर खुसरो" शीर्षक टी. वी. सीरियल बनाया था,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के निर्देशन में "पूवर बिटोस" नामक फ्रेंच नाटक के श्री. रंजीत कपूर द्वारा किये गये हिन्दी अनुवाद का मंचन किया। फिर द्रौपदी वस्त्रापहरण नामक तमिल की "तेरुक्कूत्तु" विधा का एक रूपक प्रस्तुत किया गुरु कनप्पाथंपीरन के निर्देशन में। फिर इन्होंने राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के पूर्व छात्र श्री. भानु भारती के निर्देशन में इबसन के अंग्रेज़ी नाटक वइल्ड डक का यशपाल द्वारा किया गया हिन्दी अनुवाद "मुर्गाबी" प्रस्तुत किया। फिर रंजीत कपूर के निर्देशन में मौलियर के अंग्रेज़ी नाटक बूर्ष्वा जन्टिलमैन का रंजीत कपूर द्वारा किया गया हिन्दी रूपान्तर "कौआ चला हंस की चाल" प्रस्तुत किया। इंग्लैंड के श्री. जोन रोटालिफ़ के निर्देशन में अमृतलाल द्वारा हिन्दी में अनूदित शेक्स्पीयर का अंग्रेज़ी नाटक हैमलेट खेलने का अवसर भी इन्हें मिला। बेरलोंट ब्रिच के एक जर्मन नाटक "राउण्ड हैड्स पीक हेड्स" का हिन्दी अनुवाद 'गोल खोपडी नुकीली खोपडी' भी इन्होने प्रस्तुत किया। अनुवाद किया था राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के पूर्व छात्र सतीश कौशिक एवं पीयूष मिश्रा ने और निर्देशन किया था राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के पूर्व छात्र एवं स्वर्ण पदक विजेता प्रो० रोबिन दास ने।

इतने लंबे प्रशिक्षण और अनुभव के बाद भी इन छात्रों ने "राजा" नाटक की प्रस्तुति केलिए पूरे एक महीने का अभ्यास किया। यह अभ्यास तिरुवनन्तपुरम में ही हुआ केरल के विख्यात नाटककार एवं नाटक निर्देशक श्री. कावालम नारायण पणिक्कर की देख-रेख में। श्री. पणिक्कर दस वर्ष तक केरल की राज्य संगीत नाटक अकादमी के सचिव रह चुके हैं। "सोपानम" नामक थियेटर के ये संस्थापक हैं। सोपानम के कलाकारों ने इनके निर्देशन में भारत में ही नहीं, जापान, अमेरिका, इंग्लैंड, ग्रीस, रूस, पोलैंड जैसे विदेशों में भी नाटक प्रस्तुत किये हैं। राष्ट्रीय नाटक विद्यालय, दिल्ली, कालिदास अकादमी, उज्जैन, विसकोनसिन विश्वविद्यालय, अमेरिका, भारतीय भवन, भोपाल जैसी विख्यात संस्थाओं में इन्होंने नाटकों का निर्देशन किया है। ग्रीक नाटक "प्रोमेथियस बाउण्ड" पर आधारित इन का नाटक "अरणी" ग्रीस में आयोजित इन्टर नेशनल थियेटर फेस्टिवल में स्थान पा गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री. पणिक्कर की निगरानी में एक महीने का जो अभ्यास दिया गया उसे छात्रों ने बहुत उपयोगी बताया। बिहार की कु० वाणी ने कहा :, कुछ निर्देशक तो शब्दों के प्रभावी उच्चारण द्वारा अर्थ समझाने पर ज़ोर देते हैं। पर यहाँ फिज़िक के द्वारा अधिक कम्यूनिकेट करने पर ज़ोर दिया गया। पहले ढंग में भाषा प्रधान होने से इतर भाषा-भाषी दर्शकों को समझाना कठिन है। दूसरे ढंग का फायदा यह है कि भाषा का व्यवधान नहीं पडता। केरल की दृश्यकला कथकलि के समान गेस्चर मुख्य भूमिका निभा रहा है। बोडी मूवमेन्ट केलिए स्पेस के यूटिलाइ-सेशन पर भी ज़ोर दिया गया। "श्री.पवन ने कहा :-" यहाँ हमें केरल की युद्धकला कलरिपयट्टु का पर्याप्त अभ्यास कराया गया। यह फिसिकल थियेटर करने का आधार मालूम पड़ता है। श्रीं. जयराजन जी ने बड़ी कुशलता के साथ कलरि के दावपेंच हमें सिखाये। उत्तर प्रदेश के श्री. स्वर्णरावत ने कहा :- "काली और सफेद रंग पट्टिका का उपयोग सेट के रूप में करने की रीति श्री. पणिक्कर जी की खासियत है। तूफान का ज़ोर दिखाने में यह अत्यंत सहायक है। यहाँ हमें केरल का लोकनृत्त तेय्यम भी सिखाया गया। यह बड़ा एनर्जेटिक लगा। कथकलि से भी हमें परिचित कराया गया। यह भी ज्यादा एनर्जेटिक है। चेण्टा और इलत्तालम का वादन जान फूँकता है। उस का रिथम पेरफोमर को जो पुष बड़ देता है वह अन्यथा असंभव है।

श्री. पांजाल ने कहा :— कलरिप्पयट्टु सीखने से शरीर की हर चाल में सुन्दरता आ जाती है। वेदना, कंप आदि भाव शरीर के अंग-अंग से अभिव्यक्त करने की क्षमता आ जाती है।

श्री. रावत ने कहा : यदि "राजा" की प्रस्तुति ज्यों का त्यों करते तो इतनी सफलता नहीं मिलती। यह बहुत लंबा है। पणिक्कर जी ने इसको छोटा करके गागर में सागर भर दिया। केरल की लोक कलाओं के अंशों ने जैसे — केरलीय ढंग के मुखौटे, तडक भडक वाली रंगीन वेष-भूषा — काली और सफेद रंग पट्टिका, भयानक दृश्य में एक भीमाकार बिच्छु का मोडल, संगीत में चेण्टा, घडा आदि वाद्यों का समावेश, कलरिप्पयट्टु की चालें आदि ने इसे अधिक प्रभावी बना दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विज्ञान की उच्च शिक्षा देशी भाषा में हो

डा० एम. मालिक मुहम्मद

केन्द्र वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग के पूर्व अध्यक्ष एवं बहुभाषाविद डा० एम. मालिक मुहम्मद ने कहा कि भारत की भाषायें आज इतनी समृद्ध हो गयी हैं कि नयी पीढ़ी को वैज्ञानिक और तकनीकी विषयों की शिक्षा भी विश्वविद्यालय स्तर तक भारतीय भाषाओं में ही दी जा सकती है। भारत के छात्र भारतीय भाषाओं के माध्यम से इन विषयों का जितना गहरा अध्ययन कर पायेंगे उतना गहरा अध्ययन विदेशी भाषा अंग्रेज़ी के माध्यम से कदापि नहीं कर पायेंगे।

केरल हिन्दी प्रचार सभा के हिन्दी स्नातकोत्तर केन्द्र में वैज्ञानिक और तकनीकी विषयों की उच्च शिक्षा के माध्यम पर आयोजित संगोष्ठी में बोल रहे थे डा० मालिक मुहम्मद।

डा० मालिक मुहम्मद ने कहा कि केन्द्र वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग ने अब तक विभिन्न विषयों के आठ लाख शब्द बनाये हैं। अंतरीक्ष विज्ञान तक की शब्दावली हिन्दी में बनी है। चूँकि इन का मुख्य स्रोत संस्कृत ही है, इसलिए इतर भारतीय भारतीय भाषायें यथावत् या किंचित परिवर्तन के साथ इस शब्दावली का उपयोग कर सकती हैं। अतः अब कोई कारण नहीं कि हमारी नई पीढ़ी को कोई भी विषय अंग्रेज़ी माध्यम में सिखाया जाये। जनसाधारण तक विज्ञान को पहुँचाने केलिए भी यह आवश्यक है कि विज्ञान की शिक्षा देशी भाषाओं में दी जाये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब कोई कारण नहीं कि हमारी नई पीढी को कोई भी विषय अंग्रेज़ी माध्यम में सिखाया जाये।

चर्चा में भाग लेते हुए इलाहाबाद कृषि संस्थान के इंजिनीयरिंग विभागाध्यक्ष प्रो० एन. एन. सिरोठिया ने बताया कि हाल ही में उत्तर प्रदेश में किये गये एक सर्वेक्षण से पता चला है कि औसत विद्यार्थी के अध्ययन समय का पच्चीस से तीस प्रतिशत तक मात्र अंग्रेज़ी के अध्ययन केलिए लगाया जाता था। जब से वहाँ अंग्रेज़ी का बोझ हल्का कराया गया तब से विज्ञान के विषयों का पाठ्यक्रम दुगुना बनाया जा सका। हमारी मानसिक दासता ही अंग्रेज़ी के स्थान पर भारतीय भाषाओं को उच्च शिक्षा का माध्यम में बनाने बाधा डाल रही है। फ्रांस, स्पेन, जर्मनी जैसे देशों में हो रहे अन्तर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक सम्मेलन जब उन्हीं देशों की भाषाओं में होते हैं तब भारत में ऐसे सम्मेलन अग्रेज़ी माध्यम से चलाये जाते हैं जो हमारे लिए लज्जा की बात है। उन्होंने कहा कि इंजिनीयरिंग विषयों पर हिन्दी में साधारण कृषकों केलिए भाषण देने में उन्हें कोई कठिनाई नहीं है।

केन्द्रीय कन्द फसल अनुसंधान केन्द्र, तिरुवनन्तपुरम के प्रधान वैज्ञानिक डा० जी. टी. कुरुप अध्यक्ष रहे।

हम भारतीय हैं। भारतीय भाषाओं में बोलें। भारतीय भाषाओं में लिखें। सरकारी पत्राचार भारतीय भाषाओं में हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यंग्य कहानी

प्लास्टिक सेठ

डा॰ वी. गोविन्द शेनाय

दामोदर सेठजी की दूकान में प्लास्टिक की बढिया चीजें सस्ते दामों में बिकती हैं। प्लास्टिक सेठ के नाम से वे जाने जाते हैं। व्यवहार में इतने स्निग्ध हैं कि ग्राहक मुग्ध हो जाते हैं। दूकान में अठारह लोग काम करते हैं जिन में सेठजी के बड़े भाई का ग्राजुयेट लडका बंकू भी है। बंक की अवस्था चौबीस साल की है। सेठजी के मन उसके प्रति विशेष ममता है; अत: औरों की अपेक्षा उसे छुट्टियाँ एकाध अधिक मिल जाती हैं। मैनेजर सेठजी स्वयं हैं; परन्तु भतीजे को मैनेजर बनाने की बात कभी कभी करते हैं। लोग उसे मजाक समझते हैं; परन्तु बंकू ऐसा अपने को समझा नहीं पाता। अत: काम में अधिक चुस्त और सजग रहता है; अपना कोई अलग हित ही नहीं मानता। प्रात: काल सेठजी के साथ ही चाभियां लिये बंकू दूकान आता है और रात को उन्हीं के साथ घर लौटता है। सेठजी के हो यहाँ रहता है। उसकेलिए सेठजी ने अलग प्रबंध कर रखा है। चपरासियों से उसे विशेष सहायता मिलती है। उसके खानपान का वे ही प्रबंध करते हैं। उसे वे सगे से लगते हैं। अचानक एक दिन रात को सेठानी खाने की मेज़ से टकराकर धम्म से गिर पडती है; आह निकल जाती है। मेज झनझनाकर उलट सी जाती है। मधुमेह का मोटापा और इस पर दिल का दौरा। अस्पताल ले जाई जाती है।

बंकू को सेवा का अवसर मिल जाता है। सात दिन बंकू ताई के साथ अस्पताल में रहता है। सेठजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रातः काल सेठजी के साथ ही चाभियां लिये बेंकू दूकान आता है और रात को उन्हीं के साथ घर लौटता है।

दूकान से टेलिफोन पर पूछताछ करते हैं। वे जानते हैं मधुमेह का दौरा घातक नहीं होता; पहले भी ऐसा हुआ है। औरों पर दूकान छोडना कहाँ की बुद्धिमानी है! दूकान बंद करने की बात अपनी बीमारी में भी वे सोच नहीं सकते।

एक दिन अचानक पुलिस दूकान को आ घेरती है। प्लास्टिक के तीन भारी डिब्बे बरामद होते हैं। कोई कहता है सोने बिसकुट हैं, कोई कहता है, विदेशी मुद्रा है। कोई कहता है, दोनों हैं। सेठजी के साथ बेंकू भी हिरासत में लिया जाना है। सेठजी छूट जाते हैं; परन्तु बेंकू छूट नहीं पाता। सेठजी बुढापे में यह अपराध कर ही नहीं सकते। उसी दिन बेंकू नौकरी से हटा दिया जाता है। उन्हें दूकान के यश की रक्षा जो करनी है।

उसी दिन बेंकू नौकरी से हटा दिया जाता है। उन्हें दूकान के यश की रक्षा जो करनी है।

सौभाग्य, ओल्लूकरा
तृश्शूर, केरल

❀

केन्द्र सरकार द्वारा प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में गठित केन्द्रीय हिन्दी समिति में केरल हिन्दी प्रचार सभा के मंत्री श्री. एम. के. वेलायुधन नायर सदस्य हैं। इसकी उपसमिति में भी वे सदस्य मनोनीत हुए हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरल में राज्य स्तरीय हिन्दी सप्ताह समारोह की तैयारी

गत वर्षों के समान इस वर्ष भी केरल में राज्यस्तरीय हिन्दी सप्ताह समारोह के आयोजन की तैयारी आरंभ हो गयी है।

कार्यक्रम का आयोजन करने केलिए केरल हिन्दी प्रचार सभा ने 23-8-1989 को केरल स्थित केन्द्र सरकारी कार्यालयों, निगमों, उपक्रमों एवं राष्ट्रीयकृत बैंकों के मुख्य अधिकारियों व प्रतिनिधियों का जो सम्मेलन बुलाया उसमें विविध कार्यालयों के करीब…अधिकारियों ने भाग लिया। केरल परिमंडल के चीफ पोस्टमास्टर जनरल एवं तिरुवनन्तपुरम नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष

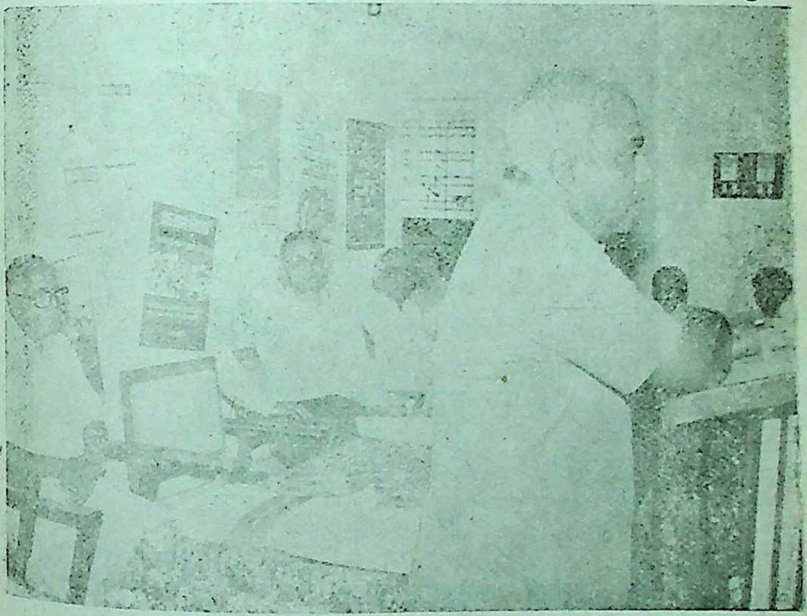

अध्यक्षीय भाषण दे रहे हैं श्री. सी जे मात्यु। बैठे हैं:— श्री. एम. के. वेलायुधन नायर, श्री महेन्द्र प्रसाद, अतिरिक्तउप महानिरीक्षक, केन्द्रीय सुरक्षा बल पल्लिपुरम और डा० एन. ई. विश्वनाथ अय्यर (पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, कोचिन विश्वविद्यालय)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

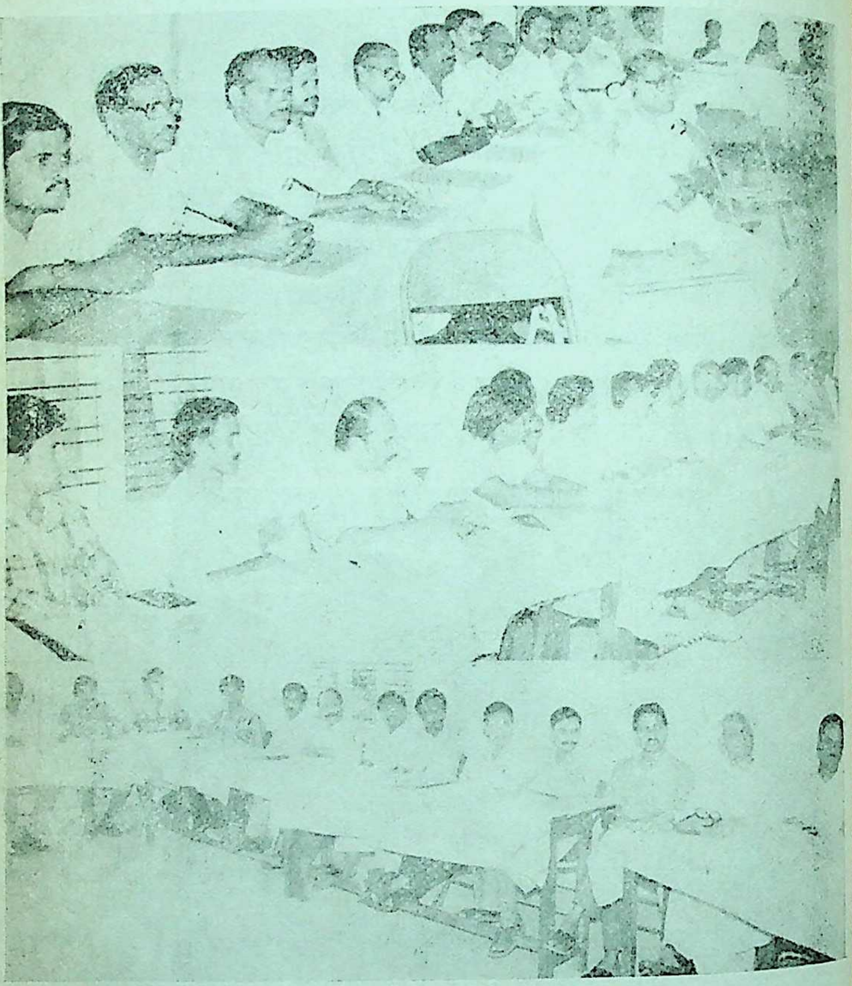

केरल स्थित केन्द्र सरकारी कार्यालयों, निगमों, उपक्रमों और राष्ट्रीकृत बैंकों
तथा केरल हिन्दी प्रचार सभा के प्रतिनिधि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री. सी. जे. मात्यु की अध्यक्षता में एक हिन्दी सप्ताह समारोह समिति का गठन किया गया। समिति के महा संयोजक हैं केरल हिन्दी प्रचार सभा के मंत्री एवं अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ के कोषाध्यक्ष श्री. एम. के. वेलायुधन नायर।

विविध कार्यक्रमों का प्रायोजन विविध केन्द्र सरकारी कार्यालयों और केरल हिन्दी प्रचार सभा की ओर से हो रहा है।

विविध कार्यक्रमों के आयोजन केलिए जो उपसमितियों बनी हैं उनके संयोजक हैं :—

प्रदर्शनी एवं पत्रकार सम्मेलन

श्री एन. केशवन नायर
उप प्रधान सूचना अधिकारी
पत्र सूचना कार्यालय

उद्घाटन समारोह

श्री. एस. हरिहरन
कंपनी सचिव, हिन्दुस्तान लाटक्स

संगोष्ठी

श्री· तोमस
भारतीय पर्यटन विकास निगम कोवलम

हिन्दी कार्यशाला

श्री. एन. कृष्णन नाटार
सहायक संपादक (हिन्दी)
भारतीय खाद्य निगम

कर्मचारियों के लिए प्रतियोगिताएं

सामान्य प्रतियोगितायें

श्रीमती वी. एस. कोमल कुमारी अम्मा
हिन्दी अधिकारी
विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केन्द्र
तिरुवनन्तपुरम

नाटक प्रतियोगिता

श्री. पी. एन. चौपडा
दक्षिण वायू कमान, तिरुवनन्तपुरम

कर्मचारियों के बच्चों केलिए प्रतियोगितायें

प्रो० एम. जनार्द्दनन पिल्लै
कोषाध्यक्ष, केरल हिन्दी प्रचार सभा

सांस्कृतिक कार्यक्रम

श्री. ए. माधवन नायर
प्रबन्धक (राजभाषा)
स्टेट बैंक ऑफ त्रावनकोर

समापन समारोह

श्री. के. वी. कृष्णन कुट्टी
केरल हिन्दी प्रचार सभा

यह भी निर्णय किया गया है कि केरल ज्योति का नवंबर 1989 अंक हिन्दी सप्ताह समारोह 1989 का विशेषांक होगा जिसमें समारोह का सचित्र विवरण दिया जायेगा।

हिन्दी सप्ताह समारोह समिति में उक्त उपसमितियों के संयोंजकों के अलावा निम्नलिखित वरिष्ठ अधिकारी भी हैं :—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री. पी. महेन्द्र प्रसाद
पुलिस के अतिरिक्त उप महानिरीक्षक,
केन्द्रीय सुरक्षा पुलिस बल, पल्लिप्पुरम

श्री. के. बी पिल्लै
नियंत्रक, विक्रम साराभाई
अंतरिक्ष केन्द्र

श्री. प्रेमलाल डब्राल
प्राचार्य केन्द्रीय विद्यालय, पल्लिप्पुरम

श्री वी. रामस्वामी
मण्डलीय प्रबन्धक, दक्षिण रेलवे
तिरुवनन्तपुरम

श्री. एम के. केशवन
आयुक्त, आयकर विभाग, तिरुवनन्तपुरम

श्री. आर माधवन
निदेशक, दूरदर्शन केन्द्र, तिरुवनन्तपुरम

श्री. एन. एस. कृष्णमूर्ति
केन्द्र निदेशक, आकाशवाणी
तिरुवनन्तपुरम

श्री. के. के. नायर
अध्यक्ष, प्रशासन विभाग
द्रवन्योदन प्रणाली केन्द्र, तिरुवनन्तपुरम

श्री. राजु चेट्टियार
प्राचार्य, केन्द्रीय विद्यालय, पट्टम
तिरुवनन्तपुरम

डा० जोस आस्टिन
सहायक निदेशक (कार्यान्वियन)
गृहमंत्रालय, कोच्चिन

श्री. सी. ए. जेकब्कुट्टि
हिन्दी अधिकारी
रबर बोर्ड, कोट्टयम

श्री के. वेलायुधन नायर
प्राचार्य, केन्द्रीय विद्यालय, पांगोड

श्री. जोण
मंडलीय प्रबन्धक,
युनाइटेड इन्शोरन्स कं. लि.
तिरुवनन्तपुरम

श्री. पी. के. के. मेनोन
मंत्री, शहरी राजभाषा कार्यान्वयन
समिति, तिरुवनन्तपुरम

हिन्दी के विख्यात कहानीकार श्री श्रवणकुमार का स्वागत केरल हिन्दी प्रचार सभा में

हिन्दी के विख्यात कहानीकार श्री श्रवणकुमार का हार्दिक स्वागत 24—8—1989 को केरल हिन्दी प्रचार सभा के तिरुवनन्तपुरम परिसिर में किया गया। उन्होंने सभा के हिन्दी स्नातकोत्तर केन्द्र में अपनी कहानियों के रचना शिल्प पर भाषण दिया। आपने कहा कि रचनाकार को समाज की भलाई का ध्यान अवश्य रखना चाहिए। केवल मनोरंजन केलिए जो कुछ लिखा जाता है उसे उत्तम साहित्य नहीं कहा जा सकता। लेखक या तो लोक हृदय से एकाकार हो जाये। नहीं तो वे किसी महत्वपूर्ण सामाजिक अभियान से जुड जाएं। तभी वे उत्तम साहित्य की सृष्टि कर सकेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जोग या जो लोग ?

आचार्य रामचन्द्र शुक्लजी की शैली अत्यंत क्लिष्ट मानी जाती है। प्रकांड पंडितों के लिए भी उन की भाषा दुर्गाह्य है। तब साधारण विद्यार्थियों का कहना ही क्या ?

केरल विश्वविद्यालय ने हिन्दी एम.ए. के पाठ्यक्रम में रामचन्द्र शुक्ल का ग्रंथ चितामणि भी निर्धारित किया है। चिंतामणि का जो संस्करण डा० विश्वनाथ प्रसाद मिश्र द्वारा लिखित मंजूषा सहित इन्डियन प्रेस (पब्लिकेशन) प्राइवेट लिमिटेड, इलाहाबाद ने 1988 में निकला है उस में कुछ ऐसे शब्द आते हैं जिनका अर्थ समझना कठिन हो जाता है।

उदाहरण के लिए पृष्ठ संख्या 105 पर मुद्रित एक अंश देखिये :—

अपने इधर-उधर हरी भरी लहलहाती प्रफुल्लता का विधान करती हुई नदी की अविराम जीवन-धारा में हम द्रवीभूत औदार्य का दर्शन करते हैं। पर्वत की ऊँची चोटियों में हम विशालता और भव्यता का बाल-विलोडित जल प्रसार में क्षोभ और आकुलता का, विकीर्णघन-खंड-मण्डित, रश्मि-रञ्जित, सांध्य-दिगञ्चल में चमत्कारपूर्ण सौन्दर्य का, ताप से तिलमिलाती धरा पर धूल झोंकते हुए अंधड के प्रचण्ड झोंके में उग्रता और उच्छृङ्खलता का, बिजली की कंपानेवाली कडक और ज्वालामुखी के ज्वलन्त स्फोट में भीषणता का आभास मिलता है।

उक्त अंश में 'बाल विलोडित जल प्रसार' का क्या अर्थ निकालियेगा ? डा० जयचन्द्रराय की राय में यह वायु-विलोडित ही हो सकता है।

पृष्ठ 112 के तृतीय अनुच्छेद का का पहला वाक्य यों छपा है :—

"किसी वस्तु के प्रत्यक्ष ज्ञान या भावना से हमारी अपनी सत्ता के क्रोध का जितना ही अधिक तिरोभाव और हमारे मन की उस वस्तु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के रूप में जितनी ही पूर्ण परिणति होगी उतनी ही बढी हुई हमारी सौन्दर्य की अनुभूति कही जायेगी।"

"अपनी सत्ता के क्रोध का" वाले। अंश से कुछ अर्थ निकाल सकते हैं? क्या 'क्रोध' के बदले 'बोध' आ जाये तो अर्थ सरलता से निकाल सकेंगे?

पृष्ठ 121 पर दिये गये अंग्रेजी उद्धरण में

'The lamp the riot dooms
to bleed today,
Had he the reason, would he
skip and play'?

छपा है।

लैंप तो दीप को कहते हैं। यदि 'लैंब' पढें तो अर्थ बोध में सरलता आती है?

पृष्ठ 124 पर द्वितीय अनुच्छेद का पहला वाक्य देखिये जो यों छपा है।—

"पर जोग चमत्कार ही को काव्य का स्वरूप मानते हैं, वे..." जोग? या जो लोग? डा० जयचन्द्र राय की राय में यह जो लोग ही हो सकता है।

(के. जी. बी.)

डा० जयचन्द्र राय की भाषणमाला—रामचन्द्र शुक्ल पर

हिन्दी के प्रकांड पंडित एवं एम. एम. एच. कालेज, गाजियाबाद के पूर्व प्राचार्य डा० जयचन्द्र राय ने रामचन्द्र शुक्लजी के निबन्धों पर अगस्त 1989 में केरल हिन्दी प्रचार सभा के तिरुवनन्तपुरम परिसर में तीन भाषण दिये। चिन्तमणि में संकलित "कविता क्या है", "काव्य में लोकमंगल की साधनावस्था", "श्रद्धा—भक्ति" शीर्षक लेखों के आधार पर दिये गये इन भाषणों में डा० राय ने शुक्लजी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर विशेष प्रकाश डालते हुए उनकी विचारधारा को लोकमंगल के लिए अत्यंत उपयोगी साबित किया।

डा० राय ने अपनी पी.एच. डी. उपाधि के लिए शुक्ल जी की रचनाओं का अनुसंधान किया था। आज भी उनका अनुसंधान जारी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय भाषाओं में एकता सूत्र तथा भविष्य की दिशाएँ

डा० एस. तंकमणि अम्मा

[अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ और केरल हिन्दी प्रचार सभा के तत्वावधान में फरवरी-मार्च 1989 में तिरुवनन्तपुरम में आयोजित अखिल भारतीय हिन्दी कार्यकर्ता शिविर में प्रस्तुत आलेख ।]

डा० एस. तंकमणि अम्मा

आम तौर पर एकता की खोज का सवाल तभी उभर कर आता है जब अनेकता का स्वर मुखर हो। हमारे देश भारत के प्रसंग में यह देखा जाता है कि इस देश में अनेकता के पहलू ऐसे हैं जिनके कारण देश की एकता के मुद्दे पर देशवासियों का ध्यान सहज ही खिंच जाता है। भारतीय संस्कृति की अस्मिता ही उसकी विविधताओं में विद्यमान एकता में अन्तर्निहित है। प्रकृति, धर्म, जाति, वेष-भूषा, आचार-विचार आदि की भिन्नताओं के साथ-साथ भारत भिन्न-भिन्न भाषाओं का भी देश है। इन विविधताओं के बावजूद भारत में अनोखी एकता विद्यमान है। भारत का इतिहास साक्षी है कि कन्याकुमारी से लेकर कश्मीर तक "एक देश एक जनता" की परिकल्पना पहले से ही भारत में कायम थी। "विष्णुपुराण" में कहा गया है :

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राचीन भारत की सांस्कृतिक प्रगति का मूलभूत कारण उसकी भाषा ही थी।

"उत्तरं यत् समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिण
वर्षं तत् भारतं नाम भारती यत्रसंतति"

भारत-वर्ष की एकता को अक्षुण्ण बनाये रखने में प्राचीन काल से ही भाषा का बड़ा योग रहा है। प्राचीन भारत की सांस्कृतिक प्रगति का मूल-भूत कारण उसकी भाषा ही थी। प्राचीनकाल में भारत में संस्कृत भाषा का प्रचलन था। भारतीय संस्कृति को अपनी समग्रता के साथ उजागर करने में वह सर्वथा सक्षम भी थी। समस्त भारत वर्ष इस भाषा की महत्ता से अवगत था और अब भी अवगत है, यही कारण है कि संस्कृत वाङ्मय की प्राचीन भारत में जितनी प्रतिष्ठा थी, उतनी अब भी है। इस संस्कृत के भी दो रूप हैं – वैदिक संस्कृत जिसमें वेदादि विरचित हुए और दूसरी लौकिक संस्कृत जिसमें वाल्मीकि, व्यास, भास, कालिदास आदि ने अपनी कालजयी रचनायें कीं। इन कृती कलाकारों को भारत ने कभी भी स्थानीय, जातीय या भाषीय घेरे में बांधने की धृष्टता नहीं दिखायी है। उन्हें भारतवासी अपने कवि या साहित्यकार ही मानते हैं। यह तो ठीक है कि उनका दृष्टिकोण भी अखिल भारतीय था। संस्कृत ने अपने वर्चस्व का उपयोग समस्त भारत को एक इकाई के रूप में देखने के लिए किया। उत्तर-दक्षिण, पूरब-पश्चिम के भेद भाव की गुंजाइश ही संस्कृत वाङ्मय में नहीं थी।

आधुनिक काल में आकर देश में कई परिवर्तन हुए। संस्कृत आम भाषा नहीं बनी रही और पाली, प्राकृत तथा अपभ्रंश भाषाओं से गुज़रकर आधुनिक आर्य भाषाएं उद्भूत हुईं। भारतवर्ष में आर्य तथा द्रविड दोनों वर्गों की भाषाएँ प्रचलित हैं। विदेशियों के शासन-काल में इन भारतीय भाषाओं पर उन विदेशी भाषाओं का प्रभाव भी पड़ता गया। भारतवर्ष में कई भाषाएँ बोली जाती हैं। उन भिन्न भिन्न भारतीय भाषाओं में एकता सूत्र की खोज करना अवश्य ही दिलचस्प विषय है।

इन कृती कलाकारों को भारत ने कभी भी स्थानीय, जातीय या भाषीय घेरे में बाँधने की धृष्टता नहीं दिखायी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विभिन्न भाषा-भाषी होने के कारण भारतीय अपने देश में भी अपने को अजनबी पाता है। भाषा-भेद की यह समस्या देश की एकता के लिए अवश्य ही बाधक है। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान स्वतंत्रता की लहरों के साथ राष्ट्रभाषा की लहरें भी भारत-भर में व्याप्त हो गयीं। देश के महान नेताओं ने हिन्दीतर भाषा-भाषी होते हुए भी कई कारणों से इस पद के लिए हिन्दी

विभिन्न भाषा-भाषी होने के कारण भारतीय अपने देश में भी अपने को अजनबी पाता है।

को ही योग्य माना। यह भी सुखद आश्चर्य की बात है कि स्वयं हिन्दी शब्द चाहे वह संस्कृत के 'सिन्ध" शब्द से ही निकला हो, संस्कृत से नहीं बना है। वह पारसी का शब्द है जिसका मतलब है हिन्द अथवा भारत से सम्बन्धित।

भारत में यद्यपि कई भाषायें प्रचलित हैं तथापि भारतीय संविधान में हिन्दी को भी मिलाकर 15 भाषाओं को ही मान्यता प्राप्त है। हिन्दी के अलावा मान्यता प्राप्त शेष भाषायें हैं उर्दू, बंगला, सिन्धी, मराठी, गुजराती, उडिया, आसामी, पंजाबी, कश्मीरी, संस्कृत, तेलुगु, कन्नड़, तमिल, तथा मलयालम।

विभिन्न भाषाओं में लिखे जाने पर भी भारतीय साहित्य की भावधारा एक ही है।

भाषा तो संप्रेषण का सशक्त साधन है। यह संप्रेषणीयता मानव-मानव को आपस में मिलाने का काम करती है। मानव-मानव को जोड़ने का काम ही भाषा का है, तोड़ने का नहीं।

भारतीय भाषाओं में एकता के कई बिन्दु दृष्टिगत होते हैं। हमारी भिन्न भिन्न भाषाओं के भीतर बहनेवाली भावधारा को परखने पर यह बात स्पष्ट परिलक्षित हो जायेगी, कि विभिन्न भाषाओं में लिखे जाने पर भी भारतीय साहित्य की भावधारा एक ही है। रामायण, महाभारत आदि को उपजीव्य बनाकर विभिन्न भारतीय भाषाओं में विरचित समस्त वाङ्मय में अद्भुत समता दृष्टिगोचर होती है। समूचे भारतवर्ष में जा भक्ति साहित्य बना यह इस तथ्य का प्रस्पष्ट प्रमाण प्रस्तुत करता है। अनंतर कालीन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश की एकता का सब से बड़ा आधार जनता के भावों व विचारों की एकता में निहित है।

साहित्यिक विधाओं में भी एकता की यह भावना दृश्यमान है । इसमें काई संदेह नहीं कि देश की एकता का सब से बड़ा आधार जनता के भावों व विचारों की एकता में निहित है । भाषा तो इन की अभिव्यक्ति का ही साधन है ।

भारतीय भाषाओं में एकता का अगला बिन्दु उसके शब्दभण्डार में निहित है । भारतीय भाषाओं में कमोबेशी के साथ संस्कृत का प्रभाव परिलक्षित होता है । संस्कृत के कई तत्सम एवं तद्भव शब्दों को सभी भारतीय भाषाओं ने स्वीकारा है । कतिपय देशी व विदेशी भाषाओं के शब्दों को भी सभी भारतीय भाषाओं ने स्वीकारा है । पारिभाषिक शब्दा-वालियों के निर्माण के प्रसंग में ऐसे शब्द अधिक महत्वपूर्ण हो जाते हैं।

भारतीय भाषाओं में एकता का अलग बिन्दु वर्णमाला है । पारसी लिपि को छोड़ दें तो भारत की अन्य सभी लिपियों की वर्णमाला लगभग एक ही है यद्यपि वे अलग अलग लिपियों में लिखी जाती है ।

देश की आज़ादी के लिए समस्त भारतवासियों ने अपने सारे भाषा-भेद को भूलकर एक साथ लड़ाई लड़ी है, एक होकर उन्होंने स्वतंत्रता प्राप्त की है । स्वतंत्र भारत में संसद एक है, संविधान एक है। अब हमें एक होकर जीना है ।

विभिन्न भारतीय भाषाओं को एक सूत्र में बाँधने केलिए तथा केन्द्रीय शासन चलाने केलिए एक राजभाषा की ज़रूरत हुई तो भारत के संविधान ने हिन्दी को राजभाषा के रूप में घोषित किया। इस घोषणा के बाद कई दशक बीत गये। सरकार तथा अन्यान्य संस्थाओं की ओर से

भारत की अन्य सभी लिपियों की वर्णमाला लगभग एक ही है यद्यपि वे अलग अलग लिपियों में लिखी जाती है ।

राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन की ओर प्रयास भी हुए । किन्तु उनका आशाजनक परिणाम निकला है कि नहीं, संदेह है । इधर शिक्षा के क्षेत्र में हिन्दी का प्रयोग, त्रिभाषा सूत्री शिक्षा कार्यक्रम, आदि के प्रसंग आ जाते हैं जो बहुचर्चित हैं । अतः ये बातें यहाँ छोड़ी जाती हैं । जो भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो यह अवश्य कहा जा सकता है कि हिन्दी के प्रचार-प्रसार के आयाम वस्तुतः बढ़ गये हैं । इस केलिए हिन्दी प्रचार सभा जैसी संस्थाओं का जो महत्वपूर्ण योगदान है वह सदैव अविस्मरणीय रहेगा ।

संविधान के अनुच्छेद 351 में हिन्दी भाषा के विकास के लिए निदेश के रूप में यह व्यक्त किया गया है कि "अष्टम अनुसूची में उल्लिखित अन्य भारतीय भाषाओं के रूप, शैली और पदावली को आत्मसात

भारतीय भाषाओं में एकता सूत्र तभी कायम होगा जब सारे भारतवासी भारतीय भाषाओं का यत्किंचित ज्ञान हो सही, प्राप्त कर लें ।

करते हुए तथा जहाँ आवश्यक या वांछनीय हो वहाँ उसके शब्द भण्डार के लिए मुख्यतः संस्कृत से तथा गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए विकसित किया जाय।''

यह दिशानिर्देश सर्वथा स्वीकरणीय है । भविष्य के दिशा-निर्देश के संदर्भ में हमें यह मानना पड़ता है कि भूत वर्तमान तथा भविष्य का अटूट सरोकार है । भूत के गर्भ में ही वर्तमान छिपा था और वर्तमान के गर्भ में ही भविष्य का बीज बनता है । इस अर्थ में हमारे भूत और वर्तमान काफी सुदृढ़ रहे हैं । भविष्य की संकल्पनायें भी आशाजनक हैं । अतः भारतीय भाषाओं में एकसूत्रता बनाये रखने की ओर नये आयामों की खोज अब वांछनीय है ।

भारतीय भाषाओं में एकता सूत्र तभी कायम होगा जब सारे भारतवासी भारतीय भाषाओं का यत्किंचित ज्ञान ही सही, प्राप्त कर लें । इसके लिए हिन्दी केन्द्रीय भाषा की भूमिका निभा ले, जिसके माध्यम से भरतीय भाषाओं का परस्पर आदान-प्रदान हो । इस प्रसंग में भारतीय भाषाओं के परस्पर अनुवाद तथा तुलनात्मक साहित्य तथा अनुसंधान के मुद्दे उभर आते हैं ।

यह तो सच ही है, हिन्दी को अखिल भारतीय स्तर पर प्रतिष्ठापित करने के कार्य में आकाशवाणी, दूरदर्शन, चित्रपट, पत्र-पत्रिकाएँ आदि भी हाथ बंटा रहे है । हिन्दी को अखिल भारतीय भाषा बनाने केलिए उसके एक मानक रूप का गठन नितांत आवश्यक हो जाता है । भाषा का मानक रूप वस्तुतः अनेकता में एकता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की खोज है। खेद की बात है कि दूरदर्शन, आकाशवाणी आदि में दक्षिण भारत के स्थानों व आदमियों के नाम का गलत उच्चारण होता है। कदापि ऐसा नहीं होना चाहिए। तिरुवनन्तपुरम को त्रिवेन्द्रम तथा तकषि को "तक्काषि" सुनकर हमें अवश्य अखरता है।

व्यापक स्तर पर कुछ कहने की अपनी असमर्थता को ध्यान में रखकर यहाँ केरल के संदर्भ में कुछ कहना ही समीचीन जंचता है।

दूरदर्शन, आकाशवाणी आदि में दक्षिण भारत के स्थानों व आदमियों के नाम का गलत उच्चारण होता है।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि भारतीय भाषाओं को एकसूत्रता में बांधने का कार्य राष्ट्रभाषा हिन्दी कर सकती है। "जय हिन्द-जय हिन्दी" के अनूठे नारे को बुलन्द करने वाली एक संस्था है केरल हिन्दी प्रचार सभा। इस क्षेत्र में सभा की जो महत्वपूर्ण देन है वह किसी से छिपी नहीं है। सभा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के क्षेत्र में बहुत काम करती है, परीक्षायें चलाती है,

अतः स्पोकन-इंग्लिष की तरह स्पोकन हिन्दी का एक पाठ्यक्रम चलाना भी उपयोगी होगा।

कार्यशालाएँ चलाती हैं, हिन्दी के प्रचार-प्रसार कार्य में प्रेरणा और प्रोत्साहन भी देती है।

सभा और एक महत्वपूर्ण कार्य भी निभा सकती है—सभा की ओर से हिन्दी के माध्यय से मलयालम भाषा सिखाने का उपक्रम होना चाहिए। एक ओर केरल में बसे दूसरे भाषा-भाषी लोग इसका लाभ उठा सकते हैं। फिर तो इसका सीमाक्षेत्र और व्यापक हो सकता है।

दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि यद्यपि हिन्दी का पठन-पाठन केरल में खूब चलता है फिर भी बोलचाल की हिन्दी की ओर हम ध्यान नहीं देते। हमारे विद्यार्थी बोलचाल की हिन्दी में पिछडे हैं। यही कारण है कि यद्यपि केरलवासी शुद्ध हिन्दी लिख सकते हैं, किन्तु अभ्यास के अभाव के कारण हिन्दी बोलने में वे हिचकते हैं। अतः स्पोकन-इंग्लिष की तरह स्पोकन हिन्दी का एक पाठ्यक्रम चलाना भी उपयोगी होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह भी हो सकता है कि हिन्दी प्रचार सभा अपने एक अनुभाग के रूप में एक भारतीय भाषा विभाग भी खोल दे जहाँ अन्य भारतीय भाषाओं को सीखने की सुविधा भी हो। वहाँ अन्य भारतीय भाषाओं के स्वयं शिक्षक ग्रंथ उपलब्ध कराये जायें तथा विविध भारतीय भाषाओं की उत्कृष्ट रचनाओं के हिन्दी अनुवाद तथा हिन्दी ग्रंथों के प्रान्तीय भाषाओं में अनूदित ग्रन्थ भी उपलब्ध कराने की योजना हो। अनुवाद तुलनात्मक अध्ययन आदि कार्यों की ओर भी हिन्दी प्रचार सभा को अपना ध्यान लगाना चाहिए। हिन्दी प्रचार सभा में संलग्न शोध-संस्थान को इस ओर कार्यशील होना उचित होगा।

यहाँ भारतीय भाषाओं को एकसूत्र में बांधने में सहायक कतिपय शिक्षा-निर्देश ही पेश हैं। दिशा-निर्देश पेश करना तो आसान है, उसके कार्यान्वयन में ही दिक्कत आती है। किन्तु सारे भारतवासी एक मन होकर काम करेंगे तो भारतीय भाषायें परस्पर निकट आ सकती हैं तथा हम भविष्य में एक ऐसे सुनहले अतीत का आवाहन कर सकेंगे जबकि समस्त भारत देश संस्कृत भाषा के कारण एकसूत्र में बंधा हुआ था। अब इसका साक्षात्कार हिन्दी भाषा के माध्यम से संपन्न होगा, किन्तु अन्यान्य भारतीय भाषाओं के सहयोग से।

रीडर (हिन्दी)
पत्राचार पाठ्यक्रम संस्थान,
केरल विश्वविद्यालय
कार्यवट्टम, तिरुवनन्तपुरम

दुनिया में बुराइयां इसलिए नहीं कि बुरे आदमी ज्यादा बोलते हैं, बल्कि इसलिए कि भले आदमी समय पर चुप रह जाते हैं!

—शापेन हॉवर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खोज रहा हूँ

रामेश्वर दयाल दुबे

खोज रहा हूँ ऐसा मानव
जिसके आगे शीश झुकाऊँ।

जो पथ पर निज पैरों चलता
पर-अवलम्बन जिसे न भाता।
करता पार विघ्न-बाधायें
पथ शूलों को रक्त पिलाता॥

लक्ष्य सिद्धि के लिए निरन्तर
स्वेद सलिल से भीगा पाऊँ॥

जिसे सहन अन्याय नहीं है
सदा सत्य पथ का जो गामी।
पर-दुख कातर, पर-सेवा में
रत रहता होकर निष्कामी॥

सभी सुखी हों, सब निर्भय हों
जिसकी यह अभिलाषा पाऊँ॥

मनुज मात्र में जड़-चेतन में
प्रतिबिम्बित प्रभु को जो पाता।
स्नेह-सेतु समता विस्तारक
ममता का संसार सजाता॥

मंगलमय जिसके दर्शन से
पूत प्रेरणा कुछ पा जाऊँ॥
खोज रहा हूँ ऐसा मानव
जिसके आगे शीश झुकाऊँ॥ ★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूचाल

कावेरी पिल्लाई

समुद्र मौन है
आकाश मौन है
तुम भी मौन हो
लगता है, फिर कोई भूचाल आनेवाला है
बाज़ार की भीड़
खरीद बिक्री कर
घर लौट चुकी है
सिर्फ हम
एक कोने में
मौन धारण किए हुए।
कैसी यह शान्तता!
लगता है
समुद्र से ही पूछना पड़ेगा
इसका अर्थ।
पर
डर है
प्रश्न पूछने से पहले ही
फिर कोई भूचाल न आ जाय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरल में अब वसन्तोत्सव

श्री. एम. एस. राधाकृष्णन
प्राध्यापक, हिन्दी विभाग
सरकारी विमेन्स कालेज, तिरुवनन्तपुरम

केरल में यह उत्सवों की वेला है। जुलाई-अगस्त-सितंबर महीनों में यहाँ वसन्तोत्सव का सा वातावरण छाया रहता है। केरल की प्रकृति और जनता के जीवन में वसन्त खिलाने वाले दो प्रमुख तत्व हैं – यहाँ के नौकोत्सव और और ओणम। नौकोत्सव, नदी-नालों और झील-झरनों से समृद्ध केरल के 'सामाजिक जीवन का अभिन्न अंग है तो ओणम केरल के सांस्कृतिक जीवन की विरासत है। इन दोनों से पृथक होकर सांस्कृतिक केरल का अस्तित्व ही नहीं रहता।

केरल के नौकोत्सव

सौर मास मिथुन (जून-जुलाई) के मूल नक्षत्र के दिन आलप्पी जिले के 'चम्पक्कुलं' जलोत्सव के साथ केरल में उत्सव-पर्वों का पर्दाफाश हो जाता है। अम्पलप्पु.षा के भगवान कृष्ण के मन्दिर के प्रतिष्ठा-दिवस के साथ इसका घनिष्ठ सम्बंध है। अम्पलपु.षा उन दिनों 'चेम्पकश्शेरी' राज्य की राजधानी थी। मंदिर में प्रतिष्ठित करने के लिए कृष्ण की मूर्ति, 'वटक्कुंकूर' राज्य के अन्तर्गत कुरुच्ची नामक प्रदेश के 'करिकुलं' मंदिर से रात को चुराकर जलमार्ग से लायी गयी। चम्पक्कुलं में माप्पिलश्शेरिल घाट पहुंचने पर पौ फट गयी थी। वहाँ से बडी धूम-धाम से अनेक नौकाओं से परिसेवित होकर वह मूर्ति मंदिर पहुंचायी गयी।

मूल नक्षत्र के दिन वहाँ प्रतिष्ठा-कर्म सम्पन्न हुआ और उसी की याद में हर साल मिथुन महीने के मूल नक्षत्र के दिन लोग-क्रीडा नौकाओं में हँस-गाकर, बडे उल्लास के साथ भगवान के दर्शनार्थ निकलते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मूल नक्षत्र के दिन वहाँ प्रतिष्ठा-कर्म सम्पन्न हुआ और उसी को याद में हर साल मिथुन महीने के मूल नक्षत्र के दिन लोग क्रीडा-नौकाओं में हँस-गाकर, बड़े उल्लास के साथ भगवान के दर्शनार्थ निकलते हैं।

इस यात्रा में अनेकों चुण्टन नौकाएँ शामिल होती हैं। शुरू में यहाँ कोई प्रतियोगिता नहीं थी, नौकोत्सव का प्रदर्शन मात्र होता था। अब प्रतियोगिता का आयोजन किया गया है।

इस वर्ष 19 जून को यह महोत्सव शानदार ढंग से सम्पन्न हुआ। प्रतियोगिता शुरू होने से पहले इसमें भाग लेने वाली नौकाओं की एक भव्य शोभा-यात्रा निकाली गयी। 'चुण्टन' नौकाओं की प्रतियोगिता में 'करुवाट्टा चुण्टन' ने 'कारिच्चाल चुण्टन' को परास्त करके 'राजप्रमुखन' ट्रॉफी हासिल कर ली।

आलप्पी शहर की पुन्नमड़ा झील में आयोजित 'नेहरु ट्रॉफी बोट रेस' -भर में विख्यात जल-मेला है। यह हर साल अगस्त महीने के दूसरे शनिवार को आयोजित की जाती है। 22 दिसंबर सन् 1952 को भारत के भूतपूर्व प्रधान मंत्री स्वर्गीय पंडित जवाहरलाल नेहरु का उनकी केरल यात्रा के दौरान आलप्पो में, वहाँ के लोगों ने परंपरागत नौकोत्सव का आयाजन करके भव्य स्वागत किया था। नेहरू जी इस नौकोत्सव से इतने प्रभावित हुए कि दिल्ली पहुंचकर उन्होने अपने हस्ताक्षर युक्त चुण्टन नौका के नमूने की रजत-ट्रोफी आयोजकों के नाम भेज दी। नेहरु जी की मृत्यु तक यहाँ 'प्राइममिनिस्टर्स ट्रोफी' के नाम से चुण्टन नौकाओं की प्रतियोगिता आयोजित की जाती रही। पंडित जी की मृत्यु के बाद 'नेहरु ट्रोफी बोट रेस' के नाम से यह जल-मेला जाना जाता है।

इस वर्ष 12 अगस्त को, नेहरु जी के जन्म शताब्दी वर्ष में, हफ्ते-भर के समारोहों के साथ, शानदार ढंग से यह जलोत्सव सम्पन्न हुआ है। इस सिलसिले में इस वर्ष विशेष रूप से 49 हाथियों की एक शानदार जुलूस—''हाथी-रैली' भी निकाली गयी। दूसरे शनिवार को आलप्पी में पुन्नमड़ा झील में आयाजित इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जलोत्सव में केरल की विख्यात 16 ''चुण्टन' नौकाओं ने (जिन्हें अंग्रेजी में 'स्नेक बोट' कहते हैं) हिस्सा लिया।

ये चुण्टन नौकाएँ सौ—सवा सौ फुट लम्बी और पाँच—साढ़े पाँच फुट चौडी होती हैं। इसका पश्च भाग जल की सतह से 15 फुट ऊँचा रहता है। इसमें नब्बे से लेकर सौ-सवा सौ तक के खेवैये रहते हैं। इस वर्ष 'चम्पकुलं चुण्टन' ने प्रतियोगिता के 4850 फुट की दूरी को 4 मिनट 47.8 सैकडों में पार करके 'नेहरु ट्रोफी' जीत ली। 'कल्लूपरंपन' द्वितीय आयी। प्रतियोगिता में सर्वप्रथम आनेवाली 'चुण्टन' नौका को ही 'नेहरु ट्रोफी प्रदान की जाती है। चुण्टन नौकाओं के अलावा 'वेप्पु', चुरुलन', 'ओड़ी', 'तण्टु' आदि किस्म की नौकाओं को प्रतियोगिताएँ भी रहीं। प्रतियोगिताएँ शुरू होने से पहले इन में हिस्सा लेने वाली सारी नौकाओं ने मिलकर रामाचकारी 'जल-घोष-यात्रा' का प्रदर्शन प्रस्तुत किया।

केन्द्र सरकार के पर्यटन और नागरिक उड्डयन मंत्री श्री. शिवराज पाटील ने प्रतियोगिताओं का उद्घाटन किया। केन्द्र खेल-कूद राज्य मंत्री श्रीमती मारगरट आल्वा

इस वर्ष विशेष रूप से 49 हाथियों की एक शानदार जुलूस—'हाथी-रैली' भी निकाली गयी।

ने पुन्नमड़ा झील में एक 'जल-क्रीड़ा केन्द्र' का उद्घाटन किया। राज्य सरकार के युवा-कार्य एवं खेल-कूद मंत्री श्री. नीललोहितदासन नाडार ने विजेताओं को पुरस्कार वितरण किये।

तीसरा प्रमुख जलोत्सव 'आरन्मुला' का है, जिसका सम्बन्ध 'आरन्मुला पार्थसारथी' मंदिर के साथ है। सिंह महीने (अगस्त-सितंबर) के उत्तरा-भाद्रपद नक्षत्र के दिन, केरल के 'ओणम' महोत्सव की परिसमाप्ति के साथ, इसका आयोजन किया जाता है। विश्वास किया गया है कि स्वयं पार्थ ने ही यहाँ कृष्ण की मूर्ति का प्रतिष्ठा-कर्म सम्पन्न किया था—अपने जन्म-नक्षत्र के दिन। तब से पंपा नदी के किनारों पर रहनेवाले लोग जल-मेला का आयोजन कर प्रतिष्ठा-दिवस मनाते आये। मन्दिर के घाट पर, 48 मुहल्लों का प्रतिनिधित्व करके उतनी ही नौकाएँ जल-मेला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में भाग लिया करती थीं। अब इनकी संख्या—25 या 26 के करीब है।

शुरू में यहाँ भी कोई भी प्रतियोगिता नहीं थी। 'पल्लि ओटं' कही जानेवाली नौकाएँ ललाटियों और झालरदार रेशमी छतरियों से अलंकृत होकर नौका-गीतों का आलाप करती हुई जल-क्रीड़ा का प्रदर्शन प्रस्तुत करती थीं। लेकिन गत कुछ वर्षों से यहाँ भी प्रतियोगिता चलायी जाती है। विजयी को

विश्वास किया जाता है कि स्वयं पार्थ ने ही यहाँ कृष्ण की मूर्ति का प्रतिष्ठा-कर्म सम्पन्न किया था—अपने जन्म-नक्षत्र के दिन।

'मन्नम् स्मारक ट्रोफी' प्रदान की जाती है।

अलावा इनके केरल में अगस्त-सितंबर महीनों में बीस-पच्चीसों जलोत्सव आयोजित किये जाते है। जल-मेलों का यह अपूर्व प्रदर्शन केरल की अपनी ही विशेषता कही जा सकती है।

ओणम

सिंह अर्थात् सावन-भादों महीने के शुरू होने के साथ ही केरल की

यह त्योहार सचमुच धर्मनिरपेक्षता का सन्देश देनेवाला है।

जनता का जीवन 'ओणम' की उमंगों में लहराने लगता है। सब कहीं ओणम के लोक गीतों की गूंज रहती है। सर्वत्र, लोक-नृत्य, खेल-कूद और जल मेलाओं की चहल-पहल रहती है। सम्पूर्ण जनता ही उत्सव के आमोद-प्रमोद में, अठखेलियो में, मनोरंजक कार्यक्रमों में तराबोर हो जाती है। यह त्योहार सचमुच धर्म निरपेक्षता का सन्देश देनेवाला है। यह समानता और भाई-चारे का त्योहार है।

ओणम का सम्बध, भाद्रपद मास के शुक्ल-पक्ष की श्रावण-द्वादशी से है, जो वामनावतार का दिन है। पुराणों का यह प्रकरण देश भर में प्रचलित है। लेकिन अंतर यह है कि देश की शेष जनता केलिए यह पुराणों के पन्नों में सुरक्षित रखा गया है, तो केरल की जनता के जीवन में इसकी स्मृति अब भी हरी-भरी रहती है। केरल की जनता, उस गरिमामयी गतकाल जीवन को, ओणम के दिनों में, दर असल, जीकर ही छोड़ती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओणम के पहले ही खेतों में फसलों की कटाई हो जाती है। किसानों के भण्डार-गृह धन-धान्यों से भर जाते हैं। ओणम मनाने से पहले उन्हें खेत-खलिहानों से छुट्टी मिल जाती है। ओणम सचमुच 'लवन' का त्यौहार है। यह नव वर्ष का त्यौहार भी है।

परंपरागत शैली में ओणम के समारोहों की शुरुआत सिंह महीने में, 'तिरुओणम' अर्थात् श्रवण नक्षत्र के दस दिन पहले हस्त नक्षत्र से होती है। लडकियाँ उस दिन से घरों के आंगन में 'अत्तप्पूव' रचकर—हस्त नक्षत्र के दिन से पुष्पों से चित्र रचना करके—'तृक्काक्करा अप्पन'—वामन की पूजा शुरु करने लगती हैं। प्रति दिन नये नये पुष्पों से चित्र को उत्तरोत्तर बढ़ाया जाता है और 'तिरुओणम' के दिन सुबह 'तृक्काक्करा अप्पन' की पूजा के साथ ये पुष्प-चित्र हटाये जाते हैं।

ओणम की धूम-धाम 6 दिन तक चलती है उत्तराषाढ़ नक्षत्र से लेकर श्रवण, घनिष्ठा, शतभिष, पूर्वा भाद्रपद और उत्तरा भाद्रपद तक के छः दिनों तक परिवारों में बड़ा भोज होता है। दूर-दूर रहनेवाले परिवार के सदस्यों को आपस में मिलने का अपूर्व अवसर भी ओणम के दिनों में मिलता है। परिवार के सदस्य चाहे वे जहाँ भी हो 'तिरुओणम' के दिन मां-बाप और अपने बन्धुजनों के साथ भोजन करने घर पर आ जाते हैं। सुबह परिवार में गृहस्वामी

सुनहरी किनारी के श्वेतवस्त्र धारण कर युवतियाँ गाती हुई स्वर-मेल, कर-ताल एवं पद-चाल मेल से, तीव्र एवं माध्यम गति से वृत्त में घूम घूम कर और थिरक थिरक कर जब तिरुवातिरा नृत्य का प्रदर्शन करती हैं तो दर्शक मंत्र मुग्ध हो जाते हैं।

द्वारा सबको नये-नये कपड़े बांटे जाते हैं जिसे 'ओणप्पुटवा' कहते हैं। भोजन के बाद लोग 'ओणप्पुटवा' पहनकर प्रियजनों से मिलने और मनोरंजन आदि केलिए निकलते हैं।

झूला झूलना बच्चों और स्त्रियों के मनोरंजन का मुख्य साधन है। इस अवसर पर, स्त्रियों द्वारा प्रस्तुत किया जानेवाला 'तिरुवातिरानृत्य' का विशेष उल्लेख किया जा सकता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। सुनहरी किनारी के श्वेतवस्त्र धारण कर युवतियाँ गाती हुई स्वर-मेल, कर-ताल एवं पद-चाल मेल से, तीव्र एवं मध्यम गति से वृत्त में घूम घूम कर और थिरक थिरक कर जब तिरुवातिरा नृत्य का प्रदर्शन करती हैं तो दर्शक मंत्र मुग्ध हो जाते हैं। शिव को प्रसन्न करने केलिए, पार्वती द्वारा की गयी आराधना की याद दिलानेवाला है यह नृत्य। ओणम के दिनों में ही अधिकांश नौकोत्सव भी आयोजित किये जाते है।

इतिहास के अनुसार, सुप्रसिद्ध पेरुमाल वंशज राजा, 'चेरमान पेरुमाल' ने ही ओणम महोत्सव का आयोजन किया था। तृक्काक्करा मन्दिर में चूंकि वामन की मूर्ति प्रतिष्ठित है, इसलिए इस मन्दिर के साथ ओणम समारोहों का विशेष सम्बन्ध है।

केरल में ओणम से सम्बन्धित एक जनकथा प्रचलित है। उसके अनुसार एक जमाने में यहाँ आसुरी राजा महाबली शासन करते थे। उनके शासन की यह खूबी थी कि उनके समय में यहाँ कोई असमानता न थी, न ही धोखा-धड़ी, सर्वत्र न्याय और धर्म का ही शासन था। उनकी न्याय प्रियता और धर्मनिष्ठा से इन्द्र धबराने लगा। उन्होंने महा-विष्णु की मदद मांगी। महाविष्णु ने वामन का रूप धारण कर महाबली के पास आकर तपस्या केलिए तीन पग भूमि मांगी। बली ने सहर्ष यह बात स्वीकार कर ली। सहसा वामन ने बृहदाकार धारणकर बली के दृढ़ व्रत और वचन-बद्धता का फायदा उठाते हुए दो ही पगों में स्वर्ग, पाताल और भूमि नाप ली। तीसरा पग नापने केलिए बली ने अपना सिर झुका दिया। और वामन ने तीसरा पग नापते हुए उन्हें पाताल में धंसा दिया। लेकिन, कहा जाता है कि पाताल जाने से पहले, बली ने वामन से, अपनी प्रजा का कुशल-क्षेम जानने केलिए साल-भर में एक बार यहाँ आने की अनुमति मांगी थी, और वामन ने अनुमति दी भी थी। लोगों का विश्वास है कि हर साल सिंह महीने के शुक्ल पक्ष की श्रावण द्वादशी को

लोगों का विश्वास है कि हर साल सिंह महीने के शुक्ल पक्ष के श्रावण द्वादशी को बली अपनी प्रजा का कुशल-क्षेम जानने को आया ही करते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओणम के दिनों में, केरल की जनता अच्छी-अच्छी मिठाइयाँ पकाकर, षट्रस भोजन तैयार करके, अच्छे-अच्छे कपड़े पहनकर, घरों और रास्तों पर दीप जलाकर राजा बली के भव्य स्वागत और पूजा करने की परिकल्पना करती है।

बली अपनी प्रजा का कुशल-क्षेम जानने को आया ही करते हैं।

ओणम के दिनों में, केरल की जनता अच्छी अच्छी मिठाइयाँ पकाकर, षट्रस भोजन तैयार करके, अच्छे-अच्छे कपड़े पहनकर, घरों में और रास्तों पर दीप जलाकर राजा बली के भव्य स्वागत और पूजा करने की परिकल्पना करती है। लोगों का विश्वास है कि उत्तराषाढ़ नक्षत्र की रात को वह प्रजाहितैषी राजा महाबली हर घर को देख जाते हैं। यह तो ओणम महोत्सव के परम्परागत स्वरूप की झांकी हुई।

आजकल इसका एक सार्वजनिक स्वरूप उभर आया है। ओणम महोत्सव को यह सार्वजनिक, सार्वलौकिक और लोकप्रिय स्वरूप प्रदान करने का श्रेय राज्य सरकार को है। ओणम के पूर्व ही राज्य सरकार, अन्य संस्थाओं और कंपनियां आदि द्वारा अपने कर्मचारियों और मज़दूरों को 'बोणस' आदि प्रदान की जाती है। स्कूल-कालेज आदि शैक्षिक संस्थाओं को ओणम के दिनों में आठ-दस दिन की छुट्टी रहती है। सरकारी-गैर सरकारी कार्यालय भी इस अवसर पर चार-पाँच दिन बन्द रहते हैं।

इन्हीं दिनों में बाजारों में लाखों करोड़ों रुपये की बिक्री होती है। कपड़े, खाद्य-सामग्री और सब्जी-तरकारियों का बाजार काफी गरम रहता है। इन चीज़ों की इस समय इतनी मांग रहती है कि इस से उत्पन्न मूल्य-वृद्धि को रोकने के लिए एवं माल को पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध कराने के लिए, सरकार की तरफ से, खाद्य आपूर्ति विभाग की सहायता से, गाँवों और शहरों में उनकी निजी और सहकारी संस्थाओं की हजारों स्थाई और अस्थाई दूकानें खोली जाती हैं। इस प्रकार किसान हो, सरकारी-गैर-सरकारी कर्मचारी हो, अध्यापक-विद्यार्थी हो, व्यापारी हो—सभी वर्ग और स्तर के लोगों के लिए यह त्योहार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरल के सभी जिलों में शानदार शोभायात्राएँ, मनोरंजन के विभिन्न कार्यक्रम, संगीत सभाएँ, नाट्य-प्रदर्शन, परंपरागत आयोधनकला के प्रदर्शन आदि आयोजित किये जाते हैं।

मनाने का अनुकूल वातावरण मिल जाता है।

पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए, सरकार ओणम के दिनों को पर्यटन सप्ताह के रूप में मनाकर गंभीर कार्यक्रम तैयार करती है। इस अवसर पर केरल के ग्रामीण कला रूपों, लोक-नृत्यों आदि की प्रदर्शनियाँ आयोजित की जाती है। केरल के सभी जिलों में शानदार शोभायात्राएँ, मनोरंजन के विभिन्न कार्यक्रम, संगीत-सभाएँ, नाट्य-प्रदर्शन, परंपरागत आयोधनकला के प्रदर्शन आदि आयोजित किये जाते हैं।

इस वर्ष सितंबर 9 से 15 तक पर्यटन-सप्ताह के रूप में मनाया जायगा और इसके लिए व्यापक कार्यक्रमों की योजना तैयार की गयी है। इस प्रकार ओणम के अवसर पर केरल, अपनी सारी पारंपरिक और सांस्कृतिक खूबियों से समन्वित होकर, अपने गौरवशाली, गरिमामयी, उज्ज्वल रूप में सज-धज कर रहता है कि 'अतिथि देवता' को केरल की वैभवशाली लोक-परंपराओं की झलक में आत्मविभोर होने का अपूर्व सौभाग्य मिल जाता है।

मुझे आशा है कि इन उपसायों से गैर हिन्दी भाषी क्षेत्रों में स्वैच्छिक रूप से हिन्दी के प्रयोग में वृद्धि होगी और फलस्वरूप हिन्दी भाषा देश के विभिन्न राज्यों के बीच सेतु का काम करती रहेगी तथा भारत की एकता को और सशक्त करेगी।

आर. वेंकटरामन
राष्ट्रपति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्टेट बैंक ऑफ़ त्रावणकोर में राजभाषा हिन्दी की स्थिति

के. माधवन नायर
प्रबन्धक राजभाषा, स्टेट बैंक ऑफ़ त्रावनकोर
मुख्य कार्यालय, तिरुवनन्तपुरम

हमारे बैंक ने राजभाषा अधिनियम, नियम, भारत सरकार एवं भारतीय रिज़र्व बैंक से समय-समय पर निर्गमित निदेशों के कार्यान्वयन के लिए हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त अधिकारियों, हिन्दी अधिकारियों, टाइपिस्टों एवं अनुवादकों की नियुक्ति करके राजभाषा विभाग स्थापित किया है। हमारे आंचलिक कार्यालयों में भी राजभाषा अनुभाग स्थापित किये गये हैं।

राजभाषा अधिनियम और नियमों के प्रावधानों के अनुसार, हम बैंक के नाम-पट्ट, सूचना तथा काऊण्टर बोर्ड त्रिभाषी रूप में प्रदर्शित कर रहे हैं। हमारे सभी कार्यालयों तथा शाखाओं में प्रयुक्त सभी रबड़ मोहरें द्विभाषी/त्रिभाषी रूप में हैं। जमा पर्चियाँ, खाता खोलने की फार्में तथा रजिस्टरों के शीर्षक द्विभाषी/त्रिभाषी रूप में हैं। सभी शाखाओं को ब्राश सील प्रदान किये गये हैं। चैक, माँग-ड्राफ्ट फ़ार्म प्रतिभूति फ़ार्म तथा करार-नामे फ़ार्म हिन्दी और अंग्रेज़ी में हैं। हिन्दी में आहरित तथा हस्ताक्षरित चैक स्वीकृत किये जाते हैं।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार "क", "ख" तथा "ग" क्षेत्रों को निर्धारित विभिन्न लक्ष्यों का अनुपालन हो रहा है। हिन्दी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिन्दी में ही दिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाता है। राजभाषा अधिनियम की धारा 3 (3) के अनुसार, हम, सभी परिपत्र, प्रशासनिक आदेश, अधिसूचनाएँ, नोटिस, कार्यकारिणी समिति, निदेशक बोर्ड की कार्यसूची द्विभाषिक रूप में निर्गमित करते रहते हैं।

भविष्य निधि और अनुतोषिक निधि की बैठकों के कार्यविवरण का हिन्दी में अनुवाद हो रहा है। बैंक की अनुदेश पुस्तिका के 19 अध्यायों का हिन्दी में अनुवाद हो चुका है। प्रधान कार्यालय, आंचलिक कार्यालयों एवं प्रशिक्षण केन्द्रों में हाज़िरी रजिस्टर द्विभाषिक रूप में रखा जाता है।

कर्मचारियों एवं अधिकारियों के लिए तीन दिवसीय हिन्दी कार्यशालायें संचालित की जाती हैं जिनमें प्रयोजनमूलक व्याकरण, पत्राचार, अनुवाद कार्यप्रणाली, बैंकिंग आदि पाठ्यक्रम सम्मिलित हैं और प्रोत्साहनार्थ उन्हें सहभागिता प्रमाण पत्र हिन्दी में ही दिये जाते हैं। 6 दिन और उससे अधिक अवधि के सभी प्रशिक्षण कार्यक्रमों में राजभाषा नीति एवं प्रयोजनमूलक हिन्दी के बारे में भाषण दिया जाता है और हिन्दी में कार्यसाधक ज्ञान न रखनेवाले कर्मचारियों को हिन्दी में सेवाकालीन प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए स्टाफ प्रशिक्षण केन्द्र में हिन्दी कक्षायें संचालित की जा रही हैं। इस प्रकार की कक्षायें आयोजित करने की सूचना अन्य आंचलिक कार्यालयों को भी दी गयी हैं। हमने अपने स्टाफ़ सदस्यों से भारत सरकार की हिन्दी प्रशिक्षण योजना के अंतर्गत संचालित पत्राचार-पाठ्यक्रम-"पत्राचार द्वारा हिन्दी पढ़ें"—का लाभ उठाने का अनुरोध किया है।

हम टाइपिस्टों को हिन्दी टाइपिंग आशुलिपि में प्रशिक्षण पाने के लिए प्रतिनियुक्त कर रहे हैं।

हमारे स्टाफ़ सदस्यों को इंडियन/इन्स्टिट्यूट ऑफ बैंकेर्स बंबई द्वारा संचालित बैंकिंग उन्मुख हिन्दी परीक्षा लेने में सुविधा होने के उद्देश्यार्थ, हम ने गत परीक्षाओं के प्रश्न तथा उत्तर प्रदान किये हैं। राजभाषा नीति के कार्यान्वयन क समीक्षा करने के उद्देश्यार्थ, राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैंठकें नियमित अंतराल में आयोजित की जाती हैं।

शाखाओं के कार्यान्वयन की समीक्षा के उद्देश्यार्थ, आंतरिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निरीक्षकों से कहा गया है कि वे प्रधान कार्यालय को रिपोर्ट भेजें और इन रिपोर्टों का अवलोकन राजभाषा बिभाग द्वारा किया जाता है और यदि कोई त्रुटियाँ पाई जाती तो, उन्हें सुधारने की उचित कार्रवाई भी की जाती है।

स्टाफ़ सदस्यों का हिन्दी-ज्ञान बढ़ाने के उद्देश्यार्थ हमने प्रधान कार्यालय, आंचलिक कार्यालयों,

स्टाफ सदस्यों का हिन्दी-ज्ञान बढ़ाने के उद्देश्यार्थ हमने प्रधान कार्यालय, आंचलिक कार्यालयों एवं दो प्रशिक्षण केन्द्रों में हिन्दी पुस्तकालयों की स्थापना की गयी है।

एवं दो प्रशिक्षण केन्द्रों में हिन्दी पुस्तकालयों की स्थापना की गयी है।

हमारे बैंक द्वारा जारी किये जाने वाले सभी प्रकाशन द्विभाषी रूप में हैं।

हम ने सभी शाखाओं को "त्रिभाषिक बैंकिग शब्दावली" और "राजभाषा दर्शिका" प्रदान की हैं जिसमें नमूने पत्राचार, संख्यायें, बैंकिंग शब्दावली आदि शामिल हैं। हम ने जाँच-सूची प्रकाशित की है जिसमें राजभाषा से

हमारे बैंक को, भारत सरकार, भारतीय रिज़र्व बैंक, भारतीय स्टेट बैंक, त्रिवेन्द्रम नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति तथा केरल हिन्दी प्रचार सभा की ओर से हिन्दी में उत्कृष्ट कार्य करने के उपलक्ष्य में शील्ड पुरस्कार प्रदान किया गया है।

संबंधित सभी अनुदेश एवं उपयोगी वाक्यांश शामिल हैं।

हिन्दी दिवस के सिलसिले में स्टाफ़ सदस्यों के लिए हिन्दी में विभिन्न प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाती हैं।

हमारे बैंक को, भारत सरकार, भारतीय रिज़र्व बैंक, भारतीय स्टेट बैंक, त्रिवेन्द्रम नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति तथा केरल हिन्दी प्रचार सभा की ओर से हिन्दी में उत्कृष्ट कार्य करने के उपलक्ष्य में शील्ड पुरस्कार प्रदान किया गया है। भारत सरकार द्वारा राजभाषा की प्रगति के निरीक्षण के लिए गठित संसदीय समिति ने हमारे बैंक के प्रधान कार्यालय/आंचलिक कार्यालय/प्रशिक्षण केन्द्र का निरीक्षण कई बार किया है और इस सिलसिले में बैंक द्वारा हासिल की गई प्रगति की सराहना की है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रेम पिपासा

कु० के. आर. रंजिनी
I बी. ए. सरकारी विमेन्स कालेज,
तिरुवनन्तपुरम

सब कुछ होते हुए भी
कंगाल हूँ मैं
प्रेम की पुजारिन हूँ मैं।
धनी होते हुए भी मनसे
निर्धन हूँ मैं
प्रेम केलिए तडप रही हूँ मैं।
बन्धुमित्रों के होते हुए भी
अनाथ हूँ मैं
प्रेम की तलाश में हूँ मैं।
सब सुख के होते हुए भी
दुःखी हूँ मैं
प्रेम केलिए तरस रही हूँ मैं।
सागर मिलन की प्यासी
तटिनी हूँ में
प्रेम लेने-देने आ रही हूँ मैं।

पाठकों के पत्र

केरल ज्योति हिन्दी मासिक पत्रिका प्राप्त हुई। आपके द्वारा हिन्दी प्रचार-प्रसार का जो कार्य किया जा रहा है वह अत्यन्त प्रशंसनीय है। मेरी शुभकामनायें स्वीकार करें।

डा० महावीरि सरन जैन
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
हिन्दी एवं भाषा विज्ञान विभाग
रानी दुर्गावती वि. वि. जबलपुर

केरल ज्योति पत्रिका नियमित रूप से हिन्दी-विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में आ रही है। मैं इस उदारता के लिए आपको अनेक धन्यवाद देता हूँ। यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि केरल हिन्दी प्रचार सभा राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार में सक्रिय सहयोग कर रही है। इस पत्रिका में कई स्तर के लेख, कविता तथा कहानी आदि छपते हैं। मैं अखिल भारतीय शिक्षक कॉलेज तथा विश्वविद्यालय शिक्षक संघ की बैठक में 10 जून से 12 जून को मदुरै गया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था । यदि सच कहा जाये तो दक्षिण भारत में हिन्दी का कोई विरोध नहीं है । जो कुछ है वह सब स्वार्थी राजनीतिज्ञों का एक नाटक है । यह सच्चाई है कि आन्ध्र प्रदेश, केरल, कर्णाटक तथा तमिलनाडु में हिन्दी का बहुत प्रचार है । दक्षिण भारत के लोग ही समग्र भारत में अंग्रेजी भाषा के स्थान पर उसका वास्तविक स्थान प्रदान करने में सहयोगी होंगे । हिन्दी भाषियों को दक्षिण की भाषा साहित्य और संस्कृति में रुचि लेनी चाहिए । मैंने उत्तर तथा दक्षिण भारत के लोगों की विचारधारा, संस्कृति तथा रहन-सहन में बहुत अधिक अन्तर नहीं देखा । समग्र राष्ट्र को एकता प्रदान करने वाली हिन्दी भाषा है । इस पत्रिका में "स्वतन्त्रता आन्दोलन में हिन्दी की भूमिका" डा०एन. चन्द्रशेखरन नायर का लेख बहुत अच्छा तथा सामयिक है ।

डा० ब्रह्मानन्द
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय

केरल ज्योति का 24 वां अंक मिला । धन्यवाद ।

केरल ज्योति राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में अहम भूमिका निभा रही है । केरल जैसे अहिन्दी भाषी प्रान्त में 'केरल ज्योति' अपनी ज्योति से हिन्दी का प्रकाश फैला रही है । केरल ज्योति के इस अंक में एस. आर. सिंह का 'भाषा और भावना' तथा डा० वी गोविन्द शेनाय का 'सांस्कृतिक मूल्यों की पुनस्थापना हिन्दी प्रचार द्वारा' लेख पठनीय हैं । अंक का मुखपृष्ठ तथा अंतरंग दोनों ही आकर्षक एवं सुन्दर है। बधाई ।

द्वारकादास वेद
प्रधान मंत्री
राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा

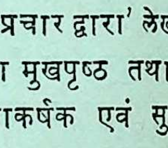

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरल ज्योति

* प्रधान संपादक
प्रो० पी. जे. जोसफ़

* संपादक
श्री. के. जी. बालकृष्ण पिल्लै

* सह संपादक
श्री. आर. सुकुमारन नायर

* संपादक मण्डल
प्रो० एम. जनार्द्दनन पिल्लै
प्रो० सी. जी. राजगोपाल
श्री. के. वी. कृष्णनकुट्टी
डा० एस. सी. चन्द्रन
डा० एन. जी. देवकी
श्री. एम. के. वेलायुधन नायर

* विज्ञापन दर

		मासिक	वार्षिक
आवरण पृष्ठ 4	रु.	500 00	5000 00
आवरण पृष्ठ 2 एवं 3	रु.	400 00	4000 00
साधारण पृष्ठ पूरा	रु.	300 00	3000 00
साधारण पृष्ठ $\frac{1}{2}$	रु.	175 00	1750 00
साधारण पृष्ठ $\frac{1}{4}$	रु.	100 00	1000 00

संपर्क करें—मंत्री, केरल हिन्दी प्रचार सभा, तिरुवनन्तपुरम-695 014

लेखकों से निवेदन

हिन्दी प्रचार, हिन्दी शिक्षण, भारतीय भाषायें, भारतीय साहित्य, भारतीय संस्कृति जैसे विषयों पर लिखे गये उच्च स्तरीय सचित्र लेखों व संगोष्ठी समाचारों का स्वागत किया जायेगा ।

हिन्दीतर प्रान्तों की सांस्कृतिक, साहित्यिक, कलात्मक विशेषताओं पर लिखी गयी मौलिक और अनूदित रचनाओं को और हिन्दीतर भारतीय भाषाओं की उत्तम रचनाओं के अनुवादों को प्राथमिकता दी जायेगी ।

पांडुलिपियाँ साफ अक्षरों में लिख कर या टाइप करके भेजें । कार्बन प्रतियाँ स्वीकृत नहीं होंगी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रथम द्वितीय और तृतीय पृष्ठ— केरल के विख्यात कला प्रशिक्षण संस्थान कलामण्डलम द्वारा तिरुवनन्तपुरम में आयोजित कलोत्सव के विविध दृश्य। [विशद विवरण केलिए केरल ज्योति के अगस्त 1989 अंक में प्रकाशित लेख-'भारतीय कलाओं का उपयोग सांस्कृतिक नवोत्थान केलिए करें' देखे।]

प्रथम पृष्ठ—शेकस्पियर के अंग्रेज़ी नाटक किंगलियर पर आधारित कथकलि

द्वितीय पृष्ठ—(ऊपर) वाद्यमंजरी

(नीचे) कथकलि के रसाभिनय का प्रदर्शन।

तृतीय पृष्ठ—(ऊपर) बायें —नलचरितम् कथकलि का एक दृश्य

दायें—किंगलियर का एक दृश्य।

(नीचे बायें) कथकलि—मिनुक्कुवेष

(नीचे दायें)—मोहिनिआट्टम की एक शृंगार मुद्रा।

चतुर्थ पृष्ठ—(ऊपर) दायें—केरल कलामंडलम की त्रैमासिक पत्रिका का प्रमोचन कर रही हैं केरल की माननीय राज्यपाल श्रीमती रामदुलारी सिन्हा। पत्रिका स्वीकार कर रहे हैं केरल विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० जी. बालमोहन तंपी।

बायें—कलोत्सव का उद्घाटन कर रहे हैं केरल के सांस्कृतिक कार्य मंत्री श्री. टी. के. रामकृष्णन। केरल के शिक्षा मंत्री श्री. के. चन्द्रशेखरन, वित्त मंत्री श्री. वी. विश्वनाथ मेनन आदि समीप हैं।

नीचे—(बायें) तिरुवनन्तपुरम में इमेर्जिंग टेकनोलजी विकास केन्द्र का उद्घाटन केन्द्र विज्ञान एवं तकनीकी विभाग मंत्री श्री. के. आर, नारायणन ने किया। समीप हैं—(बायें से) श्री. ई. के. नयनार, मुख्य मंत्री, केरल; श्री. टी. के. रामकृष्णन, सांस्कृतिक कार्य मंत्री. केरल और श्री. के. पी. पी. नंपियार (पूर्व अध्यक्ष, केलट्रोन)

दायें—कलामंडलम कलोत्सव के दर्शक।

बीच में—केन्द्रीय हिन्दी संस्थान आगरा के निदेशक एवं विख्यात भाषा-शास्त्री डा० अमर बहादुर सिंह केरल हिन्दी प्रचार सभा में भाषण देते हुए। समीप हैं—बायें से—श्री. एम. के. वेलायुधन नायर और श्री. गोविन्ददास बलिया, उपसचिव, राजभाषा विभाग, भारत सरकार।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूरभाष : 61378

तार : "जय हिन्दी"

केरल ज्योति

पुष्प 24
दल 7
एक प्रति—1 रु० 50 पै०
वार्षिक—15 रु०

सांस्कृतिक जागरण की मासिक पत्रिका
अक्टूबर 1989

संपादकीय

रजत जयंती के अवसर पर

अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ, नई दिल्ली अपनी रजतजयन्ती मना रहा है। यह संघ केन्द्र सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने देश की उन स्वैच्छिक हिन्दी संस्थाओं को मिला कर गठित किया है जो हिन्दी के प्रचार प्रसार में लगी हुई हैं और जिन की परीक्षायें केन्द्र सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त हैं। संप्रति 20 संस्थायें संघ की सदस्य हैं जिन में केरल हिन्दी प्रचार सभा भी एक है।

संघ की रजत जयंती का उद्घाटन सितंबर 1989 में नई दिल्ली में हुआ जिस का विवरण इस अंक में अन्यत्र प्रकाशित है। उद्घाटन सम्मेलन में यह आग्रह किया गया है कि सदस्य संस्थायें भी अपने अपने स्तर पर संघ की रजत जयन्ती मनाये। यह भी आग्रह किया गया है कि संघ अपनी उपलब्धियों का ही नहीं, भूलों का भी पुनरवलोकन करे और अपने लक्ष्य की प्राप्ति के अनुरूप योजनायें बनाये।

गत पच्चीस वर्षों में संघ ने जो उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं उनका उल्लेख उक्त विवरण में किया गया है। परमश्रद्धेय गंगाबाबू के नेतृत्व में संस्थाओं ने अपना पारस्परिक मनमुटाव भुला दिया, प्रेम और सौहार्द से एक लक्ष्य केलिए एकमत हो कर काम करना सीखा। परीक्षाओं और पाठ्यक्रमों में एकरूपता लाने में भी संघ समर्थ हुआ। कार्यकर्ताओं के शिविरों के आयोजन से कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण का भी बहुत सारा कार्य किया। प्रदर्शनी, संगोष्ठी आदि के आयोजन द्वारा प्रचार की दिशा में भी कदम बढाया ! राष्ट्रभाषा प्रचार का इतिहास, 'प्रदेश की एक झाँकी' पुस्तक माला, संघ समाचार मासिक पत्रिका, राजभाषा अध्यापन और हिन्दी टंकण कला संबंधी पुस्तकें आदि का प्रकाशन किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस अंक में

अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ की रजत जयन्ती श्री. जगदीश प्रसाद शर्मा	3
ललित निबन्ध कु. एस. लीलाकुमारी	12
कविता क्या है ? पं० रामचन्द्र शुक्ल की दृष्टि में डॉ० जयचन्द्र राय	19
राजभाषा के लक्षण डॉ० किशोर बासवानी	23
मुस्कुराहटें बिक रही हैं डॉ० रती सक्सेना	28
शताभिषिक्त केरल विधान सभा श्री. एम. एस. राधाकृष्णन	34
पाठकों के पत्र	40

उक्त सभी उपलब्धियों पर हम गर्व कर सकते हैं। पर जब इस बात पर विचार करते हैं कि राष्ट्रभाषा प्रचार के द्वारा राष्ट्र की विविध भाषा भाषी जनता में भावात्मक एकता को सुदृढ करने के जिस महान उद्देश्य को लेकर राष्ट्रीय नवोत्थान के एक मुख्य रचनात्मक कार्यक्रम के रूप में हिन्दी प्रचार अभियान का सूत्रपात हुआ था उस उद्देश्य की पूर्ति में हम कहाँ तक सफल हुए तब हमें लगता है कि मंजिल अभी बहुत दूर है ! लगता है कि कभी कभी हम जन जागरण का प्रमुख लक्ष्य भूल गये और केवल हिन्दी भाषा के प्रचार में सिमटते गये।

हमें रजत जयन्ती के इस अवसर पर उक्त विषयों पर खूब विचार मंथन करना है। हमें देखना है कि किस प्रकार हम देशप्रेम, एकता, स्वतंत्रता. जनतंत्र, स्वराज, अहिंसा, सत्य आदि राष्ट्रीय मूल्यों को प्रतिष्ठित करने के साधन के रूप में हिन्दी के प्रचार कार्य को नया स्वरूप दे सकेंगे, नयी दिशा दे सकेंगे। किस प्रकार राष्ट्र को अपने चारित्रिक संकट से मुक्त करने में हिन्दी प्रचार अभियान का उपयोग कर सकेंगे। प्रचार, प्रशिक्षण, प्रकाशन और अनुसंधान के क्षेत्रों में किस प्रकार की नयी योजनायें बनायी जाती होंगी।

एक वर्ष तक यदि सभी सदस्य संस्थायें उक्त मुद्दों पर गौर से विचार मंथन करेंगी तो निश्चय ही कुछ ऐसे उपाय उभर आयेंगे जिन के क्रियान्वयन से हम लक्ष्य प्राप्ति में अधिक सफल होंगे। ★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ की रजत जयन्ती

श्री. जगदीश प्रसाद शर्मा

अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ, नई दिल्ली का रजतजयंती समारोह। (वायें से) डा० मो. दि पराड़कर (मंत्री, अ. भा. हि. सं संघ) श्री. कृष्णानन्द झा (जल संसाधन एवं राजभाषा विभाग, बिहार सरकार) प्रो० रामलाल परीख (अध्यक्ष, अ. भा. हि. सं. संघ) श्री. एम. के. वेलायुधन नायर (कोषाध्यक्ष, अ. भा. हि. सं. संघ) एवं श्री. शंकर राव लोंढे (पूर्व कोषाध्यक्ष, अ. भा. हि. सं संघ)

अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ की स्थापना के 25 वर्ष पूरे होने पर दिनांक 4 सितम्बर, 1989 को दिल्ली के त्रिवेणी कला संगम सभागार में रजत जयन्ती समारोह का प्रारम्भ हुआ। रजत जयन्ती समारोह का उद्घाटन बिहार राज्य के जल-संसाधन एवं राजभाषा विभाग के मंत्री श्री. कृष्णानन्द झा जी ने किया। संघ के अध्यक्ष प्रो० रामलाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीख जी ने समारोह की अध्यक्षता की। समारोह का प्रारम्भ राजकीय उच्चतर माध्यमिक कन्या विद्यालय नं.-1, तिलक नगर की छात्राओं द्वारा प्रस्तुत मंगलाचरण से हुआ।

डा० मो. दि. पराड़कर

संघ के सचिव डा० मो. दि. पराड़कर ने उपस्थित अतिथियों तथा महानुभावों का स्वागत किया। उन्होंने अपने स्वागत भाषण में बताया कि 1964 में संघ के संस्थापक अध्यक्ष स्व० गंगाशरण सिंह जी के प्रयत्न से संस्था संघ की स्थापना हुई। गंगाबाबूजी संघ की स्थापना से लेकर जीवन पर्यन्त संघ के अध्यक्ष रहे। यदि गंगाबाबूजी संघ की रजत जयन्ती के अवसर पर उपस्थित रहते तो उन्हें बहुत प्रसन्नता होती। गंगाबाबू जी ने संघ तथा संस्थाओं का काफी लम्बी अवधि से मार्गदर्शन और निर्देशन किया। रजत जयन्ती के समारोह का उद्घाटन होने के बाद सभी सदस्य संस्थाएँ अपने-अपने क्षेत्र में रजत जयन्ती समारोह का कार्यक्रम बनाएँगी। रजत जयन्ती समारोह का समापन संघ के द्वारा किया जाएगा। गत 25 वर्ष की अवधि में संघ तथा संस्थाओं ने हिन्दी के

दिल्ली में गंगाबाबूजी के नाम से गंगा भवन बनाने का भी निर्णय किया गया है।

प्रचार प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। संस्थाओं ने पिछले लगभग 7 दशक से हिन्दी के प्रचार प्रसार को एक रचनात्मक कार्य मानकर इस कार्य को किया है। संघ तथा संस्थाओं ने गंगाबाबू जी की स्मृति को स्थायी बनाये रखने के लिए अनेक कार्यक्रम बनाए हैं। दिल्ली में गंगाबाबूजी के नाम से गंगा भवन बनाने का भी निर्णय किया गया है। हिन्दी प्रचार प्रसार के क्षेत्र में महिलाओं ने भी भरपूर सहयोग दिया है। सारे दक्षिण भारत में महिलाओं की जागृति के कारण हिन्दी प्रचार प्रसार को बल मिला है।

श्री. कृष्णानन्द झा

श्री. कृष्णानन्द झाजी ने अपने उद्घाटन भाषण में बताया कि अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ देश की उन महत्वपूर्ण हिन्दी सेवी संथाओं का संगठन है जिन्होंने स्वतन्त्रता आन्दोलन के समय से ही राष्ट्रीय चेतना को हिन्दी के माध्यम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैज्ञानिक प्रगति की दौड़ में भी राष्ट्रभाषा हिन्दी उसी तरह समस्त राष्ट्र की वाणी बनकर उभर सके जिस तरह स्वतन्त्रता आन्दोलन के युग में वह राष्ट्र की वाणी बनकर उभरी थी।

से जागृत किया है और स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद भी राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार प्रसार में भी निष्ठापूर्वक समर्पित भाव से कार्य कर रही है। 1964 से पूर्व ये संस्थाएँ अपने-अपने क्षेत्रों में हिन्दी प्रचार प्रसार के लिए समर्पित भाव से कार्य कर रही थीं। किन्तु इन संस्थाओं के बीच एक समन्वय और सामंजस्य बनाना आवश्यक था। संघ के संस्थापक अध्यक्ष स्व० गंगाशरण सिंह जी ने इस दिशा में प्रयत्न किया और 1964 में हिन्दी संस्था संघ की स्थापना हुई। इस एकात्मकता और समन्वय की भावना के लिए हम सभी संस्था संघ के संस्थापक अध्यक्ष स्व० गंगाशरण सिंह जी के ऋणी रहेंगे। संघ के मार्गदर्शन से पिछले 25 वर्षों में संस्था संघ के सम्बद्ध संस्थाओं द्वारा किए गए प्रयत्न का यह परिणाम है कि हिन्दीतर प्रदेशों में आज करोड़ों की संख्या में हिन्दी जानने वाले व्यक्ति मौजूद हैं। आज राष्ट्रभाषा हिन्दी का प्रचार एक ऐसी स्थिति पर पहुँच गया है जहाँ हमें आगे के लिए कार्यक्रम तथा उसके अनुसार अपनी कार्यप्रणाली को सुनिश्चित करने की आवश्यकता है जिससे हम देश में व्याप्त वैज्ञानिक प्रगति के साथ-साथ कदम से कदम मिलाकर चल सकें। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि संघ की सभी सदस्य संस्थाएँ इस प्रकार का प्रयास करेंगी जिससे कार्यकर्ताओं के लिए प्रशिक्षण की व्यवस्था हो सके। इससे वैज्ञानिक प्रगति की दौड़ में भी राष्ट्रभाषा हिन्दी उसी तरह समस्त राष्ट्र की वाणी बनकर उभर सके जिस तरह स्वतन्त्रता आन्दोलन के युग में वह राष्ट्र की वाणी बनकर उभरी थी।

श्री. जगदीश शर्मा

संघ के कार्यालय सचिव श्री. जगदीश शर्मा ने अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ की स्थापना तथा संघ द्वारा गत् वर्षों में सम्पन्न किए गए कार्यों की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संक्षिप्त जानकारी प्रस्तुत की और संघ की सभी सदस्य संस्थाओं की स्थापना उनका कार्य विवरण आदि के बारे में संक्षिप्त रूप से परिचय दिया। उन्होंने कहा कि संस्था संघ की स्थापना 1964 में हुई। उस समय संघ की सदस्य संस्थाओं की संख्या 15 थी और उनकी संख्या बढ़कर 20 हो गई है। संस्था संघ ने स्वैच्छिक हिन्दी संस्थाओं और भारत सरकार के बीच सेतु का काम किया है। संघ द्वारा जितने भी कार्यक्रम आयोजित किए गए

आज सारे भारत में स्वैच्छिक हिन्दी संस्थाओं के लगभग 60 हजार से अधिक हिन्दी प्रचारक इस कार्य में निष्ठा से लगे हुए हैं।

उनमें संस्थाएँ एक-दूसरे के निकट आई हैं। उनमें स्नेह और सौहार्द की भावना जागृत हुई है। हिन्दी प्रचारक/प्रचारिकाओं में हिन्दी के प्रति प्रोत्साहन पैदा करने में काफी सफलता मिली है। आज सारे भारत में स्वैच्छिक हिन्दी संस्थाओं के लगभग 60 हजार से अधिक हिन्दी प्रचारक इस कार्य में निष्ठा से लगे हुए हैं। संस्था संघ अपने उद्देश्यों, नियमावली, गठननीति और कार्यप्रणाली की दृष्टि से हिन्दी प्रचार संस्थाओं, सरकारी तथा गैर-सरकारी संस्थाओं का संगम स्थान है। हिन्दी अखिल भारत की वाणी है। इसके पीछे हजारों कार्यकर्ताओं का ध्यान विहित है। हिन्दी हम सबको संगठित करने में सक्षम है। इसी भावना पर आधारित दर्शन को लेकर हिन्दी प्रचार चला है और भविष्य में भी चलेगा।

श्री. शंकर राव लौंढे

इस अवसर पर हिन्दी के वरिष्ठ सेवी, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के प्रधान मंत्री श्री. शंकर राव लौंढे जी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि संघ ने गत् 25 वर्षों में संस्थाओं को एक सूत्र में माला की तरह पिरोकर रखा है। संस्थाओं में परस्पर समन्वय, सहयोग और सौहार्द की भावना बढ़ी है। हिन्दी प्रचार प्रसार की संस्थाओं को एक मंच पर लाने के लिए गंगाबाबू जी ने जो प्रशंसनीय कार्य किया है वह अपने आप में एक अद्भुत कार्य है। स्वैच्छिक हिन्दी संस्थाएँ राष्ट्रपिता महात्मा गांधीजी की प्रेरणा से स्थापित हुईं लेकिन उन्हीं संस्थाओं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

> **स्वैच्छिक हिन्दी संस्थाएँ राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी की प्रेरणा से स्थापित हुईं, लेकिन उन्हीं संस्थाओं को संगठित कर गंगाबाबू जी ने एक महत्वपूर्ण कार्य किया है।**

को संगठित कर गंगाबाबू जी ने एक महत्वपूर्ण कार्य किया है।

प्रो० रामलाल परीख

संस्था संघ के अध्यक्ष प्रो० रामलाल पारीख जी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि देश में पिछले 7 दशक से हिन्दी प्रचार प्रसार करने के उद्देश्य से हिन्दी संस्थाओं की स्थापना हुई। इन संस्थाओं ने राष्ट्रीय एकता को बनाये रखने के लिए हिन्दी के प्रति रुचि बढ़ाने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। देश की अनेकों स्वैच्छिक हिन्दी संस्थाओं ने अपनी रजत जयन्ती, स्वर्ण जयन्ती तथा हीरक जयन्ती भी आयोजित की है। ये संस्थाएँ काफी पुरानी हैं। प्रान्तों में प्रान्तीय भाषाएँ तथा अन्तरप्रान्तीय व्यवहारों के लिए हिन्दी का प्रयोग होना चाहिए। हिन्दी कभी भी क्षेत्रीय भाषा के विरोध में नहीं होगी। हिन्दी विदेशी भाषाओं से जो कुछ ग्रहण करेगी हिंदी ही ग्रहण करेगी। इसी भावना को लेकर स्वैच्छिक हिन्दी संस्थाओं के कार्यकर्ता निष्ठा से लगे हुए हैं। भारत की सभी भाषाओं में राष्ट्रीय एकता है। सभी भारतीय भाषाओं में आपस में निकट का सम्बन्ध है। कहीं

> **भारत की सभी भाषाओं में राष्ट्रीय एकता है। सभी भारतीय भाषाओं में आपस में निकट का सम्बन्ध है।**

कोई विरोध नहीं है। एक भाषा के विकास में दूसरी भाषा का विकास निहित है। कोई भी भाषा तभी विकसित होती है जब वह जनता के दिल में घर कर लेती है। प्रत्येक भाषा में लगातार आदान-प्रदान होते रहना चाहिए। संघ की सभी सदस्य संस्थाएँ हिन्दी एवं अन्य क्षेत्र की भाषा के साथ आदान-प्रदान, समन्वय और सामंजस्य बढ़ाती रही है। उन्होंने संघ की रजत जयन्ती के अवसर पर संघ की सदस्य संस्थाओं, हिन्दी प्रचारकों, कार्यकर्ताओं तथा हिन्दी प्रेमी जनता के प्रति हार्दिक शुभ कामनाएँ व्यक्त कीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री. एम. के. वेलायुधन नायर

संघ के कोषाध्यक्ष श्री. एम. के. वेलायुधन नायरजी ने धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि हिन्दी संस्था संघ ने गत् 25 वर्षों में जो कार्य किया है वह अपने आप में महत्व-पूर्ण कार्य है। संघ ने 25 वर्षों की अवधि सफलतापूर्वक पूरी की है। आगे के 25 वर्षों के लिए संघ तथा उसकी सदस्य संस्थाओं को मिलजुल कर एक व्यापक हिन्दी प्रचार प्रसार का कार्यक्रम बनाना चाहिए। उन्होने संघ द्वारा गंगाबाबू भवन का संकल्प दौहराते हुए कहा कि यह बडे दुख की बात है कि पिछले 25 वर्षों में प्रयत्न करने पर भी हम संघ के लिए एक उचित स्थान नहीं बना पाये हैं। इसमें संस्थाओं, प्रचारकों, बन्धुओं तथा हिन्दी प्रेमियों का सहयोग मिलना चाहिए। संघ की सदस्य संस्थाएँ गंगाबाबू स्मृति के लिए अपने आवेदन पत्रों के साथ एक रुपये का "गंगाबाबू स्मारक निधि" कूपन जारी करें। उन्होंने केरल हिन्दी प्रचार सभा की ओर से भवन निर्माण के लिए प्रारम्भ में 30,000 रुपये की राशी संघ को प्रदान की। हमारा यह प्रयास है कि सभी सदस्य संस्थाएँ अपने बल और

केरल हिन्दी प्रचार सभा की ओर से भवन निर्माण के लिए प्रारम्भ में 30,000/- रुपये की राशि

सामर्थ्य के आधार पर इस कार्य में अपना पूरा सहयोग दें।

विचार गोष्ठी

समारोह के अपराह्न के क्षेत्र में 'हिन्दी प्रचार प्रसार एवं स्वैच्छिक हिन्दी संस्थाएँ — उपलब्धियां" विषय पर एक गोष्ठी आयोजित की गई। केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के निदेशक श्री. गंगाप्रसाद विमल मुख्य अतिथि थे। संघ के सचिव डा० मो० दि० पराड़कर ने उपस्थित महानुभावों तथा अतिथियों का स्वागत किया। उन्होंने हिन्दी प्रचार प्रसार के क्षेत्र में स्वैच्छिक हिन्दी संस्थाओं की भूमिका विषय पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि हिन्दी के प्रचार प्रसार में स्वैच्छिक हिन्दी संस्थाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। संविधान में हिन्दी को राजभाषा घोषित किए जाने पर भी हिन्दी के प्रचार प्रसार के क्षेत्र में स्वैच्छिक हिन्दी संस्थाओं पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा है। हिन्दी के प्रचार प्रसार को और अधिक व्यापक और रुचिकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संविधान में हिन्दी को राजभाषा घोषित किए जाने पर भी हिन्दी के प्रचार प्रसार के क्षेत्र में स्वैच्छिक हिन्दी संस्थाओं पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा है ।

बनाने के लिए संघ की सदस्य संस्थाओं के द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा नये आधुनिक इलैक्ट्रानिक उपकरण अपनाए जा रहे हैं । सचिव महोदय ने केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के निदेशक डा० गंगाप्रसाद विमल, हिन्दी आकादमी के सचीव डा० नारायणदत्त पालीवाल तथा हिन्दी के वरिष्ठ साहित्यकार आचार्य क्षेमचन्द्र सुमन जी का शाल, स्मृति चिह्न तथा पुष्पमाला से हार्दिक स्वागत किया ।

इसके बाद नारायणदत्त पालीवाल जी ने हिन्दी के प्रचार के क्षेत्र में स्वैच्छिक हिन्दी संस्थाओं की भूमिका विषय पर प्रकाश डालते हुए कहा कि स्वैच्छिक हिन्दी संस्थाएँ काफी लम्बे समय से हिन्दी के प्रचार प्रसार में जुटी हुई हैं । उन्होंने संघ द्वारा पिछले 25 वर्षों में किए गए कार्यों की सराहना की । उन्होंने हिन्दी अकादमी द्वारा स्वैच्छिक हिन्दी संस्थाओं को हिन्दी के प्रचार प्रसार के क्षेत्र में पूरा सहयोग देने का आश्वासन दिया । देश के विभिन्न क्षेत्रों की स्वैच्छिक हिन्दी संस्थाओं ने रचनात्मक कार्यक्रम में तथा हिन्दी प्रचार प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है ।

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा के मंत्री श्री वी एस. राधाकृष्णन जी ने सभा की वर्तमान गतिविधियों के बारे में जानकारी दी । उन्होंने कहा कि मद्रास सभा के आज 18,974 हिन्दी प्रचारक हैं । ये हिन्दी प्रचारक राज्य के विभिन्न केन्द्रों पर हिन्दी के शिक्षण की व्यवस्था करते हैं । तमिलनाडु में हिन्दी विरोध के आन्दोलन से सभा के कार्यकर्ता/प्रचारक बहुत प्रभावित हुए । वहाँ के प्रचारकों के सामने जो अवरोध उपस्थित हुए उन्हें हमारे कार्यकर्ताओं/प्रचारकों ने अपने आत्मविश्वास एवं कार्यनिष्ठा के सहारे परास्त किया है । मद्रास सभा को सन् 1964 में संसद ने राष्ट्रीय महत्व की संस्था घोषित किया है । सभा द्वारा आज एम. ए., एम. फिल., पी एच. डी, डी. लिट् बी. ए., बी. एड. तथा कम्प्यूटर केन्द्र भी चलाये जा रहे हैं । तमिलनाडु में जहाँ हिन्दी का विरोध होता है वहाँ अप्रत्याशित रूप से हिन्दी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिखनेवालों की संख्या बराबर बढ़ती जाती है। उन्होंने कहा कि 1,14,000 विद्यार्थी सभा की परीक्षाओं में सम्मिलित हुए हैं। आज सभा की हिन्दी टंकण परीक्षा में 3000 विद्यार्थी सम्मिलित हुए हैं। आज सभा की हिन्दी आशुलिपि की परीक्षाओं में 100 से अधिक छात्र सम्मिलित होते हैं। दूरदर्शन के माध्यम से हिन्दी के प्रचार प्रसार में बहुत सहायता मिली है। दूरदर्शन के

जो लोग हिन्दी का विरोध करते हैं उनके परिवार के लोग हिन्दी सीखते हैं।

लोकप्रिय सीरियल द्वारा हिन्दी के प्रचार प्रसार को बहुत बढ़ावा मिला है। आज लोग स्वेच्छा से हिन्दी सीखने के लिए हिन्दी प्रचारकों से संपर्क करते हैं सरकार को चाहिए कि अच्छे से अच्छे सीरियल दूरदर्शन द्वारा प्रसारित करें। उससे हिन्दी प्रचार प्रसार को बहुत बढ़ावा मिलेगा। उन्होंने यह भी बताया कि जो लोग हिन्दी का विरोध करते हैं उनके परिवार के लोग हिन्दी सीखते हैं।

इसके बाद हिन्दी प्रचार सभा, हैदराबाद के मंत्री श्री राजकिशोर पाण्डेय, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा के मंत्री श्री द्वारकादास वेद, प्रयाग महिला विद्यापीठ के कुलसचिव श्री जगदीश प्रसाद द्विवेदी, हिन्दी विद्यापीठ, देवघर के कुलपति श्री नवल किशोर गौड़ और ओडिशा राष्ट्रभाषा परिषद पूरी के मंत्री श्री नरसिंहनन्द शर्मा जी ने अपने अपने विचार प्रकट किए।

डा० गंगाप्रसाद विमल

इसके बाद संगोष्ठी के मुख्य वक्ता डा० गंगा प्रसाद विमल ने अपने भाषण में कहा कि हिन्दी संस्था संघ और संघ की सदस्य संस्थाओं ने हिन्दी के प्रचार प्रसार में एक लम्बे समय से बहुत अनुकरणीय काम किया है। गत 25 वर्षों में हिन्दी के प्रचार प्रसार में जो भूलें हुई है उनका अवलोकन करें और उनको दूर करने के लिए निष्ठा से प्रयत्न करें। उन्होंने अगले 25 वर्षों में हिन्दी के प्रचार प्रसार के लिए अन्य उपयोगी योजनाएँ बनाने का भी सुझाव दिया। उन्होंने बताया कि संस्थाएँ जो भी अच्छा सुझाव योजनाएँ निदेशालय को भेजेंगी, निदेशालय उन पर सहानुभूतिपूर्वक विचार करेगा। निदेशालय का पूरा सहयोग हिन्दी प्रचार प्रसार तथा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गत 25 वर्षों में हिन्दी के प्रचार प्रसार में जो भूलें हुई हैं उनका अवलोकन करें और उनको दूर करने के लिए निष्ठा से प्रयत्न करें।

अन्य रचनात्मक कार्यक्रमों के लिए संस्थाओं को सदैव प्राप्त होगा ।

श्री क्षेमचन्द्र सुमन

हिन्दी के वरिष्ठ साहित्यकार श्री क्षेमचन्द्र सुमन जी ने भी हिन्दी के प्रचार प्रसार के सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त किए । उन्होंने संस्था संघ की रजत जयन्ती के उद्घाटन समारोह पर अपनी शुभकामनाएं व्यक्त कीं । उन्होंने बताया कि संघ के अनेक कार्यक्रमों में उनका सहयोग रहा है। संघ ने अपनी स्थापना से लेकर आज तक अनेक महत्वपूर्ण कार्य किए हैं । संघ ने सभी सदस्य संस्थाओं को एक मंच पर लाने का अद्भुत और महत्वपूर्ण कार्य किया है। इसके लिए संघ के संस्थापक अध्यक्ष स्व० गंगाबाबूजो का स्मरण करना चाहिए । बाबू जी के छोड़े हुए कार्यक्रमों को यदि हम अमल में लायें और उन पर निष्ठा से कार्य करें तो निश्चय ही गंगाबाबू जी की आत्मा प्रसन्न होगी ।

इसके बाद श्री. शंकरराव लोंढे जी ने उपस्थित भाषण कर्ताओं तथा अन्य उपस्थित महानुभावों के प्रति संघ की ओर से आभार व्यक्त किया ।

कवि गोष्ठी

शाम 5 बजे से 7 बजे तक श्री. क्षेमचन्द्र सुमन जी की अध्यक्षता में एक कवि गोष्ठी आयोजित की गई । गोष्ठी में श्री. सतीश सागर, श्री. मधुर शास्त्री, डा० इन्द्र सैंगर, श्री. प्रीतम सिंह प्रियतम, सुश्री अर्चना शर्मा, श्रीमती पुष्पलता भट्ट तथा श्रीमती लीना तनरेजा ने अपनी अपनी रचनाएँ प्रस्तुत कीं । श्रोताओं ने उनकी रचनाओं की सराहना की ।

बाबू जी के छोड़े हुए कार्यक्रमों को यदि हम अमल में लायें और उन पर निष्ठा से कार्य करें तो निश्चय ही गंगाबाबूजी की आत्मा प्रसन्न होगी ।

संघ के सचिव डा० मो. दि. पराड़कर ने उपस्थित कवियों तथा महानुभावों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया ।

अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ
कोटला मार्ग, नई दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ललित निबन्ध

एस. लीलाकुमारी

हिन्दी, निबन्ध साहित्य का अधुनातन रूप 'ललित निबन्ध' के नाम से स्वीकृति पा चुका है, साहित्य की एक स्वतंत्र विधा के रूप में अपनी पृथक पहचान बना चुका है। वस्तुत: भावात्मक निबन्धों का स्वतंत्र और विकसित रूप है "ललित निबन्ध"।

सामान्य तौर पर सुन्दर एव मनोहर वस्तु के सन्दर्भ में 'ललित' शब्द का प्रयोग होता है। 'ललित' शब्द केलिए मनोहर, कोमल, सुन्दर, अभिलषित जैसे शब्दों का प्रयोग किया गया है। 'ललित' का अभिधार्थ है—"सुन्दर, रमणीय, सरल, प्रिय, ईप्सित, क्रीड़ाशील, निर्दोष" आदि[1]। 'ललित' शब्द की उत्पत्ति 'लल' धातु से 'क्तः' प्रत्यय लगाने से हुई है जिसका तात्पर्य है सुन्दर'[2]। 'ललित' शब्द केलिए अंग्रेज़ी में प्रेटी, कमली, एलिगन्ट, स्वीट, ग्रेसफुल जैसे शब्द प्रयुक्त हैं।

साधारण अर्थ में सौन्दर्य हमारी दृष्टि का विषय है। जब हम किसी पुष्प को, लता को, मूर्ति को 'सुन्दर' कहते हैं और साहित्य की किसी विधा को 'ललित' कहते हैं तो हमारे मन में उस रचना विशेष की समग्रता से उत्पन्न एक आनन्दोद्रेक भावना काम करती है। उदाहरणार्थ किसी पुष्प को सुन्दर कहने का तात्पर्य यह नहीं कि उसकी पंखुडियाँ सुन्दर हैं, उसका आकार-प्रकार सुन्दर है, बल्कि इसका मतलब यही होता है कि फूल समग्र रूप से हमारे चित्त में एक प्रकार का आनन्दोद्रेक

'ललित' शब्द की उत्पत्ति 'लल' धातु से 'क्तः' प्रत्यय लगाने से हुई है, जिसका तात्पर्य है 'सुन्दर'

करता है और उस आनन्द के प्रकटीकरण केलिए हम उसे सुन्दर कहते हैं। यही स्थिति 'ललित निबन्ध' के विषय में है। इनको पढकर भी हमारे मन में एक प्रकार के आनन्द की उत्पत्ति होती है और 'ललित निबन्ध' आनन्दोद्रेक करता है। 'सौन्दर्य' से एक ओर संस्कारों का उद्बोधक-ज्ञान और दूसरी ओर उद्बोधक सामग्री की प्रतीति भी रहती है। अतएव, जिसप्रकार साधारण ज्ञान-प्राप्ति के समय हमें उद्बोधक सामग्री की भी जानकारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहती है, वैसे ही सौन्दर्य-बोध के समय भी हम जानते हैं कि हमने सुन्दर वस्तु को जान लिया है' ।[4]

'सौन्दर्य' वस्तु की समग्रता का तत्व है । सौन्दर्य 'लालित्य' केलिए प्रयुक्त होने वाला शब्द है । 'लालित्य' कहते ही हमारे सम्मुख ललित का भाव आ जाता है । "ललितस्य भाव: इति लालित्यम्"[5] ललित शब्द के साथ 'ष्यज' प्रत्यय लगाने से 'लालित्य' शब्द बना है जिसका अर्थ है 'सौन्दर्य, मनोहरता, रमणीयता याने ललित होने की अवस्था, गुण या भाव । जिसे हम लालित्य कहते हैं, वह इच्छारूपा सृष्टि है ।

कुल मिलाकर 'ललित' शब्द का अर्थ है—मनोहर, सुन्दर, अभिलाषित, कोमल, प्रिय आदि । ललित का भाव, ललित का गुण, ललित होने की अवस्था और सरसतापूर्ण सौन्दर्य को लालित्य कहा जाता है।

'निबन्ध' संस्कृत की मूल धातु 'बंध' में 'नि' उपसर्ग (नि+बंध) लगाकर बना है । नि+बंध+धज् से। इसका अर्थ है—बांधना, रोकना, संग्रह करना । निबन्ध का शाब्दिक अर्थ है—'बंधा हुआ' । लेकिन आज उसकी प्रकृति है "खुली हुई या उन्मुक्त" । निबन्ध की मूल उत्पत्ति लैटिन भाषा के 'इग्जागियम' से होती है। अंग्रेजी 'एसे' शब्द के पर्याय रूप में निबन्ध का प्रचलन हिन्दी में होता है। 'निबध्नातोति निबन्धनम्' अर्थात् जो बांधता है, वही निबन्ध है। संस्कृत साहित्य में 'निबन्ध' शब्द ग्रंथों की टीकाओं केलिए लाक्षणिक रूप में प्रयुक्त होता रहा है। सर्वप्रथम 'श्रीमद् भगवत्गीता' में यह शब्द मिलता है । यहाँ भगवान कृष्ण ने निबन्ध का प्रयोग बाँधने के अर्थ में किया है।

इसप्रकार कह सकते हैं कि निबन्ध गद्य की वह लधुरचना है, जिसमें लेखक अपने व्यक्तिगत विचारों, भावनाओं और अनुभूतियों का अंकन, सरल शैली में स्वतंत्रता से करता है ।

'ललित निबन्ध' शब्द हिन्दी में मराठी से आया है। मराठो साहित्य में वि. स. खाण्डेकर श्रेष्ठ ललित निबन्धों के सृष्टा है । "बिट्टालिज शब्दावली' में 'ललित निबन्ध' शब्द सबसे पहले प्राप्त है । ललित निबन्ध को वैयक्तिक निबन्ध, कलात्मक निबन्ध, व्यक्ति व्यंजक निबन्ध, व्यक्ति प्रधान निबन्ध, विषय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रधान निबन्ध और आधुनिक निबन्ध कहा गया है।

आचार्य हज़ारीप्रसाद द्विवेदी ने 'साहित्य का साथी' में लिखा है कि निबन्धों के व्यक्तिगत होने का अर्थ यह नहीं है कि उनमें विचार-श्रंखला न हो। अंग्रेज़ी में निबन्ध के दो भेद मिलते हैं---1. पर्सनल एसे अर्थात् कलात्मक निबन्ध अथवा ललित निबन्ध। 2. इम्पर्सनल एसे अथवा वस्तुनिष्ठ निबन्ध। जे. बी प्रिस्टले ने ललित निबन्धों को 'मानस तरग' के रूप में निरूपित किया है। लेखक की स्वच्छन्द,अन्मुक्त तथा रागात्मक भावना की इसमें मार्मिक अभिव्यंजना होती है। अंग्रेज़ी साहित्य में ललित निबन्धों के विषय में कहा गया है कि वर्तमान ललित निबन्धकारों के हाथ में पडकर निबन्ध प्रगति और व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति बन गया है। वैसे हरबर्ट रीड के मतानुसार सभी कृतियों से व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति होती हैं। फ्रांसीसी लेखकों में मोशियो मारीते तथा मोशियो मुनिए ने व्यक्तिव्यंजना को विशेष महत्व दिया, जिसके कारण उनका दल 'पर्सनालिस्ट' कहलाया। डब्ल्यू. एच. हडसन ने वास्तविक निबन्ध को मूलत: ललित निबन्ध माना है। टी० एस० इलियट ने 'थ्री वायसेस आफ पोयट्री' (साहित्य के तीन रूप) में जो प्रथम श्रेणी बतायी है, उसके अंतर्गत द्विवेदीजी के 'अशोक के फूल' पुस्तक आ जाती है। इलियट की प्रथम श्रेणी में पूर्ण वैयाक्तिक एवं ऐकान्तिक जिनत्व संपन्न गोपनीय अतितन्मय और स्वान्त: सुखाय साहित्य की चर्चा की गयी है। इलियट की द्वितीय श्रेणी का प्रत्यक्ष संबन्ध निबन्ध के साथ नहीं है। तृतीय श्रेणी में साहित्यकार को किसी माध्यम से व्यक्ति की आवश्यकता महसूस नहीं होती। वह अपनी कल्पना शक्ति का प्रयोग करता है।

ललित निबन्ध' को हम यों परिभाषि कर सकते है– व्यक्ति प्रधान या आत्मपरक लघु गद्य खंड है, जिसमें काव्यात्मक भाषा का प्रयोग किया जाता है। वस्तुत: 'ललित निबन्ध' सुन्दर रागात्मक गद्यशेली में लेखक की सहज अनुभूति और निजी चिन्तन-पद्धति का स्वरूप है।

ललित निबन्ध के तत्वों पर दृष्टिपात करने से पता चलता है कि ललित निबन्ध में अनुभूति और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विचारों का समन्वय हो जाता है। अनुभूति ही विचार के साथ मिलकर ललित निबन्ध का निर्माण करती है। ललित निबन्धकार कोई चीज देखता है और एकाएक इससे प्रभावित होकर निबन्ध-रचना करने लगता है, परन्तु वह विचार का आश्रय अवश्य लेता है। इस-प्रकार अनुभूति विचार के साथ मिलकर ही भाषिक अभिव्यक्ति पा सकती है। शैली का स्थान ललित निबन्ध में द्वितीय है। ललित-निबन्ध का सपूर्ण लालित्य, रसात्मकता, आकर्षण, मनोरमता उसकी शैली में है, विषय वस्तु में नहीं। शैली से ही पता चलता है कि निबन्धकर कौन है? प्रत्येक निबन्धकार की निजी शैली होती है। ललित निबन्ध में कल्पना शैली अनस्यूत रहती है। कल्पना विषय की प्रस्तुति में होती है। शैली के माध्यम से कल्पना आएगी। ललित निबन्ध में अहम् का साधारणीकरण हो जाता है। अत: पाठक तत्काल ही तादात्म्य स्थापित कर लेता है। निबन्धकार के अहम् के द्रवीभूत होने से ही ललित निबन्ध का निर्माण होता है। ललित निबन्ध में अहम् के साथ निबन्धकार का युग-बोध भी चित्रित होता है।

ललित - निबन्ध का संपूर्ण लालित्य, रसात्मकता, आकर्षण, मनोरमता उसकी शैली में है विषय वस्तु में नहीं।

ललित निबन्ध की विशेषताओं पर विचार करते समय सबसे बडी विशेषता यह है कि निबन्ध में लालित्य होना ही है। लालित्य नहीं हो तो ऐसा निबन्ध ललित निबन्ध की कोटि में नहीं रखा जा सकता। ललित निबन्ध की एक अन्य विशेषता है वैयक्तिकता का उद्घाटन। ललित निबन्ध में लेखक स्वयं प्रकट हो जाता है और पाठक से तादाम्य स्थापित कर लेता है। अहम् एवं व्यक्तिमन का चित्रण इन निबन्धों की एक विशेषता है। इन निबन्धों में निबन्धकार का मन भाव लहरियों में लहराता है और निबन्ध की समाप्ति के साथ ही इन लहरियों का ज्वार भी उतर जाता है। यायावरी तथा फक्कडपन ललित निबन्ध की विशेषताएँ हैं। ललित निबंधकार जगतबोध के प्रति सजग रहने वाला कलाकार है। इसलिए उचित सामग्री यायावरी वृत्ति से मिलती है। यायावरी वृत्ति लेखक को अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चारों ओर के वातावरण एवं प्रकृति के चित्रों के संश्लिष्ट रूप को अंकित करने की शक्ति उत्पन्न करती है। ललित निबन्धकार केलिए फक्कडपन इसलिए आवश्यक होता है कि वह वह जिस दिशा में चिन्तन करता है, उसे बेखौफ कह सके। समसामयिक युगबोध एव उसके प्रति सजगता एवं सतर्कता को अभिव्यक्ति देने के लिए फक्कडपन आवश्यक है।

ललित निबन्धकार के लिए फक्कडपन इसलिए आवश्यक होता है कि वह जिस दिशा में चिन्तन करता है, उसे बेखौफ कह सके।

सूक्ष्मविचार शक्ति और व्यंग्यात्मकता ललित निबन्ध की विशेषताएँ हैं। भाषा में काव्यात्मकता भी ललित निबन्ध की विशेषता है। ललित निबन्ध की भाषा में काव्यात्मकता की सृष्टि का मूल दायित्व उसमें निहित बिम्बात्मकता ही वहन करती है।

कथ्य और शिल्प के बारे में विचार करें तो ललित निबन्ध के कथ्य में संस्कृति, पुराण, लोकतत्व, वैयक्तिकता, इतिहास-बोध आदि

सभी ललित निबन्धकारों की भाषा कोमल कान्त-पदावली से युक्त, सारगर्भित; सरस एवं लालित्य से परिपूर्ण है।

तत्व आते हैं। हिन्दी के सभी ललित निबन्धकारों ने ऐतिहासिक संस्कृति को अपने निबन्धों में भी अभिव्यक्ति दी है। प्रागैतिहासिक जीवन का चित्रण पुराणों में होता है। ललित निबन्धकारों ने पुराणों का आश्रय लेकर प्राचीन विषय को नए सन्दर्भों में व्यक्त किया है। ललित निबन्धों में सर्वत्र लोक-तत्वों एवं लोक-जीवन को अभिव्यक्ति मिली है। अपनी-अपनी वैयक्तिकता को सभी ललित निबन्धकारों ने शाश्वत एवं सार्वभौमिक बनाकर अभिव्यक्त किया है तथा ऐतिहासिकता के प्रति इनमें विशेष आग्रह होता है।

शिल्प-पक्ष के अन्तर्गत भाषा-शैली, अलंकार, प्रबन्धन्, लयात्मक गद्य, शीर्षक आदि आते हैं—

सभी ललित निबन्धकारों की भाषा कोमल कान्त-पदावली से युक्त, सारगर्भित, सरस एवं लालित्य से परिपूर्ण है। अर्थवत्ता के स्वर दिलाने वाली पद संघटना उनकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निबन्धकार सीधे पाठक से बातें करता है, तर्क-वितर्क करता है, प्रश्न करता है, उनसे रूढता है, उन्हें मानता है ।

शैली की अनूठी विशेषता है । इनकी भाषा में क्षेत्रीय, देशज शब्दों से लेकर अंग्रेजी, उर्दू, फारसी एवं संस्कृत के तत्सम शब्दों का प्रयोग तो हुआ ही है । मुहावरों, लोकोक्तियों एवं हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत की कविताओं के उद्धरणों से भी ओत-प्रोत हैं। उपमा, मानवीकरण, रूपक, संसृष्टि अलंकारों से तो ये निबन्ध भरे पडे हैं । ललित निबन्धों में लयात्मक गद्य के दर्शन होते है। प्रबन्धन का कार्य ठीक ढंग से होता है । प्रबन्धन के अतिरिक्त ललित निबन्धों के शीर्षक प्रतीकात्मक, बिम्बात्मक और रूपात्मक है।

इन बातों की दृष्टि से कह सकते हैं कि "ललित निबन्ध" आधुनिक युग की एक सशक्त बिधा ।"हैललित निबन्ध" भावनाओं एवं साँस्कृतिक परंपरा को व्यक्त करता है। कविता न पढने वाले भी ललित निबन्ध को पढते है। कहानी, नाटक, उपन्यास आदि में रचनाकार का व्यक्तित्व प्रत्यक्ष रूप से उभरकर पाठकों के सामने नहीं आता । इनमें पाठक और लेखक के मध्य पात्र, कथा आदि माध्यम के रूप में है । लेकिन ललित निबन्ध में रचनाकार पाठक केसामने अपना हृदय खोलकर रखा देता है। निबन्धकार सीधे पाठक से बातें करता है, तर्क-वितर्क करता है, प्रश्न करता है, उनसे रूढता है, उन्हें मनाता है । इस निकट संबन्ध के कारण हिन्दी के ललित निबन्ध इतने लोकप्रिय है कि पाठक एक बार पुनः पढने को आतुर होता है । ललित निबन्ध एक ऐसी विधा के रूप में उन्नति की चरम सीमा पर पहुँच गयी है, जिसमें विचारों के साथ भावों की सुगन्ध है, गद्य की कठोरता के साथ पद्य की रमणीयता है । यह पद्य और गद्य के मध्य के पुल का काम करता है । इसीप्रकार ललित निबन्ध एक सशक्त गद्य विधा के रूप में अपना स्थान बना चुका है,जिसमें भारतीय संस्कृति बोलती है, पुराणों के दर्शन होते हैं, लोक-तत्व को देखा जा सकता है ।

हिन्दी निबन्ध साहित्य के प्रारंभिक युग में ही वैयक्तिकता के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तत्व पर्याप्तमात्रा में उपलब्ध हैं और यह वैयक्तिकता का तत्व तो निबन्ध की अधुनातन विधा (ललित निबन्ध) की विशेषता है। प्रतापनारायण मिश्र ने हिन्दी में ललित निबन्धों का प्रवर्तन किया। इस मार्ग को प्रशस्त करने का श्रेय बालमुकुन्दगुप्त और बालकृष्ण भट्ट को है। हजारी प्रसाद द्विवेदी ने उसकी पूर्ण साहित्यिक प्राण-प्रतिष्ठा की। उनके पश्चात् जैनेन्द्रकुमार, सियारामशरणगुप्त, अज्ञेय रामवृक्ष बेनीपुरी, हरिशंकर परसाई, विद्यानिवास मिश्र, कुबेरनाथराय आदि ने उसको प्रौढ बना दिया है। आचार्य हज़ारीप्रसाद द्विवेदी की ललित निबन्ध साहित्य लेखन परंपरा को विद्यानिवासमिश्र तथा कुबेरनाथराय ने परिपुष्ट तथा संवर्धित किया है। मिश्रजी का निबन्ध-संसार व्यापक है। उनके "छितवन की छाँह", "कदम्ब की फूलीडाल", 'तुम चन्दन हम पानी' आदि निबन्ध-संग्रह आज के ललित निबन्धों की मौलिक उद्भावना के सच्चे प्रतिमान हैं।

शोध छात्रा, हिन्दी विभाग
कोचिन विश्वविद्यालय

सन्दर्भ ग्रंथ सूची :

1. रामचन्द्रवर्मा, मानक हिन्दी शब्द-कोश, पृ० 1205
2. संस्कृत शब्द-कल्पद्रुम, पृ० 208
3. व्यावहारिक हिन्दी-अंग्रेजी कोश, पृ० 668
4. हजारी प्रसाद द्विवेदी, कालिदास की लालित्य योजना, पृ० 112
5. संस्कृत कल्पद्रुम, पृ० 208
6. श्रीमद् भगवत् गीता, अध्याय 16, श्लोक 5

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कविता क्या हैं ?
पं० रामचन्द्र शुक्ल की दृष्टि में

डा० जयचन्द्र राय

[रामचन्द्र शुक्लजी के निबंधों पर अगस्त 1989 में केरल हिन्दी प्रचार सभा के हिन्दी स्नातकोत्तर केन्द्र में दी गयी भाषण-माला के आधार पर डा० राय द्वारा तैयार किया गया आलेख]

पंडित रामचन्द्र शुक्ल के ग्रन्थों का अनुशीलन मैंने शोध-छात्र के रूप में किया था । साहित्यक विश्लेषण और मूल्यांकन की शक्ति कैसे विकसित हुई? अविरोधी निष्पत्तियाँ स्वयं कैसे उपलब्ध हुई ? उन का अपना मौलिक सिद्धान्त अवश्य होना चाहिये । वह क्या था ? अभी कुछ दिन पहले हिन्दी जगत में पंडित रामचन्द्र शुक्ल जी की जन्म-शती मनायी गयी और तब उनके साहित्य पर काफी विचार और मन्थन हुआ और फलस्वरूप स्थिति स्पष्ट भी हुई है । 'कविता क्या है?' शीर्षक लेख से हम विचार प्रारंभ करते हैं । यह लेख सर्वप्रथम सन् 1908 ई० में 'सरस्वती' पत्रिका में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा संशोधित करके प्रकाशित किया गया था । संशोधन गद्य-भाषा में किया गया था किन्तु आगे चलकर शुक्ल जी ने विचार की दृष्टि से भी निबन्ध को कई बार रूपान्तरित करके अंततोगत्वा, चिन्तामणि में वर्तमान रूप में संकलित किया ।

'सरस्वती' में प्रकाशित उप-शीर्षकों को देखने से परिवर्द्धन का कुछ रूप आभासित हो सकता है—वे शीर्षक थे – (1) कार्य में प्रवृत्ति, (2) मनोरंजन और स्वभाव-संशोधन, (3) उच्च आदर्श, (4) कविता की आवश्यकता, (5) सृष्टि सौंदर्य (6) कविता का दुरुपयोग, (7) कविता की भाषा (8) श्रुति मुखरता, (9) अलंकार । आज कुल 13 शीर्षक हैं और परिमार्जित विचार-सरणि के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुकूल है। इसके अतिरिक्त कई अनुच्छेद फिर से लिखे गये हैं। पहला अनुच्छेद जिसकी व्याख्या हम विस्तार से करना चाहते हैं, नई धारणाओं के स्फुरित होने के बाद लिखा गया है। हिन्दी के आलोचना शास्त्र को उनका मौलिक योगदान इसी अनुच्छेद में मौजूद है।

इस में 'भावयोग' का केन्द्रीय सिद्धान्त सूत्र रूप में निबद्ध है। हृदय की मुक्तावस्था को 'रस दशा' कहने के बाद आचार्य यह घोषित करते हैं कि "हृदय की उसी मुक्ति की साधना के लिये मनुष्य की वाणी जो शब्द-विधान करती आई है उसे कविता कहते हैं।" इस परिभाषा को अन्य परिभाषाओं से अलग समझना चाहिये।

हृदय के मुक्त होने का अभिप्राय भी व्यवहारिक स्तर पर ही ग्रहण करना चाहिये। इस में कोई परिभाषिक तत्व नहीं। व्यक्तिगत रागद्वेष से हृदय का मुक्त होना ही यहाँ संकेतित है। व्यक्तिबद्ध सीमा से ऊपर उठकर जब मानव-हृदय लोकव्यापी आदर्शों और व्यवहारों के साथ एकाकार होता है तब हम स्वार्थ संबंधों से ऊपर उठ जाते हैं। यह यात्रा क्रमशः हृदय के मोक्ष की ओर अग्रसर है। हम प्रत्यक्ष जीवन में भी इसका थोड़ा बहुत अनुभव करते हैं। किन्तु काव्य के अनुशीलन में रस- भावना की ओर अग्रसर होते समय, हम बराबर इसी यात्रा को पूर्ण करते हैं। यही स्वार्थ संबंधों का क्रमिक परिहार, हृदय का विस्तार, उसकी मुक्तावस्था का द्योतक है। यही रसानुभूति का प्रथम अवस्थान है। इसी मुक्ति की साधना के लिये मानववाणी शब्द-विधान करती आई है जिसे कविता कहते है। उस शब्द-योजना द्वारा हृदय प्रभावित होकर क्रमशः वैयक्तिक स्वार्थ-संबंधों से ऊपर उठता है और अन्ततः मुक्तावस्था में जा पहुँचता है। यही रसानुभूति का स्तर है।

कविता एक प्रकार का शब्द-विधान है जो अर्थ-गौरव से संपन्न है। यह संकेत विस्तृत विवेचन में उपलब्ध है। परिभाषा में उसे परिस्फुट करने की आवश्यकता नहीं थी।

अब 'भावयोग' की वास्तविक स्थिति की समीक्षा करनी चाहिये। काव्य में आश्रय और आलंबन की स्थिति युगपत रूप से होती है, कभी प्रत्यक्ष और कभी परोक्ष। काव्यगत आश्रय के साथ पाठक या दर्शक तादात्म्य का अनुभव करता है और काव्यगत आलंबन का साधारणी-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करण होता है । 'तादात्म्य' और 'साधारणीकरण' के ये 'युग्म' शुक्लजी की रस-विवेचना के आधार हैं । पाठक या दर्शक के अपने आलंबन भी होते या हो सकते हैं । ये भी कवि-कर्म के प्रभाव से साधारणीकृत हो जाते हैं और चरम बिन्दु पर पहुँच कर काव्यगत आलंबन के साथ एकाकार हो जाते हैं । इस प्रकार पाठकों का काव्यगत आश्रय के साथ तादात्म्य और काव्यगत आलंबन का साधारणीकरण घटित होता है, ऐसा शुक्लजी मानते हैं । इस स्थिति पर पहुँचने के बाद मानव हृदय मुक्तावस्था में जा पहुँचता है अर्थात् व्यक्तिगत संबंधों का परिहार हो जाता है । इसके साथ ही भावानुभूति रसानुभूति में परिणत हो जाती है । इस रसानुभूति को जो 'अलौकिक' आदि कहा गया वह इसकी विलक्षणता देखकर । वास्तव में यह 'मनोमयकोश' में घटित होने वाला व्यापार है और पूर्णत: लौकिक है। यह पक्ष शुक्ल जी का हैं ।

यहीं पारिभाषिक शब्द 'भावयोग' लाया गया है। आश्रय के साथ तादात्म्य और आलंबन का साधारणीकरण हो जाना ही समग्र रूप से 'भावयोग' कहा गया है । इसी को 'कर्म-योग' और 'ज्ञान-योग' का समकक्ष कहा गया है । जिस प्रकार कर्मसाधना द्वारा मनुष्य अपनी सामाजिकता को संपन्न बनाता है और ज्ञान की साधना द्वारा मानव-मात्र को विकास की ओर अग्रसर करता चलता है उसी प्रकार 'भावयोग' द्वारा हृदय का परिष्कार करता हुआ पावन मनुष्यता को जाग्रत और विकसित करने का अनुष्ठान करता है । इस प्रकार काव्य का अनुशीलन और आस्वादन तथा भावयोग की सूक्ष्म साधना एक महत्तर लक्ष्य की पूर्ति करती है, इस में कोई संदेह नहीं । 'भावयोग' की यह सहज सिद्धि जिस शब्द-विधान द्वारा संभव है, उसे ही कविता कहते हैं ।

कविता की यह परिभाषा प्राचीन परंपराओं के मेल में होने पर भी मौलिक है, इसकी अपनी विशिष्टता है और इसके अपने तात्त्विक संकेत हैं । इसके आधार पर ही शुक्ल जी के मौलिक समीक्षा सिद्धान्त का पुनर्निर्माण किया जा सकता है। इसी सूत्रवाक्य के आधार पर हम उनकी मान्यताओं के यत्र-तत्र बिखरे विचारों को समेकित करके आधारभूत मतवाद का ग्रहण कर सकते हैं जो न तो भारतीय साहित्य शास्त्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का अनुकरण मात्र है और न पश्चिमी साहित्य शास्त्र का अनुवाद मात्र। वास्तव में हिन्दी के महान कवियों की रचनाओं का अनुशीलन करके शुक्ल जी ने इन मान्यताओं का विकास किया था और क्रमशः परिपुष्ट करते हुए इन्हीं के आधार पर हिन्दी के अपने समीक्षा-सिद्धान्त का विकास किया था। संस्कृत के आचार्यों और पश्चिम के विचारकों का मत भी उन्होंने यत्र-तत्र ग्रहण किया है। किन्तु उन्हें अपने पक्ष-पोषण के लिये इस्तेमाल किया है। उनके अनुगमन से अपने मत को खंडित नहीं होने दिया।

भावों की क्षणिक दशा, स्थायी दशा और शीलदशा के आधार पर शुक्ल जी ने तीन विभाग किये हैं। इसमें शीलदशा सबसे महत्त्वपूर्ण है। इसी के द्वारा आचार की प्रतिष्ठा काव्य में होती है। भाव ही सदाचार के प्रतिष्ठापक हैं। इसलिये कविता से आचार को अलग नहीं किया जा सकता।

आचार के साथ "लोकधर्म" भी ग्राह्य है। लोकधर्म को इसीलिये आचार्य शुक्ल की समीक्षा का मेरुदंड समझा जाता है। इसकी प्रतिष्ठा वे समाज में चाहते थे और इसमें उदात्त काव्य को सहकारी समझते थे। किन्तु वे मनोवेग वर्जित सदाचार का उपदेश देने वाले लोगों के पक्ष में नहीं थे। उन्हें दंभी कहते थे। भाव द्वारा लोक मंगल का विधान ही उनका प्रतिपाद्य था।

कवि-कर्म को उचित स्थान पर प्रतिष्ठित करके उन्होंने उसकी गुणवत्ता को समुचित आदर दिया और कविता को मानव के लिये नितान्त आवश्यक बताया। उन्होंने यह भी कहा कि सभ्यता के आवरण जैसे-जैसे बढ़ते चले जायेंगे, वैसे-वैसे कवि-कर्म कठिन होता जायेगा। क्योंकि उन आवरणों को भग्न करके ही मानव हृदय का साक्षात्कार हो सकता है जो काव्य का लक्ष्य है। लेकिन कविता की आवश्यकता बराबर बनी रहेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजभाषा के लक्षण

डा० किशोर बासवानी
क्षेत्रीय अधिकारी (दक्षिण)
केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, मद्रास

[25-2-1989 से 1-3-1989 तक केरल हिन्दी प्रचार सभा और अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित अखिल भारतीय कार्यकर्ता शिविर में प्रस्तुत आलेख]

हिन्दी को भारत संघ की राजभाषा बने 40 वर्ष हो रहे हैं। अगर इस मुद्दे को गहराई से देखा जाए तो ज्ञात होगा कि आज भी कई विद्वानों में राजभाषा, राष्ट्रभाषा, संपर्कभाषा आदि को लेकर काफ़ी भ्रम है।

अतः यह आवश्यक हो जाता है कि राजभाषा के लक्षणों को पहचान लिया जाए ताकि भ्रम की गुंजाइश न रहे।

"राजभाषा" एक पारिभाषिक शब्द है। अगर हम इसकी व्यापकता को देखें तो इसमें व्याप्त निम्न-लिखित लक्षणों को रेखांकित किया जा सकता है।

1. राजभाषा निश्चित अर्थ में लिया हुआ संविधान मान्यता प्राप्त पारिभाषिक शब्द है। अतः इस शब्द में पारिभाषिक शब्दों का बाहुल्य पाया जाता है।

2. विशेषकर जहाँ की बहुसंख्य जनता निरक्षर है वहाँ राजभाषा की पारिभाषिकता से अनभिज्ञ रहने की पर्याप्त संभावनाएँ रहती हैं। परिणामस्वरूप उसके पर्याय काफ़ी मात्रा में प्रचलित हो जाते हैं।

3. राजभाषा जनभाषा भी हो यह आवश्यक नहीं है। उदाहरण के रूप में अंग्रेज़ों के शासन काल में हमारे यहाँ अंग्रेज़ी राजभाषा थी। परंतु जनभाषा हिन्दी-उर्दू एवं अन्य भारतीय भाषाएँ थीं।

4. राजभाषा किसी विशेष धर्म या जाति से जुड़ी हुई नहीं रहती। वह तो केवल शासक से जुड़ी रहती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिजी में हिन्दी राजभाषा का काम कर रही है।

5. राजभाषा संविधान द्वारा मान्यता पाती है और एक वैधानिकता लिए होती है। उनका उल्लंघन करने पर दण्ड भी दिया जा सकता है। अतः इसे लिखते समय पूरी सतर्कता बरतनी चाहिए।

6. रूस में राजभाषा को डंडे की भाषा भी कहा गया है।

7. राजभाषा वह भाषा है जिसका प्रयोग किसी निश्चित तारीख से आरंभ एवं खत्म भी किया जा सकता है।

8. राजभाषा का साहित्य सरकारी साहित्य कहलाता है। यह सूत्रों की भाषा है। निश्चित वाक्यांश तथा पारिभाषिक शब्दावली अक्सर प्रयुक्त की जाती है। इसका साहित्य फाइलों पर पनपता है।

9. राजाभाषा एक साथ द्विभाषिक, त्रिभाषिक (स्विट्ज़रलैंड के संदर्भ में) एवं सोलहभाषिक (सोवियत संघ के अर्थ में) रूपों में एक साथ काम कर सकती है। इन स्थितियों में कभी-कभी एक भाषा प्रधान या मूल होती है, और दूसरी भाषा या अन्य भाषाएँ सह-भाषा

राजभाषा एक साथ द्विभाषिक, त्रिभाषिक (स्विट्ज़रलैंड के संदर्भ में) एवं सोलहभाषिक (सोवियत संघ के अर्थ में) रूपों में एक साथ काम कर सकती है।

दूसरी भाषा—द्वितीय भाषा के रूप में काम करती हैं। इस पर आगे चलकर विचार होगा।

10. राजभाषा का भाषायी रूप साहित्यक भाषा के भाषायी रूप से भिन्न होता है, कहीं-कहीं व्याकरण के कुछ मुद्दे भी साहित्यक भाषा से (मानक भाषा से) अलग होते हैं।

11. राजभाषा के प्रयोग का संक्रमण काल भी रहता है। इस संक्रमण काल में राजभाषा अपने अशुद्ध भाषायी रूप में भी मानकता पाती है। उसकी मानकता को इस काल में ज़्यादा महत्व नहीं दिया जाता। केवल प्रयोग पर ही ध्यान दिया जाता है।

12. राजभाषा में अर्थ की एकरूपता अनिवार्य रूप से होना चाहिए। एक बात का एक ही अर्थ निकले।

13. राजभाषा तथा बोलचाल की भाषा में हमेशा अन्तर रहता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। इस भाषा में प्रयुक्ति विश्लेषण के आधार पर मुख्यत: तीन बातें देखी जा सकती हैं। यह भाषा तकनीकी, लिखित एवं औपचारिक होगी। "रजिस्टर" के रूप में होगी।

14 किसी देश/राज्य में एक साथ अनेक राजभाषाएँ काम कर सकती हैं।

15. कई बार राजभाषा को अनुवाद की बैसाखी पर चलना पड़ता है। यह उन परिस्थितियों में होता है जब कोई देश गुलाम रहा हो और स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद पिछले शासक की राजभाषा को उतार फेंककर अपनी राजभाषा को संविधान में मान्यता देकर स्थापित करना चाहता है। अनुवाद की भाषा होने से राजभाषा का अपना मौलिक रूप बिगड़ भी सकता है और वह दुरूह होती चली जाती है। ऐसी स्थिति में उसे राजभाषा न कहकर लोग उसे "उपहास भाषा" के नाम से संबोधित करते हैं।

16. राजभाषा के कार्यान्वयन तथा राजभाषा के प्रयोग को लेकर राजभाषा आयोग आदि का भी गठन किया जा सकता है एवं इसके प्रयोग से संबंधित राजभाषा नियम भी बनाए जा सकते हैं।

राजभाषा सीधे आर्थिक लाभ से जुड़ी होती है। अतः इसके अध्ययन में छात्र रुचि लेते हैं।

17. राजभाषा एक आदेशात्मक-सख्त भाषा है। इसे साहित्यक अलंकारिक या मुहावरेदार भाषा से संवारा नहीं जा सकता। अन्यथा यह भाषा लचीली एवं नाजुक हो जाती है तथा अपना प्रभाव खो बैठती है। यह भाषा अधिकतम कर्मवाच्य में लिखी जाती है।

18. परिस्थिति अनुसार राजभाषा साम्राज्यवाद एवं शोषण की भाषा भी कहलाती है, यह राजनीति से भी जुड़ी रहती है। जब अंग्रेजी भारत की राजभाषा थी उस समय तथा आज, जब वह सह-राजभाषा है, उसे साम्राज्यवाद की भाषा कहा गया है।

19. राजभाषा सीधे आर्थिक लाभ से जुड़ी होती है। अतः इसके अध्ययन में छात्र रुचि लेते हैं। चूंकि यह नौकरी दिलवाती है अत: सरकार द्वारा शिक्षा क्षेत्र में इसकी विशेष व्यवस्था की जाती है। हिन्दी भारत-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरकार (केन्द्र सरकार) की राजभाषा है। अतः केन्द्र सरकार की नौकरी पाने के लिए इसका ज्ञान होना आवश्यक है। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए विश्वविद्यालयों को प्रयोजनमूलक हिन्दी पढ़ाने के लिए सुझाव दिए गए हैं। बंबई विश्वविद्यालय ने अपने बी.ए. तथा एम.ए.के पाठ्यक्रम में रोजगारोन्मुख प्रयोजन मूलक हिन्दी पढ़ाने की व्यवस्था की है।

20. किसी देश की राजभाषा विदेशों में विशेष रूप से सीखी जाती है। आज हिन्दी विश्व के लगभग 100 विश्वविद्यालयों में पढ़ाई जाती है। चूँकि यह भारत की राजभाषा है अतः पहले पहल इसका प्रयोग राष्ट्रसंघ में अक्तूबर 1977 में किया गया। किसी देश की राजभाषा ही सामान्यतः राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा बनती है। इसी आधार पर हिन्दी को संयुक्त राष्ट्र महासभा के नियम एवं प्रक्रिया धारा 164 के अंतर्गत आधिकारिक भाषा बनाने के प्रयास चल रहे हैं। यही राजभाषा विश्व भाषा कहलाने का भी गौरव प्राप्त कर सकती है। हिन्दी को विश्वभाषा का स्थान दिलाने के लिए भी प्रयास जारी है।

21. स्वतंत्र देश की राजभाषा उस देश की सस्कृति का भी प्रतिनिधित्व कर सकती है। कभी कभी जब स्वतंत्र देश की राजभाषा, राजभाषा के रूप में अपरिपक्व है तब उसे प्रत्येक क्षेत्र में सशक्त बनाने के लिए संविधान में प्रावधान रखा जाता है। भारत के संविधान में हिन्दी के इसी प्रकार के प्रचार-प्रसार की व्यवस्था भाग 17 के अध्याय 4 की धारा 351 में की गयी है।

22. कभी-कभी सरकार अपने खर्च पर अपने कर्मचारियों को राजभाषा का अनिवार्य प्रशिक्षण देती है। उदाहरण स्वरूप हमारे देश के संविधान में जब हिन्दी को संघ की राजभाषा मान लिया गया तब केन्द्र सरकार ने अपने कर्मचारियों को हिन्दी का शिक्षण अपने खर्च पर कार्यालय के समय में देना प्रारंभ किया। इस प्रशिक्षण के लिए पहले 1952 में शिक्षा मंत्रालय के अंतर्गत, बाद में 1955 में गृह मंत्रालय के अंतर्गत हिन्दी शिक्षण योजना को आरंभ किया गया। 1955 तक कर्मचारियों पर हिन्दी शिक्षण लेने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का बंधन नहीं था, बाद में 1960 से यह प्रशिक्षण अनिवार्य हो गया।

23. एक बिल्कुल नई राजभाषा का निर्माण भी किया जा सकता है जैसे इंडोनेशिया ने "बहासा इंडोनेशिया" राजभाषा अपने राजकार्य को चलाने केलिए निर्मित की।

24. राजभाषा की दृष्टि से अपरिपक्व भाषा जब राजभाषा के पद पर आसीन हो जाती है तो उसे राजभाषा की दृष्टि से तैयार करने के प्रयास किए जाते हैं। उसकी शब्दावली का बाक़ायदा बैठकर निर्माण किया जाता है। यही कारण है कि यह भाषा कभी-कभी बनावटी भी लगती है। परंतु यह आरंभिक स्थिति हो सकती है। बाद में भाषा मंजते मंजते स्वाभाविकता ले लेती है। हिन्दी के राजभाषा बनने के बाद ही शब्दावली बनाने के लिए विधि मंत्रालय में राजभाषा विधायी आयोग और शिक्षा मंत्रालय में वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग (केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय) नामक दो आयोगों की स्थापना की गई।

25. राजभाषा अपने में एक विशिष्ट भाषा है। अतः इससे संबंधित पदों के नामों में भी राजभाषा शब्द का प्रयोग किया जाता है। मसलन, "राजभाषा अधिकारी" उल्लेखनीय है। भारत सरकार ने 1979 को राजभाषाओं का वर्ष घोषित किया था। इस वर्ष के दौरान भारत की सभी राजभाषाओं का राजकार्य में अधिकाधिक प्रयोग का लक्ष्य रखा गया।

राजभाषा ग्लैमर (आकर्षण) की भाषा है। इस भाषा के साथ धन, पद, प्रतिष्ठा और राजकार्य में लगे रहने का ग्लैमर जुड़ा रहता है।

26. राजभाषा ग्लैमर (आकर्षण) की भाषा है। इस भाषा के साथ धन, पद, प्रतिष्ठा और राजकार्य में लगे रहने का ग्लैमर जुड़ा रहता है। उदाहरण के रूप में राजभाषा अंग्रेज़ी के साथ जो ग्लैमर ब्रिटिश लोगों ने पैदा किया वह आज तक लोगों की मानसिकता पर छाया हुआ है। जब तक हिन्दी के साथ भी वैसा ही ग्लैमर नहीं जुड़ता वह संविधान में राजभाषा के रूप में स्वीकृत होने के बाद भी कार्यान्वयन के स्तर पर अशक्त ही रहेगी। ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(हास्य व्यंग्य एकांकी)

मुस्कराहटें बिक रही हैं

डा० रती सक्सेना

पात्र— लालाजी
जमादार
अखबार वाला
गुब्बारे वाला
पहला आदमी
दूसरा आदमी
पानवाला
पहला छात्र
दूसरा छात्र
एक लड़का (मुस्कराहटें बेचनेवाला)

दृश्य—चौराहे का दृश्य है। एक परचून की दूकान है जिसमें लालाजी सामान झाड़ रहे हैं और 'तस्वीर' के आगे अगरबत्ती घुमा रहे हैं। 'जमादार' झाड़ू बीच बीच में रुक कर बीड़ी भी लगा रहा है। पीता जा रहा है। सभी के चेहरे लटके हुए हैं।

(पर्दा खुलता है)

...... जमादार के झाड़नें से धूल उड़ती है तो लाला जी परेशान दिखाई देते हैं। नाक पर कपड़ा रखते हुए कहते हैं—

लालाजी— अरे... रे .. रे... भाई, सम्भल कर, देख कर काम करो। देखते नहीं कि धूल उड़रहीहै।

जमादार— ऊँह धूल, जैसे तुम्हारे चेहरे पर तो नूर बरस रहा है। अरे लाला पहले अपने चेहरे की धूल तो झाड़ो। (और जोर से झाड़ू लगाने लगता है।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लालाजी —औफ्फो, क्या जमाना आ गया। ये छोटे लोग भी सिर पर बैठने लगे। (नाक पर कपड़ा रख कर पीछे सरक जाता है।)

जमादार— क्या कहा? (तन कर हाथ में झाड़ू उठा लेता है) अभी काम बन्द कर दूँ तो मालूम पड़ जाए। क्या किया है तुम लोगों ने हमारे लिए। (जमादार गुस्से में झाड़ू फेंक कर बैठ जाता है और कान के ऊपर रखी बीड़ी निकाल कर पीने लगता है।)

(अखबारवाले का प्रवेश)

अखबारवाला— तीस मरे, चालीस घायल हुए, तीस मरे— चालीस घायल हुए...

अचानक इधर उधर देखकर चुप हो जाता है। ऊँह अभी तक सन्नाटा छाया है। जमाना था जब सुबह सुबह चहलपहल शुरू हो जाती थी। और यह अखबार बेचने का धंधा भी क्या है? सुबह सुबह मरों को ही रोना पड़ता है। बरस बीत गए यही कहते हुए 'तीस मरे और चालीस घायल' भगवान न जाने वो दिन कब आएगा जब अखबारों में कोई अच्छी खबर भी सुनाई जाएगी। अखबार सम्भाल कर खड़ा होता तो लाला पीछे से उचक उचक कर अखबार पढ़ने की कोशिश करता है।

'तीस मरे और चालीस घायल' भगवान, न जाने वो दिन कब आएगा जब अखबारों में कोई अच्छी खबर भी सुनाई जाएगी।

अखबारवाला— अरे लाला— चोरी से क्यों पढ़ते हो अखबार? पैसा खर्च करो और आराम से लेकर पढ़ो।

लाला— अरे भई हम, तो यू ही देख रहे थे। हमारे पास इतना समय कहाँ कि अखबार पढ़ें?

अखबारवाला — हाँ चाहे दिन भर मक्खियों मारा करते हो लेकिन बात ऐसी करोगे जैसे धन्नासेठ हो।

(गुब्बारे वाले का प्रवेश)

गुब्बारेवाला — गुब्बारे ... ... गुब्बारे .....गुब्बा ..। ओह, अभी तो सुनसान ही पड़ा है। और इतनी सुबह गुब्बारे खरीदेगा कौन? लेकिन क्या करूँ? दो चार गुब्बारे बिक जाए तो चाय ही पी लूँ। बच्चों को अब गुब्बारे पसन्द ही कहाँ है। सभी 'किरकिट' खेल खेल, कपिलदेव बनना चाहता हैं।

(गुब्बारेवाला बाँस खड़ा करके जमादार से बातें करने लगता है। चहल पहल शुरू हो जाती है। लोग आने जाने लगते हैं।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं क्रिकेट की बात नहीं कर रहा हूँ। मैं तो रेलदुर्घटना या पंजाब में मरने वालों की बात कर रहा हूँ।

पहला आदमी—क्यों भाई, क्या स्कोर है ?

दूसरा आदमी—अरे, अभी कहाँ 'क्रिकेट' चल रही है ?

पहला आदमी—मैं क्रिकेट की बात नहीं कर रहा हूँ। मैं तो रेलदुर्घटना या पंजाब में मरने वालों की बात कर रहा हूँ।

दूसरा आदमी—आप ठीक फरमाते हैं। लेकिन यह स्कोर तो सेंचुरी पार कर रहा है। पंजाब में 11 मरे, रेल दुर्घटना में 22 तो विमान दुर्घटना में 44। दहेज कांड में मरने वालों की संख्या 5 है तो जहरीली शराब से मरनेवालों की संख्या 50 है। कहाँ तक गिना जाए! चलिए पान खाया जाये।

पहला आदमी—हाँ भाई अब तो पान खा कर ही इन सब दुर्घटनाओं को भुलाया जा सकता है। नहीं तो पहले सोच-सोच कर रातों नींद नहीं आती थी।

(दो छात्रों का प्रवेश। हाथ में किताबें हैं।)

पहला छात्र—कहो यार। कहाँ चलना है? कॉलेज तो बन्द पड़ा है।

दूसरा छात्र—यहीं कहीं बैठें और मखियाँ मारेंगे। जेब तो खाली है। कॉलेज में तो हमेशा हड़ताल रहती है। पैसे पास में रहते नहीं। क्या करें समझ में नहीं आता।

पहला छात्र घर क्यों नहीं चले चलते।

दूसरा छात्र—अरे यार, घर पर रहो तो भागते ही रहो। माँ को सब्जी मंगानी है तो पापा को बिजली का बिल भरवाना है। चक्कर ही चक्कर। ऊपर से झिड़कियाँ और सुनो। पता नहीं ये बडे लोग कब बदलें। अच्छा तो यही है कि किताबें उठाओ और निकलें घर से। घर पर रहो तो मुसीबत—बाहर रहो तो मुसीबत। जैसे तैसे पास भी हो गए तो क्या नौकरी मिल जाएगी?

घर पर रहो तो मुसीबत—बाहर रहो तो मुसीबत। जैसे तैसे पास भी हो गए तो क्या नौकरी मिल जाएगी?

पहला छात्र—हाँ, यही तो हमारी विडम्बना है। कोई भी हमें समझने की कोशिश नहीं करता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(एक सूखे चेहरे वाले लड़के का प्रवेश, एक डंडे में बहुत से मुखौटे टाँगे हुए हैं। चेहरे से चालाकी चमक रही है।)

लड़का—भाईजान, कद्रदान। अब्बाजान और अम्माजान! लीजिए लीजिए जल्दी करिए—कहीं स्टॉक ही खत्म न हो जाए। मांग बड़ी और माल थोड़ा। खत्म हो गया तो मलेंगे हाथ, और रोएंगे आँसू।

(गुब्बारेवाला लपक कर आता है और उसे धक्का देते हुए कहता है।)

गुब्बारे वाला—ए छोरे! कहाँ से आ गया। चल भाग यहाँ से—पहले ही गुब्बारे बिकना मुशिकल है और तू आन पड़ा। दो चार वे बच्चे आते हैं उन्हें भी खींच लेगा अपनी ओर।

लड़का—अरे···रे ·रे बड़े मियाँ, नाराज़ क्यों होते हो? लो, पहनो ये मुस्कराहट और बेचो गुब्बारे। मैं तो मुस्कराहटों का सौदागर हूँ। बच्चों को इसकी क्या ज़रूरत? उन्हें तो अल्लामियाँ मुस्कराहटों के साथ पैदा करता है। ज़रूरत तो हम, आप को है मियाँ। मुस्कराएंगे तो कमाएंगे खाएंगे। देखते नहीं, मुस्कराने का ज़माना है। मुस्कराहट का विज्ञापन बनिए और पैसा कमाइए। 'राम' मुस्कराते है तो जनता मुस्कराती है। मंत्री गण भी मुस्कराहट घोल कर ही भाषण पिलाते हैं मियाँ। तुम भी खरीद लो एक मुस्कराहट और बेच लो 100-150 गुब्बारे एक दिन में।

(सभी उसके चारों ओर खड़े हो जाते हैं)

······हाँ भाई मैं कह रहा था कि सभी मुस्कराहटें हैं अपने पास। सभी मुस्कराहटें है अपने पास। रामचन्द्र जी से लेकर रावण तक, मंत्री से लेकर तंत्री तक, क्या इरादा है लेंगे जनाब? करना बस इतना है मुस्कराहटें खरीदिए होंठों पर चिपकाइए और काम निकालिए। घर आइए मुस्कराहट बदलिए और दूसरे काम के लिए तैयार हो जाइए। (एक मुखौटा निकाल कर दिखाता हुआ) देखिए इसे लगाइए और व्यापार कीजिए। जितना बड़ा व्यापार उतनी बड़ा मुस्कराहट, इसे लगाने के बाद मुस्कराने की कोशिश नहीं करनी पडेगी। मन में भले ही गाली दीजिए, पर चेहरे पर मुस्कराहट चिपकी रहेगी। दाम भी केवल 2 रुपये।

(लाला पास आकर झुक कर देखता है)

जमादार—इस लाला को दे दे भैया। जब देखो खौंखियाता रहता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाला—चुप रहो, मैं तो यँही देख रहा था।

खिसियाकर पीछे खिसकता है।)

मुस्कराहटवाला लड़का— अरे लाला, मुस्कराने में क्या शर्म ? जब मिलावट करने में नहीं आती तो मुस्कराने में क्यों आये।

(गुब्बारे वाला आगे आकर देखने लगता है तो लाला भी जल्दी से आता है।)

मु. वा. लड़का—मुस्कराहट बस एक है सभी व्यापारियों के लिए। छोटा हो या मोटा। दूकान पर आइए इसे लगाइए और काम निकालिए। छोटा हो या मोटा दूकान पर आइए, इसे लगाइए और काम निकालिए। क्या मज़ाल कोई ग्राहक वापिस चला जाए।

मु. वा. लड़का—हाँ तो भाइयो—कद्रदानो......। ये मुस्कराहट हैं सरकारी नौकरों केलिए। चिकने घडे का दूसरा रूप है यह—होंठों पर लगाइए और मालिक के पास जाइए। कितनी भी फटकार पड़े ये चिपकी रहेंगी आपके चेहरे पर। हाँ, मन ही मन गालियाँ दे सकते हैं आप।

(दोनों व्यक्ति आगे आते हैं)

पहला व्यक्ति—यदि ये मुस्कराहट काम न करें तो कोई गारण्टी है क्या छोकरे !

मु. व. लड़का—काम न करे तो माल वापिस। हाँ, दाम वापिस नहीं होंगे।

दूसरा व्यक्ति— फिर तुम्हारा क्या भरोसा।

मु. वाला लडका — लेना हो तो लीजिए साहब, ग्राहक तो बहुत हैं और सामान कम। फिर दो रुपये का ही मसला है। लगाइए परखिए! (दोनों भाई उलट-पुलट कर देखते हैं और रख देते हैं।)

मु वा. लड़का— हाँ तो भाइयों कई मुस्कराहटों का स्टोक है अपने पास। प्रेमिका को रिझाने वाली अलग, पत्नी को समझाने वाली अलग, बॉस की बीवी पर इम्प्रेसन डालने वाली अलग।

छात्र—यार, स्टूडेण्ट कंसेशन नहीं है क्या? हम भी थोड़ा इम्प्रेशन डालते।

कई मुस्कराहटों का स्टोक है अपने पास। प्रेमिका को रिझाने वाली अलग, पत्नी को समझाने वाली अलग, बॉस की बीवी पर इम्प्रेसन डालने वाली अलग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मु. वा. लड़का—ले लो भइया ! तुम भी क्या याद करोगे। तुम से हम एक रुपया नब्बे पैसे ले लेंगे।

छात्र—मुस्कराहट बेच रहे हो या जूते।

(दोनों छात्र हँसते हुए चले जाते हैं।)

जमादार—हमें तो भइया तुम्हारी मुस्कराहट की जरूरत ही नहीं। मुस्कराएँगे नहीं, फिर भी काम करेंगे। चिल्लाएँगे, गुस्सा दिखाएँगे फिर भी लोग हम से काम करवाएँगे।

मु. वा. लड़का—हाँ तो कद्रदानो, बस इतनी ही मुस्कराहटें खरीदीं ! अरे खरीदिए, परखिए तब मालूम पडेगी इनकी कीमत। लेकिन भइया केवल एक मुस्कराहट नहीं है अपने पास... नेताजी वाली। दरअसल इतनी बिक्री होती है कि "आउट ऑफ स्टोक" ही रहती है। तो चले हम और सेवा करें कहीं ओर चलकर !

(सभी मुस्कराते हैं। सारे चरित्र मुस्कराते हुए फ्रीज़ हो जाते हैं।)

जाना है तो जाओ

एक बार एक सांप, जो फन फैलाए हुए था, सांपों के वासस्थान के (कांव) बाहर निकला। लोगों ने देखा और स्वामीजी से कहा। तब, स्वामीजी महराज ने सांप को अपने पास बुलाया। तब फन झुका कर वह उनके पास आया। उन्होंने उसे आज्ञा दी कि खाट पर जा लेट। आज्ञा पाकर वह सांप उनकी खाट पर चढ़कर लेट गया। एक-दो घंटे बाद उन्होंने फिर कहा "जाना है, तो जाओ।" यह अनुज्ञा पाकर वह प्राणी खाट से उतरकर उस वन में, जहाँ से वहाँ आया था, जाकर छिप गया। इस घटना को मैंने और अन्य अनेक लोगों ने देखा था।

(महर्षि श्री विद्याधिराज तीर्थपाद)

डा० एन० चन्द्रशेखरन नायर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शताभिषिक्त केरल विधान सभा

श्री. एम. एस. राधाकृष्णन
हिन्दी विभाग, सरकारी विमेन्स कालेज
तिरुवनन्तपुरम

प्रजातंत्र के इतिहास में केरल विधान-सभा का नाम स्वर्णाक्षरों में लिखा जाएगा, जिसने हाल ही में अपने अस्तित्व के सौ वर्ष पूरे किये। भारत में ऐसी केवल दो ही विधान सभाएं—केरल और कर्णटक (भूतपूर्व मैसूर) की हैं, जिन्होंने सौ वर्षों का इतिहास रचा है।

भारत की देशी रियासतों में 'तिरुवितांकूर' में ही सब से पहले 'लोक तंत्रीय शासन समिति' का गठन हुआ था। विश्व में पहली बार चुनाव के माध्यम से साम्यवादी सरकार को अधिकार में लाने का श्रेय भी केरल को ही है। भारत में

भारत की देशी रियासतों में 'तिरुवितांकूर' में ही सब से पहले 'लोकतंत्रीय शासन समिति' का गठन हुआ था।

पहली बार बालिगों को प्राप्त मताधिकार के आधार पर निर्वाचन भी यहीं हुआ था—फरवरी सन् 1948 में।

केरल के सामाजिक जीवन में कायापलट करनेवाला 'भूमि सुधार विधेयक' शिक्षा क्षेत्र में बड़ो हलचल पैदा करनेवाला 'शिक्षा-विधेयक' किसान मजदूरों को पेंनशन देने का निर्णय, 'मधु-मजदूर कल्याण निधि', 'भ्रष्टाचार निरोध विधेयक' आदि क्रांतिकारी एवं जनकल्याणकारी कानूनों का निर्माण करके केरल विधान सभा ने भारत के दूसरे राज्यों के सामने नया आदर्श ही प्रस्तुत किया है।

इसी विधान सभा का बीजवपन लग भग 101 वर्ष पहले ही हो चुका था। तत्कालीन तिरुवितांकूर के महाराजा श्रीमूलम् तिरुनाल ने 30 मार्च सन् 1888 में एक विज्ञापन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निकालकर प्रथम विधान परिषद् के कायम होने की घोषणा की। 23 अगस्त सन् 1888 को दिन के करीब ग्यारह बजे 'हजूर कचहरी' में, दिवान शंकर सुब्बराय की अध्यक्षता में पहली आठ सदस्यीय परिषद् की बैठक हुई।

सन् 1898 में महाराजा ने परिषद् के गठन में कुछ परिवर्तन किये। उसकी सदस्य-संख्या 8 से 15 कर दी गयी, जिन में 9 सरकारी और 6 गैर-सरकारी सदस्य शामिल थे।

सन् 1904 में विधान परिषद् के अलावा 'श्रीमूलम् प्रजा सभा' का भी गठन हुआ, जो विकास का दूसरा चरण था। भूस्वामियों और

इन सदस्यों को बजट की चर्चा करने का अधिकार प्राप्त था।

धनी व्यापारियों में से प्रजा सभा के सदस्यों को चुनने का अधिकार डिविज़न पेश्कार को दिया गया था। यह थी शर्त थी कि ये सौ रुपये से अधिक भूमिकर अदा करने-वाले हो और उनकी वार्षिक आय 6000 रुपये से ज्यादा हो। 22 अक्तूबर सन् 1904 में 'प्रजा सभा' का प्रथम सम्मेलन 'विक्टोरिया जुबिली टाऊन (वी. जे. टी) हाल में

श्रीमती रामदुलारी सिन्हा
माननीय राज्यपाल

सम्पन्न हुआ। साल-भर में एक बार यह सभा लगती थी।

सन् 1919 में विधान परिषद् की सदस्य-संख्या 15 से 25 कर दी गयी। इन में 11 गैर-सरकारी सदस्य थे जिन में आठों निर्वाचित प्रतिनिधि, होते थे। इन सदस्यों को बजट की चर्चा करने का अधिकार प्राप्त था।

सन् 1921 में परिषद् की अंग-संख्या 50 कर दी गयी। इन में 28 निर्वाचित सदस्य होते थे और शेष 22 सदस्य नामज़द किये जाते थे। इन में 7 सदस्यों के गैर-सरकारी होने की शर्त रखी गयी थी। यहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

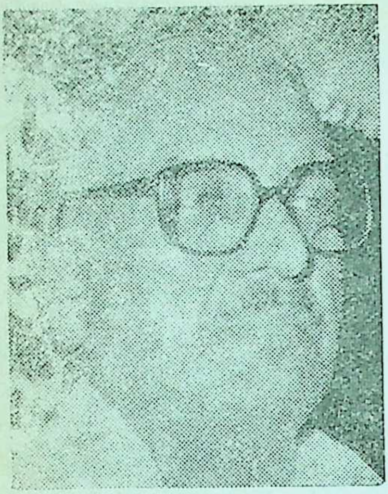

श्री. वर्कला राधाकृष्णन
अध्यक्ष, विधान सभा

से, सदस्यों को बजट की चर्चा में भाग लेकर अनुदानों की मांग पर मतदान करने का अधिकार भी दिया गया।

सन् 1932 में महाराजा श्री चित्रतिरुनाल प्रशासन के क्षेत्र में कई सुधार लाये और उन्होंने द्विमण्डलीय सदन प्रणाली को लागू किया।

12 जनवरी सन् 1930 की एक घोषणा के आधार पर परिषद् के सदस्यों को विचारों की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता भी मिल गयी। तथा प्रतिवर्ष कम से कम 5 रुपये भूमिकर देनेवालों और 5 रुपये पेशा-कर अदा करने वालों को मतदान का अधिकार भी दिया गया।

सन् 1932 में महाराजा श्री चित्र तिरुनाल प्रशासन के क्षेत्र में कई सुधार लाये और उन्होंने द्विमण्डलीय सदन प्रणाली को लागू किया। 'श्रीमूलम् प्रजा सभा' और 'श्री चित्र राज्य परिषद्' अलग-अलग सभाएँ बना दी गयीं। प्रजा-सभा निचली सभा थी। प्रजा सभा के 72 सदस्यों में से 62 निर्वाचित प्रतिनिधि थे। इनमें 14 सदस्य अल्प संख्यकों का प्रतिनिधित्व करते थे। परिषद् के 37 सदस्यों में 27 सदस्य निर्वाचित होते थे। यहाँ भी अल्प संख्यकों का प्रतिनिधित्व आरक्षित था। यद्यपि दोनों सदनों के अध्यक्ष दिवान ही होते थे तथापि प्रजा सभा के लिए एक निर्वाचित उपाध्यक्ष भी होता था। बजट की अनुदान मांगों को मंजूर या नामंजूर करने का अधिकार भी इन दिनों सभा को मिल गया। पहली बार एक लोक-लेखा समिति' का गठन भी इन्हीं दिनों में हुआ।

एक दूसरी देशी रियासत 'कोच्चिन' थी। यहाँ केवल अप्रैल सन् 1925 में ही एक विधान परिषद् का गठन हुआ था। इसके 45 सदस्यों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में से तीसों निर्वाचित प्रतिनिधि थे। सन् 1935 में परिषद् की स्थायी सलाहकार समितियों का गठन हुआ और पहली बार, कोच्चिन सरकार के नियमानुसार, परिषद् के सदस्य श्री अम्पाट्टु शिवराम मेनन, ग्रामीण विकास मंत्री नियुक्त हुए। सन् 1946 तक होते होते मंत्रियों की संख्या बढकर 4 हो गयी। भारत की स्वतंत्रता-प्राप्ति के ठीक एक दिन पहले, 14 अगस्त सन् 1947 को कोच्चिन के महाराजा ने सम्पूर्ण उत्तरदायी (जनता के) शासन की घोषणा की। सन् 1948 में कोच्चिन में बालिगों को मतदान का अधिकार प्राप्त हुआ।

लेकिन तिरुवितांकूर में स्वतंत्रता प्राप्ति के 20 दिन बाद ही शासन की बागडोर जनता के हाथों सौंपने की घोषणा हुई। 4 सितम्बर 1947 में यह घोषणा हुई। बालिगों को प्राप्त मताधिकार के आधार पर भारत में सर्वप्रथम, तिरुवितांकूर विधान सभा के लिए फरवरी सन् 1948 में निर्वाचन हुआ। 20 मार्च सन् 1948 को विधान सभा कायम हुई। 'प्रधान मंत्री' पट्टम ए. ताणुपिल्लै के नेतृत्व में कांग्रस के, प्रथम लोकतांत्रिक मंत्री-मंडल का गढ़न हुआ

बालिगों को प्राप्त मताधिकार के आधार पर भारत में सर्वप्रथम, तिरुवितांकूर विधान सभा केलिए फरवरी सन् 1948 में निर्वाचन हुआ।

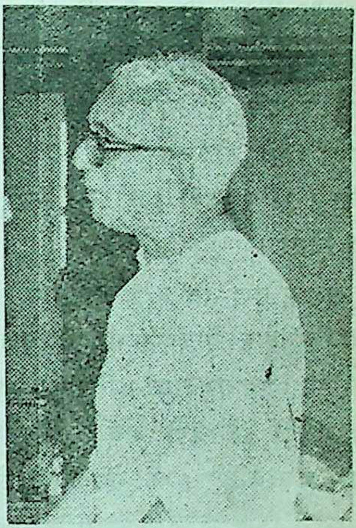

श्री. के. करुणाकरन
विपक्षी दल के नेता

और श्री चित्र तिरुनाल महाराजा ने उन्हें अधिकार का हस्तान्तरण भी कर दिया। ऐ. जे. जोण सभा के अध्यक्ष रहे। उन्होंने 17 अक्तूबर 1948 को त्याग पत्र दे दिया। इसके बाद परवूर टि. के. नारायणपिल्लै मुख्य मंत्री बने।

1 जुलाई 1949 को तिरुवितांकूर और कोच्चिन राज्यों को मिला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया गया और तिरुवितांकूर के राजा 'राज प्रमुख' हुए। दोनों विधान सभाएँ भी मिला दी गयीं और राज प्रमुख संवैधानिक प्रशासकीय अधिकारी हुए। टी के. नारायणपिल्लै उस समय तिरु-वितांकूर के मुख्य मंत्री थे । 1 जुलाई 1949 को, तिरुवितांकूर-कोच्चिन के मुख्य मंत्री के रूप में उन्होंने नये मंत्रीमंडल का गठन किया। श्री. टी. एम वर्गीस अध्यक्ष हुआ। 24 फरवरी 1951 को त्याग-पत्र दिया।

भारत गण तंत्र राष्ट्र बन गया तो तिरुवितांकूर कोच्चिन भी उस गण-तंत्र का भाग बन गया। दिसंबर सन् 1951 और जनवरी सन् 1952 में आम चुनाव हुए। ए. जे. जोण के नेतृत्व में 13 मार्च 1952 को मंत्रिमंडल ने पद ग्रहण किया। 23 सितंबर 1953 को सरकार की तरफ से पेश किया गया विश्वास प्रस्ताव 51 के विरुद्ध 56 वोटों से हार गया। सभा भंग कर दी गयी। लेकिन वह मंत्रि-मंडल अगले चुनाव तक आधिकार में रहा।

फरवरी 1954 के चुनाव में भी किसी को स्पष्ट बहुमत नहीं मिला। प्रजा सोश्यलिस्ट

भारत में संयुक्त मोर्चे का प्रयोग शायद यहीं से शुरु होता है, जिसका व्यापकता से प्रयोग, बाद में केरल के राजनैदिक यंत्र में हुआ।

पार्टी के नेता पटटं ताणुपिल्लै के नेतृत्व में एक मंत्रि-मंडल गठित हुआ। भारत में संयुक्त मोर्चे का प्रयोग शायद यहीं से शुरु होता है, जिसका व्यापकता से प्रयोग, बाद में केरल के राजनीतिक यंत्र में हुआ। 22 मार्च सन् 1954 में उस ने पद ग्रहण किया। 14 फरवरी सन् 1955 को पनम्पिल्ली गोविन्द मेनन के नेतृत्व में कोंग्रस मंत्रि-मंडल ने पद-भार ग्रहण किया। उन्होंने जब त्याग पत्र दिया तब पहला राष्ट्रपति शासन लागू हो गया। विधान सभा भंग कर दी गयी।

1 नवंबर 1956 को जब भाषा के आधार पर राज्यों का पुनर्गठन हुआ तो 'केरल' राज्य भी कायम हुआ। उस समय केरल राष्ट्रपति शासन में था। फरवरी-मार्च सन् 1957 के आम चुनाव में श्री ई. एम. शंकरन नम्बूतिरिपाट के नेतृत्व में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

1 नवंबर 1956 को, जब भाषा के आधार पर राज्यों का पुनर्गठन हुआ तो 'केरल' राज्य भी कायम हुआ ।

प्रथम साम्यवादी सरकार अस्तित्व में आयी । श्री. आर. शंकरनारायणन तम्पी 5 एप्रैल सन् 1957 को केरल विधान सभा के प्रथम अध्यक्ष हुए । 31 जूलाई सन् 1959 को केरल विधान सभा निलंबित की गयी । राष्ट्रपति शासन लागू हुआ ।

सन् 1960 के चुनाव में कांग्रस, प्र. सो. पा. और मुस्लीं लीग का संयुक्त मोर्चा अधिकार में आया । पटटं ताणुपिल्लै मुख्य मंत्री बने । 25 सितंबर 1962 को पट्टम ने त्याग पत्र दे दिया । अगले दिन आर. शंकर मुख्य मंत्री हुए । 10 सितंबर सन् 1964 को विधान सभा भंग हुई । राष्ट्रपति शासन लागू हुआ ।

4 मार्च सन् 1965 के चुनाव में किसी दल को बहुमत प्राप्त नहीं हुआ । अगला चुनाव मार्च सन् 1967 में हुआ । श्री. एम. शंकरन नंपूतिरी पाट के नेतृत्व में सप्त दलीय संयुक्त मोर्चेने कुर्सी ग्रहण की । ढाई वर्ष बाद मोर्चे का गठ-बन्धन शिथिल हुआ । श्री. सी. अच्युत मेनन 1 नवंबर सन् 1969 को मुख्य मंत्री हुए । जून सन् 1970 में उन्होंने त्याग पत्र देकर चुनाव कराया । 17 सितंबर सन् 1970 के मध्यावधि चुनाव में यह मोर्चा फिर अधिकार में आया । और साढ़े छः वर्षों तक उसका शासन जारी रहा ।

मार्च सन् 1977 में आपात स्थिति में सम्पन्न चुनाव में भारतीय साम्य-वादी दल और कांग्रस के बीच में गठ-बन्धन हुआ । 25 मार्च सन् 1977 को श्री. के. करुणाकरन के नेतृत्व में मंत्रि-मंडल बना । श्री. करुणाकरन ने इस्तीफा दे दिया । 27 अप्रैल 1977 को श्री ए. के एन्टणी के नेतृत्व में नया मंत्रि-मंडल बना । 26 अक्तूबर सन् 1978 को एन्टणी ने भी इस्तीफा दे दिया और 29 अक्तूबर को श्री. पी. के. वासुदेवन नायर के नेतृत्व में नया मंत्रीमंडल बना ।

इसके बाद 12 अक्तूबर सन् 1979 को सी. एच. मुहम्मद कोया मुख्य मंत्री हुए । इनकी अवधि दो महीने तक की रही । 25 जनवरी सन् 1980 को श्री. ई. के. नायनार के नेतृत्व में वाम पंथी मोर्चा अधिकार में आया । 26 दिसंबर 1981 को श्री. करुणाकरन मुख्य मंत्री हुए ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मई 1982 में श्री. करुणाकरन के नेतृत्व में जन तांत्रिक मोर्चा अधिकार में आया और उसने वर्ष की अवधि भी पूरी की ।

मार्च सन् 1987 में श्री ई. के नायनार के नेतृत्व में वामपंथी मोर्चा अधिकार में आया है । वर्कला वी. राधाकृष्णन वर्तमान विधान सभा के अध्यक्ष हैं । श्री. के. करुणाकरने विपक्षी नेता हैं।

इस लंबी यात्रा के दौरान केरल विधान सभा ने विधि निर्माण की जो रजत रेखाएँ खींची हैं वे भारत की विधि निर्माण सभाओं केलिए आदर्श बन जाएँ ।

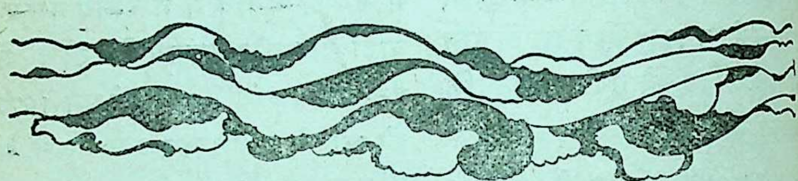

पाठकों के पत्र

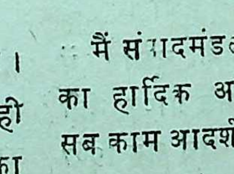

जुलाई 1989 की पत्रिका मिली । उसके आवरण पृष्ठ को देखते ही बहुत प्रभावित हुई । पत्रिका का आवरण पृष्ठ ही इतना सुन्दर है तो अंदर विषय भी बहुत सुन्दर, पढ़ने योग्य एवं विद्वतापूर्ण लेख ।

मैं संपादमंडल के सभी सदस्यों का हार्दिक अभिनंदन करती हूं। सब काम आदर्श एवं अनुकरणीय है।

एस. शांताबाई
मंत्री,
कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति,
बेंगलोर-1

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरल ज्योति

* प्रधान संपादक
प्रो० पी. जे. जोसफ़

* संपादक
श्री. के. जी. बालकृष्ण पिल्लै

* सह संपादक
श्री. आर. सुकुमारन नायर

* संपादक मण्डल
प्रो० एम. जनार्द्दनन पिल्लै
प्रो० सी. जी. राजगोपाल
श्री. के. वी. कृष्णनकुट्टी
डा० एस. सी. चन्द्रन
डा० एन. जी. देवकी
श्री. एम. के. वेलायुधन नायर

* विज्ञापन दर

		मासिक	वार्षिक
आवरण पृष्ठ 4	रु.	500 00	5000 00
आवरण पृष्ठ 2 एवं 3	रु.	400 00	4000 00
साधारण पृष्ठ पूरा	रु.	300 00	3000 00
साधारण पृष्ठ $\frac{1}{2}$	रु.	175 00	1750 00
साधारण पृष्ठ $\frac{1}{4}$	रु.	100 00	1000 00

संपर्क करें—मंत्री, केरल हिन्दी प्रचार सभा, तिरुवनन्तपुरम-695 014

लेखकों से निवेदन

हिन्दी प्रचार, हिन्दी शिक्षण, भारतीय भाषायें, भारतीय साहित्य, भारतीय संस्कृति जैसे विषयों पर लिखे गये उच्च स्तरीय सचित्र लेखों व संगोष्ठी समाचारों का स्वागत किया जायेगा ।

हिन्दीतर प्रान्तों की सांस्कृतिक, साहित्यिक, कलात्मक विशेषताओं पर लिखी गयी मौलिक और अनूदित रचनाओं को और हिन्दीतर भारतीय भाषाओं की उत्तम रचनाओं के अनुवादों को प्राथमिकता दी जायेगी ।

पांडुलिपियाँ साफ अक्षरों में लिख कर या टाइप करके भेजें । कार्बन प्रतियाँ स्वीकृत नहीं होंगी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्र :—

मुख पृष्ठ : ऊपर :—केरल हिन्दी प्रचार सभा और केरल स्थित केन्द्र सरकारी कार्यालयों, निगमों, उपक्रमों एवं राष्ट्रीयकृत बैंकों के तत्वावधान में 14-9-1989 से 20-9-1989 तक आयोजित हिन्दी सप्ताह समारोह का उद्घाटन भद्र दीप जला कर केरल विधान सभा के अध्यक्ष श्री. वर्कला वी. राधाकृष्णन ने किया । समीप हैं श्री. एम. के. वेलायुधन नायर (मंत्री, केरल हिन्दी प्रचार सभा एवं कोषाध्यक्ष अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ), श्री. पी. गोविन्द पिल्लै (अध्यक्ष, केरल राज्य फिलम विकास निगम, तिरुवनन्तपुरम) और श्री. सी. जे. मात्यु (मुख्य पोस्ट मास्टर जनरल, केरल परिमण्डल एव अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, तिरुवनन्तपुरम)

बीच में :

उद्घाटन सम्मेलन का एक दृश्य (दायें से) श्री एस. हरिहरन (कंपनी सचिव, हिन्दुस्तान लाटेक्स, तिरुवनन्तपुरम), श्री एन. एस कृष्णमूर्ति (निदेशक, आकाशवाणी, तिरुवनन्तपुरम), डॉ० एस. सी. गुप्त (निदेशक, विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केन्द्र, तुंपा), श्री. सी. जे. मात्यु, श्री. पी. गोविन्द पिल्लै, श्री. एम. के. वेलायुधन नायर और श्री. एस. आर. घोडावाल (संयुक्त निदेशक, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार)

नीचे :

समापन सम्मेलन में अध्यक्षीय भाषण दे रहे हैं गाँधीग्राम विश्वविद्यालय, मदुरै के पूर्व कुलपति डा० जी. रामचन्द्रन । बैठे हैं (बायें से):—श्री. के. चन्द्रशेखरन (शिक्षा मंत्री, केरल सरकार), भगिनी मैथिली, श्री. एस. वी. बालसुब्रह्मण्यम (क्षेत्रीय प्रबंधक, स्टेट बैंक ऑफ ट्रावनकोर, तिरुवनन्तपुरम), श्री. वी. विश्वनाथ मेनोन (वित्त मंत्री, केरल सरकार), श्री. महेन्द्र प्रसाद (अपर पुलीस उप महा निदेशक, केन्द्रीय रिसर्व पुलीस बल, पल्लिपुरम) और श्री. वी. जे. तंकप्पन (मंत्री, स्थानीय प्रशासत, केरल सरकार)

आवरण पृष्ठ--2

ऊपर :

1'-9-1989 को केन्द्रसरकारी कर्मचारियों केलिए आयोजित हिन्दी प्रतियोगिताओं का उद्घाटन कर रहे हैं केरल विश्वविद्यालय के उप कुलपति डा० ए. सुकुमारन नायर । समीप हैं (बायें से):—श्री. एम. के. वेलायुधन नायर, श्री. के. के. नायर (प्रधान, कार्मिक एवं सामान्य प्रशासन एवं अध्यक्ष, राजभाषा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्यान्वयन समिति, द्रव न्योदन प्रणाली केन्द्र, वलियमला) और श्रीमती वी. एस. कोमलकुमारी अम्मा (हिन्दी अधिकारी, विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केन्द्र' तुम्पा)

नीचे :

भारतीय खाद्य निगम द्वारा प्रायोजित कार्शशिविर के प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरण कर रहे हैं श्री. महेन्द्र प्रसाद।

आवरण पृष्ठ—3

कर्मचारियों की प्रतियोगिताओं में अधिकतम अंक पानेवाली संस्थाओं को केरल 'हिन्दी प्रचार सभा षीलड' वितरित कर रहे हैं केरल सरकार के शिक्षा मंत्री श्री. के. चन्द्रशेखरन। षीलड स्वीकार कर रहे हैं (19) श्री. एस. वी. सुब्रह्मण्यम्, आंचलिक प्रबंधक, स्टेट बैंक ऑफ ट्रावनकोर (प्रथम स्थान, (20) श्री. एन. रामचन्द्रन नायर, कल्याण अधिकारी, महालेखाकार का कार्यालय, तिरुवनन्तपुरम (द्वितीय स्थान) (21) पल्लिपुरम केन्द्रीय रिसर्व पुलीस बल के अपर पुलीस उप महा निदेशक श्री. महेन्द्र प्रसाद (तृतीय स्थान)।

आवरण पृष्ठ—4

ऊपर :

सांस्कृतिक संध्या का उद्घाटन कर रहे हैं डा० पी. वी. एस. नंपूतिरिपाट (प्रबन्ध निदेशक, हिन्दुस्तान लाटेक्स लिमिटेड, तिरुवनन्तपुरम)। बैठे हैं (बायें से):—डा० एन. ए. करीम (पूर्व उप कुलपति, केरल विश्वविद्यालय), श्री. एम. के. वेलायुधन नायर और डा० वी. राजीव लोचनन (सहायक प्रसाशन अधिकारी, यूनाइटड इन्श्योरेन्स कंपनी, तिरुवनन्तपुरम)।

बीच में और नीचे :

सांस्कृतिक संध्या की विविध झाँकियाँ

मध्य पृष्ठ —*1*—ऊपर : *(2)*

कर्मचारियों केलिए आयोजित नाटक प्रतियोगिता का एक दृश्य। भारतीय रेल के तिरुवनन्तपुरम मंडल कार्यालय द्वारा प्रस्तुत।

बीच में :

सांस्कृतिक संध्या में बालिकाओं का नृत्य।

नीचे :

कर्मचारियों के बच्चे विविध प्रतियोगिताओं में उत्सुकता और उत्साह से भाग ले रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मध्य पृष्ठ 2 और 3 :

भारतीय भाषा कवि सम्मेलन के विविध दृश्य, (4) भद्र दीप जला कर उद्घाटन कर रही हैं तिरुवितांकूर राज परिवार की महामान्य राजकुमारी गौरी लक्ष्मीबाई तंपुराट्टी। कविता पाठ कर रहे हैं: (5) डा० पुतुशेरी रामचन्द्रन, (6) श्रीमती बी. सुगता कुमारी, (7) श्री. सुभाषचन्द्र गैन्धर, (8) डा० रति सक्सेना (9) श्री. वी. के. एस. नंपूतिरि, (10) प्रो० डी. विनयचन्द्रन (11) डा० मादेलिक्करा अच्युतन, (12) श्रीमती सुप्रिया चेरियान, (13) प्रो० टी. के. भास्करवर्मा, (14) डा० के. सुब्रह्मण्य पिल्लै, (15) प्रो० विष्णुनारायणन नंपूतिरि और (16) प्रो० आर. वासुदेवन पोट्टी।

मध्य पृष्ठ--3 बीच में :—

श्रोताओं में पूर्व केन्द्र मंत्री श्रीमती लक्ष्मी एन. मेनोन।

आवरण पृष्ठ 4

ऊपर :

(17) राजभाषा प्रदर्शिनी का उद्घाटन कर रहे हैं तिरुवनन्तपुरम नगर निगम के महापौर श्री. पी. मावसवेल। बैठे हैं (बायें से) :— डा० एन. ई. विश्वनाथ अय्यर (पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, कोच्चिन विश्वविद्यालय), श्री. एन. केशवन नायर (उप प्रधान पत्र सूचना अधिकारी, पत्र सूचना कार्यालय, तिरुवनन्तपुरम), श्री. एम. के. वेलायुधन नायर, श्री. के. बी. पिल्लै (नियंत्रक, विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केन्द्र, तुम्पा), श्री. घोडावाल और श्री. श्यामनाथ (कारोबार प्रबन्धक, प्रशिक्षण विभाग, भारत सरकार)

नीचे :—(18)

अनुवाद की वर्तमान समस्याओं पर आयोजित विचार गोष्ठी में भाषण दे रहे हैं श्री. मलहात्रा। बैठे हैं (दायें से) :— श्री. एम. के. वेलायुधन नायर, डा० जोस आस्टिन (सहायक निदेशक, राजभाषा विभाग, क्षेत्रीय कार्यालय, कोच्चिन), डा० एन ई. विश्वनाथ अय्यर, डा० सी. जी. राजचन्द्रन नायर (निदेशक, सर्वविज्ञान कोश प्रकाशन, तिरुवनन्तपुरम), श्री. सी. जे. मात्यु, श्री. के. उण्णिलियप्पन आई. ए. एस. (सचिव, सहाकारिता एवं परिवहन, केरल सरकार), डा० के. एन. शुक्ल (वैज्ञानिक, विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केन्द्र, तुम्पा), और श्री. पो. ओ. तोमस, (महाप्रबन्धक, भारतीय पर्यटन विकास निगम, कोवलम),

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूरभाष : 61378 तार : 'जय हिन्दी'

केरल ज्योति

पुष्प 24
दल 8
एक प्रति—1 रु० 50 पै०
वार्षिक—15 रु०

सांस्कृतिक जागरण की मासिक पत्रिका
नवंबर 1989

संपादकीय

यह अंक

यह एक विशेषांक है। हिन्दी सप्ताह विशेषांक। 14-9-1989 से 20-9-1989 तक केरल हिन्दी प्रचार सभा और केरल स्थित केन्द्र सरकारी स्थापनाओं के सहयोग से आयोजित हिन्दी सप्ताह समारोह का सचित्र विवरण इसमें दिया गया है। साथ ही इस सिलसिले में आयोजित 'अनुवाद-संगोष्ठी' में प्रस्तुत आलेख तथा भारतीय भाषा कवि सम्मेलन में प्रस्तुत कुछ कवितायें भी इस अंक में प्रकाशित हैं।

केरल का यह समारोह शायद अपने ढंग का निराला है। हमारी जानकारी में और किसी राज्य में इस प्रकार का कोई सम्मिलित प्रयास नहीं किया जाता जिस में स्वैच्छिक हिन्दी संस्था और केन्द्र सरकारी संस्थाओं का समान भाग-भागित्व हो।

समारोह का जो विस्तृत विवरण इस अंक में दिया गया है उससे पता चलेगा कि इस सप्ताह के दौरान आयोजित विविध कार्यक्रमों में कितनी संस्थाओं के कितने कर्मचारियों और अधिकारियों ने भाग लिया। अनेक राजनेताओं और साहित्यकारों ने भी विविध कार्यक्रमों में भाग लिया।

इस प्रकार के आयोजन का समेकित प्रभाव संस्थागत समारोह के प्रभाव की अपेक्षा कहीं अधिक है। अंक गणित में एक से एक जोडने पर दो हो जाता है। लेकिन इस प्रकार के सामाजिक कार्यों में एक संस्था से जब दूसरी संस्था मिलकर काम करती है तो उसका प्रभाव दुगुना नहीं, शतगुना हो जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम इतर राज्यों की स्वैच्छिक हिन्दी संस्थाओं से आह्वान करते हैं कि वे भी इस 'मोडल' को यथासाध्य अपनायें और अपने अपने राज्य में स्थित सभी केन्द्र सरकारी कार्यालयों, निगमों, उपक्रमों और राष्ट्रीयकृत बेंकों के सहयोग से राज्य स्तरीय हिन्दी सप्ताह समारोह का आयोजन करें। हमारा विचार है कि केन्द्र सरकारी कार्यालयों के कर्मचारियों के ही नहीं, साधारण जनता के हृदय में भी हिन्दी की उपयोगिता का सही बोध उत्पन्न करने में और तद्वारा हिन्दी के प्रति श्रद्धा उत्पन्न करने में ऐसा समारोह अत्यंत सहायक सिद्ध होगा। आशा है इस प्रकार के समारोह के आयोजन और कार्यान्वयन केलिए आवश्यक जानकारी और प्रेरणा इस अंक से मिलेगी।

इस अंक में

स्वामिन्! 3
महामान्य राणी
गौरी लक्ष्मीबाई तंपुराट्टी

दैवदशकम् 4
श्री. नारायण गुरुदेव

सागरगीतम् 5
जी. शंकर कुरुप

श्रोतव्य 6
श्री. विष्णुनारायणन नंपूतिरी

गरमी के बगुले 7
डा० देशमंगलम रामकृष्णन

अनुवाद की वर्तमान समस्यायें 9
डा० एन. ई. विश्वनाथ अय्यर

संचार माध्यम में अनुवाद 16
श्री. कुन्नुकुषि कृष्णन कुट्टी

केरल में हिन्दी सप्ताह समारोह—1989 17
प्रो० एम. एस. राधाकृष्णन

राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन में अनुवाद का महत्व और उसकी समस्यायें 42
डा० जोस आस्टिन

कविता सुनाऊँ क्या? 46
प्रो० टी. के भास्कर वर्मा

अद्भुत जीव 48
श्री. वी. के. एस. नंपूतिरी

पिंजरा 50
डा० रति सक्सेना

ज्ञान-दीप 52
श्री. एम. के. वर्मा

मानवता 53
श्रीमती एल. कौसल्या अम्माल

आत्म मंथन 55
श्री. एन. सी. दास

विश्व-गीत 60
श्री. रामेश्वर दयाल दुबे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वामिन् !

महामान्य राणी गौरी लक्ष्मीबाई तम्पुराट्टी
कवटियार राजमहल, तिरुवनन्तपुरम-1

सदियों से चली आई
वह परंपरा दासता की,
करती
आज
पुलकित मुझे;
पुकारो मुझे 'दासी'
अथवा 'गुलाम';
रखा है क्या
एक नाम में ?
हूँ मैं एक दासी,
क्या सिर्फ गुलाम ?
नहीं ...नहीं......,
मैं हूँ
तुम्हारे चरण-रज-कणों में एक,
नहीं बँधी
भौतिक भूतों से,
किन्तु
बँधी हूँ
तव-चरण-भक्ति-शृंखला से ।
हूँ मैं क्या सृष्टि तुम्हारी ?
अथवा संहार ?
या कि तुम्हारे कूल का
दुर्बल, जर्जर पोत एक ?

उबारो या छोड़ो,
रहूँगी सदा तुम्हारी दासी ।
दासता में ही यह जीवन
अर्पित तव सेवा में ।
माँगने का अधिकार
कहो मेरा कहाँ ?
कृपानिधे !
हूँ मैं सिर्फ गुलाम ।
हे श्री पद्मनाभ ! हे परमपुरुष !
तुम्हारे कमल-कोमल-चरणों से
बँधी हूँ मैं
अपूर्व ब्रह्मानंद-पाश से ।।

अनुवाद : प्रो० टी. के. भास्कर वर्मा
तथा
सुश्री. एम. गिरिजा देवी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मलयालम कविता

संस्कृत रूपांतर

दैवदशकम्

मूल : श्रीनारायण गुरुदेव

अनुवादक : प्रो० आर. वासुदेवन पोट्टि

नमामो देव नः पाहि मा त्याक्षीः कर्हिचित्प्रभो ।
नाविकोऽसि भवाब्धेर्नो बाष्पनौका भवत्पदम् । 1
स्पर्शपूर्वं गण्यवस्तून्यन्तं यन्ति यदा प्रभो ।।
तिष्ठद्दृगिव चेतो मे निष्पन्दं त्वयि वर्त्तताम् ।। 2
अन्नवस्त्रादिकं सर्वं निष्प्रत्यूहं प्रदाय नः ।
पात्वा धन्यान् प्रकुर्वाणस्त्वमेवैको न ईश्वरः ।। 3
अब्धिस्तरङ्गो वातश्च गाम्भीर्यमिव ते वयम् ।
माया त्वन्महिमा त्वञ्चेत्येषा धीः सर्वदास्तु नः ।। 4
भवान् सृष्टिश्च स्रष्टा च सृष्टिजालं तथैव च ।
सृष्टिसाधनमप्येतद् भवतो नान्यदस्ति भोः ।। 5
त्वमेव माया मायावी विनोदी मायया स्वयम् ।
त्वमपास्य च तां मायां सायुज्यं दददार्यकः ।। 6
त्वं सत्यं ज्ञानमानन्दस्त्वं कालो वर्त्तमानकः ।
भूतो भावी तथा वान्या प्रोच्यमाना च भारती ।। 7
अन्तर्बहिरभिव्याप्त महिमाञ्चितपदं तव ।
संस्तुमो भगवन्नित्यं जीयास्त्वं चिन्मय प्रभो ।। 8
विजयस्व महादेव दीनावनपरायण ।
विजयस्व चिदानन्द विजयस्व दयानिधे ।। 9
गभीरे त्वन्महोऽम्भोधौ सर्वे वयमनारतम् ।
मग्ना भवेम जीवेम नित्यानन्दाः सदा विभो ।। 10

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सागरगीतम्

मूल : महाकवि जी. शंकर कुरुप

अनुवादक : डा० मावेलिक्करा अच्युतन

श्रान्तमंबरं निदाघोष्मल स्वप्नाक्रान्तं
तान्तमारब्धक्लेशरोमन्थं मम स्वान्तम् ।
दृप्तसागर ! भवद्रूपदर्शनादद्धं-
सुप्तं ममान्तर्नेत्रं समुन्मीलयत्यात्मा ।

त्वं त्वपारतानीलगंभीरोदारच्छाया
स्वान्तं मे सुशीतलं भवति त्वदाश्लेषात् ।
क्षुद्राभ्यां मत्कर्णाभ्यां श्रोतुमशक्यात्तव
भद्रनित्यतायास्सुमोहनगानालापात्

उद्रसं फणोल्लोलकल्लोलान् समुद्धृत्य
रौद्रसुन्दरनृत्तं कुर्वाण ! भुजंगम !
वक्षसि त्वद्दंशनाद् विशालनीले व्योम
निश्चलं शेते मुग्धमानन्दमूर्च्छाधीनम् ।

नृत्यतु मदात्मनि दशतु हृदन्ते मे
उत्तुंफणाग्रे मां वहतु महानाग !
नीरदलतागेहं सा मन्दं प्रविश्यास्ते
नीरवमधुना सरागविभ्रमं सन्ध्या ।

(शेष भाग पृष्ठ 57 पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रोतव्य

मूल: श्री. विष्णु नारायणन नम्पूतिरी
अनु: श्री. वी. के. एस. नम्पूतिरी

अब न मुझे सुनना है कुछ भी
बहुत सुना, सो काफ़ी है—
कथन, नित्य चैतन्य यति का ?-[1]
शान्त नीलगिरि के
उटज की
अन्तर्बाह्य कुसुमित
वनस्थली का
अन्तरंग सुसुशीतल किये
प्रवहित प्रेमनिर्झर राग
सुनता मैं फिर से ।
मित्रों सहित रहा
तीन दिन वहाँ,
अर्द्ध रात्रि में :—
अन्तरा कंपित चीडों में,
विलंबित गाड़ी की
सीटी में,
निष्पन्द जागरित
पुष्प की चटक में,
सुनी मैंने स्मृति की गहराई में,
पदध्वनि, किसी के आगमन की !

नीलाकाश के स्वर-लय में,
दूर कहीं एकान्त नक्षत्र-राग,
गूढ-स्मिति-युत, दयार्द्र बन
कौन कर रहा आर्द्र, विश्व को ?
ज्ञान-सूत्र, धवल,
बन रहा शृंखला
किसी को,
उसे मृणाल-सम सजा—
रक्तिम अधरों पर,
पंख फड़फड़ाये
ऊर्ध्व-मानस ओर
उडते तेजोराजहंस !
तेरा कूजन सुन
जागृत तुषार-मंडित प्रभात,
श्रवण कर ध्यान से
पहुँच रहे हम भी,
उपगत निर्गमन-वेला,
क्रुद्ध विमानों की
भीषण ध्वनि
टकराती कानों पर,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गरमी के बगुले

मूल : डा० देशमंगलम् रामकृष्णन
अनुवाद : प्रो० के. आर. मुरलीधरन नायर

गर्मी के शरणार्थी बगुले
दीवाल पर कतार बान्ध
दिखते खामोश ।

पीडाओं के झाग उफनती,
मौत की बू उगलती नली में,
छाया-जरिए गहराई नाप
बगैर कुछ पाये ही

वार्तास्फोटन चित्र-पेटिका-में[2]
चुनावी अवसर के
व्यर्थ पौरुष भी !
मुझे भी लगता —
कि अब न सुनना है कुछ भी,
बहुत सुना, सो काफ़ी है ।

हे गुरो, सुनाइए श्रोतव्य,
युग खड़ा, कान दे,
वत्स सदृश,
आपकी मृदुल वाणी केलिए,
तथ्य भरी, आपकी, मंगल
वाणी केलिए !

---

(1) श्री. नित्य चैतन्ययति

केरल के एक विख्यात दार्शनिक । उन्होंने एक व्यक्तिगत पत्र में कवि को लिखा :— कई मित्र वादा करते हैं कि सर्जरी द्वारा मेरे कान सही होंगे, लेकिन अब मैं और अधिक सुनना नहीं चाहता, अब तक जो सुना, सो काफ़ी है ।

(2) चित्र पेटिका = दूरदर्शन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब मैं ताक लगाये बैठ रहता—
किराये-घर के झरोखे की शीशी पर
चेहरा अपना दबाये
गर्मी के रंजों को देखते रहता मैं ।

बिना टुकडे नमक के
लगी घाव करुणा को
होती बेचैन धूप में ।
चमकती मछली,
मच्छरों की कीडियाँ,
या शहरी जलन का दुर्मन्त्र प्रसून
अब क्या आ रहा पानी के बहाव में ?

फूल गुलमोहर के चिल्लाते क्या गगन में !
टेढी मेढी राहें टकराकर आपस में
काटतीं क्या सिर अपने ही !
फतह हुई किसकी ?
दारिक की या काली की ?
शिवभूत संचय स्वयं ही क्या
फोडते सिर और पीते खून ?

वे बैठते कतार में खामोश
भर आती क्या नजरें उनकी ?
मौन वे, पर शापों की धूप में उनके
झुलस जाता मैं ।
भर जाते जब खेत में लौह-खम्भे औ' सिमेन्ट,
होती जब गायब खेत-गानों की रंगिमा,
चावल के नन्हे पौधे रूप,
दूध निचोडते कच्चे चावल रूप,
घंटो बजते दानों के स्वर्णिम-गुच्छे रूप,

(शेष पृष्ट 59 पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुवाद की वर्तमान समस्याएँ

डा० एन. ई. विश्वनाथ अय्यर
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
कोचिन विश्वविद्यालय

केरल हिन्दी प्रचार सभा और केरल स्थित केन्द्र सरकारी कार्यालयों के तत्वावधान में आयोजित हिन्दी सप्ताह सामारोह 1989 के अंतर्गत भारतीय पर्यटन विकास निगम द्वारा प्रायोजित विचार-गोष्ठी में प्रस्तुत मुख्य आलेख।

कोई अगर आम आदमी से पूछे कि सब से खुशी देनेवाली बात क्या है तो वह बतायेगा कि दूसरों की कमज़ोरी और बुराई की आलोचना करना ही सब से आनंददायक है। यों जो सज्जन पचास वर्ष पार कर चुके उनसे पूछें कि कौन सा ज़माना अच्छा है? वे ज़रूर कहेंगे कि हमारा ज़माना बहुत अच्छा था, पर आज का ज़माना बिलकुल खराब है। मेरी भी इच्छा यही बताने की होती है। जहाँ तक महंगाई का सवाल है, मैं अब भी उसी बात को मानता हूँ। परंतु कुछ और विषय हैं जिनके विषय में संसार की प्रगति को नकारने की इच्छा बेकार है।

एक ज़माना था जब प्रत्येक छोटा राज्य अपनी भाषा से संतुष्ट था, उसी से परिचित था। मगर आज-कल एक ही देश में अनेक भाषायें चलती हैं। यों दूर-दूर के देशों को

दूसरों की कमज़ोरी और बुराई की आलोचना करना ही सब से आनंददायक है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाषाओं को परस्पर मिलाने का प्रयत्न भी चालू है। इस भाषाई मिलन का सबसे उपयोगी साधन अनुवाद है।

अनुवाद का कार्य बराबर बढता रहा है। उसका क्षेत्र बढता जाता है तो गहराई भी गहरी होती जाती है। अनुवाद की विभिन्न विधाएँ रूपायित हो रही हैं। वह एक स्वतंत्र अध्ययन-विषय हो गया है।

अनुवाद को सामान्यत: एक भाषा की सामग्री को अन्य भाषा में प्रस्तुत करने की प्रक्रिया मना जाता है। इसके भी मुख्यत: दो भेद हैं लिखित और मौखिक। हाथ से लिखी या छपी सामग्री का अनुवाद हम भी लिखित रूप से सुविधापूर्वक तैयार करते हैं, सो लिखित है। दो भिन्न भाषा-भाषी सज्जनों के वार्तालाप के समय तीसरा उनके वार्तालाप का मौखिक अनुवाद करके उनको परस्पर समझने में मदद पहुँचाता है। इसे मौखिक माना जाता है। सम्मेलनों में तत्काल भाषांतर होता है।

अनुवाद की वर्तमान समस्याएँ आज की विचार गोष्ठी का विषय है। अनुवाद की स्थायी समस्याएँ दो हैं। एक यह है कि अनुवादक मूल लेखक की बातों को ठीक-ठीक समझ पावे। दूसरी यह कि समझी हुई बातों को अन्य भाषा में समझाने योग्य उचित शब्द उसे मिलें।

वर्तमान युग अपनी शीघ्रता और नवीन प्रयोग के पीछे पागल सा हो गया है। लोग हर क्षेत्र में अधीर हैं और चाहते हैं कि हर बात और तेज़ हो। बीस-पच्चीस वर्ष पहले रेलगाड़ियाँ कोयले की भाप के बल पर चलती थीं और हमें तिरुवनन्तपुरम से मीटरगेज लाइन पर पहले मद्रास जाना पडता था, वहाँ शाम तक रुकते थे। बाद में जी. टी. एक्सप्रेस में दिल्ली जाना पडता था। दिल्ली पहुँचने में कम से कम चार दिन लगते थे। वहाँ पहुँचते-पहुँचते कोयले से द्वैताद्वैत भाव स्थापित हो जाता था। अब न कोयले की झंझट है। अडतालीस या बावन घंटों में पहुँचते हैं। मगर यात्री शिकायत करते हैं कि यह कैसी भैंसा गाडी है। ये लोग क्यों बिजली की गाडी नहीं चलाते? यह तो केन्द्र सरकार की केरल की तरफ सौतिया नीति का परिणाम है। विमान अब सीधे चार घंटों में दिल्ली पहुँचता है। बीच में वह कोचिन और गोवा में रुकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विमान-यात्रियों से उनकी प्रतिक्रिया पूछिए तो वे भी कहेंगे "हूँ, यह भी कोई विमान है। क्यों दो घंटों में नहीं पहुँचाता"।

विमान-यात्रियों से उनका प्रतिक्रिया पूछिए तो वे भी कहेंगे "हूँ, यह भी कोई विमान है। क्यों दो घंटों में नहीं पहुँचाता"

मतलब यह कि वर्तमान युग में हर दिशा में शीघ्रता की मांग है। अनुवाद के विषय में भी यह शीघ्रता एक अहम सवाल हो गया है। अनुवाद का एक प्रमुख क्षेत्र संचार माध्यम का है। इसमें उपसंपादकों और अनुवादकों को कभी-कभी चार-चार हाथ मिलें, तब भी पर्याप्त नहीं होगा। टेलिप्रिंटर की सामग्री का अंबार आता है। कंपोसिटर वारंट लाये अदालत के चपरासी की तरह सिर पर सवार होता है। अपनी कुरसी व मेज के चारों ओर व्यस्त लोग। न एकांत, न सोचने की फुरसत। ऐसी ही घड़ी में अनुवादक को अपनी दक्षता प्रमाणित करनी पड़ती है।

समाचार-पत्र के अनुवादक से भी बुरा हाल फिल्म के संवाद के अनुवादक का होता है। "डबिंग" की प्रक्रिया अब बहुत महत्वपूर्ण बन चुकी है। अनुवादक को केवल शब्द का शब्द बताना नहीं है। मूल संवाद पात्रों के मूँह से निकलता है। जब ध्वनियाँ पात्रों के मूँह से निकलती हैं तब उनके उच्चारण, स्थान, प्रयत्न आदि होते हैं जो उनके चेहरे पर अपना प्रभाव डालते हैं। जब हम डब्ब की हुई फिल्म देखते हैं तब यह उम्मीद रखते हैं कि फिल्म के अभिनेताओं के संवाद सहज लगें। यह अनुवादक के हाथ में है। यहाँ अनुवादक के थैले में इतने पर्यायवाची शब्द चाहिए कि वह पात्रों के उच्चारण के योग्य शब्द चुने।

अनुवाद का प्रमुख क्षेत्र साहित्य है ही। इसकी अनेक शाखाएँ हैं— कविता, उपन्यास, कहानी, नाटक, निबंध आदि। उनकी अपनी समस्याएँ हैं जिन पर इस छोटे आलेख में और इस प्रसंग पर विचार संभव नहीं है।

अनुवाद की वर्तमान समस्याएँ तो प्रत्येक क्षेत्र में अलग-अलग हैं और कुछ तो सामान्य भी हैं। उदाहरणार्थ पर्यटन आज हर प्रकार के आदमियों का मनोरंजन हो गया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। भारत सरकार की एल.टी.सी. योजना इसे और प्रेरणा देती है। पर्यटक दो प्रकार के हैं। एक तो वसों रेल डब्बों में अनेवाले जो गडरिये के आदेश पर चलनेवाले बकरों के झुंड जैसे यांत्रिक गति से घूमते हैं। ऐसे ही तीर्थयात्रियों के दल वारणासी, वृन्दावन आदि में नज़र आते हैं उन्हें कोई नई जानकारी पाने की इच्छा नहीं होती। अतएव अनुवाद का सवाल भी नहीं उठता। वे तो सोचते तक नहीं। मगर जो सचमुच पर्यटन का मज़ा चाहते हैं उन्हें अधिकाधिक भाषाओं में दैनिक जीवन के विविध क्षेत्रों के अनिवार्य प्रश्नोत्तर सीखने की जरूरत पडती है। आज दिल्ली की रेपिडेक्स कंपनी की मलयालम शिक्षक का तीसरा संस्करण चल रहा है। सभी भारतीय भाषाए जल्दी-जल्दी सिखानेवाले अनेक स्वबोधिनियाँ हैं। लिंग्वाफ़ोन के पाठ हैं। इन सब में अनुवाद का भी योग है। सुना है कि कई भाषाओं के सीमित व्यावहारिक प्रयोगों का अनुवाद देनेवाले पाकेट कंप्यूटर बने हैं। शायद शीघ्र ही हमारी भारतीय भाषाओं में ऐसे कंप्यूटर बनें तो आप पाकेट में कंप्यूटर लेकर कहीं

आप पाकेट में कंप्यूटर लेकर कहीं भी चलें और आसानी से अनुवाद की समस्या हल हो जाय।

भी चलें और आसानी से अनुवाद की समस्या हल हो जाय। परीक्षा भवन में इसे ले जाकर हम अनुवाद के खंड का समाधान भी कर सकेंगे।

पं० जवाहरलाल नेहरूजी ने कहा था कि विज्ञानों का विकास यों हो रहा है कि हमारे एक सिद्धांत के पढते-पढते वह सिद्धांत पुराना होता है, खंडित तक हो जाता है। इसलिए हमें नये से नये वैज्ञानिक तथ्यों का ज्ञान प्राप्त करना होगा। ऐसी हालत में वैज्ञानिक और तकनीकी ग्रन्थों के अनुवाद को भी उसी रफ़तार से चलना पडता है। अंग्रेजी और अन्य विदेशी भाषाओं से हिन्दी में अनुवाद का क्रम अभी जो चल रहा है वह बिलकुल धीमा है। सोवियत भूमि जैसी विदेशी पत्रिकाओं में जो तेजी है वह भी नहीं है। इन क्षेत्रों में शब्दों और अभिव्यक्तियों की जो हिन्दी पर्याय-वाची शब्दावली कुछ वर्ष पहले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बनी उसके प्रभाव, क्षमता आदि का मूल्यांकन करने का समय आ गया है। जिन दिशाओं में कमी है उन दिशाओं में काम आगे बढाना है। इसके दो पक्ष हैं।

(1) व्यावहारिक तकनालजी का पक्ष।

(2) सैद्धांतिक एवं अनुसंधानात्मक अध्ययन का पक्ष।

पहले व्यावहारिक तकनालजी के पक्ष में। आज शुद्ध अनुवाद की जगह भावानुवाद एवं संक्षेप आदि प्रक्रियाएँ व्यावसायिक प्रकाशन के

हिन्दी पर्यायवाची शब्दावली कुछ वर्ष पहले बनी उसके प्रभाव, क्षमता आदि का मूल्यांकन करने का समय आ गया है।

क्षेत्र में धडल्ले से चालू हैं। केरल में मलयालम में टी. वी. की मरम्मत, मोटार ड्राईविंग जैसे विषयों पर पुस्तकें है, जो अनुवाद प्रक्रिया के बिना असंभव है। ऐसी पुस्तकों की भरमार है. खूब बिकती है। हिन्दी में दिल्ली के देहाती पुस्तक भंडार के प्रकाशन इसके उदाहरण हैं। इनके स्तर पर मतभेद तो है। फिर भी ये खूब बिकते है।

सैद्धांतिक एवं अनुसंधानात्मक अध्ययन का कार्य अभी अंग्रेजी में हीं हो रहा है। विधि जैसे वैज्ञानिक विषयों का सैद्धांतिक लेखन कुछ कष्ट उठाकर भारतीय भाषाओं में करते जायें। तब अनुवाद भी पुष्ट होगा। अपने केरल में कई वर्ष पहले मलयालम का प्रथम विश्व विज्ञान-कोश छपा था। उसके विद्वान और परिश्रमी संपादक श्री पी. टी. भास्कर पणिक्कर उन दिनों बताया करते थे कि अनेक वैज्ञानिक एवं तकनीकी विषयों पर मलयालम में लेखन करनेवाले नहीं मिल रहे थे। अब तो कई विज्ञानकोश मलयालम में निकल चुके हैं।

हमारी माँग को देखते हुए वर्तमान पूर्ति बहुत कम है। कई केन्द्रों में हिन्दी में कई प्रकार का अनुवाद-कार्य चल रहा है, मूल लेखन भी। जैसे, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद दिल्ली के अपने प्रकाशन हैं। पंतनगर कृषि विश्वविद्यालय का अपना हिन्दी प्रकाशन विभाग है। रूरकी के एंजिनीयरिंग विश्व-विद्यालय के वैज्ञानिक प्रकाशन हैं। उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, बिहार, हरियाणा आदि हर हिन्दी भाषी प्रदेश की ग्रंथ-अकादमियाँ भी कार्य में लगी हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में वैज्ञानिक हिन्दी में तकनीकी-सम्मेलन चलाने लगे हैं। हिन्दुस्तान कॉपर में, भारतीय खान निगम में हमारे विक्रम साराबाई अंतरिक्ष केन्द्र और उसकी शाखाओं में यह प्रयास चलता आया है। ऐसी प्रक्रिया के दौरान अनेक अनुवाद-परक समस्याएँ उठ सकती हैं। उनका समाधान करते-करते "अनुवाद" की महत्ता और गुणवत्ता बढेगी।

प्रशासनिक भाषा के क्षेत्र में अब अनुवाद का योगदान दिन दूना रात चौगुना बढ रहा है। पहले केन्द्र सरकार के कार्यालयों में हिन्दी अनुवादक ईद के चाँद की तरह दुर्लभ थे। पार्लियामेंटरी कमिटि के आने की खबर मिलने पर इन कर्यालयों के चतुर अधिकारी झटपट द्विभाषी नामपट्ट और मुहरें रातों रात बनवा लेते थे "स्वागत" भी हिन्दी में तैयार होता।

अब तो केन्द्र सरकार के बडे उपक्रमों में वैज्ञानिक हिन्दी में तकनीकी सम्मेलन चलाने लगे हैं।

कमिटि के सदस्य आते तो देखते दरवाज़े पर, सारे बड़े अफसरों की मेज़ों पर द्विभाषी नाम पट्ट और मुहरें हैं।

कबीर का एक दोहा है :-

"लाली मेरे लाल की जित देखो तित लाल"

इसीप्रकार कमिटि के सदस्य आते तो देखते दरवाज़े पर, सारे बडे अफसरों की मेज़ों पर द्विभाषी नाम पट्ट और मुहरें हैं। वे खुशी जाहिर करते "शाबाश"! अब स्थिति काफी सुधार गई है। जित देखो तित लाल ही हैं–अब मुहरे ही नहीं, हिन्दी अधिकारी, अनुवादक या टाइप्पिस्ट हैं। मगर अब समस्या दूसरा रूप धारण कर रही है। यहाँ मुझे प्रेमचंद की कहानी "नमक का दारोगा" याद आती है। उसमें मुख्य कथापात्र का पिता कहता है–वेतन तो आदमी देते हैं, रिश्वत भगवान की दी चीज़ है। यहाँ बात कुछ और है। जब वेतन बँध जाता है, सेवा सुरक्षित है तब अपने कार्यक्षेत्र में ठोस सेवा करने की प्रवृत्ति ढीली हो जाती है। अपने हिन्दी अधिकारी एवं अनुवादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बन्धुओं से अनुरोध है कि आप लोगों के प्रयत्न से ही राजभाषा हिन्दी बढ़ेगी। अपने कार्यालय की सीमित जरूरतों को ही आप सामने न देखें। यथासंभव अपने ज्ञान को, अपने कार्यालय को, हिन्दी कक्षा को पुष्ट करें, दूसरे बन्धुओं को हिन्दी की तरफ आकृष्ट करें।

प्रशासनिक हिन्दी की चर्चा करते हुए सारे संबन्धित अधिकारियों का ध्यान एक विशेष बात की और आकृष्ट करना चाहता हूँ। हमारे नगरों में अनेक केन्द्रीय उपक्रम हैं, अनुवाद के अनेक प्रसंग आते हैं। परंतु ऐसे प्रसंगों पर अंग्रेजी के शब्दों और अभिव्यक्तियों के हिन्दी पर्याय देनेवाले केन्द्र नहीं होते। टेलिफोण की विशेष हिन्दी सेवा अच्छा काम करती थी। यह बात जरूर है कि हिन्दी भाषी क्षेत्र की आवश्यकता यहाँ उतनी मात्रा में नहीं पड़ती। फिर भी जरूरत है।

हमें प्रमुख नगरों में एक राजभाषा हिन्दी सूचनाकेन्द्र चाहिए। केवल एकाध अधिकारियों को नियुक्त कर के हजारों रुपये वेतन में खर्च करना ही काफी नहीं है। उस सूचना केन्द्र में अंग्रेजी और अन्य विदेशी भाषाओं के माध्यम से हिन्दी के पर्याय कोश, भारतीय भाषाओं से हिन्दी में अर्थ देनेवाले कोश, भारत सरकार के सारे द्विभाषी नियम, अधिनियम, पत्रिकाएँ सब विधिवत उपलब्ध हों और वहाँ एक अच्छा पुस्तकालयाध्यक्ष (लैब्रेरियन) हो जो हिन्दी की दक्षता रखे और कार्य में रुचि रखें। वह विभिन्न कार्यालयों के अधिकारियों को पर्यायवाची शब्द तथा अभिव्यक्तियाँ दे सके। ऐसा स्थायी प्रबंध होने पर प्रत्येक वर्ष में राजभाषा प्रदर्शनी का आयोजन अधिक से अधिक सफल व उपयोगी होगा।

हमें प्रमुख नगरों में एक राजभाषा हिन्दी सूचनाकेन्द्र चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संचार माध्यम में अनुवाद

श्री. कुन्नुकुषि कृष्णनकुट्टि

[हिन्दी सप्ताह समारोह 1989 के सिलसिले में 16-9-89 को भारतीयपर्यटन विकास निगम द्वारा कोवलम में प्रायोजित विचार-गोष्ठी में प्रस्तुत किया गया आलेख ।]

संचार माध्यम का मुख्य कार्य सूचना देना है। सूचना देने की क्रिया मात्र में इसे सीमित रखना उचित नहीं होगा। सूचना देकर उसके द्वारा सामान्य जनता को शिक्षित करना और उन्हें आनन्द प्रदान करना भी इसका लक्ष्य है। तो, इसप्रकार जनसाधारण को सूचना प्रदान करने की भाषा के संबंध में मतभेद की गुंजाइश नहीं। भारत में ईसा के पूर्व पाँचवीं सदी में ही इसका निर्णय हुआ था जब भगवान बुद्ध ने अपने धर्म प्रचार के सभी कार्य जन साधारण की भाषा पाली में किया था। भगवान बुद्ध ने जो कुछ किया, वह सब "बहुजन हिताय और बहुजन सुखाय" था।

"बहुजन हिताय बहुजन सुखाय" काव्य रचना करनेवाले कुछ कवि भी हुए हैं, जिन्होंने अपने काव्य की भाषा के रूप में जन भाषा को चुन लिया था। 14 वीं सदी में "देसिल बचना सब जन मिट्ठा" कहकर काव्य रचना करनेवाले मैथिल कोकिल विद्यापति आज भी जन मानस में जीवित हैं। नाना पुराण निगमागमों में, वैदिक संस्कृत में बतायी गयी राम कथा का जन भाषा में तुलसीदास ने पुनराख्यान किया तो वह जनता का काव्य बन गया। 16 वीं सदी में केरल के विख्यात कवि तुंचत्तु रामानुजन एषुत्तच्छन ने भी यही कार्य किया। उन्होंने कहा 'वेद सम्मतमाय् मुन्पुळ श्रीरामायणं बोध हीनन्मार्कुमरियां-वण्णमु रक्कुन्नेन्' (अर्थात् पुरानी राम कथा जो वेद विख्यात है, अबोध साधारण जनता को समझा देने के उद्देश्य से मैं

(शेष पृष्ठ 35 पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दक्षिणांचल से हिन्दी की एक तेज लहर उठ रही है ! हिन्दी विरोधी हवाई महलों का धाराशायी होना ही अभी शेष है ? हाँ, केरल में आयोजित हिन्दी सप्ताह समारोह का चित्र इसी ओर तो संकेत नहीं कर रहा ?

केरल में हिन्दी सप्ताह समारोह—1989

प्रो० एम. एस. राधाकृष्णन
हिन्दी विभाग, सरकारी विमेन्स कालेज
तिरुवनन्तपुरम

तिरुवनन्तपुरम। सितंबर सन् 1989। अगस्त-सितंबर महीनों में केरल में उत्सव का माहौल छाया रहता है। अगस्त या सितंबर महीने में ही केरल का देशीय त्यौहार 'ओणम' मनाया जाता है, सितंबर महीने में ही 'हिन्दी दिवस' या 'हिन्दी सप्ताह' समारोह आयोजित किये जाते हैं। इस वर्ष ऐसा संयोग हुआ कि दोनों करीब आ गये और 'ओणम' का मौज और आनन्द पहले शुरु हुआ तथा समाप्त होने पर भी उसका प्रभाव हिन्दी सप्ताह समारोह पर छाया रहा। लोग उत्सव के मौज और आनन्द के साथ हिन्दी सप्ताह समारोहों में भी भाग लेते रहे। 20 सितंबर—हिन्दी सप्ताह समारोह की समापन तिथि—तक उत्सव का वही माहौल बना रहा, तिरुवनन्तपुरम में। खैर, ओणम का परिचय तो हम पहले ही अपने पाठकों को दे चुके हैं। अब लीजिए—केरल की राजधानी तिरुवनन्तपुरम महानगर में केरल हिन्दी प्रचार सभा तथा केन्द्र सरकार के कार्यालयों, निगमों, उपक्रमों एवं राष्ट्रीयकृत बैंकों के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित हिन्दी सप्ताह समारोह (14 से 20 सितंबर तक) की पूरी रपट—

सम्मिलित आयोजन केलिए एक हिन्दी सप्ताह समारोह समिति गठित की गयी। इस में केरल हिन्दी प्रचार सभा के और केरल स्थित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केन्द्र सरकारी कार्यालयों के प्रतिनिधि शामिल थे। केरल परिमंडल के मुख्य पोस्ट-मास्टर जनरल एवं तिरुवनन्तपुरम नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष श्री. सी. जे. मात्यु समिति के अध्यक्ष और केरल हिन्दी प्रचार सभा के मंत्री एवं अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ के कोषाध्यक्ष श्री. एम. के. वेलायुधन नायर प्रधान संयोजक रहे।

हफ्ते-भर के समारोह के दौरान ग्राम सभाएं हुई, परिचर्चाएं हुई, संगोष्ठियां हुई, प्रतियोगिताएं हुई, सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए, कवि सम्मेलन हुआ; जिन में अनेकों शिक्षा विद, समाज शास्त्री, राजनैतिक नेता मंत्री गण, वरिष्ठ अधिकारी, वैज्ञानिक, कलाकार, विचारक, कवि और लेखक, कर्मचारी और साधारण लोग सम्मिलित हुए। कितने-कितने परामर्श दिये गये, सिफारिशें की गयीं, उद्गार व्यक्त किये गये, आश्वासन और प्रोत्साहन दिये गये, आफतियां उठायी गयीं, क्या-क्या नई बातें उभरकर आयीं—प्रस्तुत है उसका ब्यौरा :—

* हिन्दी ही भारत की राष्ट्रभाषा बनने योग्य एकमात्र भाषा है

14 सितंबर 1989 को तिरुवनन्तपुरम कलाभवन में आयोजित एक महा सम्मेलन में, केरल विधान-सभा के अध्यक्ष श्री. वर्कला वी. राधाकृष्णन नें हिन्दी सप्ताह समारोह का उद्घाटन किया।

उद्घाटन भाषण में 'स्वतंत्रता संग्राम में हिन्दी की भूमिका' पर प्रकाश डालते हुए उन्हों ने कहा कि हिन्दी वास्तव में स्वतंत्रता आन्दोलन की रीढ़ की हड्डी थी। उन दिनों 'हिन्दी सीखना' राष्ट्रीय नारा था और राष्ट्रीय आन्दोलन के अंग के रूप में ही हिन्दी सीखी जाती थी। अब, स्वतंत्रता के बाद भी हम एक राष्ट्र भाषा की जरूरत महसूस करते हैं। अंग्रेजी एक सम्पर्क भाषा का काम कर रही है। लेकिन हम अंग्रेज़ियत के उपनिवेशवाद को मिटाना चाहते हैं।

भारत की एकता को बनाये रखनेवाला तत्व हिन्दी ही है। भारत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की विभिन्न भाषाओं को जोड़नेवाली कड़ी भी हिन्दी है। भारत में सब से अधिक बोली जानेवाली भाषा भी हिन्दी ही रही। इन्हीं कारणों से यह उचित है कि हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा बने।

राष्ट्रीय पुनरुद्धान से सम्बद्ध होकर, भारत की भावात्मक एकता को सुदृढ़ करने में सबसे अधिक सहायक सिद्ध होनेवाली भाषा के रूप में ही हिन्दी चुन ली गयी है। इसी सन्दर्भ में भारत की संविधान सभा ने 14 सितंबर सन् 1949 में हिन्दी को राजभाषा की मान्यता प्रदान करने वाला जो प्रस्ताव पारित किया है वह सर्वथा उचित और विवेकपूर्ण है।

हिन्दी तो जनता द्वारा स्वयं अपनायी जानी चाहिए। हिन्दी को लागू करने से संबन्धित गलत नीतियों के कारण, केरल को छोड़कर, दक्षिणी राज्यों में, खासकर तमिलनाटु में, हिन्दी विरोधी भावना भड़कायी गयी है और लोगों में यह भावना जड़ पकड़ चुकी है कि हिन्दी उनपर थोपी जा रही है। विघटनकारी तत्वों द्वारा अपनी लक्ष्य-सिद्धि के लिए, इस भावना को साधन बनाया जा रहा है। राष्ट्र-हित को लक्ष्य करके, इस विनाशकारी भावना को मिटाने का कष्ट-साध्य दायित्व हमें स्वयं अपने कन्धों पर ले लेना है।

रूस, जापान, फ्रांस आदि सभी परिष्कृत राष्ट्रों में विज्ञान और तकनीकी विषयों का अध्ययन-अध्यापन उनकी अपनी भाषाओं में होता है और अपनी भाषा बोलने में वे गौरव का अनुभव करते हैं। उसी प्रकार हमें भी अपनी राष्ट्र-भाषा पर गौरव का अनुभव होना चाहिए।

सभी भारतीय भाषाओं को विकसित होने का पर्याप्त अवसर प्रदान किया जाना चाहिए। विधि, शासन, विधायन आदि क्षेत्रों में अग्रेज़ी के स्थान पर भारतीय भाषाओं का अधिकाधिक प्रयोग किया जाना राष्ट्र की प्रगति केलिए अनिवार्य है। केन्द्र स्तर पर हिन्दी और राज्य स्तर पर प्रान्तीय भाषाएं राजभाषा के काम में लायी जाय।

त्रिभाषा प्रणाली को न्याययुक्त एवं तर्कसंगत बताते हुए विधान सभा के अध्यक्ष ने हिन्दी के संबन्ध में अपने शब्दों को दुहराते हुए कहा कि हिन्दी ही भारत की राष्ट्रभाषा बनने के लिए सर्वाधिक योग्य और एकमात्र भाषा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए केरल परिमंडल के मुख्य पोस्टमास्टर जनरल तथा तिरुवनन्तपुरम नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष *श्री. सी. जे. मात्यु* ने यह जानकारी दी कि तिरुवनन्तपुरम नगर में दो राजभाषा कार्यान्वयन समितियां काम कर रही हैं। पहली समिति केन्द्र सरकार के कार्यालयों निगमों और उपक्रमों के कर्मचारियों के लिए है जिसमें 84 संस्थाएँ शामिल हैं, और दूसरी, राष्ट्रीयकृत बैंकों के लिए है, जिसके अन्तर्गत 34 बैंक आते हैं। ये दोनों समितियां मिलकर 35,000 से अधिक कर्मचारियों का प्रतिनिधित्व करती हैं। केरल हिन्दी प्रचार सभा और पूर्वोक्त संस्थाएँ मिलकर गत तीन वर्षों से हिन्दी सप्ताह मनाने का सम्मिलित प्रयास करता आ रहा है जिसके अच्छे परिणाम सामने आने लगे हैं।

हिन्दी आज या कल भारत की एकमात्र राजभाषा बनकर ही रहेगी। जनता को स्वेच्छा से हिन्दी अपनाने केलिए प्रेरित करना चाहिए।

श्री. सी. जे. मात्यु ने आगे कहा कि हिन्दी विरोध की भावना या हिन्दी थोपी जा रही है इस भावना के पीछे केवल सामाजिक या राजनैतिक कारण ही नहीं, बल्कि इसके कुछ आर्थिक पहलू भी हो सकते हैं। आइ. ए. एस, आइ. पी. एस. आदि अखिल भारतीय सेवा परीक्षाओं में हिन्दीतर भाषा-भाषी बहुत पिछड़ जाते हैं और हिन्दी मातृभाषा होने के करण, इस भाषा के प्रयोग से, हिन्दी भाषी क्षेत्र से आनेवाले प्रत्याशी अपेक्षाकृत बहुत आगे रहते हैं।

केन्द्र सरकार के कर्मचारियों का यह धार्मिक दायित्व है कि वे जन-मानस से हिन्दी विरोधी भावना को दूर करें तथा अधिक से अधिक लोगों को हिन्दी के सम्पर्क में लायें। ऐसे अवसरों पर इसी उद्देश्य को समाज के सामने रखा जाता है और हिन्दी सप्ताह समारोह के द्वारा यह कोशिश की जाती है कि अधिक से अधिक लोग इस सन्देश को समझें और हिन्दी के सम्बन्ध में प्रचलित गलतफहमियाँ धीरे-धीरे दूर हो जायें।

केरल हिन्दी प्रचार सभा के मंत्री और हिन्दी सप्ताह समारोह समिति के प्रधान संयोजक *श्री. एम. के. वेलायुधन नायर* ने राजभाषा के रूप में हिन्दी की वर्तमान स्थिति पर विचार करते हुए कहा कि सरकार ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी को राजभाषा बनाने केलिए अधिनियम और नियम बनाये हैं। हिन्दी सलाहकर समितियां और उपसमितियां बनायी हैं.... फिर भी हिन्दी की स्थिति, विशेषकर ग' क्षेत्र में, संतोष जनक नहीं है। अकसर सभी विदेशी राष्ट्रों के राजकार्य उनकी अपनी भाषाओं में चलते हैं। लेकिन भारत में स्वतंत्रता के बाद, आज भी उपनिवेशवाद के अवशेष के रूप में शासन के क्षेत्र में अंग्रेजी जड़ जमाये हुए हैं, जो इस बात का प्रमाण है कि हम विदेशी भाषा की मानसिक गुलामी से स्वतंत्र नहीं हो पाये हैं। हमें इससे मुक्ति पानी है और इस केलिए हिन्दी तथा इतर भारतीय भाषाओं को बढ़ावा देना है। श्री. वेलायुधन नायर ने अपने भाषण में हिन्दी सप्ताह समारोह के विभिन्न कार्यक्रमों का परिचय भी दिया।

विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केन्द्र के निदेशक *डॉ० एस. सी. गुप्त* ने आशीर्वाद भाषण देते हुए कहा कि हिन्दी ही एक ऐसी भाषा है जिसके माध्यम से काश्मीर से कन्याकुमारी तक और कच्छ से अन्दमान द्वीप समूहों तक के लोगों से बात की जा सकती है। भाषा उपयोग से बढ़ती है। ज्यों ज्यों प्रयोग बढ़ेगा, भाषा की क्षमता भी बढ़ती जायगी। भारतीय भाषाओं की क्षमता पर विचार करते हुए उन्होंने कहा कि वैज्ञानिक और तकनीकी क्षेत्रों में भी भारतीय भाषाएं सुचारु रूप से प्रयुक्त हो सकती हैं।

आकाशवाणी तिरुवनन्तपुरम केन्द्र के निदेशक *श्री. एन. एस. कृष्णमूर्ति* ने कहा कि हिन्दी के माध्यम से मलयालम सिखाने की एक योजना आकाशवाणी तिरुवनन्तपुरम केन्द्र से शीघ्र ही कार्यान्वित की जाएगी, जोकि भारत में आकाशवाणी के सभी केन्द्रों से प्रसारित की जाएगी। यह त्रिभाषा प्रणाली को लागू करने में बहुत-कुछ सहायक सिद्ध होगी।

केरल फ़िलम विकास निगम के अध्यक्ष एवं मलयालम के प्रमुख पत्रकार *श्री. पी. गोविन्दपिल्लै* ने कहा कि सभी भाषाओं की अपनी जीनियस होती है। हाँ, हो सकता है कि कभी किसी एक भाषा की अभिव्यक्ति दूसरी भाषा में की नहीं जा सकती। इस स्थिति में दूसरी भाषा से अभिव्यक्ति या शब्द उधार लिये जाने चाहिए। राष्ट्र की पहचान राष्ट्र भाषा से होती है। अपनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाषाओं के अलावा अन्य भाषाओं के माध्यम से एक सांस्कृतिक नवोत्थान संभव हो ही नहीं सकता। अपनी भाषा और संस्कृति ही हम भारतीयों को स्वतंत्रता के उच्च और उदात्त तलों पर पहुँचा पाएंगी। उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि अगर हमें अपने पूर्वजों के प्रति ईमानदार रहना है और भविष्य के प्रति आशावान होना है तो हमें हिन्दी और इतर भारतीय भाषाओं को स्वीकार करना है, प्रोत्साहन देना है और बढ़ावा देना है।

विख्यात हिन्दी साहित्यकार एवं प्रकाशन विभाग के संयुक्त निदेशक श्री. एस. आर. घोड़ावाल ने कहा कि हिन्दी किसी जातिविशेष, धर्मविशेष या प्रदेश विशेष की भाषा नहीं है, वह सम्पूर्ण भारत की विरासत है। हिन्दी के विकास में गैर हिन्दी भाषियों की भूमिका पर विचार करते हुए उन्होंने कहा कि हिन्दी की पहली छपी पुस्तक बाइबिल है, जिसे अंग्रेज मिशनरियों ने निकाला। पहला कवि अमीर खुसरो माना जाता है, जो हिन्दी भाषी नहीं रहे। पहला समाचार पत्र 'उदंत मार्तण्ड' बंगाल से निकला। निराला और नागार्जुन हिन्दीतर भाषा-भाषी हैं।

भारत की आम जनता सचमुच अंग्रेज़ी की अपेक्षा हिन्दी को पसंद करती है। उन्होंने भारत की इतर भाषाओं से शब्द ग्रहण कर हिन्दी के शब्द भण्डार को बढ़ाने का सुझाव दिया। उन की दृष्टि में हिन्दी के विकास के लिए इतर भारतीय भाषाओं का विकास अनिवार्य है। हिन्दी को लादने से उसका विरोध बढ़ेगा। लेकिन सहज विकास करके जनता द्वारा अपनायी जाने पर अंग्रेज़ी किनारे हट जाएगी।

उद्घाटन समारोह का प्रायोजन हिन्दुस्तान लैटक्स, तिरुवनन्तपुरम ने किया। लैटक्स के कंपनी सचिव श्री. एस हरिहरन ने स्वागत भाषण दिया और कार्मिक अधिकारी श्री. तिरुवेंकिट स्वामी ने कृतज्ञता ज्ञापित की। शुरू में, पल्लिप्पुरम केन्द्रीय विद्यालय के छात्रों ने प्रार्थना गान आलाप किया और पल्लिप्पुरम केन्द्रीय रिसर्व पुलिस बल ने बैंड वादन प्रस्तुत किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* हिन्दी भारत की सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का माध्यम हो

15 सितंबर को केन्द्र सरकार के कर्मचारियों के लिए केरल हिन्दी प्रचार सभा में एक केन्द्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया था, जिसका प्रायोजन तिरुवनन्तपुरम स्थित भारतीय खाद्य निगम के क्षेत्रीय कार्यालय ने किया।

केरल विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डा० वी. के. सुकुमारन नायर ने कार्यशाला का उद्घाटन किया। उन्होंने कहा कि भारत एक ऐसा राष्ट्र है जो सांस्कृतिक धरातल पर संजोया गया है। भारत की अधिकांश भाषाएं 'संस्कृत' से संजोयी हुई है। मलयालम का संस्कृत के साथ जो निकट संबन्ध है उसी के कारण केरल में हिन्दी का बड़ा भव्य स्वागत हो रहा है। इसी कारण से यहाँ के लोग आसानी से हिन्दी समझ और सीख पाते हैं। आम तौर पर दक्षिण के सभी राज्यों की यही स्थिति है। इसी धरातल पर भारत में हिन्दी की हालत को समझना चाहिए।

स्वतंत्रता से पहले, देश की भावात्मक एकता को बनाये रखने में सिनेमा ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी थी। आज यह भूमिका 'दूरदर्शन' निभा सकता है। जो लोग हिन्दी का ज्ञान प्राप्त कर चुके हैं उन में हिन्दी पत्र-पत्रिकाएं और साहित्य पढ़ने की आदत पैदा करें और उस के लिए पर्याप्त सुविधाएं भी प्रदान करें।

भारतीय भाषाओं में रचित साहित्य का हिन्दी में अनुवाद होना चाहिए और हिन्दी तथा इतर भारतीय भाषाओं में एक आपसी सम्बन्ध स्थापित होना चाहिए। हिन्दी भारत की सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का माध्यम हो। वह भारत की राष्ट्रीयता को अभिव्यक्त करने वाली भाषा है। सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में ही हिन्दी पूर्णतया जनता द्वारा आत्मसात की जाएगी। कभी भी किसी पर भाषा को लादना नहीं चाहिए। मनचाही भाषा में पढ़ने की आजादी नागरिक को होनी चाहिए। इस तत्व पर आधारित होकर, विश्व भाषा होने के नाते अंग्रेजी को भी सम्मिलित करके, त्रिभाषा प्रणाली ही हमें अपनानी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए भारतीय खाद्य निगम के वरिष्ठ क्षेत्रीय प्रबन्धक श्री. पी. बालचन्द्रन ने कहा कि कर्मचारियों को हिन्दी में काम करते समय होने वाली हिचक और संकोच दूर करने के लिए ऐसी कार्यशालाएं सहायक सिद्ध होंगी।

श्री. एस. आर. घोड़ावाल ने कहा कि अंग्रेजी में उपलब्ध शब्दों से अधिक उचित और सुन्दर शब्द क्षेत्रीय भाषाओं में उपलब्ध हैं और ऐसे शब्दों को बेधड़क स्वीकार करना चाहिए। पद-रचना की समानता के कारण भारतीय भाषाओं में आपस में अनुवाद की प्रक्रिया आसान है।

सम्मेलन के उपरान्त प्रो० टी. के भास्कर वर्मा तथा डा० एन.ई. विश्वनाथ अय्यर ने क्रमशः व्याकरण और 'अनुवाद की समस्या' पर चर्चा की। लगभग 75 कर्मचारियों ने कार्यशाला में भाग लिया। दुपहर को पल्लिप्पुरम केन्द्र रिसर्व पुलीस बल के अपर उपमहा निरीक्षक श्री. महेन्द्र प्रसाद ने प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र वितरित किये। दूर संचार विभाग, केरल परिमंडल के राजभाषा अधिकारी श्री. सी. के. शशिकुमार ने स्वागत भाषण दिया और आयकर विभाग के सहायक निदेशक (राजभाषा) श्री. ए. सोमदत्तन ने कृतज्ञता ज्ञापित की।

* राजभाषाओं के रूप में भारतीय भाषाओं की प्रतिष्ठा हो

16 सितंबर को वी. जे. टी. हॉल में राजभाषा प्रदर्शनी का उद्घाटन हुआ। प्रदर्शनी चार दिन तक चली। तिरुवनन्तपुरम स्थित केन्द्र सरकार के प्रकाशन विभाग ने यह प्रदर्शनी प्रायोजित की थी। प्रकाशन केन्द्र ने प्रदर्शनी के साथ एक बिक्री केन्द्र भी खोला था। इस प्रदर्शनी में राजभाषा से सम्बन्धित अनेक पुस्तकें और अन्य अपूर्व और उपयोगी सामग्रियाँ प्रदर्शित की गयी थीं।

प्रदर्शनी का उद्घाटन 16 सितंबर को सुबह; तिरुवनन्तपुरम नगर निगम के महापौर श्री. पी. मानस वेल ने किया। उन्होंने कहा कि अंग्रेजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो सौ से अधिक वर्षों से भारतीय जीवन में जड़ जमा चुकी है और ऐसी भाषा को 30 या 40 वर्षों में पूर्णतया उखाड़ नहीं सकते। अंग्रेज़ी से हिन्दी और प्रादेशिक भाषाओं में राजभाषा का परिवर्तन धीरे धीरे और क्रमानुगत ढंग से होना चाहिए। यह कार्य तभी सफल होगा जब कि आम जनता और कर्मचारियों के सहयोग से संपन्न होगा। इस में मतभेद होने की गुंजाईश नहीं है कि भारत की राजभाषा हिन्दी होनी चाहिए और केरल की राजभाषा मलयालम।

सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केन्द्र के नियंत्रक श्री. के. वी. पिल्लै ने कहा कि अकसर सारे विदेशी राष्ट्र अपनी अपनी राष्ट्रभाषाओं में ही विज्ञान और तकनीकी विषयों का काम चलाते हैं और हिन्दी में भी अब पर्याप्त विज्ञान और तकनीकी शब्दावली उपलब्ध हैं, और हिन्दी इन विषयों में काम चलाऊ क्षमता अर्जित कर चुकी है।

प्रकाशन विभाग के श्री एस. आर. घोड़ावाल ने कहा कि केरल के 4000 से अधिक पुस्तकालय, केरल के लोगों की, पुस्तकों के प्रति रुचि, ममता और पुस्तक पढ़ने की उनकी आदत के महान उदाहरण हैं। उन्होंने कहा कि भारत सरकार का प्रकाशन विभाग राजभाषा के रूप में हिन्दी और क्षेत्रीय भाषाओं के विकास को गतिशील करने के प्रयासों में लगा हुआ है।

केन्द्र सरकार के तिरुवनन्तपुरम स्थित पत्र-सूचना कार्यालय के उप-प्रधान पत्र-सूचना अधिकारी श्री. एन. केशवन नायर ने स्वागत भाषण दिया और प्रकाशन विभाग के कारोबार प्रबन्धक श्री. श्यामनाथ ने कृतज्ञता ज्ञापित की।

* अनुवाद से भारतीय भाषाओं को समृद्ध करना चाहिए

16 सितंबर के अपराह्न; अशोका होटल, कोवलम में 'अनुवाद की वर्तमान समस्याओं' पर एक विचार गोष्ठी आयोजित की गयी, जिसको भारतीय पर्यटन विकास निगम, कोवलम ने आयोजित किया था।

राज्य सरकार के सहकारिता एवं परिवहन विभाग के सचिव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

श्री. के. उप्पिलियप्पन आई. ए. एस. ने संगोष्ठी का उद्घाटन किया। आप ने कहा कि विश्वभाषाओं से अधिकाधिक अनुवाद करके एवं शब्दों को ग्रहण कर भारतीय भाषाओं को समृद्ध बनाना चाहिए। नागरिकों को सम्पर्क भाषा के प्रयोग में किसी प्रकार की कठिनाई का अनुभव न हो तथा उनपर कोई भाषा जबरदस्ती लादी नहीं जाये। जनता द्वारा उसे स्वयं स्वीकार किया जाना चाहिए। भाषा का लक्ष्य संप्रेषण है और इसलिए अनुवाद की भाषा भी सरल होनी चाहिए। आज अच्छे अनुवादकों की कमी है। इस कमी की पूर्ति के लिए, अनुवादकों के प्रशिक्षण पर विचार किया जाये।

केरल परिमंडल के मुख्य पोस्ट मास्टर जनरल *श्री. सी. जे. मात्यु* अध्यक्ष रहे। आप ने कहा कि जीवन के किसी भी क्षेत्र में हम अनुवाद से मुक्त नहीं हो पाते। अनुवाद जनभाषा में होना चाहिए। अनुवाद करते समय मूल भाषा की भावना को समझना चाहिए और किसी भी हालत में उसे ठेस पहुँचाये बिना ही अनुवाद-कार्य सम्पन्न करना चाहिए। स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा के ज्ञान के अलावा अनुवादक को विषय का भी ज्ञान होना चाहिए, अन्यथा अर्थ का अनर्थ हो जाएगा।

कोचिन विश्व विद्यालय के हिन्दी विभाग के पूर्व अध्यक्ष *डॉ० एन. ई. विश्वनाथ अय्यर* ने विषय प्रस्तुत करते हुए यह चेतावनी दी कि विज्ञान की प्रगति से दुनियां तीव्र गति से आगे बढ़ रही है और यदि अनुवाद के मामले में भी यह गतिशीलता हासिल न कर पायेंगे तो यह जरूर है कि हम पिछड़ जाएँगे। हिन्दी को भारत की राजभाषा बनाने के महान कार्य में अनुवादक बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

केरल सरकार के सर्वविज्ञान कोश प्रकाशन विभाग के निदेशक *डॉ० सी जी. रामचन्द्रन नायर* ने 'विदेशी भाषाओं के वैज्ञानिक एवं तकनीकी साहित्य का भारतीय भाषाओं में अनुवाद' विषय पर आलेख प्रस्तुत करते हुए कहा कि चूँकि पश्चिमी राष्ट्रों ने विज्ञान के क्षेत्र में बड़ी प्रगति कर ली है, अतः पश्चिमी भाषाओं से भारतीय भाषाओं में अनुवाद का कार्य अनिवार्य हो गया है। पश्चिमी भाषाओं में आपस का अनुवाद अपेक्षाकृत सरल है लेकिन पारिभाषिक शब्दावली

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के अभाव में यह कार्य भारतीय भाषाओं में काफी दुष्कर है।

केरल सरकार के जन सम्पर्क विभाग के पूर्व अपर निदेशक *श्री के. वी कृष्णन कुट्टी* ने 'संचार माध्यमों में अनुवाद' विषय पर आलेख प्रस्तुत करते हुए कहा कि स्वतंत्रता-प्राप्ति के 42 वर्ष बाद भी समाचार एजेन्सियाँ अंग्रेजी में ही समाचार देती आ रहा है। इसी कारण से समाचारों का अनुवाद एक अनिवार्य प्रक्रिया बन गयी है। उन्होंने कहा कि समाचार माध्यमों का अनुवाद सार्थक, प्रायोगिक जन-भाषा में होना चाहिए।

विक्रम साराभाई अतरिक्ष केन्द्र के वैज्ञानिक *डा० केदारनाथ शुक्ल* ने 'वैज्ञानिक एवं तकनीकी साहित्य का अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद' विषय पर बोलते हुए कहा कि भारतीयों में अंग्रेजी शब्दों के प्रति वह रागात्मक संबंध संभव नहीं हो सकता जो भारतीय भाषाओं के शब्दों के साथ होता है। अत अनुवाद के क्षेत्र में भारतीय भाषाओं से ही शब्द ग्रहण करना वांछनीय होगा।

राजभाषा विभाग के क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, कोचिन के सहायक निदेशक *डा० जोस आस्टिन* ने 'प्रशासनिक भाषा का अनुवाद' विषय पर बोलते हुए कहा कि जब कार्यालयों में हिन्दी में अनुवाद किया जाता है तो भाषा और व्याकरण के मामलों में उदार नीति अपनायी जानी चाहिए।

दिल्ली से प्रकाशित 'राजभाषा भारती' के उप-सम्पादक *श्री मलहोत्रा* ने कहा कि अनुवाद भी विज्ञान या तकनीकी विषयों से कम महत्वपूर्ण नहीं है। अनुवादक को शब्द भण्डार का अच्छा ज्ञान होना चाहिए। हिन्दी में अकसर सभी विषयों पर पारिभाषिक शब्दावली उपलब्ध है।

भारतीय पर्यटन विकास निगम, कोवलम के महा-प्रबन्धक *श्री. पी ओ. तोमस* ने प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए कहा कि पर्यटन विभाग का कार्यालय ऐसा स्थल है जहाँ विभिन्न भाषा-भाषी पर्यटक आते हैं और अनुवाद के माध्यम से उन से निपटना पड़ता है। अतः पर्यटन विकास निगम द्वारा अनुवाद की समस्याओं पर एक संगोष्ठी का प्रायोजन किया जाना अत्यधिक समीचीन है। कार्मिक प्रबन्धक *श्री. टी. के. सोम सजीवन* ने आभार प्रकट किया। विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केन्द्र ने दो बसें देकर प्रतिभागियों के आने-जाने का प्रबन्ध किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* राष्ट्रभाषा सम्बन्धी राष्ट्र-स्तरीय नीति का निर्धारण अनिवार्य

17 सितंबर को केरल हिन्दी प्रचार सभा भवन में केन्द्र सरकार के कर्मचारियों के लिए हिन्दी में सरकारी कामकाज करने की प्रविधियों पर विभिन्न प्रतियोगिताएँ चलायी गयीं। विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केन्द्र ने इन प्रतियोगिताओं का प्रायोजन किया था।

प्रतियोगिताओं का उद्घाटन करते हुए केरल विश्वविद्यालय के उपकुलपति *डा० ए. सुकुमारन नायर* ने कहा कि यद्यपि राष्ट्रीय पुनरुत्थान से सम्बद्ध होकर हिन्दी प्रचार का कार्यक्रम चलता आ रहा है तथापि राष्ट्रभाषा की हैसियत से संपूर्ण देश में हिन्दी का प्रचार करने लायक सुचिंतित, सुस्पष्ट और सुसंयोजित राष्ट्र-स्तरीय योजना की अभी अपेक्षा है। उन्होंने कहा कि एक राष्ट्रभाषा सम्बन्धी नीति का निर्धारण भी अनिवार्य रूप से होना चाहिए। सम्पूर्ण भारतीयों को हिन्दी में काम चलाऊ—जानकारी दिलाना जरूरी है।

यदि किसी केन्द्र में हिन्दी के प्रति विरोध की भावना है तो उनके कारणों का निदान होना चाहिए। हिन्दीतर भाषी प्रदेशों की संस्कृति और साहित्य को हिन्दी के माध्यम से समझाने के लिए हिन्दीतर भाषाओं की कृतियों का हिन्दी में अनुवाद होना चाहिए। शैक्षिक संस्थाओं में हिन्दी पढ़ाने में सहायक सिद्ध होने वाली दृश्य-श्रव्य सामग्रियाँ तैयार की जानी चाहिए। हिन्दीतर प्रान्तों के लिए योग्य पाठ्य पुस्तकें भी तैयार करनी चाहिए। 'भाषा प्रयोगशाला आदि नये तकनीकों का प्रयोग हिन्दी अध्यापन में किया जाना चाहिए। समाज शास्त्र, इतिहास या ऐसा कोई अन्य विषय हिन्दी के माध्यम से पढ़ाने का प्रबन्ध भी किया जाना चाहिए।

वलियमला, द्रव न्योदन प्रणाली केन्द्र के प्रधान, (कार्मिक एवं सामान्य प्रशासन) तथा वहाँ की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष *श्री के के. नायर* ने कहा कि अंग्रेजी के बदले हिन्दी में तथा अन्य भारतीय भाषाओं में सरकारी कामकाज करने वाले कर्मचारियों को सभी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकार की प्ररणा और प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए।

विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केन्द्र की हिन्दी अधिकारी *श्रीमती वी.एस. कोमल कुमारी अम्मा* ने स्वागत भाषण दिया और आकाशवाणी तिरुवनन्तपुरम केन्द्र के हिन्दो अनुवादक *श्री. श्रो. वासवन* ने कृतज्ञता ज्ञापित की।

उसी दिन शामको, *टैगोर जन्म शताब्दी भवन में*, कर्मचारियों की हिन्दी नाटक प्रतियोगिता हुई। इसका प्रायोजन द्रव न्योदन प्रणाली केन्द्र, वलियमला ने किया।

* कला कृतियां सामाजिक परिवर्तन के सशक्त साधन हों

18 सितंबर की शाम, वी. जे. टी. हॉल में सांस्कृतिक सन्ध्या का आयोजन किया गया, जिसका प्रायोजन स्टैट बैंक आफ त्रावणकोर ने किया।

सांस्कृतिक सन्ध्या का उद्घाटन किया, हिन्दुस्तान लैटक्स, तिरुवनन्तपुरम के प्रबन्ध निदेशक *डॉ० पी. वी एस. नम्पूतिरिपाट* ने। सांस्कृतिक सन्ध्या का उद्घाटन कार्य सम्पन्न करते हुए डॉ० नम्पूतिरिपाट ने कहा कि कलाकृतियां, खासकर नाटक जैसी कला कृतियाँ, सामाजिक परिवर्तन के सशक्त साधन बनें। नाटकों के माध्यम से वर्तमान समाज की समस्याओं को प्रस्तुत किया जाना चाहिए। यह अच्छा होगा यदि नाटककार समस्याओं के समाधान भी प्रस्तुत करें। उन्होंने यह शिकायत की कि सन् पचास के करीब के नाटकों की अपेक्षा आजकल के नाटकों में यह प्रवृत्ति कम पायी जाती है।

केरल विश्व विद्यालय के पूर्व उपकुलपति डॉ० एन. ए. करीम अध्यक्ष रहे। अध्यक्षता करते हुए उन्होंने कहा कि सभी समूहों में संस्कृति का आधारभूत तत्व भाषा और धर्म ही हैं और इसे हमारी बड़ी उपलब्धि माननी चाहिए कि भारत में दो सौ से अधिक भाषाएँ बोली जाती हैं। पूरे भारत में अभिव्यक्ति के लिए पूर्ण रूप से स्वीकृत एक भाषा का विकास अभी तक हम नहीं कर पाये हैं। स्वतंत्रता आन्दोलन के समय, हिन्दी प्रचारक स्वेच्छा से गांव-गांव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाकर हिन्दी सिखाते और राष्ट्रीय भावना का प्रचार करते थे।

हम, भारत में सबसे स्वीकृत भाषा के रूप में, हिन्दी का विकास करने की कोशिश करें। हिन्दी सप्ताह समारोह जैसे कार्यक्रम इस के लिए सहायक सिद्ध होंगे।

युनाइटड इन्श्योरेन्स कंपनी, तिरुवनन्तपुरम के सहायक प्रशासन अधिकारी *डा० वी. राजीव लोचनन* ने स्वागत भाषण दिया तथा स्टेट बैंक ऑफ त्रावणकोर के *श्री. के. चन्द्रन* ने धन्यवाद दिया।

सम्मेलन के उपरान्त विभिन्न सरकारी कार्यालयों के कर्मचारी तथा केन्द्रीय विद्यालय पट्टम तथा पल्लिप्पुरम के छात्र-छात्राओं तथा पल्लिप्पुरम केन्द्र रिसर्व पुलीस बल आदि द्वारा प्रस्तुत रंगारंग कार्यक्रम हुए, जिनमें नाटक, नृत्य, गान आदि शामिल थे।

* देश की अखण्डता को बनाये रखने के लिए एक सम्पर्क भाषा अनिवार्य है

19 सितंबर को केरल हिन्दी प्रचार सभा भवन में आयोजित सम्मेलन में कर्मचारियों के बच्चों के लिए हिन्दी प्रतियोगिताओं का उद्घाटन किया गया। तिरुवनन्तपुरम स्थित जनरल इन्श्योरन्स कम्पनियाँ इसके प्रायोजक रहीं।

सम्मेलन में प्रतियोगिताओं का उद्घाटन करते हुए *श्री. लक्ष्मीधर नायक*, महालेखाकार (केरल) ने कहा कि देश की अखण्डता को बनाये रखने केलिए एक सम्पर्क भाषा अनिवार्य है। उन्होंने यह याद दिलायी कि भारत एक ऐसा विशाल राष्ट्र है, जहां कई भाषाएँ बोली जाती हैं। अतः अपने क्षेत्र के बाहर के लोगों के सम्पर्क में आने केलिए हिन्दी न जानने वाले लोग कठिनाई महसूस करते हैं। यह कठिनाई राष्ट्रभाषा ही दूर कर सकेगी।

कोचिन विश्व विद्यालय के हिन्दी विभाग के पूर्व अध्यक्ष *डा० एन. ई. विश्वनाथ अय्यर* ने सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए कहा कि बच्चे बड़ों की अपेक्षा जल्दी हिन्दी सीख सकते हैं। भविष्य-भारत के इन निर्माताओं को अधिक से अधिक भारतीय भाषाएँ सीखने की सुविधाएँ प्रदान करनी चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीमती इन्दिरा. जी नायर, हिन्दी अधिकारी, दूर संचार-जिला, तिरुवनन्तपुरम ने स्वागत भाषण दिया और केरल हिन्दी प्रचार सभा के हिन्दी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राध्यापक डा० एस. राजप्पन नायर ने धन्यवाद दिया।

कर्मचारियों के जिन बच्चों ने प्रतियोगिताओं में विजय प्राप्त की उन्हें समापन सम्मेलन में पुरस्कार वितरित किये गये।

* भारतीय भाषाओं के प्रति अधिकाधिक रुचि पैदा करें

हिन्दी सप्ताह समरोह के सिलसिले में केरल हिन्दी प्रचार सभा के हिन्दी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में आयोजित सम्मेलन में अध्यक्षता करते हुए, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा की आचार्य डा०मनोरमा गुप्त ने कहा कि भारतीय भाषाओं के द्वारा ही पीढ़ी-दर-पीढ़ी भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों का हस्तांतरण किया जाता रहा है। अतः यह जरूरी है कि हम, लोगों में भारतीय भाषाओं के प्रति अधिक रुचि पैदा करें। विभिन्न भारतीय भाषाएँ विभिन्न वर्ण के पुष्पों के समान हैं और हिन्दी इनको पिरोने वाला धागा है।

साहित्याध्यापन भाषाध्यापन का एक साधन मात्र है। भाषा का अध्ययन तभी पूर्ण होगा, जब हम उसे बोलना भी सीख लेंगे। राष्ट्रभाषा हिन्दी का अध्ययन तभी फलदायक सिद्ध होगा जब हम हिन्दी बोलना भी सीख लेंगे।

क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय मैसूर के प्रो० केशवमूर्ति ने बताया कि शिक्षा की गुणवत्ता में वृद्धि करने से ही दहेज, घूस खोरी, भ्रष्टाचार, अत्याचार आदि सामाजिक कुरीतियों का उन्मूलन संभव होगा। डॉ०मावेलिक्करा अच्युतन अध्यक्ष रहे। श्री. कुन्नुकु.षी कृष्णन कुट्टी ने स्वागत भाषण दिया और डा० एस. राजप्पन नायर ने धन्यवाद दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* हिन्दी का प्रचार-प्रसार हर भारतीय का कर्तव्य है

19 सितबंर को सायंकाल वी. जे. टी. हॉल में 'भारतीय भाषा कवि सम्मेलन' का आयोजन किया गया, जिसमें कई भारतीय भाषाओं की कविताएँ पढ़ी गयी थीं। कवि सम्मेलन का उद्घाटन, विख्यात हिन्दी गीतकार एवं संगीतज्ञ, महाराजा स्वाति तिरुनाल की वंशजा एवं तिरुवितांकूर राज-परिवार की सदस्या, राजकुमारी *श्रीमती गौरी लक्ष्मीबाई तम्पुराट्टी* ने किया।

आप ने कहा कि स्वतंत्र भारत की राष्ट्रभाषा के रूप में हमारे नेताओं द्वारा बड़ी लंबी चर्चा के बाद सोच-समझकर चुनी हुई हिन्दी का प्रचार और विकास करना हर भारतीय नागरिक का कतव्य है। कवि सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए राजकुमारी ने कविता-सम्बन्धी अपने विचार भी प्रकट किये—भावों की तीव्रता ही कविता है। कविता आत्मा का संगीत है; विश्वात्मा में विलीन होना है; दूसरों के सामने हृदय के रहस्यों को खोलना ही कविता है। कविता की भाषा हृदय की भाषा है।

उन्होंने लंदन की पत्रिकाओं में प्रकाशित अपनी दो अंग्रेजी कविताओं का पाठ किया। 'श्रेष्ठ' नामक अपनी पहली कविता में श्री पद्मनाभस्वामी के चरण कमलों में अपने आपको समर्पित किया गया था जिसमें कहा गया है "हे प्रभु, सांकलों से नहीं, शाश्वत सत्य के प्रेम से मुझे बान्ध दो। मैं कोई अधिकार नहीं मांगती, किसी उपलब्धि का दावा नहीं करती। बस, केवल आप के प्रेम की भीख मांगती हूँ।"

दूसरी कविता 'आंसू' में एक ऐसे हृदय की सिसकियाँ गूँज रही थीं जो कभी रोना ही भूल गया था। "सिसकियां भरने की आज़ादी पर रोक मत लगाओ। बसन्त की वर्षा की तरह आंसू बहाने दो। सुख और दुख में रुदन कर सकूँ" आदि पंक्तियां श्रोताओं को अनुभूतियों के नव्य तलों पर ले जानेवाली थीं।

अध्यक्षता करते हुए केरल विश्व-विद्यालय के मलयालम विभाग के पूर्व अध्यक्ष डा० पुतुश्शेरी रामचन्द्रन ने कहा कि भक्तिकालीन काव्य की भांति, जन मानस को जोर से झकझोरने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

2

3

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

4

6

7

8

9

10

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

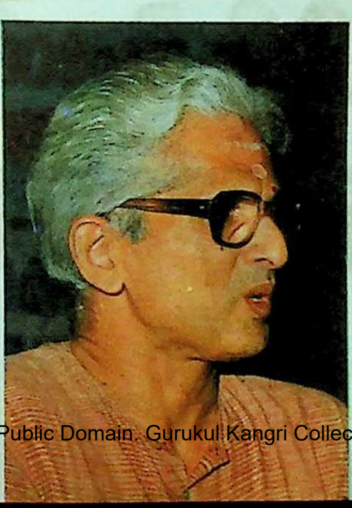

Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की शक्ति रखनेवाली कविताएं बाद में भारतीय भाषाओं में नहीं हुई हैं। आज भौतिकता और आध्यात्मिकता के बीच जो संघर्ष चल रहा है, वह शायद एक नई काव्य पद्धति को जन्म दे सकेगा। डा० रामचन्द्रन ने भी अपनी दो कविताओं का वाचन किया। डा० एन. ई विश्वनाथ अय्यर कवि सम्मेलन के संयोजक रहे।

डा० मावेलिक्करा अच्युतन तथा प्रो० आर. वासुदेवन पोट्टी ने संस्कृत में अनूदित कविताएं प्रस्तुत कीं। डा० देशमंगलम रामकृष्णन, श्रीमती बी. सुगत कुमारी, प्रो० विष्णुनारायणननंपूतिरी और श्री.डी विनय चन्द्रन ने मलयालम में तथा डा०के.सुब्रह्मण्य पिल्लै, श्री एस नेल्लै मुत्तु और डा० नासिमुद्दीन ने तमिल में कविताएं प्रस्तुत कीं। श्रीमती सुप्रिया चेरियान और श्री एस. एन. लाहिरी ने बंगला में तथा श्री. अशोक कुमार बेलूरे ने मराठी में कविता वाचन किया। डा० एस. केशव मूर्ति ने कन्नड भाषा में, डा० भक्तवत्सल रेड्डी ने तेलुगु में तथा श्री सुभाष चन्द्र गैन्धर ने पंजाबी भाषा में कविताएं प्रस्तुत कीं। प्रो० टी. के भास्कर वर्मा, श्री एन. सी. दास, श्री वी. के. एस नम्पूतिरी, डा० रती सक्सेना, श्री. एम के. वर्मा, डा० एम. एस. गोमती अम्माल और श्रीमती कौसल्या ने हिन्दी में कविताएं प्रस्तुत कीं।

* मातृभाषा एवं राष्ट्रभाषा को समान महत्व दिया जाना चाहिए

20 सितंबर को-हफ्ते भर के समारोह का समापन हुआ। वी जे. टी हॉल में आयोजित समापन सम्मेलन का मंच केरल के वित्तमंत्री, शिक्षा मंत्री, स्थानीय प्रशासन कार्य मंत्री, देशिकोत्तम डा० जी. रामचन्द्रन आदि विशिष्ट व्यक्तियों की उपस्थिति से सुशोभित हुआ।

समापन सम्मेलन का उद्घाटन केरल के वित्त मंत्री श्री. वी. विश्वनाथ मेनोन ने किया। उन्होंने कहा कि ऐसी एक नीति ही वांछनीय होगी जिसमें मातृभाषा एवं राष्ट्रभाषा को समान महत्व दिया जायेगा। उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में प्रमुख भूमिका निभानेवाली हिन्दी के प्रसार में उत्तरोत्तर प्रगति की कामना की। उन्होंने कहा कि केरल के लोग राष्ट्रभाषा हिन्दी पर गौरव का अनुभव करते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशिकोत्तम डा० जी. रामचन्द्रन ने अध्यक्षता करते हुए कहा कि जो मातृभाषा से प्रेम नहीं करते वे किसी भी भाषा से प्रेम नहीं कर सकते। भाषा और संस्कृति एक ही सिक्के के दो पहलु है और सभी भारतीय भाषाएँ भारत की महान संस्कृति की संतानें हैं। भाषाओं के नाम पर झगड़ा निरर्थक है।

प्रतियोगिताओं में विजयी कर्मचारियों को पुरस्कार प्रदान करते हुए केरल के शिक्षा मंत्री श्री. के. चन्द्रशेखरन ने कहा कि उत्तर भारत में ही नहीं, बल्कि दक्षिण के आन्ध्र, कर्णाटक आदि राज्यों में भी हिन्दी काफी बहुत प्रचलित हो चुकी है। केरल हिन्दी प्रचार सभा जैसी स्वैच्छिक संस्थाओं के द्वारा हमें केरल में हिन्दी का अधिक प्रचार-प्रसार करने की कोशिश करनी चाहिए।

कर्मचारियों के बच्चों के लिए आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरण करते हुए केरल के स्थानीय प्रशासन कार्य मंत्री श्री. वी. जे. तंकप्पन ने कहा कि भारत के अधिकांश लोगों द्वारा समझी जानेवाली हिन्दी ही भारत की राष्ट्रभाषा बन सकती है तथा राष्ट्रभाषा के प्रचार के द्वारा ही भारत की भावात्मक एकता को सुदृढ़ बनाया जा सकता है।

हिन्दी सप्ताह समारोह के सिलसिले में आयोजित प्रतियोगिताओं में सबसे अधिक अंक पानेवाली संस्थाओं को केरल हिन्दी प्रचार सभा की ओर से प्रदत्त वैजयन्तियाँ केरल सरकार के शिक्षा मंत्री श्री के. चन्द्रशेखरन ने प्रदान कीं।

सर्वप्रथम आनेवाली संस्था स्टेट बैंक आफ ट्रावणकोर केलिए क्षेत्रीय प्रबन्धक श्री एस. वी सुब्रह्मण्यन, सर्व द्वितीय आनेवाली संस्था महालेखाकार कार्यालय के लिए कल्याण अधिकारी श्री एन. रामचन्द्रन नायर तथा सर्व तृतीय आनेवाली संस्था केलिए पल्लिप्पुरम केन्द्रीय रिजर्व पुलीस बल के अपर पुलीस उप महानिदेशक श्री महेन्द्र प्रसाद ने वैजयन्तियाँ ग्रहण कीं।

कर्मचारियों की नाटक प्रतियोगिता के विजेताओं के पुरस्कार केरल परिमण्डल के मुख्य पोस्ट मास्टर जनरल श्री. सी. जे. मात्यु ने प्रदान किये।

दक्षिण रेल्वे, तिरुवनन्तपुरम के मंडल प्रबन्धक श्री. वी. रामस्वामी और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केन्द्रीय हिन्दी संस्थान आगरा के प्रो० डा० मनोरमा गुप्त ने आशीर्वाद भाषण दिये।

केरल हिन्दी प्रचार सभा के मंत्री एवं हिन्दी सप्ताह समारोह समिति के मुख्य संयोजक श्री. एम.के. वेलायुधन नायर ने स्वागत भाषण किया और केरलज्योति के संपादक श्री. के. जी. बालकृष्ण पिल्लै ने आभार प्रकट किया।

इस हिन्दी सप्ताह समारोह को सुचारु रूप से आयोजित करने में तन-मन-धन से लगे संयोजकों, प्रायोजकों, कार्यकर्ताओं और प्रतिभागियों के दिल में अभी तक जो झंडा ऊँचा फहरा रहा था—जोश, उमंग और उत्साह का—अब उतारा गया; खोलकर, तहकर अगले साल के लिए दिल के कोने में ही सुरक्षित रखा गया—इस विश्वास के साथ कि अगले साल और ऊँचा फहराया जाएगा। तन-मन के त्याग और आत्म समर्पण की भावना की जो मशाल अभी जल रही थी, शम गयी; भस्मावगुंढ़ित अंगारे की भांति अगले सितंबर में प्रज्वलित करने के लिए दिल के कोने में ही सुरक्षित रखी गयी—इस आशा के साथ कि अगले साल और भड़क के साथ जल उठेगी॥

यदि, हिन्दी के हित में एक हल्का सा झोंका ही सही, आपके जीवन में हम पैदा कर सके, एक छोटी सी लहर ही सही आपके दिल में जगा सके, तो हम चरितार्थ हुए।

जय हिन्द। जय हिन्दी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(पृष्ठ 16 का शेष भाग)

वार्ता की भाषा तो जन भाषा के अतिरिक्त और कुछ हो ही नहीं सकती ।

उनकी भाषा में लिख रहा हूँ ।) 17 वीं सदी में केरल के जन कवि कुंचन नंपियार ने लिखा—"भट जनंगले नटुविलुल्लोरू पटयणिक्किह पाटुवान चटियिन्नोरू चारू केरल भाषतन्ने चितं वरू" । अर्थात् सिपाहियों या साधारण अनपढ लोगों के पटयणि नामक कलारूप में गाने केलिए उचित भाषा तो केरल की जन भाषा है ।)

चूंकि संचार माध्यम का लक्ष्य भी वार्ता को जन मानस तक पहुँचा देना है, वार्ता की भाषा तो जन भाषा के अतिरिक्त और कुछ हो ही नहीं सकती । लेकिन दुखद बात यह है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के 42 वर्ष बाद भी हमारी वार्ता का मूल स्रोत अंग्रेज़ी है । इसलिए मूल अंग्रेज़ी से जन भाषा में परिवर्तित करने केलिए अनुवाद कार्य अनिवार्य बन जाता है ।

अनुवाद के बारे में चर्चा करने के पहले यह सोचना उचित होगा कि माध्यमों का कर्तव्य और दायित्व क्या-क्या हैं । संचार माध्यम मानव मन से सीधा संपर्क रखते हैं । अतः मानव मन को दोषमुक्त करने या प्रदूषित करने में ये माध्यम सहायक रहते हैं । यदि इन माध्यमों के सहयोग से मानव मन शुद्ध हो जाए और मानव वंश के विकास केलिए सहायता पहुँचाने के सक्षम बन जाय तो उससे बडा कार्य, महान कार्य क्या हो सकता है ? भारत जैसे राष्ट्र में यही आवश्यक है । इस अवसर पर कुछ वर्ष पहले, सूचना-प्रसारण मंत्री की हैसियत से श्री. वसन्त साठे

मानव मन को दोषमुक्त करने या प्रदूषित करने में ये माध्यम सहायक रहते हैं ।

ने जो कहा था, उसकी याद जागृत हो जाती है । श्री. साठे ने कहा:

May be elsewhere (ie, in developed countries) electronic media are fashionable instruments of entertainment, but for us (ie, in developing countries) they are essential tools for communications.

(अर्थात् अन्यत्र या विकसित राज्यों में, इलक्ट्रोणिक माध्यम मनोरंजन के सभ्य साधन हैं तो हमारेलिए या विकासशील राज्यो में, वे संचार के अनुपेक्षणीय उपकरण हैं ।) श्री. साठे के कथन से यह व्यक्त हो जाता है कि भारत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जैसे विकासशील राज्यों में संचार माध्यमों की सहायता से बहुत कुछ कर सकते हैं। वे मात्र मनोरंजन के उपकरण नहीं है। राष्ट्र तथा जनता को विकास की ओर ले जाने में इन संचार माध्यमों को महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है। प्रत्येक माध्यम को एक संस्था मान लें तो वह संस्था अनेक व्यक्तियों की बनती है जैसे बगैर व्यक्तियों के समाज नहीं बनता है। इस आधार पर यह कहना समीचीन होगा कि प्रत्येक माध्यम की संस्था में कार्यरत प्रत्येक व्यक्ति को अपने माध्यम के दायित्व का पूर्ण ज्ञान होना आवश्यक है। इस दायित्व की ओर इशारा करते हुए श्री. एच. वाई. शारदा प्रसाद ने कहा है: "संचार माध्यम के कार्यकर्ता को तटस्थ रहना दुष्कर हो सकता है। लेकिन वह अपने आप को भला बना सकता है। एक संस्था का एक एक व्यक्ति जब भला बन जाता है तो वह संस्था स्वयं भली बन जाती है।" इस महान कार्य को लक्ष्य कर प्रत्येक व्यक्ति अपना-अपना कर्म करता रहे तो देश और देशवासियों की भलाई और उन्नति अवश्य होगी। देश और देशवासियों की उन्नति तो उनकी भाषा की उन्नति पर भी निभर रहती है। युगपुरुष, महान साहित्य सेवी और देशप्रेमी कवि भारतेन्दु हरिचन्द्र ने ठीक ही कहा था—'निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल !"

संचार माध्यमों में पत्र-पत्रिकाएँ, रेडियो दूरदर्शन आदि सम्मिलित हैं। इन सब माध्यमों को वार्ता पहुँचानेवाली प्रमुख एजन्सियाँ जैसे प्रेस ट्रस्ट आफ इण्डिया (PTI) और युनाइटेड न्यूस आफ इण्डिया (UNI), सभी कार्य अंग्रेज़ी में कर रही हैं। यहाँ एक बात उल्लेखनीय हैं कि 1982 में UNI ने अपनी हिन्दी सेवा "यूनीवार्ता" नाम से और 1986 में PTI ने अपनी हिन्दी सेवा "भाषा" नाम से शुरू की। लेकिन अंग्रेज़ी सेवा को जो सार्वत्रिक स्वागत प्राप्त है वह हिन्दी सेवा को प्राप्त नहीं हो रहा है। इसलिए भारतीय भाषा के पत्रों को अनुवाद प्रणाली को अपनाना आवश्यक पडता है। क्योंकि संचार माध्यमों की शक्ति तभी आँकी जा सकती है जब उनके और जन सामान्य के बीच की दूरी कम हो जाती है। भाव संप्रेषण की भाषा जितनी सरल हो उतनी सरलता से जनमानस को अपने निकट लाया जा सकता है। इसके लिए अनुवाद की प्रक्रिया को सक्षम, सबल और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सफल बनाना आवश्यक है। अनुवाद प्रक्रिया के दक्ष श्री. पाण्डुरंग राव ने अनुवाद के निम्नलिखित गुण निर्धारित किये हैं :-

1. सार्थक हो
2. स्वतंत्र और मौलिक रहे
3. देशी अभिव्यक्ति प्रदान करे
4. मूल पाठ से भिन्न न रहे
5. पढनेवाले को ऐसा न लगे कि अनूदित है
6. बोध गम्य हों और
7. आकर्षक, निसर्ग प्रवाह रहे

संचार माध्यमों में विषय विस्तृत और गहरा है। विभिन्न क्षेत्रों से

विभिन्न क्षेत्रों से संबन्धित विषयों को यांत्रिक वेगता से अनूदित करना आवश्यक है।

संबन्धित विषयों को यांत्रिक वेगता से अनूदित करना आवश्यक है। पत्रों के पाठकों, रेडियो के श्रोताओं तथा दूरदर्शन के दर्शकों तक आकर्षक रूप में कम से कम शब्दों में वार्ताएँ पहुँचा देना अवश्य ही श्रमकर कार्य है। अनुवाद के साथ साथ वार्ता का संपादन करना भी अवश्यक है। मूल को सही तरह व्यक्त करने केलिए कभी कभी एक वाक्य को अनेक वाक्यों में लिखा जाता है और कभी कभी अनेक वाक्यों को एक वाक्य में व्यक्त किया जाता है। इसको शब्दानुशब्द या वाक्यानुवाक्य अनुवाद कहा नहीं जा सकता है। इसको भाषन्तर कहना ही उचित होगा।

संपादक हो, अनुवादक हो या वार्ता वाचक हो सब का काम समान है। अनेक पृष्ठों तक व्याप्त समाचारों से, जैसे, "हँस नीर छाँडि क्षीर गहे" वैसे मुख्य वार्ता को चुन कर कम से कम शब्दों में पाठक या श्रोता तक पहुँचा सके तो वही संपादक या अनुवादक या वाचक योग्य और सफल समझा जाएगा। साठ-सत्तर मिनटों तक लम्बे बजट भाषण को 5—10 मिनट में सीमित रखकर माध्यमों द्वारा जनता तक पहुँचाना इसका अच्छा उदाहरण है। इस तरह के भारी कार्य करने केलिए उपलब्ध होनेवाला समय परिसीमित होगा। इस सीमित समय में, संपादक या अनुवादक या वाचक की असावधानी से उत्पन्न अस्पष्टताएँ क्षन्तव्य नहीं होंगी। समाचार पत्रों में इस प्रकार की गलतियाँ या अस्पष्टताएँ एक हद तक क्षम्य होती हैं। क्यों कि समाचार पत्रों में प्रकाशित वार्ता एक बार पढने से समझ में न आयी तो बार-बार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूरदर्शन और आकाशवाणी की वार्ताओं की भाषा को मानक भाषा रखना ही उचित होगा ।

पढ़ी जा सकती है । लेकिन दूरदर्शन व रेडियो से दिखायी/सुनायी जानेवाली वार्ता समझ में न आयी तो उसके लेखकों पर नहीं, उन माध्यमों पर दोषारोपण हो सकता है और उन पर जो विश्वसनीयता है वह नष्ट हो सकती है ।

पत्र जगत् में प्रयुक्त भाषा का प्रभाव-क्षेत्र व्यापक है । इसलिए जनता के बीच के व्यवहार में जिस भाषा का प्रयोग होता है उसका प्रयोग पहले पत्रकार ही करता है । पत्रकारिता की भाषा को (यही भाषा आकाशवाणी और दूरदर्शन केलिए भी उपयुक्त है? दूरदर्शन और आकाशवाणी की वार्ताओं की भाषा को मानक भाषा रखना ही उचित होगा । क्यों कि मानक हिन्दी को सुरक्षित रखने का दायित्व इन माध्यमों को छोडकर किसी अन्य को होना आवश्यक नहीं है ।) सर्वथा सरल और सर्वग्राह्य रखना आवश्यक है। इस व्यावहारिक भाषा में भी विभिन्न शैलियाँ होती हैं और विशिष्ट प्रकार की शब्दावली का समावेश होता है । साहित्य-कला, खेल-कूद, वाणिज्य-व्यापार, विधि-विधान, राजनीति-राष्ट्रतंत्र, वैज्ञानिक-तकनीकी आदि विभिन्न विषयों के लिए अलग-अलग शब्दावली उपलब्ध हैं। इन शब्दावलियों से परिचित रहना अथवा परिचय प्राप्त विशेषज्ञों से परामर्श लेना भी आवश्यक है ।

इसी प्रकार सामान्य जनता की आवश्यकताएँ पूरी करने के लिए बोलचाल की ठेठ शब्दावली का प्रयोग करना भी आवश्यक है यथा हथकडे, घोटाला भंडाफोड भगदड, झडप, भिडंत, रोक थाम, लूटमार, घुसपैठ तोडफोड, शोरगुल, साठ-गांठ आदि । अंग्रेजी में कुछ शब्द होते हैं जो देशी भाषाओं में खप गये हैं, जैसे मजिस्ट्रेट, लाइसेंस, स्विच, पासपोर्ट, वारंट, रिमाण्ड, हाईकमान, कोरम, कोटा आदि । इनका प्रयोग उसी प्रकार करना भी लोकप्रियता की दृष्टि से वांछनीय है। लेकिन इन विदेशी शब्दों के लिए उचित देशी शब्दों की खोज करने का प्रयास जारी रखना भी आवश्यक है । इनकेलिए उचित शब्द भारतीय भाषाओं में अवश्य प्राप्त हो सकते हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विदेशी शब्दों के लिए उचित देशी शब्दों की खोज करने का प्रयास जारी रखना भी आवश्यक है।

चूँकि प्रमुख वार्ता एजन्सियाँ अंग्रेज़ी में ही कार्य करती हैं अतः माध्यमों द्वारा प्रयुक्त हिन्दी भाषा में अंग्रेज़ी का काफी प्रभाव रहता है। भाषा को यथासंभव इस प्रभाव से बचाकर रखना आवश्यक है जिससे वह अपने स्पष्ट, सहज तथा स्वाभाविक रूप को बनाये रखे। अंग्रेज़ी प्रभाव के कुछ उदाहरण देखेंगे :

(1) यदि सरकार इस दिशा में गंभीर है तो उसे चाहिए कि सभी तस्करों को सीकंचों के पीछे रखे। (इस वाक्य में Serious तथा keeping behind the bars का शब्दानुशब्द अनुवाद किया है जिससे भाषा शिथिल तथा अस्वाभाविक बन गयी है।)

(2) आगे किसी कारवाई से पूर्व सदन को विश्वास में लिया गया। (इसमें to take into confidence का शब्दानुशब्द अनुवाद किया गया है जो हिन्दी की शब्द प्रकृति के अनुरूप नहीं है।)

Exchange of fire के लिए गोलियों का आदान-प्रदान, Taming the rlvers के लिए नदियों को पालतू बनाना, Patrolling के लिए पेट्रोल छिड़काना, Operation flood के लिए बाढ रोक धाम, Key industry केलिए चाबी उद्योग, Medical plant केलिए औषधीय संयंत्र, Gunman के लिए बन्दूकधारी, floodlit stadium केलिए बाढ के पानी से भरा स्टेडियम आदि प्रयोग अज्ञता असावधानी से हो सकता है। ऐसे कार्य कभी क्षम्य नहीं हो सकते हैं। उत्तरदायित्वपूर्ण स्थानों पर विराजमान व्यक्तियों की असावधानी या असमर्थता ही इसका मुख्य कारण हो सकता है।

यह तो विदित है कि शिक्षा और ज्ञान के क्षेत्र में एक प्रकार का अवमूल्यन हो गया है जिसको दूर कर पहले जैसी दक्षता और सूक्ष्मता को स्थान देना नितान्त आवश्यक है। इस तथ्य की ओर इशारा करते हुए श्री. विभूति मिश्र लिखते हैं:

'स्वातन्त्र्योत्तर काल में गणेश शंकर विद्यार्थी, बबूराव विष्णु पराडकर आदि का पत्रकारिता का प्रतिमान जहाँ धीरे-धीरे लुप्त होता गया जिसकेलिए हर घटना, हर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आन्दोलन हर हलचल एक बिकाऊ माल थी और जिसका उद्देश्य अभिजात वर्ग के शयनकक्ष की शोभा बढाना था! हिन्दी के पत्रकारों ने संघर्ष और जन संपर्क तथा समाज को निरन्तर शिक्षित करने की जो परम्परा उनकी भाषा में चली आ रही थी, उसमें एक झटके के साथ संबंध-विच्छेद कर लिया और अंग्रेजी के स्वनामधन्य पत्रों के स्वनामधन्य पत्रकारों की राह पर चल पडे। जिस आदर्श की कडी आजादी की प्राप्ति के बाद हिन्दी पत्रकारों के हाथों से छूट गयी है उसकों फिर जोडना होगा। संचार माध्यमों से संबंधित व्यक्ति इस ओर ध्यान देने की कृपा करें।

All India News Papers Editors Conference में भाषण देते हुए आज से पैंतीस वर्ष पहले 13 अगस्त 1954 में राष्ट्रशिल्पि नेहरूजी ने पत्रकारों से जो बात कही उसको, नेहरू जन्म शताब्दी के इस अवसर पर मैं दुहराना चाहता हुँ। क्यों कि पैंतीस वर्ष पहले नेहरूजी द्वारा की गयी अपील आज भी उसी प्रकार दुहराना

भारत में जो महत्वपूर्ण कार्य चल रहा है उसे समझने और सराहने का भी यत्न करें।

आवश्यक है। उनकी वाणी यही थी:

"मैं चाहता हूँ कि आप लोग आज भारत में होनेवाले महान कार्य पर विचार करें। उसमें कभी पिछडापन दिखाई पडे, कहीं कमी या कमज़ोरी हो जाए तो उसकी आलोचना करें। आलोचना तो अच्छे कार्य करने की प्रेरक शक्ति बनेगी। लेकिन, भारत में जो महत्वपूर्ण कार्य चल रहा है उसे समझने और सराहने का भी यत्न करें।"

हिन्दी स्नातकोत्तर केन्द्र
केरल हिन्दी प्रचार सभा
तिरुवनन्तपुरम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन में अनुवाद का महत्व और उसकी समस्याएँ

डा० जोस आस्टिन

संविधान के अनुच्छेद 343 द्वारा हिन्दी को संघ के सरकारी प्रयोजनों के निष्पादन के लिए राजभाषा घोषित कर लेने पर भारत सरकार के सभी मंत्रालयों/विभागों, उपक्रमों और राष्ट्रीयकृत बैंकों में कार्यरत अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए अपना दैनन्दिन कार्य हिन्दी में करना आवश्यक हो गया। शताब्दियों से अंग्रेज़ी भाषा के प्रभुत्व के अधीन आ रहे सरकारी कार्य को अकस्मात् हिन्दी में परिवर्तित करना कोई आसान कार्य नहीं था। सरकारी कार्य में लगे हुए अधिकारियों/कर्मचारियों के अंग्रेजी भाषा के प्रति मोह को तोडना एक असम्भव सा कठिन कार्य था।

सरकारी कार्य में लगे हुए अधिकारियों/कर्मचारियों के अंग्रेजी भाषा के प्रति मोह को तोडना एक असम्भव सा कठिन कार्य था।

तत्कालीन राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद ने जहाँ संविधान सभा की सिफारिशों के आधार पर हिन्दी को संघ की राजभाषा स्वीकार करने के लिए 14 सितंबर, 1949 को अपनी अनुमति स्वरूप हस्ताक्षर किए वहीं उन्होंने हिन्दी को समृद्ध और शक्तिशाली भाषा बनाने के लिए शिक्षा मंत्रालय को यह दायित्व भी सौंपा कि हिन्दी की अपनी वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली तैयार की जाए। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए शिक्षा मंत्रालय के अधीन केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की स्थापना हुई। फिर 1960 में वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग का गठन हुआ। आयोग ने सभी विषयों की शब्दावली के लगभग 2 लाख तकनीकी शब्द तैयार किए। आयोग ने हिन्दी शब्दावली तैयार करते समय यह निर्णय किया कि ऐसे सभी शब्दों को जो अन्तर्राष्ट्रीय शब्द हैं, हिन्दी की शब्दावली में जोड़ लिए जाएँ। अन्तर्राष्ट्रीय शब्दों की परिभाषा के अभाव में आयोग ने यह निर्णय लिया कि ऐसे सभी शब्द जो यूरोप की कम से कम तीन भाषाओं में एक समान रूप और अर्थ में प्रयुक्त होते हैं, उन्हें अन्तर्राष्ट्रीय शब्द मान लिया जाए। इस प्रकार इकाइयों, तोल माप जैसे लीटर, मीटर आदि शब्दों को यथावत् ले लिया गया। इसी प्रकार आक्सीजन, हाईड्रोजन आदि गैसों के नाम, वोल्ट, वाट आदि आविष्कारकों के नामों पर प्रसिद्ध शब्दों, रेडियो, राडार आदि को हिन्दी की पारिभाषिक शब्दावली में ज्यों का त्यों जोड़ लिया गया। इसी के साथ आयोग ने यह निर्णय भी लिया कि ऐसे सभी शब्द जो भारतीय जन-मानस में प्रचलित हो गए हैं, उनका अनुवाद भी न किया जाए और

सरकारी कार्यालयों, भारत सरकार के उपक्रमों और राष्ट्रीयकृत बैंकों में राजभाषा हिन्दी का कार्यान्वयन वास्तव में ही बडा कठिन और दुष्कर कार्य रहा है।

उन्हें भी यथावत् हिन्दी शब्दावली का अंग मान लिया जाए, यथा—स्टेशन, डाक्टर, प्लेटफार्म आदि।

आयोग ने सर्वप्रथम समेकित प्रशासन शब्दावली (अंग्रेज़ी-हिन्दी) का निर्माण और प्रकाशन किया। इस के बाद अन्य सभी विषयों तथा मानविकी, इंजीनियरी, आयुर्विज्ञान, विज्ञान, वाणिज्य आदि में हिन्दी शब्दावली का निर्माण और प्रकाशन किया है।

सरकारी कार्यालयों, भारत सरकार के उपक्रमों और राष्ट्रीयकृत बैंकों में राजभाषा हिन्दी का कार्यान्वयन वास्तव में ही बडा कठिन और दुष्कर कार्य रहा है। जहाँ एक ओर अधिकारी तथा कर्मचारीगण हिन्दी की शब्दावली से अनभिज्ञ थे वहीं सदियों से चली आ रही अंग्रेजी में कार्य करने की उनकी मानसिकता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को बदलने की आवश्यकता थी। कुछ हद तक यह बात ठीक भी थी। जो व्यक्ति किसी एक भाषा में कार्य करने का आदी हो चुका हो, निस्संदेह उसे किसी दूसरी भाषा में कार्य करने में कुछ संकोच और झिझक होना स्वाभाविक है। फिर, जो व्यक्ति एक विशेष प्रकार की शब्दावली और दैनन्दिन प्रयोग में आनेवाले वाक्यांशों से भली प्रकार अभ्यस्त हो चुका हो, उसे नई शब्दावली को समझने, जानने और नए वाक्यांशों का प्रयोग करने में भी कुछ समय जरूर लग सकता है।

इसके अतिरिक्त, देश के सभी कार्यालयों आदि को नियम-पुस्तिकाएँ, प्रशासनिक नियम, आचार संहिताएँ, साहित्य आदि केवल अंग्रेज़ी में उपलब्ध थे। हालांकि ऐसे साहित्य को हिन्दी में उपलब्ध कराने के लिए केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो की स्थापना की गई परन्तु फिर भी प्रत्येक कार्यालय, उपक्रम या राष्ट्रीयकृत बैंकों में बहुत बड़ी संख्या में एक विशिष्ट प्रकार का कार्य होने के कारण रोजमर्रा के अनुवाद कार्य के निष्पादन के लिए अनुवाद कार्य में पारंगत व्यक्तियों को नियुक्त किया गया है।

राजभाषा अधिनियम — 1963 के पारित हो जाने के बाद द्विभाषिकता का एक और विधिवत् रूप शुरू हो गया है। इस अधिनियम की धारा 3(3) में चौदह ऐसी मदें निर्दिष्ट की गई हैं जिन्हें अंग्रेजी के साथ-साथ हिन्दी में जारी करना कानूनी अनिवार्यता हो गई है। परिणामस्वरूप, प्रशासनिक हिन्दी अपनी प्रकृति में सहज हिन्दी से अधिक अनुवाद की छाया में विकृत हिन्दी बनती जा रही है। यही कारण है कि प्रशासनिक हिन्दी में लिखे गए बहुत से पत्र, प्रारूप, सरकारी विज्ञापन तथा सूचनाएँ आदि ऐसी होती हैं जिन्हें समझना सामान्य लोगों के लिए कठिन हो जाता है। क्योंकि अब तक प्रशासनिक भाषा एक सीमा तक अंग्रेजी रही है। अतः उसके प्रयोग करने वाले मूल रूप से हिन्दी में नहीं लिखते बल्कि अंग्रेजी में सोचते हैं और फिर उनका अनुवाद हिन्दी में करते हैं। ऐसा करने से अनुवाद कार्य में विसंगतियाँ हो जाती हैं। उदाहरण के लिए

A Central Hindi Committee was constituted by the Ministry of Home Affairs vide O.M. No..........dt...... इसका अनुवाद अक्सर इस प्रकार किया जाता है:-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गृह मंत्रालय ने कार्यालय ज्ञापन सं०...... दिनांक......द्वारा हिन्दी समिति का गठन किया ।

जबकि इसका सही अनुवाद इस प्रकार होना चाहिए :–

गृह मंत्रालय के दिनांक......... के कार्यालय ज्ञापन सं०..... द्वारा केन्द्रीय हिन्दी समिति का गठन किया गया ।

अनुवाद एक प्रकार का कलात्मक कार्य है, जिसके लिए सहज बुद्धि के

अनुवाद एक प्रकार का कलात्मक कार्य है, जिस के लिए सहज बुद्धि के साथ-साथ, ज्ञान भंडार, शब्दों के सही प्रयोग और संदर्भ को ध्यान में रखना आवश्यक है ।

साथ-साथ, ज्ञान भंडार, शब्दों के सही प्रयोग और संदर्भ को ध्यान में रखना आवश्यक है, अन्यथा अनुवादक अर्थ का अनर्थ कर सकता है। उसे यह सूझ होनी चाहिए कि संदर्भ के अनुसार 'Plant' शब्द का अर्थ 'संयंत्र'' के रूप में प्रयुक्त होता है अथवा "पौधे" के रूप में ।

मूल भाषा में जो आशय है उस को व्यक्त करने की क्षमता अनुवादक की कुशलता है । शब्द के लिए शब्द देना अनुवाद नहीं है । जिस विषय पर अनुवाद होता है उस विषय का ज्ञान रखना अनुवादक के लिए जरूरी है ।

राजभाषा हिन्दी में अनुवाद का कार्य सरल एवं लोकप्रिय बनाने का प्रयास हो रहा है । कर्मचारियो और अधिकारियों को अनुवाद की कला में प्रवीण बनाने का कार्यक्रम कार्यान्वित किया जा रहा है । उन केलिए 5 दिवसीय तथा 21 दिवसीय अलग अलग पाठचक्रम तैयार करके विभिन्न केन्द्रों में प्रशिक्षण देने का भी प्रबन्ध है । आशा की जाती है कि जब यह प्रशिक्षण कार्यक्रम पूर्णरूप से कार्यान्वित होगा और हिन्दी के प्रति कर्मचारियों और अधिकारियों के मन में दिखायी देनेवाली झिझक एवं भय का निवारण होगा तब अनुवाद सम्बन्धी समस्याएँ भी दूर हो जायेंगी । सबसे बडी समस्या मानसिकता की है । एक बार हिन्दी में काम करने का अनुकूल वातावरण उत्पन्न हुआ तब सभी समस्यायें अपने आप हट जायेंगी ।

सहायक निदेशक
राजभाषा विभाग;
क्षेत्रीय कार्यान्वियन कार्यालय
कोचिन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कविता सुनाऊँ क्या ?

प्रो० टी. के. भास्कर वर्मा

कविता सुनाऊँ क्या ?
कविता ही के झूले में
झूलते हम सब यहाँ,
यह केरल है,
कविता-कामिनी की
सुरम्य क्रीड़ास्थली ।

कविता सुन्दरी के
सुमधुर
नूपुरों का
रुन-झुन नाद
पड़ता नहीं क्या
सागर-लहरों की गूँज मिस
आपके श्रावण-पुटों में ?

भूल गए क्या
आप लोग
संगीत की साकार मूर्ति
स्वाति-तिरुनाल के
पीयूषवाही कीर्तनों को,
जो आज भी
भारत भर के
गायक-गण के
कण्ठहार बन सोहते।

माता भारती ने
स्वयम्
स्तन्य पिला पिला
अमर बना दिया
इस कालजयी
महाराज को।

और राजा रविवर्मा।
प्रातस्मरणीय पुण्यपुरुष,
रची थीं
कितनी ही
अनूठी, अनश्वर कविताएँ
जिन्होंने
कैनवास पर,
जिन्हें देख
चकित हुए
यूरप के
जाने माने
कुशल चितेरे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब कभी कोई
आता
इस केरल में,
कभी नहीं भूलता वह करना
दर्शन
आदि शंकर के
जन्म से
पूत बनी कालटी के ।

'भज गोविन्दम्
भज गोविन्दम्
गूंज उठी थी
आव ज
पेरियार के
तटवर्ती
इसी पुनीत गाँव से;
क्या हो अनश्वर कविता थो
केरल ने दी
विश्व को
शंकर के श्रीमुख से ।

कोसलेश की कथा
कविता में कर निबद्ध
जनता को
ललित पदावली में
प्रदान किया
जिस महामनीषी ने
उस अमर महाकवि
तुञ्चत्त एषुत्तच्छन की
कविता भरी रहती है

इस केरल की
वायु के
कण कण मे ।

जनता की भाषा में
जनता की बातों को
कविता में
समझाया,
हास्य-व्यंग्य भरी शैली में,

उस कवि-पुंगव
कुञ्चन नम्पियार की
आत्मा भी
होगी मौजूद शायद
इस सभा-भवन में ।

रण में जूझना
नहीं कोई नई चीज़
हम केरल-जननी के
सपूतों को !
साक्षी देंगे
उत्तर केरल के
ओतेनन जैसे
साहसियों की
वीरगाथाओं की माला
'वटक्कन् पाट्टुकल' ।
कविता ही में जीते,
कविता ही में बढ़ते
हम केरल के लोग;
हम में से ही

(शेष पृष्ठ 49 पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अद्भुत जीव

श्री. वी. के. एस. नम्पूतिरी

सरदी का मधुर विभात
विराली अलसता, तन्द्रा !
गीला था परिवेश दिशा का
वर्षा की बूँदों से ।
मन में गुदगुदी की तानें
उड़ा रही थी, ठिठुरन की
अजीब सी चुभन !
हलके से कुहासे की मस्ती में
सुनहला रंग भर रही थी
धीमी रोशनी ।
मधुर अर्द्ध निद्रा की गोदी में
पड़ा मैं
उतर रहा था स्वप्न लोक से
धीरे धीरे !
पत्र का संवाद दाता मैं
कल्पना की सतरंगी
लहरियों के साथ
आँख-मिचौनी का मजा
कैसे पाऊँ ?
लगा आकाश से
गिरा है आनन्द-कण
— स्वप्न भाव का ।
लेकिन कम्बख्त किस्मत ने
फेंका मुझे धरती की
सच्चाइयों की परतों पर ।

सनसनी की जादुई खबर
फैल रही है चारों ओर
भूजात हुआ है अद्भुत जीव
दूर, शहर में—
कनक-कवच-कुंडल-विभूषित ।

फैली खबर आग की लपटों सी
पुरोहित, वैद्य, डाक्टर, वकील
साहित्य-संगीत-कला पारखी
और अणुशास्त्री
बूढे-बच्चे, मर्द-औरतें
युवक-युवतियाँ —
सबकी चेतना की धारा
बही उस ओर ।

एक बार, बस, एक ही बार
दृष्टि दौडायी सबने ।
कोई कुछ निर्णय नहीं ले-
पा रहा था—
कौन-सा जीव है यह ?
लंबी हो रही थी उलझी-
प्रहेलिका की छाया ।
मन उलझने लगा
कल्पना के धागों में ।

कोई नया अवतार ? दुष्ट संहार हेतु
अथवा, आत्मा की खोज की
भटकन में, अनन्त हवाओं में
समा जानेवाले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योगियों को दर्शन देने ?
अथवा दीनों की भाग्यरेखा
निखारने ?

या अतीत के चक्र से
फिसली वर्तमान को धुरी ?
पी लिया था निस्तब्धता ने
चेतना को ।

मुझे तो मिलने लगा था
इशारा कुछ कुछ !
पधारने लगे तब एक नेता-
सजे जुलूस के 'किरीटी' बन
तेजस्विता की मूर्ति से
नम्रता के राग बन !
गर्व-मद की लाली को
छिपाने का व्यर्थ-
प्रयास करते !

दृष्टिपात किया चारों ओर
सफलता का भाव लिये
विजय की मुद्रा में
रहस्य की गहराई में पहुँचे से ।

ठहाका मारनेवाले उनके
श्रीमुख से निकल पड़ा यों—
—"नहीं इसमें कोई विचित्रता
कवच-कुंडल भी नहीं यह !
जन्म लिया है एक मन्त्री ने
कुरसी सहित ।"

(पृष्ठ 47 का शेष भाग)

निकले हैं
कितने ही वयलार,
कितने ही ओ० एन० वी० !
यह केरल की मिट्टी
कविता की मिट्टी है,
यहाँ का
बच्चा बच्चा
कविता की छाया में है
बढ़ता ।
मन में, वचन में, कर्म में
कविता ही कविता है यहाँ ।
हम जो कुछ भी कहें
बनता वह स्वयम्
कविता ।
फिर दूसरी कविता,
बताएँ
क्यों लाऊँ मैं
आप को सुनाने !!
'धन्यवाद'

अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
सरकारी वनिता कालेज
तिरुवनन्तपुरम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिंजरा

डा० रति सक्सेना

एक सांझ—
जब मैं बरामदे में बैठी हुई,
हसरत भरी निगाहों से,
बादलों को ताक रही थी।
एक बादल का टुकड़ा
रुका और मुस्काया,
पतली-पतली बून्दों को छलकाते हुए,
मेरी ओर दोस्ती का हाथ बढ़ाया।

बोला—
बन्दिनी आओ—
इन बन्धनों को तोड़, मेरे साथ उड़ आओ
नीले अनन्त आकाश में, कुछ लम्हों तक साथ-उड़ेंगे।
थके-तृषित प्राणों को जीवन मधुरस से सरोबार
करेंगे।
फिर कहीं अनन्त लहरों का अंग बन,
या तपी धरती का कण बन सो जाएगे।

मैं बोली—
बादल !
तुम अपने आदि-अन्त के ज्ञाता हो—
स्वयं भाग्य विधाता हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं पिंजरे की मैना—
नहीं जानती कौन हूँ,
कहाँ से आई हूँ ।

किन्तु—

जन्म से ही मैंने पैरों में बेड़ियाँ पाई हैं ।
जब भी उड़ने का प्रयत्न किया,
अपने ही पंखों को घायल किया ।
अब तो यह पिंजरा मुझे सुरक्षा का अहसास-
कराता है ।
बाहर तो गिद्धों का डेरा ही नज़र आता है ।
वे बाहर निकलते ही मेरा बोटी-बोटी
नोच डालेंगे ।
मेरे करुण अन्त का कारण मुझे ही बतलाएँगे ।
हकीकत तो यह है —
मैं नये पिंजरे का निर्माण कर रही हूँ ।
अपनी बेटी के पंखों को कतर-
अभी से उड़ने के अयोग्य कर-रही हूँ ।

हिन्दी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय
केरल हिन्दी प्रचार सभा
तिरुवनन्तपुरम

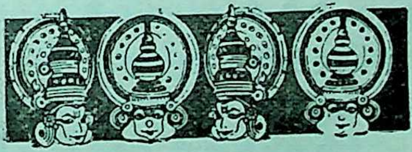

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्ञान - दीप

श्री. एस. के. वर्मा

ज्ञान का दीप जलाकर रक्खो
क्यों इन्तज़ार है सूर्योदय का ?
जब अन्धकार है खुद के अन्दर
तब सूर्य रौशनी क्या करेगी ?

क्यों ताना सूर्य को देते हो
क्यों रवि को दोषी बतलाते हो
खुद के भीतर झाँककर देखो
सब 'अन्धकार' वहीं पर है ।
ज्ञान का दीप...............

क्यों चाँद से पूछते हो तुम आज
क्यों बादल में छुप गया है वो
क्यों चाँदनी नहीं बिखेरता वो आज
खुद के भीतर झाँककर देखो
'काले बादल' वहीं पर हैं
ज्ञान का दीप..................

क्यों तारों से करते हो सवाल
क्यों टिमटिमाते नहीं वो आज
'काला चश्मा' हटाकर देखो
आँखों में अपनी झाँककर देखो
सब कुछ साफ नज़र आयेगा
ज्ञान का दीप..............

सफेद कपडे पहनकर जब तुम
भरी सभा में यह कहते हो
खत्म करो ये काले धन्धे--
खत्म करो ये काली रस्में
क्या किया है तूने अक्सर
खुद से यह सवाल करो
ज्ञान का दीप.....................

पत्थर फेंक कर तूने ज़रूर
तोड़ दिया शीशा औरों का
लेकिन शायद भूल गये
खुद रहते हो शीशों में
कबतक बचा सकोगे खुद को
पत्थर के इन वारों से
ज्ञान का दीप ....

क्यों कहते फिरते रहते हो
भगवान भला करें हम सबका
क्यों घबराये से चेहरे लेकर
हार गये हो मन से तुम ?
थोडा खुद पर विश्वास करो
फिर से शुरू प्रयास करो
सब कुछ फिर से सम्भल जायेगा।
ज्ञान का दीप................

वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी
तिरुवनन्तपुरम विमान पत्तन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानवता

श्रीमती एल. कौसल्या अम्माल
केन्द्रीय विद्यालय, पाङ्गोड, त्रिवेन्द्रम

हे मानवते ! तू है कहाँ
आदि मानव ने खोजा तुझे कहाँ
हुआ, किस रूप में श्रीगणेश तेरा
औ' पाया उसने फिर तुझे कहाँ !
हे मानवते तू है कहाँ
स्निग्ध चांदनी में रजनी की रजत रेखा में,
शीतल चन्दन में या मंगल सुगन्धित कस्तूरी में,
सुन्दर सुरभिल सुमनों में या कठोर कमनीय काञ्चन में !
हे मानवते ! कहाँ खोजूँ मैं, तुझे खोजूँ कहाँ
निज अन्त:करण में या सृष्टि की अनन्तता में !

हे मानवते तू है कहाँ
अवनी के दरिद्रनारायणों में या इन्द्र की अमरावती में,
विधाताओं के मन की दृढ़ता में या उनके मानसिक उलझन में,
आसुरी शक्तियों में या पवित्र पावन देवत्व में !
हे मानवते ! कहाँ खोजूँ मैं, तुझे खोजूँ कहाँ,
निज अन्त:करण में या सृष्टि की अनन्तता में !

हे मानवते ! तू है कहाँ
पियुष वाहिनी देवगंगा में या कानन की किसी कल्लोलिनी में,
अपूर्ण कला की पूर्णता में या मानव की सहज आर्जवता में,
अगाध अथाह नीलिमा में या विशाल गगन की विस्तृति में !
हे मानवते ! कहाँ खोजूँ मैं, तुझे खोजूँ कहाँ
निज अन्त:करण में या सृष्टि की अनन्तता में !

मन कह रहा है पूछ लो जरा,
किस रंग में खोजूँ मैं, किस गुण में पाऊँ मैं,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहाँ खोजूँ मैं, तुझे खोजूँ कहाँ,
किस रूप में पाऊँ मैं या अरूप में ।

मन कह रहा है, सुनो एक बार !
इन्कुलाब की लहरों में तू
शांति का परिधान पहनकर आ ।
कराल कर्कश हृदयों में तू
सत्यं, शिवं सुन्दरं बन आ ।
क्रोध कलुष वातावरण में तू
स्नेह स्निग्ध छाया सी आ ।
झंझावत के ध्वंसन में तू
मन्द मारुत के झोंके से आ ।
ताप दग्ध वातावरण में तू
शीतल छज्जा बन आ ।
कोर नीरवता में तू
शिशु की आरवता सी आ ।
घोर युद्ध की तीव्रता में
कमनीय कामिनी की लोलुप छाया सी आ

मुझे सुनाई दिया, कहता है कोई
मैं हूँ उधर जहाँ ढूँढ़ते हो तुम मुझे
मैं हूँ उधर जहाँ हिन्दू-मुस्लिम सिक्ख ईसाई
मिलकर जयगान गाते हैं ।
मैं हूँ उधर जहाँ जन जन के मुँह-मुँह से फूटते हैं शांति गीत।
मैं हूँ उधर जहाँ प्रीति का पर्याय है ।
तब पुकार उठी ही अनायास वह
ओ मानव, मानवता से जीना सीखो
इन्सानियत ही निधान खुशी का,
हो उठे मुखरित, सीख सिखान में
हो यही नारा, मानवता की जय जयकार ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आत्म मन्थन"

श्री. एन. सी. दास

मैं याद करता हूँ उस वेला को—जब
मातृगर्भ में प्रचण्ड जठर ज्वाला से
तप्त होकर मेरी आत्मा बार-बार पुकार रही थी
(हे भगवन) मुझे इस भीषण पीड़ा से मुक्त करो।
पृथ्वी की स्वर्णिम रोशनी में आने दो मैं
तुम्हारा नाम करूँगा, तेरी कृपा का गुणगान करूँगा।
अपने स्वत्व को भूलकर तेरी महिमा का प्रचार करूँगा—

मेरी यह पुकार सुनकर, तूने धरित्री की
गोद में मुझे लिटाया – इस महान कर्मभूमि
में मेरे प्रण को बारंबार याद दिलाया, तेरे
इशारों की झांकी लगी रही पलपल
पर मैं आत्म विस्मृत, मोह से बन्धित जागतिक
सुखों से आबद्ध तथा संकीर्ण भावनाओं से ग्रस्त
होकर, मेरा प्रण भूल गया—
तेरा मनन तो दूर, तेरे अस्तित्व को भी न स्वीकारा,
आत्म दम्भ, आत्म गर्व और आत्म भाव से उन्मत्त
हो उठा—अब जीवन की सान्ध्य वेला जब मैं
अतीत को टटोलता हूँ – मेरा हृदय शत विदीर्ण
हो जाता है – क्या किया ? क्या पाया ? क्या
दिया ? इन प्रश्नों से, (हे भगवन)
मोह भरा वह स्वप्निल प्रासाद अब टूट चुका
अहंकार भरा फन अब झुक गया—मैं निःस्व,
निःसहाय और अतृप्त मन लेकर भटक रहा हूँ।
निःसंकोच क्षमा मांग रहा हूँ – हो सके तो
मेरे कृतकर्म को भूल जाना—तेरे चरणों में
थोड़ी जगह देना—
जीवन को धन्य करने का एक अवसर
और मांग रहा हूँ—हो सके तो इस
भारत भूमि में फिर से एक जनम देना

दक्षिण एयर कमान, तिरुवनन्तपुरम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

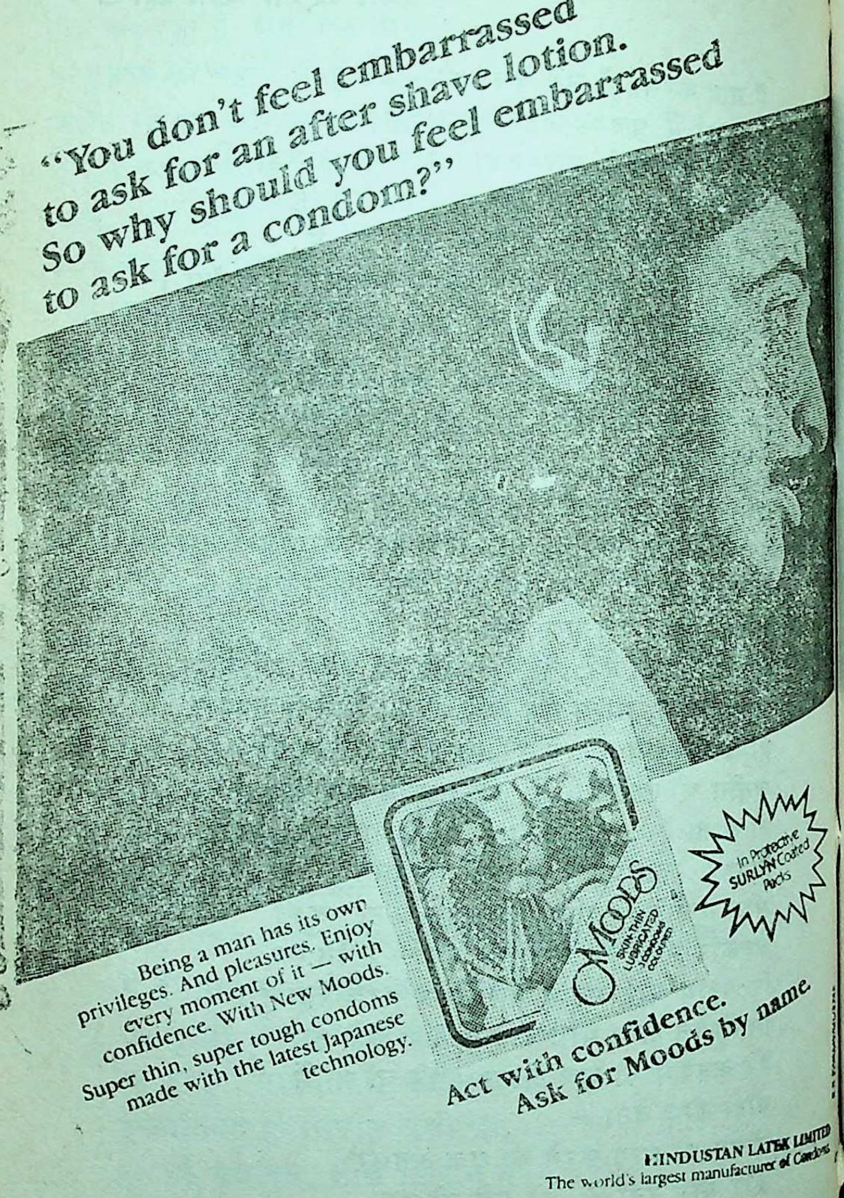

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(पृष्ठ 5 का शेष भाग)

हृदयं द्रवीकुर्वदिदमुज्ज्वलगान-
मुदयल्लयं कथमालपत्येवं स्वरैम् ।
गलितं सुवर्णाभं निचोलं वक्षो नरन-
मनवद्यायास्सन्ध्यादेव्याः कपोलस्थले

स्नविष्यन्नयं क्षणं स्फुरति ताराबाष्र-
कणः कोप्यनिर्वाच्यनव्यनिर्वृतिबिन्दुः ।
सागर ! ज्ञाता त्वत्तो पूर्णस्यात्मनो दिव्य-
सान्द्रानुभवपरिपाकजा कलाशैली ।

नित्यनायक ! मे हृत्स्पन्दं त्वमध्यापय
सत्यजीविताखण्डगीतस्य तालक्रमम् ।
जीवितं गीतं तालः कालस्त्वात्मनो नाना-
भाव एकैको रागो विश्वमण्डलं लयः ।

पूर्णेन्दुचषके सुफेनिलदिव्यानन्दं
निक्षिप्य मन्दं शुक्लपञ्चमी समागता ।
आनतमुख्या नीलभ्रुकुटिप्रतिबिंबा-
न्मोहनं तद् भाजनमादाय करपुटे

फेनमञ्जुलस्मितेनास्वाद्य सुधामन्य-
ज्ञानहीनोसौ गायन् हर्षजृंभितसत्त्वः ।
भावत्रेपथुतरंगायमाणोरस्तले
सा वधूः शिरो न्यस्य तिष्ठति लज्जामूका ।

क्षणदाश्लथतमोवेणिबन्धनादधो
गलितानीमानि तु मल्लिकामुकुलानि
बिंबितनक्षत्राणि ह्येतानि न नूनं ते
कम्पितस्निग्धोरसि च्युतानि विराजन्ते ।

चुंबतु तां कामुक ! त्वामाच्छादयतोस्य
पुष्पालंकृतधम्मिल्लस्य मे शुभाशंसा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निद्रायां निलीनैषा भूमिर्नीलाकाशश्च
हृद्रम ! जातावावामिदानीमेकाकिनौ ।

तावकमगाधं तमाशयरहस्यं त्वं
मामकात्मनः कर्ण कुरुष्व निवेदनम् ।
धीरसाहसपरिवर्तनोत्साहस्याद्य
गौरवपूर्णगानवीचयः प्रचण्डात्मन् !

जीवितपरिमितिं सोढुमशक्तादिह
दैविकास्वास्थ्योन्मत्ताद् भवतस्त्वनुवेलम्
स्थितिपालनं नित्यं निजकर्तव्यं धर्मं
इति पश्यन्तीं क्षितिं कम्पयन्नुदञ्चति ।

नूनं ते सन्देशस्तु वेपथुं जनयति
निश्चलनभश्चरनक्षत्रमहाराज्ये
आत्मा मे भग्नो भवेच्चेदस्तु तथापि त्वं
वीणां मां विधेहि त्वदुत्कृष्टाशयान् गातुम् ।।

प्राचार्य
हिन्दी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय
केरल हिन्दी प्रचार सभा
तिरुवनन्तपुरम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(पृष्ठ 8 का शेष भाग)

मधु रूप, मछली रूप, जो था तेरा डेरा,
कहाँ हुआ गायब ?
घर छोड निकलना ही चारा
महातम ! निगल जा हमको ।

बू आती कीचड की, अब भी मेरे पैरों से
उछलते कभी टिड्डे, मानस की हरियाली में ।
चल पडा था मैं स्कूल उस पार के
गिर पडा था फिसलकर खेत बीच गडहे में
बीच चावल की पौधियों से निकला शोरगुल
पानी के सोते सम बहे साथी मेरे ऊपर ।

कर्णिकार की काली छाँह में
—जो अब न रहा—
मेरी नन्ही स्याह-पौधि सूख जाती जब,
जूठन चबाती ज़िन्दगी में
बजते ढोल होनी के;
ऊँचा रहे कान्क्रीट के खम्भे !
फिर भी—
ये श्वेत-प्राण
खडे इक पैर के बल
किये आँख मून्द
ध्यान से ज़रूर
करते कुछ विचार !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्व-गीत

श्री. रामेश्वर दयाल दुबे

सारी वसुधा एक हृदय हो ।
हिन्दी बने सेतु हृदयों की
कोटि-कोटि जनता की जय हो ॥

स्नेह-सिक्त मानस की वाणी,
गूँजे गिरा यही कल्याणी;
चिर उदार भारत की संस्कृति
सदा अभय हो, सदा अजय हो ।
सारी वसुधा एक हृदय हो ॥

मिटे विषमता, सरसे समता,
रहे मूल में मीठी ममता;
तमस-कालिमा को विदीर्ण कर
जन-जन का पथ ज्योतिर्मय हो
सारी वसुधा एक हृदय हो ॥

जाति, धर्म भाषा विभिन्न स्वर,
एक राग हिन्दी में सजकर;
झंकृत करे हृदय-तन्त्री को
स्नेह-भाव प्राणों में लय हो ।
सारी वसुधा एक हृदय हो ॥

शील, शक्ति, सौंदर्य समन्वित,
ममतामय मानव हो निर्मित;
'सत्यं, शिवं सुन्दरम्' संयुत
मानवता की सदा विजय हो ।
सारी वसुधा एक हृदय हो ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरल ज्योति

* प्रधान संपादक
प्रो० पी. जे. जोसफ़

* संपादक
श्री. के. जी. बालकृष्ण पिल्लै

* सह संपादक
श्री. आर. सुकुमारन नायर

* संपादक मण्डल
प्रो० एम. जनार्दनन पिल्लै
प्रो० सी. जी. राजगोपाल
श्री. के. वी. कृष्णनकुट्टी
डा० एस. सी. चन्द्रन
डा० एन. जी. देवकी
श्री. एम. के. वेलायुधन नायर

* विज्ञापन दर

		मासिक	वार्षिक
आवरण पृष्ठ 4	रु.	500 00	5000 00
आवरण पृष्ठ 2 एवं 3	रु.	400 00	4000 00
साधारण पृष्ठ पूरा	रु.	300 00	3000 00
साधारण पृष्ठ $\frac{1}{2}$	रु.	175 00	1750 00
साधारण पृष्ठ $\frac{1}{4}$	रु.	100 00	1000 00

संपर्क करें—मंत्री, केरल हिन्दी प्रचार सभा, तिरुवनन्तपुरम-695 014

लेखकों से निवेदन

हिन्दी प्रचार, हिन्दी शिक्षण, भारतीय भाषायें, भारतीय साहित्य, भारतीय संस्कृति जैसे विषयों पर लिखे गये उच्च स्तरीय सचित्र लेखों व संगोष्ठी समाचारों का स्वागत किया जायेगा।

हिन्दीतर प्रान्तों की सांस्कृतिक, साहित्यिक, कलात्मक विशेषताओं पर लिखी गयी मौलिक और अनूदित रचनाओं को और हिन्दीतर भारतीय भाषाओं की उत्तम रचनाओं के अनुवादों को प्राथमिकता दी जायेगी।

पांडुलिपियाँ साफ अक्षरों में लिख कर या टाइप करके भेजें। कार्बन प्रतियाँ स्वीकृत नहीं होंगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्र :

आवरण पृष्ठ—1

राष्ट्रशिल्पी पं० जवाहरलाल नेहरू जिनकी शताब्दी विश्व स्तर पर मनायी गयी ।

आवरण पृष्ठ—2

केरल विधान सभा के शताब्दी समारोह के विविध दृश्य ।

(1) भारत के पूर्व राष्ट्रपति श्री. नीलम सन्जीव रेड्डी, भारतीय मारक्सिस्ट पार्टी के महा मंत्री श्री. ई. एम. एस. नंपूतिरिपाट श्री. ए. के. आन्टणी (पूर्व मुख्य मंत्री, केरल और अध्यक्ष केरल प्रदेश काँग्रस कमिटी) । (2) भाषण दे रहे हैं श्री. नीलम सन्जीव रेड्डी । बीच में केरल की माननीय राज्यपाल श्रीमती. रामदुलारी सिन्हा (दायीं तरफ) केरल के मुख्य मंत्री श्री. ई. के. नायनार, विपक्षी दल के नेता श्री. के. करुणाकरन आदि । (बायीं ओर) केरल विधान सभा के अध्यक्ष श्री. वर्कला वी. राधाकृष्णन, श्री. ए. के. आन्टणी, श्री.ई. एम. एस. नंपूतिरिपाट, श्री. के. चन्द्रशेखरन (केरल के शिक्षा मत्री) आदि (3) श्री. नीलम सन्जीवरेड्डी के साथ श्री. वेबी जोण (सिंचाई विभाग मंत्री, केरल सरकार) और श्री. के. करुणाकरन।

आवरण पृष्ठ—3 और 4

केरल हिन्दी प्रचार सभा द्वारा हिन्दी स्नातकों केलिए आयोजित साक्षरता कार्यकर्ता प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के उदघाटन समारोह के दृश्य ।

आवरण पृष्ठ—3

बीच में :

सभा के हिन्दी स्नातकोत्तर केन्द्र के छात्रों की हस्त लिखित पत्रिका 'जागरण' का प्रमोचन डा० रति सक्सेना को पत्रिका देते हुए कर रहे हैं श्री. वर्कला वी. राधाकृष्णन । समीप हैं श्री. एम. के. वेलायुधन नायर.

आवरण पृष्ठ—4

ऊपर :

भद्र दीप जला कर उद्घाटन कर रहे हैं श्री. वर्कला वी. राधाकृष्णन । समीप हैं श्री. एम. के. वेलायुधन नायर ।

नीचे :

उद्घाटन भाषण दे रहे हैं श्री. वर्कला वी. राधाकृष्णन । बैठे हैं (दायें से) श्री. वी. एन. उण्णी, डा० मावेलिक्करा अच्युतन, श्री. पी. एन. पणिक्कर श्री. तेंगमम बालकृष्णन, डा० एन. ए. करीम, डा० के. शिवदासन पिल्लै और श्री. एम. के. वेलायुधन नायर ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूरभाष : 61378 तार : 'जय हिन्दी'

केरल ज्योति

पुष्प 24
दल 9
एक प्रति—1 रु० 50 पै०
वार्षिक—15 रु०

सांस्कृतिक जागरण की मासिक पत्रिका
दिसंबर 1989

संपादकीय

जवाहर जन्म शताब्दी के बाद...?

राष्ट्र शिल्पी पं० जवाहरलाल नेहरू की जन्म शताब्दी नवंबर 1988 से नवंबर 1989 तक देश के अन्दर और बाहर समुचित ढंग से मनायी गयी। इस सिलसिले में अनेकों सम्मेलन हुए। संगोष्ठियाँ हुईं। प्रदर्शनियाँ हुईं। प्रतियोगितायें हुईं। और भी कार्यक्रम हुए। पुरानी पीढ़ी को पंडितजी के जीवन का पुनस्मरण और पुनर्मूल्यांकन करने का अवसर मिला। नई पीढ़ी को उनकी त्याग पूर्ण एवं तपोनिष्ठ सेवा के अध्ययन का अवसर मिला। देश सेवा का ही नहीं, विश्व सेवा का भी। मानव जाति के इतिहास का गहरा अध्ययन पंडितजी ने किया था और मानव जाति के विकास केलिए भारतीय जीवनदर्शन पर, विशेष कर सत्य और अहिंसा पर जिनका प्रयोग उन के पूज्य गुरु महात्मा गाँधी ने सिखाया था, अधिष्ठित दिशा दर्शन भी दिया। यदि इस मार्ग पर अग्रसर होने की प्रेरणा हम ग्रहण कर सकें तो पंडितजी के जन्मशताब्दी समारोह को सार्थक मान सकते हैं।

भारत की भाषा समस्या को जिस गहराई से पंडितजी ने समझा था और जिस दीर्घदर्शिता के साथ उसे सुलझाने का मार्ग प्रदर्शित किया था वह उन के देश-प्रेम और जनतांत्रिक दृष्टिकोण का परिचायक है। इस संबंध में उन्होंने संविधान सभा में, संसद में और अन्य सभा सम्मेलनों में अपने विचार स्पष्ट शब्दों में व्यक्त किये हैं। भाषा की समस्या पर कई अवसरों पर कई राजनेताओं द्वारा उन की कड़ी आलोचना की गयी। पर उन की धारणा इस विषय पर इतनी सुलझी हुई और सुचिन्तित थी कि उन्हें अपने विरोधियों के तर्कों का खण्डन करने में कभी कोई कठिनाई नहीं हुई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस अंक में

गांधीवाद की ओर लौटें 3

भाषा समस्या में जवाहरलाल नेहरू की नीति जारी रखें 5
श्री. वर्कला वी. राधाकृष्णन

अंग्रेज़ी घटाओ, अपनी भाषा बढाओ 10
डा० श्याम सिंह शशि

प्रान्तीय भाषाओं के साहित्य का प्रकाशन नागरी लिपि में भी हो 13
श्री. सन्तोष कुमार

हिन्दी माध्यम से प्रान्तीय भाषाओं का पत्राचार पाठ्य-क्रम आरंभ करें 14
श्री. भक्तप्रिय

गांधीजी के दो जीवन प्रसंग 16

हिन्दी के भगीरथ:स्व० गंगाबाबू 17
श्री नरेन्द्र दंदारे

हिन्दी भारतीय साहित्य का प्रतिबिंब हो 19
डॉ० के. एस जोर्ज

पढते पढते 26

हिन्दीतर भाषाभाषी हिन्दी स्नातक राजभाषा का करियर बनायें 28
श्री. गोविन्ददास बलिया

नटन भारती 33
श्री. एन. दामोदर कुरुप

दो शिशु कवितायें
श्रीमती बी. गिरिजा 'कार्तिका'

प्रेरणा स्रोत 40
कु० इन्दुमति, एन.

भारत की भाषा समस्या अंग्रेज़ी और हिन्दी को लेकर बनी हुई है। प्रान्तीय भाषा से किसी को विरोध नहीं। सब अपनी अपनी प्रान्तीय भाषा को उन्नत करना चाहते हैं। पर अंग्रेज़ी को जो स्थान दिया जाता रहा है उसे हटाना तो दूर, घटाना भी किसी किसी को पसन्द नहीं। ऐसे लोगों की दृष्टि में प्रान्तीय स्तर का प्रशासन भी अंग्रेज़ी में ही चलते रहना वांछित है।

दूसरा वर्ग उन लोगों का है जो प्रान्तीय स्तर पर सब प्रयोजनों केलिए प्रान्तीय भाषा स्वीकार कर सकते हैं। पर राष्ट्रीय स्तर पर अंग्रेज़ी को बनाये रखना चाहते हैं। हिन्दी को स्वीकार करना वे अपने लिए अहितकर मानते हैं।

तीसरा वर्ग उन का है जिन की दृष्टि में अंग्रेज़ी गुलामी की निशान है और इस कारण सर्वथा त्याज्य है। वे अंग्रेज़ी को हटाने के पक्ष में हैं।

पंडितजी ने इन तीनों दृष्टियों को संकुचित माना। वे जानते थे कि प्रान्तीय स्तर पर प्रान्तीय भाषा राष्ट्रीय स्तर पर राष्ट्रभाषा और बाहरी संपर्क केलिए अंग्रेज़ी को स्वीकारें तो देशवासियों का हित होगा। उन्होंने प्रेय की अपेक्षा श्रेय को प्रश्रय दिया और त्रिभाषा सूत्र प्रस्तुत **किया।**

हमारा यह दुर्भाग्य है कि अधिकांश प्रान्तों ने अब तक त्रिभाषा सूत्र का कार्यान्वियन विधिवत आरंभ नहीं किया है। यदि हिन्दी भाषी प्रान्त इस में पहल करेंगे तो अहिन्दी भाषी प्रान्त भी उनका अनुसरण करेंगे, यही हमें लगता है। अन्यथा भाषा जोडने के बदले तोडने का कार्य आरंभ करेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गांधीवाद की ओर लौटें

ांधी जयंती सप्ताह समारोह सिलसिले में 2-10-1989 से 0-1989 तक केरल में आयोजित भिन्न सम्मेलनों में प्रमुख नेताओं र समाज सेवकों ने आह्वान किया विश्व की शांति और प्रगति को श्चित करने केलिए हम हिंसा र असत्य पर आधारित वर्तमान ाजिक स्थिति से पिण्ड छुडा त्य और अहिंसा पर आधारित धीवाद की ओर लौटें ।

मारोह का उद्घाटन गांधी न तिरुवनन्तपुरम में करते हुए ल की माननीय राज्यपाल ती रामदुलारी सिन्हा ने कहा ग्रामीण विकास और सर्व क्षम का लक्ष्य प्राप्त करने केलिए धीजी ने जो तरीका निकाला था, आज की भारतीय जनता के में रूढमूल है । आप ने कहा ष्ट्रपिता के आदर्शों के कार्या- न से देश की भावात्मक एकता हो सकेगी । प्रमुख राजनीतिक सामाजिक कार्यकर्ता के. चेल्लप्पन पिल्लै और बजाज पुरस्कार से सम्मानित श्री. के. जनार्दनन पिल्लै ने इस बात पर ज़ोर दिया कि सभी राजनीतिक कार्यकर्ता समाज में फैल रहे भ्रष्टा- चार के विरुद्ध आवाज़ उठायें । केरल हिन्दी प्रचार सभा के मंत्री एवं अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ के कोषाध्यक्ष श्री. एम. के. वेलायुधन नायर ने इस बात पर खेद प्रकट किया कि भारतीय

राष्ट्रपिता के आदर्शों के कार्यान्वयन से देश की भावात्मक एकता सुदृढ हो सकेगी ।

भाषाओं को शिक्षा, शासन और व्यवसाय में प्रमुख स्थान देने का जो संकल्प गांधीजी ने किया था वह अभी संकल्प ही रह गया है । उन्होंने कहा कि प्रजातांत्रिक शासन प्रणाली को सार्थक बनाना हो तो जनता का शासन जनता की भाषा में ही होना चाहिए ।

केरल हिन्दी प्रचार सभा में आयोजित समारोह का उद्घाटन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रचनात्मक कार्यकर्ताओं का काम महज समाज सेवा नहीं है, अपितु सामाजिक परिवर्तन में शीघ्रता लाना भी है।

करते हुए श्री. के. जनार्दनन पिल्लै ने कहा कि विविध क्षेत्रों में नोबल पुरस्कार पाये कुछ प्रतिभाशाली विद्वानों ने "क्लब ऑफ रोम" नामक संस्था के द्वारा "ब्लू प्रिन्ट ऑफ सरवाइवल" नाम से विश्व के भविष्य की जो परिकल्पना बनायी है उसका आधार गांधीवाद ही लगता है। उन्होंने कहा कि खादी प्रचार, हिन्दी प्रचार, नशा बंदी जैसे विविध रचनात्मक कार्यक्रमों में लगे हुए कार्यकर्ता यदि मिल कर काम करें तो देश की प्रगति में तीव्रता लायी जा सकती है। रचनात्मक कार्यकर्ताओं का काम महज समाज सेवा नहीं है, अपितु सामाजिक परिवर्तन में शीघ्रता लाना भी है। गांधीवादी कार्यकर्ता श्री. सी. पी. रामकृष्ण पिल्लै ने आशंका प्रकट की कि प्रतिवर्ष गांधी जयंती मनाते रहने के बावजूद...जिस भ्रातृत्व, सत्य निष्ठा और अहिंसा की कल्पना गांधीजी ने की थी उससे हम दूर हटते जा रहे हैं। यदि इससे होने-वाले भीषण परिणामों से अवगत हो कर युवा पीढ़ी नवनिर्माण के कार्य में नहीं लगे तो संभव है हमारा समाज शीघ्र ही शिथिल हो जायगा। युवा कार्यकर्ता एवं पत्रकार श्री. अजित वेण्णियूर ने वर्तमान शिक्षा की बुराइयों पर प्रकाश डालते हुए आग्रह किया कि गांधीवाद के आधार पर शिक्षा में सुधार लाये जाय। पी. वी. मिनी ने युवा पीढ़ी से आह्वान किया कि वे गांधीजी के व्यक्तित्व और कृतित्व का गहरा अध्ययन करें और उनके आदर्शों का अनुसरण करने का प्रयत्न करें। विद्यार्थियों ने सर्वधर्म प्रार्थना गीत गाये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाषा समस्या में जवाहरलाल नेहरू की नीति जारी रखें

श्री. वर्कला वी. राधाकृष्णन
अध्यक्ष, केरल विधान सभा

नेहरू जन्मशताब्दी समारोह के सिलसिले में केरल हिन्दी प्रचार सभा द्वारा "जवाहरलाल नेहरू और भारतीय भाषायें" विषय पर आयोजित संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए केरल विधान सभा के अध्यक्ष श्री वर्कला वी. राधाकृष्णन ने कहा कि भाषाओं के संबंध में नेहरूजी की दृष्टि संयक तथा समीचीन थी और भारत की भाषा समस्या को सुलझाने के लिए उन्हीं की नीति पर अमल करना एकमात्र स्वीकार्य उपाय है। नेहरूजी में हिन्दी थोपने की कोई भावना नहीं थी। सभी प्रान्तीय भाषाओं के विकास में वे गति लाना चाहते थे। भारत की एकता को सुदृढ करने के माध्यम के रूप में वे हिन्दी को उचित मान्यता देते थे। विश्व भाषा के रूप में उन्होंने अंग्रेजी को भी भारत के लिए आवश्यक माना। इसी दृष्टि के फलस्वरूप उन्होंने त्रिभाषा सूत्र जनता के सामने प्रस्तुत किया। पर कहीं कहीं हिन्दी का इतना विरोध हुआ कि यह सूत्र ठीक तरह से कार्यान्वित नहीं हो सका। हिन्दी विरोध का एक कारण यह भी है कि हिन्दीतर भाषा-भाषियों को यह संदेह होने लगा कि हिन्दीतर भाषियों पर हिन्दी थोपी जा रही है। यह स्थिति हमें बदलनी है। मातृभाषा के प्रति उतना ही प्यार होना चाहिए जितना माँ के दूध के प्रति होता है। भारतीय नागरि होने के नाते राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रति भी प्रेम होना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्रिभाषा सूत्र का प्रभावी कार्यान्वयन हमें हर प्रान्त में करना चाहिए।

मलयालम और अंग्रेजी के विख्यात लेखक डा० के. एम. जोर्ज ने संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए बताया कि केन्द्र साहित्य अकादमी में पंडितजी के अधीन 9 वर्ष तक काम करने का जो अवसर मिला उसे वे अपना सौभाग्य मानते हैं। पंडितजी हर भारतीय भाषा के प्रति इतना प्रेम रखते थे कि वे साहित्य अकादमी में

हिन्दी विरोध का एक कारण यह भी है कि हिन्दीतर भाषा-भाषियों को यह संदेह होने लगा कि हिन्दीतर भाषियों पर हिन्दी थोपी जा रही है।

उन सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं को भी स्थान दिलाना चाहते थे जिन्हें संविधान की अष्टम सूची में अभी तक स्थान नहीं मिला है। वे हर भारतीय भाषा को भारत की संपत्ति मानते थे। उनकी मान्यता थी कि हर भारतीय भाषा में भारतीय चिन्तन और संस्कृति की बहुरूपी अभिव्यक्ति होती है। विभिन्न भारतीय भाषाओं में रचित साहित्य को वे भारतीय साहित्य ही मानते थे।

हर भारतीय भाषा में भारतीय चिन्तन और संस्कृति की बहुरूपी अभिव्यक्ति होती है।

एक बार जब मैथिली को साहित्य अकादमी द्वारा मान्यता दिलाने की बात उठी तो उन्होंने उसके पक्ष में दी गयी दलीलों पर पूरा ध्यान दिया और उस प्रश्न का अध्ययन करने के लिए डा० सुनीति कुमार चाटुरजी की अध्यक्षता में एक-उपसमिति गठित की। जिसकी सिफारिश पर कई भारतीय भाषाओं को मान्यता दी गयी। विदेशी भाषा होने के बावजूद उन्होंने अंग्रेजी को भी इस आधार पर साहित्य अकादमी द्वारा मान्यना दिलाया कि भारत में कई लोग अंग्रेजी बोलते और लिखते हैं। जब कभी साहित्य अकादमी की बैठक होती तब पंडितजी हर भारतीय भाषा के साहित्यकारों से बड़े प्रेम से मिलते और बात करते थे। उन्हीं की प्रेरणा से विविध भारतीय साहित्यों के इतिहास सभी भारतीय भाषाओं में प्रकाशित हो सके। यह कार्य अंग्रेजी के माध्यम से हुआ। डा० जोर्ज ने इस बात पर विचार करने का सुझाव रखा कि अंग्रेजी के माध्यम से प्रान्तीय साहित्यों का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंग्रेजी के माध्यम से प्रान्तीय साहित्यों का आदान-प्रदान करने के बदले क्यों न हिन्दी के माध्यम से यह कार्य संपन्न किया जाय।

आदान-प्रदान करने के बदले क्यों न हिन्दी के माध्यम से यह कार्य संपन्न किया जाय। अंग्रेजी भारतीय साहित्यों के परिवेश से बहुत दूर है जब कि हिन्दी इतर भारतीय साहित्यों के परिवेश के अधिक निकट है। डा० जोर्ज ने इस बात पर खेद प्रकट किया कि अंग्रेजी और हिन्दी के बीच विरोध का भाव उत्पन्न किया जा रहा है जब कि कोई भाषा किसी भाषा के विरुद्ध नहीं हो सकती। सभी भाषायें परस्पर पोषक हैं।

केरल सरकार के समाज कल्याण विभाग की निदेशक श्रीमती के. बी. वत्सलकुमारी ने कहा कि पंडितजी पक्के जनतंत्रवादी थे और जनता की भाषाओं को शीघ्र गति से विकसित कराना चाहते थे। वे मानते थे कि जनता की प्रगति केवल जनता की भाषा द्वारा ही हो सकती है। वे हर भारतीय भाषा को आगे बढाना चाहते थे। हिन्दी को वे अन्य भारतीय भाषाओं की कड़ी मानते थे। अंग्रेजी को उन्होंने इसलिए मान्यता दी कि वैज्ञानिक और तकनीकी विषयों का ज्ञान पाने में अंग्रेजी की उपादेयता आज भी प्रमुख है।

केरल विश्वविद्यालय के पूर्व उप-कुलपति डा० एन. ए. करीम ने कहा कि यद्यपि पं० जवाहरलाल नेहरू की शिक्षा-दीक्षा आरंभ से ही

वैज्ञानिक और तकनीकी विषयों का ज्ञान पाने में अंग्रेजी की उपादेयता आज भी प्रमुख है।

अंग्रेजी में और अंग्रेजी वातावरण में हुई तो भी स्वतंत्रता संग्राम में जुट जाने पर उन्होंने अदम्य देशभक्ति से प्रेरित होकर हिन्दी को अपनाया ताकि वे साधारण जनता के हृदय में सरलता से प्रविष्ट हो सकें। स्वतंत्रता प्राप्ति के पहले भी वे यह मानते थे कि भारत केलिए एक आम भाषा होनी चाहिए जो देश की एकता, व्यक्तित्व और गौरव को सुदृढ करे। वे मानते थे कि सभी भारतीय भाषायें भारत की अनुभूति और अनुभवों की अभिव्यक्ति के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माध्यम हैं । हिन्दी को वे इस रूप में विकसित कराना चाहते थे कि उर्दु और इतर भारतीय भाषाओं से शब्द ग्रहण करके वह भारत की सामासिक संस्कृति का सच्चा प्रतिबिंब बन सके । डा० करीम ने इस बात पर खेद प्रकट किया कि यद्यपि संविधान में अंतर्राष्ट्रीय अंकों को स्वीकृत किया गया है तो भी हिन्दी प्रान्तों के कुछ स्थानों में, रेलवे स्टेशन के प्लाटफोम नंबर आदि तक देवनागरी अंकों में लिखे जाते हैं। इससे हिन्दी विरोध की संभावना बढती है। आप ने कहा कि भाषा की समस्या को राजनीति, धर्म आदि के साथ जोडना देश केलिए हानिकारक होगा । हमें नेहरू की सी सहिष्णुता भाषा के क्षेत्र में बरतनी है ।

केरल विश्वविद्यालय के मलयालम विभाग अध्यक्ष डा० के. रामचन्द्रन नायर ने कहा कि 20 वीं सदी के पूर्वार्ध के तजोमय भारतीय अंतरिक्ष

हिन्दी प्रान्तों के कुछ स्थानों में, रेलवे स्टेशन के प्लाटफोम नंबर आदि तक देवनागरी अंकों में लिखे जाते हैं। इससे हिन्दी विरोध की संभावना बढती है।

हिन्दीवालों की कट्टरता और हिन्दीतर भाषा-भाषियों का हिन्दी विरोध त्यागना होगा।

के ध्रुव नक्षत्र थे नेहरू। उन्होंने भारत की विविधता में एकता बनाये रखना चाहा। इसलिए उन्होंने विविधता के प्रतीकों के रूप में विभिन्न प्रान्तीय भाषाओं को और एकता के प्रतीक के रूप में हिन्दी को विकसित करने का सपना देखा। उनके सपनों का साक्षातकार हमें करना है। इसकेलिए हमें हिन्दीवालों की कट्टरता और हिन्दीतर भाषा-भाषियों का हिन्दी विरोध त्यागना होगा। सुश्री पी. वी. मिनी ने पंडितजी के संस्कृत प्रेम पर प्रकाश डालते हुए कहा कि उन्हें इस बात पर गौरव था कि उन्हें संस्कृत पढना आता था और इस बात का खेद था कि संस्कृत को देश में उचित स्थान मिल नहीं रहा है।

संगोष्ठी में स्वागत भाषण देते हुए केरल हिन्दी प्रचार सभा के मंत्री एवं अखिल भारतीय हिन्दी संस्थासंघ के कोषाध्यक्ष श्री. एम. के. वेलायुधन नायर ने उन् दिनों का स्मरण दिलाया जब सन् उन्नीस सौ इकतीस में स्वतंत्रता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संग्राम के दौरान कमला नेहरू और इन्दिरा प्रियदर्शिनी के साथ पंडितजी तिरुवनन्तपुरम पधारे थे। सरकार के विरोध की परवाह किये बिना केरल हिन्दी प्रचार सभा के संस्थापक एवं प्रथम मंत्री श्री. के. वासुदेवन पिल्लै के नेतृत्व में उनका उचित स्वागत किया गया था। वर्षों बाद दिल्ली में वासुदेवन पिल्लैजी के निर्देशन में प्रस्तुत एक मलयालम नाटक के हिन्दी रूपान्तर "कलम और फावडा" पर जब पंडितजी ने पिल्लैजी का अभिनंदन किया तब तिरुवनन्तपुरम के उस स्वागत का पुराना फोटो देख कर वे भाव विभोर हो उठे थे। श्री नायर ने कहा कि पंडितजी जनतंत्र में इतना विश्वास रखते थे कि उन्होंने भाषा के संबंध में कमाल पाषा के समान स्वेच्छा से कोई निर्णय नहीं लिया। भाषा की समस्या को सुलझाने का अधिकार और अवसर उन्होंने जनता को दे रखा है। हमें देश की एकता को ध्यान में रख कर इस समस्या को हल करना है।

नेहरू जन्म शताब्दी समारोह के सिलसिले में केरल हिन्दी प्रचार सभा द्वारा स्कूल-कोलेज विद्यार्थियों केलिए आयोजित हिन्दी प्रश्नोत्तरी-भाषण प्रतियोगिता के विजेताओं को श्रीमती के. बी. वत्सलकुमारी ने पुरस्कार वितरण किये। मलयालम की कवयित्री श्रीमती लतिका नायर ने पंडितजी को श्रद्धांजली अर्पित करते हुए रचित अपनी एक कविता प्रस्तुत की। विद्यार्थियों ने भारतीय भाषा गीत गाया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंग्रेजी घटाओ, अपनी भाषा बढाओ

डा० श्याम सिंह शशि

विख्यात हिन्दी साहित्यकार एवं केन्द्र सरकार के प्रकाशन विभाग के निदेशक डा० श्याम सिंह शशि ने आह्वान किया कि "अंग्रेजी हटाओ" वाला नारा छोड दें और उसके बदले एक नया नारा अपनायें—"अंग्रेजी घटाओ और अपनी भाषा बढाओ।"

"भारतीय भाषायें—प्रशासन के माध्यम के रूप" में विषय पर केरल हिन्दी प्रचार सभा द्वारा तिरुवनन्तपुरम में 1-11-1989 को आयोजित संगोष्ठी का उद्‌घाटन कर रहे थे डा० शशि।

आप ने कहा:— "हम विदेशी भाषा के दास हैं। तभी तो स्वतंत्रता के बयालीस वर्ष बाद भी सही माने में भारतीय भाषाओं को प्रतिष्ठित नहीं कर पाये। विदेशी भाषा का प्रभुत्व हमें अपनी गरिमामयी संस्कृति से च्युत कर रहा है। भाषा और संस्कृति का गहरा संबंध इस बात से प्रमाणित हो जाता है कि डेढ़ हजार वर्ष पूर्व भारत से गये जिप्सी लोग हिन्दी के माध्यम से अपनी भारतीय संस्कृति को जीवित रखे हुए हैं। समस्त भारतीय भाषाओं के साहित्यों में भारत की संस्कृति का प्रवाह मिलता है। इन साहित्यों को जोडने से ही हम भारतीय जनता के दिलों को जोड सकेंगे और अपनी संस्कृति के अच्छे अंशों को बनाये रख सकेंगे। अतः आवश्यक है कि समस्त भारतीय भाषाओं की साहित्यिक कृतियों का आदान-प्रदान अनुवाद द्वारा हो। हिन्दी में इतर सभी भारतीय भाषाओं की सभी

साहित्यों को जोडने से ही हम भारतीय जनता के दिलों को जोड सकेंगे और अपनी संस्कृति के अच्छे अंशों को बनाये रख सकेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तम रचनायें यथाशीघ्र अनूदित और प्रकाशित की जायें।

संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए केरल विश्वविद्यालय के उपकुलपति डा० ए. सुकुमारन नायर ने बताया— स्वतंत्र भारत में जो सांस्कृतिक विघटन आरंभ हुआ है उसका मुख्य कारण एक सुचिन्तित और सुस्पष्ट राष्ट्रीय भाषा नीति का अभाव है। राजभाषा के विषय पर राजनेताओं और प्रशासकों ने पर्याप्त चिन्तन नहीं किया है। आज भी हमारे देश में विधायन अंग्रेजी में हो रहा है। जनतंत्रात्मक शासन में हर नागरिक

प्रशासन के लिए केन्द्र स्तर पर हिन्दी का और राज्य स्तर पर राज्य की भाषाओं का ही उपयोग हो।

का यह अधिकार है कि प्रत्येक परिस्थिति में राष्ट्र उससे जिस प्रकार के व्यवहार की अपेक्षा रखता है उससे वह पूर्ण रूप से अवगत हो सके। यह तभी होगा जब प्रशासन जनता की भाषा में होगा। प्रशासन केलिए केन्द्र स्तर पर हिन्दी का और राज्य स्तर पर राज्य की भाषाओं का ही उपयोग हो। यह भी विचारणीय है

त्रिभाषा-सूत्र जो बना वह पर्याप्त बौद्धिक और आर्थिक संबल के अभाव में चूर चूर हो गया।

कि जिस प्रकार मलेशिया में विभिन्न भाषाओं के लिए एक ही लिपि अपनायी गयी है उस प्रकार क्यों न भारत की सभी भाषाओं के लिए एक ही लिपि अपनायें।

केरल राज्य भाषा संस्थान के निदेशक डा० ए. एन. पी उम्मर कुट्टी ने कहा:— यदि हम में जनतंत्रात्मक मनोवृत्ति का सही विकास हुआ होता तो स्वतंत्रता प्राप्ति के दिवस से ही प्रशासन केलिए भारत की राष्ट्रीय भाषाओं को ही चुनते। जनतंत्रात्मक शासन जनता की भाषा में ही होना चाहिए। चौदह राष्ट्रीय भाषाओं को प्रशासन का माध्यम बनाने से ही हम संबद्ध भाषा समूहों के विकास में शीघ्रता ला सकेंगे। इन जन समूहों की भावात्मक एकता केलिए हमें अधिक प्रभावी ढंग से भाषा आयोजन करना होगा। त्रिभाषा-सूत्र जो बना वह पर्याप्त बौद्धिक और आर्थिक संबल के अभाव में चूर चूर हो गया। उस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का सफल कार्यान्वयन हो। जिस प्रकार हिन्दी का प्रचार केरल में हो रहा है उस प्रकार हिन्दीतर भाषाओं का प्रचार हिन्दी प्रान्तों में भी हो। तिरुवनन्तपुरम में मलयालम भाषियों के मुख से हिन्दी सुन कर आनन्दित होने का जैसा अवसर आज डा० श्याम सिंह शशि को मिल रहा है, दस साल बाद ही सही लखनऊ या इलहाबाद में दस-पन्द्रह हिन्दी भाषियों के मुख से मलयालम सुन कर आनन्दित होने का वैसा सुवसर मुझे भी मिले। हिन्दी के वर्तमान स्वरूप में परिवर्तन लाना भी होगा ताकि सारे भारतीयों को हिन्दी अपनी भाषा महसूस हो। जिस प्रकार बहुभाषी योरोप, अंग्रेज़ी, इटालियन, फ्रेंच, डच, स्पेनिश जैसी सभी योरोपियन भाषाओं के उचित शब्द चुन कर सभी योरपवासियों केलिए स्वीकार्य एक अखिल योरपीय शब्दावली का निर्माण कर रहा है उसी प्रकार हमें भी सभी भारतीय भाषाओं केलिए स्वीकार्य एक अखिल भारतीय शब्दावली का निर्माण करना होगा। इन सब कार्यों केलिए एक भाषा-योजना-आयोग गठित करना होगा।

कोचिन विश्वविद्यालय के पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष डा० एन. ई. विश्वनाथ अय्यर ने डा० श्याम सिंह शशि के कृतित्व का परिचय दिया और डा० ए. एन पी. उम्मर कुट्टी ने पाटंबर पहना कर डा० शशि का अभिनन्दन किया। स्वागत भाषण में केरल हिन्दी प्रचार सभा के मंत्री एवं अखिल भारतीय हिन्दी संस्था-संघ के कोषाध्यक्ष श्री. एम. के. वेलायुधन नायर ने इस बात पर खेद प्रकट किया कि आज भी केरल का प्रशासन मुख्यत: अंग्रेज़ी में ही चलता है। आप ने आग्रह प्रकट किया कि प्रान्तीय स्तर पर प्रशासन का सारा काम प्रान्तीय भाषा में ही चले। केन्द्र सरकार के साथ सारा पत्राचार अंग्रेज़ी मे चल रहा है। इस प्रयोजन केलिए अंग्रेज़ी के साथ-साथ यथासंभव हिन्दी का भी प्रयोग आरंभ करें।

प्रो० डी. तंकप्पन नायर ने कृतज्ञता प्रकट की। छात्रों ने भारतीय भाषा गीत गाया।

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रान्तीय भाषाओं के साहित्य का प्रकाशन नागरी लिपि में भी हो

श्री. संतोष कुमार

हिन्दी और उर्दू के अनुभवी पत्रकार श्री. संतोष कुमार ने कहा कि भारत की सभी प्रमुख प्रान्तीय भाषाओं की उत्तम साहित्यिक रचनाओं का प्रकाशन देवनागरी लिपि में भी किया जाय ताकि विविध कारणों से अपने प्रान्तों से बाहर बस गये लोगों को अपनी-अपनी मातृभाषा का संपर्क बनाये रखने का अवसर प्राप्त होता रहे। केरल हिन्दी प्रचार सभा के हिन्दी स्नातकोत्तर केन्द्र में हिन्दी पत्रकारिता के नये आयामों पर चर्चा कर रहे थे श्री. संतोष कुमार। उन्होंने अपने अनुभव के आधार पर कहा कि यद्यपि उनके पूर्वज काश्मीर के थे तो भी वर्षों पहले लाहौर में बस जाने के कारण काश्मीरी भाषा से उनका संबन्ध टूटता गया और परिणाम स्वरूप वे काश्मीरी भाषा भूलते गये। अब उनके परिवार के सदस्य काश्मीरी भाषा से अनभिज्ञ रह गये हैं। यही स्थिति दिल्ली, बंबई, कलकत्ता जैसे महानगरों में बसे हुए विविध भाषा-भाषी समूहों की हो सकती है। चूँकि उनके बच्चों की शिक्षा-दीक्षा स्थानीय भाषाओं में होती हैं। इसलिए उन्हें मातृभाषा की लिपि सीखने का अवसर प्राप्त नहीं होता। परिवार में वे कुछ पीढियों तक मातृभाषा बोल लेते हैं। इस अवधि में यदि उन्हें देवनागरी लिपि में अपने मातृभाषा का साहित्य पढने को मिलता रहे तो संभव है कि वे मातृभाषा के साहित्य का भी आस्वादन करते रहेंगे और उनमें जो प्रतिभावान हैं वे मातृभाषा में साहित्य सृजन में भी प्रवृत्त हो जायेंगे। उन्होंने इस बात पर संतोष प्रकट किया कि रवीन्द्रनाथ ठाकुर की बंगला भाषा में लिखी

(शेष भाग पृष्ठ 15 पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केन्द्र सरकार के प्रौढ शिक्षा निदेशालय के पूर्व वरिष्ठ परामर्शदाता एवं अनुभवी प्रौढ शिक्षक श्री. भक्तप्रिय ने कहा कि जिस प्रकार हिन्दीतर प्रान्तों में हिन्दी सिखाई जाती है, उसी प्रकार हिन्दी प्रान्तों में हिन्दीतर भारतीय भाषाएँ सिखाई जाएँ। इससे दो लाभ हो सकते हैं। हिन्दी भाषा-भाषी इतर भारतीय भाषाओं का सामान्य परिचय पा सकते हैं और ऐसे बच्चे जिनके रहे हैं, कन्नड लिखना पढना नहीं जानते। यद्यपि हिन्दी और अंग्रेजी में उनका ज्ञान बढ रहा है तो भी मातृभाषा कन्नड में उनका ज्ञान अनुपयोग के कारण घट रहा है। यह स्थिति ऐसे अन्य परिवारों की भी हो सकती है जो विविध प्रान्तों से आ कर दिल्ली जैसे महानगरों में बस गये हैं। अत: यह उचित होगा कि स्वैच्छिक हिन्दी संस्थाएँ अपने प्रान्तों की भाषाओं का प्रचार हिन्दी

हिन्दी माध्यम से प्रान्तीय भाषाओं का पत्राचार पाठ्यक्रम आरंभ करें

श्री. भक्तप्रिय

परिवार विभिन्न प्रान्तों से आकर हिन्दी प्रान्तों में बस गये हैं अपनी मातृभाषा का अध्ययन कर सकते हैं।

केरल हिन्दी प्रचार सभा में राज्य संसाधन केन्द्र कैनफेड के सहयोग से हिन्दी स्नातकों के लिए आयोजित साक्षरता कार्यकर्ता प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में बोल रहे थे श्री. भक्तप्रिय।

आप ने कहा—मैं कन्नड भाषी हूँ। लेकिन मेरे बच्चे जो दिल्ली में पढ रहे हैं... प्रान्तों में पत्राचार पाठ्यक्रम द्वारा करने का भी जिम्मा उठायें।

उन्होंने इस बात पर संतोष प्रकट किया कि केरल हिन्दी प्रचार सभा हिन्दी स्नातकों के लिए साक्षरता प्रशिक्षण पाठ्यक्रम चला रही है।

प्रौढ शिक्षा निदेशालय के उपनिदेशक डा० डी. एस. मिश्र ने प्रौढ शिक्षा के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए कहा—प्रौढ शिक्षा का अर्थ केवल साक्षरता का प्रचार करना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैच्छिक हिन्दी संस्थाएँ अपने प्रान्तों की भाषाओं का प्रचार हिन्दी प्रान्तों में पत्राचार पाठ्यक्रम द्वारा करने का भी जिम्मा उठायें ।

हीं, बल्कि सफल जीवन के लिए नागरिकों को तैयार करना भी है। शिक्षित व्यक्तियों का दायित्व है कि अशिक्षित भाई, बहनों को शिक्षित करने का प्रयास करें ताकि उन्हें समता, सामाजिक न्याय, व्यक्ति की प्रतिष्ठा, स्वतंत्रता, जनतंत्र जैसे जीवन मूल्यों का अनुभव हो सके।

केरल हिन्दी प्रचार सभा के मंत्री एवं अखिल भारतीय संस्था संघ के कोषाध्यक्ष श्री. एम. के. वेलायुधन नायर अध्यक्ष रहे। कुमारी एस. शोभा ने कृतज्ञता प्रकट की। प्रशिक्षुओं ने साक्षरता गीत गाया।

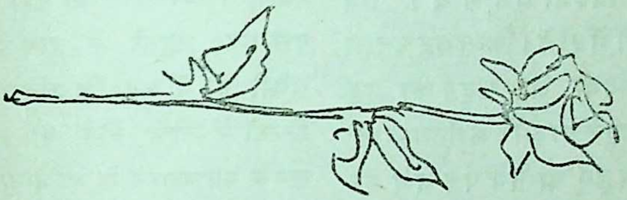

(पृष्ठ 13 का शेष भाग)

हिन्दीतर भाषा-भाषी हिन्दी विद्यार्थी हिन्दी पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रवेश करने की भी योग्यता प्राप्त करें।'

की कई रचनायें देवनागरी लिपि में प्रकाशित हो चुकी है जिनका उपयोग दिल्ली जैसे महानगरों में बसे हुए बंगला भाषा-भाषी बडी सहजता से कर पाते हैं। आप ने आग्रह किया कि हिन्दीतर भाषा-भाषी हिन्दी विद्यार्थी हिन्दी पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रवेश करने की भी योग्यता प्राप्त करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गांधीजी के दो जीवन प्रसंग

कांग्रेस में भी हिन्दी

सन् 1917 की बात है। कलकत्ते में कांग्रेस का अधिवेशन हो रहा था। डाक्टर एनी बेसेन्ट अधिवेशन की अध्यक्षा थीं। तीन बड़े-बड़े नेता उसमें पधारे थे। वे थे लोकमान्य तिलक, गाँधी जी और मालवीय जी। ये तीनों तो देशी वेश में थे। किन्तु अन्य नेता विदेशी वेश में थे। सब नेता अंग्रेजी में बोले। किन्तु यह पतला दुबला आदमी जो खद्दर का एक अंखरखा पहने था और काठियावाड़ी पगड़ी बाँधे हुए था नंगे पैर मंच पर आया और हिन्दी में बोलने लगा। श्रोतागण ने हर्ष की तालियाँ बजाई और बैठक के बाद गाँधी जी की बड़ी प्रशंसा की। यह था बापू का हिन्दी-प्रेम।

हिन्दी ही राष्ट्र की भाषा हो सकती है

हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने में गाँधी जी का बहुत बड़ा हाथ था। शुरू-शुरू में लोकमान्य तिलक हिन्दी के खिलाफ थे। कलकत्ते में एक सभा हुई। उसमें लोकमान्य ने अंग्रेजी में भाषण दिया। गाँधी जी ने इस पर श्रोताओं से पूछा कि जिन लोगों ने लोकमान्य तिलक के व्याख्यान को समझा हो वे अपना हाथ उठावें। बहुत थोड़े आदमियों ने हाथ उठाये। फिर उन्होंने पूछा कि वे हाथ उठावें जिन्होंने व्याख्यान को नहीं समझा। इस पर बहुतों ने हाथ उठाया। गाँधी जी ने कहा कि यदि लोकमान्य हिन्दी में बोले होते तो सब लोग उनके व्याख्यान से लाभ उठा लेते। इसका लोकमान्य पर बड़ा गहरा प्रभाव पड़ा और उन्होंने उसी समय से हिन्दी को अपनाया और कहा कि मैं थोड़े समय में हिन्दी जरूर सीख लूँगा।

गाँधी जी ने मद्रास ऐसे कट्टर प्रान्त में भी हिन्दी का काफी प्रचार किया। वे जहाँ कहीं जाते थे हिन्दी में ही बोलते थे। अतएव उनके व्याख्यान को समझने के लिये कई प्रान्तों के लोगों ने हिन्दी सीखी थी।

[श्री. केदारनाथ गुप्त एवं श्री. गणेश पाण्डेय द्वारा लिखित 'गांधीजी के जीवन प्रसंग' से साभार]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी के भगीरथ स्व० गंगाबाबू

श्री. नरेन्द्र दंढारे
राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा

जिनके हम बहुत निकट होते है उन के बारे में लिखना भी बड़ा मुश्किल है ।

बाबूजीने राजनोति से अलग होने के बाद अपना समय, अपना सारा जीवन, देश की भाषा-समस्या सुलझाने की ओर लगाया । गांधीजी की प्रेरणा से पूरे भारत देश में हिन्दी प्रचार-प्रसार करने के लिए विभिन्न प्रदेशों में हिन्दी स्वैच्छिक संस्थाएँ कई वर्षों से हिन्दी का काम कर रही थी । पर इन संस्थाओं का एक आम मंच संघ नहीं था । बाबूजी ने इस दिशा में तत्कालीन प्रधान मंत्री पं० जवाहरलाल नेहरू तथा शिक्षा मंत्री श्री के. एल. श्रीमाली से विचार-विमर्श कर इस दिशा में प्रयत्न किया और दिल्ली में 4 सितम्बर 1964 को देश की प्रमुख हिन्दी संस्थाओं के एक संघ का निर्माण किया जो अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ के नाम से प्रसिद्ध है । इस संस्था का उद्देश्य सभी राज्यों को हिन्दी स्वैच्छिक संस्थाओं को संगठित कर सामूहिक नेतृत्व प्रदान करना है गंगाबाबू 1964 से अब तक संघ के अध्यक्ष पद पर रहे ।

राष्ट्रभाषा हिन्दी, भारतीय साहित्य व संस्कृति के अग्रदूत की भाँति वे सारे भारत का भ्रमण करते रहते थे । जिस प्रदेश से भाषा संस्कृति साहित्य आदि के सम्मेलनों संगोष्ठियों तथा सभाओं के निमंत्रण आते तो बाबूजी सहज भाव से स्वीकार कर लेते थे । एक बार निमंत्रण स्वीकार करने पर वे कभी टालते नहीं थे । वे हमेशा हिन्दी पर ज्यादा जोर देते थे । इस प्रकार कार्य करना कितना कठिन होता है !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक बार निमंत्रण स्वीकार करने पर वे कभी टालते नहीं थे ।

कार्यक्रम में परिवर्तन होने पर वे नाराज भी होते थे । इसका भी उन्हें ध्यान होता था । रचनात्मक क्षेत्र में कार्य करनेवाले के साथ विचार-विमर्श करना उन्हें अच्छा लगता था । देश के कोने-कोने से भाषा समस्या को सुलझाने के लिए वे जाते थे । संस्थासंघ के अलावा अन्य संस्थाओं के सम्मेलन; स्वर्ण-जयंती, जैसे अधिवेशनों में बडी ही सहजता कुशलता से कार्यकर्ताओं को एक परिवारिक सदस्य के नाते संबोधित करते थे । उनकी शंकाओं का समाधान करते थे । इस प्रकार राजनीति हो, साहित्य-समाज सेवा हो या स्वैच्छिक संगठन, सभी क्षेत्रों में उनकी छाप स्पष्ट दिखाई पडती थी । इन सभी क्षेत्रों में उन्होंने सेतु-निर्माण का कार्य किया है । वे हमेशा अपने भाषण में कहते थे कि हिन्दी यदि राजभाषा बनकर इस देश में रहेगी तो देश की गरिमा बढेगी । यदि हिन्दी नहीं रहेगी तो देश की एकता को खतरा पैदा हो सकता है । हिन्दी के अहित से हमारे राष्ट्रीय गौरव-स्वाभिमान को ही खतरा नहीं है । देश की स्वतंत्रता को भी खतरा पहुँच सकता है। जब मैं शुरू में 1982 में तृतीय विश्व हिन्दी सम्मेलन केलिए दिल्ली आया था तब मुझे उनका दर्शन होने का अवसर मिला । तबसे मुझे उनके बहुत ही निकट आने का सौभाग्य मिला। उनके अभी भी बहुत से प्रसंग याद आते हैं । जब कोई भी खाने की चीज ले आते तो सब मिलकर आपस में बांटते थे । वे कभी अकेले नहीं खाते थे । वे कभी मुझ पर नाराज भी

हिन्दी इस देश में रहेगी तो देश की गरिमा बढेगी । यदि हिन्दी नहीं रहेगी तो देश की एकता को खतरा पैदा हो सकता है

होते थे, कभी प्यार भी करते थे। वे अपने दिलसे कभी नहीं डांटते थे। जब वर्धा में एक बार अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ का शिबिर हुआ था तब वे हमारे निवास स्थान पर आए थे। हमारे सारे परिवार से मिले और सबको आशीर्वाद दिया । वे वर्धा की राष्ट्रभाषा प्रचार समिति की स्वर्णजयंती के अवसर पर वर्धा आए थे ।

जब मैं दिल्ली में था तब उनकी आखिरी मुलाकात और दर्शन हुए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी भारतीय साहित्य का प्रतिबिंब हो

[14-9-1989 को कोचिन में आयोजित क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन में दिये गये भाषण का अंश]

डा० के. एम्. जोर्ज

आज का हमारा लक्ष्य है कि सरकारी कामकाज में फाइलों की कार्यकुशलता तथा तेज़ी, हिन्दी के माध्यम से ज्यादा संतोषजनक बनायी जा सके। मेरी दृष्टि में यह लक्ष्य बहुत सीमित है। हिन्दी भाषा और साहित्य की वर्तमान स्थिति क्या है? क्या हम इसकी शक्ति और कमज़ोरियों को समझकर इसको ज़्यादा आकर्षक और समृद्ध एवं भारतीय संस्कृति को दिखाने योग्य बना सकते हैं? ऐसा करें तो क्या राजकाज का संचालन भी ज़्यादा सरल एवं व्यापक हो नहीं सकता?

बच्चों की शिक्षा को हम लकडी की छडी दिखाकर या मिठाई देकर कर सकते हैं। लेकिन खिलौना दे कर और खेलों के माध्यम से शिक्षण को अधिक आसान बनाया जा सकता है। मेरा यह मत नहीं है कि अध्यापन के क्षेत्र में दण्ड तथा प्रोत्साहन का कोई स्थान नहीं है। उससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि इस शिक्षण में भाग लेनेवालों में किस प्रकार दिलचस्पी पैदा की जाय। यही स्थिति हिन्दी भाषा के प्रचार में लागू होती है। व्यावहारिक क्षेत्रों से ऊपर उठकर आस्वादन के क्षेत्रों पर हमारे कार्यक्रमों को पहुँच जाना है। भारत की सारी संस्कृतियां तथा उनके साहित्यों को समाविष्ट करने के उचित माध्यम के रूप में हिन्दी को आगे ले जाना जरूरी है।

भारत की सारी संस्कृतियों तथा उनके साहित्यों को समाविष्ट करने के उचित माध्यम के रूप में हिन्दी को आगे ले जाना जरूरी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज की हिन्दी भाषा और साहित्य

जनगणना के आधार पर देखा जाए तो 153 मिलियन लोगों द्वारा बोली जानेवाली हिन्दी का स्थान दुनिया में 5 वाँ है। पहले चार स्थानों पर आने वाली भाषाएँ चीनी (700), अंग्रेजी (300), रूसी (200), और स्पानिश (165) हैं। हिन्दी से जनगणना में निम्न स्थान रखनेवाली फ्रन्च (75) और जर्मन (100) भाषाओं को संयुक्त राष्ट्रसंघ ने विश्व-भाषा के रूप में मान्यता प्रदान की है। यद्यपि हिन्दी को स्थान न देने के कार्य में थर्ड वर्ल्ड राष्ट्र के साथ किये जाने वाले अपव्यवहार की झलक दर्शनीय है तो भी यह नहीं कहा जा सकता है कि वही इसका कारण है। अंग्रेजी बोलनेवालों से दुगुने से ज्यादा लोग चीनी भाषा बोलनेवाले मिलेंगे। लेकिन अंग्रेजी की शक्ति लोकप्रियता तथा संसार भर का उसका प्रचार इस भाषा को नहीं है। इस मापदण्ड से हिन्दी को मापना जरूरी हो गया है। विश्व-भाषा के रूप में मान्यता प्राप्त करने का मापदण्ड क्या है? विश्व भर के ज्ञान तथा साहित्य संपदा को समेटने योग्य भण्डार बनने में किसी भाषा ने इस हद तक प्रगति हासिल की है? यही इसका मापदंड है। लेकिन जनसंख्या भी इस बात में एक अभिन्न अंग है।

भारत में हिन्दी का स्तर क्या है? हम सबको मालूम है। फिर भी इस पर छोटी मोटी चर्चा यहाँ समुचित होगी। भारत की जनता के 30% की मातृभाषा है हिन्दी। उर्दू, गुजराती, पंजाबी आदि कई भाषाएँ हिन्दी के बहुत निकट की भाषाएँ हैं। इसके अलावा देश के सभी प्रांतों में खास-कर नगरों में काफी प्रतिशत लोग सामान्य रूप से कार्यसाधक हिन्दी का प्रयोग करते हैं। इस दृष्टि से ऐसा पाया जाता है कि कुल जन-संख्या का करीब आधा भाग हिन्दी जाननेवालों की है। यह एक बड़ी शक्ति है, संपत्ति है। हिन्दी प्रान्त और अन्य आठ सीमावर्ती भाषा-प्रांतों का आपस में असर हुआ करता है। यह ऐसी एक उपलब्धि है जो और किसी भाषा के संबंध में नहीं है।

साहित्य अकादमी से मान्यता प्राप्त 22 भाषाओं के बीच साहित्यिक रचनाओं के आदान प्रदान की बड़ी समस्या आज भी कायम है। उदाहरण के लिए मलयालम से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मान लीजिए कि मलयालम की किसी रचना का अंग्रेज़ी और हिन्दी में अनुवाद हो रहा है। इसमें संदेह की बात नहीं है कि हिन्दी अनुवाद मूल के अधिक निकट होगा।

उड़िया में, पंजाबी से तमिल में या इसके उलटे रूप में रचनाओं के अनुवाद के लिए योग्य व्यक्ति नहीं मिलेगा। अन्य 20 भाषाओं में अनुवादक केवल अंग्रेज़ी और हिन्दी इन दोनों भाषाओं में अनुवाद केलिए मिलेंगे। इन सभी भाषाओं से अंग्रेज़ी और हिन्दी में कुछ रचनाओं के अनुवाद प्रकाश में आये हैं। इस क्षेत्र में साहित्य अकादमी और कुछ प्रकाशन संस्थाओं द्वारा अर्पित सेवाएँ बहुत ही मूल्यवान होने पर भी कहना अनिवार्य है कि बहुत ही अल्पमात्र हैं। मान लीजिए कि मलयालम की किसी रचना का अंग्रेज़ी और हिन्दी में अनुवाद हो रहा है। इस में संदेह की बात नहीं है कि हिन्दी अनुवाद मूल से अधिक निकट होगा। इसका कारण दोनों भाषाओं की सांस्कृतिक एकता ही है। अंग्रेज़ी भाषा कितनी भी विकसित क्यों न हो, उसकी शैली प्रयोग की रीति और वातावरण ज्यादा भिन्न है। बाहरी संस्कृति को लेकर ही वह हमारे सामने है। पर इस भाषा में किसी रचना का अच्छा अनुवाद हो सका तो उस रचना की सारे संसार में लोकप्रियता सुगम हो जाती है। यह एक अच्छी सुविधा है। इन दोनों भाषाओं में अनुवाद होने दें। इसके अलावा जिन भाषाओं में अनुवाद मिलेंगे उन में भी यह प्रक्रिया आगे बढ़े। लेकिन 21 भाषाओं से हिन्दी में अनुवाद की व्यवस्था करने में विपुल और सुनियोजित योजना बहुत ही ज़रूरी है। इस पर विचार करने से पहले एक संतुलनात्मक समीक्षा करूँ।

देश की भाषा समस्या के हल के लिए राज्यों का पुनर्विभाजन हुआ, शिक्षा क्षेत्र में त्रिभाषा सूत्र का प्रस्ताव रखा गया। इसकी पूर्ण सफलता नहीं हुई, यह एक सत्य ही है। ढाई साल पहले नई शिक्षा नीति के संबंध में चर्चा के लिए गठित भारत सरकार की भाषा-नीति संबंधी एक विशेषज्ञ-समिति के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सदस्य की हैसियत से इस विषय पर चर्चा का मुझे भी अवसर मिला था। समिति का निर्देश था कि त्रिभाषा-सूत्र तो एकदम छोड़ देना बुद्धिमानी का काम नहीं है, लेकिन इसमें कुछ एक फेरबदल ज़रूरी है। शिक्षा की ऊर्ध्वगति में जिसमें भाषा का अध्ययन भी शामिल है विद्यार्थियों की संख्या कम होती जायेगी। एक प्रकार के पिरामिड का रूप हमें वहाँ मिलेगा। एक हजार विद्यार्थी प्राथमिक विद्यालय में पढ़ाई शुरू करें तो स्नातक स्तर पर उनमें से सिर्फ एक या दो पहुँच पाएँगे। इस पिरामिड के हम तीन भाग करेंगे। नीचे के हिस्से में सभी लोग एक ही भाषा—प्राय: मातृभाषा—पढ़ते हैं। चार पाँच वर्षों के बाद और एक भाषा का अध्ययन आरंभ होता है। इन भाषाओं का व्यावहारिक जीवन में क्या स्थान है? यह प्रश्न बहुत ही उचित है। एक सूत्र के कार्यान्वयन के प्रयत्न में भाषा का अध्ययन-अध्यापन समाप्त किया जाय तो इसका कोई औचित्य नहीं है। यह प्रश्न संगत है कि किसी केरलीय को अंग्रेज़ी और हिन्दी शिक्षा के बाद कहाँ कैसे लाभदायक सिद्ध होगी। मलयालम सीखनेवाले हिन्दीभाषी

यदि अपनी भाषा में अप्राप्त अच्छी अच्छी साहित्यिक रचनाएँ हिन्दी में मिलना सुगम है तो किसी मलयालम भाषी को हिन्दी पढने से ज्यादा फायदा होगा।

के संबंध में भी यह बात संगत है। यदि अपनी भाषा में अप्राप्त अच्छी अच्छी साहित्यिक रचनाएँ हिन्दी में मिलना सुगम है तो किसी मलयालम भाषी को हिन्दी पढने से ज्यादा फायदा होगा।

भारत जैसे बहुभाषी राष्ट्र सोवियत संघ में कई प्रादेशिक भाषाओं के होते हुए भी रूसी भाषा का उच्च स्थान है। भाषा की समस्या वहाँ भी विद्यमान है। लेकिन वे इस समस्या का हल भारत की तुलना में अधिक सूझ बूझ से करते आ रहे हैं। रूसी भाषा को राज-भाषा का नाम न देकर सिर्फ संपर्क भाषा कहते हैं। लेकिन वह भाषा सोवियत संघ के कोने कोने में प्रयोग में मिलती है। किसी भी भाषा की उत्तम साहित्यिक रचना का उत्कृष्ट अनुवाद रूसी भाषा में कम से कम समय में प्रकाशित किया जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत जैसे बहुभाषी राष्ट्र सोवियत संघ में कई प्रादेशिक भाषाओं के होते हुए भी रूसी भाषा का उच्च स्थान है ।

इस प्रकार एक ही भाषा रूसी में सोवियत संघ के समूचे साहित्य को पढ़ने और आस्वादन करने की सुविधा प्राप्त होती है। सोवियत संघ की अन्य भाषाओं के मुकाबले में रूसी भाषा को प्राप्त विशेष गणना भारत में किसी भाषा को प्राप्त नहीं है।

हिन्दी को साहित्यिक महत्व की प्राप्ति जरूरी

हिन्दी को वर्तमान स्थिति से ऊपर उठाकर प्रादेशिकता के बंधनों से मुक्त कर के भारतीय साहित्य की सर्वांगीण अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में परिवर्तित क्यों नहीं किया जा सकता ? मेरा पूरा विश्वास है कि यह बिलकुल संभव है। उसके लिए बिचारणीय एक योजना की रूपरेखा प्रस्तुत करूँगा । मैं मलयालम में प्रकाशित रचनाओं से शुरू करूंगा। करीब 400 किताबें हर साल मलयालम में प्रकाशित हो रही हैं। इनमें कम से कम 30 रचनाएँ अन्य भाषाओं में प्रचलित होने योग्य होंगी। मलयालम से हिन्दी में अनूदित किताबें ज्यादा नहीं हैं। आज तक प्रकाशित कृतियों में 50 का चयन पहले होना चाहिए। फिर हर साल 20 या 30 कृतियों का चयन कर लें। इन सब का ध्यान से अनुवाद करके आकर्षक हिन्दी में प्रकाशित किया जाना चाहिए। इस प्रकार

हिन्दी को वर्तमान स्थिति से ऊपर उठाकर प्रादेशिकता के बंधनों से मुक्त कर के भारतीय साहित्य की सर्वांगीण अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में परिवर्तित क्यों नहीं किया जा सकता ?

4 या 10 मुख्य भाषाओं से रचनाओं का चयन किया जा सकता है। डोग्री, कोंकणी, मणिपुरी आदि छोटी छोटी भाषाओं में भी अत्युत्तम साहित्यिक सृजन हो रहा है, यह मैं दृढ़ता से कह सकता हूँ। इनकी संख्या शायद कम रहेगी। ऐसी एक समग्र योजना तैयार करने की आवश्यकता है जिससे कि 300 या 400 अनूदित कृतियों का हर वर्ष हिन्दी में प्रकाशन हो। ऐसी स्थिति में 10-15 वर्ष के भीतर हिन्दी साहित्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का स्वरूप ही बदलेगा। यह कहा जा सकता है कि यह भारतीय साहित्य का रूप धारण करेगा।

अनुवाद प्रक्रिया के संबंध में इस अवसर पर और एक शब्द बोलूँ। आज जो अनुवाद हो रहा है उसका स्तर जितना उच्च होना चाहिए उतना नहीं है। मलयालम से हिन्दी में और हिन्दी से मलयालम में अनुवाद करनेवाले आज तक मलयालम भाषी ही मिले हैं। जिस भाषा में अनुवाद किया जाता है उस

ऐसी एक समग्र योजना तैयार करने की आवश्यकता है जिससे कि 300 या 400 अनूदित कृतियों का हर वर्ष हिन्दी में प्रकाशन हो।

भाषा में एक प्रतिष्ठित लेखक होना अच्छे अनुवादक की मूल योग्यता माना जाता है। हिन्दी में अनुवाद करनेवाले को हिन्दी में लिखने की काफी योग्यता हो। प्रायः जिनकी मातृभाषा हिन्दी है उन्हें यह शक्ति मिलती है। मैं यह नहीं भूल जाता कि इसके भी अपवाद हैं। लेकिन हम उस समय तक प्रतीक्षा में नहीं बैठ सकते जब तक आठ या दस

जब इसके अवसर एवं सुविधाएँ उन्हें नहीं दी जाती हैं तब यह जरूरी है कि मलयालम भाषी लोगों के द्वारा किए जाने वाले अनुवाद को हिन्दीभाषी लेखक जाँच करें और उसको संवारें।

हिन्दीभाषी लोग अच्छी तरह मलयालम सीख लें। जब इसके अवसर एवं सुविधाएँ उन्हें नहीं दी जाती हैं तब यह जरूरी है कि मलयालम भाषी लोगों के द्वारा किए जाने वाले अनुवाद की हिन्दी भाषी लेखक जाँच करें और उसको संवारें। इस प्रकार अन्य भाषाओं में भी कुछ समय तक अनुवाद कार्य में दोनों का सहयोग प्राप्त करना जरूरी दिखाई देता है।

मेरी राय में यह हमारी राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक एकता को बल देने-वाली एक प्रधान योजना है। इसके लिए सबसे उचित माध्यम हिन्दी ही है। हिन्दी पूरे देश की भाषा है—इस आशय को सच्चे अर्थ में कार्यान्वित किया जाता है तो ऊपर जिस योजना का उल्लेख किया गया है उसकी स्वीकृति होनी चाहिए। ऐसा करने पर हिन्दी साहित्य कुछ वर्ष में ऐसे एक महान साहित्य का रूप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसा करने पर हिन्दी साहित्य कुछ वर्ष में ऐसे एक महान साहित्य का रूप धारण करेगा जिसमें भारतीय साहित्य के सारे रंग और सौरभ मिले हुए पायेंगे ।

धारण करेगा जिसमें भारतीय साहित्य के सारे रंग और सौरभ मिले हुए पायेंगे। मैं ऐसे एक काल का सपना देख रहा हूँ जिसमें भारतीय साहित्य के सारे रंग और सौरभ मिले हुए पाएँगे । मैं ऐसे एक भविष्य का सपना देख रहा हूँ जिसमें भारत के कोने कोने के पाठक सच्चे दिल से घोषित करगे कि हिन्दी हमारी भाषा है, हिन्दी साहित्य हमारा साहित्य है । आज यदि भारतीय साहित्य को एक विषय के रूप में पढ़ना है तो अमेरिका या आस्ट्रेलिया जाना है । हमारे पास केवल, मलयालम साहित्य, हिन्दी साहित्य तथा तमिल साहित्य आदि पाठ्य विषय के रूप में हैं । हिन्दी के माध्यम से भारतीय साहित्य के अध्ययन की सुविधा जल्दी से जल्दी मिलनी चाहिए । महात्मा गांधी के नेतृत्व में हिन्दी के प्रचार प्रसार में जिस भावावेग का अंश राष्ट्रीय आंदोलन के एक भाग के रूप में आगे बढाया गया था वह हमेशा के लिए नष्ट हो गया है । लेकिन दूसरे तरीके से जनता के मन में हिन्दी के प्रति दिलचस्पी हम जगा सकते हैं । हिन्दी सिनेमा और गीत कुछ हद तक यह कार्य निभाते रहते हैं । इस मनोभाव को आगे बढाने के लिए सबसे सक्षम माध्यम साहित्य है । मेरे विचार में इस क्षेत्र में काफ़ी कार्य नहीं हो रहा है । कहावत है कि दीवार के रहने से ही चित्र की रचना संभव है । हमारे राजभाषा विभाग और हिन्दी प्रचार समितियों ने मिलकर एक मजबूत दीवार खडी कर दी है । अब हमारा कर्तव्य है कि सृजनात्मक साहित्य के क्षेत्र में प्रवेश करके चित्रों की रचना करना । मेरा पूरा विश्वास है कि इस दिशा में प्राप्त प्रगति एवं विकास देश की एकता तथा सांस्कृतिक ऐक्य को हमेशा सुदृढ़ बनायेंगे ।

आज यदि भारतीय साहित्य को एक विषय के रूप में पढ़ना है तो अमेरिका या आस्ट्रेलिया जाना है ।

जय हिन्द ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पढते पढते

बहुभाषिकता और द्विभाषिकता-भारत में ही नहीं

1981 में टेक्सास में सथर्न आंत्रोपोलजिकल सोसाइटी द्वारा आयोजित वार्षिक सम्मेलन की विचार गोष्ठी में प्रस्तुत किये गये आलेखों का संकलन "बाइलिंग्वलिज़म" शीर्षक अंग्रेज़ी पुस्तक में किया गया है। संपादन किया है श्री. आन्डरू डब्लियू मिराकिल ने और प्रकाशन किया है 'दि यूनिवेर्सिटी ऑफ जोर्जिया प्रेस' ने।

उक्त ग्रंथ के कुछ अंश भारत की भाषा समस्या को सुलझाने में सहायक लगते हैं। फिलिपानो और अंग्रेज़ी के उपयोग के संबंध में सन् 1947 में प्रसिडेन्ट मार्कोस द्वारा एशियन भाषा स्तरीकरण सम्मेलन में दिये गये भाषण का यह अंश देखिये।

"The future of Philippines should be one where the Government and the people can communicate in a single medium easily mastered by the masses of the people, a language most identified with the struggles of the nation for independence and dignity, a language that will serve, like the flag itself, as a binding force for permanent national cohesion and solidarity at all levels of society. There is no implication here that we are ready to renounce our possession of English as a world language. For Filipinos in the indefinite future, English will serve as the key to the store house of the world's knowledge, and in an age of knowledge explosion, it will be folly to renounce our comparative advantage in our possession of the English language."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्पेन की भाषा समस्या संबंधी एक आलेख का अंश देखिये :—

In May 1975 a decree authorised the teaching of "native languages" in schools. ...six articles that set down the new policy can be summarised as follows.

(1) Regional languages are the cultural heritage of the Spanish nation and will be protected by the state.

(2) Regional languages can be utilised by all means of diffusion.

(3) Castilian, the official national language and vehicle of communication for all Spaniards, will be used in all acts of the higher organs of the state.

(4) No Spaniard can be the object of discrimination for not knowing or using a regional language.

(5) Local entities and corporations can orally use regional languages for internal affairs.

(6) Regional languages can be taught in schools.

फिलिपाइनस और स्पेन की भाषा नीति से हमें क्या सीखना है इस पर विचार करना उपयोगी होगा ।

(के. जी. बी)

केन्द्रीय हिन्दी समिति की बैठक

केन्द्रीय हिन्दी समिति की 22 वीं बैठक 12-10-1989 को नई दिल्ली में केन्द्र विदेश कार्य मंत्री श्री. पी. वी. नरसिंह राव जी की अध्यक्षता में संपन्न हुई ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दीतर भाषा-भाषी हिन्दी स्नातक राजभाषा का करियर बनायें

श्री. गोविन्ददास वलिया
उप सचिव, राजभाषा विभाग
भारत सरकार

[केरल हिन्दी प्रचार सभा में 9-6-1989 को दिये गये भाषण का सारांश। चित्र केरल ज्योति के अक्तूबर 1989 अंक में दिया गया था]

हिन्दी और अंग्रेज़ी दोनों भाषाओं का प्रयोग आजकल केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों में हो रहा है। इसलिए यह आवश्यक है कि कर्मचारी दोनों भाषाओं में पारंगत हों। उत्तरभारत के अधिकांश लोग तो हिन्दी में पारंगत होंगे। कुछ लोग अंग्रेज़ी में पारगंत होंगे। लेकिन वहाँ ऐसे कर्मचारियों की संख्या काफी कम होती है जो दोनों भाषाओं में पारगंत हों। क्योंकि अभी करियर के रूप में लोगों ने इस चीज़ को अपनाया नहीं है। राजभाषा की नीति का कार्यान्वयन हम करियर के रूप में अपनायें। यह बात अभी हमारे विद्यार्थियों में आयी नहीं है। अभी तक जो विभिन्न पंचवर्षीय योजनायें बनायी जाती थीं, उनमें राजभाषा केलिए अलग से कोई योजना नहीं थी। लेकिन आठवीं पंचवर्षीय

आठवीं पंचवर्षीय योजना में पहली बार राजभाषा केलिए योजना तैयार करने का काम मान लिया गया है

योजना में पहली बार राजभाषा केलिए योजना तैयार करने का काम मान लिया गया है और एक कार्यदल का गठन किया है जिसके अनुसार यह योजना बनायी जा रही है कि किस किस काम में कितना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लक्ष्य निर्धारित किया जाना चाहिए और उन लक्ष्यों को प्राप्त करने केलिए हमको किस प्रकार के और कौन कौन से साधन-संसाधन की आवश्यकता होगी। इसमें हमको बहुत बडी मात्रा में मैनपावर की आवश्यकता होगी। आवश्यकता तो अभी भी है। लेकिन आठवीं पंचवर्षीय योजना के प्रारम्भ होने से और भी अधिक ऐसे व्यक्तियों की आवश्यकता होगी जो हिन्दी और अंग्रेज़ी दोनों ही भाषाओं में पारंगत हों और विशेष रूप से अनुवाद में पारंगत हों, अनुवाद का अच्छा जिन को अनुभव हो और अनुवाद का प्रशिक्षण प्राप्त किया हो। आप लोगों के सामने यह चुनौती है। आप इसे स्वीकार करें और ऐसे व्यक्ति तैयार करें, जो इस काम को करने में सक्षम हों।

केन्द्रीय सरकार की जो राजभाषा नीति है उसके संबंध में मैं कुछ बातें आप को विशेष रूप से बताना चाहता हूँ। संविधान जब हमारे यहाँ लागू हुआ था उस वक्त उस में कहा गया था कि पन्द्रह वर्ष की अवधि तक अंग्रेज़ी का प्रयोग जारी रहेगा और उसके बाद अंग्रेज़ी के प्रयोग के बारे में संसद अधिनियम

जो कर्मचारी हिन्दी में काम करते हैं उनको भी प्रोत्साहन देने केलिए विभिन्न प्रकार की योजनायें हैं।

के द्वारा कोई व्यवस्था कर सकेगा। 1963 में जो अधिनियम बना उसमें इस बात की व्यवस्था की गयी कि अंग्रेज़ी का प्रयोग आगे भी जारी रहेगा। इसको पूरा करने केलिए सरकार ने काफी प्रयास किया है। काफी सुविधाय दे रखी हैं। जिन कर्मचारियों को हिन्दी का कार्य साधक ज्ञान प्राप्त नहीं है वे यदि हिन्दी का कार्य साधक ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं उनको विभिन्न प्रकार के प्रोत्साहन दिये जाते हैं। उनको इन्क्रीमेन्ट वगैरह दिया जाता है और अच्छे नम्बरों से यदि पास होते हैं तो उनको और भी कुछ प्रोत्साहन दिये जाते हैं। उसी प्रकार जो कर्मचारी हिन्दी में काम करते हैं उनको भी प्रोत्साहन देने केलिए विभिन्न प्रकार की योजनायें हैं। यद्यपि हम अपनी राजभाषा में काम करने केलिए प्रोत्साहन की अपेक्षा करें यह बड़ा अटपटा सा मालूम होता है। लेकिन हमको यह जो परिवर्तन करना है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशेष करके दक्षिण भारत में इसप्रकार के कर्मचारियों को प्रोत्साहन देने की बहुत आवश्यकता है ।

उसे धीरे धीरे करना है और प्रोत्साहन से करना है । इसलिए सरकार ने उचित समझा और आवश्यक समझा कि ऐसे कर्मचारियों को प्रोत्साहन देना बहुत आवश्यक है । विशेष करके दक्षिण भारत में इस प्रकार के कर्मचारियों को प्रोत्साहन देने की बहुत आवश्यकता है ।

कुछ संवैधानिक बातें थीं जिनको करना बहुत आवश्यक था । उदाहरण केलिए हमारे संविधान का प्राधिकृत पाठ अभी तक केवल अंग्रेज़ी में था । लेकिन पिछले वर्ष एक संविधान संशोधन अधिनियम पारित किया गया । उसमें यह व्यवस्था की गयी कि राष्ट्रपति के प्राधिकार से भारत के संविधान का जो हिन्दी पाठ तैयार किया जायेगा वह प्राधिकृत पाठ होगा । इसका मतलब यह है कि अब हिन्दी में भी हमारे संविधान का प्राधिकृत पाठ उपलब्ध है और उस संविधान को न्यायालयों में क्वोट किया जा सकता है ।

पहले केन्द्रीय सरकार के द्वारा बनाये गये अधिनियमों का केवल हिन्दी में प्राधिकृत पाठ उपलब्ध कराने की बात थी । लेकिन सरकार ने यह सोचा कि केवल हिन्दी में ही प्राधिकृत पाठ नहीं उपलब्ध होना चाहिए बल्कि हमारे विभिन्न प्रदेशों की राजभाषाओं में भी उन अधिनियमों का प्राधिकृत पाठ उपलब्ध होना चाहिए । इसलिए पिछले वर्ष

अब हिन्दी में भी हमारे संविधान का प्राधिकृत पाठ उपलब्ध है और उस संविधान को न्यायालयों में क्वोट किया जा सकता है ।

एक अधिनियम पारित किया गया जिसके अनुसार यह व्यवस्था की गयी कि किसी भी प्रदेश के राज्यपाल के प्राधिकार से वहाँ की राजभाषा में केन्द्रीय अधिनियमों का जो प्राधिकृत पाठ तैयार किया जायेगा वह उसका प्राधिकृत पाठ माना जायेगा । अब किसी भी केन्द्रीय अधिनियम का न केवल हिन्दी भाषा में बल्कि विभिन्न भाषाओं में जो प्राधिकृत पाठ तैयार किये जायेंगे उनको भी वही मान्यता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होगी जा कि अंग्रेज़ी के उसके ओरिजिनल वर्शन को है। इस प्रकार से संवैधानिक या वैधानिक जो कठिनाइयाँ हैं उनको भी दूर करने का प्रयास किया जा रहा है ताकि हिन्दी के और दूसरी जो राज-भाषायें है विभिन्न प्रदेशों की उनकी मान्यता में या उनकी चलन में या उनके विभिन्न संस्थाओं में प्रयोग के सम्बन्ध में जो कठिनाइयाँ हैं वे दूर की जा सकें।

किसी भी प्रदेश के राज्यपाल के प्राधिकार से वहाँ की राजभाषा में केन्द्रीय अधिनियमों का जो प्राधिकृत पाठ तैयार किया जायेगा वह उसका प्राधिकृत पाठ माना जायेगा।

सरकार का यह प्रयास है कि आगे और भी काम बढता जाय। अभी तक हमारे उच्चतम न्यायालय में हिन्दी के प्रयोग की बात नहीं कही गयी। सरकार यह चाहती है कि उच्चतम न्यायालय में भी हिन्दी का प्रयोग प्रारंभ किया जाय इसके पहले यह व्यवस्थाकी गयी कि उच्च न्यायालय में हिन्दी का प्रयोग किया जा सकता है और

यह व्यवस्था की गयी कि उच्च न्यायालय में हिन्दी का प्रयोग किया जा सकता है और जिन प्रदेशों में दूसरी भाषायें राज-भाषायें हैं उन भाषाओं का भी प्रयोग किया जा सकता है

जिन प्रदेशों में दूसरी भाषायें राज-भाषाय हैं उन भाषाओं का भी प्रयोग किया जा सकता है। इस व्यवस्था के अन्तर्गत अभी सिर्फ चार प्रदेशों-और वे हिन्दी प्रदेश हैं—के राज्यपालों ने हिन्दी के प्रयोग की अनुमति दी है। लेकिन सरकार यह चाहती है कि दूसरे प्रदेशों की सरकारें भी यह प्रयास करें कि वहाँ की राजभाषा का प्रयोग वहाँ के उच्च न्यायालयों में भी किया जाय ताकि प्रदेश की जो प्रादेशिक भाषा है या सरकारी भाषा है या राज-भाषा है उसको भी वही सम्मान मिल सके जो अभी अंग्रेजी को है। मुख्य उद्देश है अंग्रेज़ी के स्थान पर हिन्दी या हमारे प्रदेशों की जो राजभाषायें है उनको प्रतिष्ठापित करना। क्योंकि प्रशासन का मुख्य उद्देश्य जनता की सेवा करना है और जनता की सेवा करने केलिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्व - गीत

श्री. रामेश्वर दयाल दुबे

सारी वसुधा एक हृदय हो ।
हिन्दी बने सेतु हृदयों की
कोटि-कोटि जनता की जय हो ।।

स्नेह-सिक्त मानम की वाणी,
गूंजे गिरा यही कल्याणी ;
चिर उदार भारत की संस्कृति
सदा अभय हो, सदा अजय हो ।
सारी वसुधा एक हृदय हो ।।

मिटे विषमता, सरसे समता,
रहे मूल में मीठी ममता ;
तमस-कालिमा, को विदीर्ण कर
जन-जन का पथ ज्योतिर्मय हो ।
सारी वसुधा एक हृदय हो ।।

जाति, धर्म, भाषा विभिन्न स्वर,
एक राग हिन्दी में सजकर ;
झंकृत करे हृदय-तन्त्री को
स्नेह-भाव प्राणों में लय हो ।
सारी वसुधा एक हृदय हो ।।

शील, शक्ति, सौंदर्य सामन्वित,
ममतामय मानव ही निर्मित ;
'सत्यं, शिवं, सुन्दरम्' संयुत
मानवता की सदा विजय हो ।
सारी वसुधा एक हृदय हो ।।

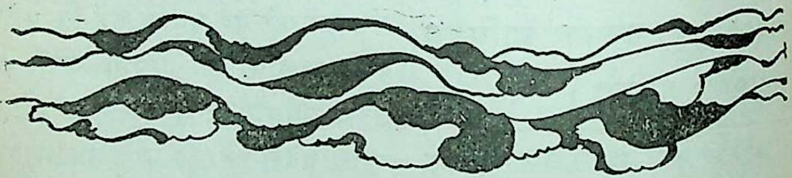

जनता की सेवा करने केलिए जनता के सामने उन्हीं की भाषा में हमको प्रशासन देना है

जनता के सामने उन्हीं की भाषा में हमको प्रशासन देना है। उन्हीं की भाषा में हमको बात करनी है। उन्हीं की भाषा में हमको काम करना है जिस भाषा में वह सदियों से भाव संप्रेषण करते आ रहे हैं, बातचीत करते आ रहे हैं और एक दूसरे का सामाजिक या धार्मिक संबन्ध जो है वह स्थापित करते आ रहे है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

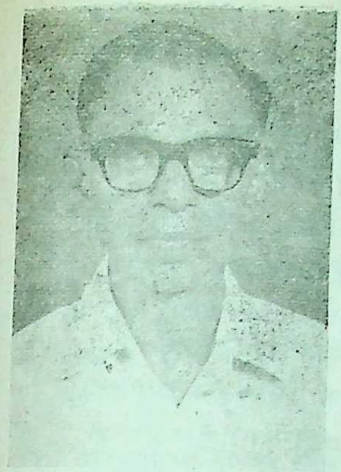

नटन भारती

श्री. एन. दामोदर कुरुप

[श्री. एन. दामोदर कुरुप का लिखा "नटन भारती" नामक लघु काव्य खंडश: प्रकाशित किया जा रहा है। इस की शैली मलयालम भाषा की दृश्य कला 'ओट्टन तुल्लल' की है। प्रथम अध्याय में भारत की झाँकी है। अन्य अध्यायों में पूर्व भारती कम्पनी, (*East India Company*) तथा उनके अत्याचार, उनकी ओर से भारत की आलोचना, भारत को सभ्य बनाने केलिए विदेशियों का परिश्रम, भारत की गुलामी, देशी नेताओं का राजनैतिक क्षेत्र में प्रवेश, बापू का उपदेश, नमक सत्याग्रह खादी, कर निषेध, नियमलंघन, आलोचना का खंडन, विदेशी वस्त्र बहिष्करण, सत्याग्रह संग्राम, गोल मेज, नेताजी की युद्धयात्रा, भारत छोडो आन्दोलन आदि विषयों की चर्चा है।]

नतमस्तक हूँ

जिसकी जटिल जटा में अगणित,
तारामण्डल विकसित होते,
जिसका विमल मुखाम्बुज उस से
तेजोमय हो रञ्जित होता
जिसके भुजग विभूषण होते
सुरसरि सिरपर कलरव करती,
उस करुणामय शिव के पद पर
नतमस्तक हूँ नतमस्तक हूँ ।।
गुरुजन पुरजन हरिजन गिरिजन
सब से मेरा विनय सुनाता,
टूटी फूटी कविता पढकर
मुझपर कंकड फेंक न पावे
हिन्दी होती मधुर तरंगिणि
नवभारत की मधुमय वदनी,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिस में डुबकी लेने मुझ में
बिलकुल शब्द समूह नहीं है।

वैदिक लौकिक प्राकृत पाली
अरबी पारसी आँगल जिन में
जो जो मानस पट पर आवें
उन्हें जुटा जुट लिखता जाऊँ

जैसे मेंढ़क गिरि पर चढने
मोहित होकर उछला करता
वैसे मैं भी लालायित हूँ
हिन्दी कविता लिखने लगता

कविकुल जननी वीणाधारिणि
मेरी तुतली बोली सुन लें
हर्षित पुलकित होकर मुझपर
आशिष बरसें वरदें सुखदें

झाँकी

तो मैं कह दूँ एक कहानी
भारत माँ के वीर सुतों की
जिन वीरों ने जान गँवाकर
आजादी को अमर बनाया,
उनके पदरज सिर पर धरता
अमर कहानी कहता सुन लें

अतलान्तिक के पुरवीतट से
गोरे वणिक पहुँचे भारत
जिसके विभवों ने वणिकों पर
मोह बढाया लोभ बढाया
गिरिशिखरों से बहती नदियाँ
तरुनिकरों में गाती चिड़ियाँ

कटक तटों के निबिड वनों में
अजगज मृगकुल विचर रहे हैं

हरित वनों में फलफूलों से
मण्डित तरुवर झूम रहे हैं
चन्दन निम्ब कदम्ब बिम्ब वट
देवदारु सब छाया देते

झिल्लीका झंकार कहीं पर
हाथी की चिंघाड कहीं पर
गजरिपुऔं का गर्जन भीकर
व्याघ्रों की मुठ-भेड कहीं पर ॥

सरिताओं में तालाबों में
जल कुसुमों की क्यारी होती
नन्ही नन्ही लहरों पर वे
प्रमुदित नटन दिखाया करते ॥

पश्चिम की जो घाटी बुढिया।
युग युग का इतिहास सुनाती,
उसका आँगन वन विभवों के,
विनिमय का आधार बना था ॥

श्यामल कोमल बादल मिलकर
तारापथ का मन्थन करते
रिमझिम रिमझिम बरसा देकर
पृथ्वी माँ को पुलकित करते

सुरबालाओं जैसे लघुलघु,
सरिताएँ किलकार रही हैं,
रंगविरंगे जलखग जिनमें
डुबकी देकर चहक रहे हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गंगा

सत्यव्रती की जननी गंगा
सञ्चित पाप मिटाने वाली
नदियों की वह माता महिसी
विधि की सृजनकला की पटुता

जबकि धरातल शून्य जहाँ पर
हिमशैलों के पुञ्ज रहे तब
विधि ने भेजा सुरसरिता को
भागीरथि को भारत भूपर

हिमगिरिकुल से उछली निकली
शीतलता से सिकुड रही थी
सविता ने तब अरुण पटों का
दान दिया वरदान किया था

अछस्फटिक शरीरिणि जिसको
अरुण पटोंका दान मिला तब
बालारुण निज किरण करों से
लालन पालन करता रहता

पश्चम चन्द्रकला का तिलकम्
मन्दारादि सुमों की माला
वृन्दारक से नन्दित वन्दित
मन्दाकिनि वह सुन्दरगात्री

मञ्जुमुखी या कञ्जमुखी जल
सञ्चय से जो वञ्चित रहते
उनको वाञ्छित फल देने वह
चञ्चलता से निकल पडी थी

इठलाती लुढलाती बढती
चट्टाना को ठुकरा देती
जिससे कन्दुक क्रीडा करती
मन्थर गति से बहती रहती

बीजों का लघु सञ्चय जिसको
दायें बायें बिखरा देती
उगने-जगने बढने जिनपर
शीतल जल को छिटका देती ॥

कर्षकबाला उत्पल नयना
कल्पक लतिका कलाविधात्री
उत्भव रक्षा विलयन कर्त्री,
भारत जन की भाग्यविधात्री

मदगजगमनी मतिमुखि विधुमुखि,
रजतलता या कनकलता है
दिनकर कर से कलन करें तब
कनकलता नही काञ्चनमाला

वह निजपथ में वाराणसि में
गिरिजा पति को निरख सकी थी
भूतगणों से वलयित वन्दित
गजमुख को भी निरख सकी थी

चन्दन कुङ्कुम मलयज लेपन
भालविलोचन माल पर विलसे
मणिगण भूषण भस्मविलेपन
परसू डमरू हाड की माला

सब विधि राजित गंगाधर को
गंगोत्री वह निरख सकी थी
वीणाधर मुनिवृन्द निषेवित
त्रिपुरान्तक को निरख सकी थी

बन्दीजन वृन्दारक जिन के
मंगलरव था मुखरित होता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पति के मुख पर चितवन करती
पदयुग पर वह प्रणमित होती
मन्दाकिनि लघु मन्द हँसी से
अन-मन सी वह अनुमति पाती
काल विलम्बन के बिन बढकर
सागर लहरों से मिल जाती

लवणोदधि से घर्षित होकर
मिश्रण पाकर बुदबुद बनती
भाव बदलती रूप बदलती
भाव बनी फिर वातक बनती

बादल बनकर गर्जन करती
अम्बरतल को कम्पित करती
वैद्युति बनकर घोर छटा से
झट वह भीकर दृश्य दिखाती

मारुत वाहन पर वह चढती
गगनचरी सुरलोक विहारी
दिकपालों से मिलती जुलती
दिग्गज गण भी स्वागत करते

गिरिशिखरों से टकराती फिर
घन गम्भीर प्रवाह बनेगी
पुनरपि नदियाँ बन कर बहती
नदियों की वह माता महि है

षड्रितुओं की निर्मिति करके
जग को रम्योद्यान बनाती
इससे रिषिगण गाते नितराम्
स्वर्गंगा है सुर सरिता है ॥

जिससे सन्तत सुख मिलते है,
जिससे इह-पर शाश्वत होते,
उसके लघुकण रुचकर ये जन,
संसारार्णव दुःख मिटाते ॥

कावेरी गोदावरी यमुना
सिन्धु सरयू पेरियार पम्पा,
झेलम सतलज बीयस चीनार
कृष्णा नीला निरुपम गात्री

कमलोद्भव की वीर पधूटी
चिढकर प्रलय मचाने वाली
ऐसी कितनी नदियाँ बहकर
भारत माँ को पुलकित करती

उन के पूत तटों में कितनी
संस्कृतियों के दीप जगे थे
उनमें अपने पितरों के बहु,
भौतिक शेष जमे रहते हैं

कितने साम्राज्यों की उन्नति
कितने सम्राटों की अवनति,
कितने दुष्ट विदेश नरों को
देख रही थी भारत नदियाँ

अम्बर चुम्बित पर्वतमाला
पहरा देती सीमाओं पर
कैलासाचल जिस में रहते
भागीरथि के साथ पिनाकी

जिनकी महिमामय गाथाएँ
कानों में नित गूँज रही हैं
उनके शुभ चिन्तन से मुनिजन,
जनिमृति भव भय भार हटाते

काञ्चन गंगा जैसे मन्दिर
काञ्चन-मय हो राज रहे हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मसजिद गिरिजा गुरुद्वारे भी
भ्रातृभाव बढाते रहते
धवल नगाधिप विन्ध्यापर्वत
विश्रुत राम कथा के गायक
नंगा पर्वत नरवीरों की
निर्भयता का नित्यनिशान है

सतपुर आरावलि फिर कितने
वर गिरि निकर विराज रहे हैं
जिनके मंगल गायक कविगण
गाते भारत "स्वर्गादपि" है

घोर वनों में जहाँ तहाँ राजत
रिषि मुनियों की छोटी कुटियाँ
जिनमें हवन चलाये जाते
वेद ध्वनियाँ मुखरित होती

संगीतात्मक साम जहाँ पर
मुखरित यति, लय, ताल समन्वित
द्रव्यों की पुनराहुतियों से
धूमिल वन भुवि परिपावन है

दीप जले थे धूप रहे जो
स्वछ सुगन्ध बिछाये रहते।
आंगन जिन में सतसंगी यति
मिलकर वाद विवाद चलाते ।।

नैयायिक हैं ज्योतिषपटु है
मीमांसक हैं कर्मरथी हैं
आयुर्वेदो, गणित विशारद,
शिक्षा, छन्दश्शास्त्र धुरन्धर
कल्प, निरुक्त, निराकुल नियमा-
द्यगणित निगम विचक्षण विरजे

ईशा, काठक, तैत्तरि, मुण्डक
ब्रह्माण्डादि सुविस्तृत व्याख्या
मानव जग के जनिमृति भय अरु,
श्रेय-निश्रेय की चर्चा होती
शुद्ध स्फटिक शरीरी रिषिगण
शिष्ट विशिष्ट वरिष्ट तपोधन

चिन्ता-तुन्दिल बिम्बाधर मुनि,
मन्द हँसी से वचन सुनाये,
मानुष जग में मात्स्यम न्यायम्
मत्सर पथ में वृद्धिदमधुना

कञ्चन तापस रजत शरीरी
खण्डन जिसका करते कहते
"मात्स्यम् सुगम न विघटन मूलम्
प्रेम विहीनम् प्रतिपग कलहम्"

तीसरे विद्युद्दाम समप्रभ:
गुरुगम्भीर तपस्वी कहते
"मार्कटमुत्तमसन्याद्दृश्यम्
अन्त:करण चतुष्टय विजयी"

चौथे पञ्चमतत्व विहारी
उसका खण्डन करके कहते
मार्कटपथमथ दुष्कर-मुष्कर-
मुत्कट तपसा प्राप्यम् परमम्"

दीपपतंगम् न्यायम् मधुरम्
परमपवित्रम् पावनमधुना"
ऐसी बहुविध चर्चा करते
भारत जन के परम पितामह
सन्तत चिन्तन करते मुनिजन
मानवता को मग दिखलाते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनके पथपर जो जन चरते
उनको दुख कदापि न होता
मुनिकुल है या गुरुकुल है यह
नरवर कुल के गुरुवर कुल है ?

आत्मज्ञान परायण नितराम्,
आत्मानात्म विवेकी होकर,
जो जन मानव हित चिन्तक है
उनको आर्य कहा करते हैं ।

भारत जिसमें धन है जन है
खनिज पदारथ बिखेर पडे है
मोती मूँगा मरतक माणिक
वैडूर्यादिक रत्नावलियाँ ।।

वनविभवों का भण्डार घर है
जलविभवों का पारावार है
वरदात्री है भारत जननी
परदेशी का पर्दीसा था

सूरज भगवान होते उनके
वरुण मरुत् वैश्वानर सब में
देवीभाव मनाया जाता,
प्रणमित होते अरुणोदय में

जनता होती भोली-भाली
सब का स्वागत करने वाली,
देश बसे हैं छोटे-मोटे,
आपस में नित लडते-भिडते ।।

गोरों ने तो सोचा इस पर
धाक जमाकर लूट लगावें
जर्जर सर्प शवों का भक्षक
गृध्र दृगों में श्वेत मराली !

जो भू भाग सदा रहा सुकृत का
सद्भाव का सत्य का,
आभा से निज ज्ञान की भुवन को
देता सिखा सभ्यता,
सो भी आज शिकार है बधिक का
विध्वंसकारी यथा,
दुर्भूतादि रुचें सदा रुधिर को
नैवेद्य को न कभी ।।

(क्रमशः)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो शिशु कवितायें

मलयालम कविता

1. चंदा मामा

मूल श्री. चेम्मनम चाक्को

चंदा मामा उतर आये तो
अम्मिणी, क्या क्या दोगी ?
अम्मा जी से ले, मामा को
पेट भर नाश्ता दूँगी ।

चंदा मामा उतर आये तो
चम्पकम, तुम क्या दोगी ?
मामा के प्रिय कंठ केलिए
अपनी माला दूँगी ।

चंदा मामा उतर आये तो
कुट्टप्पन, क्या दोगे ?
गंजे सिर के बीचों बीच में
चुटकी एक लगा दूँ ।

चंदा मामा उतर आये तो
इंदिरा, क्या क्या दोगी ?
जल्दी जल्दी मामा को मैं
मीठा चुम्बन दूँगी ।

अंग्रेजी कविता

2. हफ्ते भर के बच्चे

मूल रचयिता अज्ञात

सोमवार का बच्चा है
सुन्दर मुखवाला
मंगलवार का बच्चा है
श्री से परिपूरित
बुध का बालक व्यथित हृदय है
गुरु का यात्रा प्रेमी
शुक्रवार का शिशु है स्नेही
शनिवार का मुश्किल से जीतता
इतवार का बालक उत्तम
सुन्दर, सुमुख, मनोहर ।

बच्चों के बारे में ऐसे
कितने अन्ध-विचार !

रूपान्तर : श्रीमती वी. गिरिजा 'कार्तिका'
'विजयश्री', शास्तमंगलम
तिरुवनन्तपुरम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रेरणा स्रोत

[अपनी स्वर्गीय माता की पुण्यस्मृति में]

इन्दुमति एन., एम. ए. (द्वितीयवर्ष)
हिन्दी स्नातकोत्तर केन्द्र
केरल हिन्दी प्रचार सभा, तिरुवनन्तपुरम

ओ माँ मम प्रेरणा-स्रोत !
तू अचानक हो गयी गायब,
कैसे विश्वास करूँ मैं ?
पर यह सत्य नितान्त,
कि तू अब रही नहीं इस भूतल पर !
जीवन की क्षण भंगुर वेला में,
एक ध्रुवतारा सदृश
मन हर लिया तू ने कितनों का ?
कितनी निर्दयता से,
छीन लिया विधाता ने तुझे ।
तेरे अरमानों को निभाना ही,
अब कर्तव्य मेरा रह गया है ।
मेरे करों को ग्रहण-कर तू,
रास्ता दिखाती थी मुसीबतों में
अब तू है क्षितिज के उस पार
विश्वास नहीं हो रहा है, पर
विश्वास करना ही पड रहा है
यह एक नितान्त सत्य है;
कि तू अब मेरे साथ नहीं है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरल ज्योति

* प्रधान संपादक
प्रो० पी. जे. जोसफ़

* संपादक
श्री. के. जी. बालकृष्ण पिल्लै

* सह संपादक
श्री. आर. सुकुमारन नायर

* संपादक मण्डल
प्रो० एम. जनार्द्दनन पिल्लै
प्रो० सी. जी. राजगोपाल
श्री. के. वी. कृष्णनकुट्टी
डा० एस. सी. चन्द्रन
डा० एन. जी. देवकी
श्री. एम. के. वेलायुधन नायर

* विज्ञापन दर

		मासिक	वार्षिक
आवरण पृष्ठ 4	रु.	500 00	5000 00
आवरण पृष्ठ 2 एवं 3	रु.	400 00	4000 00
साधारण पृष्ठ पूरा	रु.	300 00	3000 00
साधारण पृष्ठ $\frac{1}{2}$	रु.	175 00	1750 00
साधारण पृष्ठ $\frac{1}{4}$	रु.	100 00	1000 00

संपर्क करें—मंत्री, केरल हिन्दी प्रचार सभा, तिरुवनन्तपुरम-695 014

लेखकों से निवेदन

हिन्दी प्रचार, हिन्दी शिक्षण, भारतीय भाषायें, भारतीय साहित्य, भारतीय संस्कृति जैसे विषयों पर लिखे गये उच्च स्तरीय सचित्र लेखों व संगोष्ठी समाचारों का स्वागत किया जायेगा ।

हिन्दीतर प्रान्तों की सांस्कृतिक, साहित्यिक, कलात्मक विशेषताओं पर लिखी गयी मौलिक और अनूदित रचनाओं को और हिन्दीतर भारतीय भाषाओं की उत्तम रचनाओं के अनुवादों को प्राथमिकता दी जायेगी ।

पांडुलिपियाँ साफ अक्षरों में लिख कर या टाइप करके भेजें । कार्बन प्रतियाँ स्वीकृत नहीं होंगी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवरण पृष्ठ—1

शताभिषिक्त देशिकोत्तम डा० जी. रामचन्द्रन केरल हिन्दी प्रचार सभा द्वारा समर्पित माला और अंग वस्त्र पहने हुए।

आवरण पृष्ठ—2

(1) केरल का प्रमुख उत्सव ओणम केरल हिन्दी प्रचार सभा के तिरुवनन्तपुरम परिसर में बड़े आह्लाद के साथ मनाया गया। छात्रों की पुष्प-सज्जा के दो दृश्य। (2) केरल हिन्दी प्रचार सभा द्वारा तिरुवनन्तपुरम के मुख्य कार्यालय के निकट उप भवन आरंभ किया गया। उसका औपचारिक उद्‌घाटन डा० जयचन्द्र राय ने किया। नीचे (बायें):—सभा के अध्यक्ष प्रो० पी. जे. जोसफ सभा के उप भवन में स्वर्गीय के. वासुदेवन पिल्लै स्मारक ग्रन्थालय के कार्य का निरीक्षण कर रहे हैं। बीच में (बायें):—डा० जयचन्द्र राय केरल हिन्दी प्रचार सभा के कुछ प्रमुख कार्यकर्ताओं के साथ।

आवरण पृष्ठ—3

हिन्दी के प्रमुख कथाकार श्री. श्रवण कुमार केरल हिन्दी प्रचार सभा के स्नातकोत्तर केन्द्र के छात्रों से कहानी की नयी प्रवृत्तियों पर चर्चा कर रहे हैं। बीच में 'वैज्ञानिक और तकनीकी विषयों की उच्च शिक्षा का माध्यम' विषय पर केरल हिन्दी प्रचार सभा के स्नातकोत्तर केन्द्र में आयोजित संगोष्ठी में बोलते हुए (4) केन्द्र वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग के पूर्व अध्यक्ष डा० एम. मलिक मोहम्मद। (5) इलाहाबाद कृषि संस्थान के इंजीनीयरिंग विभागाध्यक्ष प्रो० एन. एन. सिरोठिया। नीचे (6) पं० रामचन्द्र शुक्ल पर डा० जयचन्द्र राय केरल हिन्दी प्रचार सभा में बोल रहे हैं।

आवरण पृष्ठ—4

गाँधी जयन्ती समारोह के अवसर पर तिरुवनन्तपुरम में आयोजित कुछ दृश्य।

ऊपर :

गाँधी भवन में कार्यक्रम का उद्‌घाटन कर रही हैं केरल की माननीय राज्यपाल श्रीमती रामदुलारी सिन्हा। समीप हैं श्री. के. के. चेल्लप्पन पिल्लै और श्री. एम. के. वेलायुधन नायर।

बीच में :

केरल हिन्दी प्रचार सभा में आयोजित सम्मेलन में श्री सी. पी. रामकृष्ण पिल्लै बोल रहे हैं। समीप हैं बजाज पुरस्कार विजेता श्री. के. जनार्दन पिल्लै और पत्रकार श्री. अजित वेण्णियूर। नीचे—केरल हिन्दी प्रचार सभा के छात्रों द्वारा सर्वधर्म प्रार्थना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूरभाष : 61378 तार । 'जय हिन्दी'

केरल ज्योति

पुष्प 24
दल 10
एक प्रति—1 रु० 50 पै०
वार्षिक—15 रु०

सांस्कृतिक जागरण की मासिक पत्रिका
जानवरी 1990

संपादकीय

विश्व साक्षरता वर्ष का स्वागत करें।

1990 का नव वर्ष संपूर्ण साक्षरता का सन्देश लेकर आ रहा है। आइये, इसका भव्य स्वागत करें।

भारत केलिए यह वर्ष अत्यंत महत्वपूर्ण है। विश्व में जितने निरक्षर हैं उन में अधिकांश भारत में हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के साथ भारत की जो जन संख्या थी आज भारत के निरक्षरों की संख्या उस से अधिक है। यद्यपि प्रति वर्ष भारत की निरक्षरता का प्रतिशत घटता जा रहा है तो भी यहाँ के कुल निरक्षरों की संख्या बढती जा रही है। सरकार कई योजनाओं द्वारा निरक्षरता हटाने का जो प्रयत्न करती रही है वह पूर्ण रूप से सफल नहीं हो पा रहा है।

निरक्षरता को महात्मा गाँधी ने लज्जाजनक और पाप कहा था। निरक्षरता दरिद्रता से जुडी हुई है। भारत में निरक्षरों की संख्या और दरिद्रों की संख्या समान है। जो निरक्षर हैं वे कई प्रकार के शोषणों के शिकार बनते हैं और दरिद्रता के गर्त से ऊपर नहीं उठ पाते। अपने अधिकारों के प्रति वे सजग नहीं हैं। उन्हें मजदूरी भी नियमानुसार नहीं मिलती। विकास की योजनाओं के फल बीच में ही हटप लिये जाते हैं। तरह तरह के अंध विश्वास उन्हें पीछे की ओर खींच रहे हैं। मतदान भी वे समझ-बूझ कर नहीं कर पाते हैं। मलयालम के विख्यात कवि डा० एन. वी. कृष्ण वारियर ने कहा—पाँच वर्षों में एक बार पोलिंग बूथ में जाते हैं और चित्रों पर निशान लगा देते हैं। यह कैसा जनतंत्राभास है? मलयालम के दूसरे विख्यात कवि श्री. विष्णुनारायणन नंपूतिरी ने यहाँ तक कहा कि चित्रों पर निशान लगाने का प्रशिक्षण बन्दरों को भी दिया जा सकता है।

केरल के कोट्टयम नगर और एरणाकुलम जिले में जो प्रयोग हाल ही में हुआ है उससे प्रमाणित हो चुका है कि यदि पढे लिखे युवकों की चेतना जाग्रत कर के, उन्हें अभिप्रेरित और प्रशिक्षित किया जा सके तो उन के स्वैच्छिक प्रयत्न से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस अंक में

पडोसी संघ की पृष्ठभूमि 3
मूल : श्री. डी पंकजाक्षन
अनु : सुश्री. टी. श्रीदेवी

डा० एन वी. कृष्ण वारियर 5
डा० जी कमलम्मा

कैनिक्करा कुमार पिल्लै 9
श्रीमती टी. एस पोन्नम्मा

नवसाक्षर साहित्य निर्माण क्यों ? कैसे ? 12
डा० एस. राजप्पन नायर

राष्ट्रीय चेतना की पुन प्रतिष्ठा हिन्दी प्रचार द्वारा 18
डा० रति सक्सेना

नटन भारती 26
श्री. एन. दामोदर कुरुप

धर्म मनुष्य को जोडने केलिए है, तोडने के लिए नहीं 30
स्वामी शशानन्दजी

उपन्यास और सामाजिक परिवर्तन 32
डा० एन. ई. विश्वनाथ अय्यर

हिन्दी साहित्य सम्मेलन का चवालीसवाँ अधिवेशन 36
डा० त्रिवेणीदत्त शुक्ल

संपूर्ण साक्षरता का संकल्प समय बँधित कार्यक्रम के अनुसार यथार्थ बना सकते हैं। राष्ट्रीय साक्षरता मिशन का कार्य आरंभ हो चुका है। राज्य स्तर पर साक्षरता परिषद गठित हो रहे हैं। राज्य संसाधन केन्द्र तो पहले से ही कार्यरत हैं। इन सब सुविधाओं का पूर्ण उपयोग हो सके तो निश्चय ही इसी वर्ष भारत संपूर्ण रूप से साक्षर बन सकेगा।

पर उपयोग होगा कैसे ? जनता को स्वेच्छा से आगे आना होगा। केवल सरकारी अधिकारियों पर सारा भार और सारा दोष देने से काम नहीं चलेगा। देश की हर स्वैच्छिक संस्था को इस दिशा में अहमहमिकया कदम बढाना है।

स्वैच्छिक हिन्दी संस्थाओं का विशेष दायित्व है। महात्मा गाँधी जी का एक रचनात्मक कार्यक्रम है राष्ट्रभाषा प्रचार। उसमें कार्य करते हुए इन संस्थाओं ने अनेक देश प्रेमी कार्यकर्ताओं को तैयार किया है जो राष्ट्रभाषा प्रचार द्वारा देश की सेवा कर रहे हैं। उन्हीं को इस वर्ष साक्षरता प्रचार में भी लगा सकें तो बहुत बडा काम होगा। करीब बीस लाख विद्यार्थी इन संस्थाओं की परीक्षाओं केलिए पढ रहे होंगे। उन को भी यदि इस क्षेत्र में प्रवृत्त कर सकें तो और भी अच्छा होगा।

केरल हिन्दी प्रचार सभा ने एक साक्षरता मंडल आरंभ किया है। सभा के विद्यार्थियों को साक्षरता कार्य में प्रशिक्षण दिया जाने लगा है। राज्य संसाधन केन्द्र का सहयोग सभा को प्राप्त है। इस कार्य को और भी व्यापक बनाने का विचार है। आशा है अन्य स्वैच्छिक हिन्दी संस्थायें भी इस महान यज्ञ में अपनी भूमिका निभायेंगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पडोसी संघ की पृष्ठभूमि

मूल : श्री. डी. पंकजाक्षन
अनुवाद : सुश्री. श्रीदेवी, टी.
(एम. ए. हिन्दी द्वितीय वर्ष)
केरल हिन्दी प्रचार सभा, तिरुवनन्तपुरम

[पुतिया-लोकम पुतिया वऴि (नया विश्व-नया मार्ग) नामक पुस्तिका का अंश]

राजु : प्रादेशिक समूह की कल्पना तो इतिहास के प्रारंभ से ही चली आ रही है। अफलातून के "रिपब्लिक" में यह कल्पना अच्छीतरह दिखाई देती है।

केशु : श्री. सी. अच्युतमेनोन की "सोवियतों का देश" नामक एक पुस्तक है। यह पढने पर मुझे लगा कि नव लोक का अस्तित्व भी प्रादेशिक समूहों की बुनियाद पर ही आधारित है।

नवीन : ऐसे छोटे समूहों को ध्यान में रखकर मार्क्स ने 'कम्यून' कहा था। कम्यूनों के लोक को 'कम्युनिज़म' कह सकते हैं। ग्रामस्वराज की तरह बुनियादी 'कम्यून' भी संसार में किसी भी स्थान में नहीं हुआ है।

मैं : करोडों जीवन की बलि देने पर भी, अनेक महारथियों के परिश्रम करने पर भी, यह क्यों घटित नहीं होती ? अब हमें क्या करना चाहिए? मनुष्यजाति के नूतन अनुसंधान का विषय यही हो कि प्रादेशिक सामूहिक जीवन के नमूने कैसे बनायें। इस तरह के कुछ शोध विश्व के कई भागों में आरंभ हुए हैं। इन में से एक है हमारा "पडोसी संघ" का प्रयोग।

राजु : छोटे समूहों के बारे में आनीबसन्ट ने गहराई से सोचा था। इस पर उन्हें बडा भरोसा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केशु : टालस्टाइ की 'इवान द फूल' नामक एक कहानी है। आधुनिक सामूहिक जीवन का एक सुन्दर चित्र उन्होंने इसमें प्रस्तुत किया है। "रुपया और मतदान" से रहित एक लोक के बारे में "दर्शनम" में पढते समय इवान की यह कहानी मेरी स्मृति में आ जाती है। मुझे ऐसा लगता है कि इस जमाने में लियो टालस्टाय से बहुत अधिक संबंध रखनेवाली है यह "पडोसी संघ" की कल्पना।

नवीन : बाइबिल और कुरान से भी परोक्ष रूप से "पडोसी संघ" का संबन्ध है। बाइबिल में कहा गया है कि "अपनी तरह अपने पडोसियों से भी प्यार करो।" अपने पडोसियों का भी ख्याल करके जीने का आदेश कुरान कई स्थानों में देता है।

राजु : षुमारकर की "स्माल इस ब्यूटिफुल" नामक एक पुस्तक है। उसका ऐसा दृष्टि-कोण महत्व संबन्धी वर्तमान धारणा का एक अच्छा पाठान्तर है।

केशु : लंडन नगर के प्रान्त प्रदेशों में "नईबर हुड" नामक मंडलियों का आविर्भाव हो रहा है। मलयालम में इसका ठीक पर्याय ही 'अयलकूट्टम' (पडोसी संघ) है। मानवीयता पर आधारित प्रादेशिक समूह ब्रगोल में भी हैं। अमेरिका के किसी किसी नगरप्रान्तों में पडोसी आपस में मिलने लगे हैं। अमेरिका के तारे नामक एक विचारक ने भी वालडन पॉंड में इसी प्रकार का विचार प्रस्तुत किया है। केरल में हाल ही में इस प्रकार का उद्यम धार्मिक आधार पर ही आरंभ हो रहा है। फ्रान्स में डॉ० पियरे परोडी "आर्क" नाम से नये समूहों का निर्माण करके नया जीवन बिताते हैं। इस्रायेल की शक्ति वहाँ के "किब्यूट्स्स" हैं। अर्थात् कई खानदानों के लिए एक रसोई। मुझे ऐसा लगता है कि बिना विलंब इस छोटे भूगोल में मानव हिलमिल जाएगा। ये सब उसके प्रमाण हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डा० एन. वी. कृष्ण वारियर

डा० जी. कमलम्मा
कमलानिकेतन, चिलक्कूर, वर्कला

"दबा सकोगे, क्रुद्ध सागर को
मगर दबा न सकोगे
मेरे राज्य का स्वतन्त्रतावेश" (1)

अदम्य उमंग भरे ऐसे शब्दों के सृजन की स्वतंत्रता संप्राप्त करने के लिए—अधीशत्व के विरुद्ध राष्ट्रीय संघर्ष में भाग लेने के लिए 1942 की अगस्त क्रांति के वक्त अपनी नौकरी से इस्तीफा देकर एन. वी. कृष्ण वारियर रणक्षेत्र में उतर पडे। साहित्य के सामाजिक लक्ष्य के संबन्ध में उन्हें कभी कोई सन्देह नहीं था।

बचपन संस्कृत के अध्ययन में बीता तो भी बाद में वे अंग्रेज़ी, जर्मन जैसी विदेशी भाषाओं और तमिल, हिन्दी जैसी भारतीय भाषाओं के प्रकांड पंडित बने।

स्वच्छन्दतावाद के प्रति उनका आदर था फ़िर भी उससे बिदा लेकर

बचपन संस्कृत के अध्ययन में बीता तो भी बाद में वे अंग्रेज़ी, जर्मन जैसी विदेशी भाषाओं और तमिल, हिन्दी जैसी भारतीय भाषाओं के प्रकांड पंडित बने।

वे जीवन-याथार्थ्य को खोज में निकले। प्रारंभ की कविताओं में स्वतंत्रता की अदम्य-उमंग भरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

1948 में उनकी लंबी कवितायें (4) छपकर बाहर आयीं तो वह आधुनिक मलयालम साहित्य के परिवर्तन का युगारंभ लगा।

रहती थी। तभी तो उनकी लेखनी से ये पंक्तियाँ उतरी :—

"दबा सकोगे, क्रुद्ध सागर को,
मगर दबा न सकोगे,
मेरे राज्य का स्वतंत्रतावेश।"

अधीश शक्ति की निष्ठुरता के प्रति उनकी ललकार उपर्युक्त पंक्तियों में गुंजरित थी। निर्भीक होकर उन्होंने कहा कि गरजते सागर को शायद तुम दबा सकोगे। परन्तु स्वतंत्रता की मेरी उमंग कैसे, किससे और कब दबाई जा सकती है ?

नहीं भूलेंगे हम अमृतसर,
चिमूर 'ओ' मिसोर
नहीं भूलेंगे हम बंगाल,
जहाँ पचास लाख मरे
नहीं भूलेंगे हम निज जन को,
जिनने खायी गोलियाँ
नहीं भूलेंगे हम धीर भ्राताओं को
जो चढे फांसी पर। (2)

ये स्मृतियाँ उनके अन्तस्तल में धुआँ उडाती रहीं। तब अहिंसा के सिद्धांतों से उन्हें शान्ति नहीं मिलती थी। फिर भी "अहिंसक सैन्य" "महात्मा गांधी" जैसी कवितायें लिखते वक्त आपने अपना मन यों प्रकट किया है कि—

"आपके चरणों के पीछे चलने के लिए
हमारे रग इस्पात के बने हों,
हे सेनापते" (3)

1948 में उनकी लंबी कवितायें (4) छपकर बाहर आयीं तो वह आधुनिक मलयालम साहित्य के परिवर्तन का युगारंभ लगा। नया जीवन बोध और नयी भाषा शैली —एन. वी. की नयी रीति थी। स्वच्छन्दतावाद की चिता की राख पर खडी होकर उनकी भावना उस ओर बढी जहाँ बंधन को काटने की तलवार की झंकार गुंजरित हो। उन्होंने वसुधा को जगाने का प्रयास उठाया।

जाग तू वसुधे, तेरे सुत उजियारे
का आलिंगन करें।
भूरि सुख का पथ दीखे, भूमध्य की
रेखा में
नाना वेषाचार, विचार, मानव
समोष्मल सहयोग के
गान समान शुभ-सुन्दर यह जीवन
सब कहीं सफल बने। (5)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जंजीरों में जकड़े हाथों की वेदना, मार खानेवाली पीठ की पीड़ा और उठान की उतावली मचानेवाली मानवता का स्वातंत्र्यावेश आदि उनकी कविता में तरंगित होते हैं।

'जहाँ मानव के हाथों में जंजीर है
वहाँ मेरे हाथों में दर्द हुआ।" (6)

यही उनका महत्वपूर्ण सन्देश है। अनाचारों और अन्ध विश्वासों के खिलाफ कृपाण उठाये 'पुराना गीत' (प.यय पाट्टु) प्रेम की मृगतृष्णा में शुष्क जीवन बितानेवाला महावत (आनक्कारन) स्वर्गराज्य के भ्रम में पड़कर ममता तजनेवाले अलैक्ज्रिज जैसी कवितायें लिखते समय भी वे मानते ही हैं कि ममता के बन्धन के सिद्धांत कम मूल्य के नहीं।

"प्रेम-मित्र-जाया-पुत्र
श्रम, विश्रान्ति-यही दैवादेश।" (7)

इसके अलावा और किसी दिव्यत्व को विशेष मूल्य देने की भावना— या विचार उनको है ही नहीं। उन का सिद्धांत यह है कि दूसरों की सहायता करके, किसी पर नाराज न हो करके इस जग में सादा जीवन बिताने में ही स्वर्ग है। उनके विचार में 'इहम्' की ममता से जो सुख मिलता है वही सच्चा है और 'परम्' की भावना का सुख केवल मिथ्या है—मृगतृष्णा है। साधारण जन-जीवन को सार्थक बना देते हैं प्रेम एवं विश्राम। यही दर्शन झूठे देव (कल्ल्दैवङ्ङल) की नायिका के द्वारा उन्होंने प्रकट किया है।

उनकी व्यंग्यात्मक शैली खूब निराली है। चुहियामाता अपने बच्चों से कहती है:—

तुम्हें यह सब कुछ मालूम ही नहीं होता
क्या तुम चूहे हो कि मानव?" (8)

चूहे के बच्चों को मानव से भी श्रेष्ठ साबित करने के प्रयास का व्यंग्य अत्यंत निराला ही है।

बिलकुल सस्ते मानव का मूल्य एक कसाई की भाषा में वे एक जगह बताते हैं:—

"हड्डी; चमड़ा, आंत, खोपड़ी— कुल मिलाकर करीब पचास किलो तौल का; छयासठ इंच कद का, पढ़ना लिखना एवं सफेद दांत दिखाकर हँसना जाननेवाला, पौना भाग दम घुटकर मृत आत्मा सहित एक शरीर बिक्री के लिए है।"

कृष्ण वारियर की कविताओं की समसामयिक मानसिक पीड़ायें कांटों के समान चुभनेवाली होती है। हृदय पर कांटे लगने पर बहने-वाले लहू की बूँदों से कविता के सृजन कर्म में जो सच्चाई महसूस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होती थी, उसे डा० एन. वी. कृष्ण वारियर ने कभी त्याग दिया नहीं। उनकी प्रतिभा बहुमुख एवं अपरिमेय थी। उनकी साहित्योपासना अमूल्य थी।

अटक्कियेक्काम् कोलकोंटलरिटुमल-
कटलिनेयेन्नाल
अटक्कुवानारिन्नेन् राज्यत्तिन्,
स्वतंत्रतावेशम्। 1

"मरन्निटानाममृतसरस्सुम
चिमूरुमिस्सूरुम
मरन्निटानामम्पतुलक्षम मरिच्च
बंगालुम
मरन्निटा नाम् वेटियुण्टकलेत्त-
पुकिय नाट्टारे
मरन्निटा नाम् कपुमरमेरिय धीर
सहोदररे।" 2

तावक पादङ्ङलेत्तुटरानुरुक्कुको—
ण्टावट्टे, सेनापते, ञङ्ङल तन
जरंपुकल्। 3

नीण्ट कवितकल्। 4

नीयुणराऊ वसुधे निन्नुटे मक्कल
वेलिच्चत्ते पुणराऊ
भूरिसुखत्तिन वपि तेलियाऊ
भूमध्यत्तिले रेखयिल नेटुकी
नाना वेषाचार विचार मनुष्य-
समोष्मल सहकरणत्तिन
गानम् पोल शुभ सुन्दरमैहिक
जीवितमेङ्ङुम कतिरणियाऊ। 5

एङ्ङु मनुष्यनु चङ्ङल
कैकलिलङ्ङेन-
कैयुकल नोन्तीटुकयाणु। 6

स्नेहवुम् मित्रङ्ङलुम् पत्नियुम्
पुत्रन्मारुम्
वेलयुम् विश्रान्तियुम् इतुतान
दैवादेशम्। 7

निङ्ङळक्कितोन्नुम
मनस्सिलावुन्निल्ला
निङ्ङेलिलळो मानुषरो। 8

"गढ न सकेंगे, पढ न सकेंगे
अपनी ही परिभाषा हम,
जब तक राग न होगा
अनुराग न होगा
अपनी भाषा का..."

विद्यासागर जोशी
(संकल्प से साभार)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कैनिक्करा कुमार पिल्लै

श्रीमती टी. एस. पोन्नम्मा

अपनी अठासीवीं उम्र में गत साल कैनिक्करा का देहांत हुआ। कैनिक्करा के निधन से मलयालम साहित्य और अभिनय कला के क्षेत्र को जो क्षति पहुँची वह अभी भी वैसी-तैसी बनी हुई है।

कैनिक्करा ऊचे दर्ज के अभिनेता और उन्नत स्तरीय नाटक-ग्रंथों के रचयिता थे। कैनिक्करा कुमारपिल्लै और उनके भाई कैनिक्करा पद्मनाभ पिल्लै दोनों ने केरल में नाटकाभिनय और आस्वादन की प्रक्रिया को मान्यता दी। उन्होंने अभिनय, नाटक-रचना और नाटक-आस्वादन में शिक्षा देने के लिए काफ़ी शिबिरों का प्रबन्ध किया और नवयुवकों को पर्याप्त प्रशिक्षण दिया। मलयालम नाटकों के प्रचारण-प्रसारण में उनका बडा हाथ है। उनका मार्ग-दर्शन शानदार था और आलोचना अनुपम।

कैनिक्करा कुमारपिल्लै जन्म और कर्म से महान थे। उनके नाट्य-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कैनिक्करा ऊँचे दर्जे के अभिनेता और उन्नत स्तरीय नाटक-ग्रंथों के रचयिता थे।

ग्रंथों की शैली सुगम, सुन्दर और स्वच्छन्द है। उनके भाव ऊँचे और उज्ज्वल हैं। नाटक के विविध तत्वों पर उन्होंने आलोचनात्मक विचार प्रकट किये हैं।

महत्तायुक्त अभिनय की अपूर्व चारुता से उन्होंने केरल के 'अमेचुर' 'रंग-मंच को अनुगृहीत किया। उनके कलात्मक वरदानों का यशस्वी प्रभाव हमारे नाटच-साहित्य के संपूर्ण इतिहास पर पडा है। 88 सालों का सफल और धन्य जीवन बिताने के बाद वे महान अभिनेता काल-यवनिका के अन्दर अप्रत्यक्ष हो गए।

उनके रचे नाटक-ग्रंथों में मुख्य हैं–वेषङ्कल, हरिश्चन्द्रन, मणिमंगलम्, मातृका मनुष्यन्, अग्निपरीक्षा, प्रेमपरिणाम, मोहवुं मुक्तियुं, अन्टोणियुं क्लियोपाट्रयुं, दुरन्त

महत्तायुक्त अभिनय की अपूर्व चारुता से उन्होंने केरल के 'अमेचुर' रंग-मंच को अनुगृहीत किया।

दु:शंका। उनके आलोचनात्मक लेख भी प्रसिद्ध हैं। पुरस्कृत रचना "नाटकीयम्" कैनिक्करा के नाटक और मंचन संबंधी लेखों का संकलन है।

गिरीशचन्द्रबोस के "बिल्वमंगल" नामक नायक के वेष मे रंगमंच पर जो अभिनय हुआ उसे श्री. कैनिक्करा अपना सबसे अच्छा और अविस्मरणीय नाटकानुभव मानते थे। इस सिलसिले में वे लिखते हैं—मांस के अन्धे उन्माद से लेकर संबुद्ध

मैं अपने मन में हामलेट की पुन:सृष्टि करता हूँ। अभिनय के वक्त मैं अपनी सृष्टि को—अपने हामलेट को—प्रस्तुत करता हूँ।

मानवात्मा के आनन्द की चरमसीमा तक फैले हुए असाधारण अनुभव-पथों से आत्मविस्मृत होकर मैं ने जो अद्भुत यात्रा की वह सचमुच कला-भावना नहीं, मेरी जिन्दगी की सच्ची और अनश्वर अनुभूति है।

अभिनय के बारे में आप का कथन है—मैं ने हामलेट को आँखों से कभी देखा नहीं। लेकिन शेक्सपीयर ने अपनी अमर वाणियों से हामलेट का जो चित्र खींचा है, उन वाणियों की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहायता से मैं अपने मन में हामलेट की पुनःसृष्टि करता हूँ। अभिनय के वक्त मैं अपनी सृष्टि को अपने हामलेट को—प्रस्तुत करता हूँ। "नाटकीयम्" नामक ग्रंथ में मलयालम-नाटक, नाटक का आरंभ, स्वरूप, विकास, भाव-रूप का वैचित्र्य, आन्तरिक चेतना, केरल-नाटक-रंगमंच, नाटकाभिनय, उसका सर्गात्मक स्वभाव, नाटक में संगीत का स्थान, मलयालम के बाल-नाटक मलयालम नाटकों में राष्ट्रीय एकता का संकल्प, मलयालम नाटक पिछली सदी में, ओथेल्लो, एक असामान्य नाटक, एक नट के कुछ अनुभव आदि कई विषयों पर लेख संकलित हैं।

कैनिक्करा के अभिनय-जीवन की अत्यन्त प्रियंकर भूमिकायें ये हैं— "मार्ताण्डवर्मा" के पद्मनाभन तंपी, अनन्त पद्मनाभन् और तिरुनुरवत्तु पिल्लै, "शेक्स्पीयर" का ओथेल्लो, "सी. वी. रामनपिल्लै" के उग्रहरि पञ्चानन और केशवपिल्लै दिवानजी, "ई. वी. कृष्णपिल्लै" का भरत (रामराजपट्टाभिषेक), "कैनिक्करा पद्मनाभपिल्लै" का वेलुतंपी दलवा "कालवरियिले कल्पपादपम्'—का जूडास्, "डो. एल, रॉय"—का भीष्म, और राम (सीता निर्वास), हरिश्चन्द्र, रुग्मांगद, गोविन्द पणिक्कर और रवीन्द्रन्।

वे उज्ज्वल वक्ता थे, आदर्श अध्यापक थे।

कैनिक्करा कुमार पिल्लै ने आकाशवाणी केलिए भी अनेक नाटक लिखे और प्रसारित किये। यद्यपि वे राजनैतिक चुनावों में भाग नहीं लेते थे तथापि उनके राजनैतिक विचारों का बडा आदर-सम्मान होता था। वे उज्ज्वल वक्ता थे, आदर्श अध्यापक थे। शिक्षा-संबंधी आपके क्रांतिकारी विचारों ने शिक्षा के क्षेत्र में नयी चेतना भर दी।

जब कैनिक्करा करुवाट्टा नामक गाँव के हाई-स्कूल के प्रधान अध्यापक थे तब श्री. तक.षी शिवशंकर पिल्लै उस स्कूल के विद्यार्थी थे जो पीछे चलकर विश्व-प्रसिद्ध मलयालम उपन्यासकार और ज्ञानपीठ-पुरस्कार विजेता बन गए। श्री. तक.षी ने कृतज्ञता के साथ अपने प्रधान अध्यापक की याद की है और बताया है कि "श्री कैनिक्करा ने लडकपन में साहित्य और पुस्तक पारायण की ओर मेरी रुचि बढ़ा दी थी।"

कैनिक्करा का जीवन कला की उपासना था। उनके साहित्यिक और अभिनय-संबंधी वरदानों केलिए केरल सदा कृतज्ञ रहेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवसाक्षर साहित्य निर्माण— क्यों? कैसे?

डा० एस. राजप्पन नायर

केरल विश्वविद्यालय के प्रौढ शिक्षा और शिक्षा विस्तार विभाग के नेतृत्व में 1989 अक्तूबर 25 से 30 तक पाँच दिनों की नव साक्षर साहित्य निर्माण कार्यशाला चली। यह कार्यशाला केन्द्रीय प्रौढ शिक्षा निदेशालय की सहायता से चलायी गयी। इस कार्यशाला में कई प्रख्यात नवसाक्षर साहित्यकारों ने भाग लिया।

केरल विश्वविद्यालय के प्रौढ-शिक्षा विभाग के निदेशक डा० के. शिवदासन पिल्लै ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि मलयालम में नव साक्षरों के लिए लिखी गयी पुस्तकों की संख्या 500 से कम है। इन में से अधिकांश उन की ग्रहण शक्ति के परे हैं। उन्होंने यह भी बताया कि पर्याप्त प्रेरणा और प्रोत्साहन के अभाव में अच्छे लेखक इस दिशा में नहीं आते। प्रौढ शिक्षा कार्यालय की कमियों की ओर इशारा करते हुए उन्होंने बताया कि कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण की अपर्याप्तता और अनुगामी शिक्षा के लिए आवश्यक सामग्रियों की कमी बाधा डालती हैं।

मलयालम में नव साक्षरों के लिए लिखी गयी पुस्तकों की संख्या 500 से कम हैं। इन में से अधिकांश उन की ग्रहण शक्ति के परे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केन्द्रीय सरकार के प्रौढ शिक्षा विभाग के उपनिदेशक डा० डी. एस. मिश्र ने कार्यशाला का उद्घाटन किया। अपने भाषण में उन्होंने प्रौढ शिक्षा सम्बन्धी समस्याओं की ओर संकेत किया। इस दिशा में मुख्य समस्या यह है कि निरक्षरों में सीखने की अभिप्रेरणा नहीं है, इतना ही नहीं, अमनोवैज्ञानिक शिक्षण रीति, और अनुपयुक्त शिक्षण सामग्रियाँ सीखनेवालों को शिक्षा केन्द्रों की ओर लगातार आकर्षित करते रहने में असमर्थ होती हैं। पढाई के बाद

कई नवसाक्षर फिर से निरक्षर बन जाते हैं।

अनुगामी शिक्षा का अभाव भी होता है। इस के फलस्वरूप कई नव साक्षर फिर से निरक्षर बन जाते हैं। उन्होंने बताया कि गाँव के निरक्षर मन बहलाव के लिए भी शिक्षा केन्द्रों में आते हैं। इसलिए वहाँ लोकगीत, संगीत आदि का भी प्रयोग होना चाहिए। उन्होंने बताया कि जन-शिक्षण निलयों को शिक्षा के वातावरण निर्माण का कार्य करना चाहिए, शिक्षा के साथ-

नवसाक्षर की ग्रहण शक्ति के अनुकूल किताबें तैयार करनी चाहिए।

साथ मनोरंजन का कार्यान्वयन भी होना चाहिए।

नवसाक्षर साहित्य के बारे में उन्होंने कहा कि बाज़ार में जो किताबें बिकती हैं वे इन के उपयोग के योग्य नहीं हैं। शिक्षित लोग भी इन किताबों का सन्देश समझने में असमर्थ रहते हैं। इसलिए नवसाक्षर की ग्रहण शक्ति के अनुकूल किताबें तैयार करनी चाहिए।

डा० मिश्र ने कहा कि नव साक्षर के लिए किताबें तैयार करते समय निम्न लिखित बातों पर अवश्य ध्यान दिया जाय।

विषय :— शिक्षार्थियों के सर्वेक्षण के द्वारा उनकी आवश्यकतायें और रुचि जानकर विषय निर्णय कर सकते हैं।

भाषा का स्तर :— लेखक के लिए नवसाक्षर की भाषा योग्यता का पूरा ज्ञान पाना आवश्यक है। साधारण बोल-चाल की भाषा में, छोटे-छोटे वाक्यों में लिखना अच्छा है। एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साधारण बोल-चाल की भाषा में, छोटे-छोटे वाक्यों में लिखना अच्छा है।

वाक्य में 5 से 6 तक के शब्द हो सकते हैं। जो नया नया सीखता है उस के लिए लिखी किताबों में 600 से अधिक शब्द न होने चाहिए।

चित्र – विषय के अनुसार पुस्तक में चित्र भी चाहिए। किताब पढ़ने में कठिनाई होने पर भी वह चित्र देखकर कई बातें समझ सकता है।

डा० अरविन्दाक्षन ने कहा कि नवसाक्षर में वैज्ञानिक अभिवृत्ति की सृष्टि करनी है। वाचन और लेखन सिखाने के साथ विज्ञान की बातें समझाना हमारा लक्ष्य होना चाहिए क्योंकि आनेवाली दुनियाँ में विज्ञान का महत्वपूर्ण स्थान होगा।

डा० राजप्पन नायर ने कहा कि ऐसी किताबों का निर्माण होना चाहिए जिन से नवसाक्षर खूब लाभ उठा सकें। ये किताबें उन के दैनिक जीवन या रोजगार से सम्बन्ध रखने वाली हों। उनके सृजनात्मक

नवसाक्षर में वैज्ञानिक अभिवृत्ति की सृष्टि करनी है।

चिन्तन का विकास करना इन किताबों का लक्ष्य होना चाहिए।

प्रौढ शिक्षा क्षेत्र के अनुभवी विद्वान एवं केन्द्रीय प्रौढ शिक्षा विभाग के परामर्शदाता श्री. भक्त-प्रिय ने नवसाक्षर साहित्य के सम्बन्ध में विशद चर्चा की। एक निरक्षर व्यक्ति दस महीने की पढ़ाई के बाद नवसाक्षर बनता है। अपने भाषाई कौशलों में वह प्रथम या दूसरी कक्षा के बालक के समान है।

ये किताबें उन के दैनिक जीवन या रोजगार से सम्बन्ध रखने-वाली हों।

इसलिए नवसाक्षर के लिए किताबें तैयार करते समय निम्न लिखित बातों पर ध्यान देना चाहिए।

(अ) वाचन का स्तर: नवसाक्षर के वाचन का स्तर बहुत निम्न है। इसलिए विषय और भाषा सरल हों।

(आ) ज्ञान का स्तर: नवसाक्षर के पास कुछ ज्ञान तो अवश्य होता है। इसलिए किताबें उनके ज्ञान को विकसित करने वाली हों।

(इ) वाचन करने की अभिवृत्ति: यही उसके वाचन की आधार-शिला है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(ई) वाचन करने की इच्छा : उचित रूप में पाठ्यविषय प्रस्तुत करके वाचन करने की इच्छा को विकसित कर सकते हैं।

श्री. भक्तप्रिय ने कहा कि पहले और दूसरे स्तर के नव साक्षरों केलिए किताबों की कमी है। नवसाक्षरों को उन्होंने तीन स्तर के माना है। पहले स्तर के नवसाक्षरों की किताबों के वाक्यों में 5 से 7 शब्द ही होने चाहिए। उन के परिचित शब्द हों। ऐसे व्यक्तियों के लिए लिखी पुस्तकों के एक परिच्छेद में केवल 80 शब्द ही होने चाहिए। किताब में कुल 500 से 600 तक ही शब्द होने चाहिए। पृष्ठ संख्या 36 से अधिक न हो।

पहले और दूसरे स्तर के नव साक्षरों केलिए किताबों की कमी है।

दूसरी श्रेणी के व्यक्तियों की किताबों में लगभग 1000 शब्द तक हो सकते हैं। तीसरी श्रेणी के व्यक्ति समाचार पत्र, मासिक पत्रिकायें आदि पढ सकते हैं। उन्होंने आशा की कि इस कार्यशाला में प्रथम श्रेणी के व्यक्तियों के लिए कुछ पुस्तकें अवश्य तैयार हो जायेंगी।

लेखकों को मार्गदर्शन देते हुए, उन्होंने बताया कि—एक समय एक ही संदेश देना चाहिए। जो कुछ हमें बताना है वह स्पष्ट और व्यक्त रूप में बता देना चाहिए। जब नये शब्दों का प्रयोग आता है, खास कर तकनीकी शब्दों के प्रयोग में, विशेष ध्यान रखना चाहिए। ऐसे शब्दों की विस्तृत व्याख्या सरल भाषा में होनी चाहिए ताकि पाठक विषय सम्बन्धी काफ़ी जानकारी प्राप्त कर सकें।

कहानी और विज्ञान सम्बन्धी विषयों की किताबें एक ही प्रकार लिखी नहीं जाती। कहानी की किताब लिखते समय उस की कहानियों में कोई आपसी सम्बन्ध-का होना आवश्यक है। उन के रूप-विधान में भी कुछ समानतायें होनी चाहिए। रूप विधान में भिन्नता आने पर पाठक उलझन में पड़ जायेंगे।

तकनीकी विषयों पर कहानी की शैली में नहीं लिखा जाना चाहिए। पहले, प्रश्न या समस्या को उपस्थित करना चाहिए। फिर उस का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्यशाला के दो दृश्य

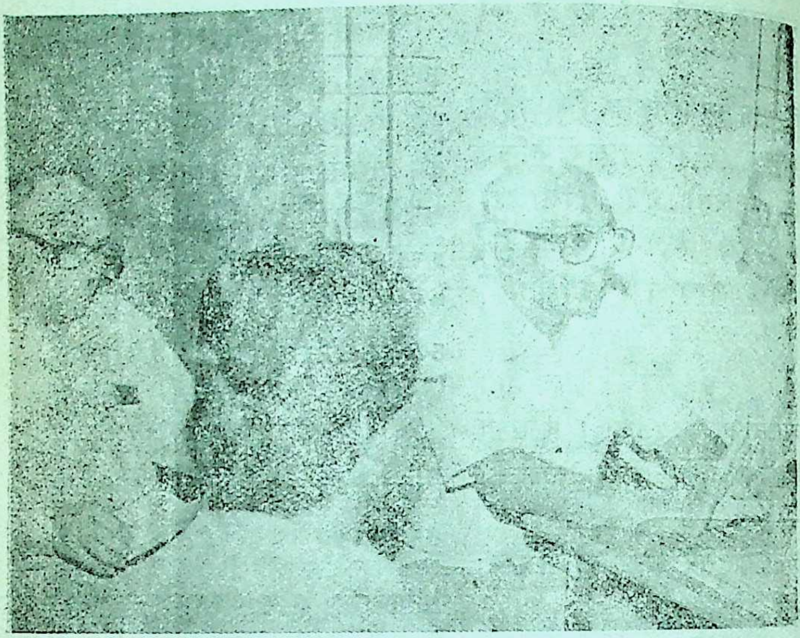

(बायें से) श्री. डी. एस. मिश्र, श्री. भक्तप्रिय और डा० के. शिवदासन पिल्लै

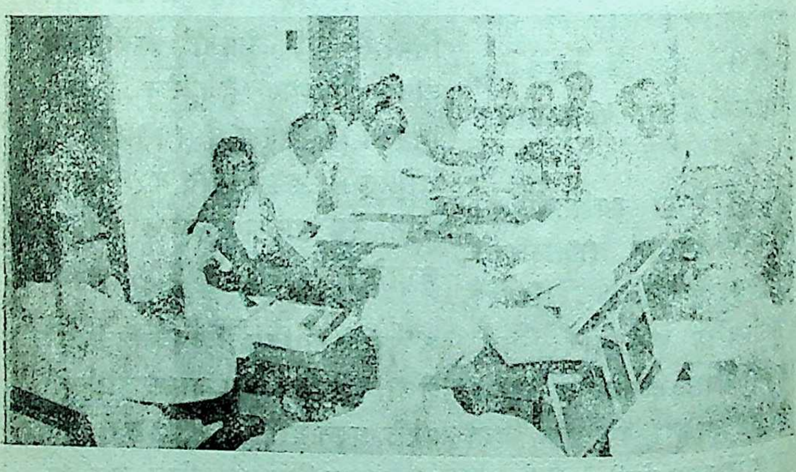

श्री. डी. एस. मिश्र, चर्चा का नेतृत्व कर रहे हैं । दायी छोर पर डा० राजप्पन नायर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसे शब्दों की विस्तृत व्याख्या सरल भाषा में होनी चाहिए ताकि पाठक विषय सम्बन्धी काफ़ी जानकारी प्राप्त कर सकें।

विश्लेषण और उसका समाधान निर्धारण करना चाहिए।

नवसाक्षर साहित्य की छपाई, प्रकाशन आदि में विशेष ध्यान देना चाहिए।

इस कार्यशाला में निम्न लिखित लेखकों की रचनायें चर्चा के लिए प्रस्तुत की गयीं।

लेखक	रचना का शीर्षक
1 डा० सी. पी. अरविन्दाक्षन	मधुरम् (मिठास)
2 श्री. ऐ. आर. अशोक कुमार	नम्मटे आरोग्यम् (हमारा स्वास्थ्य)
3 श्री. के. अय्यप्पन नायर	तरवाडे (खानदान)
4 श्री. के. जी. बालकृष्ण पिल्लै	गांधीजी करयुन्नु (गांधीजी रोते हैं)
5 श्री. आर. जयप्रकाश	बलियाटुकळुटे नाट (बलिमृगों का देश)
6 डा० एन. डी. जोषो	स्त्री तन्ने धनम (स्त्री ही सम्पत्ति है)
7 श्री. मीरान मणकुलम	तीवन्टियुटे कथा (रेलगाडी की कथा)
8 श्री. पी. आर. के. नायर	कलोनी
9 सजनी पवित्रन	अताणु शरी (वही ठीक है)
10 डा० वी. रघु	जीवितम तेटि (जिन्दगी की खोज में)
11 डा० के शिवराजन	पंचायत राज
12 श्री. सुबहन	नेल्लिन्टे कथा (धान की कहानी)
13 कु० ए. श्रीकला	माट्टत्तिन्टे वाषि (परिवर्तन की राह)

इन किताबों की पाण्डुलिपियों की चर्चा हुई और लेखकों ने उन्हें सुधार कर फिर से चर्चा के लिए प्रस्तुत किया चर्चा के बाद इन की स्वीकृति की गई।

कार्यशाला के अन्त में इस में भाग लेनेवाले लेखकों ने अपना अनुभव व्यक्त किया। संगोष्ठी के फलस्वरूप 13 नवसाक्षर किताबों की तैयारी हो गई। इस प्रकार की कार्यशालाओं से बहुत लाभ होता है। केरल विश्व-विद्यालय के प्रौढ़ शिक्षा विभाग के निदेशक डा० के. शिवदासन पिल्लै, केन्द्रीय प्रौढ़ शिक्षा विभाग के डा० मिश्र जी और श्री. भक्त प्रियजी आदि ने सराहनीय काम किया आशा है कि वे आगे भी ऐसा करते रहें। ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"राष्ट्रीय चेतना की पुनः प्रतिष्ठा—हिन्दी प्रचार द्वारा"

डा० रति सक्सेना
प्राध्यापिका
हिन्दी अध्यापक-प्रशिक्षण महाविद्यालय
केरल हिन्दी प्रचार सभा
तिरुवनन्तपुरम

[25-2-1989 से 1-3-1989 तक अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ के सहयोग से केरल हिन्दी प्रचार सभा द्वारा आयोजित अखिल भारतीय हिन्दी कार्यकर्ता शिविर में प्रस्तुत]

राष्ट्रीय चेतना वह मनोभावना है जो किसी भी राष्ट्र के नागरिकों को भावनात्मक रूप से सामूहिक एकता केलिए प्रेरित करती है और राष्ट्र के हित केलिए बाध्य करती है। राष्ट्रीयता केलिए देश के प्रति आत्मीयता की भावना अनिवार्य है। राष्ट्रीय चेतना देश की भौगोलिक स्थिति पर निर्भर नहीं है। यदि ऐसा होता तो भारत जितने विशाल भूखण्ड में एकता के विषय में चर्चा करना ही व्यर्थ रहता। न ही धार्मिकता इस चेतना का आधार है। क्योंकि अनेक धर्मों और संप्रदायों के होते हुए हमारे देश में विभिन्न अवसरों पर अनेकता में एकता परिलक्षित हुई है। इतिहास इस तथ्य का साक्षी है कि स्वतंत्रता की जिस लड़ाई को हमने अंग्रेजों के विरुद्ध लडा था वह किसी एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रीयता केलिए देश के प्रति आत्मीयता की भावना अनिवार्य है।

व्यक्ति की, जाति की, या एक धर्म की नहीं थी, वरन् उसको लड़नेवाले हिन्दू, हिन्दू-मुस्लिम, सिख पारसी सभी भारतीय थे।

"राष्ट्रीय चेतना" तो आवलंबन लेती है मानसिक, सांस्कृतिक, कलात्मक और आध्यात्मिक एकता का और इन सभी को एक रूप में बांधनेवाला सूत्र है "भाषा"। राष्ट्रीय चेतना के सभी पुष्प इस सूत्र में निबद्ध होकर एकता की देवी के पुष्पहार के रूप में गौरवान्वित होते हैं।

"राष्ट्रीयता" भाषा पर कैसे निर्भर करती है? इस प्रश्न का उत्तर जानने केलिए इतिहास पर दृष्टिपात करना आवश्यक है। इतिहास का पुनरवलोकन करने पर हम यह पाते हैं कि ईसा पूर्व युग में मौर्य साम्राज्य ही एक ऐसा सम्राज्य था जो अपनी संपूर्ण प्रभुशक्ति के साथ उत्तर से दक्षिण तक फैला था और इस साम्राज्य की प्रधान 'दरबारी और साहित्यिक भाषा थी "संस्कृत।" कौटिल्य का अर्थशास्त्र भी इसी भाषा में लिखा गया है। शिक्षा का माध्यम भी संस्कृत ही थी जिसने पारस्परिक भाषा वैविध्य की कठिनाई को दूर कर दिया था। जब भी कोई विद्वान अपने किसी ग्रन्थ की रचना करता था तो सार्वदेशिक प्रसार केलिए संस्कृत माध्यम को ही अपनाता था। जब तक देश में "संस्कृत" का व्यवहार होता रहा, एकता की समस्या विकट नहीं रही किन्तु अपभ्रंशों और देशीय भाषा के विकास के साथ-साथ विभेदकता बढती गई और उसी के अनुपात में बोधगम्यता घटती गई। परिणाम स्वरूप वर्षों, युगों तक देश खण्डित ही रहा। 13 वीं शताब्दी के प्रारंभ में एक भाषा बननी आरम्भ हो गई जो देश के आगन्तुक शासकों और मूल निवासियों के सम्पर्क का माध्यम रही। वही "हिन्दी" का प्रारंभिक रूप था। उस समय भी "हिन्दी" शब्द भाषा के रूप में प्रयुक्त था — जाति या धर्म के लिए नहीं।

इस भाषा का प्रयोग सभी धर्मों के अवलम्बी समान रूप से करते रहे। हिन्दी को काव्य जगत में उतारने का श्रेय था "अमीर खुसरो" को और निखारा रहीम ने। न जाने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कितने धार्मिक ग्रन्थों की रचना का माध्यम बनी हमारी हिन्दी भाषा। महाराष्ट्र के सन्त ज्ञानेश्वर, सन्त तुकाराम, गुजरात के नरसिंह मेहता तथा दादू व प्राणनाथ पंत थे नेता— इन सभी ने तो अपने ज्ञान को प्रदर्शित करने का माध्यम चुना "हिन्दी"। सिख सम्प्रदाय के गुरु गोविन्द सिंह ने तो अपने उपदेश भी हिन्दी में दिए। यही नहीं हमारे प्रान्त केरल के प्रसिद्ध राजा स्व० स्वाति तिरुनाल ने तो हिन्दी भाषा में ही कई मधुर पदों की रचना की। जहाँ तक हिन्दी गद्य का प्रश्न है तो हिन्दी का प्राचीनतम गद्य दक्खिनी में ही लिखा गया। प्रस्तुत: दिल्ली और उसके आस-पास की जो बोली दक्खिन में आई वही बहुत ही परिष्कृत और समृद्ध होकर अपने क्षेत्र में गई। इस प्रकार "संस्कृत" की सार्वभौम सत्ता टूटने के कई वर्षों के उपरान्त एक नवीन भाषा 'हिन्दी" के रूप में आकृति लेने लगी और धीरे धीरे किसी-न-किसी रूप में देश के विभिन्न क्षेत्रों में व्याप्त रही।

1600 ई० में अंग्रेजों के आगमन के पश्चात् किस प्रकार हमारा देश परतंत्र हुआ यह सर्वविदित ही है।

प्रतिकार की भावना ने राष्ट्रीय चेतना को तीव्र कर दिया और इस चेतना ने व्यापक राष्ट्रीय आन्दोलन को जन्म दिया।

अंग्रेज़ शासन की भाषा बनाना चाहते थे "अंग्रेज़ी" को, किन्तु इसमें वे सफल नहीं हो पाए। हाँ, इतना हुआ कि वे भारतीयों के मन में अंग्रेज़ों के प्रति अंधमोह का बीजारोपण अवश्य कर पाए। "लार्ड मैकाले" ने तो शिक्षा के क्षेत्र में "अंग्रेज़ी" के महत्व को पूर्ण रूप से बढ़ा दिया।

19 वीं शती में भारत के राष्ट्रीय जीवन में एक क्रान्ति हुई। भारतीयों के मन में अंग्रेजों के व्यवहार से जो अंग्रेज़ों के प्रति व्यापक घृणा की भावना फैल गई थी उससे सारे देश में राष्ट्रीय चेतना की लहर फैल गई। प्रतिकार की भावना ने राष्ट्रीय चेतना को तीव्र कर दिया और इस चेतना ने व्यापक राष्ट्रीय आन्दोलन को जन्म दिया। 1857 की क्रांती की असफलता का एक कारण माना जाने लगा 'एक सम्पर्क भाषा का अभाव।" अत: राष्ट्रीय आन्दोलन के संघर्ष को संगठित करने के लिए भाषा के माध्यम को नितान्त आवश्यक मान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वतंत्रता संग्राम के समय जो राष्ट्रीय चेतना उभरी उसमें "हिन्दी" का योगदान था।

जाने लगा उस समय हिन्दी ही एक ऐसी भाषा थी जिसकी सार्वदेशिकता के कारण "राष्ट्रभाषा" के रूप में गौरवान्वित किया जा सके। हिन्दी को राष्ट्रभाषा घोषित करनेवालों में अहिन्दी प्रदेश के नेता ही अग्रिम पंक्ति में थे। इसमें मूर्धन्य थे बंगाल के स्वनाम धन्य श्री. केशवचन्द्र सेन जिन्होंने 1893 में अपने पत्र सुलभ समाचार में लिखा -यदि भाषा एक न होने पर भारतवर्ष की एकता न हो तो उसका उपाय क्या है? समस्त भारतवर्ष में एक भाषा का प्रयोग करना इसका उपाय है। इस समय भारत में जितनी भाषाएँ प्रचलित हैं, उनमें प्राय: हिन्दी सर्वत्र प्रचलित है। इस हिन्दी को यदि भारतवर्ष की एकमात्र भाषा बनाया जाए तो अनायास ही (यह एकता) शीघ्र सम्पन्न हो सकती है।

"वन्देमातरम्" राष्ट्रगीत के रचयिता स्वर्गीय बंकिमचन्द्र चैटर्जी ने विश्वास के साथ भविष्य-वाणी की थी कि हिन्दी एक दिन भारत की राष्ट्रभाषा होकर रहेगी। कवीन्द्र रवीन्द्र ने भी हिन्दी का समर्थन किया। मूर्धन्य नेता बालगंगाधर तिलक ने भी राष्ट्रभाषा मानने में ज़ोर दिया। लाला लाजपतराय ने पंजाब में प्रसार किया, मालवीय जी ने काशी नागरी प्रचारणी सभा की स्थापना की, राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन तो हिन्दी-साहित्य सम्मेलन के जन्मदाता थे। यही नहीं डा० राजेन्द्रप्रसाद, काका-साहब कालेलकर और सेठ गोविन्द-दास आदि अनेक विद्वान, अनेक नेता इस आन्दोलन के सूत्रधार रहे। गाँधीजी तो हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने के सबसे बडे समर्थक थे-- खादी और हिन्दी का समानान्तर प्रचार करने की कल्पना गाँधीजी की ही थी। गाँधीजी ने 1935 में हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अधिवेशण में अध्यक्ष के रूप में हिन्दी के स्वरूप का प्रस्ताव अनुमोदित करवाया — प्रस्ताव का रूप था—यह सम्मेलन घोषित करता है कि राष्ट्रभाषा की दृष्टि से हिन्दी का वह स्वरूप मान्य समझा जाए जिसका हिन्दु, मुसलमान आदि सभी धर्मों के ग्रामीण और नागरिक व्यवहार करते हैं—जिससे रूढ़, सर्वसुलभ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अरबी, फारसी, अंग्रेज़ी या संस्कृत शब्दों या मुहावरों का बहिष्कार नहीं और जो नागरी या उर्दू लिपि में लिखी जाती है।"

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि स्वतंत्रता संग्राम के समय जो राष्ट्रीय चेतना उभरी उसमें "हिन्दी" का योगदान था। किन्तु स्वतन्त्रता के कुछ समयोपरान्त ही अंग्रेज़ों द्वारा बोई गई विषबेल का अंकुर फूट पड़ा, और उसे सींचा समाज के तथा कथित अभिजात्य वर्ग ने। इस वर्ग विशेष ने अंग्रेज़ी भाषा, अंग्रेज़ी सभ्यता और चाल-चलन का अन्धानुकरण आरम्भ कर दिया। मध्यम वर्गीय समाज जो सदैव इस वर्ग विशेष के अनुकरण से गौरवान्वित होता है अपनी मौलिकता खोकर अंग्रेज़ी सभ्यता-संस्कृति और भाषा के पीछे पीछे भागने लगा। देश में विघटनकारी ताकतें फिर से उभरने लगीं। अनेक धार्मिक व राजनैतिक दलों ने "भाषा" को अपनी लड़ाई का प्रमुख अस्त्र बना लिया। स्थिति धीरे-धीरे विषम से विस्फोटक होने लगी। इतने वर्षों से संजोई हुई एकता बिखरती दिखाई देने लगी। आज अनेक प्रान्तों के युवक इस भ्रामकता के शिकार हो गए कि प्रान्तीय भाषा ही सर्वमान्य भाषा होनी चाहिए— यहाँ तक उनके कोमल मस्तिष्क में यह बात कूट कूट कर भरनी आरम्भ हो गई कि इतने बडे देश को एक सूत्र में बाँधना कठिन ही नहीं अनावश्यक भी है। और यह प्रयास आरम्भ हुआ देश के विघटन का। इस का प्रमुख माध्यम बनी है— भाषा।

किन्तु आज फिर समय आ गया जब हम प्रयास करें "राष्ट्रीय चेतना" के पुनर्जागरण केलिए, हम प्रयास करें अपनी संस्कृति और सभ्यता की रक्षा केलिए! आज हमारे देश निवासी ही नहीं वरन् समस्त विश्व इस बात को मानता है कि मानवता की उच्च सीमा तक पहुँचनेवाली यदि कोई संस्कृति है तो वह है भारतीय संस्कृति! आज यदि विध्वंसता के कगार पर खड़ी मानवता को बचा सकती है तो वह है भारतीय संस्कृति और उसकी सहिष्णुता। किन्तु इस सबके लिए प्रथम आवश्यकता है—हिन्दी के प्रशस्त प्रचार की, जो माध्यम बनेगी न केवल भारतीय एकता अपितु विश्व मानवीय एकता की।

राष्ट्रीय चेतना के पक्ष में हिन्दी के प्रसार से सम्बन्धित कुछ बातें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विचारणीय हैं। इस सम्बन्ध में हम दो रूपों में 'प्रचार कार्य'' बढ़ा सकते हैं। एक शिक्षा के क्षेत्र में और दूसरा पाठ्येतर, कार्यक्रम के रूप में। शिक्षा के क्षेत्र में यह बात सर्वमान्य है कि शिक्षा का माध्यम तो मातृभाषा होनी चाहिए। जैसा कि स्वयं गांधी ने भी कहा था कि मातृभाषा माँ के दूध के समान मानसिक विकास केलिए आवश्यक है। लेकिन सम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दी को दूसरी मुख्य भाषा के रूप में पढाना चाहिए।

अनेक प्रान्तों में हिन्दी का शिक्षण पांचवीं कक्षा से आरम्भ होता है।

हिन्दी का शिक्षण पहली कक्षा से आरम्भ होना चाहिए।

तब तक बालक की बुद्धि विकसित हो जाती है और दूसरी भाषा को मानसिक रूप में अपनाने में कठिनाई होती है। अत: हिन्दी का शिक्षण पहली कक्षा से आरम्भ होना चाहिए।

बच्चों की हिन्दी पाठ्यपुस्तकें इतनी रोचक होनी चाहिए कि विषय की उत्सुकता में भाषा की अल्पज्ञता रोड़े न डाले।

"राष्ट्रीय चेतना" को जागृत करनेवाले अनेक प्रसंगों, कहानियों और पुरा-कथाओं को हिन्दी की पुस्तकों में शामिल करने के साथ-साथ वैज्ञानिक कथाओं को भी स्थान दिया जाए।

हिन्दी पाठ्यपुस्तकों के साथ ऐसी सामग्री तैयार की जाए जो पाठों में प्रयुक्त होनेवाले मुहावरों और देशीय कठिन शब्दों का अर्थ उनके रुचिकर इतिहास के साथ प्रस्तुत करे।

देश भक्ति के गीत न केवल हिन्दी भाषा के माध्यम से अपितु अन्य सभी प्रान्तीय भाषाओं के माध्यम से सिखाए जाएँ और शिक्षा का एक अंग बनाया जाए।

एन. सी. सी., गाइडिंग, बुलबुल आदि की शिक्षा अनिवार्य रूप से दी जाए जिसमें हिन्दी में कमाण्ड दिया जाए। बच्चों को यह समझाया जाए कि युद्ध के मैदान में सैनिक अपनी राष्ट्रभाषा में ही बातचीत करना पसन्द करते हैं।

शिक्षकों को नवीन पद्धतियों की पुनरावृत्ति के लिए समय समय पर शिविरों का आयोजन किया जाए।

"लिपि" को अधिक सरल बनाया जाए और कुछ शिक्षक सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों में भेजे जाए जो वैज्ञानिक और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रुचिकर तरीके से लिपि की शिक्षा दें।

हिन्दी प्रचार के लिए सर्वाधिक आवश्यक है कि हिन्दी शिक्षकों की शिक्षा पर उचित ध्यान दिया जाना। हमारा दुर्भाग्य है कि हिन्दी भाषी क्षेत्र में हिन्दी शिक्षक को अधिक आदर नहीं मिलता है और अनेक शिक्षक भी यही समझते हैं कि यह तो उनकी मातृभाषा है, इसको पढ़ाना अधिक सरल है। दक्षिण क्षेत्रों के हिन्दी शिक्षकों को सरकारी खर्च पर हिन्दी प्रदेशों का भ्रमण करने की सुविधा देनी चाहिए जिससे वे कुछ आगे बढ़ें और सीखें।

उच्च शिक्षा का माध्यम व उँची नौकरियां को पाने का माध्यम भी हिन्दी होना चाहिए जिससे युवकों का रुझान इस ओर हो।

समस्त शिक्षित समाज को यह प्रण करना चाहिए कि वे यथासंभव हिन्दी मे ही बातीचत करें।

दक्षिण क्षेत्रों के हिन्दी शिक्षकों को सरकारी खर्च पर हिन्दी प्रदेशों का भ्रमण करने की सुविधा देनी चाहिए।

अब कुछ कार्यक्रम पाठ्येतर भी हैं—जिन्हें लागू करने से हिन्दी प्रचार में सहायता मिलेगी :—

गोष्ठियों, वादविवादों और भाषा प्रतियोगिताओं का अयोजन केन्द्रीय स्तर पर किया जाना चाहिए, जिससे दूसरे प्रान्तों के लोगों से मिलने का भी अवसर मिले।

प्रश्नोत्तरी कार्यक्रमों का (क्विज़) आयोजन हिन्दी में हो और उनमें अधिकतर ऐसे प्रश्नों को रखा जाए जो हमारी राष्ट्रीय चेतना को उभारने में सहायक हों।

दूरदर्शन में अच्छे-अच्छे साहित्यकारों की रचनाओं को आकर्षक रूप में प्रस्तुत किया जाए जैसा कि आजकल "गण देवता" के प्रस्तुतीकरण में दिखाया गया; कर्मभूमि में दिखाया जा रहा है। ऐसी रचनायें रुचिकर होने के साथ साथ राष्ट्रीय चेतना उत्पन्न करती हैं।

हमारे देश की नृत्य कला बहुत विकसित है चाहे वह रास हो या चारकुला हो, गरबा हो या डांड हो, और चाहे वह कथकलि हो या भरत नाट्यं। अधिकतर सारे नृत्य धार्मिक कथाओं की पृष्ठभूमि लिए हैं अतः दूसरे प्रान्त में समझने में कठिनाई भी नहीं होती है। इन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नृत्यों को शिक्षा का ही अंग मानते हुए एक दूसरे प्रान्त में प्रदर्शन किया जाए।

अनेक शिविरों का आयोजन किया जाए जिसमें युवावर्ग के प्रतिनिधि छात्र-छात्राएँ भाग लें।

न्यायालयों की भाषा में हिन्दी का अधिक समावेश किया जाए।

हिन्दी को केवल अन्य भाषा के रूप में ही स्वीकार नहीं किया जाए किन्तु इसे रूप है "सांस्कृतिक भाषा" का जो अपने अन्दर युगों युगों की संस्कृति को समेटकर मानव के तृषित प्राण की प्यास मिटा सके। इसके लिए आगे आना है युवावर्ग

हम किसी भी स्थिति में अपने देश की एकता को विखण्डित नहीं होने देंगे, हम रक्षा करेंगे अपने देश की, अपनी संस्कृति की और अपनी भाषा की।

को, युवा शिक्षकों को। हमें एक जुट हो कर प्रण करना है कि हम किसी भी स्थिति में अपने देश की एकता को विखण्डित नहीं होने देंगे, हम रक्षा करेंगे अपने देश की, अपनी संस्कृति की और अपनी भाषा की।

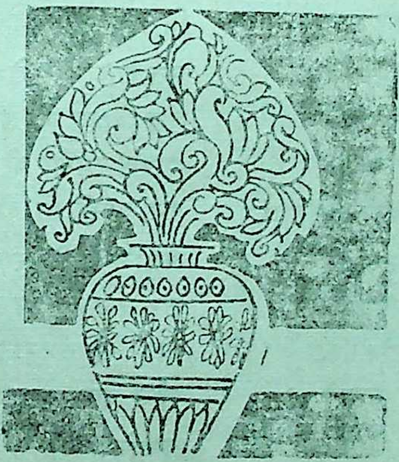

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नटन भारती

श्री. एन. दामोदर कुरुप

(गतांक से आगे)

कम्पनि

पूर्वी देश समुच्चय को निज
करगत करके लूट लगाने,
पूर्वी भारत कम्पनि आयी,
परधन हारी चरित विहीना ।।

देशी राजाओं में कटुतर,
द्वेषबढाया युद्ध छिटाया,
दोषारोपण जिनपर करके,
लडवाते फिर लाभ उठाते

शत्रु किसीका मित्र किसी का,
सन्धि किसी से विग्रह क्षण में
अवसर पाकर सब से मिलते,
वैर बढाकर हट कर छिपते ।।

राजघरों में पुरनगरों में,
गलियों में वर कानन पथ में,
जलथल सब में परदेशी का
भीषण ताण्डव होने लगता ।।

अन्धा धुन्धा नियम बनाकर
राजाओं को पदच्युत करते
झाँसी वाली रानी जिसने
उसका घोर विरोध किया था

उसने नंगी तलवारों से,
परदेशी को ललकारा था,
आगे पीछे दायें बायें,
पैंतर बदली खड्ग घुमाया

शतशत तलवारों की ध्वनियाँ
नभ मण्डल को झंकृत करती
मानों बहुशत चन्द्रकलायें,
मिलकर ताण्डव करती रहती ।।

शत शत गोरे खेत रहे बहु,
शत विक्षत हो-तडप रहे थे
भारत रमणी वीर वधूटी
रण चण्डी सी दीख पडी थी ।।

अतुलित भीकर दृश्य दिखाकर
कर बल का निज परिचय देकर,
गोरों को नवपाठ सिखा कर
छोड चली जड लोक निशाकर ।।

कर्णाटक मद्रास मराठा
वंग कलिंग अयोध्या सिन्धी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपस में थे लडते मरते
ज्यों पतझड के पत्ते झडते ।।

कर्णाटक की रण वेदी पर
परदेशी के रण का कौशल
देशी नृपगण निस्संगी बन
मानों नाटक देख रहे थे

वीर प्रतापी टिप्पु सुलतान्
दक्षिण भारत का गौरव था
केरल की रक्षा के नाम पर
उनपर गोरे टूट पडे थे

रक्षा के मिस वेतन पाते
लाखों रुपये सालाना कर
टिप्पू का जब पतन हुआ था
सारे दक्षिण देश गिरे थे

मीरजाफर को लोभ दिखाया
सूद वाद घूस-घोगी देकर,
उद्दौला का अन्त कर या,
मिरजा को भी मार गिराया

अवध नवाबी वाराणसि अरु
जोधपुरि शाही आलम की
मारवारी पेशवाई सिंधी
पंजाबी भी थकित बने थे ।।

राजा रञ्जित सिंह महारथ
जिन से गोरे डर कर छिपते
उन के सुर-पुर जाने पर ठग
उत्तर पश्चिम भारत हडपे ।।

कितने पानीपत हुए थे
प्लासी कितनी बार हुई थी

इतने पर भी भारतवासी
मिलकर लडना भूल गये थे ।।

वीर महारथ उद्दौला का
अन्त हुआ था प्लासी रण में
पषश्शी पाण्डिय वेलुत्तम्पी
टिप्पू दलपति झाँसी रानी ।

वीर मराठा पेशवा, चेनसिंह
शाही आलम बहदूर शाही
सिखां के नृप परम प्रतापी
विघटित होकर लडते मरते ।।

मुगलों की अपराजित गद्दी,
दुर्बल होकर डोल रही थी,
सामन्तों में धैर्य बढा तब
नाना शाही ताण्डव करती

कोई राजा कामातुर हो
कामिनियों के पीछे पडते
दूसरा अपना शान दिखाने
भाई पर भी टूट पडे थे

परदेशी को मित्र बनाकर
जिसने अपना शान बढाया
उसको सालाना कर देकर
गद्दी मोल कर लेना पडता

जैसे अजगर मृग शावक को
धीरे धीरे निगला करता
वैसे गोरे हिन्दोस्ताँ को
अपने करगत करते रहते

राजघरों में लूट लगाकर
राजकोष तुड़वाये जाते

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गलियाँ आग लगाई जाती
रमणियाँ अपमानित हो जाती
पुरनारीजन लाज बचाने
हाहाकार मचाया करती
दावानल की ज्वाला जैसी
विषमय भ्रान्ति मचायी जाती ।।

चोरी का धन जलयानों में
पश्चिम की ओर बहता रहता
तरह तरह की रत्नावलियाँ
भाँति भाँति के कनक विभूषण,
चान्दी ताम्बा अभ्रक लोहा
दन्त सुनिर्मित दिव्यपदारथ
ढेर ढेर में लेकर गोरे
लाद लाद कर भाग चले थे

चोरी की यह गतिविधियाँ शत
शत सदियों से चलती रहती
उसका वर्णन सम्भव तो भी
दुस्सह दुःखद तदपिचदुर्विधि

मंगोलोंने लूट लगायी
पारसियों ने डाका डाला
सिंहासन को हडप लिया था
सुन्दर नील मयूर समाना ।।

अरबों में था लूट चलायी
अपना स्वत्व बढाया ढोंगी
अफगानों ने लूट लगाई
तुर्कों ने भी लाभ उठाये

उनको देखा देखी गोरे
शोषक शोषण करने लगते

हिन्दुस्थान का द्वार खुला था
पतित ठगों को गजब दिखाने
भाव बदलकर वेष बदलकर
परदेशी ठग आते रहते
कोई कहते धर्म सिखाने
सभ्य बनाने निकले कोई

सबके सब थे शोषक होने
धन का सञ्चय ध्येय रहा था
मरकर गीदड सडने पर भी
मुरगी पर निज दृष्टि रहेगी
सबके सब तो रणदीक्षित थे
वीरों के शृंगार रहे थे
एकीभाव न जानते पुनरपि
भ्रातृभाव न था जनता में

यदि वे नरपति मिलकर लडते
गोरे वापस कभी न जाते
एकात्मकता भारत जन की
जान समझो भाई बहनो ।।

भारत के जिन नर वीरों ने
सारे जग पर राज किया था
अश्वों को सजधज कर भेजा
अश्वमेध के यज्ञ चलाये ।।

राजसूय से शक्ति बढाकर
राज धर्म को अचल बनाया
उनके वंशज परदेशी के
हाथों से पददलित बने हैं ।।

जिस भारत ने सारे जग को
शिक्षा देकर सभ्य बनाया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामन्तों को दीक्षित करके
साम दान चहुँ नीति सिखाई
जिसने पाशुपतास्त्र बनाया,
आग्नेयास्त्र बनाया जिसने,
वायव वारुण ब्रह्मास्त्रों को
जिसने रूप दिया था पहले
जिसने वायव यान बनाकर
भूमण्डल में भ्रमण किया था
उनके वंशज परदेशी के
हाथों से पद दलित बने थे
जिसने तप से शक्ति बढाकर
ग्रहगोलों की गतिविधियों को
मानस दृग से गिन गिन निस्तुल
ज्योतिष का वरदान दिया था
जिसने आयुर्वेद सिखाया
आयस ताम्र सुवर्णादिक का
सदुपयोग सिखाकर जग को
विश्रुत कर्म पटुत्व सिखाया
जिसने छत्रछाया में निज
अभय दिया था मानवता को
उसकी जनतति परदेशी के
हाथों से पद दलित बनी है

x x x

निखिल जन बोल उठे खोगया देश है
पद दलित होगये रिपुगण भरे यहाँ
विपुलतर भयतिमिर सब कहीं
छा गया

जननिवह त्राहीति कुहराम मचा रहा
रसद नहीं वसन वहीं क्षुधित जन
मर रहे
भरण नहीं मरण है पतित के राज में
विषधर कि निशिचर कि दूत
यमराजके
छल कपट वञ्चना से राज कर रहे
पटुतर दबाव है विकृत ठग राज में
रण निपुण नृपतिगण अब नहीं हैं
यहाँ
भरत भुवि सब तरह विषम बनती
रही
विकट विधि कृत गति कि सुकृत
बिनुमिट रही

x x x x

आये गोरे यहाँ थे वणिक बन
महीपालकों की दया से
सेवा से दासता से छल कपट तथा
यन्त्रणा मन्त्रणा से
पाये थे वे स्वमोह प्रशमन सुविधा
विश्ववित्तापहारी
धीरे धीरे नृपों के पद हटप लिये
धूर्त गोरे ठगों ने

★

(क्रमशः)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धर्म मनुष्य को जोडने केलिए है तोडने केलिए नहीं

स्वामी शक्रानन्दजी

क्रिसमस के उपलक्ष्य में केरल हिन्दी प्रचार सभा द्वारा आयोजित समारोह का उद्घाटन करते हुए तिरुवनन्तपुरम श्रीरामकृष्ण आश्रम के अध्यक्ष एवं विख्यात विद्वान स्वामी शक्रानन्दजी ने बताया कि सभी धर्मों का उद्देश्य मनुष्य मनुष्य को प्रेम के धागे में पिरोना है, उन के बीच विद्वेष की दीवार खडी करना नहीं है। आपने कहा कि विविध धर्मों के आचार्यों ने जो महान आदर्श अपने तपोनिष्ठ जीवन द्वारा मानव जाति के कल्याण केलिए प्रतिष्ठापित किये हैं उनको बौद्धिक तर्क-वितर्क द्वारा ही नहीं, हृदयगत श्रद्धा-भक्ति द्वारा भी आत्मसात करें ताकि हमारे जीवन-क्रम में तदनुरूप परिवर्तन ला सकें। धर्म केवल अध्ययन-प्रवचन का विषय नहीं है अनुभूति और आचरण का भी विषय हो। महात्मा ईसा के संबंध में स्वामी विवेकानन्द द्वारा अभिव्यक्त उद्गारों की व्याख्या करते हुए आपने आह्वान किया कि ईसा के त्यागपूर्ण जीवन से नित्यानित्य वस्तु विवेक, फल-भोग-विराग, धीरता और मुमुक्षुत्व के पाठ ग्रहण करें और तदनुसार जीने का अभ्यास करें ताकि पृथ्वी पर ही स्वर्ग का निर्माण कर सकें। धर्म के आचरण से मनुष्य में स्वार्थता तथा पशुता का संकोच होगा और परार्थता तथा मनुष्यत्व का विस्तार होगा। मूल्य शोषण का निवारण धार्मिक मूल्यों की पुन:प्रतिष्ठा से ही हो सकता है।

इस्लाम धर्म के प्रकांड पंडित श्री के बी ए. हमीद आई. ए. एस. ने कहा कि महात्मा ईसा के जीवन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्व को ज्ञान का नया प्रकाश दिया। महात्मा ईसा क्षमा और करुणा के सागर थे। उनके जीवन से प्रेम, अहिंसा आदि आदर्शों को अपना सकेंगे तो विविध धर्मों और जातियों के बीच कभी शत्रुता नहीं होगी। विविध भाषा-भाषी और धर्मावलंबी लोग मैत्री और भ्रातृत्व के साथ भारत में जीवन बिता सकते हैं। अंग्रेज़ों की कूटनीति ने ही भारतीय जनता में धार्मिक विद्वेष का बीज बोया था। हम एक ही माता की संतान हैं। इस्लाम धर्म भी यही सिखाता है कि सभी धर्मों के साथ सहिष्णुता बरतनी चाहिए और पडोसियों की सहायता करनी चाहिए। हमें अभी से ऐसा प्रयत्न करना है जिससे इक्कीसवीं सदी में धर्म के नाम पर कहीं कोई विद्वेष न रहे और विविध धर्मों में पारस्परिक मैत्री भाव बढे।

ईसाई धर्म के विद्वान माननीय पादरी के. जी. कोशी ने बताया कि आदर्श मनुष्य जीवन का जो उत्तम आदर्श महात्मा ईसा ने अपने जीवन के द्वारा प्रस्तुत किया उससे हमें स्नेह, विनम्रता जैसे उदात्त आदर्श आत्मसात करने हैं। आज की समस्त समस्याओं को सुलझाने का एकमात्र उपाय महात्मा ईसा का त्यागशील है। हमें सोचना है कि हम समाज की प्रगति केलिए कैसा योगदान दे सकते हैं।

मलयालम और अंग्रेज़ी के लेखक प्रो० श्रीवराहम बालकृष्णन ने बताया कि महात्मा ईसा के जीवन के आधार पर साहित्य, संगीत और चित्रकला के क्षेत्र में अद्भुत रचनायें विविध भाषाओं में हुई हैं जो हमारे हृदय को स्वार्थ के बंधन से मुक्त कर के विश्व के साथ सामंजस्य स्थापित कराने में समर्थ हैं।

केरल हिन्दी प्रचार सभा के मंत्री एवं अखिल भारतीय हिन्दी संस्थासंघ के कोषाध्यक्ष श्री. एम. के. वेलायुधन नायर ने स्वामी विवेकानन्द और महात्मा गांधी के जीवन पर महात्मा ईसा का जो प्रभाव पडा उस पर प्रकाश डालते हुए आग्रह प्रकट किया कि क्रिसमस समारोह हमें विश्व शांति की ओर अग्रसर होने की शक्ति और प्रेरणा प्रदान करे।

कुमारी वसन्ता ने महात्मा ईसा के उपदेशों पर प्रकाश डाला। केरल हिन्दी प्रचार सभा के हिन्दी अध्यापक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्य डा० मावेलिक्करा अच्चुतन ने स्वागत भाषण दिया और हिन्दी स्नातकोत्तर केन्द्र के प्राचार्य प्रो० डी. तंकप्पन नायर ने कृतज्ञता भाषण दिया। छात्रों ने प्रार्थना गीत गाये। ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपन्यास और सामाजिक परिवर्तन—दक्षिण भारतीय भाषाओं के परिप्रेक्ष्य में

डा० एन. ई. विश्वनाथ अय्यर
26/2035, ट्यूटर्स लेइन, तिरुवनन्तपुरम

भाषा भावों की अभिव्यक्ति का माध्यम है और देश की जनता की पहचान भी। मगर देश की बहुभाषिता जन जन के बीच की दरार बनती है। आदमियों के चिन्तन की समांतरता को भाषा भेद प्रकाश में आने नहीं देता। इस विवशता को दूर करने की जरूरत अब सबसे बडी सामयिक मांग हो चुकी है। हिन्दी साहित्य, पंजाबी साहित्य, बंगला साहित्य या तमिल साहित्य की चर्चा से बढकर भारतीय साहित्य की चर्चा आज ज़रूरी है। भारतीय साहित्य की ऐसी संकल्पना में विभिन्न भाषाओं के नानात्व को मानते हुए उसमें भारतीय एकत्व को देखना और दिखाना भारतीय साहित्य के प्रेमियों का कर्तव्य सिद्ध हो चुका है। इसके पहले कदम के तौर पर तुलनात्मक साहित्य का सैद्धान्तिक और व्यावहारिक अध्ययन महत्व रखता है। यादवपुरम वि. वि. में तुलनात्मक साहित्य का अलग विभाग है। कई अन्य विश्वविद्यालयों में भाषा के स्नातकोत्तर स्तर के अध्ययन में तुलनात्मक साहित्य एक विषय है। तुलनात्मक साहित्य अब भारतीय भाषाओं के शोध क्षेत्र में अन्यतम विषय स्वीकृत हो गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दक्षिण की पडोसी भाषाओं को आपस में बात करने के लिए अंग्रेज़ी के माध्यम को स्वीकार करना पड़ता है ।

उपर्युक्त पृष्ठभूमि में केरल की राजधानी तिरुवनन्तपुरम के तुलनात्मक साहित्य संघ (कंपारटीव लिटरेचर सोसाइटी) के तत्वावधान में हाल ही में जो त्रिदिवसीय संगोष्ठी चली वह महत्वपूर्ण है। संगोष्ठी का विषय था—'दक्षिण भारत की भाषाओं के उपन्यास और सामाजिक परिवर्तन।' उद्घाटन सम्मेलन का सभापतित्व करते हुए केरल विश्वविद्यालय के कूलपति और भारतीय साहित्य के मर्मज्ञ डा० बालमोहन तंपी नें इस विचित्र स्थिति पर खेद प्रकट किया कि दक्षिण की पडोसी भाषाओं को आपस में बात करने के लिए अंग्रेज़ी के माध्यम को स्वीकार करना पडता है। हिन्दी आज सभी भारतीय भाषाओं को परस्पर मिलाने के माध्यम का कार्य यथाशक्ति निबाहती है। परंतु दक्षिण की भाषाओं के विशेषज्ञ एक तो हिन्दी की अभिव्यक्ति में पिछड़े हैं। दूसरे, वे अंग्रेज़ी के माध्यम को वरीयता देते भी हैं।

अध्यक्ष ने दक्षिण की भाषाओं में स्वतंत्रतापूर्ण स्थिति से स्वातंत्र्योत्तर स्थिति तक आते आते संवेदनाओं में परिवर्तन की ओर ध्यान आकृष्ट किया। कुछ संवेदनाएँ चारों भाषाओं में समान रही हैं। कुछ तो प्रत्येक भाषा-क्षेत्र में अलग-अलग रही हैं। उद्घाटनकर्ता कवयित्री श्रीमती कमलादास ने कहा कि सभी भारतीय भाषाओं में टैगोर का प्रभाव समान रहा है। मलयालम में रूसी साहित्य का प्रभाव अन्य भाषाओं से अधिक रहा। उसी प्रकार बंगला साहित्य का सामान्य प्रभाव मलयालम साहित्य पर अधिक पडा है। दक्षिण के साहित्य को उत्तर में अधिक सम्मान न देने की विडंबना पर उन्होंने दुःख प्रकट किया।

संगोष्ठी में चारों भाषाओं के चुने हुए विद्वानों ने आलेख प्रस्तुत किये। इससे जो निष्कर्ष निकले उनका संक्षेप देने की कोशिश करूँ।

मलयालम में रूसी साहित्य का प्रभाव अन्य भाषाओं से अधिक रहा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहली बात यह कि स्वातंत्र्योत्तर युग के विकास में सारी दक्षिण भारतीय भाषाएँ एकरूप नहीं थीं। फिर भी कुछ समान प्रवृत्तियाँ न्यूनाधिक मात्रा में परिलक्षित होती हैं। जैसे मार्क्सवादी चिन्तन, लक्ष्य-हीनता से अनिश्चित दशा, मार्क्स-वाद से मुक्ति एवं मानवतावाद, शोषण विरोध, नारी जागरण आदि। रोचक तथ्य यह है कि ये समान प्रवृत्तियाँ दो भाषाओं में एक ही युग में नहीं दिखाई पड़ती। एक

तेलुगु व कन्नड में "सेक्स और होरर" वाले उपन्यास अधिक हो रहे हैं।

भाषा में पहले आती है तो दूसरी भाषा में काफी समय के बाद। इसका कारण अनुसंधान योग्य है और समाज विज्ञान के कुछ मर्म खुल सकते हैं। मगर प्रत्येक भाषा में विकसित अलग-अलग धाराएँ हैं- जैसे-तमिल में द्राविड राजनीति के उपन्यास, तेलुगु में विप्लवकारी उपन्यास, कन्नड में दलित उपन्यास और अडिगमने (रसोईघर) उपन्यास तथा मलयालम में अस्तित्ववादी उपन्यास।

सबसे अधिक साक्षर केरल की अपेक्षा आँध्र व कर्नाटक में अधिक संख्या में उपन्यास लेखिकाएँ हैं।

इन चारों भाषाओं में पिछले पन्द्रह-बीस वर्षों से सशक्त बनी हुई दो उपन्यास धाराएँ हैं। प्रथम है– रोमानी पारिवारिक लोकप्रिय उप-न्यास। दूसरी है सेक्स और अपराध की भयानकतावाले उपन्यास। इनके प्रचार का श्रेय मुख्यतः लोकप्रिय पत्रिकाओं को है। तमिल व मलयालम में प्रथम धारा के उपन्यासों की संख्या अधिक है, तो तेलुगु व कन्नड में "सेक्स और होरर" वाले उप-न्यास अधिक हो रहे हैं। कन्नड़ में तेलुगू के वीरेन्द्रनाथ के ऐसे उपन्यास अनूदित होकर आये। इसकी नकल में स्वयं कन्नड़ उपन्यासकार लिखने लगे।

दक्षिण की चारों भाषाओं की एक प्रशंसनीय प्रवृत्ति का परिचय संगोष्ठी में मिला। वह है उपन्यास लेखन के क्षेत्र में स्त्रियों का बड़ी संख्या में पदार्पण। यह जानकर सुखद आश्चर्य हुआ कि सबसे अधिक साक्षर केरल की अपेक्षा आँध्र व कर्नाटक में अधिक संख्या में उपन्यास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रत्येक भाषा की उपन्यास धारा अन्य भाषा के उपन्यासकारों को कई नई दिशाएँ दिखा सकती हैं।

लेखिकाएँ हैं। 1985 में तेलुगू विश्वविद्यालय ने जो सर्वेक्षण किया उसके अनुसार तेलुगू की मुख्य दस उपन्यास लेखिकाओं ने उस वर्ष पत्रिकाओं में धारावाही उपन्यासों के लेखन में चमत्कार दिखाया। श्रीमती भारती देवी और चेरुमशेट्टी सायी नामक दो महिलाओं ने 10, 10 उपन्यास तक उस वर्ष में लिखे थे।

कन्नड की महिला उपन्यासकारों ने नारी जीवन पर लेखन केन्द्रित करके अडिगमने उपन्यास लिखे, जिनमें स्त्रियों की वेश भूषा की छोटी-छोटी बारीकी पर भी ध्यान दिया गया।

तमिल में कुमुदम जैसी लोकप्रिय साप्ताहिक पत्रिका की करीब 12 लाख प्रतियाँ छपती हैं—ऐसी कई पत्रिकाओं के अलावा महिला-पत्रिकाएँ अलग हैं। प्रतिमास व प्रति सप्ताह सस्ते उपन्यास अलग से छपते हैं। इन सब में कितनी ही महिलायें लगी रहती हैं। तमिल के स्तरीय उपन्यास साहित्य में आंचलिक उपन्यास की विशिष्ट धारा उन्नति कर रही हैं। इनमें कोई तिरुनेलवेली तमिल में लिखा जाता है तो कोई कोयम्बत्तूर तमिल में। ऐसे ही अन्य आँचलों की भी बोल-चाल की भाषा प्रयुक्त होती है।

मलयालम की लोकप्रिय पत्रिकाओं में अनेक बहनें उपन्यास लिखती हैं यद्यपि अन्य प्रान्तों से इनकी संख्या कम है। मगर स्तरीय साहित्य के समीक्षक इनको उपन्यास मानने तैयार नहीं होते। अब समय आ गया है कि लोकप्रिय उपन्यास का बिल्ला लगा कर सब को तिरस्कृत करने के बजाय विवेकपूर्वक अच्छे उपन्यासों का विधिवत् अध्ययन किया जाय।

विचार-विनिमय से यह प्रमाणित हुआ कि प्रत्येक भाषा की उपन्यास-धारा अन्य भाषा के उपन्यासकारों को कई नई दिशाएँ दिखा सकती है, पर शर्त यह है कि गहरा व पूर्वाग्रह रहित अध्ययन किया जाय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी साहित्य सम्मेलन का चौवालीसवाँ अधिवेशन

डा० त्रिवेणी दत्त शुक्ल

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग के 44 वें अधिवेशन का शुभारम्भ प्रान्तीय हिन्दी सम्मेलन, दिल्ली एवं हिन्दी अकादमी, दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में 14 अक्टूबर 1989 को किया गया। अधिवेशन की अध्यक्षता साहित्य वाचस्पति डा० विजयेन्द्र स्नातक ने की।

भारत सरकार के सूचना एवं प्रसारण मंत्री श्री हरिकिशनलाल भगत ने अधिवेशन का उद्घाटन करते हुए कहा कि जो व्यक्ति लिखते हैं, पढते हैं, बोलते हैं, जो समाज को दिशा और दृष्टि देते है, ऐसे लोग बहुत महान होते हैं।

श्री. भगत जी ने समारोह को संबोधित करते हुए बताया कि हमारा भारत एक बहुत बडा सुन्दर उद्यान हैं, जिसमें हमारी सारी जो भाषाएँ हैं, वह बहुत सून्दर महकते हुए फूल की तरह हैं। उन में सबसे अधिक महकता हुआ फूल हिन्दी है, जो सबसे महत्वपूर्ण है। हिन्दी हमारे देश को जोडती है। वह बहुत नम्र भाषा है, बहुत अच्छी भाषा है। इसने देश की अज़ादी में भी काम किया। यह भारत की जनता की भषा है। रेडियो और टेली-विज़न पर हिन्दी के जो कार्यक्रम आते हैं, उससे भी हिन्दी का बहुत

हमारी सारी जो भाषाएँ हैं, वह बहुत सुन्दर महकते हुए फूल की तरह हैं।

प्रचार-प्रसार हुआ है। इधर जो हमारे सांस्कृतिक कार्यक्रम रामायण और महाभारत या और भी कार्यक्रम टी. वी. पर आये, उनसे हिन्दी को काफी बढ़ावा मिला है। यदि भारत है तो हम सब हैं। हिन्दी भी है, सब कुछ हैं। भारत कमजोर हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसलिए भारत को एक रखना, मजबूत रखना, शक्तिशाली रखना हम सबका कर्तव्य है।

जाता है, तो हम कमज़ोर हो जाते हैं। इसलिए भारत का एक रखना, मजबूत रखना, शक्तिशाली रखना हम सबका कर्तव्य है।

अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष एवं दिल्ली प्रशासन के कार्यकारी पार्षद (शिक्षा) *श्री. कुलानन्द भारतीय* ने कहा- दिल्ली में लगभग 59 वर्ष बाद हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग का यह आयोजन अपने आप में ऐतिहासिक महत्व का है।

अधिवेशन के सभापति *प्रो० विजयेन्द्र स्नातक* ने कहा कि सन् 1923 में श्री. अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' की अध्यक्षता में पहली बार और सन् 1933 में बडौदा नरेश श्री. सयाजीराव गायक्वाड की अध्यक्षता में दूसरी बार सम्मेलन का वार्षिक अधिवेशन यहाँ सम्पन्न हुआ था। हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने विगत 80 वर्षों में हिन्दी भाषा, साहित्य, संस्कृत और संस्कृति के क्षेत्र में जो उल्लेखनीय कार्य किया है, वह भारत के कोने-कोने में सर्वविदित है। इलाहाबाद नगर का सबसे विशाल 'राजर्षि टण्डन मण्डपम्' सम्मेलन परिसर में बनकर लगभग तैयार है। यह सम्मेलन की एक विराट उपलब्धि है।

हिन्दी अकादमी, दिल्ली के सचिव *डा० नारायण दत्त पालीवाल* ने स्वागत मंत्री के रूप में उद्‌गार व्यक्त करते हुए कहा कि विविधता में एकतावाले हमारे इस देश को हिन्दी सदा एक सूत्र में जोडती चली आयी है। इस दिशा में देश के संतों, महात्माओं, फकीरों, समाज सुधारकों और साहित्यकारों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। हिन्दी और भारतीय भाषाओं की उपेक्षा के पीछे जहाँ हमारा मनोवैज्ञानिक संकोच है, वहीं अंग्रेजी से जुडा झूठी प्रतिष्ठा भी इसके लिए उत्तरदायी है।

सम्मेलन के प्रधानमंत्री *डा० प्रभात शास्त्री* ने सम्मेलन की ओर से *श्री. हरिकिशनलाल भगत* का मानक अंग्रेजी हिन्दी कोश एवं सम्मेलन के अन्य मानक प्रकाशनों को भेंट किया। श्री भगत जी द्वारा हिन्दी अकादमी की ओर से प्रकाशित 'संकल्प' नामक ग्रन्थ का प्रकाशनोद्‌घाटन कार्य भी सम्पन्न हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्घाटन समारोह का संचालन हिन्दी अकादमी के सचिव *डा० नारायणदत्त पालीवाल* तथा संयोजन सम्मेलन के सहायक मंत्री *श्री. श्यामकृष्ण पाण्डेय* ने किया।

साहित्य-परिषद्

15 अक्टूबर 1989 को पूर्वाह्न 10 बजे शाह आडिटोरियम, नई दिल्ली में सुख्यात साहित्यकार *डा० राममूर्ति त्रिपाठी* की अध्यक्षता में साहित्य-परिषद् का कार्यक्रम संपन्न हुआ। प्रारंभ में नगर आयुक्त श्री. देवसिंहजी नेगी ने आगत अतिथियों का स्वागत किया।

लखनऊ विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष एवं आचार्य *डा० सूर्यप्रसाद दीक्षित* ने साहित्य परिषद का उद्घाटन करते हुए संगोष्ठी के लिए निर्दिष्ट विषय, "समकालीन हिन्दी साहित्य की रचना प्रक्रिया" के संबन्ध में कहा कि समसामयिक साहित्य में तीव्रगति से परिमाण की दृष्टि से बहुत लिखा जा रहा है। लेकिन दूसरी ओर जहाँ गुणवत्ता का प्रश्न पैदा होता है और जहाँ यह विचार करना पडता है कि हमारे सर्जनात्मक साहित्य ने वे कालजयी कृतियाँ कौन सी दी हैं या

हिन्दी और भारतीय भषाओं की उपेक्षा के पीछे जहाँ हमारा मनोवैज्ञानिक संकोच है, वहीं अंग्रेज़ी से जुडी झूठी प्रतिष्ठा भी, इसके लिए उत्तरदायी है।

वह कौन सा पक्ष या बिम्ब रेखांकित हुआ है, जिस पर हम गर्व कर सकें तब हमें यह लगता है कि विघटन का जो दौर हमारे राष्ट्रीय चरित्र के अन्यान्य पक्षों में आया है— साहित्य क्षेत्र में भी जाने-अनजाने, चाहे-अनचाहे एक विघटन की प्रक्रिया चल रही है।

साहित्य-परिषद् के अध्यक्ष पद से समारोह को सम्बोधित करते हुए *डा० राममूर्ति त्रिपाठी* ने कहा कि "समकालीन" को प्रायः व्यतीत का विपरीतार्थक माना जाता है। वास्तविकता यह है कि इन दोनों के बीच नैरन्तर्य की सूक्ष्म रेखा प्रवाहमान है। *अज्ञेय* ने छायावादान्त, छायावादोतर नई कविता और समकालीन युवा कविता—तीनों की रचना-प्रक्रिया के भेदक तत्वों पर विचार किया है। इनके पहले के पुरातन और मध्यकालीन आचार्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य क्षेत्र में भी जाने-अनजाने, चाहे-अनचाहे एक विघटन की प्रक्रिया चल रही है।

ने भी रचना प्रक्रिया पर प्रकाश डाला है। समकालीन साहित्य की रचना प्रक्रिया में और तमाम समानताओं के साथ कहीं व्यक्तित्व का विसर्जन है, कहीं व्यक्तित्व का अभिव्यंजन है, कहीं अहं की गर्जना है। जब हमें रचना में व्यक्ति सत्य से लेकर व्यापकतम सत्य तक स्वीकार है—तब रचना प्रक्रिया में ऊँची-नीची भूमियाँ मिलेंगी ही।

अधिवेशन के सभापति डा० *विजयेन्द्र स्नातक* ने कहा कि आज सारे देश में जो दुर्दशा व्याप्त है, वही दुर्दशा साहित्य में भी प्रदीपित हो रहा है, जो चिन्ता का विषय है। साहित्य दुर्दशा बहुत सहन नहीं कर सकता, न ही करना चाहिए। साहित्य ही वह दशा है जो कि ठीक-ठीक रूप से कहीं भी देश को उसके स्थान को प्रतिष्ठित कर सकता है। जिस देश में साहित्य का कोई सुगठित रूप नहीं होता, उस देश की दुर्दशा ही होती है।

साहित्य-परिषद् का संचालन सम्मेलन के साहित्य मंत्री *डा० प्रेमनारायण शुक्ल* ने किया।

राष्ट्रभाषा-परिषद्

हिन्दी साहित्य सम्मेलन के 44 वें दिल्ली अधिवेशन के अवसर पर 15 अक्टूबर, 1989 को अपराह्न 2 बजे आल इण्डिया फाइन आर्ट्स आडिटोरियम रफी मार्ग, नई दिल्ली में गुजरात हिन्दी विद्यापीठ के कुलपति एवं अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ के अध्यक्ष *प्रो० रामलाल परीख*

आज सारे देश में जो दुर्दशा व्याप्त है, वही दुर्दशा साहित्य में भी प्रदीपित हो रहा है, जो चिन्ता का विषय है।

की अध्यक्षता में राष्ट्रभाषा परिषद् का आयोजन किया गया।

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के प्रधान मंत्री *श्री. द्वारकादास वेद* ने राष्ट्रभाषा परिषद् का उद्घाटन करते हुए कहा कि हम ललित साहित्य की बातें बहुत करते हैं। समकालीन साहित्य की बातें बहुत हुई हैं, लेकिन हमें ऐसा साहित्य चाहिए, जो हमें बल दें, हम में ताकत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भरे। हमें वह शक्ति दे जसका बल लेकर हम आगे का काम कर सकें।

अपने अध्यक्षीय भाषण में प्रो० *रामलाल परीख* ने कहा कि हिन्दी साहित्य सम्मेलन हमारे देश के सांस्कृतिक गौरव का प्रतीक है। इस संस्था ने राष्ट्रभाषा हिन्दी की ज्योति को ज्वलंत रखने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। प्रादेशिक भाषाओं और हिन्दी का सबंध वैसा ही है, जैसा सहायक नदियों और महानदी के बीच होता है। जैसे-जैसे सहायक नदियाँ जल स समृद्ध होती जाती हैं, वैसे-वैसे महानदी अपने आप समृद्ध हो जाती है। सहायक नदियो के

हमें ऐसा साहित्य चाहिए, जो हमें बल दे, हम में ताकत भरे।

सूख जाने से महानदी भी सूख जाती है। इसलिए हमें प्रादेशिक भाषाओं को समृद्ध करना चाहिए। ऐसा करने से हिन्दी, जो इस देश की गंगा है, वह अपने आप समृद्ध हो जायेगी।

'नवनीत' के सम्पादक डा० *गिरिजाशंकर त्रिवेदी* ने कहा कि आन्ध्र, तमिलनाडु और कर्नाटक में हिन्दी के पत्र-पत्रिकाएँ, चाहे मेरी

प्रादेशिक भाषाओं और हिन्दी का संबंध वैसा ही है, जैसा सहायक नदियों और महानदी के बीच होता है।

पत्रिका 'नवनीत' हो या 'धर्मयुग' हो, अधिक पढ़ी जाती हैं। जो भाषा जनता के दिलों में राज्य करती हो उसका शासक या नेता कुछ भी नहीं बना-बिगाड़ सकते हैं। जि[से] जनता चाहती है, उसे करना [ही] पड़ता है। जनता ने चाहा कि देश आजाद हो, देश आजाद हो गया। अब रही भाषायी गुलामी, यह भी धीरे-धीरे आजादी की ओर ब[ढ़] रही है।

साहित्यकारों एवं विधिवेत्ताओं का सम्मान

हिन्दी साहित्य सम्मेलन के 44[वें] अधिवेशन की उपलब्धि थी—खुले अधिवेशन में विशिष्ट साहित्यकार एवं विधि एवं न्याय क्षेत्र की अग्रणी विभूतियों का मानद उपाधि द्वारा सारस्वत सम्मान का प्रदान। य[ह] आयोजन भी डा० *विजयेन्द्र स्नातक* की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

केवल ज्यो[ति]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरल ज्योति

* प्रधान संपादक
प्रो० पी. जे. जोसफ़

* संपादक
श्री. के. जी. बालकृष्ण पिल्लै

* सह संपादक
श्री. आर. सुकुमारन नायर

* संपादक मण्डल
प्रो० एम. जनार्द्दनन पिल्लै
प्रो० सी. जी. राजगोपाल
श्री. के. वी. कृष्णनकुट्टी
डा० एस. सी. चन्द्रन
डा० एन. जी. देवकी
श्री. एम. के. वेलायुधन नायर

* विज्ञापन दर

		मासिक	वार्षिक
आवरण पृष्ठ 4.	रु.	500 00	5000 00
आवरण पृष्ठ 2 एवं 3	रु.	400 00	4000 00
साधारण पृष्ठ पूरा	रु.	300 00	3000 00
साधारण पृष्ठ ½	रु.	175 00	1750 00
साधारण पृष्ठ ¼	रु.	100 00	1000 00

संपर्क करें—मंत्री, केरल हिन्दी प्रचार सभा, तिरुवनन्तपुरम-695 014

लेखकों से निवेदन

हिन्दी प्रचार, हिन्दी शिक्षण, भारतीय भाषायें, भारतीय साहित्य, भारतीय संस्कृति जैसे विषयों पर लिखे गये उच्च स्तरीय सचित्र लेखों व संगोष्ठी समाचारों का स्वागत किया जायेगा।

हिन्दीतर प्रान्तों की सांस्कृतिक, साहित्यिक, कलात्मक विशेषताओं पर लिखी गयी मौलिक और अनूदित रचनाओं को और हिन्दीतर भारतीय भाषाओं की उत्तम रचनाओं के अनुवादों को प्राथमिकता दी जायेगी।

पांडुलिपियाँ साफ अक्षरों में लिख कर या टाइप करके भेजें। कार्बन प्रतियाँ स्वीकृत नहीं होंगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवरण चित्र :

पृष्ठ 1 : वेलुतंपि जिन पर श्री. विष्णुप्रभाकर ने अपना नाटक 'केरल का क्रांतिकारी' लिखा है। पृष्ठ 2, 3 और 4: केरल हिन्दी प्रचार सभा द्वारा आयोजित जवाहरलाल नेहरू शताब्दी समारोह के विविध दृश्य।

पृष्ठ 2: *(बीच में)* विद्यार्थियों के लिए आयोजित भाषण और प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताओं का उद्घाटन कर रहे हैं आकाशवाणी, तिरुवनंतपुरम केन्द्र के पूर्व निदेशक श्री. वी. एन. उण्णी।

बैठे हैं *(बायें से)* डा० के. शिवदासन पिल्लै, (निदेशक, प्रौढ शिक्षा एवं विस्तार केन्द्र, केरल विश्वविद्यालय), प्रो० टी. के. भास्कर वर्मा प्रो० एस. पद्मकुमारी और डा० के. पद्मावती।

पृष्ठ 4: *(ऊपर)* "पं० जवाहरलाल नेहरू और भारतीय भाषायें" विषय पर आयोजित संगोष्ठी का उद्घाटन कर रहे हैं केरल विधान सभा के अध्यक्ष श्री. वर्कला वी. राधाकृष्णन।

(बीच में) स्वागत भाषण दे रहे हैं श्री. एम. के. वेलायुधन नायर (मंत्री, केरल हिन्दी प्रचार सभा एवं कोषाध्यक्ष, अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ)।

बैठे हैं *(बायें से)* डा० एन. ए. करीम, (पूर्व उप कुलपति, केरल विश्वविद्यालय), पद्मश्री डा० के. एम. जोर्ज, डा० के. रामचन्द्रन नायर, (अध्यक्ष, मलयालम विभाग, केरल विश्वविद्यालय), श्रीमती के बी. वत्सल कुमारी (निदेशक, समाज कल्याण विभाग, केरल सरकार), कुमारी पी. वी. मिनी और श्रीमती लतिका नायर।

पृष्ठ 3 : प्रतियोगिताओं के पुरस्कृत विजेता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूरभाष : 61378

तार । 'जय हिन्दी'

केरल ज्योति

पुष्प 24
दल 11

एक प्रति—1 रु० 50 पै०

सांस्कृतिक जागरण की मासिक पत्रिका

वार्षिक—15 रु०

फरवरी 1990

संपादकीय

हिन्दी की प्रतिष्ठा पहले स्वदेश में बढायें

केरल हिन्दी प्रचार सभा ने 'हिन्दी-विश्वभाषा के रूप में' विषय पर हाल ही में एक संगोष्ठी आयोजित की जिसका विवरण इसी अंक में अन्यत्र दिया गया है।

संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए केन्द्र सरकार के पूर्व शिक्षा राज्यमंत्री एवं कानपुर विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति श्री. भक्तदर्शन ने जो विचार व्यक्त किया है उसे हर भारतीय नागरिक के चिन्तन का विषय बनाना है। उन का कहना है कि पहले हम हिन्दी के माध्यम से भारतीय जनता को जोडें। तब हिन्दी की प्रतिष्ठा संयुक्त राष्ट्र संघ में और अन्य विश्वमंचों पर सहज ही बढ जायेगी।

यह एक बडी भारी चुनौती है। हिन्दी प्रचारकों केलिए उन्होंने एक नयी दृष्टि प्रदान की है। एक महत्वपूर्ण दिशा दर्शित करायी है। हिन्दी प्रचार कार्य को एक नया अर्थ प्रदान किया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस अंक में

केरल का क्रांतिकारी डा० एन. ई. विश्वनाथ अय्यर	3
निरक्षरों को भी जीवन की मुख्यधारा से जोड़ें श्री. वी. के. आस्थाना	18
विश्व साक्षरता वर्ष का शुभारंभ केरल में	20
विश्वमंच पर हिन्दी की प्रतिष्ठा बढायें श्री. भक्त दर्शन	22
स्वामी विवेकानन्द के जीवन से युवा पीढी प्रेरणा ग्रहण करे प्रो० एन एस. जोसफ	24
हिन्दी प्रान्तों में दक्षिण भारतीय भाषाओं का व्यवस्थित अध्यापन हो	26
गाँधीजी की स्मृति में केरल की श्रद्धांजली	28
मातृभाषा और राष्ट्रभाषा के अध्यापन को अधिक स्थान दिया जाये श्री. सुलैमान सेठ	30
देश की समस्याओं की जड निरक्षरता श्री. वर्कला वी. राधाकृष्णन	32
महंगी मालिश डा० वी. गोविन्द शेनाय	35
शक्ति से शांति होती है श्री. सुभाषचन्द्र गंधर	37
जरा सी जिन्दगी सुश्री आशा मैत्यु	38
शैशव कभी न खो जाये सुश्री. इन्दुमति, एन.	38
आदर्श भक्तनारी कर्माबाई सुश्री. एस. श्रीलता	39
पाठकों के पत्र	40

स्वतंत्रता के पूर्व भी हिन्दी प्रचार का उद्देश्य भारतीय जनता को जोड़ना था। उस समय अंतिम लक्ष्य स्वतंत्रता प्राप्ति था। स्वतंत्रता पाने के एक साधन के रूप में ही एकता का स्थान निर्धारित हुआ था।

स्वतंत्रता प्राप्ति के चालीस वर्ष से अधिक बीत जाने पर हम देखते हैं कि स्वतंत्रता बनाये रखना स्वतंत्रता पाने से भी अधिक कठिन कार्य है। विशेष कर भारत जैसे विशाल राष्ट्र में जहाँ भाषायें ही नहीं, वेषभूषा, धर्म, आचार-विचार आदि संस्कृति और सभ्यता के विविध अंगों में अनेकता पायी जाती है। इस स्थिति में भारत की जनता एक होकर यदि प्रयत्न नहीं करेगी तो अनेक मूल्यवान जीवनों के बलिदान से प्राप्त स्वतंत्रता, जो हमें प्राण से भी प्यारी है हमारे हाथ से खो जायेगी।

तो हमें सोचना है कि किन किन उपायों से भारत की जनता को एकता के सूत्र में पिरोये रखने में हिन्दी का उपयोग कर सकते हैं। यह भी सोचना है कि हिन्दी के प्रचार तंत्र में क्या क्या परिवर्तन लाना है जिससे भारत भर में उसकी प्रतिष्ठा बढा पाये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"केरल का क्रांतिकारी"

डा० एन. ई. विश्वनाथ अय्यर

'केरल का क्रांतिकारी' बहुमुखी साहित्य-सेवा से धन्य श्री. विष्णु प्रभाकर का नाटक है। उनका परिचय डा० कमल किशोर गोयनका के दिये विवरण में सुन्दर व संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत है। इसलिए मैं वही उद्धृत कर रहा हूँ—' विष्णु प्रभाकर आधुनिक हिन्दी साहित्यकारों में एक ऐसा यशस्वी नाम है जो आधी शताब्दी से भी अधिक समय से साहित्य साधना में निष्ठापूर्वक रत हैं। प्रेमचन्द के बाद हिन्दी में जिन साहित्यकारों ने अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाया और अपनी निरंतर समर्पित साहित्यरचना से आनेवाली प्रत्येक पीढी से जुडे रहे उनमें विष्णु प्रभाकर शीर्ष पर दृष्टिगत होते हैं। ....

विष्णु प्रभाकर ने कुछ कविताओं को छोडकर गद्य की सभी विधाओं में विपुल साहित्य लिखा है। लगभग आधी शताब्दी से वे कहानी, उपन्यास, नाटक, एकांकी, रेडियो रूपक, जीवनी, संस्मरण, रेखाचित्र; डायरी, पत्र आदि विभिन्न विधाओं में नियमित रूप से लिख रहे हैं और उनके अभी तक 19 कहानी संग्रह, 7 उपन्यास, 1 लघुकथा संग्रह, 12 नाटक, 3 नाट्य रूपान्तर, 17 एकांकी संग्रह, 13 जीवनी तथा संस्मरण, 4 यात्रावृत्तान्त, 2 निबंध-संग्रह, बाल साहित्य में 10 बाल-नाटक एवं एकांकी संग्रह, 1 पूर्ण नाटक, 2 जीवनी, 12 बाल कहानी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विष्णु प्रभाकर

संग्रह तथा 19 विविध विषयों पर पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। उनकी अनेक रचनाएँ पत्रिकाओं में प्रकाशित होने के बाद भी संकलित रूप में प्रकाशित नहीं हुई हैं।"

विष्णु प्रभाकर की प्रमुख पूर्णनाट्य कृतियाँ हैं--1. नव प्रभात (1951), 2. समाधि (1952), 3. गान्धार की भिक्षुणी (1982) (पहले समाधि नाम से प्रकाशित), 4. डाक्टर (1961) 5. युगे युगे क्रांति (1969), 6. टूटते परिवेश (1974), 7. कुहासा और किरण (1975) 8. टगर (1977), 9. बन्दिनी (1979), 10. सत्ता के आरपार (1981), 11. अब और नहीं (1981), 12. श्वेतकमल (1984)। उनका नया नाटक है 'केरल का क्रांतिकारी'।

"देश की अन्य भाषाओं के महान चरित्रों, महापुरुषों, महान घटनाओं को हिन्दी में लाना बहुत आवश्यक है।"

वेलुत्तंपि दलवा

केरल का क्रांतिकारी लिखने की सांस्कृतिक प्रेरणा के विषय में विष्णु प्रभाकरजी ने स्वयं कमलकिशोर को एक साक्षात्कार में यों बताया है--'देश की अन्य भाषाओं के महान चरित्रों; महापुरुषों, महान घटनाओं को हिन्दी में लाना बहुत आवश्यक है। मैंने शरत की जीवनी 'आवारा मसीहा' तथा 'केरल का क्रांतिकारी' नाटक इसी उद्देश्य से लिखे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी लेखकों को सारे भारत की ओर देखना चाहिए और जो श्रेष्ठ एवं कालजयी है उसे हिन्दी में लाना चाहिए।

उत्तर भारत के हिन्दीभाषी देश के अन्य भागों, प्रान्तों में जन्मे महापुरुषों के बारे में बहुत कम जानते हैं। उनकी शिकायत भी यही है कि हिन्दी भाषा भाषी उनकी ओर देखते नहीं हैं। ट्रावनकोर के दीवान वेलुत्तंपि के बारे में हिन्दीभाषी कुछ भी नहीं जानते। लेकिन इसने अंग्रेजों के विरुद्ध जो विद्रोह किया वह उसे इतिहास में अमर बना देता है। इसी महापुरुष पर 'केरल का क्रांतिकारी' नाटक लिखा, जिससे हिन्दी पाठक उसके महान कार्य को जान सकें। हिन्दी लेखकों को सारे भारत की ओर देखना चाहिए और जो श्रेष्ठ एवं कालजयी है उसे हिन्दी में लाना चाहिए। इससे न केवल हिन्दी समृद्ध होगी बल्कि हिन्दी के प्रति स्नेह का भी विस्तार होगा।"

यह नाटक लिखने की प्रासंगिक प्रेरणा के विषय में तो लेखक ने नाटक की भूमिका में लिखा है। आकाशवाणी ने उन्हें भारतीय स्वाधीनता संग्राम को रेखांकित करते हुए कई नाटक लिखने का अनुरोध किया था। इनकी सामग्री इकट्ठी करते हुए उन्हें 1857 के पहले भी देश में अंग्रेज़ों के विरुद्ध कई बार आंदोलन के उठने की सूचनाएँ मिलीं। केरल में भी ऐसी घटना हुई थी। विष्णुजी इसके बारे में अधिक अध्ययन केलिए स्वयं केरल आये। वे यहाँ लेखकों से मिले, ग्रंथों का अध्ययन किया और संबंधित स्थानों को खुद देखा। इसके बाद उन्होंने वीर पुरुष वेलुत्तंपि दलवा के आधार पर एक नाटक लिखा। उसका नामकरण किया - 'केरल का क्रांतिकारी'।

"केरल का क्रांतिकारी" शीर्षक ने अन्य केरलीयों के समान मुझे भी बरबस खींच लिया। मैंने नाटक कई बार पढा। इस सच्चे देशप्रेमी नाटककार के प्रति नतमस्तक हूँ। मैंने नाटक पढने के बाद सोचा कि हिन्दी पाठकों को कुछ पूरक विवरण दूँ। साथ ही यह भी देख सकता हूँ कि नाटककार ने हिन्दी नाटक में मूल कथा में कैसी उद्भावनाएँ की हैं। उन उद्भावनाओं पर केरलीय हिन्दी पाठक की प्रतिक्रिया भी प्रस्तुत कर सकता हूँ। इसी दृष्टि से इस नाटक के विषय में कुछ लिख रहा हूँ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शीर्षक

नाटक का यह प्यारा नाम विष्णु प्रभाकर की विशेष रुचि का प्रतीक है। 'क्रांति' शब्द से उनकी बड़ी ममता है। वे स्वयं स्वाधीनता-संग्रामके सिपाही रहे हैं। उनके साथ व्यक्तिगत वार्तालाप करने पर यह भी विदित हुआ है कि सामाजिक विचारों में उनके परिवार में ही क्रांति हुई है। उनके एक नाटक का शीर्षक 'युगे युगे क्रांति' है। वेलुत्तंपि ने केरल की ट्रावंकोर रियासत में अंग्रेज कंपनी के विरुद्ध क्रांति की थी। इसी क्रांति को मुख्य बिंदु बनाकर विष्णु प्रभाकर ने जब नाटक लिखा तब उसका नाम 'केरल का क्रांतिकारी' रखकर उचित किया है। हिन्दी पाठकों की रुचि की दृष्टि से यह व्यावहारिक भी है। यह शीर्षक पढकर पाठकों को सहज ही कुतूहल होता है कि इस क्रांतिकारी का परिचय प्राप्त करें। अगर इस शीर्षक की जगह "वीर वेलुत्तंपि दलवा" शीर्षक रखा जाता तो हिन्दी भाषी पाठकों का ध्यान इस पुस्तक की तरफ़ कम जाता। वे सिर्फ़ यह कहकर पुस्तक रख देते कि ये कोई केरलीय सज्जन होंगे।

वेलुत्तंपि ने केरल की ट्रावंकोर रियासत में अंग्रेज़ कंपनी के विरुद्ध क्रांति की थी।

इस वीर, न्यायप्रिय और बलिदानी सज्जन के विषय में जनश्रुतियाँ और कथाएँ प्रचलित हैं।

वेलुत्तंपि दलवा

वेलुत्तंपि केरलीयों केलिए सुपरिचित नाम है। ट्रावंकोर रियासत के लोग इनसे विशेष परिचित रहे हैं। इस वीर, न्यायप्रिय और बलिदानी सज्जन के विषय में जनश्रुतियां और कथाएँ प्रचलित हैं। कई लोगों ने उनकी जीवनी लिखी है। इनमें सर्वश्री वेण्कुलम जी. परमेश्वरन, वी. आर. परमेश्वरन पिल्लाई, एन. बालकृष्णन नायर, जोसफ़ चाी.षक्काट और एन. के. जास की लिखी जीवनियां प्रसिद्ध हैं। ट्रावंकोर स्टेट मैन्युवल (वी. नागम अय्या) और ट्रावंकोर स्टेट मैन्युवल (टी. के. वेलु पिल्लाई) में भी वेलुत्तंपि की जीवनगाथा के राजनीतिक प्रसंग चर्चित हैं। ब्रिटिष शासन के दिनों में ऐसे वीरों की उपेक्षा सहज थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोगों ने उस वीर का असली महत्व पहचाना नहीं। यही कारण है कि ऐतिहासिक विवरण वेलुत्तंपि के विषय में अपूर्ण हैं।

देश के स्वतंत्र होने के बाद केरल के स्वतंत्रता सेनानियों में से कुछ लोगों ने सम्मिलित प्रयत्न करके वेलुत्तंपि की एक पूर्णकाय मूर्ति तिरुवनन्तपुरम के सचिवालय के प्रांगण में राजपथ के अभिमुख स्थापित की है। मण्णटि नामक स्थान पर, जहां उन्होंने अंतिम शरण ली और आत्महत्या की, एक स्मृतिचिह्न है। मलयालम के अनेक पाठ्यग्रंथों में वेलुत्तंपि की साहसिक प्रकृति पर पाठ लिखे गये हैं। वीर वेलुत्तंपि के आधार पर उनके नाम स और विभिन्न शीर्षकों से कई नाटक लिखे गये। ये अनेक बार मंचित भी हुए हैं, अब भी मंचित होते हैं। इनमें कैनिक्करा पद्मनाभ पिल्ले और वी. नीलकंठ पिल्ले के नाटक अधिक लोकप्रिय रहे हैं। वेलुत्तंपि पर चलचित्र भी मलयालम में प्रस्तुत किये गये हैं। हिन्दी में कुछ केरलीय बंधुओं ने इस विषय पर एकांकी लिखे। डॉ० एन. रामन नायर ने पूर्ण नाटक लिखा है। एक हिन्दी भाषी प्रसिद्ध साहित्यकार ने पहली बार वेलुत्तंपि पर नाटक लिखा है और वही है 'केरल का क्रांतिकारी'।

वेलुत्तंपि की जीवन-गाथा

प्रारंभ में सूचित कर चुका हूँ कि वेलुत्तंपि के जीवन के विषय में अधूरी जानकारी मिली है। राजनीतिक शतरंज के खेल में जब वेलुत्तंपि को खतम किया गया तब उन्हीं के जातिभाई उम्मिणित्तंपि ने 'दीवान' पद और अंग्रेज कंपनी की खुशामद के लिए वेलुत्तंपि के पारिवारिक घर को तहस नहस कराया; बंधुओं को बंधनस्थ कराया या राज्य से निष्कासित कराया। ऐसे वीर देशप्रेमी कम रहे जो कम से कम पूरे विवरण लिख रखते। लोगों ने उस वीर का असली महत्व पहचाना नहीं। यही कारण है कि ऐतिहासिक विवरण वेलुत्तंपि के विषय में अपूर्ण हैं। नाटककार इतिहास में छूटी बात को मनगढन्त कल्पना से पूरा कर लेते हैं।

वेलुत्तंपि की जीवन गाथा की विस्तृत रूपरेखा श्री.एन. बालकृष्णन नायर की पुस्तक में मिलती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसके आधार पर निम्नलिखित विवरण प्रस्तुत है —

पुरानी ट्रावनकोर रियासत की राजधानी तिरुवनंतपुरम थी। मगर उस रियासत का प्रारंभिक नाम वेणाट्टु था और प्रथम राजधानी वर्तमान कन्याकुमारी जिले में स्थित पद्मनाभपुरम थी। (पद्मनाभपुरम का केरलीय वास्तुकला केलिए प्रसिद्ध पुराना राजमहल इस समय पर्यटकों केलिए आकर्षण-बिंदु है।) पद्मनाभपुरम के पास इरणियल नामक छोटे शहर में तलक्कुलम का पुराना प्रतिष्ठित नायर परिवार था। इस परिवार के लोगों को आभिजात्य एवं प्रतिष्ठा का सूचक "तंपी" उपनाम प्राप्त था। वे "नायर" उपनाम की जगह "तंपि" उपनाम लिखते थे। तलक्कुलम परिवार में केशवन तंपि हुए थे। उनकी छोटी बहन वल्लियम्मा तंकच्चि सुन्दर, सुशील एवं हृष्टपुष्ट कन्या थी। 'तंकच्चि' शब्द 'तंपि' शब्द का स्त्रीलिंग रूप है। तंपि परिवार का वैवाहिक संबन्ध ऐसे ही अभिजात परिवार से हुआ करता था। परन्तु केशवन तंपि ने अपनी बहन का विवाह एक सामान्य श्रेणी के परिवार के सदस्य, पर पुरुषार्थी युवक कुँचिमायिट्टि पिल्लाई

उन दिनों राजदरबार या फौज में जगह पाने के इच्छुक युवकों केलिए हिन्दुस्तानी सीखना अनिवार्य था।

से करा दिया। बिरादरीवालों ने इसकी आलोचना की थी। इन्हीं दंपतियों की प्रथम संतान के रूप में सन् 1765 मई 6 को श्री. वेलुतंपि का (वेलायुधन) जन्म हुआ। वेलायुधन' 'कार्तिकेय' शब्द का मलयालम पर्याय है। कुमारकोविल नामक स्थान के कार्तिकेय की भक्ता, माँ ने अपने पुत्र का नामकरण इष्टदेव के नाम से किया। वेलुतंपि के एक बहन और दो भाई थे। बहिन का नाम था 'मायम्मा'। कुंचुपिराट्टितंपि मंझला लडका था और पद्मनाभनतंपि सब से छोटा। पद्मनाभन वेलुतंपि के संघर्ष में अंत तक उनके साथ था, अंत में फाँसी पर चढा। वेलुतंपि के समान पद्मनाभन भी अमर हो गया।

"वेलु" वेलायुधन का संक्षिप्त और दुलारा शब्द है। वेलुत्तंपि ने सात वर्ष तक कुंचादि पिल्लाई आशान से सामन्य शिक्षा पाई। गणित में उस बालक को विशेष

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दक्षता प्राप्त थी। आगे चार वर्ष संस्कृत की विशेष शिक्षा पाई। उन्होंने महाराज की घुडसवार फौज से अवकाश-प्राप्त एम मुसलमान भाई से हिन्दुस्तानी सीखी। उन दिनों राजदरबार या फौज में जगह पाने के इच्छुक युवकों केलिए हिन्दुस्तानी सीखना अनिवार्य था। कहते हैं कि उसी गुरुदेव ने उन्हें अरबी व फारसी भी सिखाई। दस्तावेजों से पता चलता है कि कंपनी सरकार से वेलुत्तंपि का पत्राचार फारसी में होता था। उस जमाने में केरलीय युवक कलरि (शस्त्र शिक्षणालय) में तलवार, कटार, भाला आदि परंपरागत शस्त्रों के प्रयोग में दक्षता पाते थे। वेलुत्तंपि ने भी कळरिप्पयट्टु (शस्त्र प्रयोग) सीखा। घुडसवारी में उन्होंने दक्षता प्राप्त की। यौवन के आरंभ में ही वेलुत्तंपि पूरे नगर की श्रद्धा के पात्र बनें। लंबा तगडा बदन, रोबीला चेहरा, घोडे पर हवा की तेज़ी से सवारी करने की आदत-इन तीनों विशेषताओं से पूरे इलाके के डाकू-बदमाश तक उनसे आतंकित थे। युवा वेलुत्तंपि अत्याचार या डाके की खबर पाने पर वहाँ पहुँचते थे। वे अपराधियों को रंगे हाथ पकडते और कठोर दंड देते। उन्नीस वर्ष की अवस्था तक उनकी साहसिकता की धाक हो चली थी। उन्नीस वर्ष की अवस्था की एक घटना वेलुत्तंपि के जीवन में ही एक नई दिशा ले आई। पद्मनाभपुरम में ठहरे ट्रावंकोर-महाराजा के महल से हीरे के हार की चोरी हुई, जिसका पता सिपाही नहीं लगा सके। महाराजा को सुझाया गया कि वेलुत्तंपि यह कर सकते हैं। महाराजा ने उन्हें बुलवाया। तीन दिनों के भीतर वेलुत्तंपि ने चोर को मालसहित हाजिर किया। इस घटना से प्रभावित महाराजा ने वेलुत्तंपि को राजकीय सेवा में एक छोटे पद पर नियुक्त किया। शीघ्र ही तंपि की महाराजा से धनिष्ठता और पदोन्नति होती गई।

वेलुत्तंपि के पिता का स्वर्गवास तंपि की छोटी ही अवस्था में हो गया। तंपि के भाई बहनों में पद्मनाभन के सिवा और किसी की विस्तृत चर्चा जीवनी में नहीं मिलती। तंपि की माता वल्लियम्माप्पिल्लाई अंतिम दिनों में कहाँ रहीं, तंपि के संघर्षकाल और आत्महत्या के समय माता कहाँ थीं—इन सब बातों का कोई पता नहीं लगता। वेलुत्तंपि का जन्म सन 1765 ई में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुआ और मृत्यु सन 1809 ई में । 44 वर्ष की जिन्दगी में वेलुत्तंपि जैसे स्वस्थ वीर का जीवन क्वाँरा रहा होगा, इसकी कल्पना कुछ कठिन है। उनके विवाहित जीवन व संतान का कोई जिक्र भी नहीं है। विष्णु प्रभाकर ने भूमिका में लिखा है कि उन्होंने वेलुतंपि को किसी प्रेमिका की बात जनश्रुति के रूप में सुनी थी। इतना तो सच है कि राजदरबार की सेवा में आने के बाद वेलुत्तंपि आठों पहर दंडविधान, न्यायपालन, राजनीति व कूटनीति में व्यस्त थे। इसलिए संभव है, उन्होंने विवाहित जीवन की कल्पना को ही तिलांजलि दी हो। मगर ये सारी बातें केवल अनुमानाश्रित हैं।

कठोर दंडनीति एवं कुशल प्रगतिशील प्रशासन

छोटे पद पर नियुक्त तंपि विभिन्न घटनाओं के कारण प्रमुख राजकर्मचारी हो गये । वे वाणिज्यमंत्री नियुक्त हुए। कुछ वर्ष बाद वे दलवा (दीवान) नियुक्त हुए। हर पद पर उनकी सेवा के दो पहलू स्पष्ट थे। अपराध व अन्याय पर वे सख्त दंड देते थे। इसके कई किस्से प्रसिद्ध हैं। उन्होंने राजकोष की दुर्दशा दूर

यह कठोर दंड उनकी ताकत रहा और यही अनके दुश्मनों की संख्या बढाता गया।

करने की पूरी कोशिश की। जब वे दलवा नियुक्त हुए तब यही नियमित क्रम था कि दलवा अपनी इच्छा के अनुसार रकम वेतन के नाम पर लेते थे। वेलुत्तंपि ने सिर्फ 1000/- रुपये का वेतन बाँध दिया, क्योंकि सरकारी खजाने की हालत खराब थी। उनके प्रयत्नों से खजाना शीघ्र ही भर सका तो महाराजा ने खुद उनका वेतन दुगुना कर दिया। वही वेतन आगे दीवानों केलिए नियत हुआ। कंपनी सरकार के प्रतिनिधि रेजिडेंट मेकाले और गवर्नर जनरल वेल्लस्लि उनके प्रशासन से प्रसन्न थे। वेल्लस्लि ने तो वेलुत्तंपि को बहुमूल्य उपहार भेजा। कोल्लम नगर पर हजूर कचहरी की स्थापना, वहीं प्रसिद्ध आनन्दवल्लीश्वरम मंदिर की स्थापना, कोल्लम-शेंकोट्टा सडक का निर्माण, रियासत की पूरी जमीन की पैमाइश और लगान लगाने की व्यवस्था आदि वेलुत्तंपि के प्रगतिशील शासन के चिह्न थे। अगर शिकायत थी तो यही कि वे कठोर से कठोर दंड

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देते थे। यह कठोर दंड उनकी ताकत रहा और यही उनके दुश्मनों की संख्या बढाती गयी।

'केरल का क्रांतिकारी' में वेलुतंपि :

कुशल प्रशासक वेलुतंपि के कर्मठ जीवन और दुर्भाग्यपूर्ण अंत की त्रासदी इस नाटक में चित्रित है। कंपनी से संघर्ष के प्रारंभ से नाटक प्रारंभ होता है। उसके पहले की घटनाएँ और बातें सूच्य वस्तु के रूप में अन्य पात्रों के संवाद के जरिये बताई गई हैं। इस नाटक की धुरी वेलुत्तंपि दलवा है। शेष गौण पात्र हैं। इतिहास में वेलुत्तंपि का जैसा चित्रण है वैसा ही नाटक में किया गया है। वेलुत्तंपि के छोटे भाई पद्मनाभन का भी वैसा ही चित्रण मिलता है। अंग्रेज कंपनी के प्रतिनिधि मेकाले, कंपनी फौज के कमांडर आदि के चित्रण में भी इतिहास का क्रम सुरक्षित रखा गया है।

वेलुतंपि की क्रांति

जो सज्जन केरलीय इतिहास से कम परिचित हैं उनकी जानकारी केलिए वेलुतंपि की क्रांति का थोडा सा परिचय दूं।

जिन दिनों अंग्रेज़ कंपनी दक्षिण में आई उन दिनों यहाँ केरल में छोटे बडे अनेक राजा अलग अलग छोटे राज्यों के प्रभु बने थे। उनमें ट्रावंकोर की रियासत सब से बडी थी. बाद में कोचिन रियासत की बारी थी। इसके बाद कालिकट के सामूतिरि नरेश थे। इन छोटे छोटे राजाओं की प्रतिद्वंद्विता ऐसी थी कि ये अंत में अंग्रेज कंपनी की मदद लेने मजबूर हुए। हैदर अली टीपू, आर्काट का नवाब-सब के धावों से बचना था। पुर्तगालियों और बाद में डचों से सुरक्षा भी अंग्रेज़ की मदद केलिए मजबूर करती थी। यों ये रियासतें कंपनी सरकार की मित्रता केलिए भारी नजराने भेंट करने लगीं। अंग्रेज़ों का छल-प्रपंच जानते हुए भी केरलीय नरेश अपनी गद्दी की सुरक्षार्थ सारी शर्तें स्वीकार करते गये। उस युग में भी ऐसे माई के लाल हुए जिन्होंने अंग्रेज़ों से लोहा लिया और उसी प्रयत्न में वीरगति पाई। केरल के उन देशप्रेमी वीरों की पंक्ति में सर्वप्रथम प.षशिराजा थे। (इनपर केरलसिंह नामक उपन्यास हिन्दी में प्रस्तुत है) प.षशि उत्तर केरल की छोटी रियासत थी। वहाँ के वीर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वीर केरलवर्मा ने पहाडियों में कुरिच्चियर नामक आदिवासियों की सहायता से काफी दिनों तक अंग्रेज कंपनी से गनीमी युद्ध किया ।

केरलवर्मा ने पहाडियों में कुरिच्यर नामक आदिवासियों की सहायता से काफी दिनों तक अंग्रेज़ कंपनी से गनीमी युद्ध किया । अंत में वे वीर-मृत्यु पा गये ।

वीर केरलवर्मा की ही परंपरा में वेलुतंपि भी आते हैं । अंग्रेज कंपनी ने ट्रावंकोर के नरेश से आठ लाख रुपये प्रतिवर्ष नजराना देने के समझौते पर हस्ताक्षर कराये । पहले नज़राना कम था । इस अपमान की घूंट को वेलुतंपि दलवा चुपचाप पी गये । मगर वे भीतर ही भीतर बडी क्रांति की तैयारियाँ कर रहे थे । कोचिन नरेश से उनकी मित्रता थी । उनके मंत्री पालियत्तच्चन से गूढ पत्राचार करके वेलुतंपि ने उनकी सैनिक सहायता की प्रतीक्षा की । कालिकट के सामूतिरी से भी आश्वासन मिला था । कुछ विदेशी सहायता की आशा थी । वेलुतंपि ने यथासंभव पूरी तैयारी की थी । उन की मृत्यु के बाद अंग्रेज़ कंपनी ने देखा कि तंपि ने काफी मात्रा में गोला बारूद, बंदूक आदि इकट्ठे किये थे । मगर ऐन वक्त पर मित्रों ने धोखा दिया । मेकाले बडे छल प्रपंच में माहिर थे । इधर राजमहल के कई कर्मचारी पहले से वेलुतंपि पर खीझते थे । वे वेलुतंपि के खिलाफ राजा के कान भर सके । कंपनी सरकार को गुप्त खबरें भी पहुँचाते रहे । इसलिए वेलुतंपि की योजना सफल नहीं हो सकी । वेलुतंपि की महानता उनके बलिदान से प्रकट होती है । उन्होंने स्वयं महाराजा से मिलकर यह प्रस्ताव किया कि महाराजा कंपनी सरकार से समझौता करें और वेलुत्तंपि को वध-दंड के योग्य बागी घोषित करें । महाराजा ने अनमना होते हुए भी विवशतावश वही किया ।

उन्होंने स्वयं महाराजा से मिल-कर यह प्रस्ताव किया कि महाराजा कंपनी सरकार से समझौता करें और वेलुतंपि को वधदंड के योग्य बागी घोषित करें ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वेलुतंपि की नंगी लाश को कंपनी फ़ौज के अधिकारी सण्णटि से तिरुवनन्तपुरम तक ले आये। तिरुवनन्तपुरम की गली गली में उन्होंने उसका प्रदर्शन किया ताकि जनता पर अंग्रेज़ राज का आतंक छा जाय। उसके बाद कण्णम्मूला नामक मुहल्ले के एक टीले पर उसकी प्रदर्शनी एक लौह पेटी में की। अंत में उस लाश को उळ्ळूर नामक मुहल्ले में चोरों डाकुओं की लाश की तरह

अंग्रेज़ी भाषा और अन्य साधनों से अब भी भारतीयों के मन में जिन अंग्रेज़ गोरों के प्रति ममता व श्रद्धा बनी हुई है उनका असली स्वरूप-समझने केलिए ऐसे ग्रंथ पढना अनिवार्य है।

ज़मीन में गाड दिया। जिस टीले पर लाश का प्रदर्शन किया उसमें आगे चलकर ईसाई धर्मप्रचारकों का वैदिक शिक्षालय स्थापित हुआ। वह अब भी वहाँ उस नृशंस कर्म के प्रतीक के रूप में विराजमान है। गोरे रसिडेंट और गवर्नर जनरल ने जिस तंपि की भूरि भूरि प्रशंसा की थी, उपहार भेजा था उसके देशप्रेम के अपराध का दंड यों दिया गया। रंग से गोरे लोगों के काले दिल और काली करतूत का यह उदाहरण है। दक्षिण आफ्रीका के गोरे वहाँ के असली मालिक अश्वेतों के साथ जो व्यवहार कर रहे हैं वह देखकर हमें आश्चर्य नहीं करना चाहिए। क्योंकि ये गोरे हम भारतीयों से यही व्यवहार करते थे। अंग्रेज़ी भाषा और अन्य साधनों से अब भी भारतीयों के मन में जिन अंग्रेज़ गोरों के प्रति ममता व श्रद्धा बनी हुई है उनका असली स्वरूप-समझने केलिए ऐसा ग्रंथ पढना अनिवार्य है।

"केरल का क्रांतिकारी" में कथावस्तुपरक मौलिक उद्भावना

विष्णु प्रभाकर ने वेलुतंपि की क्रांति अर्थात अंग्रेज कंपनी से संघर्ष को ही मुख्यत: मंच पर प्रस्तुत किया है। उन्होंने आधुनिक नाटक की मंचीय शिल्पविधि से काम लिया है। यह संघर्ष अधिकतर युद्ध-परक है। उसमें नाटक का रूपायन बडा कठिन है। अत: नाटककार ने 'अम्मुकुट्टी' और 'धाय माँ' नामक स्त्रीपात्रों की कल्पना की है। उन्होंने भूमिका में इसका स्पष्टीकरण भी दिया है। उनकी इस कल्पना का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक आधार जनश्रुति में वेलुत्तंपि की एक प्रेमिका के होने की कथा है। दूसरा और अधिक सशक्त आधार है वेलुत्तपि की 'चेतना'। नाटककार ने उस चेतना को मूर्त बनाकर उसे स्त्रीरूप दिया है। वही अम्मुकुट्टी है। अम्मुकुट्टी की कल्पना केरल का वीरांगना के योग्य है। यहाँ प्रसिद्ध उत्तर केरल के वीरगीतों में उण्णियार्चा जैसी वीरवनिताओं का चित्रण है, जो अप्सरा सी सुन्दर थीं, दुर्गा सी वीर भी। 'धाय माँ'

उत्तर केरल के वीरगीतों में उण्णियार्चा जैसी वीरवनिताओं का चित्रण है, जो अप्सरा सी सुन्दर थीं, दुर्गा सी वीर भी।

की कल्पना संभवतः तंपि की माँ की जगह की गई है जो सचमुच बेटे के साहसी जीवन-नाटक के हर दृश्य में उन्हें साधुवाद एवं सांत्वना देने साथ रही होगी। नाटक में कुछ गौण पात्रों के नाम कल्पित किये हैं, जो सहज ही लगते हैं।

नाटक के मंचन और सजीवता की दृष्टि से अम्मुकुट्टी के नेतृत्व में देशप्रेमियों का संगठन, उस वीरांगना के कंठ स अभियानगीत आदि की

यहाँ केरलीयता की सुगंधि पर हिन्दी प्रदेश की सुगंधि हावि हो जाती है।

कल्पना भी हिन्दी नाटक में विशेष दृष्टव्य है। ये प्रसंग पढते समय द्विजेन्द्रलाल राय के प्रसिद्ध नाटक मेवाड़-पतन की मानसी और उस नाटक के दृश्य स्मरण आते हैं। इस उद्भावना का अभिनन्दन करते हुए यही अनुभव होता है कि यहाँ केरलीयता की सुगंधि पर हिन्दी प्रदेश की सुगंधी हावी हो जाती है। शुद्ध केरलीय इतिहास के प्रेमी पाठकों की भौंहें इन प्रसंगों पर कुछ टेढी हो सकती हैं।

अंग्रेज़ कथापात्रों के संवाद में अंग्रेज़पन लाने केलिए "त" की जगह "ट" का प्रयोग किया गया हैं। मगर नाटककार दो कारणों से इससे बच सकता था। एक यह कि इस नाटक का कोई पात्र हिन्दी-भाषी नहीं। दूसरे सिर्फ़ 'ट' उच्चारण को छोड शेष अंशों में अंग्रेज़ पात्र शुद्ध हिन्दी ही बोलते हैं। इस दृष्टि से लगता है कि आगामी संस्करण में मेकालेजी 'ट' छोड दें तब भी कोई नुकसान नहीं होगा। अंग्रेजों केलिए 'फिरंगी'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शब्द व्यंग्य-उपहास का बोधक जरूर है। मलयालम में परंकि (फिरंगी) शब्द पोर्तुगालियों केलिए विशेषत: प्रयुक्त है। अंग्रेजों के लिए 'गोरे' शब्द का प्रयोग होता है। अनुवाद में लक्ष्य भाषा की प्रवृत्ति के अनुसार शब्द का प्रयोग एकदम उचित है।

केरलीय हिन्दी पाठक की प्रतिक्रिया:

विष्णु प्रभाकरजी की अन्य रचनाएँ मैंने पढी हैं। किन्तु मैंने 'केरल का क्रांतिकारी' विशेष रुचि और ध्यान से पढा। इसका मुख्य कारण यह है कि केरलीय कथावस्तु पर मौलिक साहित्य-सृजन करनेवाले हिन्दी भाषी लेखकों की संख्या बिलकुल कम रही है। केरल और कन्याकुमारी की यात्रा के दौरान अनेक हिन्दी भाषी बंधु इस प्रदेश की अनोखी हरियाली पर मुग्ध होकर कविताएँ लिखते हैं। ऐसी कविताओं का संकलन भी दुर्भाग्य से नहीं किया गया है।

केरलीय कथावस्तु पर मौलिक साहित्य-सृजन करनेवाले हिन्दी भाषी लेखकों की संख्या बिलकुल कम रही है।

केरलीय इतिवृत्त पर रचना करनेवाले दो प्रशस्त व्यक्तियों की स्मृति इस समय आती है। प्रथम हैं सेठ गोविन्ददास। उन्होंने जेलवास के दिनों में अपने साथ जेल में रहे एक केरलीय मित्र से 'कुचेलवृत्तं' के रचयिता रामपुरत्तु वारियर और ट्रावंकोर नरेश की भेंट की कथा सुनी थी। गोविन्ददास ने इसके आधार पर 'केरल का सुदामा' एकांकी लिखा था। यह एकांकी मैंने पढा है। दूसरे लेखक देवेन्द्र सत्यार्थी हैं। वे भारतयात्रा के दौरान केरल में कुछ दिन रहे। उन्होंने वर्कला में रहकर 'दूध गाछ' उपन्यास लिखा था। केरल में रहते हुए पं० देवदूत विद्यार्थी ने मौलिक लेखन किया था। पत्नी भारतीजी को उन्होंने अनुवाद में सहायता भी दी थी। मगर उन्होंने केरलीय कथावस्तु पर हिन्दी में कुछ लिखने का प्रयास किया ऐसा नज़र नहीं आता। इस प्रसंग पर मैं सविनय स्वीकार करता हूँ कि मेरी जानकारी अधूरी है। जो बंधुवर अन्य रचनाओं के बारे में जानते हों उनसे प्रार्थना है कि इस विषय पर किसी माध्यम से कृपया प्रकाश डालें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपर्युक्त पृष्ठभूमि में विष्णु प्रभाकर जी के नाटक का शीर्षक "केरल का क्रांतिकारी" पढकर मेरे मन में कुतूहल हुआ। 'कुतूहल' शब्द का प्रयोग मैं ने जान-बुझकर किया है। हमारे देश में दो दिन रूस या अमरीका में ठहरकर रूस या अमरीका का विराट संस्मरण लिखनेवालों की कमी नहीं है। गाइडों या सूचना-ग्रन्थों के आधार पर ये पृष्ठ के पृष्ठ रंगते जाते हैं। परन्तु ज्यों ज्यों मैं केरल का क्रांतिकारी पढता गया त्यों त्यों मेरा कुतूहल श्रद्धा के रूप में परिणत हो गया। वे सिर्फ इसकेलिए तिरुअनंतपुरम आये, कान्नि, मण्णटि आदि स्थानों पर गये। इस तिरुअनन्तपुरम यात्रा के दौरान उनसे मेरी भेंट भी हो सकी थी। पर मुझे मालूम नहीं था कि वह इस निधि की खोज की यात्रा थी। इस हिन्दी भाषी नाटककार ने जिस प्रकार केरलीय व्यक्तियों, वस्तुओं और स्थानों के नामों के हिज्जे अत्यंत शुद्ध लिखे हैं उसे देखकर सुखद आश्चर्य हुआ। मेरा आश्चर्य निराधार था क्योंकि इन्होंने आवारा मसीहा लिखने केलिए वर्षों की साधना की थी। शब्दों की शुद्धि पर इनका जोर

हिन्दी के माध्यम से अखिल भारतीय साहित्य लिखने का कार्य हिन्दी भाषी लेखकों द्वारा जब होता है तब उसका महत्व दुगुना होता है।

रहा है। इसपर भी यह मानना है कि एकाध शब्द में प्रूफ की गलती है: अन्यथा नज़र लग जाती।

हिन्दी के माध्यम से अखिल भारतीय साहित्य लिखने का कार्य हिन्दी भाषी लेखकों द्वारा जब होता है तब उसका महत्व दुगुना होता है। एक तो हिन्दी भाषी अन्य प्रदेश की बातों से परिचित हो जाते हैं। दूसरे, हिन्दी प्रदेश के पाठक इन्हें अधिक ध्यान से पढते हैं। इसका और एक व्यावहारिक पहलू भी है। हिन्दी के माध्यम से केरल या दक्षिण के किसी भी प्रान्त में उत्तर प्रदेश की कोई गाथा पढने को मिलती है तब उससे केरलीय पाठक को कोई विशेष घनिष्ठता अनुभव नहीं होती। किंतु जब हिन्दी के माध्यम से वेलुतम्पि, मार्तांडवर्मा या किसी समसामयिक केरलीय पात्र की कथा आती है और उसका लेखक हिन्दी भाषी होता है तब केरलीय पाठक उस लेखक से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आशा है, अन्य लेखक भी विष्णु प्रभाकर का अनुकरण करेंगे।

आत्मीयता अनुभव करता है, हिन्दी के प्रति भी। इसके अपने अनुभव के उल्लेख के साथ यह लेख समाप्त करूँ।

विष्णु प्रभाकरजी कई बार केरल आ चुके हैं। उन्हें केरल बडा प्रिय है। उनकी एक बार की केरलयात्रा के दिनों उनको पचहत्तरवीं वर्षगांठ पडी थी। उस शुभ अवसर पर केरल हिन्दी प्रचार सभा ने तिरुअनंतपुरम पर उनका सार्वजनिक अभिनंदन किया। इसमें केरल के कई प्रबुद्ध नागरिक और मलयालम साहित्यकार आये थे। उन सबके अभिनंदन की प्रमुख टेक यही थी—"आज हमारे बीच हमारे इतिहास के एक वीर पुरुष पर हिन्दी में नाटक लिखनेवाले प्रतिभाशाली साहित्यकार उपस्थित हैं।" इस अनुभूति का मर्म शब्दों से बताना कठिन है।

'आवारा मसीहा' और 'केरल का क्रांतिकारी' के लेखक को प्रभु स्वास्थ्य एवं दीर्घ आयु दें जिससे वे और भी केरलीय विषयों पर रचनाएँ लिखें। आशा है, अन्य लेखक भी विष्णु प्रभाकर का अनुकरण करेंगे।

★

अंधकार को क्यों धिक्कारें ?
अच्छा है इक दीप जलायें।

—वेल्थी फिशर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निरक्षरों को भी जीवन की मुख्य धारा से जोड़ें

श्री. वी. के. आस्थाना

केन्द्र प्रौढ शिक्षा निदेशालय, नयी दिल्ली के संयुक्त निदेशक एवं अनुभवी-प्रौढ शिक्षक श्री. वी. के. आस्थाना ने शिक्षित युवकों से आह्वान किया कि देश की जो निरक्षर जनता जीवन के हर क्षेत्र में अपने अज्ञान के कारण पिछडी हुई है उसे साक्षर बनाकर जीवन की मुख्य धारा से जुडने और तद्वारा विकास के पथ पर अग्रसर होने का अवसर प्रदान करें। आप ने कहा कि इस उद्देश्य से बनायी गयी राष्ट्रीय साक्षरता मिशन एक पुनीत यज्ञ है जिसमें हर सजग नागरिक को अपने अंशदान की आहुति देनी है।

केरल हिन्दी प्रचार सभा के साक्षरता मंडल के सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए बोल रहे थे श्री. आस्थाना। आप ने श्रीमती वेल्थी फिशर की निस्वार्थ सेवाओं का स्मरण कराया जिन्होंने महात्मा गांधी की प्रेरणा से लखनऊ में भारत का प्रथम साक्षरता निकेतन स्थापित किया था। हमारे देश की अधिकांश जनता आज भी निरक्षर है। उन्हीं की बदौलत कुछ लोग शिक्षा पा सके हैं, अपने व्यक्तित्व का विकास कर सके हैं और स्वतंत्रता के सद् फल भोग सके हैं,। ऐसे लोगों का यह कर्तव्य हो जाता है कि वे अपने निरक्षर भाई-बहनों को भी साक्षरता के द्वारा अपने व्यक्तित्व विकसित करने में सहायता पहुँचायें। यदि एक एक शिक्षित, एक एक निरक्षर को साक्षर बनाने का प्रण लें तो यह कार्य सरलता से संपन्न हो सकेगा। श्री. आस्थाना ने कहा कि अनुसूचित जातियों और जन जातियों के भाई-बहनों को जो कि सदियों से दलित पीडित रहे हैं हमारी सहायता की विशेष आवश्यकता है। उन्हें साक्षर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बनाने में जो आनन्द मिलता है वह अन्यत्र असुलभ है।

सम्मेलन में अध्यक्षता करते हुए केरल राज्य संसाधन केन्द्र के कार्यकारी निदेशक एवं केरल के "ग्रन्थालय महर्षि" श्री. पी. एन. पणिक्कर ने अह्वान किया कि त्याग और देश प्रेम के मूल्यों को आत्मसात करते हुए युवा पीढी राष्ट्रीय साक्षरता मिशन के यज्ञ में जुट जायें ताकि थोडे समय में ही हम अपने महान देश को निरक्षरता के घोर अभिशाप से सदा केलिए विमुक्त कर सकें।

केरल हिन्दी प्रचार सभा के स्नातकोत्तर केन्द्र के प्राचार्य प्रो० डी. तंकप्पन नायर ने कृतज्ञता प्रकट की। सम्मेलन के प्रारंभ में छात्रों ने साक्षरता गीत गाये और साक्षरता के नारे लगाये।

जिस राजा के राज्य में सुरादेवी आदर प्राप्त करेगी वह राज्य कालवेदी पर नष्ट हो जायेगा।

—भगवान बुद्ध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्व साक्षरता वर्ष का शुभारंभ केरल में

केरल में विश्व साक्षरता वर्ष के व्यापक समारोह का शुभारंभ केरल हिन्दी प्रचार सभा के प्रांगण में तिरुवनन्तपुरम के जिलाधीश श्री. टी. बालकृष्णन ने किया। आप नें आह्वान किया कि इस वर्ष के दौरान संपूर्ण देश को संपूर्ण रूप से साक्षर बनाने में सारे शिक्षित नागरिक पूर्ण सहयोग दें।

केरल अनौपचारिक शिक्षा एवं विकास समिति के मंत्री श्री. पी. एन. पणिक्कर और केरल हिन्दी प्रचार सभा के मंत्री एवं अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ के कोषाध्यक्ष श्री एम. के. वेलायुधन नायर के नेतृत्व में नगर के प्रमुख मार्ग से जो साक्षरता पद यात्रा आयोजित हुई वह साक्षरता वर्ष का संदेश फैलाने में बहुत उपयोगी रही। तिरुवनन्तपुरम साक्षरता भवन में आयोजित सम्मेलन में श्री. पी. एन. पणिक्कर नें कहा कि दरिद्रता का उन्मूलन केवल संपूर्ण साक्षरता से ही संभव है। तिरुवनन्तपुरम नगर निगम के महापौर श्री पी. माक्सवेल ने बताया कि निरक्षरता के जो दुष्परिणाम हम भोग रहे हैं उन से देश को बचाने केलिए संपूर्ण साक्षरता का संकल्प सार्थक करने में हर नागरिक अपनी भूमिका अदा करे।

केरल विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डा० वी के सुकुमारन नायर नें युवा पीढी से आह्वान किया कि हर शिक्षित व्यक्ति निरक्षरता निवारण को अपना जीवनव्रत बना ले।

राज्य संसाधन केन्द्र के निदेशक श्री. पी. टी. भास्कर पणिक्कर ने इस तर्क को निर्मूल बताया कि गरीबी हटाने पर निरक्षरता अपने आप हट जायेगी। उन्होंने अमरिका का उदाहरण दिया जहाँ भौतिक प्रगति के बावजूद 20 प्रतिशत जनता निरक्षर है। आप ने कहा कि गरीबी और निरक्षरता समाज के पिछडेपन के दो अंग हैं जिनका हमें एक साथ सामना करना है। हमें जनता में अहिंसा का जीवन दर्शन साक्षरता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के माध्यम से पहुँचाना है ताकि बढती हुई हिंसा-वृत्ति का ह्रास हो सके।

केरल विश्वविद्यालय के प्रौढ शिक्षा तथा प्रसार केन्द्र के निदेशक एवं भारतीय प्रौढ शिक्षा संघ के उपाध्यक्ष डा० के. शिवदासन पिल्लै ने विश्व साक्षरता वर्ष के विश्व-व्यापी कार्यक्रमों पर प्रकाश डाला।

मलयालम के विख्यात समालोचक प्रो० एस. गुप्तन नायर ने बताया कि लोक शक्ति को जाग्रत करने केलिए यह आवश्यक है कि साक्षरता प्रचार के द्वारा जन-मानस में चेतना अद्दीप्त करें। हम साक्षरता अभियान के द्वारा देश के इतिहास का नव-निर्माण कर रहे हैं जिस पर हमें गर्व होना चाहिए।

केरल विश्वविद्यालय के पूर्व उप कुलपति डा० एन. ए, करीम ने इस बात पर ज़ोर दिया कि विकास की गति में तीव्रता लानी है तो निरक्षरता का उन्मूलन करना ही होगा। केरल सरकार के मुनिसिपल निदेशक श्री. केशवन ने बताया कि केरल के सभी नगर निगमों द्वारा इस वर्ष साक्षरता अभियान का कार्यक्रम क्रियान्वित किया जायेगा। योजना मासिक पत्रिका के पूर्व संपादक श्री. रोसकोट कृष्णपिल्ल ने बताया कि भारत की बढती हुई निरक्षरता हर भारतीय केलिए लज्जाजनक है। इसे दूर करने का जो लक्ष्य महात्मा गाँधी ने हमारे सामने रखा उसे प्राप्त करने का प्रयत्न हर भारतीय को करना चाहिए।

केरल के प्रमुख पत्रकार श्री. तेंगमम बालकृष्णन ने आशा व्यक्त की कि विश्व साक्षरता वर्ष के व्यापक अभियान के फलस्वरूप केरल इतर भारतीय राज्यों के पहले ही संपूर्ण रूप से साक्षर बन सकेगा और इस दिशा में इतर राज्यों का मार्ग दर्शन करेगा।

सम्मेलन के बाद केरल अनौपचारिक शिक्षा एवं विकास समिति के नेतृत्व में साक्षरता प्रचार-वाहन-यात्रा आरंभ हुई। स्वातितिरुनाल संगीत अकादमी, तिरुवनन्तपुरम के विद्यार्थियों ने साक्षरता गीत गाते हुए यात्रा का अनुगमन किया। ❀

भारत का प्रथम संपूर्ण साक्षर जिला – एरणाकुलम।

संपूर्ण साक्षर नगर कोट्टयम।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वमंच पर हिन्दी की प्रतिष्ठा बढायें

श्री. भक्तदर्शन
पूर्व केन्द्र शिक्षा राज्य मंत्री

पूर्व केन्द्र शिक्षा राज्य मंत्री एवं कानपुर विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति श्री. भक्तदर्शन ने आह्वान किया कि विश्वमंच पर हिन्दी की प्रतिष्ठा बढाने केलिए आवश्यक कदम उठाये जायें। आपने कहा कि संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा स्वीकृत भाषाओं में अरबी, स्पेनिश जैसी कुछ ऐसी भाषायें भी हैं जिनके बोलनेवालों की संख्या हिन्दी बोलनेवालों की संख्या से बहुत कम है।

"हिन्दी विश्व भाषा के रूप में" विषय पर केरल हिन्दी प्रचार सभा द्वारा आयोजित संगोष्ठी का उद्घाटन कर रहे थे श्री. भक्तदर्शन। आप ने आगे कहा — पहले हमें अपने देश में हिन्दी की दशा सुधारनी है। हिन्दी के सूत्र में समस्त भारतीय जनता को जोडना है। हिन्दी के संबंध में केरल ने जो नीति अपनायी है वह सर्वथा अनुकरणीय है। जिस प्रकार संस्कृत के माध्यम से भारत को जोडने का कार्य जगद्गुरु शंकराचार्य ने किया वैसे ही हिन्दी के माध्यम से भारत को जोडने का कार्य हमें करना है। यदि यह कार्य सिद्ध हो सके तो वह दिन दूर नहीं रहेगा जब संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा हिन्दी को मान्यता मिलेगी।

संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए केरल सरकार के खेल कूद एवं युवा कार्य मंत्री एवं संसदीय राजभाषा समिति के पूर्व सदस्य श्री. ए. नीललोहितदासन नाटार ने कहा कि शस्त्र निर्माण पर आधारित अर्थनीति ने बीसवीं सदी में दो महायुद्धों को जन्म दिया। अब कृषि और ग्रामोद्योग पर अधिष्ठित गांधीवादी अर्थ नीति की उपादेयता बढती जायेगी। साथ ही साथ गांधीवाद की जन्म भूमि भारत की राष्ट्रभाषा की प्रतिष्ठा भी विश्वमंच पर बढती जायेगी। विश्व भाषा के रूप में हिन्दी का विकास करने केलिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवश्यक है कि हम इतर विश्व भाषाओं से हिन्दी में और हिन्दी से इतर विश्व भाषाओं में उत्तम साहित्य का अनुवाद शीघ्रतापूर्वक करने का प्रबन्ध करें, इतर विश्व भाषाओं से शब्द ग्रहण करके हिन्दी की शब्दावली को समृद्ध बनायें और विदेशों के भारतीय दूतावासों में हिन्दी सिखाने की पर्याप्त सुविधायें उपलब्ध करायें।

आलेख प्रस्तुत करते हुए कोचिन विश्वविद्यालय के पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष डा० एन.ई. विश्वनाथ अय्यर ने कहा कि बोलनेवालों की संख्या की दृष्टि से, गरिमामय सांस्कृतिक विरासत की दृष्टि से, साहित्यिक विकास की दृष्टि से, यांत्रिक उपकरणों की समर्थता की दृष्टि से और वैज्ञानिक तथा तकनीकी विषयों से संबंधित अभिव्यंजना क्षमता की दृष्टि से विश्व भाषाओं में हिन्दी का प्रमुख स्थान है। हिन्दी की अभिव्यंजना क्षमता और विश्वमंच पर उसकी प्रतिष्ठा बढाने केलिए यह आवश्यक है कि भारत के प्रमुख वैज्ञानिक और राजनेता राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय मंचों पर अपने विचार हिन्दी में ही अभिव्यक्त करें।

तृशुर सरकारी अध्यापक प्रशिक्षण महाविद्यालय के पूर्व प्राचार्य डा० एस. राजप्पन नायर ने इस बात पर जोर दिया कि हिन्दी की प्रतिष्ठा बढाने केलिए हम राष्ट्र को आत्मनिर्भर बनायें और देश की बढती हुई निरक्षरता को दूर करें। हिन्दी को भारत की एक मात्र राजभाषा बनाने पर ही भारत में हिन्दी की प्रतिष्ठा बढ सकती है। पर्याप्त आर्थिक और राजनीतिक संबल प्राप्त हो सके तो हिन्दी को निश्चय ही संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा मान्यता मिल सकेगी।

स्वागत भाषण में केरल हिन्दी प्रचार सभा के मंत्री एवं अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ के कोषाध्यक्ष श्री. एम. के. वेलायुधन नायर ने सुझाया कि इतर भारतीय भाषाओं के उत्तम साहित्य के शीघ्रतम अनुवाद से हिन्दी को भारत की सामासिक संस्कृति का प्रतिबिंब बनाना हिन्दी को विश्वमंच पर प्रतिष्ठा दिलाने केलिए अत्यंत आवश्यक है। आप ने कहा कि हिन्दी को एशिया की संपर्क भाषा और देवनागरी को एशिया की संपर्क लिपि बनाना हमारा ध्येय होना चाहिए।

संगोष्ठी के प्रारंभ में छात्रों ने श्री. रामेश्वर दयाल दुबे द्वारा रचित विश्व गीत गाया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वामी विवेकानन्द के जीवन से युवा पीढ़ी प्रेरणा ग्रहण करें

प्रो० एन. एम. जोसफ
वन विभाग मंत्री, केरल सरकार

केरल सरकार के वन विभाग मंत्री प्रो० एन. एम. जोसफ ने युवकों से आह्वान किया कि वे स्वामी विवेकानन्द के व्यक्तित्व और कृतित्व से प्रेरणा ग्रहण करें और वर्तमान सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक संकटों से देश को विमुक्त करने का प्रयत्न करें। आपने चेतावनी दी कि लक्ष्यहीनता, बेकारी, संत्रास आदि से ग्रस्त युवा पीढ़ी को यदि सही मार्गदर्शन नहीं दिया जाएगा तो देश की प्रगति असंभव हो जाएगी।

स्वामी विवेकानन्द के 127 वें जन्म दिवस के अवसर पर राष्ट्रीय युवा दिवस के सिलसिले में केरल हिन्दी प्रचार सभा द्वारा आयोजित सम्मेलन का उद्घाटन कर रहे थे प्रो० एन. एम. जोसफ। उन्होंने कहा कि स्वामी विवेकानन्द गरिमामयी भारतीय संस्कृति के प्रतीक थे जिन्होंने विश्वमंच पर भारत की आर्ष संस्कृति की प्रतिष्ठा बढ़ायी। उनके उत्कृष्ट जीवन का अध्ययन युवकों में राष्ट्र की ज्वलंत समस्याओं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के प्रति प्रतिबद्धता उत्पन्न कर सकता है।

सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए मलयालम के प्रमुख विश्वकोशकार श्री. पी. टी- भास्कर पणिक्कर ने कहा कि फ्राँस और अमेरिका की क्राँतियों ब्रिटन की जनतंत्रात्मक शासन प्रणाली और प्राचीन भारत के मनीषियों के औपनिषदिक ज्ञान से प्रेरणा प्राप्त कर स्वामी विवेकानन्द ने दासता की तन्द्रा में पडी हुई तत्कालीन भारतीय जनता को अपनी उज्ज्वल वाणी और ठोस कर्मों द्वारा जाग्रत किया था जिससे भारतीय समाज में नवोत्थान का सूत्रपात हुआ। इसी नवोत्थान ने भारत को स्वतंत्रता दिलायी। पर आज भी भारत की अधिकांश जनता निरक्षरता के घोर अंधकार में जडवत् सोयी हुई है जिसकी चेतना को साक्षरता अभियान द्वारा जगाने का दायित्व शिक्षित युवक-युवतियों को अपने ऊपर ले लेना है। तभी स्वामी विवेकानन्द का आह्वान " उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान् निबोधत " चरितार्थ होगा।

श्रीरामकृष्णाश्रम, तिरुवनंतपुरम के श्री प्रशांतानन्द स्वामी ने बताया कि समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर करने का उत्तम उपाय जनता को सही शिक्षा द्वारा लोकमंगलकारी कर्मों में प्रवृत्त करना है। ऐसा करने से जाति, धर्म, भाषा आदि के नाम पर फैल रहा विद्वेष मिट जाएगा और मैत्री, सहकारिता और संतोष का वातावरण उत्पन्न होगा। युवक युवतियों में ही काम करने की अधिक शक्ति है। इसलिए उनमें भारतीय आदर्शों के प्रति रुचि उत्पन्न करने पर भी समाज में वाँछित परिवर्तन लाया जा सकता है। उन्होंने विवेकानन्द की इस उक्ति का स्मरण दिलाया कि यदि एक सौ आदर्शनिष्ठ युवक मिल जायेंगे तो भारत को स्वर्ग बना सकेंगे।

मलयालम के साहित्यकार प्रो० कोशि तलक्कल ने महात्मा ईसा और स्वामी विवेकानन्द के सन्देशों की समानता पर प्रकाश डालते हुए युवकों से अनुरोध किया कि अपने श्रेष्ठ पूर्वजों की महिमा मंडित नादधारा का अर्थ पहचान कर स्नेहपूर्ण सेवा कार्यों से देश की भलाई करें।

केरल हिन्दी प्रचार सभा की कार्यकारिणी समिति के सदस्य एवं मलयालम-हिन्दी लेखक श्री. कुन्नुकुऴि कृष्णन कुट्टी ने कृतज्ञता ज्ञापित की।

छात्रों ने विवेकानन्द भजन गाये। ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी प्रान्तों में दक्षिण भारतीय भाषाओं का व्यवस्थित अध्यापन हो

डा० पी. टी. अब्रहाम

मैसूर स्थित केन्द्रीय भारतीय भाषा संस्थान के डा० पी.टी. अब्रहाम ने कहा कि हिन्दी प्रान्तों में दक्षिण भारतीय भाषाओं का अध्यापन व्यवस्थित रूप से किया जाना है और इस उद्देश्य से विविध भाषा-भाषी क्षेत्रों के अध्यापकों को इतर भारतीय भाषाओं में प्रशिक्षण देने का कार्य केन्द्रीय भारतीय भाषा संस्थान में हो रहा है। केरल हिन्दी प्रचार सभा में आयोजित एक चर्चा में भाषण दे रहे थे डा० पी. टी. अब्रहाम। चर्चा में भाग लेते हुए भारतीय भाषा संस्थान के मलयालम पाठ्यक्रम के प्रतिभागी अध्यापक श्री. बिन्देश्वर मालटो(बिहार), श्री. राजन महन्त (असम), श्री. अब्दुल असीस (असम), श्री. एम. एस. शिवराज (कर्नाटक), श्री. प्रकाशचन्द्र बैवा (उत्तर प्रदेश), श्री. दिनेश राय (उत्तर प्रदेश), श्री उदयनारायण सचनन (उत्तर प्रदेश), श्री. आर. सी. गिलडियार (उत्तर प्रदेश), श्री वी. एस. राणा (उत्तर प्रदेश), श्री. महेन्द्र कुमार चौधरी (बिहार), श्री. रामाशिष महत्ता (बिहार), श्री. अब्दुल राष (असम), और श्री. ए. बी हुली (महाराष्ट्र) ने मलयालम के अध्ययन में ध्वनि, पद, अर्थ और वाक्य के स्तरों पर अनुभूत होनेवाली कठिनाइयों का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि मलयालम की कुछ संघर्षी और नासिक्य ध्वनियों का उच्चारण करने में इतर भाषा-भाषियों को, विशेषकर हिन्दी भाषियों को, बड़ी कठिनाइयाँ होती हैं। उन्होंने यह भी बताया कि केरल की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के निकट परिचय के अभाव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में कुछ मलयालम शब्दों का अर्थ-ग्रहण भी अत्यन्त कठिन पड जाता है। केरल हिन्दी प्रचार सभा के मंत्री एवं अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ के कोषाध्यक्ष श्री. एम. के. वेलायुधन नायर ने कहा कि उक्त कठिनाइयों के निवारण केलिए यही उचित होगा कि हिन्दी प्रान्तों में त्रिभाषा सूत्र का सफल कार्यान्वयन करने केलिए दक्षिण के हिन्दी उपाधिधारियों को उचित प्रशिक्षण देकर अपनी मातृभाषा सिखाने केलिए नियुक्त किया जाय। ऐसा करने से दक्षिण के हिन्दी उपाधिधारियों केलिए जीविकोपार्जन का भी मार्ग प्रशस्त होगा जिससे हिन्दी अध्ययन के प्रति लोगों की रुचि बढ जायेगी। आप ने कहा कि इसी उद्देश्य से केरल हिन्दी प्रचार सभा द्वारा संचालित हिन्दी शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में हिन्दी माध्यम में मलयालम सिखाने का पर्याप्त प्रशिक्षण भी दिया जाता है। डा० मावेलिक्करा अच्चुतन, प्रो० एन. माधवनकुट्टी नायर, प्रो०डी. तंकप्पन नायर, डा० एस. राजप्पन नायर, प्रो० आर.वासुदेवन पोट्टी, श्री के.वी कृष्णनकुट्टी आदि ने चर्चा में भाग लिया। ★

क्या आप जानते हैं?

कि शराब पीने से

: यकृत को नुकसान होता है।

: मधुमेह रोग बढ जाता है।

: हृदय की मांसपेशियाँ कमजोर हो जाती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गाँधीजी की स्मृति में केरल की श्रद्धांजली

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की पुण्य स्मृति में 31-1-1990 को विश्व शांति दिवस के विविध कार्यक्रमों द्वारा केरल की जनता ने भी भाव-भीनी श्रद्धांजली अर्पित की। केरल के विविध भागों में सम्मेलन, संगोष्ठियाँ, सर्वधर्म प्रार्थना आदि कार्यक्रम आयोजित हुए।

तिरुवनन्तपुरम में केरल गाँधी स्मारक निधि, तिरुवनन्तपुरम, गाँधी शांति प्रतिष्ठान, तिरुवनन्त-पुरम, केरल हिन्दी प्रचार सभा जैसी संस्थाओं के संयुक्त तत्वावधान में कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। सबेरे 7 बजे से 11 बजे तक शांति प्रचार वाहन यात्रा आयोजित हुई जिसका जगह-जगह भव्य स्वागत किया गया। केरल हिन्दी प्रचार सभा भवन के सामने यात्रा दल के नेता श्री वी. के. अँटियोटी का माल्या-र्पण करते हुए स्वागत किया गया। केरल हिन्दी प्रचार सभा के हिन्दी अध्यापक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्य डा० मावेलिक्करा अच्युतन ने स्वागत भाषण दिया। श्री. वी. के. अटियोटी ने विश्व शांति का लक्ष्य प्राप्त करने केलिए गाँधीवादी जीवनचर्या अपनाने का आह्वान किया। छात्रों ने श्री. सुन्दरम के नेतृत्व में राम धुन का आलापन किया।

शाम को महात्मा गाँधी मार्ग से जो शांति यात्रा निकली उसमें विविध संस्थाओं के कार्यकर्ताओं, अध्यापकों और विद्यार्थियों ने भाग लिया। गाँधी भवन में केरल विश्व-विद्यालय के मलयालम विभाग के अध्यक्ष डा० के. रामचन्द्रन नायर की अध्यक्षता में आयोजित सम्मेलन में केरल विश्वविद्यालय के पूर्व उप कुलपति डा० एन. ए. करीम ने महात्मा गाँधी स्मारक भाषण दिया। आप ने कहा कि गाँधीजी का देहान्त आत्माहुति का उज्ज्वल रूप प्रस्तुत करता है। सुकरात के समान उन्होंने स्वतंत्रता की बलि-वेदी पर आत्मार्पण किया था।

डा० करीम ने बताया कि अधि-कांश गाँधीवादियों ने गाँधीजी को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आराध्य मान कर मानव जाति से इतना ऊपर उठाया कि उनका अनुकरण असंभव सा लगने लगा। बुद्धिजीवियों ने सोचा कि गाँधीजी के जीवन में ऐसा कोई तत्व नहीं है जो गंभीर अध्ययन का विषय हो सकता है। उनकी दृष्टि में गाँधीजी भौतिक अराजकतावादी, पुनरुत्थानवादी और ग्रामीण प्राकृततत्ववादी ठहरे। सरसरी दृष्टि से देखने पर गाँधीवाद में कई परस्पर विरोधी तत्व दीख पड़ेंगे। प्राकृततत्व का आभास मिलेगा। लेकिन गहराई से देखने पर स्पष्ट होगा कि गाँधीवाद में विरोधी दिखनेवाले तत्वों का समन्वय मिलता है जो पूँजीवाद में या साम्यवाद में दुर्लभ है।

आंतरिक विरोधों के कारण पूँजीवाद और साम्यवाद में शिथिलता आने लगी है। इसलिए आज दुनिया के सामने गाँधीवाद का महत्व बढता नजर आता है।

गाँधीजी पलायनवादी नहीं थे। उन्होंने डेविड थोरो नामक अमेरिकी लेखक से सिविल अनुज्ञाभंग का जो सबक सीखा उसका प्रयोग करते हुए भारत रूपी यथार्थता का धीरतापूर्वक सामना किया।

उन्नीस सौ चालीस से उन्नीस सौ छयालीस तक का समय गाँधी युग माना जा सकता है। उन्नीस सौ छयालीस में जब अधिकार के बंटवारे का समय आया तब अनुयायियों ने गाँधीजी को छोड दिया।

गाँधीजी ने विकास का जो संकल्प किया था उस पर अमल किया होता तो आज देश की दो तिहाई जनता गरीबी और निरक्षरता के अंधकार में नहीं टटोलती रहती। वे इस प्रकार का औद्योगिक विकास चाहते थे जिसमें कम पैसे की लागत पर अधिक लोगों को काम मिले। उनकी मान्यता थी कि जब तक भारत में एक भी गरीब रहेगा तब तक भारत की स्वतंत्रता यथार्थ नहीं हो सकेगी। गाँधीजी की दृष्टि में धर्म बाह्य आडंबर या कर्मकाण्ड नहीं, बल्कि श्रेष्ठ जीवन मूल्यों का संचय है।

गाँधीजी समाजवाद को मनुष्यत्व का मुखौटा पहनाना नहीं चाहते थे। उलटे, वे मनुष्यत्व पर अधिष्ठित समाज व्यवस्था का निर्माण करना चाहते थे।

डा० करीम ने आग्रह किया कि हम गाँधीवाद के तत्वों का केवल अध्ययन करने के बजाय ऐसी समाज व्यवस्था का निर्माण करने में जुट जायें जिसका स्वरूप गाँधीजी ने निर्धारित किया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मातृभाषा और राष्ट्रभाषा के अध्यापन को अधिक स्थान दिया जाय

श्री. सुलैमान सेठ
सांसद

भारतीय मुस्लीम लीग के अध्यक्ष एवं सॉसद श्री. सुलैमान सेठ ने आग्रह किया कि स्कूली पाठ्यक्रम में मातृभाषा और राष्ट्रभाषा के अध्ययन को अधिक स्थान दिया जाये . हिन्दीतर प्रान्तों में हिन्दी को कम से कम उतना स्थान दिया जाये जितना अंग्रेज़ी को दिया जा रहा है। केरल हिन्दी प्रचार सभा से संबद्ध तिरूर हिन्दी कालेज के वार्षिक समारोह के सिलसिले में 28-1-1990 को राष्ट्रभाषा पर हुई चर्चा में बोल रहे थे श्री सुलैमान सेठ। आप ने कहा कि उच्चतम स्तर तक सभी विषयों का अध्ययन मातृभाषा में होना चाहिए । अन्तर-प्रान्तीय संपर्क राष्ट्रभाषा हिन्दी में होना चाहिए। विदेशों से संपर्क बनाये रखने के लिए अंग्रेज़ी को भी बनाये रखना होगा। हमें चाहिए कि अंग्रेज़ी का स्थान धीरे-धीरे कम करते जायें और हिन्दी को अधिकाधिक स्थान देते जायें। हिन्दीतर प्रांतों में दक्षिण की कोई भाषा भी त्रिभाषा सूत्र के अंतर्गत सिखायी जाये।

समारोह का उद्घाटन करते हुए भारतीय मुस्लिम लीग के महा सचिव एवं सॉसद श्री. जी एम. बनातवाला ने इस बात पर संतोष प्रकट किया कि जीवन में पहली बार उन्हें केरल के एक सार्वजनिक सम्मेलन में हिन्दी में बोलने का अवसर मिला। आप ने यह प्रत्याशा प्रकट की कि केरल में हिन्दी का इतना प्रचार हो जाये कि यहाँ आनेवाले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसी हिन्दी भाषी को अंग्रेजी का सहारा न लेना पड़े। हिन्दी देश की एकता, अखण्डता और प्रेम का पैगाम देती है। हिन्दी के द्वारा इस पैगाम को देश भर में फैलाने की बड़ी जरूरत है। लेकिन अंग्रेजी को फौरन हटाना या हिन्दी को जबरदस्ती से थोपना दोनों गलत होगा। अंग्रेजी फौरन हटायें तो हिन्दीतर भाषा-भाषी छात्र अखिल भारतीय सेवा परीक्षाओं में हिन्दी माध्यम में हिन्दी भाषी छात्रों का मुकाबला नहीं कर पायेंगे जिस से हिन्दीतर भाषा-भाषियों को आर्थिक हानि हो सकती है। पहले हमें हिन्दीतर भाषा-भाषी छात्रों में हिन्दी में इस तरह की काबिलियत उत्पन्न करनी है जिस से वे हिन्दी प्रान्तों के छात्रों का मुकाबला कर सकें और अपनी-अपनी मातृभाषा हिन्दी माध्यम में हिन्दी प्रान्तों में सिखा सकें। देश की जो नयी शिक्षा नीति बनेगी उसमें उक्त दृष्टिकोण पर अधिक ध्यान रखना होगा और भारत भर में हिन्दी का स्तर उन्नत करने के लिए आवश्यक उपाय सुझाना होगा। केरल हिन्दी प्रचार सभा के कार्यकलापों पर श्री. बनातवाला ने संतोष प्रकट किया। केरल हिन्दी प्रचार सभा की परीक्षाओं में उन्नत स्थान प्राप्त तिरूर हिन्दी कालेज के छात्रों को श्री. बनातवाला ने पुरस्कार प्रदान किये। हिन्दी सम्मेलन में भाषण करते हुए कालिकट नगर निगम के महापौर श्री. सी. मोहिसीन ने कहा कि अंग्रेजों ने जो धार्मिक विद्वेष भारत में बढ़ा दिया है उसका उन्मूलन करने के लिए हिन्दी प्रचार द्वारा स्नेह और सहिष्णुता का संदेश फैलायें।

केरल हिन्दी प्रचार सभा के उपाध्यक्ष श्री. के. केशवन नायर अध्यक्ष रहे। तिरूर मुनिसिपल कौन-सिलर अधिवक्ता टी. के कृष्णनुण्णी, सहायक शिक्षा अधिकारी श्री के. पी अच्युत पोतुवाल, केरल हिन्दी प्रचार सभा की निर्वाह समिति के सदस्य श्री. के. एम. सामुवल, केरल ज्योति के संपादक, श्री. के. जी. बालकृष्ण पिल्लै, हिन्दी टीचेर्स असोसियेशन के सचिव श्री विजयालयम मधु आदि ने आशीर्वाद भाषण में हिन्दी की बढ़ती हुई उपयोगिता पर प्रकाश डाला।

तिरूर हिन्दी कालेज के प्राचार्य श्री यू. ए मजीद ने स्वागत भाषण दिया और श्री. सी. विजयकुमार ने कृतज्ञता प्रकट की। छात्रों ने विविध कला कार्यक्रम प्रस्तुत किये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश की समस्याओं की जड निरक्षरता

श्री. वर्कला वी. राधाकृष्णन
अध्यक्ष, केरल विधान सभा

केरल विधान सभा के अध्यक्ष श्री. वर्कला वी. राधाकृष्णन ने बताया कि देश में धार्मिक विद्वेष और अन्य विघटनकारी प्रवृत्तियाँ, हिंसा और अनीति की जा भीषण समस्यायें उत्पन्न कर रही हैं उन सब का मूल कारण पिछडी हुई जनता का बढती हुई निरक्षरता है। आप ने युवकों से आह्वान किया कि देश की सभी समस्याओं को सुलझाने केलिए निरक्षरता उन्मूलन के यज्ञ में तन-मन से जुट जाय। केरल हिन्दी प्रचार सभा द्वारा गणतंत्र दिवस समारोह के सिलसिले में 'निरक्षरता उन्मूलन में युवकों की भूमिका" विषय पर आयोजित संगोष्ठी का उद्घाटन कर रहे थे श्री. राधाकृष्णन। आप ने कहा कि जापान जैसे अनेक राष्ट्र जो भारत की तुलना में बहुत पिछडे थे शिक्षा और परिश्रम के सहारे विकास की कई सीढियाँ पार कर गये जब कि भारत जिसमें विकास के अनन्त साधन निहित हैं अब भी दुनिया के कुल निरक्षरों के आधे से अधिक लोगों का निवास स्थान बना हुआ है। देश के शिक्षित युवक यदि साक्षरता अभियान में स्वेच्छा से कार्यरत हों तो यह भीषण समस्या सदा केलिए सुलझ सकती है। आप ने युवकों से आह्वान किया कि देश की एकता और सुरक्षा केलिए रक्त की अंतिम बूँद तक अर्पित करने की क्षमता अर्जित करें।

अपने अध्यक्षीय भाषण में विख्यात गांधीवादी कार्यकर्ता और गांधी ग्राम विश्वविद्यालय, मदुरै, के पूर्व कुलपति देशिकोत्तम डा० जी. रामचन्द्रन ने गांधीजी, पंडितजी, सरदार पटेल, मौलाना आजाद जैसे नेताओं के नेतृत्व में लडे गये स्वतंत्रता संग्राम का स्मरण दिलाते हुए कहा कि गणतंत्रात्मक व्यवस्था को सुरक्षित रखने की बडी जिम्मेदारी देश प्रेम, त्याग और बलिदान की भावना से प्रेरित हो कर युवा पीढी को निभानी है। आप ने कहा कि हिन्दी प्रचार गांधीजी के रचनात्मक कार्यक्रमों में एक प्रमुख कार्य है और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस कारण उसमें प्रवृत्त होनेवाले अपने आप शराब बंदी, खादी प्रचार जैसे अन्यान्य रचनात्मक कार्यों में भी प्रवृत्त हो जायेंगे।

केरल विश्वविद्यालय के प्रौढ शिक्षा एवं प्रसार केन्द्र के निदेशक डा० के. शिवदासन पिल्लै ने अपने भाषण में बताया कि यद्यपि केरल के कोट्टयम नगर और एरणाकुलम जिला संपूर्ण साक्षरता प्राप्त प्रदेश घोषित किये गये हैं तो भी अल्प साक्षरता प्राप्त नवसाक्षरों को अनुस्यूत शिक्षा के कार्यक्रमों द्वारा अधिक शिक्षा देनो है। यद्यपि राष्ट्रीय साक्षरता मिशन का मुख्य लक्ष्य पन्द्रह से पैंतीस वर्ष तक के आयु वर्ग के लोगों को साक्षर बनाना ही है तो भी हमें 5 से 60 वर्ष तक के उन सभी निरक्षरों को साक्षर बनाना होगा जिन्हें या तो गरीबी के कारण स्कूल-छोडना पडा या स्कूल जानें का अवसर ही नहीं मिला। इसकेलिए यह आवश्यक है कि स्कूल कालेज के सभी विद्यार्थी इसमें लग जायें और सभी राजनीतिक दलों के युवा संगठन इसमें प्रवृत्त हो जायें।

केरल के मुख्य जन शिक्षा कार्यकर्ता एवं केरल अनौपचारिक शिक्षा एवं विकास समिति के मंत्री श्री. पी. एन. पणिक्कर ने कहा कि देश को ओजहीन करनेवाला एक महारोग है निरक्षरता जिससे देश को छुडाने का काम युवा-पीढी को देश प्रेम और त्याग से प्रेरित होकर करना है! उन्होंने श्रोताओं से प्रतिज्ञा करवायी कि देश सेवा के काम में हम प्रति दिन आधा घंटा लगायेंगे।

मलयालम के प्रमुख पत्रकार एवं राज्य संसाधन केन्द्र तिरुवनन्तपुरम के निदेशक श्री. तेंगमम बालकृष्णन नें कहा कि विश्व के इतर राष्ट्रों में वहाँ के राजनीतिक दलों के उत्साह से ही निरक्षरता उन्मूलन का कार्य सफलतापूर्वक संपन्न हो सका है। उन्होंने आग्रह किया कि प्रत्येक राजनीतिक दल के कार्यक्रमों में साक्षरता उन्मूलन यज्ञ को प्राथमिकता दी जाय। •

अधिवक्ता श्री. बी. राजारामन नायर ने सुझाया कि साधारण जनता को शोषण से मुक्त करने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केलिए साक्षरता कार्यक्रम में विधि साक्षरता को भी उचित स्थान दिया जाय । निचले वर्ग के उन्नयन केलिए संपूर्ण साक्षरता अत्यंत अपेक्षित है ।

युवा जनता दल के केरल राज्य संयोजक अधिवक्ता श्री.पी एस सेबा-स्ट्यन ने कहा कि जो अभिभावक अपने स्वार्थ लाभ केलिए बच्चों को स्कूल भेजे बिना मजदूरी पर लगा देते हैं उन्हें दण्ड देने केलिए आवश्यक नियम बनाये जायें । उन्होंने युवकों से आग्रह किया कि वे निराशा, संत्रास और कुण्ठा से अपनेको छुडा कर साक्षरता के प्रचार द्वारा बेकारी भ्रष्टाचार, धार्मिक विद्वेष आदि समस्याओं का समाधान करें ।

केरल विश्वविद्यालय के प्रौढ शिक्षा एवं प्रसार केन्द्र के सहायक निदेशक डा० रघु वी मारक्कल ने वर्मा का उदाहरण देकर कहा कि अध्यापक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के छात्राध्यापकों को वार्षिक परीक्षा के बाद 3 महीने तक साक्षरता अभियान में लगाया जाये तो उनका और देश का बडा हित हो सकता है । केरल हिन्दी प्रचार सभा के साक्षरता मंडल की कुमारी टी. श्रीदेवी ने आह्वान किया कि महिलाओं की निरक्षरता दूर करने में देश की विद्यार्थिनियाँ अपनी भूमिका निभायें ।

केरल हिन्दी प्रचार सभा की निर्वाहक समिति के सदस्य डा० एस राजप्पन नायर ने कृतज्ञता प्रकट की । छात्रों ने देशभक्ति गीत, साक्षरता गीत और "साक्षरता केन्द्र" नामक एकांकी प्रस्तुत किये ।

बाहर का अंधेरा
दीप जलाने पर मिट जाता है
अन्दर का अंधेरा
अक्षर पढने से मिट जाता है ।

एन. वी. कृष्ण वारियर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यंग्य-कहानी

महंगी मालिश

डा० वी. गोविन्द शेनाय

बस से सटकर ही 'क्यू' लगी थी। सुब्बस्वामी भी उसमें जा खड़ा हो गया। द्वार पर 'सुन्दरम केश तेल' मालिश किया जा रहा था, परचियाँ बांटी जा रही थीं और शीशियाँ बेची जा रही थीं। परीसी कन्या यह सब कर रही थी। महक ऐसी कि संभाले नहीं संभलती थी। 'क्यू' लम्बी ही होती जा रही थी। सुब्बस्वामी राशन का खाली थैला बगल में थामे बीड़ी फूँकता हुआ खड़ा था। बगल वाली जेब में पैसे की पुड़िया थी। जेब में बटन के साथ आलपीन भी लगी थी। पुड़िया बिलकुल सुरक्षित। सुब्बस्वामी राशन खरीदने केलिए निकला था। दूकान पर भी 'क्यू' लगी थी; छोकरों और खूसट औरतों की 'क्यू'। हाँ, कोई खास लम्बी नहीं थी। सोचा; राशन बाद में भी खरीदा जा सकता है। ऐसा अवसर बार बार नहीं मिलता; तभी 'क्यू' लम्बी है। महक-मात्र तेल की नहीं है। वह कन्या भी कितनी कोमल है! हूर ही लगती है। महकती मुस्कान बिखेर कर मालिश करती है। सुब्बस्वामी ने मन ही मन अपनी पत्नी को भरपूर गालियाँ दीं। फूहड है, बात तक करने की तमीज नहीं है। बात का

बगलवाली जेब में पैसे की पुडिया थी। जेब में बटन के साथ आलपीन भी लगी थी। पुडिया बिलकुल सुरक्षित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुडिया क्या आलपीन और बटन के साथ जेब ही गायब थी ।

वतंगड बनाती है, हर बात पर झुँझलाती है और झगडती भी कम नहीं है। 'क्यू' में उसके आगे कम ही लोग रह गये थे। सुब्रस्सामी का दिल धडकने लगा; राशन की जगह केश तेल लेकर वह घर जाय तो कितना बडा हंगामा होगा ? परन्तु जब उसे समझाया जायेगा कि तेल उसकेलिए खरीदा गया है तो वह अवश्य मान जायेगी । आखिर तेल खरीदना भी कहाँ आवश्यक है ! मालिश हो गई। सुब्रस्सामी बगैर तेल खरीदे फुरती से फुदककर एक दम निकल गया और राशन की दूकान की 'क्यू' में जा खडा हो गया । पुडिया की याद आई । पुडिया क्या आलपीन और बटन के साथ जेब ही गायब थी ।

सौभाग्य,
ओल्लूक्करा, तृश्शूर

**खादी के धागे धागे में
अपनेपन का अभिमान भरा**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शक्ति से शांन्ति होती है

मूल एवं अनुवाद : **श्री. सुभाष चन्द्र गैन्धर**
वैज्ञानिक; विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केन्द्र, त्रिवेन्द्रम-22

[केरल हिन्दी प्रचार सभा और केरलस्थित केन्द्र सरकारी कार्यालयों के तत्वावधान में 19-9-1989 को आयोजित भारतीय भाषा कविसम्मेलन में प्रस्तुत पंजाबी कविता का अनुवाद।]

शक्ति से शान्ति होती है
जहाँ शक्ति नहीं वहाँ अशान्ति है।
बकरी की ही बलि दी जाती
कोई शेर की बलि नहीं देता है।
शक्ति की ही पूजा होती है
शक्ति से ही राम की पूजा होती है।
क्षमा उसी की शोभा देती है
जिस के पास शक्ति होती है
शक्ति है शिव शिव है
अन्यथा शिव शव है।
सीता शक्ति स्वरूपा है
इसी लिए सीता-राम कहा जाता है
कोई राम-सीता नहीं कहता है।
राधा शक्ति स्वरूपा हैं।
इसी लिए, राधेश्याम जपा जाता है
जब मानव निर्भय हो जाता है
शक्ति स्वयं आ जाती है।
और जहाँ शान्ति है वहाँ सुमति भी है
और जहाँ सुमति है वहाँ समृद्धि है।
इसी लिए मैं कहता हूं
जहाँ शक्ति है वहाँ शान्ति है। ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज़रा सी जिन्दगी

सुश्री आशा मैत्यु
एम. ए. (हिन्दी) प्रथम वर्ष

हालात के शिकंजे में
जब फंस गया मनुष्य
वक्त की मार से
डर गया मनुष्य
दु:ख की इस घड़ी में
प्यार चाहता है मनुष्य
प्यार के कुछ पलों से
गम भुलाता है मनुष्य
प्यार पा न सका तो
दु:ख से घुल जाता है मनुष्य
ऐसे गम के रेगिस्तान से
फिर न निकल पाता मनुष्य
जीने की चाह में
मर जाता है मनुष्य ।

हिन्दी स्नातकोत्तर केन्द्र
केरल हिन्दी प्रचार सभा

शैशव कभी न खो जाये

सुश्री इन्दुमति, एन.
एम. ए. द्वितीय वर्ष,

सुख शान्तिमय वह अतीत
बन गया क्षणिक सुख स्वप्न ।
रह गयी हृदय-पटल पर
बस उन्हीं दिनों की यादें ।
सुनहले सपनों के वे दिन
खो गये काल प्रवाह में ।
चली गयी जीवन की खुशियाँ
काल-लहर की उछल-कूद में ।
छा गया जीवन क्षितिज पर,
विषाद की कालिम रेखायें ।
विकीर्ण हुई जीवन से
सुख की स्वर्णिम किरणें ।
जी करता है सदैव केलिए,
लौट आये जीवन में शैशव ।
आ जाये मुरझाये मन में,
शैशव की हरियाली फिर ।

हिन्दी स्नातकोत्तर केन्द्र
केरल हिन्दी प्रचार सभा, तिरुवनन्तपुरम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदर्श भक्तनारी कर्माबाई

लेखक : विनोद कुमार
एम. ए., एल. एल. बी.
मूल्य : तीन रुपये
प्रकाशक : स्नेही-मित्र, साहित्यसदन
केशवपुर, जमालपुर-811 214

भक्ति के क्षेत्र में भारत का एक गरिमामय स्थान है। 'आदर्श भक्तनारी कर्माबाई' में कर्माबाई की भक्तिभावना, अदम्य साहस, संघर्ष-शीलता एवं शोषण-अन्याय के प्रति विद्रोह भाव आदि गुणों के बारे में विशद वर्णन किया गया है। इस ग्रंथ में ग्रन्थकार ने अनेक संदर्भ-ग्रंथों को छानबीनकर, आवश्यक कविताओं के साथ, कर्मा के जीवन और भक्ति के पहलुओं पर प्रकाश डाला है।

'ग्यारहवीं शताब्दी में एक तैलिक व्यवसायी ने दुर्गा की उपासना करके एक पुत्री को प्राप्त किया जिसका जन्म सन 1073 चैत्रमास कृष्णपक्ष, एकादशी के शुभदिन में हुआ था। यह लडकी कृष्ण–भक्ति की ओर उन्मुख थी। विवाह के बाद अपने कर्तव्य-पालन के साथ-ही-साथ वह कृष्ण-पूजा में भी निरत हो गयी।

कर्माबाई सूरदास, तुलसीदास, मीरा आदि की पूर्वजा थी। उनके बारे में इन परवर्ती कविगणों ने बहुत कुछ लिखा है। 'भक्तमाल', 'भक्त कल्पद्रुम' आदि पुस्तकों में कर्मा का उल्लेख है। "भक्तिन कर्मा की खिचडी, मलूकदास का टुकडा और जगन्नाथजी का भात"—यह उक्ति उस भक्तनारी की महानता का ही परिचायक है। युग-युग तक कर्माबाई की अनन्य भक्ति, इतिहास में अपनी सुवर्ण-पताका फहराएगी।

ग्रंथकार श्री. विनोदकुमार की अभिरुचि कविता, लघुकथा, लेख, समीक्षा, व्यंग्य-लेखन आदि के क्षेत्रों में है। 'दानवीर देशभक्त भामाशाह' 'छोटी छोटी चट्टानें' आदि भी इनकी प्रकाशित कृतियाँ हैं।

आलोच्य ग्रंथ में ग्रंथकार ने सरल शैली में एक सौंदर्यमयी इतिवृत्त को अभिव्यक्त किया है। भक्तिरस के समुद्र में डुबा देनेवाली कविताओं और दोहों से लेखक ने ग्रंथ को अधिकपठनीय बना दिया है।

सुश्री एस. श्रीलता
हिन्दी स्नातकोत्तर केन्द्र
केरल हिन्दी प्रचार सभा
तिरुवनन्तपुरम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरल ज्योति के अंकों में वह अंक भी देखने को मिला जिसमें परिषद की लेखकीय कार्यगोष्ठी का पूर्ण विवरण है। कतिपय चित्र भी इसमें दिए गए हैं। सारे अंकों में समाहित सामग्री को देखकर सहज ही कहा जा सकता है कि केरल हिन्दी प्रचार सभा हिन्दी और प्रकारान्तर से रष्ट्रीय भावात्मक एकीकरण के लिए कितना ठोस कार्य कर रही है।

डा० हीरालाल बाछोतिया
के 40 एफ साकेत
नई दिल्ली-110 017

केरल ज्योति के लेख यहाँ वहाँ उद्धृत होने लगे हैं, इससे 'केरल ज्योति' का महत्व सिद्ध होता है।

रामेश्वर दयाल दुबे
सी 274, 'चित्रकूट' निराला नगर
लखनऊ-20

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरल ज्योति

* प्रधान संपादक

प्रो० पी. जे. जोसफ़

* संपादक

श्री. के. जी. वालकृष्ण पिल्लै

* सह संपादक

डा० एस. तंकमणी अम्मा

* संपादक मण्डल

प्रो० एम. जनार्द्दनन पिल्लै

प्रो० डी. तंकप्पन नायर

डा० एस. राजप्पन नायर

श्री. के. वी. कृष्णन कुट्टी

डा० कटविल चन्द्रन

डा० एन. जी. देवकी

श्री. एम. के. वेलायुधन नायर

* विज्ञापन दर

		मासिक	वार्षिक
आवरण पृष्ठ 4	रु.	500 00	5000 00
आवरण पृष्ठ 2 एवं 3	रु.	400 00	4000 00
साधारण पृष्ठ पूरा	रु.	300 00	3000 00
साधारण पृष्ठ $\frac{1}{2}$	रु.	175 00	1750 00
साधारण पृष्ठ $\frac{1}{4}$	रु.	100 00	1000 00

संपर्क करें—मंत्री, केरल हिन्दी प्रचार सभा, तिरुवनन्तपुरम-695 014

लेखकों से निवेदन

हिन्दी प्रचार, हिन्दी शिक्षण, भारतीय भाषायें, भारतीय साहित्य, भारतीय संस्कृति जैसे विषयों पर लिखे गये उच्च स्तरीय सचित्र लेखों व संगोष्ठी समाचारों का स्वागत किया जायेगा।

हिन्दीतर प्रान्तों की सांस्कृतिक, साहित्यिक, कलात्मक विशेषताओं पर लिखी गयी मौलिक और अनूदित रचनाओं को और हिन्दीतर भारतीय भाषाओं की उत्तम रचनाओं के अनुवादों को प्राथमिकता दी जायेगी।

पांडुलिपियाँ साफ़ अक्षरों में लिखकर या टाइप करके भेजें। कार्बन प्रतियाँ स्वीकृत नहीं होंगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवरण पृष्ठ 1

मलयालम का विख्यात विद्वान एवं साहित्यकार डा० शूरनाट्ट कुंजन पिल्लै जिन्हें भारत सरकार ने 'पद्मश्री से' सम्मानित किया है।

आवरण पृष्ठ 2

2-12-1989 को आयोजित क्रिसमस समारोह में केरल हिन्दी प्रचार सभा ने भी भाग लिया। सभा भवन में आयोजित सम्मेलन के दृश्य।

ऊपर—सामूहिक प्रार्थना

नीचे

रव. फा. कोशी क्रिसमस केक चीर रहे हैं। समीप हैं श्री. श्रीवराहम बालकृष्णन, डा० मावेलिक्करा अच्युतन (प्राचार्य, हिन्दी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, केरल हिन्दी प्रचार सभा), स्वामी शक्रानन्दजी (श्रीरामकृष्णाश्रम, तिरुवनन्तपुरम), श्री. एम. के. वेलायुधन नायर (मंत्री, केरल हिन्दी प्रचार सभा एवं कोषाध्यक्ष, अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ)।

आवरण पृष्ठ 3

12-2-90 को केरल हिन्दी प्रचार सभा में स्त्रियों की साक्षरता पर आयोजित चर्चा।

ऊपर विद्यार्थियों की जिज्ञासा।

बीच में।

श्रीमती पुष्पा जुल्का (गाइडस आयुक्त, नई दिल्ली) से चर्चा कर रहे हैं श्री. एम. के. वेलायुधन नायर

नीचे।

सदस्यों की शंकाओं का समाधान कर रही हैं मध्य प्रदेश की समाज सेविका श्रीमती रेणुका श्रीवास्तव। समीप हैं उत्तर प्रदेश उच्च न्यायालय के अधिवक्ता एवं स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी श्री. पद्मनाथ सिंह और श्रीमती पुष्पा जुल्का।

आवरण पृष्ठ 4

स्वामी विवेकानन्द जयंती के अवसर पर केरल हिन्दी प्रचार सभा में आयोजित राष्ट्रीय युवा दिवस समारोह।

ऊपर—देशभक्ति गीत

नीचे

सम्मेलन में भाषण दे रहे हैं स्वामी प्रशान्तानन्द जी। समीप हैं (बायें से) श्री एम. के. वेलायुधन नायर, श्री. पी. टी. भास्कर पणिक्कर और प्रो० कोशी तलक्कल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूरभाष : 61378 तार : 'जय हिन्दी'

केरल ज्योति

पुष्प 24
दल 12
एक प्रति—1 रु० 50 पै०

सांस्कृतिक जागरण की मासिक पत्रिका वार्षिक—15 रु०

मार्च 1990

संपादकीय

अखिल भारतीय सम्मेलनों में भारतीय भाषाओं की उपेक्षा का विरोध करें

भारत के किसी भी कोने में आयोजित किसी सरकारी या गैरसरकारी अखिल भारतीय सम्मेलन के तटस्थ दर्शकों को इस बात पर अचरज होता होगा कि भारतीय सम्मेलन कहलाने पर भी भारतीय भाषाओं की यह अक्षम्य उपेक्षा क्यों। बैनर अंग्रेज़ी में। बाड्ज अंग्रेज़ी में। सूचनायें अंग्रेज़ी में। स्वागत भाषण से कृतज्ञता भाषण तक का सारा कार्य अंग्रेज़ी में। कागज़ात अंग्रेज़ी में। प्रति-भागियों का अनौपचारिक वार्तालाप जो टी-ब्रेक या लंच के समय होता है वह भी केवल अंग्रेज़ी में। हाव भाव में भी अंग्रेज़ियत का अनुकरण! वही अदायें! वही मुजाचलन!

ऐसा क्यों हो रहा है? हो सकता है इन सम्मेलनों के आयोजक जो बहुधा उच्च वर्ग के हुआ करते हैं और इस कारण अंग्रेज़ी माध्यम से शिक्षित हैं, यह सोचते हैं कि अंग्रेज़ी ही शान शौकत की निशानी है। यह भी हो सकता है कि उन केलिए अंग्रेज़ी कार्यनिर्वहण अधिक आसान पडता हो। पर क्या अखिल भारतीय सम्मेलनों के मामले में इन इनेगिने खुदगर्जों की मनमानी होते रहने दें?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस अंक में

पंडित नेहरू की भाषा नीति 3
डा० शीलम वेंकटेश्वर राव

हिन्दी में लेखनगत अशुद्धियों के कारण 9
डा० कु. रश्मि यदु

हिन्दी विश्वभाषा के रूप में 13
डा० एस. राजप्पन नायर

बरफीले पहाड 18
मूल : श्री. बाबू चेंगन्नूर
रूपान्तर : प्रो० डी. तंकप्पन नायर

शिकार 35
मूल : श्री. ए. षाजहान
अनु. श्री. ए. मोहनराज

पाठकों के पत्र 39

इस प्रकार के आयोजनों से एक विचित्र बात देखने को मिलती है। रूस जापान, चीन, जैसे विदेशों से जो प्रतिनिधि आते हैं, उन में अंग्रेज़ी जानने वाले भी कभी अंग्रेज़ी का एक लफ्ज़ भी इस्तेमाल नहीं करते। महज अपनी मातरी जबान इस्तेमाल करते हैं जिसका तरजुमा भारतीय श्रोताओं की सहूलियत को मद्देनजर रखते हुए अंग्रेज़ी में किया जाता है। क्या खूब !

विदोशियों से हम बहुत कुछ सीखने का दावा करते हैं। पर प्राय: "जो नर डारत वमन करि, स्वान स्वाद सों खात" वाली बात हो जाती है। क्यों न हम उन के स्वभाषा-प्रेम का सबक नहीं सीख सकते? स्वभाषा प्रेम ने ही चीन को चीन, जापान को जापान और रूस को रूस बना दिया है। हम भी स्वभाषाओं को अपना कर, उन्हें प्रतिष्ठित कर के, जीवन के हर व्यापार में उन को स्थान दे कर भारत को भारत बनाने का प्रयत्न क्यों न करें ?

प्रश्न है, बिल्ली के कंठ पर घंटा कौन बांधे। हिन्दी प्रचारकों को इस में पहल करना होगा। जहां भी भारतीय भाषाओं की अवहेलना देखें, उसके विरुद्ध आवाज उठानी होगी। हम आगे चलें। बाकी सब पीछे आ जायेंगे और हमारा सहयोग देंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंडित नेहरू की भाषा नीति

डा० शीलम् वेंकटेश्वर राव

(हैदराबाद हिन्दी प्रचार सभा के द्वारा भारत सरकार के सहयोग से नवंबर 1989 में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी का मन्तव्य)

नवभारत के निर्माता पं० जवाहर लाल नेहरू पक्के लोकतंत्रवादी थे। वे एक लोकप्रिय जननायक थे। उनकी आस्था जनतंत्र में थी। वे जननेता होने के कारण उनकी भाषा-नीति स्पष्टतः जनभाषा हिन्दी रही है। वे सदा आम आदमी की उन्नति के सम्बन्ध में सोचा करते थे। देश की सत्ता अंग्रेज़ी जानने-वालों के हाथों में वे सौंपना नहीं चाहते थे।

पं० नेहरू हिन्दी के हिमायती थे और उसके उज्वल भविष्य के प्रति आशावादी थे। उन्होंने सन् 1931 में हिन्दी प्रचार मण्डल दक्षिण भारत—मद्रास में कहा था—

“हिन्दी भारत की अधिकांश जनता की भाषा है। इसलिए कांग्रेज ने उसे ‘राष्ट्रभाषा’’ मान लिया है। आशा है आप सब के सब निकट भविष्य में हिन्दी में काफी योग्यता हासिल कर लेंगे। हिन्दी के प्रचार में आप सब मदद पहुँचायें, यही आपसे अनुरोध है।”

इस बात को पण्डितजी ने अनेक बार संसद में और संसद के बाहर दोहराया था। सन् 1949 में स्वतंत्रता प्राप्ति के एकदम बाद उन्होंने घोषणा की थी:—‘अखिल भारतीय भाषा कोई हो सकती है तो वह सिर्फ हिन्दी या हिन्दुस्तानी कुछ भी कह लीजिए, ही हो सकती है।’’

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पण्डितजी एक भाषा हिन्दी एवं एक राष्ट्रलिपि देवनागरी के समर्थक थे।

पण्डितजी एक भाषा हिन्दी एवं एक राष्ट्रलिपि देवनागरी के समर्थक थे।

पं० नेहरू की भाषा नीति, देश की एकता, अखण्डता और देश की सर्वांगीण उन्नति पर आधारित थी। उनकी भाषा नीति के मुख्यत: तीन आयाम थे—

(1) भारतीय भाषाएँ
(2) जनभाषा हिन्दी और
(3) विदेशी भाषा अंग्रेज़ी।

आज से अर्द्ध शताब्दी पूर्व सन् 1936 में उडीसा में दिया गया पंडितजी का वक्तव्य अत्यंत महत्वपूर्ण है। वे हिन्दी और भारतीय भाषाओं को राजभाषा और शिक्षा की भाषा के रूप में और देवनागरी लिपि को राष्ट्रलिपि के रूप में देखना चाहते थे।

"सरकारी काम और सार्वजनिक शिक्षा के लिए विभिन्न प्रान्तों में उन भाषाओं का प्रयोग होना चाहिए जो वहां की प्रमुख प्रचलित भाषाएँ हो। इसके लिए उन भाषाओं को सरकारी तौर पर स्वीकृत किया जाना चाहिए—हिन्दुस्तानी (जिसमें हिन्दी और उर्दू दोनों ही शामिल हैं) बंगला, गुजराती, मराठी, तमिल, कन्नड, उडिया, असमी, सिन्धी, और किसी हद तक पश्तो तथा पंजाबी भी।

हिन्दुस्तानी प्रान्तों की भाषा सार्वजनिक शिक्षा के माध्यम के लिए हिन्दुस्तानी हो। देवनागरी बंगला, गुजराती और मराठी लिपियों में एकरूपता लाने और उनके मेल से ऐसी संयुक्त लिपि बनाने का प्रयत्न किया जाए जो छापाखानों, टाइपराइटरों और दूसरी तरह के यंत्रों के लिए उपयुक्त सिद्ध हो।

दक्षिण भारतीय भाषाओं की लिपियों को देवनागरी लिपि के समान बनाने का प्रयत्न किया जाना चाहिए। और यह काम संभव न हो तो दक्षिण भारत की विभिन्न भाषाओं के लिए एक लिपि बनाने की कोशिश की जाए।"

पं० नेहरू की दृष्टि में अंग्रेजी एक ऐसी खिडकी है जिससे हम बाहरी संसार को देख सकते हैं। एक स्वतंत्र श्रेष्ठ राष्ट्र के रूप में हमें विश्व में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करनी है। इसलिए पं० नेहरू अन्तर्राष्ट्रीय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाषा के रूप में अंग्रेज़ी के समर्थक थे। विज्ञान की उच्चशिक्षा औद्योगिक एवं तकनीकी शिक्षा अंग्रेज़ी में देने के वे पक्षधर थे।

पं० नेहरूजी ने अपनी आत्मकथा 'मेरी कहानी' में स्पष्ट लिखा है 'वैज्ञानिक, तकनीकी शिक्षा और अन्तर्राष्ट्रीय संपर्क की भाषा अंग्रेज़ी रहेगी। विश्व चिन्तन और कार्य-विधि की यही भाषा है। इसी लिए शिक्षा के क्षेत्र में उनकी नीति-त्रिभाषा सूत्र की रही है।

वे जनभाषा को राष्ट्र के चरित्र की सबसे बडी कसौटी मानते थे।

पं० नेहरूजी जनभाषा हिन्दी के पक्षधर थे। वे जनभाषा को राष्ट्र के चरित्र की सबसे बडी कसौटी मानते थे। उनकी मान्यतानुसार भाषा का संबन्ध जनता के हृदय से है, मन-मस्तिष्क से है, धर्म और संस्कार से हैं। भाषा, किसी भी राष्ट्र के चरित्र की ज्यादा बड़ी कसौटी है। और भाषा शक्तिशाली और जोरदार होती है तो उसके इस्तेमाल करने-वाले लोग भी वैसे ही होते हैं, और वह छिछली, लच्छेदार और पेचिदा है तो उसे बोलनेवाली प्रजा में वही लक्षण देखने को मिलेंगे। प्रजा के लक्षण भाषा में देखने को मिलते हैं, क्यों कि भाषा को बनानेवाले लोग ही होते हैं। लेकिन इस बात में भी सच्चाई है कि भाषा लोगों को बनाती है। भाषा ठीक या यथार्थ हो तो वह लोगों का ठीक-ठीक विचार करनेवाली बनाती है।

पं० नेहरू न केवल विश्व राज-नेता थे, अपितु वे महान् चिन्तक, लेखक, वक्ता एवं भाषा विज्ञानिक भी थे। जनभाषा का स्वरूप क्या हो, इस सम्बन्ध में उन्होंने सन् 1927 में महत्वपूर्ण वक्तव्य दिया था :

''जैसे अंग्रेज़ी के प्रारंभिक और मुख्य शब्दों को चुनकर 'बेसिक इंग्लिश' (आधार भाषा) तैयार की गई है, वैसे ही हिन्दुस्तानी के लिए भी एक आधार भाषा तैयार की जानी चाहिए। यह भाषा सरल होनी चाहिए जिसमें व्याकरण के बन्धन कम से कम हो और लगभग 1000 शब्द हों, यह संपूर्ण भाषा हो जो साधारण बोलचाल और लिखने के काम के लिए पर्याप्त हो। साथ ही यह हिन्दुस्तानी के ही अन्तर्गत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो और हिन्दुस्तानी के अध्ययन के लिए प्रारंभिक भाषा के रूप में रहे।'

जनभाषा हिन्दी के विकास के संबन्ध में प० नेहरू ने सन् 1939 में सलाह दी थी—"लेकिन साथ ही देहातों में जाकर शब्दों का संग्रह भी करें। बढई, लुहार, कुम्हार, वगैरह अपने-अपने पैसे की चीजों के लिए जिन शब्दों का प्रयोग करते हैं, उनको इकट्ठा करो। इससे राष्ट्र-भाषा का शब्द-भण्डार भरेगा। इससे साहित्य की भी तरक्की होगी।"

पं० नेहरू की स्पष्ट मान्यता थी कि भाषा विकसित होती है तो उसमें शक्ति और सामर्थ्य आती है और उस सामर्थ्य से वह और विकसित होती है। भाषा को तंग कमरे में बन्द करने के ये विरोधी थे। उनका स्पष्ट मत था—किसी भाषा को ऐसे तंग कमरे में बन्द कर दिया जाए जिसमें कोई दरवाजा और खिडकियाँ न हो, और प्रगतिशील परिवर्तन आने की गुंजाइश न रहे तो उससे निश्चयता और छटा भले ही हो सकती है परन्तु बदलते हुए वातावरण और जन-साधारण के साथ इसका संपर्क छूट जाने की सम्भावना रहती है।

पंडितजी जनभाषा को ही हिन्दुस्तानी भाषा कहते थे। उनकी मान्यता थी 'हिन्दुस्तानी संस्कृत की आधार शिला पर टिकी हुई है; वह संस्कृत की पुत्री है और अरबी-फारसी के साथ भी उसका निकट का सम्बन्ध है। वह दोनों स्रोतों से अपने को पुष्ट एवं समृद्ध बनाती जा रही है और अब अंग्रेजी से भी सहयोग लेने लगी है।"इस सम्बन्ध में उनका आग्रह था—"हिन्दुस्तानी भारत की सामान्य भाषा बनने जा रही है और इस कारण उसे बोलचाल की भाषा के समीप लाने की आवश्यकता है।"

पं० नेहरू विश्व के महान वक्ता भी थे। वे हिन्दी में धाराप्रवाह बोलते थे। उन्होंने गांधीजी के अस्थि-विसर्जन के समय संगम में जितने बडे जन-समूह को सम्बोधित किया था—सम्भवत: विश्व में अन्य किसी बडे नेता ने नहीं किया होगा।

'हिन्दुस्तानी संस्कृत की आधार शिला पर टिकी हुई है, वह संस्कृत की पुत्री है और अरबी-फारसी के साथ भी उसका निकट का सम्बन्ध है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पं० नेहरू विश्व के महान साहित्यकार भी थे। वे हिन्दी और भारतीय साहित्य को सच्चे दिल से समृद्धि चाहते थे। सन् 1933 में काशी की एक सभा में उन्होंने कहा था—"आज यदि स्वराज्य हो और मेरे हाथ में अधिकार हो तो सबसे पहले इसका बन्दोबस्त करूँ कि दुनिया की सभी भाषाओं के साहित्य से उत्तमोत्तम तीन-चार सौ पुस्तकों को छांट कर उनकी लिस्ट तैयार कराऊँ और राष्ट्रभाषा हिन्दी में उनका अनुवाद कराऊँ।"

सन् 1937 में पण्डितजी ने "हरिजन सेवक' में लिखा है—प्राचीन साहित्य और आधुनिक विदेशी भाषाओं में अनुवाद कराया जाए ताकि हमारी भाषाओं का अन्य देशों की सांस्कृतिक और सामाजिक आन्दोलनों से संपर्क स्थापित हो सके और उससे हमारी देशी भाषाओं को शक्ति मिले।"

देश स्वतंत्र हो जाने के बाद इन्हीं विचारों से प्रेरित होकर सन् 1954 में पं० नेहरू की अध्यक्षता में "साहित्य अकादमी" की स्थापना हुई। इस अवसर पर उनके उद्‌गारों का समापन इस प्रकार हुआ—"भारत को एक सूत्र में बांधने केलिए हिन्दी को ही राष्ट्रभाषा होना चाहिए।"

पं० नेहरू का इतिहासपरक साहित्य, जिसमें भारत की अस्मिता की खोज की गई है; देश को उनकी महानतम् देन है। उनकी वसीयत भारतीय साहित्य को सदा राष्ट्रीयता की प्रेरणा देती रहेगी।

पं० नेहरू भारतीय सामासिक संस्कृति के समर्थक थे। उनकी दृष्टि में भारत की एकता सर्वोपरि थी। भारतीय संविधान की (351) धारा में राजभाषा के जिस स्वरूप की व्याख्या है, उसमें पं० नेहरू जी के विचारों का स्पष्ट प्रतिबिम्ब झलकता है — "जिस भाषा को अखिल भारतीय भाषा बनाना चाहते हैं, उसे लचीली और संग्राहक होना चाहिए तथा उसने युगों से जो सांस्कृतिक लक्षण प्राप्त कर लिये हैं, उन्हें काम से रखना चाहिए। यह भाषा असल में जनता की भाषा होनी चाहिए, न कि विद्वानों के एक छोटे से गुट की। वह गौरवपूर्ण और शक्तिशाली होनी चाहिए। उसे कृत्रिमता, छिछलेपन और आलंकारिकपन को जोर से दबाना चाहिए। उसका आधार तो लाजिमी तौर पर संस्कृत ही होगी और उसकी बहुत कुछ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वयं पण्डित नेहरू जी ने 351 की धारा की रचना की थी, जिसमें समग्र राष्ट्र की एकता और हिन्दी की उज्ज्वल भविष्य की आकांक्षा व्यक्त की गई है।

सामग्री भी उसी से ली जाएगी, लेकिन उसमें असंख्य शब्द, पद और विचार दूसरी विदेशी भाषाओं से भी लिये गए होंगे।"

उपर्युक्त उद्धरण में और भारतीय संविधान की 351 की धारा में पूरी तरह समानता है। इससे यह सिद्ध होता है कि स्वयं पण्डित नेहरू जी ने 351 की धारा की रचना की थी, जिसमें समग्र राष्ट्र की एकता और हिन्दी के उज्ज्वल भविष्य की आकांक्षा व्यक्त की गई है। अतएव पं० नेहरूजी की राजभाषा के क्षेत्र में संविधान की (351) की धारा राष्ट्र को महानतम देन है।

★

जिगर और शराब

मद्य-आसक्ति से जिगर में पैदा होनेवाले रोग हैं भारी जिगर, मद्य संबंधी यकृत शोथ और तीसरे यकृत से संबद्ध जिगर के रोग।

(स्वास्थ्य और शराब—डा० मंगलदास जे. शाह)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी में लेखनगत अशुद्धियों के कारण

डा० कु० रश्मि यदु

भाषा में लिपि का व्यवहार अनिवार्य है, अन्यथा वह बोली ही रह जाएगी। लिपि में लेखन एवं मुद्रण दोनों का ही विचार आवश्यक है। "उच्चारानुसार लिखाई संस्कृतोद्भव भाषाओं की विशेषता है।"[1]

हिन्दी में जैसा उच्चारण किया जाता है, प्राय: वैसा ही लिखा भी जाता है, किन्तु यह पूर्णतया संभव नहीं हो पाता। भाषावैज्ञानिक तथ्य के अनुसार "देवनागरी लिपि संसार की समस्त लिपियों में सब से अधिक वैज्ञानिक है तो इस में तनिक भी अत्युक्ति नहीं होगी। तिस पर भी यह कहना गलत होगा कि इस लिपि में दोष है ही नहीं।"[2] लेखन में अशुद्धियाँ हमारे कुछ लिपि-चिह्न के स्वरूप के कारण भी होती है।

"प्रारंभिक युग के भाषावैज्ञानिकों के लिए भाषा का अर्थ था उस का लिखित रूप।"[3] किन्तु आज भाषा-विज्ञानी भाषा के उच्चरित रूप को भाषा कहते हैं। उसी उच्चरित रूप को शिक्षित लोग लिपिबद्ध करते हैं। पहले मानव बोलना सीखता है और फिर उस की ध्वनियों को लिपि-चिह्नों में अंकित करता है। लेखन में ध्वनि-चिह्नों की अति सूक्ष्मता भी अशुद्धि का कारण होती है।

भाषिक ध्वनियों के सूक्ष्म होने और लिपि चिह्नों के स्थूल तथा जड़

1. श्रीकृष्ण विश्वनाथ खंडवेकर, 'लिपि—सुधार में महाप्राण व्यंजन-विचार, भाषा, सितंबर 1968, पृ० 209.
2. ब्रजमोहन, 'नागरी लिपि और मुद्र लेखन', भाषा, सितंबर 1968, पृ० 226.
3. गंगाप्रसाद पाठक, 'भाषा परिभाषा और प्रकृति', 'भाषा, जून 1974, पृ० 86.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होने के कारण कभी-कभी भाषा अपूर्ण और भ्रामक भी हो जाती है।

व्यक्ति यदि भाषा के लेखन-विधान के अनुसार लेखन-कार्य नहीं करता है, तब उसका लेखन अशुद्धि पूर्ण होता है। वैसे कुछ अशुद्धियाँ मुद्रण और टंकण के कारण होती हैं; लेकिन सामान्यतया लेखनगत अशुद्धियाँ भाषा-ज्ञान का सही प्रयोग न करने के कारण होती हैं।

लेखनगत अशुद्धियों के कारण

1. उच्चारण–दोष
2. लिपि का अपूर्ण ज्ञान
3. वर्तनी का अपूर्ण ज्ञान
4. व्याकरण का अपूर्ण ज्ञान
5. असावधानी
6. अतिशीघ्रता से लेखन-कार्य करना
7. लेखन का अभ्यास न होना
8. टंकण और मुद्रण-संबंधी दोष

सामान्यतया लेखनगत अशुद्धियाँ भाषा-ज्ञान का सही प्रयोग न करने के कारण ही होती हैं।

(1) उच्चारण-दोष

जो वक्ता उच्चारण-संबंधी अशुद्धियाँ करता है, वह लेखन में भी अवश्य त्रुटियाँ करेगा, क्योंकि उच्चारण के अनुरूप ही लेखन होता है; जैसे-बिहारी लोग 'य' को 'ज' उच्चरित करते हैं, 'यमुना' को 'जमुना' कहते हैं, और लेखन में भी इसी प्रकार लिखते हैं। इसी तरह छत्तीसगढ़ी-मातृभाषी 'व' के स्थान पर 'ब' उच्चरित करते हैं तथा लिखते भी; उदाहरणार्थ 'व्यास' के स्थान पर 'ब्यास'[4] है।

(2) लिपि का अपूर्ण ज्ञान

भाषा की ध्वनियों को अंकित करने के लिए जिन संकेतों का प्रयोग किया जाता है, उनके समूह को भाषा लिपि कहते हैं। लिपि-व्यवस्था का ज्ञान यदि लेखनकर्ता को नहीं है, तो वह शुद्ध लेखन नहीं कर पाएगा।

(3) वर्तनी का अपूर्ण ज्ञान

ध्वनियों के उच्चारण के अनुरूप लिपिबद्ध करना ही वर्तनी है या दूसरे शब्दों में 'ध्वनिक्रम' को लेखन में शब्द की 'वर्तनी' या 'हिज्जे' या

4. रमेशचंद्र महरोत्रा, मन्नूलाल यदु, अशुद्ध हिन्दी, पृ० 86.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'अक्षरी' कहते हैं। वर्तनी का भी अपना विधान है, जिस के अंतर्गत लेखक को लिखना होता है। यदि उसे वर्तनी का सम्यक् ज्ञान नहीं है, तो वह लेखन–संबंधी अशुद्धियां करेगा। यदि लेखन-कर्ता को, उदाहरणार्थ, चंद्रबिंदु और अनुस्वार के प्रयोग के नियम ज्ञात नहीं हैं, तो वह लिखते समय चन्द्रबिंदु के स्थान पर अनुस्वार और अनुस्वार के स्थान पर चन्द्रबिंदु का अनावश्यक प्रयोग करता है, जैसे—'आँख' को 'आंख' तथा 'चावल' को 'चाँवल' लिखना; इसी तरह 'नीबू' को 'नींबू'[1] लिखना।

(4) व्याकरण का अपूर्ण ज्ञान

व्याकरण का अपूर्ण ज्ञान होने से लेखन में व्याकरण संबन्धी अशुद्धियां होती हैं। व्याकरण की अशुद्धि के कारण कभी-कभी वाक्य किसी अर्थ में लिखा जाता है, पर पढनेवाला उस का कुछ और ही अर्थ निकालता है। इससे लिखित भाषा में भ्रामकता उत्पन्न होती है।

(5) असावधानी

लेखन-कर्ता कभी-कभी लेखन के समय अपना ध्यान भाषाई नियमों पर न रखते हुए लेखन-कार्य असावधानी से करता है और इस से कुछ अशुद्धियाँ करता है, जैसे—'लडके को उसका पिता ने मारा।' इस वाक्य में 'उस का' का प्रयोग असावधानी के कारण हुआ है। 'उस का' के स्थान पर नियंक रूप 'उस के' होना चाहिए।

(6) अतिशीघ्रता से लेखन-कार्य करना

लेखन-कार्य अतिशीघ्रता से करने पर भी कुछ शब्दों की वर्तनी तथा वाक्य-सबन्धी अशुद्धियां हो जाती हैं जैसे—'संकेतों' शब्द की सही वर्तनी 'संकेतों' है, लेकिन शीघ्रता के कारण अशुद्धि करने वाला व्यक्ति अनुस्वार को 'स' पर न लगा कर 'के' पर लगा देता है।

---

1. वही, पृ० 5.

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(7) लेखन का अभ्यास न होना

यह तो सर्वमान्य है कि कला-संबंधी ज्ञान में अभ्यास आवश्यक है और यही कथन हमारी लेखन-कला से भी जुड़ा हुआ है। लेखन का अभ्यास नहीं होगा, तो निश्चित रूप से अशुद्धियाँ होंगी; जैसे—सीधी रेखा में लेखन-कार्य न करना, शब्दों के वर्णों का आकार भली-भाँति नहीं बनाना, आदि।

(8) टंकण और मुद्रण-संबंधी दोष

छपी हुई सामग्री में टंकण और मुद्रण-संबंधी दोष मिलते हैं, जैसे—'आम' को 'आग', अर्थात् 'म' के स्थान पर 'ग' छप या टंकित हो जाना।

★

भाषाविज्ञान विभाग
दुर्गा स्नातकोत्तर महाविद्यालय
रायपुर, मध्यप्रदेश

अल्लाह हो अकबर ! अल्लाह हो अकबर !
मस्जिद के मीनार से मुल्ला बुला रहे हैं,
करो इबादत अपनी ऐ इस्लाम के चुनिंदो,
फैल रही हैं तेजी से सूर्यास्त की छायाएँ !
अल्लाह हो अकबर ! अल्लाह हो अकबर !
नारायण ! नारायण !
सुनो दिव्य संबोधन अनादि अनंत !
उठाओ हाथ, जोड़ो, तुम हो ब्रह्म की संतान !
उठाओ स्वर ऊँचे भक्ति से भरे।
नारायण ! नारायण !

सरोजिनी नायडू

दि बर्ड ऑफ टाइम—(संकल्प से साभार)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी—विश्वभाषा के रूप में

डा० एस. राजप्पन नायर

[केरल हिन्दी प्रचार सभा द्वारा 8-1-1990 को सभाभवन में आयोजित संगोष्ठी में प्रस्तुत आलेख ।]

मान लें कि जिस भाषा का प्रयोग और प्रचार सारे विश्व में होता है वह विश्वभाषा है। हिन्दी ही नहीं कोई भी भाषा इस दृष्टि से विश्व-भाषा नहीं है। अंग्रेजी जो अक्सर विश्वभाषा कहलाई जाती है या फ्रेंच जिस की मान्यता संयुक्त राष्ट्र संघ के द्वारा भी हुई है, विश्वभाषा कहलाने लायक नहीं हैं। इस संसार में कई ऐसे देश हैं जहाँ इन भाषाओं से काम नहीं चलेगा।

अंग्रेज़ी जो अक्सर विश्वभाषा कहलाई जाती है या फ्रेंच जिस की मान्यता संयुक्त राष्ट्र संघ के द्वारा भी हुई है, विश्वभाषा कहलाने लायक नहीं हैं।

विश्वभाषा की व्याख्या हम यों दे सकते हैं। विश्वभाषा वह भाषा है जिस का प्रचार या शिक्षण विश्व के कई देशों में होता है और जिसे अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं ने मान्यता दी है। इस दृष्टि से हिन्दी का स्थान कहाँ है ? और क्यों ?

हिन्दी का प्रचार और प्रसार विश्व के कई राज्यों में होता आया है। भारत के अलावा नेपाल, फिजी, मारिशस आदि देशों में बडी संख्या में वहाँ के निवासी भारतीय हिन्दी बोलते हैं और हिन्दी के माध्यम से अपना दैनिक व्यवहार भी करते हैं। यह केवल भारतीयों तक सीमित कोई विशिष्ट कार्य नहीं है। विश्व के कई महान राष्ट्रों के (जैसे ब्रिटेन, अमेरिका, फ्रांस, जर्मनी, जापान आदि) कई विश्वविद्यालयों में हिन्दी शिक्षण का प्रबन्ध है। वहाँ पर शिक्षा प्राप्त करनेवाले केवल भारतीय या भारतीय मूल के व्यक्ति नहीं। वे वहाँ के निवासी और नागरिक हैं। इस से स्पष्ट होता है कि हिन्दी भारत की सीमाओं में बद्ध रहने-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाली भाषा नहीं है। जैसे विश्व की अन्य भाषाओं ने समुद्र की सीमायें पार कर अन्य देशों में आदर का स्थान प्राप्त कर लिया है वैसे हिन्दी को भी अपना स्थान हासिल करना होगा। पर ऐसा नहीं हुआ है। क्यों ?

यद्यपि हिन्दी का प्रचार और शिक्षण विश्व के कई राष्ट्रों में होता है तो भी संयुक्त राष्ट्र संघ में अभी तक हिन्दी को मान्यता नहीं मिली है।

यद्यपि हिन्दी का प्रचार और शिक्षण विश्व के कई राष्ट्रों में होता है तो भी संयुक्त राष्ट्र संघ में अभी तक हिन्दी को मान्यता नहीं मिली है। राजनीतिक स्तर पर भारत दुनियाँ का सब से बड़ा प्रजातंत्र राष्ट्र है। फिर भी वहां की भाषा संयुक्त राष्ट्र सघ के बाहर खड़ी है।

हिन्दी को आज विश्व भाषा के रूप में पूर्ण मान्यता प्राप्त नहीं हुई तो वह हिन्दी की कमी या दोष के कारण नहीं है। भाषा का प्रश्न हमेशा भाषा वैज्ञानिक नहीं होता है। वह आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक होता है। इन बातों पर विचार किये बिना हम इस समस्या का हल नहीं पायेंगे।

किसी भी भाषा को विश्वभाषा की मान्यता प्राप्त करने केलिए कुछ भाषा सम्बन्धी और अन्य योग्यताओं का होना आवश्यक है। भाषा संबन्धी विशेषताओं में उस के विकास की अवस्था, साहित्य का भंडार, आधुनिक विचारों और तकनीकी विषयों की चर्चा करने की योग्यता आदि आते हैं। आज हिन्दी ने इन दिशाओं में काफ़ी प्रगति प्राप्त कर ली है। साहित्यिक और सांस्कृतिक दृष्टि से वह पहले से ही संपन्न थी। आज़ादी के बाद हिन्दी का इतना विकास हुआ है कि संसार के सभी विषयो के ग्रंथ उस में मौजूद हैं। इस दृष्टि से वह संयुक्त राष्ट्र संघ की मान्यता प्राप्त कई भाषाओं से आगे है।

संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा मानी जाने केलिए उस भाषा से सम्बन्धित कई बातों पर विचार किया जाता है। उन में मुख्य हैं :—

1. वह भाषा संसार के कितने राष्ट्रों की भाषा है,
2. वह भाषा बोलने वालों की संख्या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से, लिपि की वैज्ञानिकता की दृष्टि से और साहित्य की दृष्टि से हिन्दी विश्व की किसी भी भाषा के पीछे नहीं है।

3. राजनीतिक, आर्थिक आदि दृष्टि से उस भाषा का महत्व
4. उस भाषा को संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा मानने पर, उस सम्बन्ध में कितना खर्च होगा और उस की क्या व्यवस्था होगी ?...आदि

अब सवाल यह है कि हिन्दी संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा बनने योग्य हैं ? वैसे तो ऊपर कहा गया है कि भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से, लिपि की वैज्ञानिकता की दृष्टि से और साहित्य की दृष्टि से हिन्दी विश्व की किसी भी भाषा के पीछे नहीं है।

हिन्दी भारत की भाषा है। इसलिए यह आपत्ति उठाई जाती है कि हिन्दी एक ही राष्ट्र की भाषा हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ की अन्य भाषाओं की स्थिति इस से भिन्न नहीं है। चीनी तो संयुक्त राष्ट्र संघ को एक भाषा है। वह चीन की ही भाषा है। अंग्रेजी भी ब्रिटेन की ही भाषा है। अगर वह भाषा कैनड़ा, आस्ट्रेलिया जैसे राज्यों की भाषा मानी गयी है तो यह भी याद रखने की बात है कि वहाँ के अंग्रेजी भाषी लोग ब्रिटोष मूल के हैं। वैसे तो हिन्दी भी विश्व के कई देशों की भाषा है।

हिन्दी बोलने वालों की संख्या लगभग 30 करोड़ है। बोलनेवालो की संख्या की दृष्टि से हिन्दी का विश्वभाषाओं के बीच तीसरा स्थान है। यद्यपि अरबी कई देशों का भाषा मानी जाती है तो भी अरबी बोलने वालों की संख्या हिन्दी बोलनेवालों की अपेक्षा बहुत कम है।

बोलने वालों की संख्या की दृष्टि से हिन्दी का विश्वभाषाओं के बीच तीसरा स्थान है।

राजनीतिक, आर्थिक आदि की दृष्टि से हिन्दी के महत्व पर और हिन्दी को संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा माने जाने पर होने वाले खर्च की व्यवस्था पर भी थोडा विचार करें।

वास्तव में इन्हीं कारणों से ही हिन्दी संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा नहीं बनी है। हिन्दी को राजनीतिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शक्ति नहीं है। आर्थिक शक्ति नहीं है। वह अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध का महत्व भी नहीं रखती है। हिन्दी को विश्वभाषा बनाना चाहते हैं तो हमें इस दिशा में काम करना चाहिए।

पहली बात तो यह है कि आज भी भारत की राजभाषा की संपूर्ण मान्यता हिन्दी को नहीं मिली है। अंग्रेज़ी भारत की सहराजभाषा है। जब तक यह अवस्था ज़ारी रहेगी हिन्दी घरेलू वातावरण में या अन्तर्राष्ट्राय तल में अपनी मान्यता न प्राप्त कर सकेगी। पहले तो यही चाहिए कि हिन्दी को भारत की एकमात्र राजभाषा बनाई जाय, अर्थात् सहराजभाषा का स्थान संविधान से निकाल दिया जाना चाहिए। यह सरल काम नहीं है। इस के लिए अहिन्दी प्रान्तवालों की स्वीकृति चाहिए। हिन्दी भाषा भाषियों के अमित हिन्दी प्रेम ने ही ऐसी दशा उपस्थित की है। आशा करें कि हमारी सरकार और

हिन्दी को भारत की एकमात्र राजभाषा बनाई जाय, अर्थात् सहराजभाषा का स्थान संविधान से निकाल दिया जाना चाहिए।

भारत से विदेशों को जानेवाले सभी प्रतिनिधि मंडलों के सदस्यों को यह व्रत लेना होगा कि वे भारत के बाहर केवल हिन्दी में ही विचार विनिमय करेंगे।

राजनीतिक पार्टियों के प्रयत्न से हिन्दी को देश में योग्य स्थान मिलेगा।

जब हिन्दी संघ की एकमात्र राजभाषा बनेगी तब हमारे राजदूतावासों में भी इसका ही प्रयोग होना चाहिए। इतना ही नहीं, भारत से विदेशों को जाने वाले सभी प्रतिनिधि मंडलों के सदस्यों को यह व्रत लेना होगा कि वे भारत के बाहर केवल हिन्दी में ही विचार विनिमय करेंगे। यह हिन्दी की मान्यता बढ़ायेगी और साथ-साथ उसका राजनीतिक आधार भी दृढ बन जायगा।

जब हिन्दी भारत की एकमात्र राजभाषा बनेगी तब राष्ट्रीय स्तर पर उसकी मान्यता बढेगी; पर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर उसकी मान्यता बढ़ाने के लिए भी हमें काम करना चाहिए। यह काम राजनीतिक या भाषा सम्बन्धी नहीं है। वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्थिक और सामाजिक है। अरबी संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा बन गयी है अपनी आर्थिक शक्ति के आधार पर। चीनी भाषा संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा बनी है राजनीतिक कारणों से।

हिन्दी को भी यह स्थान दिलाने का विचार है तो भारत को अपनी आर्थिक स्थिति में काफी प्रगति लानी होगी।

एक राष्ट्र की शक्ति उस के उद्योग और टेकनोलजी की प्रगति में होती

राष्ट्र की अर्थिक स्थिति बढ़ाने की कोशिश करें। निरक्षरता को दूर किया जाय और हिन्दी को भारत में अपना स्थान दिया जाय।

है। इन के बिना न आर्थिक प्रगति हो सकती है न राजनीतिक शक्ति बढ़ सकती है।

जब तक राष्ट्र आत्म निर्भर नहीं होता तब तक उस की भाषा की भी वही स्थिति होती है। अगर हम चाहते हैं कि हिन्दी विश्व भाषा के रूप में अपनी मान्यता प्राप्त करे तो पहले हमें चाहिए कि राष्ट्र की आर्थिक स्थिति बढ़ाने की कोशिश कर। निरक्षरता को दूर किया जाय और हिन्दी को भारत में अपना स्थान दिया जाय। हमारी भाषाई समस्या का समाधान हमें आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्रों से ढूंढ निकालना चाहिए। ★

हिन्दी अध्यापक प्रशिक्षण महाविद्यालय
केरल हिन्दी प्रचार सभा
तिरुवनन्तपुरम

'अकेले उस जादुई बन के
उजाले में
मैंने देखे प्रेम-दूत के सितारे
चमकते और मंडराते मेरे
कोमल यौवन के चारों ओर'

- सरोजिनी नायडू

(दि सांग ऑफ ए ड्रीम-संकल्प से साभार)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मलयालम कहानी

बरफीले पहाड

मूल : बाबू चेङ्ङन्नूर

रूपान्तर : प्रोफ. डी. तंकप्पन नायर

पहाड़ के ऊपर के उस सैनिक-अस्पताल की खिड़की से दूर के बरफीले पहाडों को आँसू भरे नयनों से आनी कितनी देर तक देखती रही; उसको स्वयं पता न चला। उभरते विकारों की हिलोरों को हृदय में दबाती हुई वह खड़ी की खड़ी ही रही। चारों ओर प्रकृति सजी-धजी दिखाई दीं। काशमीर की उन पहाड़ियों ने हरे रंग की रेशमी साड़ी पहनी है। सुन्दर कल्पनाओं की भाँति देवदारु के पेड़ भी कितने मनोहर हैं। और उनमें खिले हुए फुल एक युवा-सुन्दरी के अधरों की भांति मृदुल और कोमल हैं। दूर वहीं सहसा पहुँच कर उनको चूम लेने की इच्छा कौन नहीं करेगा। आनी की आंखें अवश्य ही उन मनोहर दृश्यों पर टिकी हुई थीं, पर दिल उनमें रमा नहीं था। उनको देखकर उसके हृदय में कोई भाव नहीं जागा। अविचारित उसके कानों में ये शब्द सुनायी दिये...

"क्या सोच रही है सिस्टर ?"

उसका भरभराया स्वर सुनकर आनी ने मुड़कर पीछे की ओर देखा। बिस्तर पर लेटा घायल बाबूलाल कठिनाई के साथ कदम आगे आगे बढ़ाता हुआ उसकी ओर चला आ रहा था। उसके शरीर में कई पट्टियाँ बंधी हुई थीं। अभी तक एक भी खोली नहीं।

आनी यह कहना चाहती थी कि चल, जाकर लेट जा। पर उसके मुँह से एक शब्द भी न फूटा। कहना उसका कर्तव्य था। लेकिन वह लाचार थी। अजीब किस्म की लाचारी !

आखिर उसने बाबूलाल के प्रश्न का उत्तर दे ही दिया—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कुछ नहीं।"

जवाब मिला। पर बाबूलाल सन्तुष्ट नहीं हुआ। वह निर्निमेष आनी की ओर देख रहा था। उस पुरुष के आगे पता नहीं क्यों वह हतप्रभ होती गई। सारे शरीर में एक विचित्र प्रकार की शिथिलता का आभास हुआ। सोचने लगी कि उस पुरुष के पास ऐसी क्या शक्ति-विशेष थी जो उस पर जादू का सा असर कर रही थी। और वह अपना अस्तित्व तक भूल जाती थी।

आजकल बाबूलाल के चेहरे पर वह चुस्ती, वह उन्मेष और वह प्रसन्नता नहीं दिखाई देती जो बारह साल के पहले असम के युद्ध-क्षेत्र में आनी ने देखी थी। बारह साल के बाद कुछ और ही चीज़ उसने देखी। एक विचित्र प्रकार का मौन, उदासी और आलस्य। आसपास बिस्तरों पर कई घायल लेटे हुए थे, कोई कराह रहे थे, कोई चिल्लाते तो कोई बड़बड़ाते। किसी की चोट पैर में, तो किसी के हाथ में और किसी की हड्डी टूट गई थी। आनी के पास एक बड़ी लम्बी सूची है...

सुदूर से तोपों की गर्जना सुनाई दे रही थी। बरफीले पहाड़ों से होकर उसकी प्रतिध्वनि की हल्की तरंगें अस्पताल के रोगियों के कानों पर भी उठती गिरती हैं। मानव दूसरे मानव पर कैसा निर्मम व्यवहार करता है। और सुदूर की मां, बहनें और पुत्रियां अनाथ होती जा रही हैं।

जिन दिनों आनी फील्ड-एरिया (युद्ध क्षेत्र) में पोस्ट की गयी थी वह सन्तुष्ट थी। क्योंकि वह वेदना को निकट से देखना चाहती थी। और साथ ही साथ घायलों की सेवा करने का मौका भी खूब मिलता। घायलों की सेवा शुश्रूषा करने में उसने दूसरे नर्सों की अपेक्षा खास यश आर्जित किया हैं। जिस दिन से ड्यूटी में आयी थी उसके बिल्कुल दूसरे दिन उसने एक मलयाली ब्रिगेडियर की मृत्यु के समाचार सुने थे। आनी ने उनके विषय में कई बार सुना था। देखने का अवसर नहीं आया था। उन्होंने अन्तिम समय तक देश की रक्षा केलिए अपूर्व वीरता दिखाई। और मातृभूमि की रक्षा केलिए आखिरी साँस तक लडे। उनकी मृत्यु के बाद उनकी यादगार बनाई गई थी। आनी की आंखों में उनकी स्मृति केलिये बनाई यादगार दूर से दिखाई दे रही थी। देखकर वह पुलकित-गात्र हो उठी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और लज्जित होकर होरे के समान दांतों से विम्बफल जैसे अधरों को दबाती पुलकित हो उठती थी।

"आनी।"

बाबूलाल ने फिर बुलाया। आनी को लगा कि बाबूलाल के समीप खडे होने की ताकत उसमें नहीं रही। किसी अनजान बोझ से सिर झुकाती वह वहीं से धीरे धीरे चलने लगी। बाबूलाल की समझ में कुछ नहीं आया। दुविधा में पड़ गया। .... आखिर आनी वहां से बच निकली।

आनी को लगा कि जी भर रोये। रोने के बाद मन का भार कुछ हलका ही हो जाता है। उसके हृदय में प्रणय की दावाग्नि जलती है। और बाहर वे बेचारे बरफीले पहाड पिघल रहे हैं। किसी दिन यह भडकती ज्वाला चुपचाप शान्त हो जाएगी। वह उस ज्वाला को बुझा देना नहीं चाहती थी। उसका हृदय वेग से धडकने लगा। वह लाचार थी। क्या कर सकती थी?

सामने के आईने ने उसकी मुस्कुराती यौवन की याद दिलाई। घृणा के साथ उस आइने की ओर दुबारा देखा जैसे किसी घृणित वस्तु को देख रही हो। एक समय था जब उसकी आँखों की अगाध नीलिमा में सुन्दर सपने साकार हो उठने को लालायित रहते थे। अरुणाभा से लालिम इन कपोलों पर स्वयं ही नाखून से चोट पहुँचाकर उन रक्त-बिन्दुओं की शोभा को आइने में देखकर वह अपूर्व आनन्द का अनुभव किया करती थी। और वह अपनी चढती जवानी पर स्वयं मोहित भी होती। और लज्जित होकर हीरे के समान दांतों से विम्वफल जैसे अधरों को दबाती पुलकित हो उठती थी।

अतीत की बलिवेदी पर अर्पित मुरझाई स्मृतियाँ ही अब शेष रह गई हैं। वह भी केवल चेतनाहीन! फिर भी उसने अतीत की उन घटनाओं को याद करने की भरसक कोशिश की। अनजाने उसने स्वयं से प्रश्न किया —

"मैं क्यों एक मिलटरी नर्स बनी थी? कैसे? क्यों?"

भूतकाल की संगीन कोठरी अचानक प्रकाशमान हो उठी। प्रश्न वहीं तक पहुँच गया। उस प्रकाश में तीन नन्हे-मुन्ने उसकी आँखों के आगे व्यक्त दिखाई दिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेबी ...जोस और तंकचन ! बेबी बारह साल का, जोस नौ का और तंकचन की अवस्था तीन साल की थी। आनी थी उन तीनों की बडी बहिन। उस समय आनी की अवस्था पन्द्रह वर्ष की रही होगी। उन दिनों उस केलिए जीवन का कोई खास उद्देश्य नहीं रहा। खेलती-कूदती दिन बिताती। तो भी खिलते यौवन के सुन्दर सपने उसके हृदय में अवश्य गुदगुदी पैदा किया करते। उसकी हृदय-वीणा की हलकी तंत्री में हमेशा सुन्दर सगीत भरा रहता था। वह कोयल की भाँति सब कहीं स्वतंत्रता से विचरण करना चाहती थी। और मन में एक मनोहर पुष्प की भाँति सारे विश्व को अपनी ओर अकर्षित करने की उत्कट लालसा भी थी। लेकिन उसकी सभी आशाओं, अभिलाषाओं और कल्पनाओं को मन ही मन दबा के रखना पडा। और लज्जा ने उसकी आँखों को अपना निवास-स्थान बना लिया।

आनी के पिताजी का स्वास्थ्य ठीक नहीं था और काफी अर्से से पक्षाघात की बीमारी का शिकार था। इसलिये उसकी माँ मजबूर हो पास-पडोस के घरों में मजूरी करके जो कमाती थी उससे आनी की पढाई चलती थी। पाठशाला की ओर जाती हुई रास्ते में आनी सदैव अपनी बेचारी माँ की याद करती जो दिन भर मजूरी करती थी। और कभी-कभी उसकी आंखों के आगे अपने बीमार पिता का चित्र भी उभर आता।

आनी की मुस्कराहट उसके माता-पिता केलिए भयंकर दुःस्वप्न की भांति थी। उस मुस्कराहट को देखकर कितनी बार उन्होंने दीर्घ-निश्वास छोडी थी। एक दिन आनी के पिताजी ने स्वयं से कहा.....

"हमारे भाग में जो लिखा है वह होकर ही रहेगा।"

प्रकाश की हलकी सी किरण कहीं दिखाई नहीं दी। हृदय की बन्द चहार-दीवारों में निराशा का ढेर लगा हुआ था। और भविष्य की सुन्दर कल्पनायें पानी के बुलबुले की भांति जाने किस वेग से अप्रत्यक्ष हो जाती। उस अंधियारे में बडी कठिनाई से रास्ता टटोल कर आखिर वह मैट्रिक तक पहूँच ही गई। आनी के पिताजी तो उसे नौकरी करने केलिए भेजना नहीं चाहते थे। लेकिन आनी की मां ने विवश हो एक दिन पूछा...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आखिर और भी तो तीन हैं। आनी को नौकरी करने केलिए भेजना बहुत जरूरी है। नहीं तो बच्चों की पढाई लिखाई कैसे चलेगी?"

"अरी, तू चुप रह।"

"तो दहेज देने को आप के पास रुपये हों, जल्दी आनी की शादी करवा डालिये।"

"इस प्रस्ताव के आगे आनी के पिता को मौन धारण करना पडा। आनी की शादी के खर्च का क्या, गुज़ारा चलना तक मुश्किल है। आखिर दोनों ने सोच-विचार करके नर्सिंग सीखने केलिए आनी को मद्रास भेजा। मद्रास का जीवन आनी को बेहद पसन्द आया। शांतिमय वह जीवन वह अधिक दिन तक नहीं बिता सकी। एक दिन अचानक युद्ध-क्षेत्र में जाने केलिए आदेश मिला। वेचारी आनी घबरा गई। गर्जना करती तोपों, विस्फोट करते गोलों से घायल मनुष्यों की एक श्मशान-भूमि में जाने की कल्पना मात्र से वह कम्पित हो उठी। एन्बुलेन्स कार दौडती फिरती रही। उनके अन्दर से रक्त बहाते, रोते चिल्लाते और कराहते कितने ही शरीरों को खाली किये। उनसे अस्पताल भर गया।

रक्त! रक्त देखकर उसकी आंखों के आगे सन्नाटा छा जाता। कभी कभी उसकी चेतना उड जाती थी। उसकी अपनी आंखों से कितनों की आखिरी दम तोडते हुए देखा था।

तीन चार दिन तक उस के लालिम कपोल आंसू से गीले हो गये। वह सिसकियां भरकर रोया करती थी।

लेकिन अब वह अभ्यस्त हो गई। अनुभवों ने उसके हृदय को कर्कश बना दिया।

वेतन मिला तो एक अच्छी रकम घर केलिए भेज दी। पिताजी बीमार हैं। मां! बेचारी मां! उसकी पढाई लिखाई केलिये उसने क्या क्या मुसीबतें झेली थीं। फिर बेबी, जोस और तंकच्चन की याद हो आई। अपने तीनों छोटे भाइयों पर वह अभिमानित हो उठी। उनको पढाने लिखाने का भार अब आनी के कन्धों पर आ गया। आजकल उसका मन सदा घर की चिन्ताओं से उलझता रहता...कभी अपने घरके पास से बहनेवाले उस छोटे से सुन्दर झरनों को कल्पना से अपना मन भर लेती तो कभी घर के पास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के उस बाँस के जंगल से निकलने-वाले उस मनोहर संगीत के बहाव में अनजाने बह जाती।

अस्पताल के रोगियों के दयनीय रुदन से वह सपनों की दुनियां से जाग पडती और फौरन उसके समीप चली जाती।

उस दिन युद्ध-क्षेत्र से दस बारह घायल सैनिक और लाये गये। डाक्टर दवाइयों के साथ हरेक की जांच कर रहे थे। घायलों की सूची तैयार करने का काम आनी का था। उनमें से कुछ बेहोश पडे हुए थे। और कई एक शब्द तक बोलने में असमर्थ थे। हर एक के पास से होते हुए आनी एक चारपाई से दूसरी की ओर बढती रही। और बीमारों की लिस्ट भी साथ साथ तैयार करती रही...

"नाम ?"

"गुरुचरन सिंह"

"कहाँ से आये है ?"

"पंजाब।"

"उमर कितनी है ?"

"चालीस !"

"दिखाओ चोट किधर है ?"

वह चोट की जाँच करने लगी। और हरेक खाते पर विवरण भी भरने लगी। और दूसरी चारपाई के पास पहुँच गई।

"नाम" वही पुराना प्रश्न !

"तोमस-जॉन।"

"कहाँ से आये ?"

"ट्रावनकोर।"

"ट्रावनकोर" शब्द सुनकर उसने रजिस्टर से आँखें हटाकर, सिर उठाकर ऊपर को ओर देखा।

सामने एक परिचित युवक उसकी ओर निर्निमेष दृष्टि से देख रहा था। और उस युवक ने आनी से पूछा—

"तुम्हारा नाम आनी है न ?"

"जी।"

"मुझे जानती हो ?"

"जानती हूँ। पल्लिप्पाडु में रहते हो न ?" उत्सुकता के साथ उसने पूछा।

"हाँ, हाँ" उस पुरुष ने उत्तर दिया।

दोनों एक ही गाँव के थे। विदूर के एक मिलिटरी अस्पताल में अपने ही गाँव के एक व्यक्ति से मिलकर वह स्वयं को भूल गई। उसने पूछा—

"चोट कहाँ पर है ?"

"बायें हाथ में। मामूली सी है।"

"अभी सब घायलों की सूची तैयार करनी है। थोड़ी देर में फिर आने की कोशिश करूँगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माफी माँगकर वह दूसरे बीमार के पास चली गई तब भी जोणी उसकी ओर आँखें फाड़ फ़ाड़कर देख रहा था।

जाने क्यों उस दिन से आनी में पहले की अपेक्षा अधिक उन्मेष दिखाई देने लगा। वह रोज़ चार-पाँच बार जोणी के पास जाकर उसकी हालत पूछ लेती। बाकी सभी रोगियों में से केवल जोणी ही ने उसके ध्यान को आकर्षित किया। अपने गाँव का आदमी है। इसलिये उस व्यक्ति पर अधिक ध्यान देना उसने अपना कर्तव्य समझा।

जोणी का जख्म सूख चुका था। फिर भी उसने अस्पताल छोड़ने की तत्परता नहीं दिखाई। आनी उसके पास थी। स्नेह सम्पन्ना थी और सर्वोपरि सुन्दरी भी। उसके मादक सौंदर्य के नशे में जोणी उन्मादित सा हो जाता। वह प्यासी आंखों से उसका चलना फिरना उन्मत्त हो देखा करता। जैसे कि उस सुन्दरी की आँखों के साकार सपनों को बटोरने को लालायित हो। उसके लाल लाल अधरों को चूमने को उसका मन तरसता था। स्वस्थ हो जाने के बाद भी अस्पताल छोड़ने को उसका जी नहीं चाहा। इसलिये डाक्टर की

उसके मादक सौंदर्य के नशे में जोणी उन्मादित सा हो जाता। वह प्यासी आँखों से उसका चलना फिरना उन्मत्त हो देखा करता।

उपस्थिति में अस्वस्थता का अभिनय करता।

अक्षमता के साथ वह उसी दिन की प्रतीक्षा करता रहा जिस दिन आनी को नाइट-ड्यूटी मिले। आखिर वह दिन आ ही गया। आनी ने अस्पताल में आते ही सीधे जोणी के पास आकर कुशल मंगल पूछा—

"जोणी अब कैसा हाल है?"

"ठीक तो हो गया हूँ, लेकिन..."

"क्या अस्पताल में पढ़े रहने में मज़ा आता है?"

"अगर आनी पास होगी तो "

इतना कहकर एक अजीब ढंग से वह हँसने लगा। उस फीकी निरर्थक हँसी के पीछे की भावना आनी समझ नहीं पाई।

वार्ड में नीले रंग के बल्ब का हलका सा प्रकाश चारों ओर फैल रहा था। और वार्ड के बाहर नीलाकाश से चन्द्रिका छिटक रही थी। उधर...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूर में उन बरफीले पहाडों पर उस की चंचल किरणों प्रतिफलित हुई। अन्दर वार्ड में सभी सो चुके थे। जोणी को नींद नहीं आई थी। वह वैसे ही लेटा हुआ था। दूसरे कोने में आनी बैठी एक किताब पढ रही थी। नीले बल्ब के हलके प्रकाश ने उसके चेहरे पर एक नयी ज्योति फैला दी। आनी के सौंदर्य के नशे से उन्मत्त हो विकार भरित होकर जोणी ने आनी को बुलाया।

"आनी !......"

आनी ने सिर उठाकर ऊपर की ओर देखा। फौरन उठकर उसके समीप चली आयी। और उत्कण्ठा के साथ पूछा—

"कुछ तकलीफ़ तो नहीं है ?"

उत्तर नहीं मिला। निस्तब्धता छा गयी चारों ओर! मौन भंग करती हुई बोली—

"फिर..."

"आनी तुम यहीं...मेरे पास बैठो।"

बिना किसी संकोच के वह उसके समीप बैठी। जोणी उठकर चारपाई पर बैठ गया। उसकी आँखें लाल लाल हो उठीं। हृदय के धड़कन के साथ साथ उसके हाथ भी काँपने लगे। जिन हाथों को बन्दूक पकड़ने का ही परिशीलन प्राप्त था उसके पाश में अचानक आनी दब गयी।

और एक निमेष !

झटका देकर बड़ी कठिनाई के साथ आनी उसके बाहुपाशों से बाहर निकल आयी। उसकी आँखों से चिनगारियां बरस रही थीं। मुख से रूखे स्वर में इतना ही निकल पड़ा—

"जोणी ! तुम...।"

आदर और भ्रातृत्व की भावना का कैसा कठोर प्रतिफल मिला? उसका सारा शरीर क्रोध से कांपने लगा। इतने में दीनता भरी एक आवाज सुनायी दी।

"क्या हुआ सिस्टर ?"

आवाज समीप से ही आ रही थी। बाबूलाल सोया नहीं था। आनी ने उत्तर दिया—

"कुछ नहीं।" सिर्फ इतना ही कहकर वह वहां से चल दी। जोणी चादर से मुँह ढक कर सोने लगा जैसा कि कुछ नहीं हुआ हो। और चादर के भीतर से एव ज्वालामुखी सुलग रही थी।

दूसरे दिन जोणी अस्पताल से डिस्चार्ज हो गया। आनी जान-बूझ जाते समय उससे नहीं मिली। एक ऐसी वेदना उसके अन्दर घर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर गयी थी, आज तक जिसकी कल्पना भी नहीं की थी। उसने स्वयं मिलिटरी नर्सों के विषय में कई कहानियां सुनी थीं। लोगों ने उनके चरित्र और चलन पर क्या क्या नहीं कहा हैं? लेकिन उसने आजतक अपने को हिफाजत से रखा है। कल से उसका नाम लेकर सब कहीं एक नये गीत का आंलाप होगा। सच्चाई को नहीं जाननेवाले सभी उसकी निन्दा करेंगे। घृणा

उसने स्वयं मिलिटरी नर्सों के विषय में कई कहानियाँ सुनी थीं। लोगों ने उनके चरित्र और चलन पर क्या क्या नहीं कहा हैं?

की दृष्टि से देखेंगे। और दूसरों के आगे अभिमान से सिर उठाकर नहीं चल सकेगी।

बाबूलाल ने अवश्य देखा होगा। अगर वह किसी से कहेगा तो उसका क्या परिणाम होगा? आनी उसके समीप से होकर जाने लगी तो उसकी ओर देखने की हिम्मत नहीं हुई। लेकिन बाबूलाल ने उसकी भाव-भंगिमा को अच्छी तरह पहचान लिया था। उसने स्नेहपूर्वक बुलाया—

"सिस्टर!"

उस आवाज में ऐसी क्या शक्ति थी कि आनी एक कदम भी आगे की ओर नहीं बढा सकी। सिर झुकाकर बाबूलाल के सामने खड़ी हो गई। खड़ी की खड़ी रही।

"क्या हुआ सिस्टर? उसने कुछ तकलीफ तो नहीं दी।"

"नहीं"

"बेकार आदमी।" उसने दबे स्वर में कहा। आनी कहना चाहती थी कि यह घटना किसी को न बताये। लेकिन कहने के लिये उसका मुंह न खुला।

x x x x

बाबूलाल ने किसी से नहीं कहा। उसके प्रति आनी के मन में आदर का भाव दिन-ब-दिन बढने लगा। वह उसकी सेवा-शुश्रूषा पर अधिक ध्यान देने लगी। कितना अच्छा आदमी है। अनावश्यक एक शब्द तक मुंह से नहीं निकलता। अस्पताल के शान्त बातावरण में कभी कभी वह अपनी मुरली में शोकात्मक गीत गाता था। उस गीत की लहरों में आनी अनजाने झूम उठती। और कल्पना की एक नई दुनिया में आनन्द से विचरण किया करती। उस दुनियां में वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी सुध-बुध तक भूल जाती। बीच बीच में बाबूलाल पूछा करता—

'क्या मेरा गाना आप को तकलीफ़ देता है ?"

उस समय आनी जवाब देती—"कभी नहीं।"

उस एकान्त गायक का अपना सगा-संबन्धी कोई नहीं। महामारी से उसके सभी बन्धुजन उससे हमेशा के लिये बिछुड़ गये थे। यौवन के प्रभात में ही उसकी शादी हो चुकी थी। उसकी तेरह साल की पत्नी भी महामारी के चंगुल से बच नहीं सकी थी........ कभी कभी बाबूलाल अस्पताल के एक कोने में मुरली बजाते श्रीकृष्ण के चित्र के सामने बैठकर आँखें मूँदें ध्यानमग्न घंटों बैठा रहता और कभी उसकी आंखों से अश्रुधारा धड़ धड़ बहती नज़र आती तो कभी दीर्घनिश्वास छोड़ते हुए उसके मुँह से ये शब्द निकल पड़ते—

"हाय कृष्ण"

उस दीर्घनिश्वास के बिलकुल ही बाद उसके मुँह से शोकात्मक-संगीत की सुन्दर सरिता भी बहती।

आखिर वह दिन भी आया जिस दिन बाबूलाल भी अस्पताल से डिस्चार्ज हो गया। अस्पताल से

अस्पताल से निकल कर फिर बाबूलाल उसी युद्धक्षेत्र की तरफ चला जहां से बन्दूकों का अट्टहास और तोपों की गर्जना सुनाई दे रही थी।

निकल कर फिर बाबूलाल उसी युद्धक्षेत्र की तरफ चला जहां से बन्दूकों का अट्टहास और तोपों की गर्जना सुनाई दे रही थी। वहां मृत्यु किसी भी समय किसी का भी स्वागत करेगी। अस्पताल से बाहर निकलने के पहले वह अपना सामान वगैरह उठाकर आनी के समीप जाकर एक बुत की तरह खडा हो गया। बड़ी कठिनाई से उसके मुँह से ये शब्द निकल पडे—

"सिस्टर! हम जाता है। हो सकता है और कभी नहीं देख सकेगा, मगर हम कभी नहीं भूलेगा।"

गद्‌गद स्वर से इतना कहकर आनी को प्रणाम कर वह आगे को बढा। बढता ही रहा। उसके पीछे पीछे शोकात्मक संगीत की एक बहती धारा भी विकारों की हिलोरों के साथ वेग से निकल पड़ी। आनी ने सोचा कि उसे वापस बुलाया जाय। आखिर किसलिए बुलाया जाय...।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसका हृदय वेदना से तडपने लगा। दम घुटने लगा। वह खड़ी की खड़ी रह गई !

x x x

आनी छुट्टी लेकर घर गई। उसकी पहूँच के पहले ही गांव भर में अफवाहों की एक बम फूट चुकी थी। सब लोग उसकी ओर घृणा की दृष्टि से देखते हैं। उसकी समझ में नहीं आया कि बात क्या है? सीधे बीमार पिताजी के समीप चली गई। उस पिता ने फीकी मुस्कुराहट के साथ उसका स्वागत किया और केवल इतना ही कहा—

"अच्छा तू आ गई बेटी !"

आनी का नाम लेती हुई इतने में माताजी भी बाहर निकल आयी। लेकिन उसके मुँह से भी ज्यादा एक शब्द भी नहीं निकला, यद्यपि वह बहुत कुछ कहना चाहती थी। एक लम्बी निशब्दता सर्वत्र छा गई। सभी ज्यों का त्यों खडे रहे।

बेबी, जोस और तंकचन बडे हो गये हैं। आनी की अनुपस्थिति में उन में कितना भारी परिवर्तन हुआ है। बेबी दसवीं में, जौस आठवीं में और तंकचन चौथी कक्षा में हैं। वे सब बडे हो गये। और भी बडे हो जाएँगे ...आनी का मन आह्लाद से भर उठा।

लेकिन .

एक अपूर्व नीरवता ! दम घुटने का-सा लगा। आनी सब की ओर विवश हो देखती रही। घर के बाहर प्रकृति मुस्कुरा रही थी। और पास ही कल-कल नाद करती हुई छोटी सी जलधारा भी अबाध गति से बह रही थी। कुछ ही दूरी पर वह बांस का जंगल भी। और उधर चिड़ियों की चहचहाहट दृश्य को आनन्दित कर रही थी। आनी का ध्यान इन में से किसी पर भी नहीं गया। बस वह यही सोच रही थी कि काश ! अगर मैं एक मिलिटरी नर्स न होती तो कितनी अच्छी होती ! अचानक उसकी आंखों के आगे उस मध्यप्रदेश के बाबूलाल का जीवित चित्र उपस्थित हो उठा। और उसका उदास मुरझाया चेहरा भी साफ दिखाई दिया। वह कह रहा था—

"सिस्टर, हम जाता है। हो सकता है और कभी नहीं देख सकेगा, मगर हम कभी नहीं भूलेगा।"

यकायक एक दूसरा चित्र और एक दूसरी ही आवाज़ ! आवाज जोणी की थी—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आनी ! तुम यहाँ...पास बैठो।"

आनी का सिर चकराने लगा। उसने अपने छोटे भाई का नाम लेकर जोर से चिल्लाई।

"तंकचन !"

वह आनी के पास फौरन आ गया। आनी के हाथ उसके बिखरे बालों को अनजाने संवारने लगे। उस नन्हे से चेहरे पर प्यार से एक चुम्बन भी।

"तंकचन पिताजी..."

वह ज्यादा कह नहीं सकी। इतने में उनके चेहरे पर काले बादल छा गये और आंखें बरस पड़ीं।

उसके भाई ने व्याकुलता से पूछा—

"क्यों बहिन ! क्या बात हैं ? क्यों रो रही हो ?"

आनी ने उत्तर दिया—

"पता नहीं क्यों, पिताजी मुझसे नाराज हैं... "

इतने में तंकचन बीच में बोल उठा—

"बहिन जी ! मैं बता देता हूँ सब कुछ। फौज से एक आदमी आया था यहां पर, जानती हो कौन ? सूसी के भाई जोणी को नहीं जानती ? उस बदमाश ने तुम्हारे बारे में पिताजी से बहुत बुरी बातें कहीं। पिताजी बस सुनते रहे। कुछ नहीं कहा। माँ दिन भर रोती रही। खाना भी नहीं खाया।"

इतने में जोर से एक आवाज सुनाई दी। वह आवाज आनी के पिता जी की थी—

"आनी !"

"जी !"

'तू ने खानदान के लिए अच्छा नाम कमाया। काश ! आखिरी दिनों में यह भी सुनने को मैं जिन्दा हूँ।

आनी सब कुछ समझ गयी। उसके मुँह से एक शब्द भी नहीं निकला। सब कहीं श्मशान की-सी मूकता छा गई। रसोई मे अगीठी के सामने बैठी माँ सिसकियाँ भर रही थी। आनी ने देखा कि पिता जी विषाद के साथ एक दीर्घनिश्वास भर रहे थे। बेबी और जोस वैसे चुपचाप खडे थे। दोनों आनी के सामने भी नहीं आये।

आनी को लगा कि कोई अपने मजबूत हाथों से उसका गला दबा रहा था। परेशान होकर वह कमरे के अन्दर चली गयी। बैग लेकर उसमें अत्यावश्यक सामान रखा। फिर सीधे रसोई की तरफ़ चली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आनी को लगा कि कोई अपने मजबूत हाथों से उसका गला दबा रहा था। परेशान होकर वह कमरे के अन्दर चली गयी।

माँ अंगीठी जला रही थी......आँखों में आंसू भरे हुए थे।...

"माँ" आनी ने बुलाया।

माँ ने सिर उठाकर उसकी ओर तिरस्कार भरी दृष्टियों से देखा। आनी से सहा नहीं गया। उसने कहा—

"माँ! तुम्हारी बेटी ने जानकर या अनजाने कोई गलती नहीं की है।......उस जोणी से आप लोगों से ज्यादा उत्तरदायित्व क्या मेरा नहीं है......" वहीं उसका शब्द अचानक रुक गया।

आनी बैग हाथ में थाम कर वहीं से धीरे धीरे चलने लगी। और सीधे पिताजी की चारपाई के समीप जाकर खड़ी हो गयी। माँ से जो कुछ कहा था वही पिताजी से भी कहा। वे भी चुपचाप सुनते रहे। फिर आनी ने अपने तीनों भाईयों को बुलाया। बताया कि अच्छी तरह पढा-लिखा कर। भरी आँखों से वह घर से निकली... सभी उसकी ओर देख रहे थे—माँ रसोई में खड़ी हुई, पिताजी चारपाई पर लेटे हुए और तीनों भाई आंगन में खड़े होकर!

x x x x

तोपों की गर्जना समाप्त नहीं हुई थी। उलटे युद्ध का तनाव बढता चला गया। एक परी की भाँति सफेदी पोशाक पहनकर वह फिर कैम्प में पहुँच गयी। घायल मनुष्यों की भीड़ आती रही। ..उनमें पंजाबी, बंगाली मलयाली...सभी थे। सभी एक ही वेदना से पीड़ित थे। सभी को अपनी जिन्दगी प्यारी थी।.......इस तरह की अनेकों घटनाओं के मध्य में से आनी का संघर्षमयी जीवन गुजरता गया। आनी अपने घर को महीनों में एकाध पत्र भेजती। लेकिन रुपया ठीक समय पर पहुँचता था।

लड़ाई समाप्त हो गई।

छुट्टी मिली। पर घर नहीं गई। घरवालों ने उसकी शादी के विषय में भी पत्र लिखा। लेकिन आनी चुप रही। क्यों कि आनी को अधिकतर लोगों में जोणी की लाल लाल आँखें ही दिखाई देती थी। जोणी के विषय में सोचते ही हृदय में गुदगुदी अनुभव कराते हुए मध्य प्रदेश के बाबूलाल का चित्र आंखों के आगे प्रत्यक्ष हो उठता। उस चित्र को देखते ही हृदय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तेजी से धडकने लगा। मन में विकारों का बवंडर सा उठने लगता। किन्तु थोड़ी ही देर में आनी पूर्ववत् शान्त और निर्विकार हो जाती। आखिर उसके मन में एक ही इच्छा रह जाती कि उसके तीनों भाई पढ लिखकर बडे हो जायें।

अपने गाँव में आनी की कोई इज्जत नहीं। पजाबियों और बंगालियों के साथ स्वच्छन्दतापूर्वक विहरण करनेवाली अभिसारिका मात्र है वह। इस तरह जाने क्या क्या अफवाहें गाँव में फैली है। यहाँ तक कि उसके तीनों भाई भी सिर उठाकर नहीं चल सकते। उसके विषय में लोग क्या क्या कहते और क्या क्या नहीं कहते। इसी कारण आनी ने घर जाना ही बन्द सा कर दिया।

साल कई बीते। भारत स्वतंत्र हुआ। देश का विभाजन हुआ। मानव और मानव के बीच मे फिर दुबारा संघर्ष हुआ। उस समय आनी का रजिमैंट दिल्ली में खेमा डाले हुई थी। वह काश्मीर भेजी गयी।

यह प्रदेश आनी को बहुत प्यारा है। सर्वत्र बरफीले पहाडे। उसके हृदय की भाँति विकारशून्य है। दोनों में एक ही अन्तर है। बरफीले पहाड़ बसन्त में फूलों से मुस्कुराते हैं। लेकिन आनी के जीवन का वसन्तकाल जाने कब से उसे छोड़कर चला गया है। उसके हृदय के जितने भी कोमल और मृदुल भाव हैं वे हमेशा के लिये दफना दिये गये हैं।

बेबी एक अच्छा बिजनस-मैन बन गया है, जोस को नौकरी मिली है और तंकचन बी० ए० में पढ़ रहा हैं। आनी ने अपने घर की स्थिति काफी सुधारी। फिर भी आनी की ओर से घर केलिये रुपया लगातार पहुँचता ही रहा।

काश्मीर के मिलिट्री-अस्पताल में भर्ती किये घायलों के बीच में जब अचानक आनी ने बाबूलाल को देखा तो उसका होश उड़ गया। उसका सारा शरीर शिथिल हो उठा। बाबूलाल !......उसका एक हाथ नहीं है......छाती में भी गोली लगी हैं। उस विकृत रूप को देखकर आनी का सिर घूमने लगा। उसी हालत में भी प्रेम से बाबूलाल ने बुलाया—

"सिस्टर।"

साश्चर्य आनी ने उसकी ओर भरी आँखों से देखा।

"मैं हूँ बाबूलाल।"

तेजी से कदम बढाकर वह उसके समीप चली गयी। उसके पास बैठ गयी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्या मुझे भूल गयी ?"

"कभी नहीं... ।"

"अच्छे हो न ?"

"ठीक हूँ ।"

चारों आँखों से धड़ाधड़ आँसू बह रहे थे । आनी और बाबूलाल के बीच का अतीतकाल दोनों को धक्का देकर बहुत आगे निकल चुका था। पर अपना पदचाप छोड़ चला था। काफी समय तक किसी के मुंह से एक शब्द भी नहीं फूटा। दोनों ने दिल में चाहा कि उस दृश्य को अधिक भावुक न बनाया जाय।

आनी बाबूलाल के बडे पलंग के समीप ही बैठी उसकी सेवा शुश्रूषा करती रही। उसकी चोट बड़ी गहरी है। सावधानी से नहीं देखा गया तो सभवतया वह भी काश्मीर के शहीदों में गिनाया जाएगा। आनी नहीं चाहती थी कि बाबूलाल का नाम भी शहीदों में गिनाया जाय—

वेदना पूरित स्वर में बाबूलाल ने कहा—

"जवान का काम समाप्त होने का समय है ।"

आनी ने उत्सुकता के साथ पूछा—

"क्या हुआ ?"

"अभी तो पन्द्रह साल हो गया। अगले महीने में पेंशन हो जाएगा।"

सुनते ही आनी इस प्रकार चौंक उठी मानों उसके बिलकुल पास बिजली गिरी हो। बाबूलाल की आँखों से गहरी पीड़ा की नीली रेखायें स्पष्ट दिखाई दे रही थीं। आनी के भी पन्द्रह साल पूरे होने के लिये ज्यादा दिन बाकी नहीं हैं। लम्बे पन्द्रह साल! बिना किसी शोरगुल के जीवन का वसन्तकाल भी बीत चुका...बिना फलों का ही तो वसन्त था! आनी ने भविष्य की ओर गहरी निगाहों से देखने की कोशिश की। शून्यता! सर्वत्र शून्यता!!...शून्यता के अलावा उसकी आँखों में कुछ भी दिखाई नहीं दिया।

सारा दिन इसी विषय पर वह सोचती रही। आखिर उसे अपने घर जाना होगा। और उन लोगों के बीच उसे रहना होगा जिनकी आँखों में वह चरित्रहीन है। उस जीवन से अच्छा मृत्यु ही है।

उसने बाबूलाल की ओर करुणा भरी निगाहों से देखा।

दोनों का यौवन वैसे ही बीत चुका। दोनों को चोट भी लगी है। एक का घाव शरीर में है तो दूसरे का हृदय में।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसी दिन आनी के नाम पर छोटे भाई का एक पत्र था...पत्रों पर वह ज्यादा गौरव नहीं देती थी। अनमनी सी वह पत्र खोलकर पढने लगी—

प्रिय बहिन जी,

"मैंने बी. ए. पास कर लिया है। बेबी भाई चाहते हैं कि मैं पढ़ाई जारी रखूं। रुपये के लिये आइन्दे तुम को तंग नहीं करूँगा। सारा खर्च बेबी भाई दे देगा !"

"एक और बात कहनी है। तुम्हारे लिये एक दो जगह से शादी की बातें भी हो रही है। भाई साहब के लिये भी कई जगहों से कह रहे हैं। उनका कहना है कि पहले तुम्हारी ही शादी हो। हम सब चाहते हैं' तुम जल्दी से जल्दी घर आओ। माँ हमेशा रोती रहती है। गाँववाले कहते हैं कि तुमने किसी पंजाबी से शादी कर ली है। इसलिये घर नहीं आती।"

खत मिलते ही आने की तैयारी करना। जो कुछ हुआ था सब कुछ भूल जाना बहिन। उत्तर की प्रतीक्षा में—"

तुम्हारा तंकचन

खत पढकर आनी जोर से हँसने लगी। कैसी पाशविक हंसी थी वह ! न मालूम वह कितनी देर तक उस मिलिटरी अस्पताल की खिडकी से दूर के बरफीले पहाडों को आँसू भरे नयनों से देखती रही। बाबूलाल की आहट सुनकर वह फौरन उसकी ओर चली।.. कमरे के उस बडे आइने से अपनी आँखें हटाई। और उसके कानों पर अपने छोटे भाई के पत्र के शब्द गूंजने लगे... रुपये के लिये तंग नहीं करूँगा... सारा खर्च बेबी भाई दे देगा...एक दो जगह से शादी की बातें भी हो रही हैं...भाई साहब के लिये भी कई जगहों से कह रहे हैं...। आनी की समझ में आई कि आखिर बात क्या हैं ? उसने सोचा कि आवश्यकता आनी की नहीं बेबी की थी।

मेज पर से कागज़ और कलम लेकर उसने अपने घर केलिये एक पत्र लिखा—

प्रिय तंकचन,

पत्र मिला। यह जानकर बड़ी खुशी हुई कि आनी एक लड़की हैं, इस बात को अभी समझने लगे हैं। चरित्र-हीन इस बहिन को तुम लोग हमेशा के लिपे भूल जाओ। तुम्हारी बहिन के शब्दों से ज्यादा विश्वसनीय जोणी के शब्द हैं...उस जोणी से भी मेरा नमस्ते कह देना। इस बहिन से अब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसी को भी फायदा नहीं। एक प्रार्थना है। तुम अपनी सन्तानों से भी नहीं कहना कि तुम्हारी बहिन एक मिलट्री-नर्स थी। एक मिलिट्री नर्स इतनी घृणित वस्तु है न! ईश्वर तुम लोगों का भला करें।

तुम्हारी एक समय की बहिन
आनी

सारी दुनियाँ के प्रति उसके हृदय में विद्रोह मचल उठा। एक ज्वालामुखी फूटनेवाला है...उसने खत लिफाफे में डालकर बन्द किया और बक्से में डाल आयी। वार्ड में कहीं से जोर कीं एक खाँसी की आवाज़ ने आनी को उसी ओर खींच लिया। वह धीरे धीरे उसी ओर चलने लगी। ओह! बाबूलाल!! वह खाँस रहा था और रक्त थूक रहा था.. आनी ने सोचा कि वह भी समाज केलिये एक फालतू जीव है। अब इन फालतू चीज़ों की ओर ध्यान क्यों दे? अपने मन को नियंत्रण में लाती हुई उसने जानबूझकर उसी ओर देखा तक नहीं।...वह जानती थी कि उस जीवन का अवसान निमेष अब ज्यादा दूर नहीं है।

वह अपने को होश में लाती हुई दृढनिश्चय के साथ उस कमरे की ओर चली जहाँ पर दवाइयाँ रखी हुई थीं। उधर एक अलमारी रखी हुई थी। उस पर एक शीशे में लिखा था "पाइसन" (जहर)—

उसे देखकर पागल की भाँति वह अट्टहास करने लगी...

तब भी उन बरफीले पहाड़ों पर तोपों की गर्जना की प्रतिध्वनि चारों दिशाओं में गूँज रही थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिकार

मूलरचना : इरकल
मूल रचनाकार : ए. षाजहान, एम. ए.
मलयालम लक्चरर, फारूख-कालेज, कालिकट
अनुवादक : ए. मोहनराज, एम. ए.
हिन्दी लक्चरर, फारूख कालेज, कालिकट

[पर्दा उठते समय रंगमंच के बीचोंबीच एक तख्त[1] और उस तख्त से लिपटकर चार व्यक्ति सोते हुए दिखाई देते हैं। दूर किसी कारखाने से सुबह की सैरन गूँज उठती है। मंदिर से प्रभातगीत सुनाई पडता है। चारों में से एक जागता हैं, उठकर अंगडाई लेता है और तीनों को जगा देता है।]

पहला व्यक्ति : (असह्य भाव से) ऊह! नींद आँखों में लगने ही वाली थी कि कम्बख्त ने जगा दिया।

दूसरा : मैं एक सुन्दर सपना देख रहा था। इसी बीच उसकी यह पुकार। नालायक कहीं का।

तीसरा : मैं अपनी किताब का बाकी—

चौथा : बस करो। हमारा काम तुम लोग भूल गये। हम तो ठाकुर साहब के इस तख्त के पहरेदार हैं।

संघ : बाप रे! ठाकुर साहब का तख्त (सहसा मुडकर तख्त की ओर देखता है। उसे वहीं पाकर आश्वासन अनुभव करता है।)

पहला : हाऊ! वह यहीं है।

दूसरा : खो जाता तो हमारा सिर चला जाता।

तीसरा : रे भगवान, तू ने हमें बचा लिया।

चौथा : अरे, कितने लोग इस तख्त पर आँख बिछाये बैठे हैं।

1. तख्त—പീഠം.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहला : अरे जल्दी करो। ठाकुर साहब के आने से पहले इसे झाड पोंछकर साफ करना है।

संघ : हाँ, हाँ। (सब गाते गाते तख्त को साफ करने में लग जाते हैं।)

यह ठाकुर का तख्ता है
खूबसूरत यह तख्ता है
यह न कभी हिलता डुलता
राजा का है, यह तख्ता।

(गाते गाते ज़मीन पर बैठ कर ताल बजाते हैं। हर एक अपनी अपनी दुनिया में खो जाता है।)

पहला : मुझे बडी भूख लगी है, खाना खाना था।

दूसरा : मुझे अपनी प्यारी से एक बार मिलना था।

तीसरा : मुझे अपनी किताब पूरी करनी थी।

चौथा : मुझे अपनी माँ और बहन से मिलना था।

पहला : (जल्दबाजी में उठ खडा होता है और कहता है) ज़रा जल्दी करो यार। ठाकुर साहब के आनें का वक्त हो गया। जल्दी। (चारों व्यक्ति तख्त के दोनों ओर और सामने खडे हो जाते हैं।)

[ठाकुर साहब प्रवेश करते हैं। भीतर की ओर देखकर आवाज़ देते हैं।]

ठाकुर : कोई है?

सेवक : (भीतर से) जी हुज़ूर।

ठाकुर : इधर आओ।

(सेवक आता है और प्रणाम कर खडा हो जाता है।)

ठाकुर : हम आराम करना चाहते हैं।

सेवक : नर्तकी को बुलाऊँ?

ठाकुर : हाँ, बुलाओ।

(सेवक ताली बजाकर नर्तकी को बुलाता है। नर्तकी आकर नाचने लगती है। सब नृत्य के लय में झूमते हैं। ठाकुर साहब रुपयों की थैली भेंट करते हैं और नर्तकी उसे लेकर चली जाती है।)

ठाकुर : सेवक।

सेवक : जी हुज़ूर।

ठाकुर : सब लोग खुश हैं न?

सेवक : जी हुज़ूर।

ठाकुर : मुझे चारों ओर घूमकर देखने की कोई ज़रूरत तो नहीं है न?

सेवक : जी नहीं हुज़ूर।

ठाकुर : तब ठीक है। तुम इन को हमारा वह उद्घोष सुनाओ।

सेवक : (संघ से) तुम लोगों का मनोरंजन कौन करता है?

संघ : ठाकुर साहब। ठाकुर साहब।

सेवक : तुम लोगों को भोजन कौन देता है?

संघ : ठाकुर साहब। ठाकुरसाहब।

सेवक : सारे देश का स्वामी कौन है?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संघ : ठाकुर साहब। ठाकुर साहब।

(यह सुन कर ठाकुर साहब अकड कर चलते हैं। सेवक रंगमंच के सामने आकर खडा हो जाता है और दर्शकों की ओर मुखातिब होकर)

सेवक : यह तो बडा बेवकूफ है। इस के साथ रह कर यह तख्त मुझे हडपना है। मेरा यही इरादा है।

ठाकुर : अरे, नाश्ते का वक्त हो गया।

सेवक: चलेंगे हुजूर। (दोनों चलते हैं।)

संघ: (गाता है)

ठाकुर के खेत की फसल
काटनेवाले हैं हम।
ठाकुर साहब का खलिहान
भरनेवाले हैं हम।
ठाकुर साहब के किले का
पहरा देनेवाले हम।
ठाकुर साहब के पैरों
पडने वाले भी हम।

(गाते गाते सब बेहोश-से होकर ज़मीन पर गिर जाते हैं। ठाकुर और सेवक आकर जाँच करते हैं।)

सेवक : हुजूर, ये तो काफी थके हुए मालूम पडते हैं। थोडा सा खाना फेंक देते तो—

ठाकुर : अच्छा, अच्छा। ऐसा ही हो।

(सेवक भोजन लाता है। ठाकुर साहब ताली बजा कर संघ को जगा देते हैं। उनसे खाना खाने को कहते हैं, सुन कर संघ चटपटा कर उठने लगता है। ठाकुर खाना मसल कर फेंक देते हैं और हंसते हैं। संघ बडी लालच से खाने के टुकडे उठाकर खाता है।)

पहला व्यक्ति : अब मुझे थोडा आराम करना था।

दूसरा : मुझे अपनी प्यारी से एक बार मिलना था।

तीसरा : मुझे अपनी किताब पूरी करनी थी।

चौथा : मुझे अपनी मां और बहन से मिलना था।

ठाकुर: (पैर पटककर) क्या? वैयक्तिक सपने? धत्। सब को मार डालेंगे हम। यह सबकुछ हमारा है, हमारे खातिर है।

सेवक : जी हां, हमारा है।

ठाकुर : यानी कि मेरा, सिर्फ मेरा।

(संघ सिकुड कर बैठता है। ठाकुर पान खाते हैं, भारी कदम बढाकर भीतर चले जाते हैं।)

सेवक : सुन, बेकार न सिसक। चुपचाप पडा रह।

(सेवक भी चला जाता हैं।)

संघ : (एक खास मुद्रा में गाता है।)

मेरे इधर आने के बाद
अनगढ सर गढवाया
मेरे इधर आने के बाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनगढ घर गढवाया
आधा नारियल दिया गया
और कटोरा भर शराब भी।

पहला व्यक्ति : नहीं अब हम यह नहीं सहेंगे। कितने दिनों से हम यह सब देखते रहते हैं।

दूसरा : गुलामों की तरह काम करने पर भी पेट भर खाना नहीं मिलता।

तीसरा : हम अपनी जिन्दगी बरबाद कर रहे हैं।

चौथा : देखो, हमें सावधानी से काम लेना है। वरना हमारा जीवन और यह देश दोनों नष्ट हो जाएंगे।

पहला : हमें एकत्र होना चाहिए।

संघ : हाँ, हां हमें एक होना है।
(गाता है)
जाग उठो, जाग उठो
गरीबी के बन्दियो
चाहे आज हम कुछ भी नहीं,
पर कल हमारा है, कल हमारा है
कल तो हमीं सब कुछ हैं।
(अचानक ठाकुर और सेवक प्रवेश करते हैं)

ठाकुर : यह क्या ? विरोध, मेरा विरोध ? तुम्हारी यह हिम्मत कैसे हुई ? मेरी जूठन खाकर, दुम हिलाकर चलनेवाले तुम लोगों के सींग कब उगे ? (मुड़कर सेवक से) ताज्जुब है !

सेवक : जी हुजूर, बड़ा ताज्जुब है।

संघ : अब तुम्हें सब कुछ ताज्जुब ही लगेगा। इतने दिन हम धोखा खाते रहे। अब कुछ नहीं चलेगा।

ठाकुर : क्या तुम लोग पागल हो गये हो ? कमीनो, सावधान !

संघ : हां, यह एक तरह का पागलपन है। आज़ादी का पागलपन। अधिकार का पागलपन।

पहला : इतने दिन तुम इस तख्त पर विराजे। अब से यह हमारा हो गया। हमीं इसके अधिकारी हैं।

संघ : हाँ, हाँ। हमीं ने इस की रखवाली की और यह हमारा है। सिर्फ हमारा रहेगा।
(तख्त उठाना चाहता है। ठाकुर साहब लपक कर रोकना चाहते हैं। संघ ठाकुर को ज़मीन पर गिरा देता है। तख्त ऊपर उठता है, सेवक उस पर लटकता रहता है।)

[पर्दा गिरता है]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'विश्व भाषा के रूप में हिन्दी' शीर्षक विषय पर आयोजित संगोष्ठी का निमंत्रण पत्र प्राप्त हुआ। यह निर्विवाद है कि प्रयोक्ताओं की दृष्टि से हिन्दो विश्व की तीन प्रमुख भाषाओं में से एक है। हिन्दी ने भारत में विभिन्न भारतीय भाषाओं के बोलनेवालों के बीच संपर्क-भाषा के रूप में प्रयुक्त होने के कारण अन्तक्षेत्रीयता प्राप्त की है, वहीं विभिन्न देशों में वसे लाखों कराड़ों भारतीय मूल के लोगों के द्वारा अपनी भारतीय संस्कृतिक अस्मिता के प्रतीक के रूप में हिन्दी का व्यवहार करने के कारण इसने अन्तर्राष्ट्रियता का दर्जा प्राप्त किया है।

सभी भारतीय भाषाओं के विकास में सबसे बड़ा अवरोधक तत्व अंग्रेज़ी है। जिस दिन भारत, पाकिस्तान एवं बंगलादेश अपने राष्ट्र-व्यवहार में अंग्रेज़ी का प्रयोग करना बन्द कर देंगे उसी दिन अंग्रेज़ी का अन्तर्राष्ट्रिय भाषा का दर्जा खंडित हो जाएगा। अंग्रेज़ी के अन्तर्राष्ट्रिय स्वरूप को बनाए रखने के लिए साम्राज्यवादीशक्तियों के द्वारा हिन्दी को उसके अपने ही घर में तोड़ने के सुनियोजित षड़यंत्र चल रहे हैं। क्योंकि वे जानते हैं कि इसी रास्ते से अंग्रेज़ी का अस्तित्व बचाया जा सकता है। मेरी कामना है कि 'केरल हिन्दी प्रचार सभा' इन षड्यत्रों को विफल एवं ध्वस्त करने में सफल सिद्ध हो तथा हिन्दी का विश्व-भाषा के रूप में अधिकाधिक विकास सम्भव हो सके एवं हिन्दी के माध्यम से भारतीय संस्कृति सहज रूप में अभिव्यक्त हो सके। अंग्रेज़ों ने फोर्ट विलियम कालेज की स्थापना के माध्यम से एक ही भाषा के दो रूपों को भिन्न भिन्न मार्गों पर सयास चलवाकर उनको दो भिन्न भाषाओं के रूप में स्थापित करने का जो दुष्चक्र चलाया था उसको तोड़ने की आवश्यकता है। हिन्दी क्षेत्र के विभिन्न क्षेत्रीय रूपों को अलग अलग भाषाओं के रूप में मान्यता दिलाने का जो रास्ता अपनाया जा रहा है उसके पीछे के निहित प्रतिगामी स्वार्थों को स्पष्ट करने की आवश्यकता है। हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाएँ अंग्रेजी के कारण विकास नहीं कर पा रही हैं, इसको रेखांकित करना आवश्यक है। सम्पूर्ण भारतीय भाषाओं के बीच भाषा-साम्य के बहुत से तत्व एवं सूत्र विद्यमान हैं– इसको उजागर करना आवश्यक है।

डा० महावीर सरन जैन
प्रोफसर एवं अध्यक्ष
स्नातकोत्तर अध्ययन एवं अनुसंधान
हिन्दी एवं भाषा-विज्ञान विभाग
रानीदुर्गावती विश्वविद्यालय
जबलपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पत्रिका सम्बन्धी घोषणा पत्र

फार्म 4

1.	प्रकाशन स्थान	:	तिरुवनन्तपुरम
2.	प्रकाशन अवधि	:	मासिक
3.	मुद्रक का नाम	:	एम. के. वेलायुधन नायर
	क्या, भारत का नागरिक है	:	हाँ, भारतीय
	पता	:	मंत्री, केरल हिन्दी प्रचार सभा, तिरुवनन्तपुरम-695 014
4.	प्रकाशक का नाम	:	एम. के. वेलायुधन नायर
	क्या, भारत का नागरिक है	:	हाँ, भारतीय
	पता	:	मंत्री, केरल हिन्दी प्रचार सभा तिरुवनन्तपुरम-695 014
5.	संपादक का नाम	:	के. जी. बालकृष्ण पिल्लै
	क्या, भारत का नागरिक है	:	हाँ, भारतीय
	पता	:	के. जी. बालकृष्ण पिल्लै, केरल हिन्दी प्रचार सभा, तिरुवनन्तपुरम-695 014
6.	उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार-पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूँजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों	}	केरल हिन्दी प्रचार सभा, तिरुवनन्तपुरम-695 014

मैं, एम. के. वेलायुधन नायर, एतद्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

ता० 1–3–1990 (ह०)

प्रकाशक के हस्ताक्षर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Reg. No. KL/TV(S)/25 Vol. XXIII.No.12

KERAL JYOTI

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

March, 1990 Price : Rs. 1.50

A monthly Publication of Kerala Hindi Prachar Sabha approved for school libraries by the Education department, Govt. of Kerala as per notification No.B 3/4036/83/SIE dated 20-9-1985.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

केरल हिन्दी प्रचार सभा, तिरुवनन्तपुरम-695 014 के लिए श्री. एम. के. वेलायुधन नायर द्वारा प्रकाशित ।
मुद्रक: राष्ट्रवाणी मुद्रणालय, केरल हिन्दी प्रचार सभा, तिरुवनन्तपुरम-14. सम्पादक : श्री के. जी. बालकृष्ण पिल्लै

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Compiled
1999-2000

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri